Mukta Sep-Oct 1982 G.K.U.

मुक्ता

भारतीय हाकी की मौत : आइए, श्रद्धांजलि दें

जिया का कसता शिकंजा

मनोरंजक दौड़ प्रतियोगिताएं

"कर्कश और दानेदार मंजन आपके मसूढ़ों और दांतों को नुकसान पहुंचा सकते हैं..."

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने दांतों और मसूढ़ों की सुरक्षा कीजिये—और सांस की दुर्गन्ध भी रोकिए!

Colgate
TOOTH
POWDER
Protects your teeth and gums

कोलगेट टूथ पाउडर अति सूक्ष्म और सफ़ेद है। यह कोमलता के साथ आपके मसूढ़ों की मालिश करता है, जब कि इसका पालिश करनेवाला तत्व आपके दांतों पर से मैल की परत हटाता है, इन्हें ज्यादा साफ़ और ज्यादा सफ़ेद बनाता है। कोलगेट भरपूर झागदार होने के कारण आपके दांतों के बीच की जगहों में घुसकर दुर्गंध और दंत क्षय पैदा करनेवाले कीटाणुओं को नष्ट कर देता है और सांस की दुर्गंध खत्म हो जाती है।

कोलगेट टूथ पाउडर से अपने परिवार को आधुनिक दंत संरक्षण दीजिये। उन्हें इसका पेपरमिंट का ठंडा स्वाद बेहद पसंद आयेगा।

TP.G.31HN

एक और संग्रहणीय विशेषांक
मुक्ता
नवंबर (प्रथम) 1982
एशियाई खेल
विशेषांक
जिस में आप पाएंगे
31 वर्षों बाद दिल्ली में फिर से हो रहे एशियाई खेलों का संपूर्ण लेखाजोखा; कौनकौन से देश इस में भाग ले रहे हैं? एशियाई खेलों के लिए कैसी तैयारियां की गई हैं? किस खेल में कौन सा देश बाजी मारेगा? खिलाड़ियों के लिए कैसी व्यवस्थाएं हैं? खेले जाने वाले सभी खेलों के बारे में क्रमबद्ध जानकारी.
इन के अलावा कई अन्य लेख, मनोरंजक कहानियां तथा कविताएं
अपनी प्रति
अभी से सुरक्षित करा लें.
मु-105

कला · क्रांति · कर्मण्यता

मुक्ता

सजग, सफल, सरस
जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

अक्तूबर (प्रथम) 1982
अंक : 388

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55 दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस स.प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए पैंथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

'विमान अपहरण : सरकार दोषी' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में आप ने देश के सफेदपोश नेताओं पर तीखा प्रहार किया है. आप का यह कहना बिलकुल सही है कि अपहरणकर्ताओं को भ्रष्ट राजनीतिबाज ही सहयोग देते हैं. राजनीति की आड़ में ये लोग एक तरफ अपना उल्लू सीधा करते हैं, दूसरी तरफ अपराधियों को संरक्षण दे कर देश में अपराधों को बढ़ावा देते हैं. आखिर चोरचोर तो मौसेरे भाई ही होते हैं.

—वीना भाटिया

*

'हिंदी की धीमी प्रगति' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) पर आप के विचार सामयिक रहे. निस्संदेह हिंदी एक समृद्ध, रोचक व सीखने की दृष्टि से आसान भाषा है. लेकिन समस्या तो यह है कि अंगरेजियत हमारी मानसिकता में रम गई है.

—डा. अखिलेश शर्मा

*

'विदेशी दान बंद किया जाए' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. विदेशों से आने वाला यह धन किसी भी रूप में देश के लिए हितकर नहीं है. चूंकि यह धन बिना किसी परिश्रम के प्राप्त होता है, इसलिए धनराशि के अधिक भाग का दुरुपयोग स्वाभाविक ही होता है. अतः सरकार को विदेशों से प्राप्त होने वाले हर तरह के दान पर रोक लगा देनी चाहिए. यदि कोई भारत की सहायता करना चाहता है तो प्रधान मंत्री सहायता कोष में दान दे सकता है.

साथ ही 'दो व्यावहारिक संशोधन' में भी आप ने बड़ी औचित्यपूर्ण बात कही है. सरकार ने श्रम विवाद कानून में संशोधन कर के हस्पतालों, स्कूलकालिजों एवं परोपकारी संस्थाओं को श्रम कानून की परिधि से बाहर कर दिया है जो निश्चय ही उचित है. मेरे विचार में डाक तार विभाग को भी इन कानूनों की सीमा से बाहर कर देना चाहिए, क्योंकि मूल रूप से इस विभाग का कार्य भी एक प्रकार से सेवा कार्य ही है.

—गोवर्धन कोठारी

*

'बिखरे दल : मतदाता भी दोषी' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में व्यक्त आप के विचार सोलहों आने सच हैं. कम से कम मुक्ता के पाठक तो इन विचारों को ध्यान में रखते हुए ही आगामी चुनावों में मतदान करेंगे.

यह सही है कि हाल ही में हरियाणा व हिमाचल प्रदेश में हुए चुनावों के दौरान जनता ने महत्त्वहीन उम्मीदवारों को मत दिए. जनता को इतनी फुरसत कहां है कि वह

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

यह सोचविचार कर सके कि किस दल का कौन सा प्रत्याशी कितना योग्य है. विशेषकर उस स्थिति में जब बहुत से उम्मीदवार जीतने की कोई उम्मीद न होने पर भी किन्हीं स्वार्थों के कारण चुनाव में खड़े हो जाते हैं. जब तक राजनीति दुकानदारी के रूप में चलती रहेगी, तब तक देश का यही हाल रहेगा.

—मनोज आंचलिया 'टोनी'

*

दलों में बिखराव की स्थिति पर विचार प्रकट करते हुए आप ने मतदाताओं को दोषी ठहराया है. किंतु इस में मतदाताओं का क्या दोष है? उन्हें तो राजनीतिबाज और उन के स्थानीय समर्थक ही तरहतरह के प्रलोभन दे कर अपनी ओर आकर्षित करते हैं. आजकल के राजनीतिबाजों में एक दल को छोड़ कर दूसरे दल में मिल जाना एक आम बात हो गई है.

—गुरविंदर सिंह

*

'परदे के पीछे का घूंसा' (मुक्त विचार/अगस्त/द्वितीय) में अमिताभ बच्चन के बारे में आप के विचार पढ़े. आज देशविदेश में इस 'विलक्षण' अभिनेता के लिए लोग उस के स्वास्थ्य की कामनाएं कर रहे हैं. लेकिन यह अभिनेता अभिनय के माध्यम से कौन सी दिशा देश को दे रहा है? क्या इस अभिनेता ने भारतीय फिल्मों को वह दिशा दी, जहां पहुंच कर हम अपने आप को गौरवान्वित अनुभव करें.

उस की फिल्मों में अभिनय कम, बेहूदी हरकतें अधिक देखने को मिलती हैं. उन्हें देख कर युवक और बच्चे अपने आप को डान, जान, एंथोनी समझने लगते हैं.

—हरमिंदर कौर

*

'कोर्ट फीस न हटाएं' (मुक्त विचार/अगस्त/द्वितीय) से मैं सहमत हूं. कोर्ट फीस हटाने का अर्थ है और अधिक मुकदमों को निमंत्रण देना. यहां तो पहले ही देश भर की अदालतों में अनगिनत मामले वर्षों से लटके पड़े हैं, जिन के निबटारे में न जाने कितना समय लगेगा. ऐसी स्थिति में कोर्ट फीस को हटाना लाभदायक नहीं है.

यह बात सही है कि कोर्ट फीस जितनी ज्यादा होगी उतना ही लोग छोटीछोटी बात को ले कर अदालत के दरवाजे पहुंचने से पहले सोचेंगे. छोटेछोटे मामलों को लोग आपस में ही सुलझा लेंगे. ऐसी स्थिति में अदालतों में जहां मुकदमों की कमी होगी, वहां मामले ऐसे आएंगे जिन्हें वास्तव में न्यायपालिका के बिना सुलझा पाना असंभव हो. यह तो स्पष्ट ही है कि मुकदमें जितने कम होंगे, उतना ही उन का निबटारा शीघ्र होगा.

कोर्ट फीस को हटाने का करण यह बताया जाता है कि इस से न्याय प्राप्त करने की व्यवस्था सरल व निशुल्क होगी, जिस से गरीब लोगों को काफी राहत होगी किंतु कोर्ट फीस हटाने से तो हर कोई मुकदमा ठोक कर अदालत का समय बरबाद करने लगेगा. जीतने वाले पक्ष को विपक्षी से सारा खर्चा दिलवाना कोर्ट फीस की सार्थकता को सिद्ध करता है.

—अशोक बजाज

*

इजराइल के बारे में व्यक्त विचार (मुक्त विचार/जुलाई/प्रथम) बहुत हद तक सही हैं और इस बात की ओर भी संकेत करते हैं कि दुनिया के मुसलमान कितने कमजोर हो चुके हैं. फिलस्तीन मुक्ति संगठन जो कुछ भी कर रहा है वह उस की बहादुरी ही कही जा सकती है, परंतु खेद है कि मुस्लिम मुल्क और वहां के निवासी समय के साथ अपने को शिक्षित नहीं कर पाए और आज विज्ञान और टेक्नालाजी के क्षेत्र में दुनिया की दूसरी कौमों से पिछड़ गए हैं.

अगर गौर किया जाए तो यही स्पष्ट होता है कि वहां इजराइल नहीं बल्कि अमरीका लड़ रहा है. उन के हथियार, उन की टेक्नालाजी तथा उन का पूरा समर्थन अरबों के खिलाफ है और आवश्यकता पड़ने पर उन के मुल्कों पर अणु बम भी गिराया जा सकता है. दूसरी तरफ अरबों का कोई साथी नहीं. न उन के पास अपने हथियार हैं और न ही कोई मदद करने वाला है. मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि अमरीका और रूस

मुसलमान मुल्कों के साथ ... हैं और उन की नीति इसी पर आधारित है कि मौका मिलते ही मुसलमान मुल्कों पर कब्जा कर लिया जाए और इन को दुनिया से खत्म कर दिया जाए.

मेरे विचार से अब इन मुल्कों को चाहिए कि एक जगह मिलबैठ कर न किसी से दोस्ती और न किसी से दुश्मनी की नीति पर चलें और अपने असली दुश्मनों को पहचानें. लेकिन क्या विश्व की ये दो महान शक्तियां मुसलमानों को तब भी चैन से रहने देंगी? विश्वास नहीं होता. क्योंकि ये इन की दौलत तथा इन के मुल्कों को स्वयं या अपने एजेंटों के द्वारा हड़पना चाहते हैं.

मुसलमानों के जीने का बस एक ही रास्ता है, वह यह कि जिस प्रकार भी संभव हो, वे अपनी सैन्य शक्ति को इस हद तक तैयार करें कि किसी भी समय दुश्मन का मुकाबला कर सकें. अन्यथा दुनिया की दूसरी कौमें इन्हें जीने नहीं देंगी.

—जमीलुर्रहमान आजमी

*

कहानी 'काले मेघा पानी दे' (सितंबर/प्रथम) सरकारी ढांचे में भ्रष्टाचार पर एक अच्छी चोट है. लेखक ने भ्रष्टाचार के साथ गरीबी के परिणामों का भी अच्छा चित्रण किया है.

—दलीप

*

स्वंतत्रता दिवस से संबंधित लेख (अगस्त/द्वितीय) यथार्थ को छूता हुआ एक तथ्यात्मक लेख है. लेखक ने वास्तविकता को उजागर कर प्रशंसनीय कार्य किया है.

प्रतिवर्ष 15 अगस्त की सुबह देश के हर कोने में तिरंगा झंडा लहरा कर देश के कर्णधार व आम नागरिक महज एक औपचारिकता निभा लेते हैं. हर बार वही बड़ेबड़े भाषण, कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है.

—सुभाषचंद्र खत्री

*

यह सच है कि 15 अगस्त पर अब पहले जैसी रौनक एवं प्रसन्नता दिखाई नहीं देती. कारण यह है कि जो नेता आज सरकार बनाए बैठे हैं वे राष्ट्रचेतना की जगह अपनी पार्टी चेतना पर ज्यादा ध्यान देते हैं. वे हर भाषण में अपने देश का कम, दल की खूबियों की अधिक बात करते हैं.

एक और वजह यह भी है कि आज के नेता इतने भ्रष्ट हो चुके हैं कि उन के हर शब्द से स्वार्थ झलकता है. इसी लिए उन का चरित्र जनमानस को उदासीन बनाता जा रहा है. हर साल नएनए वादों से सब्जबाग दिखाए जाते हैं और ध्वजारोहण के साथ ही वे भी हवा में लहर भर जाते हैं और जनता को केवल हाथ लगती है निराशा.

कहानी 'कवच तक' बहुत ही सजीव

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

लगी. वास्तव में बिहारी जैसे लोगों के साथ किसी को सहानुभूति मुश्किल से ही हो पाती है. तबादला पर तबादला ही उन की तरक्की है, उन का इनाम है. इस भ्रष्ट ढांचे में ढली नौकरशाही प्रणाली से और उन्हें मिल भी क्या सकता है?

—भुवनचंद्र शर्मा

*

अमरीकियों ने स्वतंत्र होने पर स्वतंत्रता दिवस मनाया. हम आजाद हुए तो हम ने भी उन का अनुकरण करना आरंभ कर दिया. लेकिन सच तो यह है कि हम आज भी मानसिक रूप से गुलाम हैं. इसी तरह हम गांधीजी की हत्या वाले दिन शहीद दिवस मनाते हैं. यह भी शहीदों का खूब मजाक है. क्यों न शहीद दिवस 15 अगस्त को मनाया जाए क्योंकि इसी दिन शहीदों की आकांक्षा फलीभूत हुई थी. यदि हम देश के लिए मरमिट नहीं सकते तो कम से कम शहीदों का तो सम्मान कर ही सकते हैं.

पता नहीं, आज देशवासियों और देश के कर्णधारों को क्या हो गया है जो इन शहीदों की पुण्यतिथियों और जयंतियों को केवल औपचारिकता भर निभाने के लिए मनाते हैं.

—धनपतराजजी मुणोत

*

'हरि भाई की लोक अदालत' लेख (अगस्त/द्वितीय) में लोक अदालत की प्रक्रिया व उस के विभिन्न पहलुओं का विवरण दिया गया है, जो यह सोचने पर मजबूर कर देता है कि आज के महंगे कानूनी न्याय से बेहतर तो हरि भाई की लोक अदालत ही है.

—अशोक कटारिया

*

'हरि भाई की लोक अदालत' (अगस्त/द्वितीय) आज की आवश्यकता के अनुरूप एक रचनात्मक कार्य है. आज के नेताओं के कभी न पूरे होने वाले आश्वासनों और उन के गड़बड़झालों से तो हमारे हरि भाई जैसे समाज सुधारक लाख गुना बेहतर हैं.

इस लेख के पृष्ठ क्रमबद्ध न होने से कठिनाई हुई.

—अ. स. खान

पृष्ठ संख्या 26 के स्थान पर 32 वां पृष्ठ होने के कारण असुविधा के लिए खेद है.

—संपादक

मुक्त विचार

वैज्ञानिक विलासिता

एक अमरीकी कंपनी से 65 करोड़ रुपए में खरीदा गया इनसैट–1 ए संचार उपग्रह छोड़े जाने के लगभग पांच माह में ही बिलकुल बेकार हो गया है. 36,000 किलोमीटर पर इंडोनेशिया के ऊपर स्थिर स्थिति में रखे गए इस उपग्रह से टेलीफोन, रेडियो, टेलीविजन व अन्य संचार की बहुत सी नई सुविधाओं की आशाएं थीं और उन का उपयोग करने के लिए देश के विभिन्न स्थानों पर लगभग 250 करोड़ रुपए की लागत से व्यवस्थाएं बनाई गई थीं.

अब इन सब पर पानी फिर गया है.

इस उपग्रह की मुख्य असफलता का कारण है भारतीय वैज्ञानिकों की अकुशलता. देश प्रेम व प्रतिष्ठा के नाम पर आम तौर पर देश के वैज्ञानिकों की आलोचना नहीं की जाती, पर सही तो यह है कि हमारे देश के वैज्ञानिक अभी उपग्रह जैसी विकसित तकनीक तक पहुंच नहीं पाए हैं.

रूस और अमरीका ने छठे व सातवें दशक में जब उपग्रह भेजने शुरू किए थे, वहां उन की अपनी तकनीक काफी विकसित थी और उन के पास सैकड़ों ऐसे वैज्ञानिक थे जो प्रतिभाशाली तो थे ही, उन्होंने विभिन्न आविष्कार भी किए हुए थे.

हमारे वैज्ञानिक आज भी पश्चिमी देशों से उधार लिए ज्ञान पर शान बघारते हैं. जो प्रतिभाशाली होते हैं वे तो पश्चिमी देशों में जा कर बस जाते हैं. देश में तो वे ही वैज्ञानिक बचते हैं जिन के यहां पर कोई अन्य हित बंधे हों या जो दूसरे दर्जे के हों. सरकारी नौकरी में जाते ही वैज्ञानिक नई खोजों के स्थान पर आपसी छलकपट भरी राजनीति में उलझ जाते हैं. कम वेतन और सुविधाओं के कारण वे किसी तरह ऊपर से पैसा बनाने में जुटे रहते हैं.

अपने उपग्रह और राकेटों के बारे में वे जो प्रस्ताव सरकार के सम्मुख रखते हैं, उन में अधिकांश में तो उद्देश्य इस बहाने विदेश यात्रा के अवसर ढूंढ़ना ही होता है. सरकार आत्मनिर्भरता के नाम पर इन प्रस्तावों को मान लेती है ताकि दूसरे देशों पर रोब गांठा जा सके कि हम भी अणुबम बना सकते हैं, राकेट छोड़ सकते हैं, उपग्रह संचालित कर सकते हैं.

इन प्रस्तावों पर गरीब व भूखी जनता के अरबों रुपए नष्ट कर दिए जाते हैं और जो ज्ञान प्राप्त होता है वह वैसे ही बीस वर्ष पुराना होता है.

पश्चिम के कई छोटे देश आर्थिक संपदा में भारत से कई गुना बढ़चढ़ कर हैं, पर वे भी संचार उपग्रहों और राकेटों के मामलों में नहीं पड़ते. यूरोप ने दोतीन वर्ष पहले ही राकेट छोड़ने शुरू किए जब कि उन का तकनीकी ज्ञान हमारे ज्ञान से 20-25 वर्ष आगे है. फिर भी भारतीय वैज्ञानिक इनसैट उपग्रह को स्वयं संचालित करने की जिद करते रहे जिस से सारा ही पैसा डूब गया.

इस से पहले [illegible] रोहिणी एपिल उपग्रहों पर भी अरबों रुपए खर्च किए जा चुके हैं जिन का लाभ या तो सामान सप्लाई करने वाली विदेशी कंपनियों को मिला या मुट्ठी भर वैज्ञानिकों को.

अब सरकार को चाहिए कि वह उन सब वैज्ञानिकों को नौकरी से निकाल दे जो इनसैट की असफलता के लिए जिम्मेदार हैं. इन में मुख्य निदेशक से कनिष्ठ वैज्ञानिक तक सभी शामिल होने चाहिए ताकि आगे से ये वैज्ञानिक उन्हीं कामों में हाथ डालें जो उन के बस के हैं.

वैज्ञानिक शोधों पर खर्च क्यों?

एक तरफ तो हमारी सरकार अरबों रुपए फजूल के वैज्ञानिक शोध पर खर्च कर रही है, दूसरी ओर देश के 3,000 छोटेबड़े कसबों में आज तक बंद नालों तक की व्यवस्था नहीं हो पाई है जिस की वजह से आज भी मानव को मैला सिर पर ढो कर ले जाना पड़ता है.

देश के केवल 200 शहरों में ही सीवर की व्यवस्था है और उन में भी अधिकतर में आंशिक.

जीवन को स्वस्थ व सुखी बनाने के लिए रेडियो, टेलीविजन और टेलीफोन से पहले सफाई की सही व्यवस्था जरूरी है. पश्चिमी देशों में सीवर तीनचार सौ वर्ष पहले ही डलने शुरू हो गए थे जब कि बिजली तक का ईजाद नहीं हुआ था और वास्तुकला की तकनीक बहुत पिछड़ी थी.

हमारे यहां चूंकि एक बहुत बड़ी संख्या में नाममात्र का पैसा ले कर भंगी का काम करने वाले लाखों व्यक्ति हैं, हमारे नियोजक इस समस्या की ओर ध्यान ही नहीं देते. वे हिसाब लगाते हैं कि गुलामों से भी बदतर जीवन जीने वाला भंगी सीवर से कहीं सस्ता है तो फिर कौन इस बेकार की सी चीज पर खर्च करे. हां, यदि ब्राह्मण, क्षत्रिय व वैश्य को यह काम करना पड़ता तो बात दूसरी थी.

आश्चर्य [illegible] है कि वैज्ञानिक शोधों पर अरबों रुपए और एशियाड पर एक हजार करोड़ रुपए खर्च कर सकने वाले देश को अपने पखाने साफ करने के लिए विदेशी आर्थिक सहायता की भीख मांगनी पड़ती है.

110 शहरों में खुले पाखानों के स्थान पर बंद फ्लश टाइप पाखाने बनाने की योजना अभी स्वीकार की गई है. पर इसलिए नहीं कि हमारे प्रबंधकों को इन के प्रति अपनी जिम्मेदारी का अहसास हो गया है, बल्कि इसलिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ के विकास कार्यक्रम के अंतर्गत हमें मुफ्त का पैसा मिलने वाला है. विदेशियों को हमारे पाखानों की चिंता है तो क्या हर्ज वरना भला इस क्षुद्र काम के बारे में सोचने की हमें फुरसत कहां?

मंत्रिमंडल के मोहरे बदले

श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने मंत्रिमंडल में एक बार फिर फेरबदल की है. श्री प्रकाशचंद्र सेठी को गृह मंत्री बना दिया, श्री साठे के स्थान पर श्री नरेंद्रकुमार सालवे को राज्य स्तर का सूचना मंत्री बना दिया, चार नए मंत्री नियुक्त किए, दो को निकाल दिया, कुछ की जिम्मेदारियां बढ़ा दीं और कुछ से महत्त्वपूर्ण विभाग छीन लिए.

इस परिवर्तन में केवल एक ही बात महत्त्वपूर्ण हुई है. वह है संजय गांधी की युवा कांग्रेस के तीन महारथियों को लेना. गुलाम नबी आजाद, रामचंद्र रथ और अशोक गहलोत संजय गांधी के समर्थक थे और उसी के सहारे जीते थे. संजय की मृत्यु के बाद इन्हें भुला दिया गया था, पर अब मेनका गांधी की नई पार्टी के डर से इन्हें दोबारा पनाह दे दी गई है. यह अन्य संजय समर्थकों को इशारा है कि वे मेनका गुट में न जाएं.

मंत्रिमंडल में फेरबदल अब श्रीमती इंदिरा गांधी का एक हर रोज का खेल बन गया है जिस में वे अपने मोहरों को इधरउधर करती रहती हैं. देश की समस्याओं को सुलझाने और देश की गरीबी से निबटने के [illegible] ध्येय किसी न किसी

तरह सत्ता में बने रहना हो गया है. इस के लिए वह न अपने दल में किसी को उभरने देना चाहती हैं और न ही बाहरी दलों में. उन की अधिकतर कार्यक्षमता इसी तरह की चालबाजियों में लग जाती है.

इस में कोई संदेह नहीं कि इस उद्देश्य में उन्हें पूरी सफलता मिल रही है. अपने दल में वह सर्वेसर्वा हैं. उन की इच्छा के बगैर कोई एक पत्ता भी नहीं हिला पाता. मुख्य मंत्री एजेंटों से ज्यादा महत्त्व नहीं रखते जो केंद्रीय कार्यालय की मर्जी पर जिंदा हैं. केंद्रीय मंत्री फाइलों पर औपचारिक हस्ताक्षर करने के लिए बनाए गए हैं. वे कभी भी इंदिराजी की सत्ता को चुनौती नहीं दे सकते.

इस से हानि हो रही है तो देश को हो रही है. इतने विशाल देश में हर रोज सैकड़ों महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं. ये सभी निर्णय अब प्रधान मंत्री कार्यालय में ही लिए जाते हैं जिन्हें मुख्य मंत्री व केंद्रीय मंत्री मात्र संवाहकों की तरह आगे खिसका देते हैं. चूंकि एक अकेली प्रधान मंत्री के पास समय का अभाव होता है, हजारों मामले या तो लंबे समय तक लटके रहते हैं या फिर उन पर अधकचरे निर्णय ले लिए जाते हैं.

जब जनता शोर मचाती है तो संबंधित मंत्री को आगे कर दिया जाता है पर वह बेचारा क्या करे, क्या कहे? श्रीमती इंदिरा गांधी ने अपने दल में नेतृत्व की प्रतिभा को इस बुरी तरह कुचल दिया है कि मंत्री चाहे जिस भी विभाग में हो, अपनी कार्यकुशलता दिखा नहीं पाता और इसी वजह से सरकार के सभी विभाग घिसटघिसट कर चल रहे हैं जिन पर जनता के हजारोंकरोड़ों रुपए बरबाद किए जा रहे हैं. इस नए परिवर्तन ने इस बरबादी को बढ़ाया ही है, घटाया नहीं.

भारतीय उद्यमी की मुसीबत

मध्य अफ्रीका के देश युगांडा में भारतीय लोग काफी संख्या में बसे हुए थे. वहां उन्होंने उद्योग और व्यापार में काफी उन्नति की थी. खुद तो वे समृद्ध बने ही थे, युगांडावासियों को भी इस से लाभ पहुंचता था.

पर करीब 12 वर्ष पूर्व एक गुंडे किस्म के व्यक्ति ने सत्ता हथिया ली और सारे देश को अपनी मिल्कियत समझ कर मनमानी करना शुरू कर दी. यह महाशय जो ईदी अमीन के नाम से मशहूर थे, अपने शेखचिल्ली की तरह के कारनामों के लिए जाने जाते थे. इन्होंने न केवल कई लाख युगांडावासियों को मौत के घाट उतारा, अंतरराष्ट्रीय क्षेत्र में भी अपनी धाक जमाने के लिए अनेक स्टंट रचे.

इन्होंने एक ब्रिटिश पादरी को गिरफ्तार कर लिया और कहा कि उसे केवल तब छोड़ा जाएगा जब ब्रिटिश महारानी एलिजाबेथ उन के सामने आ कर, घुटने टेक कर माफी मांगे. इन का दूसरा बहुत मशहूर कारनामा था एक हवाई जहाज का अपहरण, जिस में 200 से अधिक इजराइली यात्री थे. वह तो इजराइल ने आश्चर्यजनक चुस्तीफुरती और दिलेरी से काम लिया और इजराइल से हवाई कमांडो भेज कर युगांडा के हवाई अड्डे एनटेबी से इन बंधकों को छुड़ा लिया.

ईदी अमीन का एक और कारनामा था भारतीय उद्योगपतियों व व्यापारियों की संपत्ति जब्त कर के उन्हें देश से बाहर निकाल देना. लगभग 70,000 व्यक्तियों को इस प्रकार निकाला गया और उन के उद्योग, व्यापार युगांडावासियों को सौंप दिए गए. नतीजा वही हुआ जो होना था– सब कारोबार चौपट.

जब भारतीय लोगों को युगांडा से निकाल दिया गया तो युगांडा का उद्योग व्यापार एकदम ठप हो गया, क्योंकि वहां के निवासी उन उद्योगों को चला नहीं सके. भुखमरी, बेरोजगारी और बदअमनी इतनी बढ़ी कि एक रोज ईदी अमीन का ही सफाया हो गया और उसे भाग कर पश्चिमी एशिया में शरण लेनी पड़ी.

अब 10 वर्ष बाद युगांडा की नई सरकार ने भारतीय उद्योगपतियों को फिर निमंत्रण दिया है और उन की जमीन,

जायदाद, कारखाने, दुकानें वापस लौटाने का वादा किया है, [illegible] वर्ष तक नहीं बेचेंगे.

पर अफ्रीका के देशों के शासकों का विश्वास अधिक नहीं किया जा सकता. अभी हाल ही में केन्या की राजधानी नैरोबी में वायुसेना के सिपाहियों ने विद्रोह किया. इन सैनिकों और वहां के अन्य लोगों ने पहला वार भारतीय दुकानों, कारखानों और मकानों पर किया. लगभग 40 स्त्रियों पर बलात्कार किया गया. इन अपराधियों के विरुद्ध कोई कारवाई की गई, इस की कोई खबर नहीं मिली है.

शराब का कमाल

केरल में जहरीली शराब पीने से लगभग 60 व्यक्तियों की मौत हो गई और सैकड़ों लोग बीमार हो गए. 20 से 70 वर्ष की आयु के ये खेतिहर मजदूर ओनम त्योहार की खुशी में शराब अपने गलों से नीचे उतारने ठेकों पर गए थे, पर वहां उन्हें बोतलों में जहर मिला.

इस घटना पर न तो आश्चर्य व्यक्त किया जाना चाहिए, न अफसोस. ये लोग वयस्क थे, अपना अच्छाबुरा समझते थे. शराब पी कर इन्हें तंदुरुस्ती मिलेगी, इस की इन्हें कोई अपेक्षा थी भी नहीं. ये तो वैसे ही जीवन के गम भुलाने के लिए शराब के ठेकों पर गए थे और यदि वहां उन की मृत्यु हो गई तो इसे सुखद वरदान ही समझना चाहिए क्योंकि न रही जिंदगी, न रहे गम.

रही बात उन के परिवारों की तो वे पहले ही गमगीन थे. जब कमाऊ सदस्य अपनी आमदनी का मोटा हिस्सा शराब की भेंट चढ़ा रहे हों तो उन के यहां खुशियां कहां रह सकती हैं? दो वक्त का खाना जुटाने के लिए पत्नी और बच्चों को पहले भी खुद मेहनत करनी पड़ती थी, अब भी वे खुद ही करेंगे.

आश्चर्य की बात अगर है तो यह कि केरल मंत्रिमंडल को इस पर गहरा अफसोस हुआ. मानो देश की महान विभूतियों की मृत्यु [illegible] के अवसर पर होने वाले कई उत्सवों को न मनाने का आदेश दिया. यही नहीं हर मृतक के परिवार को 5,000 रुपए पुरस्कार में दिए गए. बीमारों को 2,000 रु. पुरस्कार में दिए गए.

लेकिन केरल मंत्रिमंडल के इस फैसले का कारण स्पष्ट है. आज देश में अधिकांश शराब सरकार खुद ही बेचती है. ठेकों की नीलामी, आबकारी, कमीशन आदि से सरकारों को बहुत मोटी आमदनी होती है. हर राज्य के मंत्रिमंडल में आबकारी विभाग प्राप्त करने के लिए भारी तिकड़में लगती हैं, क्योंकि इस विभाग के मंत्री की चारों उंगलियां घी में और सिर कड़ाही में रहता है.

गांधीजी के नाम पर कहने को तो ये सरकारें शराबबंदी का प्रचार करती हैं, पर वास्तव में शराबखोरों को सब तरह के प्रोत्साहन देने में हिचकती नहीं.

पाठ्य पुस्तकों की दुकान सात बजे बंद करने का आदेश होगा पर शराब की दुकानें रातरात भर खुली रहेंगी. सस्ते अनाज की दुकानों की चाहे कमी हो, शराब के ठेकों की दुकानें सरकारों की मेहरबानी से हर सुविधाजनक स्थान पर खुल जाएंगी. शराबियों की सुविधा के लिए पुलिस भी तैनात रहेगी चाहे शहर में जितने मर्जी डाके पड़ रहे हों.

जब इस तरह के लुभावने प्रबंध कर के ग्राहक को शराबखाने तक लाया जाएगा तो निश्चित ही दुर्घटना होने पर असली दुकानदार—यानी सरकार को मुआवजा तो देना ही होगा. इसी लिए मंत्रिमंडल ने अपने ग्राहकों की मृत्यु पर मुफ्त इलाज कराया, खाना बंटवाया और पैसा भी दिया.

इस से पहले ऐसे जिन मामलों में सरकारी मुआवजा मिला है, अधिकतर मामलों में मृतकों के संबंधियों ने मुआवजे की राशि को शराब में ही लुटा दिया है.

अब इस मामले में अफसोस प्रकट कर के व झूठी सांत्वनाएं दे कर मगरमच्छ के आंसू बहाने से क्या फायदा? ●

पाकिस्तान

आज से पांच वर्ष पूर्व जनरल जियाउल हक ने पाकिस्तान का प्रशासन अपने हाथ में ले लिया था. तब उन्होंने वादा किया था कि वह शासन केवल 90 दिन के लिए अर्थात नए चुनाव होने तक है. लेकिन ज्योंज्यों यह अवधि पूरी होने के निकट आती गई, पाकिस्तान में चुनाव होने की संभावनाएं न्यून से न्यूनतर होती गई.

एक सिपाही, जिस का राजनीति से कोई संबंध नहीं था और जो शासन संभालने के समय संसार की दृष्टि में अंगरेजी सेना के अफसर के कार्टून से अधिक कुछ भी नहीं था, आज भी सत्ता पर कब्जा किए हुए है. किसी भी व्यक्ति का पाकिस्तान की राजनीति में पांच साल तक टिके रहना कोई मामूली सफलता नहीं है.

जिया सेनाध्यक्ष का पद हासिल करने में इसलिए सफल रहे क्योंकि जिस समय पाकिस्तान की पूरी बागडोर जुल्फिकार अली भुट्टो के हाथ में थी उस समय वह उन्हें प्रसन्न करने में कामयाब हो गए थे. उस समय कई

वफादार रहने की कसम खाई थी.

और जल्दी ही इस वफादारी की परीक्षा का समय भी आ पहुंचा. मार्च, 1977 में भुट्टो की पाकिस्तान पीपल्स पार्टी आम चुनावों में जीत गई. उन के दल को इतना जबरदस्त

जिया का कसता शिकंजा

पाकिस्तानी जनता पर जिया का शिकंजा लगातार कसता जा रहा है नएनए कानून और इसलाम का आतंक बिठा कर उन्हें धमकाया जा रहा है. भीतर ही भीतर फैल रहे इस असंतोष का अंजाम क्या होगा?

जनरल जिया से वरिष्ठ थे. लेकिन भुट्टो किसी ऐसे आदमी की तलाश में थे जो उन के प्रति वफादार रहे. भुट्टो का खयाल था कि केवल जिया ही उन के वफादार हो सकते हैं. कहने को तो यहां तक कहा जाता है कि जिया ने कुरान पर हाथ रख कर भुट्टो के प्रति

बहुमत मिला कि लोगों को यह संदेह हो उठा कि कहीं चुनावों में गड़बड़ी तो नहीं की गई है. विरोधी दलों के नेताओं ने पहले से ही निशान लगे मत पत्रों की गड्डियों की गड्डियां पेश कर यह सिद्ध कर दिया कि चुनावों में भारी हेराफेरी हुई है.

जैसे ही जालसाजी के ये प्रमाण सामने आए, कुछ लोगों की भीड़ सड़कों पर निकल आई और प्रदर्शनों का एक जबरदस्त सिलसिला चल निकला. लोगों को भुट्टो के दल के जीतने का तो विश्वास था, लेकिन कोई यह सोच भी नहीं सकता था कि इन चुनावों में विरोधी दलों का बिलकुल सफाया ही हो जाएगा. फिर कुछ चुनाव क्षेत्रों में गड़बड़ी होने के निश्चित प्रमाण भी लोगों के हाथ लग गए.

और जब जनता सड़कों पर निकल आई तो पुलिस तथा अर्धसैनिक टुकड़ियों द्वारा उसे काबू में कर पाना असंभव हो गया. अब केवल सेना ही स्थिति को संभाल सकती थी.

भुट्टो सहित सभी राजनीति बाज संभवतः इस बात से अनजान थे कि देश में कानून और व्यवस्था को बनाए रखने का काम सेना के हाथ में सौंप कर वे कितना बड़ा खतरा मोल ले रहे हैं.

सेना पहले भी सत्ता का स्वाद चख चुकी थी. इस्कंदर मिर्जा, अय्यूब खान तथा याहया खान पहले ही बरसों तक देश का शासन चला चुके थे. जब जिया ने सोचा कि अब उस की बारी है तब भुट्टो को कोई आश्चर्य नहीं होना चाहिए था.

आरंभ में देख कर नहीं लगता था कि जिया जैसा आदमी ज्यादा दिनों तक टिक पाएगा. उन के वक्तव्यों में कौशल की कमी स्पष्ट झलकती थी. वह बातबात में बीते औपनिवेशक काल की कसमें खाते थे. उन का भौंडा शरीर, लंबीलंबी मूंछें और भावहीन अंदर को धंसी आंखें उन्हें एक उपहासास्पद व्यक्तित्व बना देती हैं.

पाकिस्तान में उन को ले कर जल्दी ही कितने ही चुटकुले पेश किए जाने लगे. जिया को स्वयं नहीं मालूम था कि वह देश को किस दिशा में ले जा रहे हैं.

आखिर सेना ने जनता की आवाज को दबा दिया. जिया को अब जैसे खुली छूट मिल गई और उन्होंने अपने लड़खड़ाते कदम मजबूत करने शुरू कर दिए.

90 दिन की अवधि बीत चुकी थी. महीनों की लड़ाई के बाद जब लोगों के हिस्से में मात्र सैनिक शासन आया तो संघर्ष के लिए उन का बचाखुचा उत्साह भी जाता रहा.

जिया हर दृष्टि से 'खुदा परस्त' आदमी हैं. उन्होंने इसलामी कानूनों के आधार पर सुधार करने शुरू कर दिए. वैसे तो इस की शुरुआत भुट्टो के समय में हो चुकी थी. भुट्टो ने दक्षिण पंथी मुल्लाओं का समर्थन प्राप्त करने की गरज से संपूर्ण देश में पूर्ण नशाबंदी की घोषणा कर दी थी. जिया ने भी इस परंपरा को कायम रखा.

अपनी धार्मिकता के अलावा राजनीतिक कारणों से भी उन्हें इसलाम की आवश्यकता महसूस हुई. क्योंकि उन्हें उस विचारधारा की खास आवश्यकता थी जो केवल इसलाम ही दे सकता था. उन्होंने कानून व्यवस्था में 'सुधार' लाने का निश्चय किया जिस से देश में 'निजाम-ए-मुस्तफा' कायम हो सके. इस से एक बात बिलकुल स्पष्ट हो गई कि अब वह देश के कामचलाऊ प्रशासक के स्थान पर उस का शासक बनने का सपना देखने लगे हैं.

नए कानूनों के लागू होते ही उन की छवि भी बदली. उपहासास्पद सा दीखने वाला यह व्यक्ति अब कोड़े लगाने वाले और अंगभंग आदि करने वाले जिया के रूप में नजर आया. इस से देश और विदेश दोनों के लोग उन की ओर खिंचे. खुले आम विशाल भीड़ के सामने कोड़े लगाए जाने लगे. इसी प्रकार का एक दृश्य रावलपिंडी में एक अधबनी इमारत की छत पर उपस्थित किया गया. हट्टेकट्टे सिपाही अपराधी की पिटाई से पूर्व अपनी बेंतें हवा में लहराते हुए दीख पड़े.

अधिकतर अपराध शराब पीने और वेश्यावृत्ति से संबंधित थे. इस प्रकार के अपराधों में सार्वजनिक स्थलों पर सजा देने की एक लहर सी चली जो धीरेधीरे बाद में शांत हो गई.

इसलाम धर्म में हाथ काटने की सजा का प्रावधान है. लेकिन इस कानून को कभी भी प्रयोग में आते नहीं देखा गया. इस बात में भी संदेह है कि कोई भी डाक्टर जिया के इस आदेश का पालन करने के लिए तैयार हो पाएगा. लेकिन इस प्रकार के कार्यकलाप से जिया की छवि एक क्रूर शासक के रूप में जरूर उभरी.

भुट्टो को फांसी क्यों दी

जिया को नियुक्त करने वाला व्यक्ति भुट्टो था. लेकिन जिया ने भुट्टो को ही सत्ता से उखाड़ कर जेल के सींखचों में बंद कर दिया और अंत में फांसी के फंदे पर लटका देने में भी जरा सी हिचकिचाहट नहीं दिखाई.

भुट्टो भी स्वयं कोई कम निर्दयी नहीं था. 1977 से काफी समय पूर्व उन्होंने सेना की शक्ति को कुचलने के लिए 'फेडरल सिक्योरिटी फोर्स' बनाई थी. यह एक समानांतर अर्धसैनिक शक्ति थी जो सीधे भुट्टो के हुक्म का पालन करती थी.

एक बार सत्ता को हस्तगत करने के बाद जिया और उस की सेना के हित में यही था कि जैसे भी हो, भुट्टो को सत्ता से बाहर उठा फेंकें. इसी लिए भुट्टो पर हत्या के षड्यंत्र का आरोप लगाया गया. यह विवादास्पद मुकदमा काफी लंबा खिंचा और अंत में भुट्टो को फांसी की सजा सुना दी गई. केवल जिया ही उन्हें माफी देने की स्थिति में थे. लेकिन उन्होंने ऐसा करने से इनकार कर दिया. उन के विचार से न्यायालय ने भुट्टो पर लगे आरोपों पर निष्पक्ष रूप से विचार कर के ही उन्हें यह सजा सुनाई थी.

असली कारण यह था कि भुट्टो को जन समर्थन प्राप्त था और छोड़ दिए जाने पर वह अपना बदला जरूर लेते. इसलिए जिया द्वारा उन्हें छोड़ना अपनी खुद की मौत का परवाना लिखने जैसा था. रावलपिंडी के बाजारों में अकसर लोगों को यह कहते सुना जाता था "कब्र एक है और आदमी दो."

जिया को पूरा विश्वास था कि भुट्टो को जिंदा छोड़ देना उन की अपनी बरबादी का ही कारण बनेगा. इस से पूर्व कि रावलपिंडी की सड़कों पर सुबह की नमाज के लिए पहली अजान सुनाई पड़ती, कड़ी सफाई से भुट्टो को फांसी लगा कर उन का शव हवाई जहाज से सिंध भेज दिया गया.

फांसी लगने वाले दिन मैं सुबह चार बजे रावलपिंडी की केंद्रीय जेल के सामने खड़ी थी. भीतर कुछ असमान्य घट रहा है, इस का यदि कोई चिन्ह था तो जेल के बाहर

भुट्टो का खयाल था कि जिया ही उन के वफादार हो सकते हैं लेकिन जिया ने उन्हें फांसी के फंदे पर लटका दिया.

खड़ा एक वरिष्ठ पुलिस अफसर जिस का पाजामा उस के लंबे कोट से झांक रहा था. भुट्टो के करीबी समर्थक पहले ही जेल में ठूंसे जा चुके थे. लेकिन अधिकांश खुले ही घूम रहे थे. उन्होंने केवल व्यर्थ के रोने पीटने और खोखली धमकियों से अपनी नपुंसकता का सुबूत दिया था. नेतृत्वहीन पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के कार्यकर्ता कुछ भी कर पाने में अक्षम रहे. अपने इस कृत्य से जिया विदेशों में लोगों की दृष्टि में कितने भी गिरे हों, पर अपने घर में वह अब पूर्ण रूप से सुरक्षित थे.

भुट्टो पाकिस्तान के पहले चुने हुए नेता थे, जो एक महान अंतरराष्ट्रीय व्यक्तित्व बन चुके थे. उन्होंने लाहौर में इसलामी शिखर सम्मेलन बुलाया था और 1972 में भारत से शिमला समझौता किया था. दुनिया का कोई भी देश उन को फांसी दिए जाने के पक्ष में नहीं था.

अपने इस कृत्य से जिया अंतरराष्ट्रीय घृणा के पात्र बन गए. लेकिन सारे संसार का जनमत भी कुल मिला कर उन्हें हिला नहीं पाया. अपने दृढ़ निश्चय का प्रभावपूर्ण परिचय देते हुए उन्होंने दिखा दिया कि उन के लिए विश्व के देशों का उतना महत्त्व नहीं, जितना अपने घरेलू मामलों का. अपने प्यारे नेता भुट्टो के लिए रोज रावलपिंडी की केंद्रीय जेल के बाहर रोने वाली परदानशीन औरतों से ले कर— पोप, प्रधान मंत्रियों, राष्ट्रपतियों की अपील तक जिया ने ठुकरा दी.

जिया के राजनीतिक जीवन के तीसरे चरण की शुरुआत उस समय हुई जब रूस ने उन्हें नवजीवन प्रदान किया. लेकिन तब तक वह मार्शल ला प्रशासक के अलावा राष्ट्रपति भी बन चुके थे. तभी सीमा पार रूसी सेनाओं के आ जाने से उन्होंने सहसा अपने को अग्रिम पंक्ति के एक देश के नेता के रूप में पाया. पाकिस्तान के पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत तथा बलूचिस्तान में अफगान शरणार्थियों का तांता लग गया. भुट्टो, लोगों को कोड़े लगाने और हाथ काटने आदि के सवाल एक तरफ उठा कर रख दिए गए. अब पाकिस्तान की स्थिति बदल चुकी थी. इस से अमरीका जिया का दिल जीतने, उन्हें अपना मित्र बनाने और उन के राष्ट्रपति बने रहने का उपाय करने के लिए सब से अधिक उत्सुक हो उठा.

पाकिस्तान के प्रति अपने इस झुकाव के कारण राष्ट्रपति जिमी कार्टर का अमरीका में काफी विरोध हुआ.

अमरीका ने सहारा दिया

जिया तब तक अमरीका में लोकप्रिय नहीं हुए थे. वह इसलामाबाद में अमरीकी दूतावास पर हुए हमले को रोकने में असफल रहे थे. एक क्रूद्ध भीड़ ने दूतावास पर हमला कर के वहां उपस्थित लोगों को जीवित जलाने का प्रयत्न किया था. जिस समय दूतावास जल रहा था, जिया सुरक्षा सैनिकों के पहरे में साइकिल पर हवाखोरी कर रहे थे. यह एक ऐसी घटना थी जिसे अमरीकी नजरअंदाज नहीं कर सकते थे. लेकिन इस सब के बावजूद अमरीका के उच्चाधिकारी सैनिक तथा वित्तीय सहायता के प्रस्ताव ले कर शीघ्र ही इसलामाबाद के चक्कर काटने लगे.

कार्टर प्रशासन ने सैनिक सहायता की

पहली पेशकश को जिया ने मात्र 'मंगफली का दाना' कह कर लेने से इनकार कर दिया, लेकिन अब एक समझौता हो गया है जिस के तहत अमरीका पाकिस्तान को तीन अरब 20 करोड़ अमरीकी डालर की आर्थिक तथा सैनिक सहायता देगा. जिस में एफ-16 किस्म के 40 लड़ाकू विमान भी शामिल हैं. इस समझौते का भी अमरीका में काफी विरोध हुआ. 1979 में पाकिस्तान की आणविक नीति को ले कर अमरीका ने उस को दी जाने वाली सहायता पर रोक लगा दी थी, लेकिन 1981 में उसे पुनः आरंभ कर दिया गया.

सैनिक समझौतों को ले कर जिया का सब से बड़ा आलोचक भारत रहा है. भारत और पाकिस्तान दोनों ही देशों में इस प्रकार की धारणा प्रबल है कि वे एकदूसरे पर हमला करने के लिए उचित अवसर की ताक में हैं. इस बात को ले कर भी काफी कूटनीतिक प्रतिद्वंद्विता चल रही है कि कौन सा देश वास्तव में युद्ध न करने का समझौता या मैत्री संधि करने में दिलचस्पी रखता है तथा कौन सा देश आक्रमण करने की दृष्टि से समर्थ है.

अब जिया के जीवन का एक और नया अध्याय शुरू हुआ. पाकिस्तानी कूटनीति की सफलता ने उन्हें राष्ट्रपति से अंतरराष्ट्रीय राजनीति विशारद का सम्मानीय दर्जा दिला दिया.

अफगानिस्तान पर हमले के बाद से जिया को अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में अधिकाधिक देखा गया है. यहां तक कि इंग्लैंड की प्रधान मंत्री श्रीमती मारग्रेट थैचर को खुद पाकिस्तान आना पड़ा. संभवतः वह पहले ऐसा नहीं करतीं.

इस वर्ष के अंत में जिया भी वाशिंगटन जाएंगे. संक्षेप में अब उन की स्थिति 'बिरादरी से बाहर' वाली नहीं है. पश्चिमी प्रेस में भी उन की छवि सुधरी है क्योंकि उन के संवाददाताओं के साथ जिया बड़ी उदारता से पेश आए. और अब जिया अंतरराष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने में दिलचस्पी दिखाना चाहते हैं.

उदाहरण के लिए पाकिस्तान ने ईरानइराक युद्ध में मध्यस्थ बनने का प्रयास किया और सब से ताजा मसला फिलस्तीन का है.

जब मैं पाकिस्तान में थी तभी यासर अराफात वहां आए थे. वह पाकिस्तान की मेजबानी से बड़े प्रभावित हुए थे. उन्हीं दिनों जिया ने अपने ब्यानों में कहा कि "फिलस्तीन पाकिस्तान विदेश नीति का सब से महत्त्वपूर्ण मुद्दा है."

लेकिन जिया को अब लगने लगा है कि राजनेता की भूमिका काफी समस्याएं खड़ी कर देती हैं. यासर अराफात का एक अति महत्त्वपूर्ण व्यक्ति के रूप में स्वागत करना और बात है और इजराइल द्वारा फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को कुचलने के लिए सैनिक कारवाई करने पर फिलस्तीनियों को कारगर सहायता देना दूसरी बात है. लेबनान पर इजराइल के हमले के समय जिया ने जो कमजोरी दिखाई उस के विरोध में पाकिस्तान में प्रदर्शन हुए हैं. उन की इस राजनीति विशारद की भूमिका की सफलताअसफलता का निश्चय तो खैर भविष्य ही करेगा.

जिया के पांव जमे हैं.

येनकेन प्रकारेण उन्होंने पांच साल से पाकिस्तान में अपने पांव जमा रखे हैं. वह राष्ट्रपति से ले कर अंतरराष्ट्रीय व्यक्ति तक सभी कुछ बन गए हैं. लेकिन प्रति वर्ष की तरह अब यह सवाल किया जा रहा है कि आखिर वह कब तक सत्ता में बने रह सकेंगे.

अभी तक तो अपने पतन की सभी भविष्यवाणियों को जिया ने झूठा सिद्ध कर दिखाया है. लेकिन एक बात मेरे समक्ष पाकिस्तान यात्रा कर लेने से बिलकुल साफ हो गई है कि यदि कोई परिवर्तन आया तो वह भी सेना से ही आएगा. जिया अभी तक आराम से विरोधी दलों को काबू में रखे हुए हैं. उन की व्यक्तिगत सुरक्षा का कड़ा इंतजाम है. उन का क्षेत्र अभी तक केवल सेना ही है. बंगला देश के भूतपूर्व राष्ट्रपति जिया उर रहमान की तरह उन्होंने अपना कोई राजनीतिक दल या आधार बनाने की चेष्टा

नहीं की हैं. उन्होंने सेना से त्यागपत्र भी नहीं दिया है. वह राजनीतिक सभाओं को संबोधित नहीं करते. जनता के प्रतिनिधियों के नाम पर जिया द्वारा गठित स्थानीय समितियां हैं. मजलिस-ए-शूरा में उन के चुने हुए आदमी हैं जो घुमाफिरा कर उन्हीं की जबान बोलते हैं.

मजलिस को वह अवश्य संबोधित करते हैं. प्रतिदिन सरकारी प्रेस में उन के धुआंधार भाषण छपते हैं. उल्लेखनीय है कि वह केवल रावलपिंडी रेड क्रेसेंट सोसाइटी जैसे छोटेछोटे जनसमुदायों को ही संबोधित करते हैं. यह उन के जन समर्थन के अभाव का सूचक है और संभवतः उन की असुरक्षा की भावना का भी. परंतु इस बात में भी कोई संदेह नहीं है कि पांच वर्ष बीत जाने के बाद विरोधी दलों की विरोध शक्ति भी बिलकुल क्षीण हो चुकी है.

से स्वीकार किया, लेकिन उन्होंने इसे सरकार की कूटनीति का फल बताया. उन्होंने कहा कि राष्ट्रपति जिया का कहना है कि वह तभी चुनाव कराएंगे जब देश में उचित ढंग के राजनीतिक दल कायम होंगे. लेकिन यहां तो नेताओं को एक प्रांत से दूसरे प्रांत में भी जाने से रोका जाता है. स्वयं उन्हें पश्चिमोत्तर सीमा प्रांत में नहीं जाने दिया गया. कुछ दिन बाद एन.डी.पी. के नेता वली खान तथा उन के 40 साथियों को लाहौर में सभा करने के आरोप में गिरफ्तार कर लिया गया.

राजनीतिक दलों पर पाबंदी है इसलिए वह सभा तथा मलिक कासिम की प्रेस कानफ्रेंस दोनों ही गैर कानूनी थी. लेकिन उन के जैसे संवाददाता सम्मेलन जिन का वास्तव में कोई महत्त्व नहीं है, किए जा सकते हैं. इस नीति में ही जिया की नीति की सफलता का रहस्य छिपा है.

जिया के जासूस देश में चप्पेचप्पे पर फैले हुए हैं. होटल के बैरों से ले कर टैक्सी ड्राइवर तक कोई भी उन का मुखबिर हो सकता है.

पाकिस्तान पीपल्स पार्टी के नेतृत्व में प्रजातंत्र की बहाली के लिए चलने वाले सप्तदलीय आंदोलन को जोर पकड़ने में अभी काफी समय लग जाएगा. भुट्टो के पुत्र मुर्तजा के नेतृत्व में अल जुलिफकार आतंकवादी गुट ने कभीकभी हिंसक कारस्वाइयां की हैं, लेकिन इस की ओर से जो दावे किए जाते हैं वे बहुत बढ़ाचढ़ा कर पेश किए जाते हैं. हकीकत तो यह है कि पाकिस्तान में सब विरोधी दल लगभग निष्क्रिय से हो चुके हैं.

पाकिस्तान में मुझे एक संवाददाता सम्मेलन में उपस्थित होने का अवसर मिला था. मुसलिम लीग के दो गुटों में से एक के महत्त्वपूर्ण नेता मलिक मुहम्मद कासिम पत्रकारों को संबोधित कर रहे थे. उन्होंने विरोधी दलों की प्रभावहीनता को स्पष्ट रूप

हो सकता है जिया को लोगों का समर्थन प्राप्त न हो और चुनाव होने पर वह पाकिस्तान पीपल्स पार्टी व भुट्टो के परिवार को पुनः सत्ता में ले आएं. लेकिन फिर भी वे हिंसक स्तर पर जिया के विरुद्ध नहीं हैं.

तीसरे विश्व के माप दंडों की दृष्टि से जिया एक उदार तानाशाह है. उन का शासन एक लघु स्तर की तानाशाही है. जो कोई भी राज्य के लिए खतरा बनता है उसे जेल में ठूंस दिया जाता है. विरोधी दल में काफी भीतरी फूट है. जिया भी इस फूट को एकता में न बदलने देने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं.

जो लोग सरकार के साथ सहयोग नहीं करते, उन्हें इस की सजा भुगतनी पड़ती है. शेख रशीद भुट्टो मंत्रिमंडल के एक वरिष्ठ एवं निष्ठावान मंत्री थे. वह एक वृद्ध

तथा बीमार आदमी हैं, लेकिन विचारधारा से वह समाजवादी हैं. वह किसी भी कीमत पर सेना के साथ सहयोग करने को तैयार नहीं हैं. 1977 से वह लगातार जेल आतेजाते रहे हैं. जब मैं ने पाकिस्तान छोड़ा तो वह अपने लाहौर के मकान में नजरबंद थे. उन के पास इतना धन भी नहीं था कि वह अपना इलाज करा सकें. वह अपना मकान बेच कर अपना इलाज कराना चाहते थे, लेकिन सरकार ने उन के मकान बेचने पर ही पाबंदी लगा दी.

जिया : जनता की नजर में

जिया के जासूस देश में चप्पेचप्पे पर फैले हुए हैं. होटल के बैरों से ले कर टैक्सी ड्राइवरों तक कोई भी उन का मुखबिर हो सकता है. उन का यह जासूसी जाल काफी सूक्ष्मता से फैला हुआ है.

अपनी यात्रा के दौरान मैं ने एक सफेद पोश खुफिया विभाग के आदमी को अपनी कार का नंबर लेते हुए देखा. यदि किसी के घर में कोई विदेशी ठहरा हुआ है तो हो सकता है कि खुफिया विभाग का आदमी उस का दरवाजा खटखटा कर उस के विदेशी मित्र के बारे में खुल कर पूछताछ करे.

यह बात नहीं कि जिया के शासन में लोगों को कोई विशेष कठिनाई का सामना करना पड़ रहा हो. [illegible]टों के जमाने में भी पाकिस्तान के नागरिक राजनीतिक रूप से कोई बहुत अधिक स्वतंत्र नहीं थे. और जहां तक भौतिक संपन्नता का प्रश्न है, उस के चिन्ह सारे पाकिस्तान में देखे जा सकते हैं. जिया के शासन में हो सकता है कि देश ने कोई विशेष प्रगति न की हो, लेकिन वह अवनति के मार्ग पर भी नहीं जा रहा है. गत पांच वर्षों में अच्छी फसलें हुई हैं. इस के अतिरिक्त वहां की खुशहाली में प्रवासी पाकिस्तानियों द्वारा भेजा गया धन भी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है.

लेकिन सतह के नीचे कहीं काफी असंतोष पनप रहा है. सेना में पंजाबियों का वर्चस्व होने के कारण अप्रत्यक्ष रूप से देश की बागडोर उन के हाथ में है. कबायली इलाकों में लाखों शरणार्थी मौजूद हैं जो स्थिति में कभी भी असंतुलन पैदा कर सकते हैं. लेकिन परिवर्तन आने में अभी काफी समय लग सकता है.

जिया ने शक्ति का खेल खेलने में काफी महारत दिखाई है. धीरेधीरे लोगों के सामने उन के छिपे हुए गुण प्रकट हुए हैं. कौन कह सकता है कि अगले वर्ष इस समय जिया अपने राष्ट्रपति शासन का छठा वर्ष न मना रहे हों? ●

दासिल्या की भूख हड़ताल

आज के जमाने में भूख हड़ताल आम बात है. जराजरा सी बात पर लोग भूख हड़ताल कर देते हैं. लेकिन वेटिकन में दासिल्या नामक व्यक्ति द्वारा की गई भूख हड़ताल का किस्सा बड़ा मजेदार है.

यों तो दासिल्या ब्राजिल में रहता है, पर हाल ही में वेटिकन आ कर उस ने भूख हड़ताल की. उस का कहना था कि पोप जान पाल द्वितीय जब तक उस की बात नहीं मानेंगे, वह भूख हड़ताल जारी रखेगा

दासिल्या ब्राजिल की सीनेट में एक ड्राइवर है. 1980 में पोप जान पाल द्वितीय ने अपनी ब्राजिल यात्रा के दौरान दासिल्या की एक भेंट (एक गधा) स्वीकार की थी, लेकिन वे उसे अपने साथ नहीं ले गए. अब दासिल्या यह दुहाई दे रहा है कि दुनिया के गरीबों के नाम पर पोप उस का उपहार स्वीकार करें. उल्लेखनीय है कि उस गधे को विमान [illegible] वेटिकन ले जाने में [illegible] होंगे.

"मां, मैं जा रही हूं," आरती ने [illegible] जोर से कहा कि मां के अलावा उसी मकान में बगल में रहने वाले श्याम ने भी सुन लिया. वह भी उसी प्रकार चिल्ला कर अपनी मां से बोला, "मां, सुन रही हो न, मुझे दफ्तर जाना है. जल्दी से खाने का डब्बा दे दो."

आरती उद्योग भवन में काम करती थी और श्याम शास्त्री भवन में वरिष्ठ क्लर्क था. आरती के पिता की मृत्यु तभी हो गई थी जब वह अभी बच्ची ही थी. उसे उस की मां ने ही पालापोसा था. लंबी, छरहरी, हलकी सांवली, किंतु तीखे नाकनक्श की आरती यद्यपि अभावों में पली थी किंतु बहुमुखी प्रतिभा की धनी थी. वह न केवल एक अच्छी चित्रकार थी, बल्कि बहुत अच्छा गाती भी थी.

श्याम गेहुएं रंग का इकहरे बदन का युवक था और बैडमिंटन का राज्य स्तर का खिलाड़ी था. वह आरती से चारपांच वर्ष बड़ा था. उस के घर में वृद्ध पिता तथा मां और एक बड़ी अनब्याही बहन थी. उन्मुक्त स्वभाव का श्याम यदि सुंदर न था तो उसे असुंदर भी नहीं कहा जा सकता था.

उस की मां अकसर कहती थी कि पहले वह नीतू का विवाह करेगी. फिर श्याम का. लेकिन पिता [illegible] का विवाह करने के इच्छुक थे. कारण? उन का खयाल था कि श्याम की शादी में जो कुछ मिलेगा, उस में अपने पास से कुछ मिला कर वह नीतू का विवाह आसानी से कर सकेंगे.

आरती और श्याम यद्यपि घर से अलगअलग ही निकलते, किंतु शाहदरा के मुख्य बस स्टाप पर एकदूसरे की प्रतीक्षा करते. दिल्ली की बसों पर चढ़ना भी तो सरल नहीं है. अकसर श्याम ही आरती के लिए जगह बनाता. श्याम और आरती लौटते भी साथसाथ थे. शाम को अकसर श्याम आरती के यहां बैठा रहता तथा मांग कर चाय भी पीता. आरती की मां दोनों को अटूट बंधन में बांधने की कामना मन ही मन किया करती थी.

उस रोज जब आरती अपने दफ्तर पहुंची तो उसे अपनी मेज पर पेपरवेट से दबी

गर्भवती हो जाने पर भी आरती को धोखा दे कर श्याम ने उस के आंचल मे दुख और मायूसियां ही भरी हुई थीं पर अतुल का मिलना उस के लिए जैसे सुख और उम्मीदों का खजाना साबित हुआ...

एक सूचना मिली—"मंत्रालय की ड्रामा टीम नाटक प्रतियोगिता में भाग लेने नैनीताल जा रही है. यदि जाना चाहो तो सांस्कृतिक सचिव से मिलो."

आरती की तो वैसे भी नाटकों में रुचि थी. फिर दिल्ली की धूलधक्कड़ भरी जिंदगी से कुछ दिनों के लिए छुटकारा भी मिल जाएगा, यह सोच कर उस ने सांस्कृतिक सचिव को टेलिफोन कर के नैनीताल जाने की अपनी इच्छा प्रकट की तो सांस्कृतिक सचिव ने उसे शाम को दफ्तर के बाद मिलने को कहा.

शाम को दफ्तर से निकलते हुए आरती को कुछ देर हो गई. वह नीचे उतर कर दरवाजे तक पहुंची ही थी कि उसे श्याम मिल गया. उस ने कहा, "तुम्हें आज देर कैसे हो गई? मैं तो बस स्टैंड पर तुम्हारी प्रतीक्षा ही करता रहा."

आरती उलझन में फंस गई. श्याम बस स्टाप पर उस की प्रतीक्षा करने के बाद दफ्तर आया था. यदि वह नहीं गई तो कहीं श्याम बुरा न मान जाए और यदि वह उस के साथ चल देती है तो सांस्कृतिक सचिव से कैसे मिल सकेगी?

अभी वह यह सोच ही रही थी कि एकाएक सर्द हवा का एक झोंका आया और

लगा जैसे आंधी आने वाली है. श्याम ने आकाश की ओर ताका. फिर बोला, "जल्दी चलो, नहीं तो आंधी में फंस जाएंगे."

आरती बेमन से श्याम के साथ बस स्टाप की ओर चल दी. वे मुशकिल से बस स्टाप पहुंच ही पाए थे कि जोरों से आंधी आ गई. उन्हें बस स्टैंड पर आए कुछ मिनट ही हुए होंगे कि जोरों से पानी बरसने लगा. एकाएक आंधी का एक और झोंका आया और उस के साथ ही उस क्षेत्र की बिजली गायब हो गई. दोनों पानी से तरबतर हो गए थे. बस स्टाप पर उन दोनों के अलावा दोएक लोग और थे.

एक तो जोरों की बर्षा और तेज हवा, उस पर घटाटोप अंधेरा, आरती घबरा कर बोली, "श्याम, हम लोग आज घर कैसे पहुंचेंगे?"

श्याम स्वयं ठंड से कांपने लगा था. लेकिन हिम्मत से बोला, "घबराओ नहीं. जब वर्षा तेज है तो जल्दी थम भी जाएगी. बस भी आती ही होगी."

आरती सर्दी और अंधेरे को बरदाश्त नहीं कर पा रही थी. वह श्याम के पास खिसक आई. श्याम ने धीरे से उस की कमर में हाथ डाल कर उसे बगल से अपने साथ चिपका लिया.

पानी पड़ना कुछ हलका हो गया था, लेकिन अंधेरा अभी भी था. इतने में श्याम को दूर से बस आती दिखाई पड़ी, उसने आरती की कमर से हाथ निकाल लिया. लेकिन बस बगैर रुके ही आगे बढ़ गई आरती और श्याम फिर खड़े के खड़े ही रह गए.

कुछ मिनटों के बाद एक स्कूटर बस स्टाप पर आया. श्याम ने उसे रोका और आरती से बिना कुछ पूछे ही उस में बैठ गया. आरती भी उस में बैठ गई. श्याम के 'पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन' कहते ही स्कूटर फर्राटे भरने लगा. पानी लगभग थम चुका था, सड़कों पर चहलपहल शुरू हो गई थी. आटो रिक्शा सड़क पर हिचकोले खाता चला जा रहा था. श्याम हर हिचकोले के साथ जानबूझ कर आरती को छू लेता और आरती भी [illegible] में खोई सी एक आनंद का अनुभव करती. श्याम ने मन ही मन पूरी योजना बना डाली. रेलवे स्टेशन पहुंच कर उस ने बजाए शाहदरा के गाजियाबाद के प्रथम श्रेणी के दो टिकट ले लिए और आरती के हाथ में हाथ डाले लखनऊ जाने वाली गाड़ी में जा बैठा.

सुबह जब आरती सो कर उठी तो उसने स्वयं को आलस्य में डूबा पाया. मन का एक कोना यदि स्वयं को प्रियतम को समर्पित कर देने की खुशियों से भरा था तो दूसरे कोने से संदेह और भय की टीस उठ रही थी. यदि श्याम ने विवाह से इनकार कर दिया तो?

उसे यह याद ही नहीं आ रहा था कि वह घर कैसे पहुंची. कुछ टूटे बिखरे क्षण अवश्य याद आ रहे थे. हालांकि गाड़ी चलने में तब कुछ देर थी, पर श्याम उस का हाथ पकड़ कर प्रथम श्रेणी के डब्बे में चढ़ कर एक कूपे में घुस गया था और बिना यह सोचे कि अगर कोई आ गया तो क्या होगा, स्टेशन से गाड़ी के खिसकने से पहले ही उस ने कूपे का द्वार बंद कर सिटकनी लगा दी थी. उस ने कूपे की सब बत्तियां भी गुल कर दी थीं, केवल पढ़ने वाली बत्ती खुली छोड़ दी थी. फिर अत्यंत अभ्यस्त हाथों से उस ने आरती को समर्पण कर देने के लिए फुसलाया था. और फिर वह उस अंधेरी गुफा में गिरती चली गई थी जहां से बच निकलना मुशकिल था.

शाहदरा आतेआते श्याम ने बत्तियां जला कर कूपे का द्वार खोल दिया था. शाहदरा आने पर वे उतर गए थे. उफ, दिल्ली से शाहदरा तक के 10-15 मिनट के सफर में ही यह क्या हो गया था, पर उस पर कुछ ऐसा उन्माद छाया हुआ था कि वह सही प्रकार कुछ सोचसमझ ही नहीं पा रही थी. फिर भी वह दिमाग पर जोर दे रही थी कि शायद श्याम ने गाजियाबाद तक के टिकट इसलिए लिए थे कि अगर शाहदरा तक वह न माने तो गाजियाबाद तक जाया जा सके. शायद उस नें वहां ठहरने का भी कोई प्रबंध कर रखा होगा. बस में 50 पैसे के टिकट में

बस से पहुंचने की जगह अच्छेखासे रुपए खर्च कर दिए थे. इत [illegible] में महसूस करने के बाद भी उस पर एक अजीब सा नशा छा गया था.

अगले दिन सुबह वह देर तक सोती रही थी. मां ने भी उसे नहीं जगाया था. रविवार होने के कारण छुट्टी जो थी. जब वह उठी तो आवश्यक कार्यों से निवृत्त हो वह मां के पास जा बैठी. मां दोपहर के भोजन के लिए सब्जी काट रही थीं.

"क्या बात है, आरती, आज तू बहुत देर तक सोती रही?"

"क्या करूं, मां, कल की आंधी तो जैसे अंगअंग तोड़ गई. वह तो श्याम साथ में था वरना आ भी न पाती," आरती बोली.

"आरती, सच बता, तू कल होश में थी?"

"कब, मां?"

"जब तू वापस आई थी," मां ने उस की आंखों में झांक कर कहा.

आरती कुछ देर तक चुप रही, फिर साहस जुटा कर बोली, "अच्छा, मां, तुम्हीं बताओ, क्या मैं होश में नहीं थी?".

"ऐसा मैं नहीं कहूंगी, लेकिन मुझे लगा..."

"कि मैं बेहोश हूं, वाह, मां, मैं अगर बेहोश थी तो चल कर कैसे आई?" आरती हंस कर बोली.

"बेहोश न सही... तो शायद मदहोश... आरती, सचसच बता, कल तू इतनी देर कहां रही?"

"मां, तुम यह सब क्यों पूछ रही हो? क्या तुम्हारा मुझ पर से विश्वास उठ गया है?" आरती ने जमीन की ओर देख कर कहा.

मां ने आरती के चेहरे को अपने हाथों में भर लिया, फिर उस की आंखों की कोर में छिपे आंसू पोंछ कर कहा, "बेटी, विश्वास तो बहुत है, लेकिन यह उम्र बड़ी नाजुक होती है."

फिर एक दिन आरती ने श्याम से कहा, "श्याम, मैं अब और अधिक प्रतीक्षा नहीं कर सकती, समय तेजी से खिसक रहा है."

"मेरा अंश, क्या कह रही हो तुम," श्याम ने आरती से कहा.

"आरती, तुम समझती क्यों नहीं? मैं अभी शादी करने की स्थिति में नहीं हूं," श्याम ने उत्तर दिया.

"क्यों?" आरती ने उस की ओर आंखें तरेर कर पूछा.

"अभी तो दीदी का ही ब्याह नहीं हुआ है." श्याम ने सपाट सा उत्तर दिया.

इधर कुछ दिनों से श्याम आरती से कतराने लगा था. आज बड़ी कठिनाई से आरती उसे घेर पाई थी. श्याम ने एकआध बहाना बनाया, लेकिन वह न मानी. वह श्याम को जबरदस्ती कैंटीन ले गई. दो कप काफी मंगवाई, एक कप श्याम की ओर बढ़ा कर दूसरे में स्वयं चुसकियां लेने लगी.

"दीदी की शादी कब तक होगी?" आरती ने श्याम की ओर बिना देखे कहा.

"मैं क्या जानूं? तीन वर्षों से लड़का तो खोजा जा रहा है."

"श्याम, मैं क्या करूं?" आरती कातरतापूर्ण स्वर में बोली.

"क्यों, तुम्हें क्या हुआ है?"

"श्याम, तुम्हारा अंश मेरे पेट में पल रहा है," आरती लड़खड़ाते स्वर में बोली.

"मेरा अंश, क्या कह रही हो?"

"श्याम, इतने कठोर मत बनो. क्या तुम्हें वह तूफान वाली रात याद नहीं है?"

श्याम निरुत्तर हो गया.

कुछ देर तक दोनों मौन बैठे रहे. शायद श्याम कुछ याद कर रहा था. फिर एकाएक तीखे स्वर में बोला, "आरती, मेरा स्वभाव घुमाफिरा कर बात करने का नहीं है. हो सकता है कि मेरी बात तुम्हें बुरी लगे. यह बात अलग है कि भावनाओं में बहते हुए हम ने एकदूसरे की शारीरिक क्षुधा शांत की, लेकिन इस का यह अर्थ नहीं है कि क्षणिक सुख प्राप्त कर लेने के कारण मैं तुम से विवाह कर लूं.

"एक बात और है. तुम उस आंधी वाली रात के बाद नैनीताल नाटक प्रतियोगिता में भी तो गई थीं. क्या यह संभव नहीं कि तुम्हें वहां फिर उसी सुख की कामना हुई हो और तुम ने किसी अन्य के साथ..."

"श्याम, मुझे नहीं मालूम था कि तुम इतने नीचे होगे. पर एक बात याद रखना, मुझे कभी अबला नारी समझने की भूल मत करना." और यह कह कर प्याले की शेष काफी उस ने श्याम के मुंह पर फेंक दी और कुरसी से उठ खड़ी हुई.

श्याम बिलकुल शांत बैठा रहा, उस ने आरती का कोई प्रतिरोध नहीं किया. आरती कुछ क्षणों तक तो खड़ी रही. फिर लंबेलंबे कदमों से अपने दफ्तर की ओर बढ़ गई.

दफ्तर के बंद होने पर आरती जानबूझ कर दूसरे बस स्टाप की ओर चल दी. वह श्याम से नफरत करने लगी थी. वह सोच नहीं पा रही थी कि अब वह क्या करे. मां को अपना दुख बतलाए कि नहीं? क्या गर्भपात करवा ले? लेकिन वह तो एक मासूम जीव की हत्या होगी. उस के मस्तिष्क के एक कोने से आवाज उठी.. श्याम ठीक ही तो कहता है. शारीरिक सुख के भागीदार तो दोनों ही थे. फिर श्याम ही इस का खमियाजा क्यों भुगते? अगर उसे पसंद नहीं था तो वह कूपे की रोशनी गुल करते समय श्याम का प्रतिरोध भी तो कर सकती थी. लेकिन शायद वह भी क्षणिक सुख चाहती थी और फिर वह तो बहादुर होने का दावा भी करती है.

यही सब वह सोचती चली जा रही थी. उसे यह ध्यान भी नहीं रहा था कि वह सड़क पर चल रही है. उस का ध्यान तब टूटा जब उस ने बस के ब्रेक लगने की आवाज के साथ सुना, "अरी, मरना है तो जमना में जा के कूद या रेल के आगे लेट जा. मुझे क्यों बंद करवाना चाहती है?"

एकाएक लपक कर वह एक ओर हो गई. उस के दिमाग में फिर विचार कौंधा, मरना... मरना... मरना. कितना आसान है मरना. नींद की कुछ गोलियां, पोटाशियम सायनाइड को मुंह में रखो और उस के बाद दुनिया से छुटकारा. फिर न कोई चिंता, न कोई दुख. इस विचार के साथ ही उस की आंखों में उस का अपना मृत शरीर, मां का रोनाधोना, फिर डाक्टरी चीरफाड़, सभी कुछ स्पष्ट होता

आरजू

हसीन वादों की शम्में
मुझे जलाने दो,
मजार है मेरे सीने में
आरजुओं की.
—अख्तर अंसारी

चला गया. ऐसी ही मन:स्थिति में वह घर पहुंची. मां उस की बाट जोह रही थीं. उस का थका और उदास चेहरा देखकर मां अपने को न रोक सकीं, बोली, "आरती, क्या हुआ तुझे? तबीयत तो ठीक है न?"

"तबीयत तो ठीक है, मां, बस थक गई हूं, मुझे चाय पिला दो."

"चाय तो बनी रखी है, लेकिन तुझे मेरी कसम, सचसच बता क्या बात है?" मां ने आरती का चेहरा अपनी हथेलियों में भर कर स्नेह से कहा.

आरती अपना मन हलका करने का शायद कोई उपाय ढूंढ़ रही थी, मां से बढ़ कर दूसरा सहारा और कौन हो सकता था? अत: वह फफकफफक कर रो पड़ी, "मां, श्याम ने मुझे धोखा दिया है. अब उस का जीव मेरे पेट में..."

मां ने अपनी हथेलियां उस के चेहरे से हटा लीं. फिर एकाएक उन के हाथों ने गुस्से से आरती की गरदन को कस लिया. आरती मानसिक और शारीरीक रूप से स्वयं शिथिल हो चुकी थी. अत: वह प्रतिरोध न कर सकी. शायद आरती का दम निकल ही जाता, यदि मां स्वयं चक्कर खा कर गिर न पड़ती.

धीरेधीरे आरती ने स्वयं को व्यवस्थित किया और पानी ला कर मां पर छिड़का. थोड़ी देर बाद मां को होश आ गया. पर उस रात मां और बेटी दोनों एकदूसरे के लिए अजनबी बनी रहीं.

सुबह मां ने ही बात शुरू की, "कितने दिन चढ़े हैं?"

"शायद दो महीने," आरती ने उत्तर दिया.

एकाएक मां के मानस पटल पर तूफान वाली रात का चित्र उभर आया. उन्होंने फिर पूछा, "क्या यह तूफान वाली रात में..."

"हां, मां." आरती ने निस्संकोच उत्तर दिया और रात भर वह सोचती रही, "क्या वह अविवाहित रह कर अपने शिशु का पालन पोषण नहीं कर सकती? क्या वह समाज के सामने उदाहरण नहीं प्रस्तुत कर सकती? उस ने श्याम को प्यार किया है, यदि श्याम कमजोर साबित हुआ तो क्या वह भी कमजोर पड़ जाए?

लेकिन आरती की मां कुछ और ही सोच रही थीं. उन्होंने हिसाब लगाया कि अभी डेढ़ मास ही गुजरा है. घरेलू दवाइयों से भी काम चल सकता है. पर वह बोलीं, "देख, आरती, मैं तुझे दिल्ली से दूर ले चलूंगी और चुपचाप सफाई करवा दूंगी."

मां ने अपनी बात कह दी. वह मां के सामने कुछ भी कह नहीं सकी और एक दिन मां के साथ गर्भपात कराने देहरादून चल दी.

जब आरती को होश आया तो उस ने अपने को महिला डाक्टर, नर्सों तथा मां से घिरा पाया. उस के दाहिने हाथ में हलका दर्द हो रहा था. उस में ग्लूकोस की बोतल की सूई लगी हुई थी. उस ने कुछ बोलना चाहा तो मां ने उसे मना कर दिया.

धीरेधीरे उस के स्मृति पटल पर हलकेधुंधले चित्र उभरने लगे. वह मां के साथ देहरादून आई थी. उस ने बहुतों से सुना था कि देहरादून में मातृत्व केंद्र हैं. वह

स्टेशन से बाहर निकली ही थी कि एक तांगे वाले ने आ कर पूछा था, "कहिए, मांजी, कहां चलना है?"

"भई, हमें नर्सिंग होम चलना है, पर ..."

"बोलिए, जिस नर्सिंग होम में कहें, ले चलता हूं."

"भई, तुम तो यहां के रहने वाले हो. यहां कौन सा नर्सिंग होम अच्छा है? हम छोटी जगह से आए हैं, हमें तो यहां के बारे में कुछ भी पता नहीं है."

तांगे वाला बड़ा घाघ था. उस ने सोचा, आज तो अच्छा पंछी हाथ लगा है. वह उन्हें एक ऐसी जगह ले गया जहां उसे पहले भी मरीजों को ले जाने पर कमीशन मिला था. उस नर्सिंग होम की संचालिका कोई प्रशिक्षित डाक्टर न हो कर एक दाई थी. जिस ने कुछ समय एक महिला डाक्टर के पास काम करने के बाद अपना निजी प्रसूति केंद्र खोल लिया था. उस केंद्र में बजाए बच्चे जनने के ज्यादातर गर्भपात कराया जाता था और इस से उस कथित महिला डाक्टर को खूब कमाई होती थी.

नर्सिंग होम में कुल मिला कर चार कमरे थे. डाक्टर के कक्ष के अलावा दो कमरों में दोदो बिस्तर थे और तीसरा आपरेशन व प्रसव कक्ष था.

"आप क्या चाहती हैं? आइए मेरे साथ" आरती को एकाएक सुनाई पड़ा और इस के पहले कि आरती कुछ बोलती, ऊंचे डीलडौल वाली एक गोरीचिट्टी महिला आरती का हाथ पकड़ कर उसे घसीटती हुई आपरेशन कक्ष में ले आई थी.

आपरेशन कक्ष में एक लंबी मेज बिछी थी. एक तिपाई पर कुछ औजार थे. 'डाक्टर' ने आरती को मेज पर लेट जाने को कहा और उस के शरीर का मुआयना करने लगी.

यों तो आरती जल्दी ही निबट गई थी. पर काफी देर वहीं पड़ी आराम करती रही और दो घंटे बाद जब वह कक्ष से बाहर निकली तो उसे असहनीय दर्द था. उस दिन तथा रात भर वह पैड बदलवाती रही थी. लेकिन रक्त के स्राव में कमी नहीं आई थी.

सुबह होतेहोते वह बेहोश हो गई और कब शहर के बड़े हस्पताल में पहुंचाई गई उसे पता ही न चला.

मां बड़ी दुखद परिस्थिति में फंस गईं. आरती को हस्पताल में आए तीन दिन हो गए थे. चौथे दिन उसे होश आया. इस बीच मां जो पैसे लाई थीं, वे भी लगभग समाप्त हो गए. ऐसी स्थिति में वह दिल्ली भी वापस नहीं जा सकती थीं और उधर हस्पताल में हर काम पैसे से ही होता था.

उस दिन वह हस्पताल के सामने खड़ी थी कि उन के पास एक फिएट कार आ कर रुक गई. कार से निकले युवक ने उन पर एक उचटती दृष्टि डाली और फिर वह तेजी से आगे बढ़ गया. लेकिन वह कुछ कदम ही बढ़ पाया था कि वह फिर लौटा और उन से बोला, "अरे रानी बूआ, तुम यहां कैसे?"

मां एकदम अचकचा गईं, लेकिन फिर उन्हें याद आया, अतुल के बचपन का चेहरा. जब वह उन के बगल वाले घर में रहता था और शायद हायर सेकेंडरी में पढ़ता था. विस्मृत चेहरे बड़ी कठिनाई से पुनः स्मृति में आते हैं, तब के दुबलेपतले अतुल और आज के डाक्टर अतुल में बहुत अंतर आ गया था. अतुल की मां बचपन में ही मर गई थीं. धनवान पिता को अपने व्यापार और क्लब से ही फुरसत नहीं थी. इसलिए अतुल का काफी समय आरती और उस की मां के पास गुजरता था.

मां कुछ निर्णय नहीं कर पा रही थीं कि वह उसे आरती के बारे में बतलाएं अथवा नहीं. लेकिन जैसे ही अतुल ने उन के पैर छूने को हाथ बढ़ाए, उन के संयम का बांध टूट गया. वह बोलीं, "बेटा, आरती बहुत बीमार है."

"क्या हुआ उसे? कहां है वह?" अतुल ने घबरा कर पूछा.

"वार्ड नंबर चार में है," मां ने उत्तर दिया.

"चलिए, मैं आप के साथ चलता हूं. मैं यहां डाक्टर हूं. सब देख लूंगा," अतुल बोला.

डा. अतुल को देख कर वार्ड की मैट्रन उस के साथ हो गई. मां ने उसे ले जा कर आरती के सामने खड़ा कर दिया. आरती आंखे मूंदें पड़ी थी. डा अतुल ने आरती की केस हिस्ट्री पढ़ी. केस हिस्ट्री के अनुसार उस का गर्भाशय बुरी तरह से क्षतिग्रस्त था और गलत औषधियां दिए जाने के कारण दोनों गुर्दे ठीक तरह से कार्य नहीं कर रहे थे.

डा. अतुल आरती के पलंग के पास से हट कर अपने कक्ष में आ गया. उस ने आरती का इलाज करने वाले डाक्टर से टेलीफोन पर बात की. डाक्टर ने उसे बतलाया कि "आरती के दोनों गुर्दे लगभग बेकार हो गए हैं, और शीघ्र ही डायलिसिस की आवश्यकता पड़ सकती है."

डा. अतुल सोचविचार में पड़ गया कि वह गुर्दे की बात बूआ को कैसे बतलाए. पर उस से मां ने ही कहा, "अतुल, सवेरे डाक्टर और नर्स आपस में गुर्दे की कुछ बात कर रहे थे."

इस से अतुल को अपनी बात कहने का अवसर मिल गया. वह बोला, "हां बूआ, आरती के गुर्दे बीमार हो गए हैं."

"क्यों, उस के गुर्दों को क्या हुआ?" मां बोलीं

"बूआ, यह तो आप जानती ही हैं कि प्रत्येक व्यक्ति के दो गुर्दे होते हैं जिन से शरीर का पूरा रक्त एक घंटे में दो बार छनता है. इस से शरीर में न केवल जल का संतुलन बना रहता है बल्कि ऐसे पदार्थ मूत्र के रूप में निकलते रहते हैं जिन की आवश्यकता से अधिक मात्रा का शरीर में होना हानिकारक हो सकता है

"प्रत्येक गुर्दे में 10 लाख नेफ्रान होते हैं जो छोटे कीड़ों के समान होते हैं. ये नेफ्रान ही रक्त से जल इत्यादि को छानते हैं. उन से लाल रक्त कोशिकाएं, रक्त प्रोटीन के कण, कुछ विटामिन, ग्लूकोस, एमिनो अम्ल तथा हारमोंस सामान्यत: छन नहीं पाते, किंतु लाल रक्त कोशिकाओं तथा रक्त प्रोटीन के अतिरिक्त शेष तत्त्वों की आवश्यकता से अधिक मात्रा छन कर मूत्र द्वारा बहर निकल जाती है. इसी कारण एकाएक शक्कर की अधिक मात्रा लेने पर उस का अधिकांश भाग मूत्र द्वारा निकल जाता है. ऐसा ही नमक तथा पोटाशियम के साथ भी होता है. यदि ऐसा न होता तो व्यक्ति की तत्काल मृत्यु हो सकती थी."

"कल वे लोग यूरिया ऐसा कुछ कह रहे थे," मां ने कहा.

"बूआ, मैं वही बता रहा हूं. गुर्दे का एक अन्य जरूरी कार्य यूरिया की सही मात्रा को शरीर से निकालना है. यदि यूरिया आवश्यकता से कम निकल रहा है तो इस का अर्थ हो सकता है कि जिगर सही कार्य नहीं कर रहा है. यदि यूरिया अधिक मात्रा में निकल रहा है तो इस का अर्थ है कि रक्त में यूरिया की मात्रा अधिक है, जिस के कारण बेहोशी तथा मृत्यु भी हो सकती है."

"गुर्दे को सब से ज्यादा नुकसान पहुंचता है विषाणुओं की संक्रामकता से. ऐसा ही कुछ आरती को भी हुआ है."

"बेटा, वह ठीक तो हो जाएगी न?" मां बोलीं.

"ठीक हो सकती है और नहीं भी,"

तूफा

आठों पहर है अब
तबाही का सामना
उठते हैं गंज अश्क के
तूफा नागहा

—रिंद

अतुल बोला, ''दरअसल बात यह है कि आरती के गुर्दों ने काम करना बंद कर दिया है. इसलिए रक्त को साफ करवाने के लिए डायलिसिस करवानी होगी."

''डायलिसिस क्या होती है?''

"रक्त की सफाई जब गुर्दे नहीं कर पाते तो यह काम मशीन से करवाते हैं. इसे डायलिसिस कहते हैं लेकिन ...'' अतुल ने बात अधूरी छोड़ दी. फिर कुछ रुक कर बोला, ''बूआ, डायलिसिस एकआध दिन का मामला नहीं है. ठीक होने पर भी सप्ताह में तीन बार यह करवानी पड़ेगी और हर डायलिसिस पर 300 रुपए खर्च आएगा. एक डायलिसिस में लगभग आठ घंटे लगते हैं.''

''कोई और तरकीब भी है?' मां दुखी स्वर में बोलीं.

''है तो, लेकिन वह बहुत मंहगी और कठिन है.''

अतुल यह कह कर चुप हो गया, और कमरे की दीवारों को ताकने लगा जैसे कुछ कहने के लिए साहस बटोर रहा हो.

''बूआ, अब अपने देश में एक के शरीर का गुर्दा दूसरे के शरीर में लगाया जा सकता है,'' अतुल ने अपना मौन तोड़ा.

''क्या कह रहे हो, बेटा! मैं ने तो सिर्फ आंख के बारे में सुना था,'' मां बोलीं.

''बूआ, आंख की बात तो अब पुरानी हो गई. गुर्दा लगाने का काम भी अब काफी समय से हो रहा है. वैसे यह कार्य सरल नहीं है,'' अतुल बोला.

''बेटा, कल ही मैं ने अखबार में पढ़ा था कि वह समय दूर नहीं जब मरे हुए आदमी के शरीर के विभिन्न हिस्सों को जीवित व्यक्ति के शरीर में लगाया जा सकेगा.''

''हां, बूआ, यह तो भविष्य की बात है. इस में एक कठिनाई है: हर व्यक्ति के टिशू (ऊत्तक) दूसरे के शरीर से बड़ी कठिनाई से जुड़ पाते हैं. इसी कारण गुर्दा लगाने का काम भी कभीकभी सफल नहीं हो पाता. वैसे समान रक्त समूह का गुर्दा सफलतापूर्वक लगाया जा सकता है.''

अतुल कुछ देर तक चुप रह कर फिर बोला, ''बूआ, इस में दो मुख्य समस्याएं हैं. एक तो आरती के रक्त समूह जैसे किसी व्यक्ति का गुर्दा और दूसरे इस काम में होने वाला भारी खर्च. गैरसरकारी हस्पताल में एक गुर्दा लगाने में 50 हजार रुपए लग जाते हैं. वैसे सरकारी हस्पताल में 10 हजार रुपए में भी यह काम हो जाता है. लेकिन गुर्दे का मिलना बहुत कठिन है. हो सकता है इस में एक लाख रुपए तक लग जाए.''

''मेरे पास तो इतना पैसा नहीं है,'' मां दुखी स्वर में बोलीं.

''बूआ, बात सिर्फ पैसे की ही नहीं है. अगर पैसा हो तो भी गुर्दा पा लेना इतना आसान नहीं है. लेकिन मैं कोशिश करूंगा. यदि कोई रास्ता निकल सका तो ... लेकिन बूआ, यह काम बंबई में ही हो सकेगा.''

''क्यों, क्या यह दिल्ली में नहीं हो सकता? वहां मुझे आसानी रहेगी,'' मां बोलीं.

''दरअसल बंबई के एक बड़े हस्पताल में एक ऐसी मशीन है जहां गुर्दा 48 घंटों तक सही स्थिति में रखा जा सकता है. वास्तव में किसी व्यक्ति के मरने पर उस के मृत शरीर में गुर्दा केवल एक घंटे तक ही सही रह पाता है. वैसे बंबई में अब कुछ लोग अपने निकट संबंधियों के शवों से गुर्दा निकालने की अनुमति भी दे देते हैं. अतः यह संभव है कि आरती के लिए गुर्दा बंबई में मिल जाए,'' अतुल बोला.

''बंबई में मेरा कोई परिचित नहीं है.''

''उस की आप चिंता न करें. लेकिन गुर्दे के लिए मैं वादा नहीं करता,'' अतुल बोला.

''बेटा, वादा नहीं चाहिए. मैं जानती हूं तुम से जो हो सकेगा वह तुम करोगे ही.''

''क्या कह रहे हो, डा. अतुल? मैं मानता हूं कि उस महिला ने तुम्हें उस समय स्नेह और सहारा दिया जब तुम्हें उस की अत्यंत आवश्यकता थी. लेकिन क्या उस स्नेह के बदले में तुम अपना गुर्दा दोगे?''

''डाक्टर श्रीकांत, मैं यह भलीभांति जानता हूं कि एक गुर्दे पर जीवित रहना बहुत जोखिमपूर्ण है. सब से पहला डर यह है कि

(शेष पृष्ठ 129 पर)

छू गया तन
रास्ते जाता हवा का एक झोंका,
नींद में जैसे किसी ने
आ टबोका
शब्द का चिंतन कहां से हो शुरू,
लिख सकूं कैसे दुपहरी गुनगुनी?
पूछती है शाम, नीलांजनी शाम

जो सुना दिन से
वही तो सब नहीं,
कुछ बचा सा रह गया
शायद कहीं,
कैसे करूं अनुभूत बातें अनमनी?
पूछती है शाम, कपोतकंठी शाम

फिर समय की अरगनी पर
सूखते हैं वस्त्र जैसे नाम,
और यहां की भीड़ में खोए हुए
काव्य के आयाम
किस तरह अभिव्यक्त हो मन,
किस तरह रचना धनी?
पूछती है शाम, मोरपंखियां शाम.

—तारादत्त 'निर्विरोध'

चित्रकारी— थेवा कला

चित्तौड़गढ़ जिले का प्रतापगढ़ अंचल अपनी विशिष्ट एवं अद्वितीय थेवा कला के लिए जगप्रसिद्ध है. प्रतापगढ़ में सोनी परिवारों में सैकड़ों वर्षों से थेवा कला का काम होता आ रहा है.

लेख
•
गोपाल खंडेलवाल
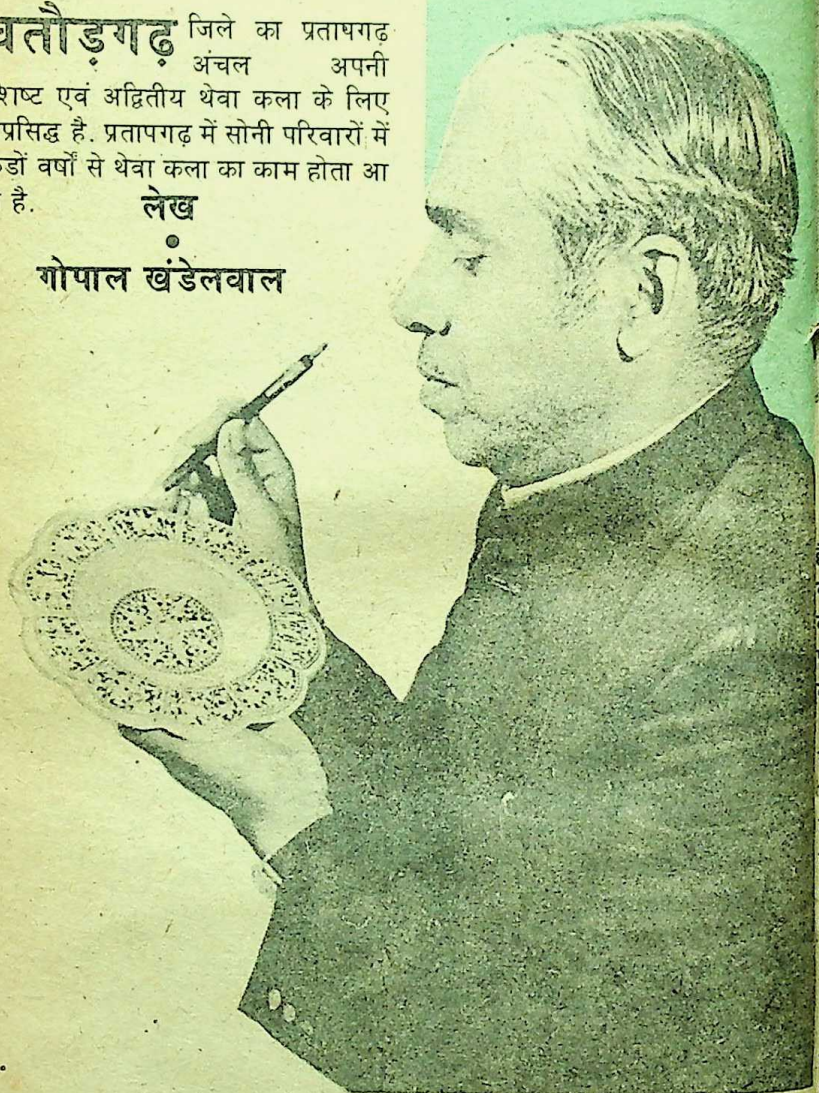
रामनिवास सोनी : देखने में अत्यंत मामूली आदमी लगने वाले प्रतापगढ़ के 32 वर्षीय इस शिल्पकार को थेवा कला के लिए इस वर्ष राष्ट्रपति पुरस्कार मिला है. इन्हें 1979 में भी भारत सरकार का श्रेष्ठता प्रमाणपत्र प्राप्त हुआ था. इन के पिता को भी इस कला के लिए यही सम्मान प्राप्त हो चुके हैं.

रामनिवास सोनी द्वारा बनाई गई स्वर्ण चित्रकारी की वह पेटिका जिस पर उन्हें राष्ट्रपति पुरस्कार प्राप्त हुआ है.

थेवा कला सांस्कृतिक स्वर्णचित्रांकन है. कांच पर सोने की यह कारीगरी अत्यंत बारीक, कमनीय एवं कलात्मक होती है. इस के लिए रंगीन बेल्जियम कांच (ग्लास) का प्रयोग किया जाता है. चित्रकला का ज्ञान इस के लिए बहुत जरूरी है.

अपनी कारीगरी को कुछ परिवार 'ट्रेड सीक्रेट' की तरह गुप्त रखते हैं. पीढ़ियों से इन के परिवार में कांच पर सोना जड़ने का यह कार्य होता आ रहा है. लेकिन विस्मय की बात है कि पांचछः परिवारों को छोड़ कर कोई भी नहीं जानता कि यह स्वर्ण शिल्पकारी किस तरह की जाती है.

शिल्प कौशल

इस स्वर्ण शिल्प से अलंकृत 7"X4" की एक पेटिका पर इस वर्ष राष्ट्रपति पुरस्कार दिया गया है. कांच के 17 टुकड़ों से निर्मित इस पेटिका के ऊपरी भाग के कांच पर राजस्थानी शैली में बादशाह, हाथी की सवारी, अंगरक्षक, सेना एवं घुड़सवार चित्रित है तथा पेटिका के दाएं, बाएं, आगे, पीछे शिकार के दृश्य अंकित हैं. इसे रखने के लिए एक कलात्मक तश्तरी भी बनाई गई है. इस पेटिका को तैयार करने में दो माह का समय लगा है. इस की कीमत 10 हजार रुपए बताई जाती है.

इस कला से विविध डिजाइनों में रंग की हुई अंगूठियां, कानों के टाप्स, हार, बिछुए, टाई पिन, कफ के बटन, सिगरेट के केस, घड़ी की चेनें, विभिन्न प्रकार की कलात्मक तश्तरियां, श्रृंगारदान, श्रीनाथजी की तसवीरें आदि बनाई जाती हैं. इन चीजों को देख कर ऐसा लगता है जैसे साधारण कांच के टुकड़े पर सोने की रोशनाई से बारीक चित्रांकन किया गया है. भाव मग्न मोर की आकृतियां, रासलीला एवं शिकार के दृश्य, फूलपत्ती आदि के कलात्मक अंकन को कांच पर देख कर दर्शक मंत्रमुग्ध हो जाता है.

थेवा शिल्प की वस्तुओं की सदैव मांग बनी रहती है. स्थानीय एवं देशीविदेशी ग्राहकों के अग्रिम आदेश हर समय रहते हैं. अधिकांश वस्तुएं ग्राहकों की मांग एवं रुचि के अनुसार बनाई जाती हैं. ●

नाम : भारतीय हाकी.

जन्म : 1885 में किसी दिन.

मृत्यु : 1960 से 1982 के बीच कभी

मृत्यु की वजह : अपने साथ हो रही जलालत को बरदाश्त न कर पाना.

मृत्यु के जिम्मेदार : वे तमाम लोग जो पिछले 20 सालों से खुद को हाकी खैरख्वाह मान रहे हैं.

विशेष नोट: भारतीय हाकी की सिसकती, कराहती मौत से अगर किसी दुख पहुंचा है तो वह संवेदना व्यक्त सकता है. लेकिन अकेले ही, क्योंकि लोगों का हाकी का सगासंबंधी होने का

भारतीय हाकी की मौत हो गई

लेख • श्रीशचंद्र मिश्र

रहा है, उन्हें हाकी की मौत से कोई पीड़ा नहीं हुई है. उलटे वे उस के मुर्दा शरीर से लिपटे उस के गोश्त को अभी भी छीलने में लगे हुए हैं.

मौत किसी की भी हो, दुखद लगती है, लेकिन भारतीय हाकी की मौत जिस ढंग से और जिन परिस्थितियों में हुई है, उस की

भारतीय हाकी मर गई है. यह बात एक सच्चाई ही नहीं बल्कि एक ऐतिहासिक दस्तावेज बन गई है. सालों से हम हाकी के मुरदा शरीर को इस उम्मीद से उठाए घूम रहे हैं कि शायद उस में जान की गुंजाइश निकल आए. यह मतिभ्रम आखिर खत्म क्यों नहीं कर दिया जाता?

मिसाल ढूंढ़ने से भी नहीं मिल सकती. ध्यानचंद ने हाकी का अंतिम संस्कार होते अपने सामने ही देख लिया था. कुंअर दिग्विजयसिंह बाबू ने हाकी को बचाने में अपनेआप को असहाय पा कर आत्महत्या कर ली. रूपसिंह, किशनलाल, रणधीरसिंह जैंटल, केशवदत्त जैसे खिलाड़ी यह कहतेकहते मर गए, "भारतीय हाकी दम तोड़ रही है. कुछ ही सांसें बाकी रह गई हैं. उसे ताजी हवा की जरूरत है. कोई तो उस की गरदन जकड़ने वालों से उसे मुक्ति दिलाए." लेकिन उन की बात किसी ने नहीं सुनी.

और एक दिन न जाने किस समय हाकी का दम निकल गया. लेकिन यह कैसी मौत कि कोई उसे मौत मानने को तैयार ही नहीं है. पिछले 22 सालों से जिस पर लगातार चोट पड़ रही हो, गंभीर बीमारी के बावजूद जिस का कोई इलाज न किया जा रहा हो, वह हाकी

विश्व कप : 1975 की एकमात्र जीत के बाद जो भारतीय हाकी के लिए सपना बन कर रह गया

आज तक भला जिंदा भी कैसे रह सकती है?

लेकिन उन लोगों को कौन समझाए जो यह मानते हैं— क्योंकि हम 30 साल तक विश्वविजेता रहे, इसलिए हमें हाकी खेलते रहना चाहिए और क्योंकि जब देश में हाकी खेली जा रही है तो उस की मौत का सवाल ही कहां पैदा होता है?

भारतीय हाकी कब मरी, इस का कोई निश्चित दिन या समय नहीं बता सकता, क्योंकि कभी इस बात को स्वीकारा नहीं गया. 1960 के बाद से भारत को हाकी में जितनी सफलताएं मिली हैं, उस से चार गुनी असफलताएं उस के हाथ लगी हैं. हम दिल से मानते हैं कि हाकी मर चुकी है, लेकिन उसे स्वीकार नहीं कर पाते. हमारे धर्म व संस्कारों ने सचाई स्वीकार करने का आत्मिक बल ही कहां छोड़ा है?

खिलाड़ी जब स्टिक संभालता है, उस में बहुत कुछ करने का उत्साह होता है. उस की उम्र, उस का उत्साह हाकी को मृत मानने को तैयार ही नहीं होता. उसे विश्वास होता है कि वह उसे पुनर्जीवित कर देगा. लेकिन जब उस का मोह भंग होता है तो उत्साही खिलाड़ियों की नई पौध सामने आ जाती है.

इस पूरी प्रक्रिया में अधिकारी व आम दर्शक कभी नहीं बदला है. अधिकारी के लिए पैसे व अधिकार की गुंजाइश अभी भी हाकी से जुड़ी हुई है, इसलिए वह हाकी की मौत स्वीकार नहीं कर रहा है. दकियानूसी आम दर्शक हाकी के मुर्दा शरीर को बारबार देखने के बावजूद यही कल्पना किए बैठा है कि शायद कल को कोई चमत्कार हो जाए और यह ठटरी जैसी दिखने वाली भारतीय हाकी स्वस्थ व मजबूत हो जाए.

अब यह सोच कर ताज्जुब होता है कि 1926 से ले कर 1956 तक के समय में भारतीय हाकी का पूरे विश्व में डंका कैसे बज

भारतीय ओलंपिक टीम को प्रशिक्षण देते बाबू दिग्विजय सिंह : नई जान क्यों नहीं भर सके.

हाकी की ऐतिहासिक घटनाओं को समेटे मास्को का डिनामो स्टेडियम.

गया? शायद तब के खिलाड़ियों ने अपनी निजी मेहनत, प्राकृतिक प्रतिभा व गहरे आत्मविश्वास के बल पर ही सफलता का मजबूत मंच खड़ा किया होगा.

पिछले करीब 15-20 सालों से तो भारतीय हाकी ईश्वर के आसरे चल रही है. कम से कम अधिकारी व खिलाड़ी तो ऐसा ही मानते हैं और दर्शक क्योंकि आम दकियानूसी व डरपोक भारतीय हैं, इसलिए वह तो हर उपलब्धि को ईश्वर की दया मानता ही रहा है. इस पूरे अरसे में मिली गिनीचुनी सफलताएं भी चमत्कार ही मानी गई हैं.

1975 में विश्व कप हाकी प्रतियोगिता के सेमीफाइनल में भारतीय टीम मलयेशिया के विरुद्ध 1-2 से पिछड़ रही थी. खेल खत्म होने में कुछ ही मिनट का समय बाकी था. असलम शेर खान को स्थानापन्न खिलाड़ी के रूप में मैदान में उतारा गया. उसे अपनी प्रतिभा पर विश्वास नहीं था. तभी तो पेनल्टी कार्नर लेते समय उस ने पहले अपने गले में पड़े तावीज को चूमा.

आज असलम भले ही 'भाड़ में जाए हाकी' जैसी किताब लिखता रहे, लेकिन हाकी को भाड़ में झोंकने का जिम्मेदार वह खुद भी तो है.

1980 के मास्को ओलंपिक में फाइनल में स्पेन को हराने के बाद भारतीय प्रशिक्षक

गेंद पर हस्ताक्षर करते हुए बाबू दिग्विजय सिंह: हाकी की मौत पर श्रद्धांजलि देते हुए खुद को खत्म कर लेने वाला खिलाड़ी.

बालकिशन सिंह ने कहा, "स्पेन को हराना आसान काम नहीं था. भाग्य ने हम लोगों का साथ दिया. भगवान ने हमारी प्रार्थना सुन ली, क्योंकि हम ने स्पेन से ज्यादा प्रार्थना की थी." गोया यह लड़ाई दो देशों की हाकी श्रेष्ठता की नहीं, बल्कि दो भक्तों की लड़ाई थी.

• भगवान अगर सचमुच प्रार्थना सुन लेता है और ज्यादा प्रार्थना पर ही ध्यान देता है तो फिर खिलाड़ियों को चुनने, उन्हें प्रशिक्षण देने की क्या जरूरत है? उन्हें पूरा समय

(शेष पृष्ठ 116 पर)

कहा जाता है कि जब सांप छछूंदर को अपने मुंह में पकड़ लेता है तो दोनों ही मरते हैं. सांप छछूंदर को निगल नहीं पाता, वह उस के गले में अटक जाता है. साथ ही सांप छछूंदर को न तो छोड़ता है और न छछूंदर ही उस के मुंह से निकल पाता है. और नतीजा यह होता है कि उन में लंबी कशमकश चलती है.

यही हाल चीन और इस की भूमि पर स्थित छोटे से पुर्तगाली उपनिवेश मकाओ का है. हालांकि मकाओ की असली सत्ता चीनी व्यापारी वर्ग के हाथ में है, किंतु यहां की सरकार पुर्तगाली है. यदि चीनी सरकार मकाओ के शासन को अपने हाथ में लेती है तो इस से उसे नुकसान ही होगा, क्योंकि इस का दुष्प्रभाव मकाओं से कहीं ज्यादा हांगकांग के उद्यमियों व व्यापारियों पर पड़ेगा. उन्हें यह आशंका हो सकती है कि कहीं चीन हांगकांग कर भी कब्जा न कर ले. इस से स्वभावतः चीन के संबंध न केवल पुर्तगाल के साथ बल्कि ब्रिटेन जैसी शक्ति से भी तनावपूर्ण हो जाएंगे.

हांगकांग चीनी भूमि पर स्थित एक ब्रिटिश उपनिवेश है जिस के निवासी चीनी

चीनी सांप के मुंह में पुर्तगाली छछूंदर

लेख • अजयकुमार सिन्हा
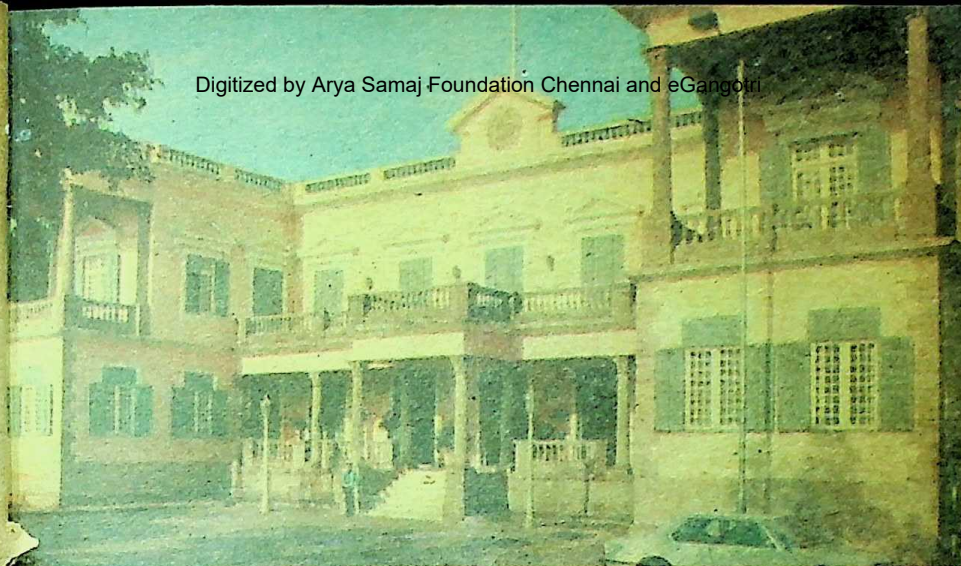
यहां के भवन पुर्तगाल के स्वर्णयुग की याद दिलाते हैं. (ऊपर).
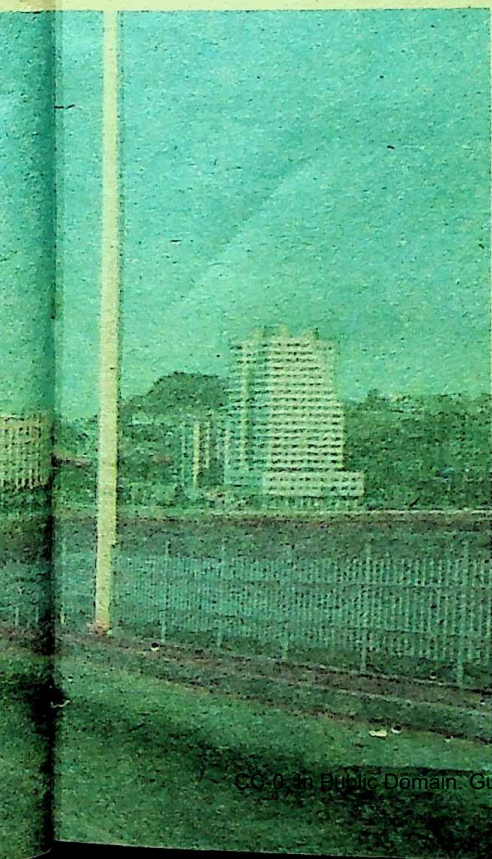
चीनी भूमि पर बसे पुर्तगाली उपनिवेश मकाओ की स्थिति उस छछूंदर की तरह है जो सांप के गले में अटका हुआ है. पर इस उपनिवेश का इतिहास बड़ा तूफानी रहा है.

हैं. यह विश्व व्यापार का बहुत महत्त्वपूर्ण केंद्र है. यह फ्री पोर्ट भी है यानी यहां आने, यहां बिकने व यहां से जाने वाले माल व अन्य सामान पर किसी भी प्रकार का सीमा शुल्क नहीं लगता.

छः वर्गमील क्षेत्रफल का यह अनोखा 'नगर राज्य' मकाओ चीनी भूमि पर दक्षिणी चीन सागर में एक पतले प्रायद्वीप पर स्थित है. यह एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह रहा है. कैंटन नदी के मुहाने के दक्षिणी तट पर स्थित होने के

कारण इस.की बहुत उपयोगिता और महत्त्व है. इस पुर्तगाली उपनिवेश का शेष भाग ताईया व कोलोवान द्वीप हैं.

इस नन्हे उपनिवेश का इतिहास बड़ा तूफानी रहा है. इस के किले और उस के द्वार पर रखी तोपें इस की साक्षी हैं. दक्षिणी चीन के मुख पर यह एक मूसलटोंटी के समान था जिस के भीतर से उस दिव्य साम्राज्य का व्यापारिक माल एशिया के अन्य भागों और यूरोप को पहुंचता रहा. छोटे पैमाने पर आज भी यह उस कार्य को करता है.

मकाओ की स्थापना

सन 1557 में पुर्तगालियों ने मकाओ पहुंच कर इस उपनिवेश की स्थापना की और इसे अपने व्यापार का केंद्र बना लिया. तब चीन के सम्राट ने उन्हें वहां रहने व व्यापार करने की अनुमति दे दी थी. इस का एक कारण यह भी था कि पुर्तगालियों ने समुद्री लुटेरों के उत्पात को रोका था.

चीन के जापान व यूरोप के साथ व्यापार संबंधों को बढ़ावा दे कर तथा इन

व्यापार व पर्यटन केंद्र: मकाओं में मनोरंजन के अनेक साधन है.

देशों के बीच व्यापारिक मध्यस्थता कर के पुर्तगालियों ने इस पर अपना एकाधिकार कर लिया और तब मकाओ एक अंतरराष्ट्रीय मंडी व बाजार बन जाने से एक अंतरराष्ट्रीय नगर बन गया, जहां सभी देशों के व्यापारी आने और रहने लगे. व्यापारिक गतिविधियों के कारण मकाओ का महत्त्व इतना बढ़ गया कि 17वीं शताब्दी में इसे सोने का नगर कहा जाने लगा.

यूरोप के अन्य देशों में इसे पाने के लिए होड़ होने लगी. इसे पुर्तगाल से छीन लेने के लिए ब्रिटेन और हालैंड ने साजिशें कीं, पर पुर्तगालियों ने लड़भिड़ कर उन्हें नाकाम कर दिया. अनेक युद्ध भी हुए. इस तरहं मकाओ ने अनेक संकटों का सामना किया है.

पूर्वी एशिया व पश्चिमी देशों के बीच व्यापार को बढ़ाने का एकमात्र श्रेय मकाओ को है. चीन व जापान के बीच प्रत्यक्ष व्यापार पर रोक लगी हुई थी. पुर्तगालियों ने चीनी माल और वस्तुओं को जापान ले जा कर बेचना और जापानी वस्तुओं को चीन में ला कर बेचना शुरू किया.

किंतु जब चीनियों ने कैंटन और अंगरेजों ने हांगकांग बदरगाहों को विकसित किया तो यह मकाओ के लिए व्यापारिक दृष्टि से हानिकारक सिद्ध हुआ, क्योंकि इस से मकाओ का महत्त्व काफी कम हो गया और लोग मकाओ को भूलने लगे.

• हांगकांग से लगभग 64 किलोमीटर पश्चिम और कैंटन से लगभग 96

किलो
का स
मका
पृथक
भारत
यूरोप
आज
जाति
हुई
मिली

संपक
शता
के ए
मुक्त
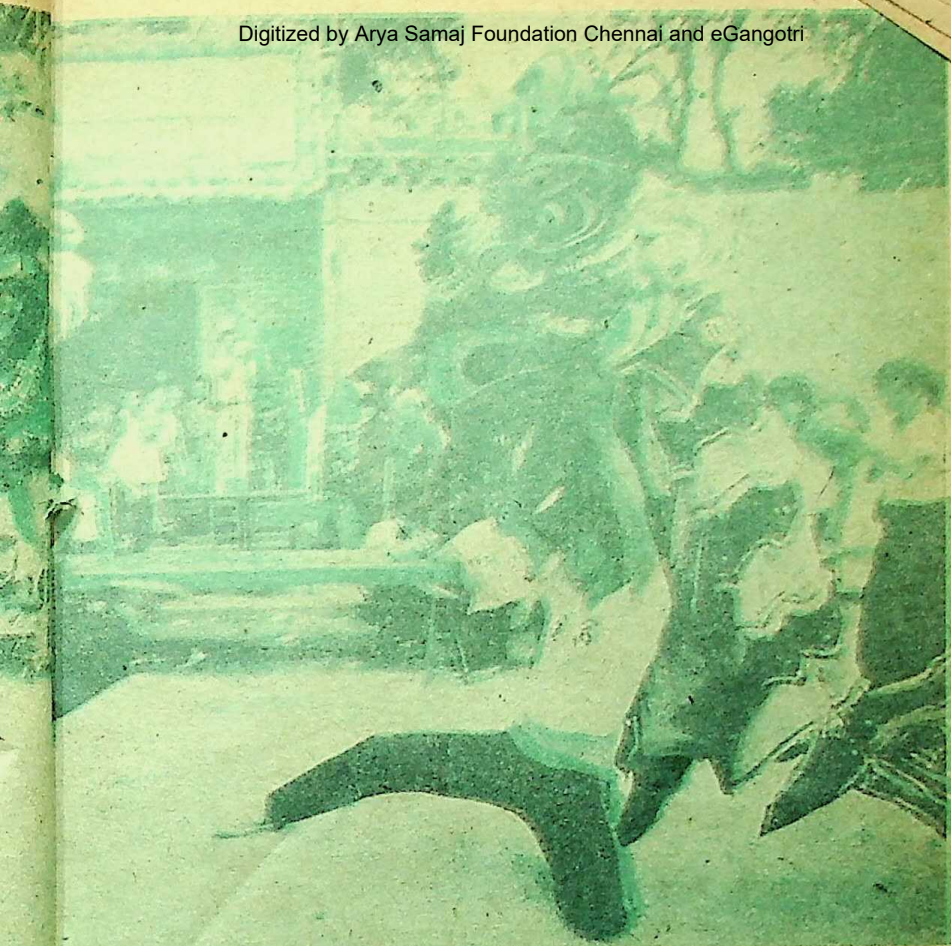
किलोमीटर दक्षिण में स्थित इस उपनिवेश का सौंदर्य पुर्तगालियों के कारण अनोखा है. मकाओ दो भागों में विभाजित हैं. दोनों में पृथक स्वायत्त शासन है. यहां पुर्तगाल, चीन, भारत, जापान, फिलिपीन तथा अफ्रीका, यूरोप, एशिया व अन्य कोई देशों के लोग हैं. आज के असली मकाओवासी इन सभी जातिओं में अंतरजातीय विवाह से उत्पन्न हुई संतानें हैं. ये कई भाषाओं की एक मिलीजुली बोली बोलते हैं.

अमरीका व ब्रिटेन का चीन से पहला संपर्क मकाओ के माध्यम से ही हुआ. 17 वीं शताब्दी में जब पुर्तगाल की राजगद्दी को स्पेन के एक राजा ने 60 वर्ष तक [illegible] तब भी मकाओ पर पुर्तगाल का ही झंडा लहराता रहा.

मकाओ का नाम चीन की एक देवी अमा के नाम पर है. ऐसा कहा जाता है कि इस देवी ने एक भयंकर समुद्री तुफान में मछुओं को बचाया था.

मिलीजुली संस्कृति

मकाओ एक अत्यंत आकर्षक जगह है. इस की संस्कृति में पुर्तगाल व चीन दोनों का प्रभाव झलकता है. भव्य इमारतें, किले, महल, गिरजाघर आदि यहां के पुर्तगाली उपनिवेश काल के स्वर्ण दिनों की याद दिलाते हैं तो दूसरी ओर चीनी मंदिर और स्मारक
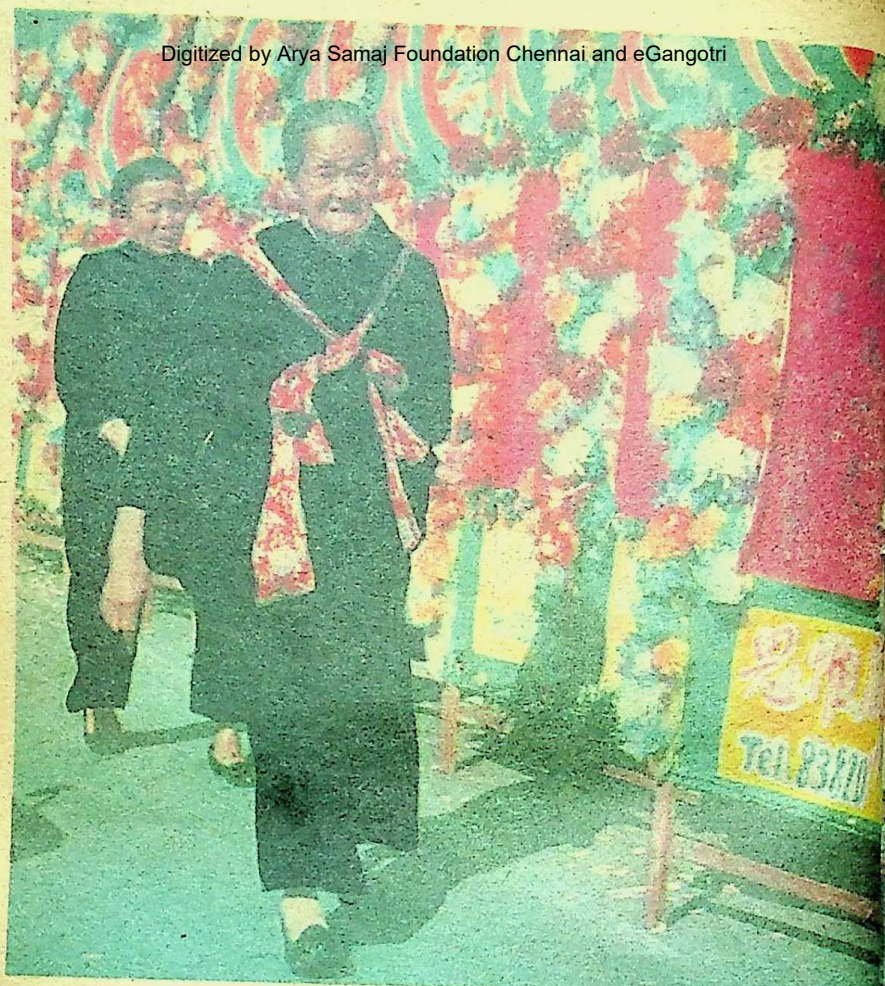
चीनी वैभव की कथा कहते हैं. यहां पुर्तगाली स्थापत्य कला के नमूने भी बड़े लुभावने हैं.

चीनी भूमि व अधिकांश जनसंख्या चीनी होने के बावजूद यहां पुर्तगालियों की छाप गहरी है. इसी लिए यह स्थान चीन में छोटा पुर्तगाल कहा जाता है. यहां रोड़ी की बनी गलियां मध्ययुगीन यूरोप की याद दिलाती हैं. किंतु इस से कहीं ज्यादा हैरानी की चीजें हैं.- यहां के मकान जिन की दीवारें व खिड़कियां पुर्तगाली परंपरा में अनेक रंगों, जैसे–गुलाबी, नीले, हरे आदि में रंगी हुई हैं. गांव के बंगले पेस्टल रंगो में रंगे हुए हैं जो बड़े सुंदर लगते हैं. मकानों के आंगनों व छतों पर बूगिनविलिया के फूल मुसकराते रहते हैं.

चीनी स्मारकों में यहां आधुनिक चीनी गणराज्य के संस्थापक डा. सन यात सेन का घर भी है. इस में उन की चीजें रखी हैं. सन 1910 में चीन में चिंग वंश के मांचू सम्राटों के पतन से कई वर्ष पहले डा. सन यात सेन ने यहां डाक्टर के रूप में कार्य किया था. यह स्मारक उन के परिवार वालों ने बनवाया है.

यहां सेंट पाल का गिरजाघर यद्यपि अब खंडहर हो गया है, पर वह अपनी अलग ही शान रखता है. पुर्तगाली वास्तुकला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है-लीसीनाडो की इमारत जहां सेनेट की बैठक होती थी और जहां नगरवासी भी आवश्यक मामलों पर विचार-विमर्श के लिए एकत्र होते थे. इसे सब

को पुरानी सांस्कृतिक संस्था माना जाता है.

प्राया ग्रांडी सैर करने की अच्छी जगह है. पुरानी इमारतों से भरे होने के बावजूद आधुनिक गगनचुंबी इमारतें व होटल भी यहां पर बहुत हैं. मकाओ तस्करी व जुए का बहुत बड़ा अड्डा है. जुआ खेलना यहां वैध है.

मकाओं के सौंदर्य में एक धब्बा भी है. वह है यहां की गंदी बस्ती और बहुत से बेघर लोग, जिन की संख्या तेजी से बढ़ रही है.

यहां चीनी लोग बहुत हैं जिन में से

(शेष पृष्ठ 50 पर)

मकाओ की संस्कृति पुर्तगाली व चीनी संस्कृति का मिश्रण है.

यहां बहुत से देशों के लोग हैं जो आपस में विवाह करते हैं. वे कई भाषाएं भी जानते हैं.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मां बेटी का अदम्य साहस

रायगढ़ में मां और बेटी के अभूतपूर्व साहस से पुलिस को कुख्यात अपराधियों के एक गिरोह को पकड़ने में सफलता मिली है.

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि 30 जुलाई की रात को श्रीमती अनु राठौर अपनी दस वर्षीया बेटी हनी के साथ रेलवे स्टेशन से लौट रही थीं. रास्ते में दो युवकों ने उन पर हमला किया और उन का मंगलसूत्र छीनने का प्रयास किया.

श्रीमती राठौर ने उन का मुकाबला किया. अपराधियों ने मांबेटी की पकड़ से छूटने के लिए उन पर छुरे से भरपूर वार किए, लेकिन एक अपराधी की कमीज का कालर उन के हाथ में आ गया.

उसी कालर पर दरजी की दुकान का नाम देख पुलिस ने रायपुर में जा कर इन अपराधियों को पकड़ा.

बाद में नगरपालिका भवन में एक विशेष समारोह में पुलिस विभाग की ओर से मांबेटी का नागरिक अभिनंदन किया गया. उन्हें 501 रुपए नकद और प्रशस्ति पत्र भी दिया गया. कई अन्य लोगों ने भी मांबेटी को नकद पुरस्कार दिए.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक: किशन प्रेमी)

*

बलात्कार करने का अंजाम

पूर्णिया के बिहारीगंज थाने में हजारों नागरिकों ने— वहां के थाना प्रभारी, एक डाक्टर और एक जमींदार को एक युवती के साथ बलात्कार पर मारापीटा और कमरे में बंद कर दिया.

बताया जाता है कि जब तक जिलाधिकारी, आरक्षी अधीक्षक आदि घटनास्थल पर पहुंचे तब तक लोगों ने उन को नहीं छोड़ा. अब उन्हें गिरफ्तार कर के जेल भेज दिया गया है.

—दैनिक आर्यावर्त, पटना (प्रेषक : यज्ञेश त्रिवेदी समीर)

*

ईमानदारी का एक उदाहरण

पर्वतीय अंचलों में अभी भी ईमानदारी बाकी है, जिस का एक उदाहरण हाल ही में प्रकाश में आया है.

मानसरोवर की यात्रा पर जा रहे एक यात्री का पर्स गिर गया, जिस में 25 हजार रुपए और कुछ डालर थे. इस से हताश हो कर उस ने यात्रा स्थगित करने का निश्चय कर लिया, लेकिन उसी समय पिथौरगढ़ के पास पीछे से आते हुए एक गढ़वाली ने उस का पर्स लौटा दिया.

उस ईमानदार व्यक्ति के कारण यात्री अपनी आगे की यात्रा जारी रख सका.

—युगधर्म, जबलपुर (प्रेषक: संजय गोस्वामी)

वीरता का प्रदर्शन

सागर में प्राथमिक स्कूल के एक शिक्षक और उस के दो भाइयों ने आठ डाकुओं का मुकाबला किया जिस से एक डाकू मारा गया.

घटना कैथोरा गांव की है. प्राथमिक स्कूल के शिक्षक परमसिंह दांगी के घर अचानक डाकू आ धमके. दांगी ने अपने दोनों भाइयों रघुराजसिंह तथा शेरसिंह के साथ उन का जम कर मुकाबला किया और एक डाकू को मार दिया.

तीनों भाई गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्हें हस्पताल में भरती कराया गया. पुलिस अधीक्षक श्री राठौर के अनुसार बाद में पांच डाकुओं को पकड़ लिया गया. उन के पास से तीन बंदूकें और भारी संख्या में कारतूस बरामद हुए.

—नवभारत, भोपाल (प्रेषक: प. ल. श्रीवास्तव)

*

बालिका को मरने से बचाया

एक बूढ़ी मां के इकलौते बेटे ने अपनी जान की परवा न करते हुए नदी में कूद कर बालिका को मरने से बचा लिया.

टोंक के जिला प्रमुख अलताफ हुसैन चिश्ती ने बताया कि एक परिवार बनास नदी के पुल पर घूम रहा था. अचानक दोनों ओर से वाहनों के आ जाने से चार वर्षीया नीतू घबरा गई और पुल से नदी में गिर पड़ी. नदी में बाढ़ के कारण पानी का बहाव बहुत तेज था.

बालिका को गिरते देख जाहिद नाम का युवक भी नदी में कूद पड़ा. उस के घुटनों में चोट आई, लेकिन उस ने नीतू को बचा लिया.

कूदते वक्त जाहिद को अपने मरने की पूरी आशंका थी, इसलिए उस ने अपने साथियों से कहा, ''मेरी मां से कह देना कि एक बहन की जान बचाते वक्त एक भाई मारा गया.''

—दैनिक एक्सप्रेस, उदयपुर (प्रेषक: रंजना जैन) ●
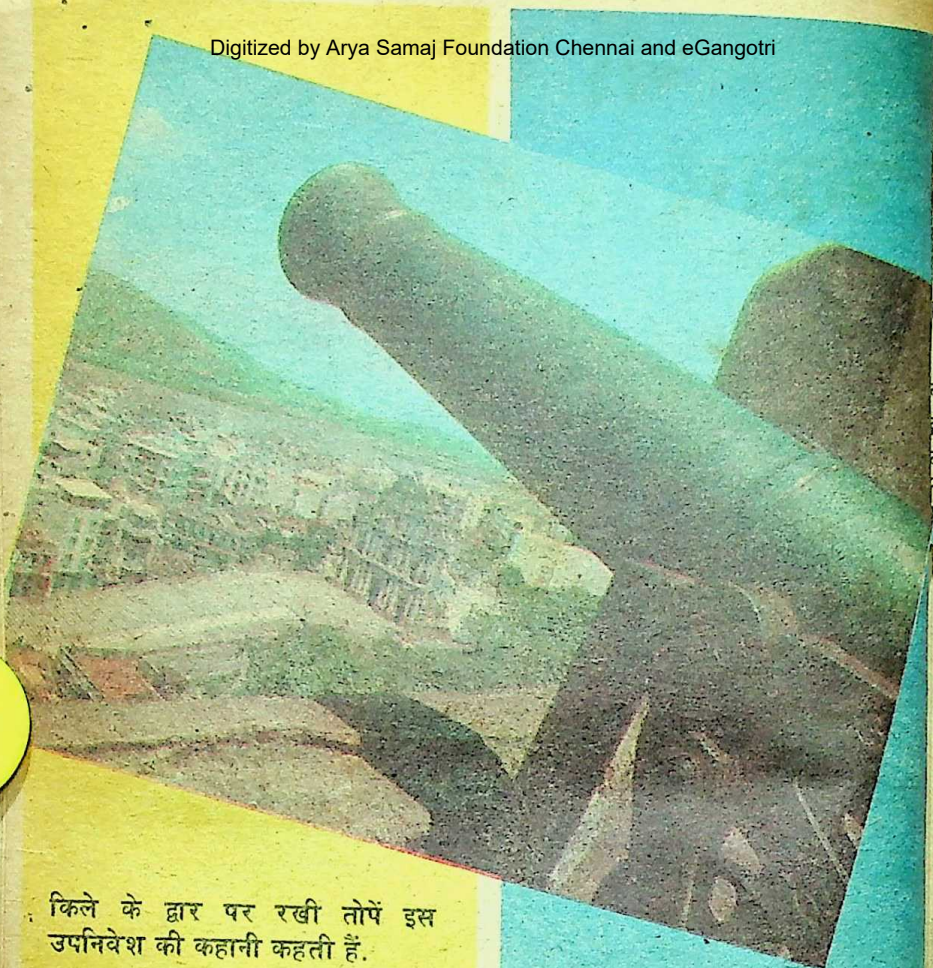
किले के द्वार पर रखी तोपें इस उपनिवेश की कहानी कहती हैं.

(पृष्ठ 47 से आगे)

अधिकांशतः व्यापारी हैं. ये लोग मुख्य रूप से मछली का व्यापार करते हैं. चीन मकाओ के बंदरगाह से चावल, मछली, कपड़े आदि का निर्यात करता है. मकाओ के शेष लोगों की जीविका का मुख्य साधन सूखी मछली का निर्यात है.

अंधेरा होते ही यहां बंदरगाह रोशनियों से जगमग उठता है. द्वितीय विश्वयुद्ध में जापानियों ने इस पर भी कब्जा करने की कोशिश की थी. रात को जुए घर, रात्रि क्लब, बाजार आदि में चहलपहल रहती है.

फ्री पोर्ट होने के कारण मकाओ में विदेशी चीजें सस्ती मिल जाती हैं. वैसे भी मकाओ में महंगाई नहीं है, बल्कि अन्य देशों की तुलना में यहां चीजें सस्ती हैं. यहां के सोने के आभूषण, कीमती कपड़े, रोजवुड का फर्नीचर तथा प्राचीन काल की नायाब चीनी वस्तुएं बहुत प्रसिद्ध हैं. यहां के रेस्तोरांओं में पुर्तगाली व चीनी तथा दोनों को मिला कर बनाए गए अनोखे व्यंजन मिलते हैं ये काफी सस्ते होते हैं. यहां ग्रे हौंड कुत्तों की एक दौड़ भी होती है, जो पर्यटकों के लिए बड़ी मनोरंजक होती है.

यहां की सरकार पर्यटन को बहुत बढ़ावा दे रही है. यहां विकास योजनाएं लागू की जा रही हैं. •

फ... खु... महं... वाक्य ... हो गया ... कीमतों ... जितना ... उन ... साम... आव... खर्च... कर ... होने ... जा ... संभ... मुक्ता

फजूलखर्ची छोड़िए, खुशहाल बनिए

लेख • संतोषकुमार 'निर्मल'

'महंगाई बहुत बढ़ गई है, खर्च पूरा नहीं पड़ता.' आजकल यह वाक्य आम बोलचाल की भाषा में शामिल हो गया है. हर व्यक्ति वस्तुओं की रोज बढ़ती कीमतों से परेशान है. नौकरीपेशा लोग चाहे जितना हाथ रोक कर खर्च करें, महीने के अंत में उन की रसोई में खाली डब्बे बजने लगते

सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए आवश्यक समझे जाने वाले खर्चों को रोक कर या कम कर के महीने के आखिर में होने वाली परेशानी से बचा जा सकता है, पर यह कैसे संभव है?

वस्त्र, आभूषण व सौंदर्य प्रसाधन की मदों पर महिलाएं अकसर फजूलखर्ची करती हैं.

हैं. व्यापार करने वाले भी महगाई का रोना रोते रहते हैं. यह एक शाश्वत सत्य है कि लोगों को अपना खर्च व दूसरों की कमाई हमेशा ही ज्यादा लगती है. व्यापार करने वाला नौकरी को अच्छा समझता है और नौकरी करने वाला व्यापार को.

परंतु यदि कोशिश की जाए तो लोग अपनी सीमित आय में ही अपना रहनसहन अच्छा कर सकते हैं, बशर्ते कि वे अपने खर्चों पर ध्यान दें. ऐसा कर के वे काफी हद तक महीने के अंत में होने वाली परेशानी से बच सकते हैं. आज 75 प्रतिशत परिवार ऐसे हैं जिन में पुरुष लोग; कहींकहीं महिलाएं भी, बीड़ीसिगरेट या शराब पीने और सिनेमा देखने के आदी हैं. अपनी इन आदतों के बारे में उन का कहना है, ''क्या करें, छूटती ही नहीं, आदत पड़ गई है.'' लेकिन ऐसा कह कर वे जो पैसा अन्य आवश्यक मदों पर खर्च होना चाहिए, उसे इन फजूल की चीजों पर ख़ कर देते हैं.

कहावत है कि बूंदबूंद कर के घड़ा जाता है. क्या बीड़ीसिगरेट या शराब और सिनेमा देखने वालों ने कभी सोचा है इस में वे अपनी मेहनत की कमाई का कित बड़ा हिस्सा व्यर्थ ही गंवा देते हैं? शायद सोचने की किसी ने जरूरत ही नहीं सम इस के लिए लोग तर्क देते हैं कि इस मामूली खर्च को बंद कर के वे लखपति तो बन जाएंगे. लेकिन ऐसा कहने वाले अगर गह से सोचें तो लखपति न सही, कम से कम कि के आगे हाथ फैलाने से तो बचेंगे ही.

आजकल 20-21 साल की उम्र से ही लोग बीड़ीसिगरेट या शराब पीने लगते खूब सिनेमा देखते हैं. दिन ब दिन इन आ में वृद्धि होती रहती है. लेकिन इस के लि स्वयं को दोष नहीं देते, बल्कि ''क्या क दोस्त मानते ही नहीं'' या ''संगसाथ में पी पड़ती है'' आदि तर्क दे कर अपना ब करते हैं.

बातबात पर महंगाई का रोना क्यों?

मगर इस अपव्यय का हिसाब लग पर किसी की भी आंखें खुली की खुली सकती हैं. अगर कोई बीमारी आदि न हो मनुष्य 70-75 वर्ष की आयु तक तो जीता है. पर अगर वह 20-21 वर्ष की उम्र से सिनेमा देखने, बीड़ीसिगरेट या शराब जैसे व्यसनों में पड़ गया तो अनुमानतः अ जीवन के 50 वर्ष तक वह इन पर पैसा फूंक रहता है और बातबात पर महंगाई का रो रोता है.

सामने के पृष्ठ पर दिए गए आंकड़ों जरा ध्यान दीजिए जो अपनी कहानी स्व कह रहे हैं.

ये आंकड़े न्यूनतम खर्चों पर आधारि हैं. बीड़ीसिगरेट व शराब पीने तथा सिने देखने वाला इन मदों पर इस से कम खर्च कर ही नहीं सकता. अगर वह इस का दोगु खर्च करता है तो यह रकम 2,04,000 रु हो जाएगी, इस से भी ज्यादा खर्च करने व

व्यसन	दैनिक खर्च (रुपयों में)	मासिक खर्च (रुपयों में)	वार्षिक खर्च (रुपयों में)	21 से 70 वर्ष तक (50 वर्ष में) खर्च (रुपयों में)
धूम्रपान	3.00	90.00	1080.00	54,000.00
शराब	–	50.00	600.00	30,000.00
सिनेमा	–	30.00	360.00	18,000.00
			योग	1,02,000.00

वर्ष से अधिक जीने वाला व्यक्ति इन मदों पर अपने खर्चे का अनुमान स्वयं लगा सकता है, क्योंकि ज्योंज्यों व्यक्ति की उम्र बढ़ती जाती है, उस की ये आदतें भी बढ़ती जाती हैं.

थोड़ीथोड़ी कर के खर्च की जाने वाली यह मोटी रकम व्यक्ति के किसी काम नहीं आती. इन रुपयों को व्यक्ति धुएं की तरह फूंक देता है. अगर यही रकम परिवार की सुखसुविधाओं और बच्चों के सही पालनपोषण पर खर्च की जाए तो देश के कल के नागरिकों का भविष्य उज्ज्वल होगा.

किसी ने सच ही कहा है कि "पैसा कमाना कठिन है, लेकिन उसे सही ढंग से खर्च करना और भी कठिन है."

धूम्रपान करने वालों का एक वर्ग ऐसा भी है, जो अपनी सिगरेटें कभी बुझने नहीं देता यानी एक के बाद एक सिगरेट पीता रहता है. इन्हें 'चेनस्मोकर' कहा जाता है. एक चेनस्मोकर एक घंटे में औसतन 10 सिगरेट पीता है. अगर वह आठ घंटे तक लगातार सिगरेट पीता है तो कुल 80 सिगरेट फूंक डालता है. इन सिगरेटों की कीमत 10 रुपए से किसी प्रकार कम नहीं होती यानी 300 रुपए महीना.

25 साल तक लगातार सिगरेट पीने वाला लगभग 90,000 हजार रुपए की सिगरेट पी जाता है. चूंकि इस वर्ग में अधिकतर वकील, डाक्टर या अधिकारी ही होते हैं, अतः उन के लिए यह मामूली बात हो सकती है. लेकिन एक बात ध्यान देने योग्य है कि इन लोगों की यह आदत घर में घुसते ही बंद हो जाती है. क्या इस से यह सिद्ध नहीं होता कि ऐसे लोग केवल वर्ग विशेष में चर्चित होने के लिए लगातार सिगरेट पीते हैं. कीमती अंगरेजी शराब, बीयर आदि पीने वालों के खर्च का अंदाजा आप स्वयं लगा सकते हैं.

हजारों परिवार ऐसे हैं, जिन के पास रहने को अपना मकान नहीं है और वे किराए के मकान में ही अपनी पूरी जिंदगी बिता डालते हैं. वे लोग इन दुर्गुणों को त्याग कर रहने लायक मकान तो बना ही सकते हैं, बच्चों के स्वास्थ्य व उन की उच्च शिक्षा पर भी काफी खर्च कर सकते हैं.

समान आय वाले दो परिवारों में यदि एक परिवार का स्वामी इन मदों पर अपव्यय करता हो और दूसरे परिवार का स्वामी इन सब से दूर रहता हो तो निश्चय ही उस के रहनसहन का स्तर पहले वाले से उच्च होगा. उस का पारिवारिक जीवन भी अधिक सुखी होगा.

शेखर और सुशील एक ही दफ्तर में काम करते हैं. दोनों को समान वेतन मिलता है, मगर दोनों के रहनसहन के स्तर में जमीनआसमान का अंतर है.

शेखर को धूम्रपान, मद्यपान आदि की कोई आदत नहीं है, इसलिए उस ने कम आय में ही घर को व्यवस्थित कर रखा है, थोड़ीथोड़ी बचत कर के उस ने टेलीविजन भी ले लिया है, जब कि सुशील के घर में रोज कलह होता है, बच्चों की पढ़ाईलिखाई भी ठीक तरह से नहीं हो पाती. टेलीविजन तो दूर की बात है, वह अभी तक ट्रांजिस्टर भी नहीं ले पाया है. यह सब देख कर पड़ोसी अकसर [illegible] करते हैं कि शेखर

की 'ऊपर की कमाई' है. पर लोग नहीं सोच पाते कि वह किसी भी व्यसन से अपने को दूर रखने के कारण ही इतना खुशहाल है.

कुछ लोगों का खयाल है कि इन सब चीजों को छोड़ देने से उन का जीवन नीरस हो जाएगा. लेकिन यह उन की भूल है. इन व्यसनों को छोड़ देने से उन का जीवन नीरस नहीं, बल्कि खुशहाल हो जाएगा. आर्थिक बचत तो होगी ही, साथ ही वे इन व्यसनों से होने वाली उन बीमारियों से भी अपने को बचा सकेंगे, जिन पर सैकड़ों रुपया व्यर्थ खर्च हो जाता है.

आखिर लोग इन्हें छोड़ क्यो नहीं पाते? इस का मुख्य कारण है अपने निर्णय पर दृढ़ नहीं रह पाना. बिना दृढ़ निश्चय के इन व्यसनों को छोड़ा नहीं जा सकता.

कोई भी पत्नी शराबी पति को व कोई भी बच्चा शराबी पिता को पसंद नहीं करता, चाहे वे खुल कर विरोध न कर पाएं, लेकिन दिल ही दिल में वे ऐसे व्यक्ति से नफरत करते हैं. अतः व्यसनों को त्याग कर ही व्यक्ति अपनी पत्नी एवं बच्चों का प्यार पा सकता है.

यह तो हुई पुरुषों की बात. कुछ महिलाएं भी अपव्ययी होती हैं. उन का अपव्यय महंगे सौंदर्य प्रसाधनों व कीमती साड़ियों पर किया गया खर्च होता है. कहने का तात्पर्य यह नहीं कि वे अपनी सौंदर्य रक्षा पर कुछ खर्च न करें या साड़ियां आदि न खरीदें, लेकिन अपने इन खर्चों में वे उचित कटौती तो कर ही सकती हैं. महंगे विदेशी सौंदर्य प्रसाधनों की जगह पर देशी सौंदर्य प्रसाधनों का इस्तेमाल कर सकती हैं.

उन को चाहिए कि वे साड़ी तभी खरीदें जब आवश्यकता हो, पड़ोसन या सहेली की साड़ियां देख कर केवल स्पर्धा के लिए साड़ियों की खरीद न करें. साड़ियों व गहनों की खरीद करते समय अपने बजट का भी ध्यान रखें ताकि बाद में कोई परेशानी न उठानी पड़े.

इस प्रकार सोचसमझ कर खर्च करने तथा अपनी खराब आदतों पर अंकुश लगाने से खुशहाल बना जा सकता है. अतः जहां तक हो सके फुजूलखर्ची से बचें.

कर्फ्यू

कहानी • खालिद परवेज

"ए फार एप्पल... बी फार बेबी... सी फार कैट..." मास्टर साहब नन्ही शाहीना को पढ़ा रहे थे. शाहीना बड़ी दिलचस्पी से पढ़रही थी. 'पी फार पुलिसमैन' पर पहुंचते ही शाहीना रुक गई और बोली,

"पुलिसमैन के बारे में और बताइए न, मास्टर साहब.

यह शाहीना का प्रतिदिन का क्रम था. अपना पाठ पढ़तेपढ़ते जैसे ही वह 'पी फार पुलिसमैन' पर पहुंचती, वहीं रुक जाती और मास्टर साहब से पुलिस वालों के बारे में तरहतरह की बातें पूछने लगती, जैसे—पुलिस वाले कौन होते हैं, वे सब को पकड़ते क्यों हैं, आदि. न जाने क्यों शाहीना को पुलिस वालों के बारे में जानने की इतनी उत्सुकता रहती थी.

मास्टर साहब ने उसे पुलिस वालों के बारे में बतलाना आरंभ किया, "बेटी, पुलि[स] हमारी रक्षा के लिए है. पुलिस चोरों बदमाशों से निबटती है. गुंडों को ठिका[ने] लगाती है, तस्करों को पकड़ती है. पुलिस ह[र] शरीफ आदमी की मदद भी करती है, जिस[से] कोई बदमाश उस पर जुल्म न कर स[के] पुलिस सारे शहर में ही नहीं, पूरे देश [में] अमनचैन बनाए रखने में लोगों की मद[द] करती है. बेटी, बस यों समझ लो कि हर [बुरे] आदमी की दुश्मन है यह पुलिस."

मास्टर साहब की बात सुन [कर] शाहीना ने यों सिर हिला दिया जैसे उस[की] समझ में सब कुछ आ गया हो.

किसी पुलिस वाले को देखते ही शाहीन[ा] की आंखों में एक चमक सी आ जाती थी.

शाहीना के साथ हुए हादसे ने न केवल पुलिस व्यवस्था की धज्जियां उड़ा दी थीं बल्कि उस के मन में बसी पुलिस की छवि को भी चूरचूर कर दिया था
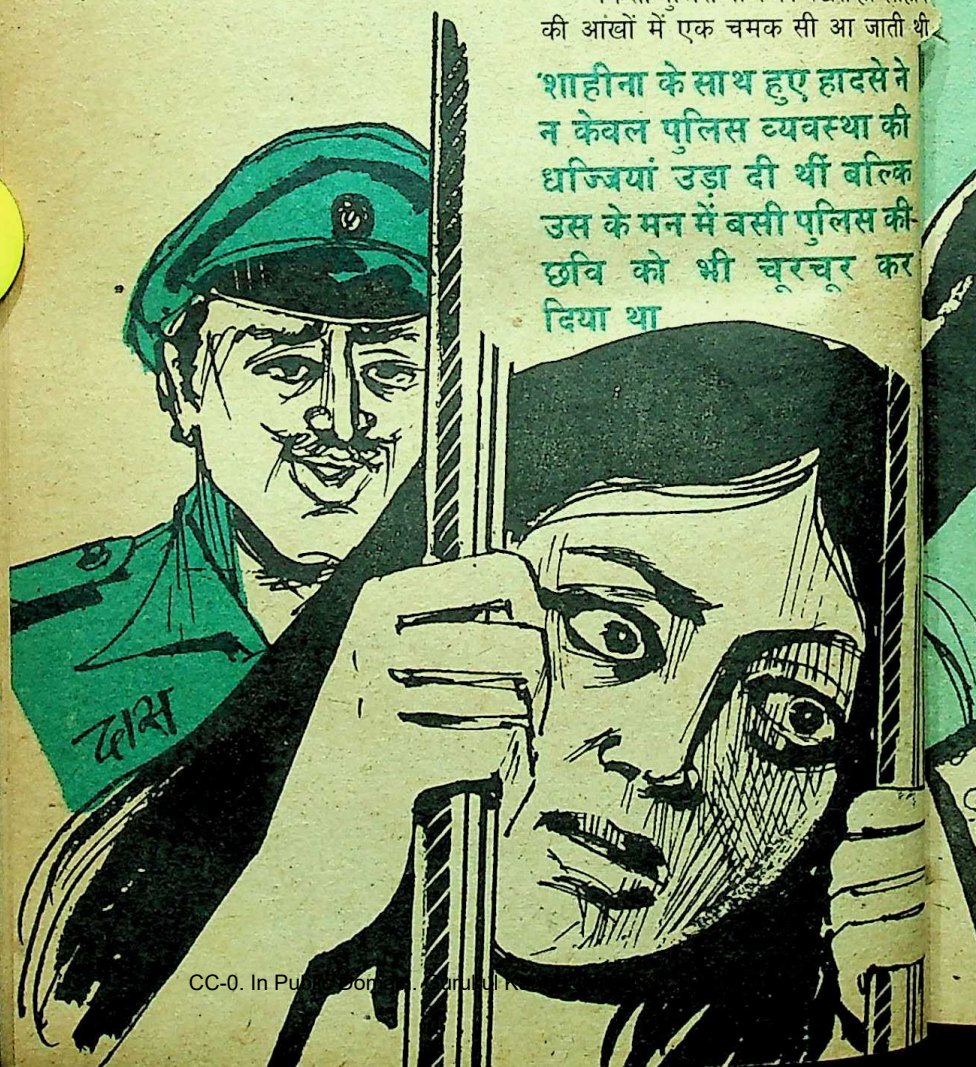
पुलिस
के लि
प्यार

साथ
आता
था तो
वाले
"चाच
हरक
रह ज

पुलिस वाले के सम्मान में उस के हाथ नमस्ते के लिए उठ जाते थे और पुलिस वाले भी बड़े प्यार से कहते, "नमस्ते, बेटा, नमस्ते."

महल्ले के पार्क में अपनी सहेलियों के साथ खेलती हुई शाहीना को यदि उधर से आताजाता कोई पुलिस वाला दिखाई दे जाता था तो वह खेल छोड़ कर भागती और पुलिस वाले को जोर से पुकार कर कहती, "चाचाजी, नमस्ते." और उस की इस हरकत पर उस की सहेलियां आश्चर्यचकित रह जाती थीं.

गीता उसे समझाती, "शाहीना, पुलिस वालों से न बोला कर. मां कहती है कि ये पकड़ लेते हैं."

"तू पगली है, गीता, पुलिस वाले हम को नहीं पकड़ेंगे. मास्टर साहब कहते हैं कि ये लोग चोरों को पकड़ते हैं," शाहीना हंस कर कहती.

समय तेजी से आगे बढ़ता रहा. दिन हफ्तों में, हफ्ते महीनों में और महीने वर्षों में बदलते रहे. समय के साथसाथ शाहीना भी बचपन और किशोरावस्था को पार कर के अब युवती हो चुकी थी.

"मेरी प्यास पानी से नहीं, इस से बुझेगी" दरोगा ने शाहीना को अपनी ओर खींचते हुए कहा.

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. भी हजारों वर्ग मील भारतीय विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा सहयोग और सद्भाव की आवश होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्था पूंजीपति या राजनीतिक दल से सं नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रका सहायता स्वीकार करती है. यह एक ही वर्ग की सहायता और बलबू निर्भर है. और वह हैं सरिता के प इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्सा सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी सरकार का और देशी व वि

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

जापान में इन दिनों हजारों नव-विवाहित जोड़े शादी करवाने वाली नई कंपनियों की बदौलत बड़ी राहत महसूस कर रहे हैं.

जापान ने जहां उद्योगधंधों में अभूतपूर्व प्रगति की है, वहां शादी के रस्मोरिवाजों को कम करने, चटपट शादी करने और शादी को कम खर्चीला व सुविधापूर्ण बनाने में भी वह किसी हद तक कामयाब हो गया है. जापान में अब ऐसी शादी करवाने वाली कंपनियां बन गई हैं जो शादी का सारा इंतजाम खुद करने लगी बस व्यक्ति को तो उन का सूचीपत्र देख व उस में अपनी इच्छित चीजों पर निशा लगाना होता है.

'टोकियो टेलीफोन बुक' में शादी व सारा इंतजाम करवाने वाली कंपनियों करीब 25 पृष्ठों में विज्ञापन छपे होते हैं. इ में विभिन्न स्थानों के हालों का विवरण होता है. ज्यों ही कोई व्यक्ति किसी हाल पसंद करता है, इस तरह की कंपनी उ सजाने और शादी का सारा इंतजाम करने

ठेके पर 'शादी करवाइए
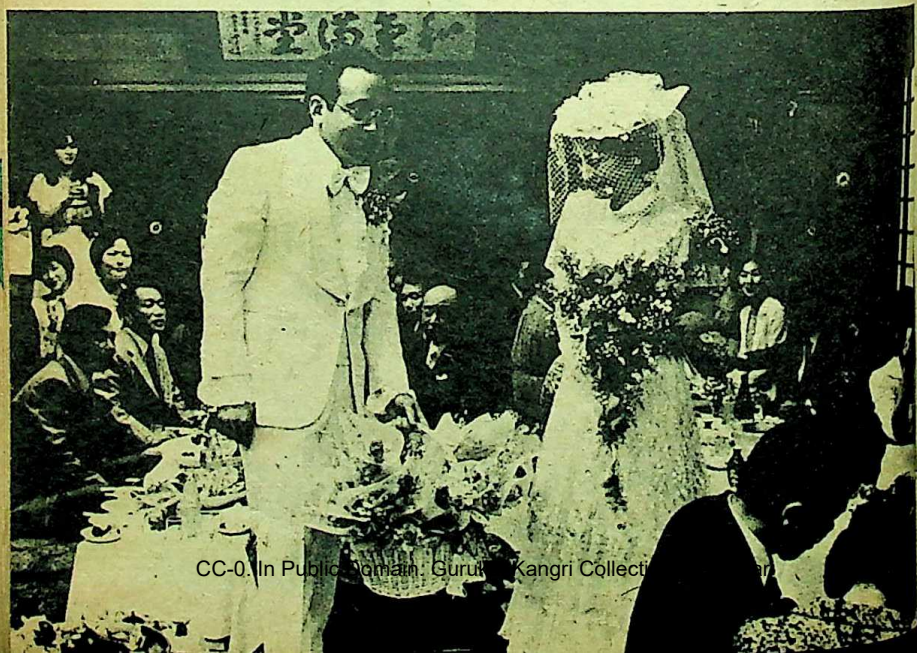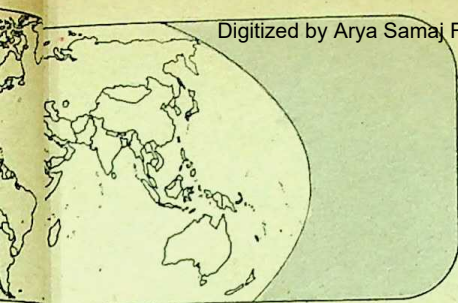
जिम्मेदारी तुरंत अपने ऊपर ले लेती है.

जिन हालों में इस तरह की शादी होती है, उन पर लिखा होता है—सहस्रों बधाइयां. हाल की सजावट के साथसाथ अंगूठी, फूल, दुलहन के गहने, दुलहन के फोटो व 70 व्यक्तियों के खानेपीने और वैवाहिक रीतियों को संपन्न करने के लिए आवश्यक चीजों का इंतजाम भी ये कंपनियां खुद ही करती हैं. इस तरह की शादी पर 8,000 डालर से ले कर 1,32,000 डालर तक खर्च आता है.

जापानी ढंग की शादी में सब से अधिक खर्च आता है दुलहन की पोशाक पर. विवाह के दौरान दुलहन दो या तीन बार अपनी पोशाक बदलती है. इस पोशाक का इंतजाम भी शादी की कंपनियां ही करती हैं. जापान में जिस शादी में दुलहन इस तरह कपड़े नहीं बदलती, उसे गरीब समझा जाता है.

संग्रहालय : शराब की बोतलों का

बोतलें ही बोतलें, सभी भरी हुई पर पानी से नहीं, शराब से. यह है मैड्रिड (पुर्तगाल) में 'चिकोट ड्रिंक्स म्यूजियम' जहां विभिन्न प्रकार की शराब की भरी करीब 10 हजार बोतलें रखी हैं. इस संग्रहालय में दर्शक तरहतरह की शराब देखतेदेखते प्यास महसूस करने लगते हैं, लेकिन उन्हें यहां पानी से भरी एक भी बोतल नजर नहीं आती.

साठ वर्ष पूर्व इस संग्रहालय की नींव पेड्रो चिकोट ने डाली थी. 1917 में चिकोट एक होटल में शराब वाले विभाग में काम करता था. यहां सभी तरह के लोग शराब पीने आते थे. एक राजदूत ने चिकोट की सेवाओं से प्रसन्न हो कर उसे ब्राजिलियन शराब की एक बोतल दी. बस चिकोट ने इस बोतल के साथ ही अन्य देशों की शराब की बोतलें एकत्र करने का काम शुरू कर दिया. बोतलों को एकत्र करवाने में इस के कुछ मित्रों ने भी सहयोग दिया.

सब से मजेदार बात यह है कि शराब के इस संग्रहालय के लिए मारियो मोरेनो, बुलफाइटर लूइस मिगूल डोमिनगूआन, राष्ट्रवादी चीन के राष्ट्रपति जनरल लिसिमो, च्यांग काई शेक, इथियोपिया के भूतपूर्व

शादी करवाने वाली जपानी कंपनियां दुलहन के कपड़ों व आभूषणों से ले कर बरातियों के खानेपीने का प्रबंध भी तुरंत कर देती हैं.
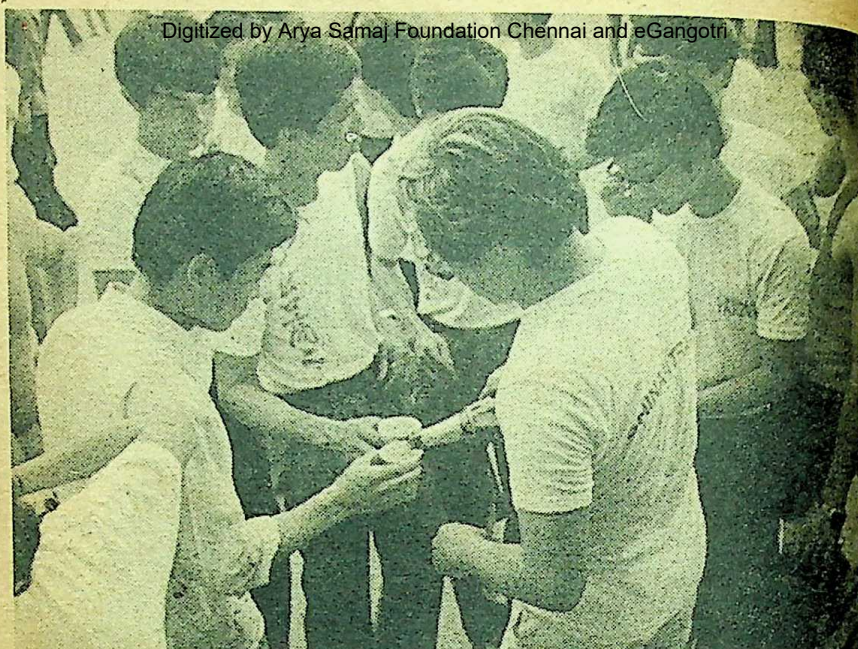
सम्राट हेल सेलासी, ईरान की भूतपूर्व मलिका सुरैया, चित्रकार पिकासो और पहले चंद्रयात्री आर्मस्ट्रौंग ने भी अपने देश की बनी शराब की बोतलें चिकोट को दी हैं.

कभी इसी तरह का एक संग्रहालय बनवाने की योजना भूतपूर्व अमरीकी राष्ट्रपति जान कैनेडी की पत्नी जैक्वेलिन कैनेडी के दूसरे पति ओनासिस ने भी बनाई थी. लेकिन चिकोट ने उस का साथ नहीं दिया. कहा जाता है कि ये दोनों घनिष्ठ मित्र थे.

यहां कुछेक कीमती चीजें दर्शकों को काफी अच्छी लगती हैं. इन में मुख्य हैं—अमरीका की ह्विस्की, चीन का स्नेक जूस, जो सचमुच के सांपों से बनाया जाता है, इथियोपिया की शहद वाली शराब, जो सम्राट हेल सेलासी ने भेंट की थी, चंद्रयात्री आर्मस्ट्रौंग द्वारा दी गई एक ट्यूब जिस में चंद्रमा की यात्रा से बचा कर लाई हुई काफी है.

संग्रहालय में रखी बोतलों के तरहतरह के आकार हैं. बोतलों के लेबलों पर उन देशों के नाम भी आसानी से पढ़े जा सकते हैं, जहां से ये लाई गई हैं.

चीनी युवकयुवतियों में पाश्चात्य वस्तुओं, फैशन व कपड़ों के प्रति आकर्षण बढ़ना कम्यूनिस्टों के लिए चिंता का विषय है. (ऊपर व नीचे)

चीन में जींस का जोर

चीन के कैंटन शहर में हवाई अड्डे पर उतरते ही जब बाहर के यात्रियों को 'लेनिन, मार्क्स अमर रहें' के नारे वाले और माओत्से तुंग के वचनों वाले बड़ेबड़े बोर्ड देखने को मिलते हैं तो उन्हें लगता है कि वे किसी कम्युनिस्ट देश में ही घूम रहे हैं, लेकिन जैसे ही वे हवाई अड्डे से थोड़ा आगे बढ़ते हैं तो उन्हें कम्यूनिस्ट नारों की जगह पश्चिमी सभ्यता व फैशन के दर्शन होने लगते हैं.

चीन द्वारा हाल में अपनाई गई सीमित मुक्त व्यापार नीति और विभिन्न देशों के साथ हुए समझौतों से चीन की युवा पीढ़ी तेजी से बदलने लगी है, क्योंकि अब विदेशी माल कुछ तो नई आर्थिक नीति के कारण और कुछ पड़ोसी देश हांगकांग से चोरीछिपे चीन में पहुंच रहा है.

कैंटन में पश्चिमी फैशन का प्रभाव किस कदर बढ़ रहा है, इस का पता जूजियांग नदी के तट के पास घूमते चीनी युवकयुवतियों की वेशभूषा, हावभाव, चालढाल और उन की बातीचीत को देख कर तुरंत लगाया जा सकता है. चीनी नौजवान लेनिन व माओ को भुला कर चुस्त जींस पहने, आइसक्रीम खाते और पश्चिमी संगीत के कैसेट और रिकार्ड बजाते देखे जा सकते हैं. यहां के युवकों को पहनावे में जींस सब से अच्छी लगती है. लड़कियों को भी जींस, मैक्सी, मिडी पहने देखा जा सकता है.

यहां के युवकयुवतियां हांगकांग के टी. वी. कार्यक्रमों से भी काफी प्रभावित हैं, जिन में अकसर पश्चिमी सभ्यता, संगीत और फैशन ही देखने को मिलता है. पिछले कुछ अरसे से कैंटन में विदेशी सैक्स पत्रपत्रिकाओं, परिधानों, और शृंगार प्रसाधनों की बाढ़ सी आ गई है. इस से कैंटन के चीनी शासक बहुत चिंतित हैं.

रातदिन गला फाड़फाड़ कर पश्चिमी देशों और रूस को बुर्जुआ, पूंजीवादी, साम्राज्यवादी, संशोधनवादी आदि का खिताब देने वाले चीन के कम्यूनिस्ट शासक अब अपने ही देश में पश्चिमी फैशन की बढ़ती आंधी और टूटते कम्यूनिस्ट दर्शन से बुरी तरह परेशान हैं. अपने देश के युवाओं में आए इस बदलाव से चीन का कम्यूनिज्म अब लड़खड़ाने लगा है.

दादियों का नया संगठन

अब फाकलैंड का युद्ध समाप्त हो गया है. इस युद्ध में आर्जेनटीना हारा और ब्रिटेन जीत गया. युद्ध के बाद एक बार फिर आर्जेनटीना में सत्ता परिवर्तन हुआ और नए फौजी शासक सत्तारूढ. हो गए. उन्हें सत्तारूढ़ हुए अभी थोड़ा ही अरसा बीता है कि वे 'दादियों के संगठन' की मांग से परेशान होने लगे हैं.

1970 से आर्जेनटीना में सत्ता परिवर्तन होते रहे हैं. एक फौजी शासक दूसरे का तख्ता पलट कर सत्ता में आता रहा है. हर नए शासन में कितने ही निरपराध स्त्रीपुरुष अपराधियों और षडयंत्रकारियों के संदेह में पकड़े जाते हैं.

पिछले 12 वर्षों में हजारों स्त्रीपुरुष

युद्धों के कारण अनाथ और बेसहारा हुए बच्चों का अतापता बताने में आर्जेनटीना सरकार असमर्थ है.

सैनिकों की गोलियों का शिकार हुए हैं, जिस से अनेक बच्चे यतीम बन गए हैं.

आर्जेनटीना में कुछ वर्ष पूर्व स्थापित हुआ दादियों का संगठन अब ऐसे बच्चों का विवरण एकत्र कर रहा है जिन के जन्म के समय उन के मांबाप मर गए थे या घर से भाग गए थे. यतीम बच्चों में से बहुत से गोद लिए जाते हैं तथा बहुत से नौकरों के रूप में बाहर के देशों में भी पहुंच जाते हैं.

देश की राजधानी में स्थित इस संगठन के कार्यालय को जिन बच्चों के बारे में जानकारी मिल जाती है उन की यह पूरी खोजखबर रखता है और उन्हें उन के मातापिताओं, रिश्तेदारों या उन के शहर तक पहुंचाने की व्यवस्था करता है.

मानव अधिकारों से संबंधित संगठन के अनुसार 1970 में छः हजार से ले कर 14 हजार लोगों को आर्जेनटीना की खुफिया पुलिस ने पकड़ कर कैंपों में बंद कर दिया था. इसी तरह वहां वामपंथी और दक्षिणपंथी छापामारों की बमबारी, अपहरण और लूटपाट से तंग आ कर पुलिस ने अनगिनत लोगों को संदेह में पकड़ कर जेलों में डाल दिया. 1970 से 1975-76 तक कई बार हजारों लोग पुलिस द्वारा पकड़े और मारे गए और इस तरह यतीम बच्चों की संख्या में वृद्धि होती गई. साथ ही इन बच्चों की देखरेख करने वाली संस्थाओं की संख्या भी बढ़ी.

दादियों का संगठन अब यतीम और खोए हुए बच्चों के बारे में देश भर खोजबीन कर रहा है और तरहतरह की सूचनाएं एकत्र कर के सरकार से इस की पुष्टि करवा रहा है.

आर्जेनटीनी शासक इन दिनों दादियों के संगठन की नईनई मांगों से बुरी तरह परेशान हैं. सही बात की उन्हें जानकारी नहीं है और गलत बातें बोल कर वे बाद में मुसीबत मोल नहीं लेना चाहते.

छः वर्ष बाद पत्नी से मुलाकात

आखिर पूरे छः वर्ष के बाद रूस की सरकार ने विश्व प्रसिद्ध शतरंज खिलाड़ी विक्टर कोर्चनोय (जिसे पिछले दिनों लंदन में आयोजित लायड्स बैंक मास्टर्स चैस टूर्नामेंट में भारत के दिव्येंदु बरुआ ने पांचवें चक्र में हरा कर एक सनसनी मचा दी थी) की पत्नी बेल्ला और पुत्र इगोर को रूस से बाहर जाने की अनुमति दे ही दी. इन दोनों को पूरे छः वर्ष तक रूस की कम्यूनिस्ट सरकार से बाहर जाने के लिए कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ी.

विक्टर कोर्चनोय रूस का शतरंज का वह प्रसिद्ध खिलाड़ी है, जिस ने 1976 में एम्सटरडम में हुई शतरंज की अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लिया था और रूस लौटने से इनकार कर दिया था. तब से कोर्चनोय रूस का कटु आलोचक बन गया है.

रूस की सरकार ने कोर्चनोय के रूस से जाने के बाद उस के पुत्र व पत्नी का रूस से बाहर जाने के लिए साफ मना कर दिया था. यही नहीं, कोर्चनोय के 23 वर्षीय लड़के इगोर को सेना की नौकरी से इनकार करने के अपराध में ढाई वर्ष तक साइबेरिया की जेल में भी रखा गया.

1976 से ही स्विटजरलैंड में रह रहे कोर्चनोय ने ब्रेजनेव, जिमी कार्टर, पोप जान पाल (द्वितीय) तथा अनेक अन्य लोगों को पत्र लिख कर अपनी पत्नी और पुत्र को रूस से

बाहर आने में मदद देने की प्रार्थना की थी और जून के आखिरी दिनों में इन दोनों को रूस छोड़ कर स्विटजरलैंड जाने की अनुमति मिल ही गई.

एक अनुमान के अनुसार रूस छोड़ कर पश्चिमी देशों में बसने वाले रूसियों की संख्या में अब काफी वृद्धि हो रही है. पिछले 10 वर्षों के दौरान करीब 200 प्रसिद्ध नेता, तैराक, पत्रकार, नर्तक, खिलाड़ी, सिने कलाकार रूस छोड़ कर पश्चिमी देशों में बस गए हैं.

बच्चे पैदा करना अब महंगा काम

अमरीका के एक लेखक लारेंस ओलसन की पुस्तक 'कास्ट्स आफ चिल्ड्रन' के अनुसार अमरीका में अब बच्चे पैदा करना महंगा काम हो गया है. ओलसन की यह पुस्तक डाटा रिसोर्सेज इनकार्पोरेटेड द्वारा संगृहीत आंकड़ों पर आधारित है. यह संगठन अमरीकी परिवारों के बारे में संपूर्ण जानकारी एकत्र करता है.

इस पुस्तक में बच्चे के जन्म से ले कर उस की 22 साल की आयु होने तक उस पर होने वाले खर्च का अनुमान भी लगाया गया है. सन 1980 में जो बच्चा पैदा हुआ है, उस के पालनपोषण पर 1982 में ही 2,26,00 डालर (लगभग सवा दो लाख रुपए) का खर्च बढ़ गया है. उस के कालिज पहुंचतेपहुंचते तो यह खर्च काफी बढ़ जाएगा.

लड़की के पालनपोषण और बड़े होने पर उस की आवश्यकताओं का खर्च लड़कों से अधिक होता है. इस तरह अब लड़की पर करीब 2,47,000 डालर का खर्च बढ़ गया है. पुस्तक के लेखक ओलसन एक आर्थिक सलाहकार संगठन 'सेज एसोसिएशन' के अध्यक्ष हैं. उन का कहना है कि बच्चों का पालनपोषण आदि सस्ता तब है जब बच्चे एक से अधिक हों, क्योंकि उस समय सभी बच्चों पर अपेक्षाकृत कम खर्च किया जाता है. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055

महिला रोजगार

बाल देखरेख केंद्र

लेख • प्रतिनिधि

शहर में तेजी से पारिवारिक विघटन हो रहा है. अधिकांश कामकाजी महिलाएं तो संयुक्त परिवार में रहना पसंद ही नहीं करतीं. इस स्थिति ने कामकाजी महिलाओं के बच्चों की देखभाल की समस्या को जन्म दिया है— यानी जब वे
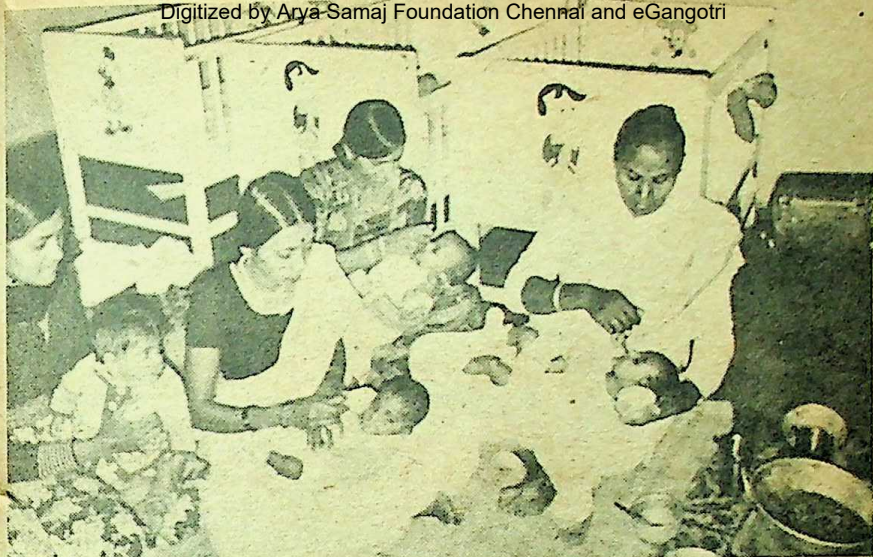
बच्चों को खानाखिलाना, दूध पिलाना, नहलाना और सुलाना केंद्र के दैनिक कार्यक्रमों में है.

बाल देखरेख केंद्रों ने जहां एक ओर कामकाजी महिलाओं की पेचीदा समस्याओं का निराकरण किया है वहीं दूसरी ओर कुछ महिलाओं को रोजगार का साधन भी दिया है. इन केंद्रों में बच्चों की देखभाल होती कैसे है?

दफ्तर जाएं तो उन के पीछे उन के छोटे बच्चों को कौन संभाले, उन की देखरेख कौन करे? संयुक्त परिवार में तो कोई कठिनाई थी नहीं, उन के पीछे घर के बड़ेबूढ़े तथा अन्य सदस्य बच्चों की देखभाल के लिए मौजूद रहते थे, पर अब समस्या गंभीर है.

बच्चों के पीछे नौकरी भी नहीं छोड़ी जा सकती, क्योंकि उन्हीं के उज्ज्वल भविष्य के लिए तो उन की मां ने नौकरी की होती हैं. बच्चों की देखभाल के लिए आया रखी जा सकती है, पर आया का वेतन निकाल पाना सभी के लिए संभव नहीं होता, फिर आया के भरोसे सारा घर छोड़ कर जाना भी ठीक नहीं.

कामकाजी महिलाओं की इस पेचीदा समस्या का हल किया है बाल देखरेख केंद्रों ने. इन्हें 'चाइल्ड केयर सेंटर', 'डे केयर सेंटर' आदि भी कहा जा सकता है. लगभग सभी बड़े शहरों में बाल सुरक्षा केंद्र खुल गए हैं और अन्य शहरों में भी ऐसे केंद्र खोलने के पर्याप्त अवसर हैं.

यदि आप को बच्चों से प्यार है तो बहुत संभव है कि आप बाल देखरेख केंद्र खोलने का मोह टाल न सकें.

पिछले एक वर्ष से पश्चिमी पटेल नगर, नई दिल्ली में 'सुमित चाइल्ड केयर सेंटर' चलाने वाली श्रीमती लाल को भी बच्चों से बेहद प्यार था. जब उन के अपने बच्चे बड़े हो कर कालिज या काम पर जाने लगे तो उन के दिल में तीव्र लालसा पैदा हुई कि होस्टल या इसी प्रकार का कोई अन्य केंद्र खोला जाए, जहां बहुत से छोटेछोटे बच्चे जमा हों और अपनी नन्ही किलकारियों से वातावरण को गुंजा दें.
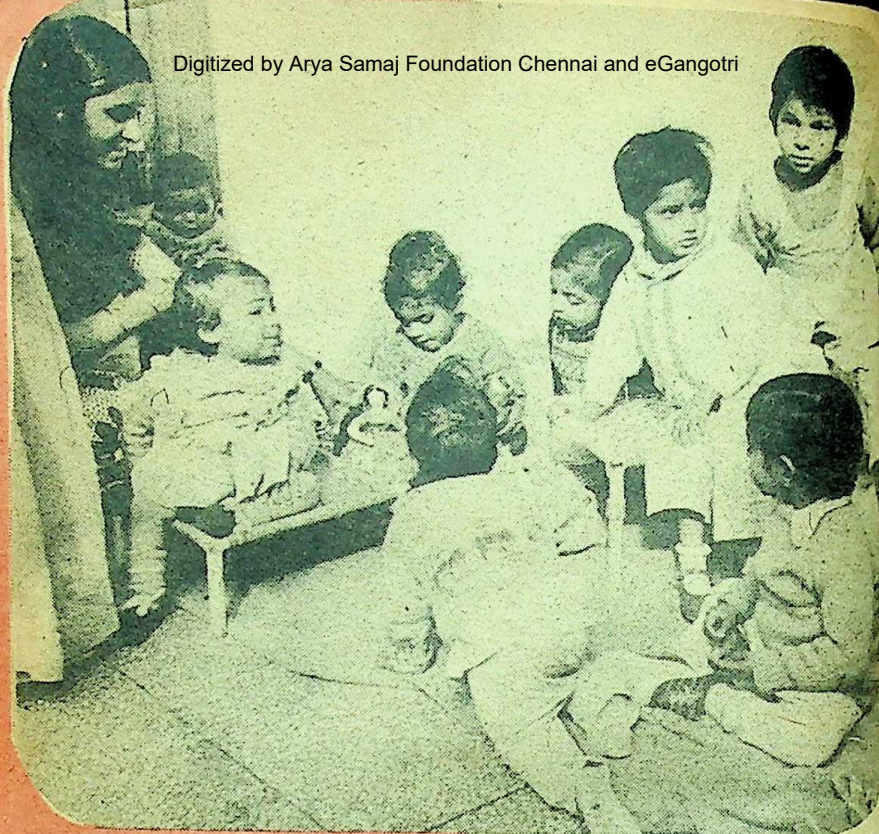
केंद्र की आया गीतसंगीत व खिलौनों से बच्चों का मनोरंजन करती है.

श्रीमती लाल के पास एक बड़ा कमरा और एक हालनुमा कमरा ऐसा था, जिस का प्रायः कोई इस्तेमाल नहीं था. इन कमरों को ही उन्होंने बाल देखरेख केंद्र के रूप में बदल दिया.

केंद्र में काम करने वाली एक अन्य महिला श्रीमती जोशी ने बताया, "इस समय हमारे यहां लगभग 20 छोटे बच्चे हैं. इन के मातापिता जब दफ्तर जाते हैं तो इन्हें यहां छोड़ जाते हैं. खानेपीने और सफाई आदि से संबंधित जिस नियम का इन्हें इन के मातापिता ने आदी बनाया होता है, हम उन्हीं नियमों का पालन करते हुए बच्चों की देखभाल करते हैं.

"हमारे यहां अधिकांशतः मध्यवर्गीय परिवारों के बच्चे आते हैं. उन की कामकाजी माताएं विभिन्न व्यवसायों में होती हैं– कोई कहीं अध्यापिका है, कोई सहायिका के पद पर काम कर रही है, कोई अफसर हैं, कोई किसी और अच्छी नौकरी में है."

उन्होंने आगे बताया, "इस प्रकार के बाल देखरेख केंद्रों में आम तौर से छः महीने से ले कर ढाईतीन साल तक के बच्चे लिए जाते हैं. बच्चों के मांबाप को केंद्र से सब से ज्यादा जिस चीज की अपेक्षा होती है, वह है– सुरक्षा की पूरीपूरी जिम्मेदारी. हमें केवल बच्चों की सुखसुविधाओं का ही खयाल नहीं रखना होता, बल्कि बाहरी असामाजिक तत्त्वों से भी उन्हें सुरक्षित रखना होता है. बाहरी व्यक्तियों के आनेजाने पर हमें कड़ी नजर रखनी होती है. मातापिता के अलावा किसी और व्यक्ति को मामली सबूत के आधार पर हम बच्चों को नहीं सौंप सकते."

क्याक्य
पर श्री
मन बह
के लिए
तरहत
मनोरंज
प्रबंध.
द्वारा
मनोरंज
उन्होंने
प्रमुख
या दूध
से मां
उन की
नहला
20 ब

अक्ष
सहा
खिल
काम

"एक बाल सुरक्षा केंद्र में बच्चों के लिए क्याक्या सुविधाएं होनी चाहिए?" इस प्रश्न पर श्रीमती जोशी ने जवाब दिया, "बच्चों के मन बहलाने के लिए और उन्हें रोने से रोकने के लिए जितनी चीजें रखी जाएं कम हैं– जैसे तरहतरह के खिलौने, खेलने का सामान, मनोरंजन के साधन, सर्दीगरमी से बचाव का प्रबंध. बच्चों की दिलचस्पी के गीतसंगीत द्वारा और कहानियां सुना कर भी उन का मनोरंजन किया जा सकता है.

केंद्र का दैनिक कार्यक्रम बताते हुए उन्होंने कहा, "हमारे कार्यक्रम में दोतीन बातें प्रमुख हैं– बच्चों को नियमानुसार खिलाना या दूध पिलाना (खानेपीने की चीजें आम तौर से मांबाप स्वयं दे कर जाते हैं). बीचबीच में उन की सफाई, ढाईतीन बजे के लगभग उन्हें नहलाना और फिर उन्हें सुलाना."

सुमित चाइल्ड केयर सेंटर में इस समय 20 बच्चों की देखभाल के लिए दो आयाएं हैं.

बाल सुरक्षा केंद्रों का एक माह का शुल्क आम तौर से 60 से 100 रुपए प्रति बच्चा होता है. बहुत से लोग आधे दिन के लिए अपने बच्चों को रखते हैं. उन से कुछ कम शुल्क लिया जाता है.

छोटे स्तर पर बाल सुरक्षा केंद्र खोलने पर 500 से 1,000 रुपए की आय की संभावना रहती है. बड़े शहरों के हर उस इलाके में ऐसे केंद्र खोले जा सकते हैं, जहां कामकाजी महिलाओं की संख्या ज्यादा हो.

अक्षर ज्ञान रखने वाले बच्चों को पढ़ने में सहायता देना (दाएं) तथा बच्चों को खेल खिलाकर बहलाना (नीचे) भी केंद्र का काम है.

अपनी समस्याएं भेजिए. इस स्तंभ के अंतर्गत नीरजा द्वारा आप की समस्याओं का समाधान किया जाता है.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग
ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली -110055.

मेरी उम्र 24 वर्ष की है और मैं सरकारी कर्मचारी हूं. तीन साल पहले मुझे एक लड़की से प्यार हो गया था जो नौकरी करती है. हम लोगों ने अपने घर वालों की अनुमति न मिलने के कारण अदालत में शादी कर ली. मेरे घर वाले इस शादी का इसलिए विरोध कर रहे थे कि वह लड़की बेसहारा है और किसी ऊंचे खानदान की नहीं है. वे मुझ पर दूसरी शादी करने के लिए दबाव डाल रहे हैं. बताइए, मैं क्या करूं?

आप अपने मांबाप की बात हरगिज न मानें. किसी भी व्यक्ति का महत्त्व उस के गुणों, उस की आदतों से होता है न कि खानदान से. बेहतर यही होगा कि आप अपने परिवार से अलग हो कर रहने लगें. वैसे भी दूसरी शादी करना न केवल गैर कानूनी होगा, बल्कि सरकारी कर्मचारी होने के कारण दूसरी शादी करने से आप को नौकरी से भी हाथ धोना पड़ जाएगा.

*

मैं बैंक में नौकरी करता हूं. इस साल मेरी शादी होने वाली है. पर मैं बहुत हीन भावना से ग्रस्त हूं. मेरी होने वाली पत्नी काफी सुंदर है जब कि मेरे चेहरे पर काफी दाने व दाग हैं जो संभवतः मुंहासों के हैं. मुझे कोई ऐसा उपाय बताएं जिस से मैं आकर्षक बन कर सुखपूर्वक विवाहित जीवन बिता सकूं.

इस समस्या के कारण अपने मन में हीन भावना न लाएं, क्योंकि प्रायः लड़कियां पुरुष को उस की सुंदरता के कारण इतना महत्त्व नहीं देतीं, जितना कि उस की योग्यता और गुणों के कारण. आप अपनी खुशमिजाजी और स्वभाव द्वारा अपनी पत्नी का मन जीत सकते हैं. त्वचा के संबंध में आप किसी अच्छे चिकित्सक की सलाह ले सकते हैं.

*

मैं गृहमंत्रालय में काम करता हूं. क[illegible] समय पहले मेरा परिचय एक विवाहित स्[illegible] से हो गया जो मेरी बस में आतीजाती [illegible] हमारा परिचय मित्रता में बदल गया. ए[illegible] दिन मैं ने उस के दफ्तर फोन किया. इस प[illegible] वह नाराज हो कर बोली कि मैं उ[illegible] बिलावजह फोन न किया करूं. कुछ दिनों ब[illegible] वह फिर मुझ से हंस कर बोलने लगी. ए[illegible] दिन मैं उस से उस के दफ्तर के बाहर मि[illegible] तो उस ने मुसकरा कर मेरा स्वागत किया. प[illegible] जब मैं अगली बार वहां गया तो वह फि[illegible] नाराज हो गई. वह मुझे बहुत अच्छी लगत[illegible] है. बताइए, वह ऐसा क्यों करती है?

उस लड़की ने आप के साथ ज[illegible] व्यवहार किया, वह एक उचित कदम था[illegible] बसों में सहयात्रियों से परिचय हो जाना [illegible] उन से हंसनाबोलना सामान्य बात है. परन्[illegible] परिचय बस तक ही सीमित रखना बेहत[illegible] होता है. वह लड़की विवाहित है. अगर व[illegible] आप से हंस कर बोलती है तो इस का य[illegible] अर्थ नहीं कि आप बिलावजह उसे फोन क[illegible] या उस के दफ्तर जा पहुंचे. आप की इ[illegible] हरकतों से उस की बदनामी हो सकती है[illegible]

*

मेरी उम्र 16 वर्ष की है और मैं 10[illegible] कक्षा में पढ़ता हूं. मेरी एक छोटी बहन है. मे[illegible] मांबाप व बहन सभी मुझ से कटेकटे रहते हैं[illegible] पढ़ाई के बावजूद मुझे घर का सारा काम[illegible] करना पड़ता है. मुझे सारा दिन गालिय[illegible] सुननी पड़ती हैं, जबकि मेरी बहन को मांबाप[illegible] बहुत प्यार करते हैं. बताइए, मैं क्या करू[illegible]

कोई भी मांबाप बिलावजह अप[illegible] बच्चों से नाराज नहीं होते. उन की नाराज[illegible]

के पीछे कुछ न कुछ कारण जरूर होगा. हो सकता है कि वे आप की किसी आदत से नाराज रहते हों या आप उन की इच्छा के अनुसार पढ़ाई की ओर पूरा ध्यान न देते हों. आप इस संबंध में उन से प्यार से पता करने की कोशिश करें कि वे आप से क्यों नाराज हैं और उन की शिकायत को दूर करने का प्रयत्न करें. इस संबंध में आप अपने किसी नजदीकी रिश्तेदार की सहायता भी ले सकते हैं.

*

मेरे पिताजी मुझे विज्ञान पढ़ाना चाहते थे. जब मैं उन से इस विषय को कठिन बताता तो वह मुझे ट्यूशन लगवा देने की बात कह प्रोत्साहित करते. मैं बुरी संगतों में पड़ जाने के कारण जुआ आदि खेलने लगा और लगातार दो बार फेल हो गया. जब मेरी आंखें खुलीं और मैं ने मन लगा कर आगे पढ़ना चाहा तो पिताजी ने मुझे पढ़ाने से इनकार कर दिया. वह मुझे नौकरी भी नहीं करने दे रहे हैं. उन का कहना है कि मैं उन के साथ सिलाई के धंधे में लग जाऊं. मेरी इस में रुचि नहीं है. मुझे क्या करना चाहिए?

आप की बुरी आदतों व फेल हो जाने के कारण आप के पिताजी का दिल टूटना स्वाभाविक है. जहां तक आगे की पढ़ाई का संबंध है, आप प्राइवेट छात्र के रूप में भी घर पर पढ़ाई कर के परीक्षा दे सकते हैं. आजकल नौकरी मिल पाना कोई आसान बात नहीं है और आप की शिक्षा भी मामूली है. ऐसी हालत में अपने पिताजी की बात मान कर उन के साथ धंधे में लग जाना ही अच्छा होगा. जब आप को मौका मिला था तब तो आप ने उस का फायदा उठाया नहीं, अब पछताने से क्या लाभ?

*

मैं बी.ए. की छात्रा हूं. मेरी एक सहेली को एक लड़के से प्यार हो गया. वह लड़का भी उस के घर के चक्कर लगाता रहता था. पर दोनों ने आपस में कभी बातचीत नहीं की. एक दिन मैं ने उस लड़के से इस संबंध में बातचीत की तो उस ने यह माना कि उसे मेरी सहेली से प्यार है, पर उस से शादी कर सकने में अपनी असमर्थता जाहिर की. अब हालत यह है कि न तो लड़का ही मेरी सहेली को छोड़ पा रहा है और न ही मेरी सहेली उस के सिवा किसी और से शादी करने को तैयार है. बताएं कि उन्हें क्या करना चाहिए.

आप की सहेली ने यह जानते हुए भी कि वह लड़का उस से शादी नहीं करेगा, उस से प्यार कर के गलती की है. ऐसी हालत में उस लड़के को भूल जाना ही बेहतर होगा. आप उस लड़के से स्पष्ट कह दें कि अगर वह आप की सहेली से शादी नहीं कर सकता तो उस का पीछा करना छोड़ दे. वैसे भी इस मामले में ऐसा लगता है कि दोनों एकदूसरे के प्रति शारीरिक रूप से ही आकृष्ट हैं. बिना मिले इतना अधिक प्यार हो जाने की बात किसी भी हालत में संभव नहीं है.

*

मैं बी.ए. का छात्र हूं. मैं पिछले छः सालों से एक लड़की से प्यार कर रहा हूं. वह भी मुझे बहुत चाहती है. पर हमारे घर वाले इस शादी के लिए तैयार नहीं हैं, क्योंकि वह मुसलिम है और मैं हिंदू हूं. मेरे घर वालों ने मेरी सगाई कहीं और कर दी है. हम एकदूसरे के बिना जिंदा नहीं रह सकते. बताइए, हम क्या करें?

किसी भी लड़के को शादी तभी करनी चाहिए जब वह अपने पैरों पर खड़ा हो चुका हो. चूंकि अभी आप पढ़ रहे हैं, इसलिए आप को अभी शादी की बात नहीं सोचनी चाहिए. जहां तक हिंदू और मुसलमान में शादी के संबंध है, किसी एक द्वारा दूसरे का धर्म अपनाए बिना विवाह केवल अदालत में ही किया जा सकता है. आर्य समाजी रीति से विवाह करने पर उस लड़की को अपना धर्म बदलना पड़ेगा. अगर आप वास्तव में इस लड़की से इतना ही अधिक प्यार करते हैं तो आप को अपनी सगाई ही नहीं करवानी चाहिए थी. अगर आप दोनों में कुछ साल इंतजार कर सकने व विरोध कर सकने की क्षमता हो तभी यह विवाह हो सकता है.

— नीरजा

विभिन्न देशों में होने वाली यह प्रतियोगिताएं अपनी रोचकता के कारण दर्शकों के आकर्षण का प्रमुख केंद्र हैं.

मनोरंजक दौड़ प्रतियोगिताएं

लेख • लोकेंद्र चतुर्वेदी

दुनिया में सब से पहले शुरू होने वाले खेलों में दौड़ का नाम अव्वल है. इस में लोग खुद तो दौड़ कर अपनी चुस्तीफुर्ती और तंदुरुस्ती को कसौटी पर कसते ही हैं पर मनोरंजन के लिए अपने पालतू पशुओं की दौड़ प्रतियोगिताओं का आयोजन भी करते हैं. इन प्रतियोगिताओं में कुछ तो बेहद दिलचस्प और अनोखी होती हैं.

ऐसी ही एक अनोखी और दिलचस्प प्रतियोगिता केलिफोर्निया के कसबे सांता मोनिका में प्रति सप्ताह होती है, जिस में प्रतियोगी होते हैं— कछुए. दुनिया की इस सब से विचित्र दौड़ को देखने के लिए हजारों लोगों की भीड़ यहां मैदान के आसपास इकट्ठी हो जाती है. जब प्रतियोगी निश्चित लक्ष्य के पास पहुंच जाते हैं तब उन के प्रशंसकों की हर्ष भरी किलकारियां आंखों देखा हाल सुनाने वालों की जोशीली आवाज के साथ मिल कर वातावरण को रोमांचित कर देती हैं.

इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले प्रतियोगियों को एकदो नहीं, पूरे सात फीट का फासला तय करना होता है और इसे तय करने में हर प्रतियोगी को औसतन दो मिनट का समय लगता है.

कछुओं की इस अनोखी दौड़ में पिछले वर्ष 'टीटान' नामक कछूए ने 52 दौड़ों में से 11 में प्रथम आ कर विश्व के सब से तेज दौड़ने वाले कछुए का पदक जीता. लेकिन टीटान

कछुआ दौड़ का
दृश्य. दर्शक अप
मनपसंद के कछु
पर दाव लगाते

आर्मडिल्लो की दौड़. यह टेमसास का विशेष खेल है.

उस कीर्तिमान तक नहीं पहुंच पाया जो 1965 में लोनबोर्न नामक कछुए ने बनाया था. लोनबोर्न ने यह दूरी एक मिनट और आठ सेकंड में पूरी की थी. इस दूरी को सब से ज्यादा समय में पूरी करने का कीर्तिमान राकेट नामक कछुए ने 1972 में स्थापि किया था. उसे सात फीट के इस मैदान को प करने में पूरे 15 मिनट लगे थे.

घुड़दौड़ की तरह ही इस कछुआ दौड़ भी दर्शक अपने मनपसंद कछुओं पर द लगाते हैं. कछुओं के मालिक अपने कछु की रफ्तार तेज करने के लिए उन्हें विश प्रशिक्षण कक्षाओं में भेजते हैं. 'कछुओं अस्तबल' नाम से मशहूर इन प्रशिक्ष संस्थाओं में कछुओं को संतुलित आहार दे छरहरा बनाया जाता है और तेज रोशनी त शोरशराबे के बीच बिना झिझके, शरम दौड़ते रहने का अभ्यास कराया जाता है.

अमरीका की इस कछुआ दौड़ के ब जरा फ्रांस की उस घुड़दौड़ के बारे में भी ज लीजिए, जो ब्रिटेन की विख्यात घुड़दौड़ टक्कर में शुरू की गई है.

फ्रांस की इस घुड़दौड़ की खास बात है कि इस में बजाए घोड़ों के गधे दौड़ते हैं, सवार के रूप में उन पर वही लोग होते हैं घुड़दौड़ के समय घोड़ों की पीठ पर होते इन लोगों को जाकी कहते हैं. इन प्रशिक्षि जाकियों को अपनी पीठ पर बैठा कर गधों की पलटन दौड़ लगाती है हंसतेहंसते दर्शकों के पेट में दर्द होने लगता 1981 की इस गधा दौड़ में 'उड़ता सिता नामक गधा अव्वल रहा था.

चूहा दौड़ भी

अमरीका और फ्रांस की कछुआ व ग

उ
"ज
वह
अच
का
इर्स
आ
डॉ

क्या आपका मुन्ना ३ महीने का हो गया?

अब सिर्फ़ दूध उसकी आयरन की ज़रूरत नहीं पूरी कर सकता

उसे दीजिये आयरन से भरपूर - फ़ैरेक्स

"जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं। इसीलिए बच्चे को आयरन वाले ठोस आहार चाहिए।"

—डॉ. सुभाष सी. आर्य :

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है

फ़ैरेक्स

FAREX

CASGLF-32-183 HN
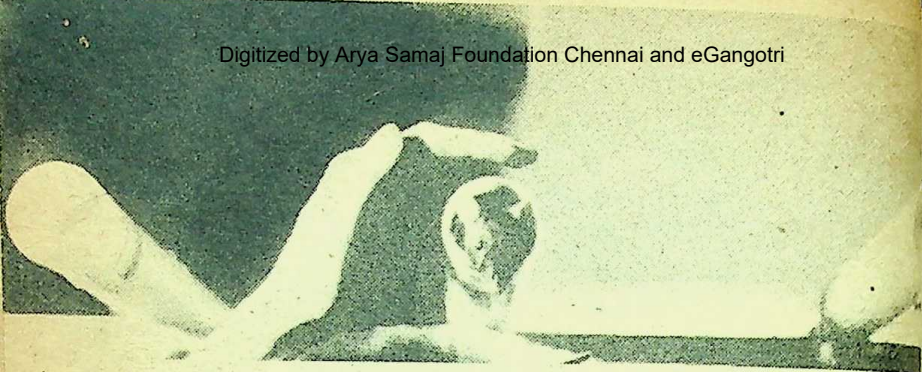
ब्रिटेन की चूहा दौड़, जिस में विजयी प्रतियोगी को स्वर्ण कप प्रदान किया जाता है

दौड़ के बाद अब ब्रिटेन की विख्यात चूहा दौड़ के बारे में भी जानिए. इस दौड़ में विजय प्राप्त करने वाले चूहे को 'राहुबार्ब' स्वर्ण कप प्रदान किया जाता है. इस विख्यात दौड़ का संचालन ब्रिटेन का 'राष्ट्रीय चूहा दौड़ संस्थान' करता है जिस की शाखाएं सारे ब्रिटेन में फैली हुई हैं. क्षेत्रीय चूहा दौड़ प्रतियोगिताओं में जीतने वाले चूहे राष्ट्रीय चूहा दौड़ प्रतियोगिता में भाग लेते हैं.

इस दौड़ में भाग लेने वाले चूहों को सिर्फ 25 फीट का फासला तय करना होता है. समानांतर रखी हुई प्लास्टिक की खोखली नलियों के भीतर एक सिरे पर प्रतियोगी दौड़ने के लिए तैयार रहते हैं और दौड़ शु होने पर जो चूहा दूसरे सिरे पर सब से पह पहुंच जाता है वह विजयी होता है. प्रतियोगिता के लिए आस्ट्रेलिया के सफेद अच्छे समझे जाते हैं. इन चूहों को बचप ही दौड़ के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है खाने को मक्का के दाने तथा सूरजमुखी बीज दिए जाते हैं. बेलफास्ट विश्वविद्या के जीवविज्ञान विभाग ने तो हाल ही में धा चूहों की एक विशेष नस्ल भी तैयार कर है.

ब्रिटेन की घुड़दौड़ की टक्कर में शुरू की गई फ्रांस की गधों की दौड़, जिसे देख कर दर्शक लोटपोट हो जाते हैं.

दक्षिणी अमरीका के लंबी चोंच वाले छोटे से जानवर आर्मडिल्लो की दौड़ ने तो दक्षिणी अमरीका में इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर ली है कि इस दौड़ को 'आर्मडिल्लो ओलिंपिक' कहा जाने लगा है. आर्मडिल्लो की दौड़ टेमसास का विशेष खेल है.

इस दौड़ को देखने के लिए टिकट खरीद कर लाखों लोगों की भीड़ इकट्ठी हो जाती है.

1981 में जानलेकी नामक एक 20 वर्षीय लड़के का पालूत आर्मडिल्लो– मिलर जूनियर, विश्वचैंपियन बना. इस धावक आर्मडिल्लो ने 75 फीट का फासला 3.6 सेकंड में तय किया था. यह दौड़ सन अंटानियों के निकट न्यू ब्रानफेल्स नामक स्थान में संपन्न हुई थी.

आर्मडिल्लो दौड़ संगठन के अध्यक्ष लियोबर्न का विचार है कि कुछ ही वर्षों में आर्मडिल्लो दौड़, घुड़दौड़ से भी अधिक लोकप्रिय हो जाएगी.

केलिफोर्निया का विख्यात चिड़ियाघर भी अपनी अनोखी दौड़ प्रतियोगिता के लिए मशहूर है. इस प्रतियोगिता में नन्हेमुन्ने बच्चे शुतुरमुर्ग की पीठ पर बैठ कर जब उसे दौड़ाते हैं तब जितना मजा उन्हें आता है उस से कहीं ज्यादा मजा देखने वालों को आता है.

ब्रिटेन के राजकुमार प्रिंस फिलिप तथा इंगलैंड की क्रिकेट टीम के भूतपूर्व कप्तान लार्ड टेंसटर जैसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लोग जिस दौड़ के दीवाने हैं, वह दौड़ भी अपने आप में अनोखी है.

ग्रे हौंड जाति के शिकारी कुत्तों की यह दौड़ पूरे ब्रिटेन में लोकप्रिय है. इस दौड़ के लिए पूरे देश में सौ से भी अधिक मैदान हैं. इन मैदानों में होने वाली क्षेत्रीय दौड़ों में जीतने वाले कुत्ते, राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भाग लेते हैं. राष्ट्रीय प्रतियोगिता में अव्वल आने वाले कुत्ते को एक स्वर्ण कप के साथ 40 हजार रुपए का नकद इनाम मिलता है. ●

चित्रावली

जिंदगी नाम है उन्मुक्तता का : यह जीवन दर्शन है हिप्पियों का, ईटन (इंगलैंड) के उपनगर नार्विच में पेर नदी के किनारे करीब डेढ़ सौ हिप्पियों ने दो सप्ताह के लिए अपना डेरा जमाया. **(बाएं)** तंबूनुमा झोंपड़ी में कुछ हिप्पी. उन के नेता का दावा है, "हम पांच साल से एक साथ रह रहे हैं, लेकिन हमारे बीच कभी कोई समस्या पैदा नहीं हुई है." **(दाएं)** छोटी उम्र की लड़कियों व बच्चों ने यहां दो सप्ताह पानी में नग्नावस्था में अठखेलियां करते हुए बिताए.
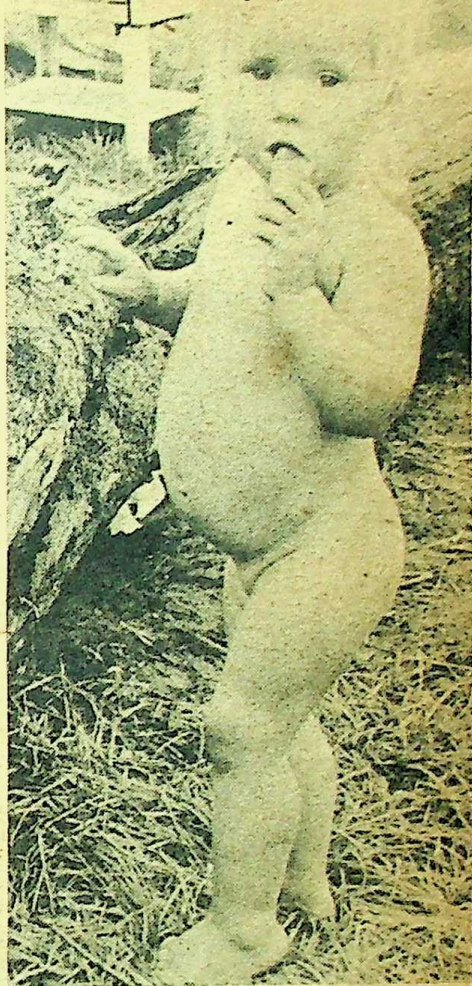
कलाकार का आखिरी सीन : फिल्म व स्टेज के जानेमाने अमरीकी कलाकार हेनरी फोंडा की जिंदगी का आखिरी सीन कैमरे के सामने नहीं बल्कि बिस्तर पर हुआ. इस स्थिति तक पहुंचने के लिए उन्हें अस्वस्थता का एक लंबा समय बिताना पड़ा. (नीचे बाएं)

जापान व भारत के मध्य समझौता : जापान भारत को सन 1982-83 के दौरान एक परियोजना के लिए 127 करोड़ रुपए की सहायता प्रदान करेगा. इस संबंध में केंद्रीय वित्त मंत्री श्री प्रणव मुखर्जी व जापान के विदेश एवं वित्त मंत्री योशिओ ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए.
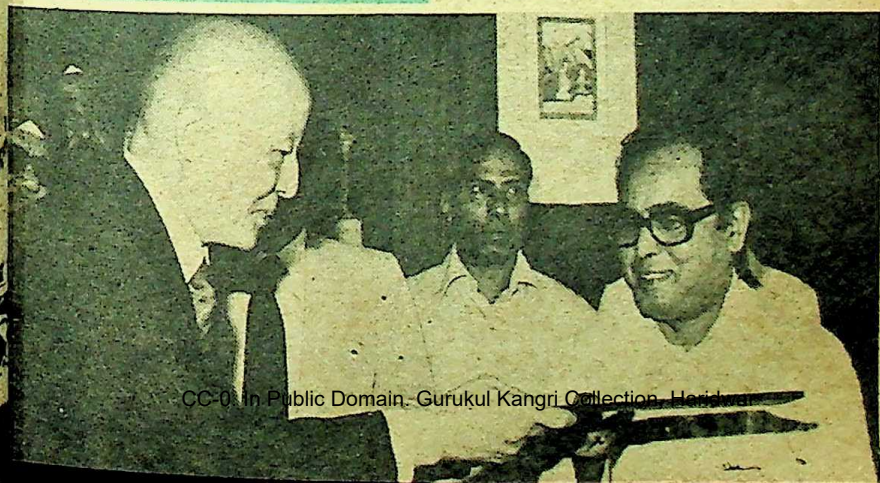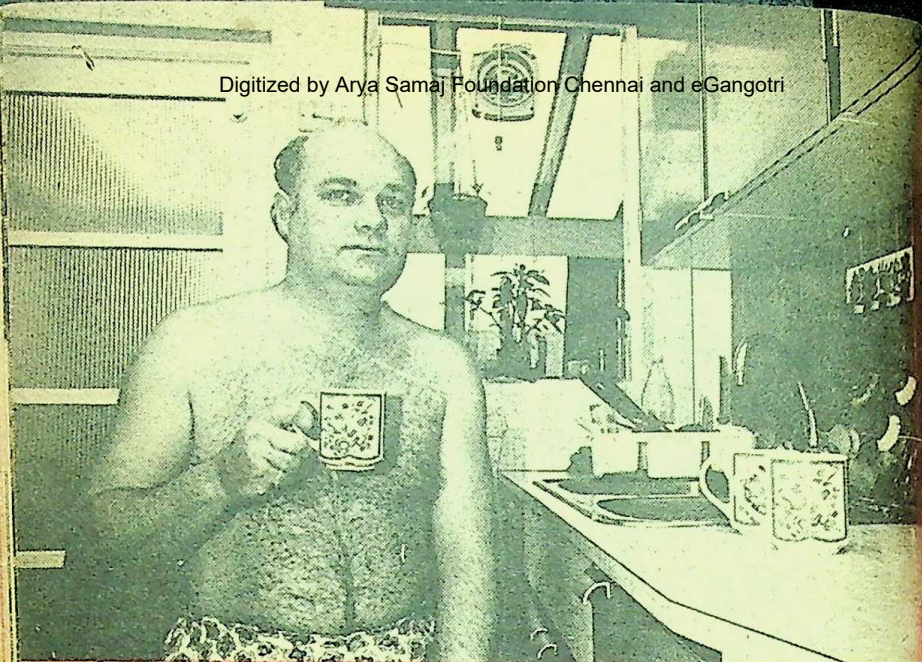
अवैध रूप से हड़ताल करवाने पर जुरमाना : ब्रिटेन के एक उच्च न्यायालय ने वहां के एक श्रमिक नेता सियान गेराघटी जो 'डेली मिरर' अखबार में काम करते हैं, पर अवैध रूप से हड़ताल करवाने के अपराध में 10,000 पौंड का जुरमाना किया है. इस हड़ताल के कारण फ्लीट स्ट्रीट से प्रकाशित होने वाले समाचारपत्रों का प्रकाशन रुक गया. यह हड़ताल स्वास्थ्य कर्मचारियों की मांगों के समर्थन में की गई थी

उपेक्षित बच्चों की मदद : ब्रिटेन की सेना के एक अधिकारी जान ब्लेशफोर्ड ने, गरीब बच्चों में उत्साह लाने के लिए सरकारी मदद से एक विशेष प्रशिक्षण कैंप की शुरुआत की. इस कैंप में उपेक्षित बच्चे एवं किशोरों की समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया जाता है. यह कैंप इतना अधिक लोकप्रिय हो गया कि यहां अमीर घरों के बच्चे भी आने लगे हैं, अब उन गरीब बच्चों के अंदर हीनता की भावना समाप्त होती जा रही है.

फुलझड़ियों की जगमगाहट, दीपों की झिलमिलाहट,
पटाखों की रंगीनियों जैसा सरिता का 'दीवाली विशेषांक'
पूरे परिवार के लिए इतनी अधिक सामग्री कि घंटों
पढ़ें और दीवाली का आनंद कई गुना उठाएं.

जगमग साजसज्जा,
दीवाली के खट्टेमीठे:
वातावरण पर
दस कहानियां.
धारावाहिक उपन्यास
की एक नई किस्त,
दीवाली के लिए विशेष
पकवानों की विधियां.

दीपमालिकाओं
सी सजी कविताएं,
नया मार्ग दिखाने वाले
कई ज्योतिर्मय लेख.
इतनी अधिक
इतनी विविध सामग्री
और कहीं नहीं मिलेगी.
मूल्य 3·75 रुपए.

भारत में सबसे
अधिक पढ़ी जाने वाली
पाक्षिक पत्रिका.

अपनी प्रति
सुरक्षित कराना
न भूलें.

सातवीं कक्षा में हमारे अंगरेजी के शिक्षक ने हमें 'सफर' शब्द का हिंदी अर्थ 'या करना' लिखाया.

उसी समय एक छात्र ने उठ कर कहा, "गुरुजी, सफर का हिंदी अर्थ तो कष्ट सहना हो है."

गुरुजी ने तुरंत अपनी बात सही साबित करने के लिए तर्क दिया, "जब यात्रा करेगा कष्ट नहीं होगा क्या? बैठ जा, बीच में मत बोला कर." **—संदीपकुमार गर्ग (सर्वोत्त**

*

बात उस समय की है, जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ती थी. हमारी एक अध्यापिका की आ सभी लड़कियों का खाना देखने की थी. वह उस में जो पसंद की चीज पातीं, उसे निकाल कर जाती थीं. उन की इस आदत से हम सभी तंग थे.

उन की इस आदत को छुड़ाने के लिए एक दिन हम सभी अपनेअपने खाने के डब्बों कंकड़पत्थर, घास आदि भर कर ले आईं.

आदत के अनुसार उन्होंने सब के डब्बे देखे तो उन का मुंह उतर गया और उन्होंने फि यह आदत छोड़ दी. **—रक्षा अवस्**

*

हमारे स्कूल के वाणिज्य विभाग के अध्यापक की हर बात में 'तुम्हारे बाप को आती है' कहने की आदत थी.

एक दिन वह एक सवाल बोर्ड पर हल करवा रहे थे. तभी एक छात्र ने कहा, "श्रीमान यह सवाल अंगरेजी में हल करवा दीजिए."

यह सुनते ही वह तपाक से बोले, "तुम्हारे बाप को आती है?"

इतना सुनते ही हम ठठा कर हंस पड़े. बाद में अध्यापक ने उस छात्र के पिता से मा मांगी और यह कहने की आदत छोड़ दी. **—राजेश तेजा**

*

दसवीं कक्षा में मैं ट्यूशन पढ़ना चाहता था, क्योंकि मैं कमजोर था. इस संबंध में मैं ने ज अपने कक्षा अध्यापक से बात की तो उन्होंने शाम को अपने घर बुलाया और मुझे पढ़ाना शु कर दिया.

उस के बाद मैं नित्य जा कर पढ़ने लगा. एक महीना पढ़ने के बाद जब मैं ने उन्हें ट्यूश फीस देनी चाही तो उन्होंने मुझे रोक दिया और कहने लगे, "सफल अध्यापक वही है, जो ज्ञा का सौदा नहीं करता. पैसों के लालची ही ज्ञान का सौदा करते हैं और मैं पैसों का लालची न हूं."

मैं निरुत्तर हो गया. **—बीरबलप्रकाश मेहर 'नीर**

हमारे विज्ञान के अध्यापक के सवाल पूछने पर जब कोई लड़का सही जवाब देता तो वह कहते, "शाबाश, बैठ जाओ."

एक दिन वह स्कूल कुछ देर में पहुंचे, उन्होंने गेट पर खड़े छात्र से पूछा, "क्या स्कूल शुरू हो गया."

छात्र ने कहा, "जी."

"शाबाश, बैठ जाओ," उन्होंने कहा और आगे बढ़ गए.

—अशोककुमार श्रीवास्तव

*

उन दिनों मैं नवीं कक्षा का विद्यार्थी था. मैं अपने मित्र के साथ साइकिल पर कालेज आता-जाता था. हम साइकिल बहुत तेज चलाते थे और भोलेभाले ग्रामीणों का अंगोछा खींच लेते थे.

एक दिन हम ने एक आदमी का अंगोछा खींचा, अंगोछा हमारी साइकिल में फंस गया. जब हम ने साइकिल रोकी तो उस आदमी को देख कर हमारे होश उड़ गए, क्योंकि वह हमारे अध्यापक थे. पर उन्होंने हमारी आशा के विपरीत हमें ऐसी हरकत न करने के लिए प्यार से समझाया था.

—रजिंदरसिंह टीनू

*

जब मैं एलएल. बी. प्रथम वर्ष का विद्यार्थी था तो एक प्रोफेसर, जो नाई जाति के थे, एक दिन पढ़ाने आए तो पीछे बैठे कुछ लड़के गालों पर उस्तरा फेरने का अभिनय करने लगे.

प्रोफेसर यह सब देख रहे थे. उन्होंने थोड़ी देर बाद बड़ी नम्रता से कहा, "यह जान कर बड़ी प्रसन्नता हुई कि इन नए छात्रों में हमारी बिरादरी के बहुत से लोग हैं. हमारा नम्र निवेदन है कि कल से वे सब से आगे बैठा करें."

यह सुन कर वे विद्यार्थी बहुत बुरी तरह झेंपे. —रणजीत सिंह (सर्वोत्तम)

*

एक दिन सुबह के वक्त एक लड़की की मां स्कूल की प्रधानाचार्या से मिलने गई. वह उन के आफिस के पास खड़ी थी, तभी हिंदी की अध्यापिका उधर से गुजरीं. लड़की की मां ने शिष्टाचारवश उन्हें नमस्ते किया.

इस पर उन्होंने घूर कर देखा और बोलीं, "मैं कक्षा में जा रही हूं और आप ने नमस्ते कर दिया. अब आप चाहती हैं कि मैं आप के नमस्ते का जवाब दूं और पूछूं कि आप कौन हैं, कहां से आई हैं और अपना समय नष्ट करूं." और नमस्ते का जवाब दिए बिना वह आगे बढ़ गईं.

—कविता सिनहा

दोस्त हो तो 'शशि जैसा

'शशि कपूर ने अपना डेरा वहीं डाल रखा और शूटिंग आदि स्थगित कर रखी थी. श कपूर की यह दोस्ती देख कर लोगों के मुं अचानक निकल जाता था, 'दोस्त हो शशि जैसा'.

'शशि कपूर को फिल्म जगत में एक सभ्य और रखरखाव को समझने वाला इनसान समझा जाता है. नए आने वाले लड़कों को फिल्म वाले शशि कपूर की मिसालें देते हैं. अमिताभ बच्चन भी शशि कपूर के काफी करीब रहा है और उसे अपना सब से करीबी दोस्त और सलाहकार मानता है. उन दिनों जब कि अमिताभ ब्रीच कैंडी हस्पताल में जिंदगी और मौत से लड़ रहा था,

शशिकपूर : हर पल का साथ.
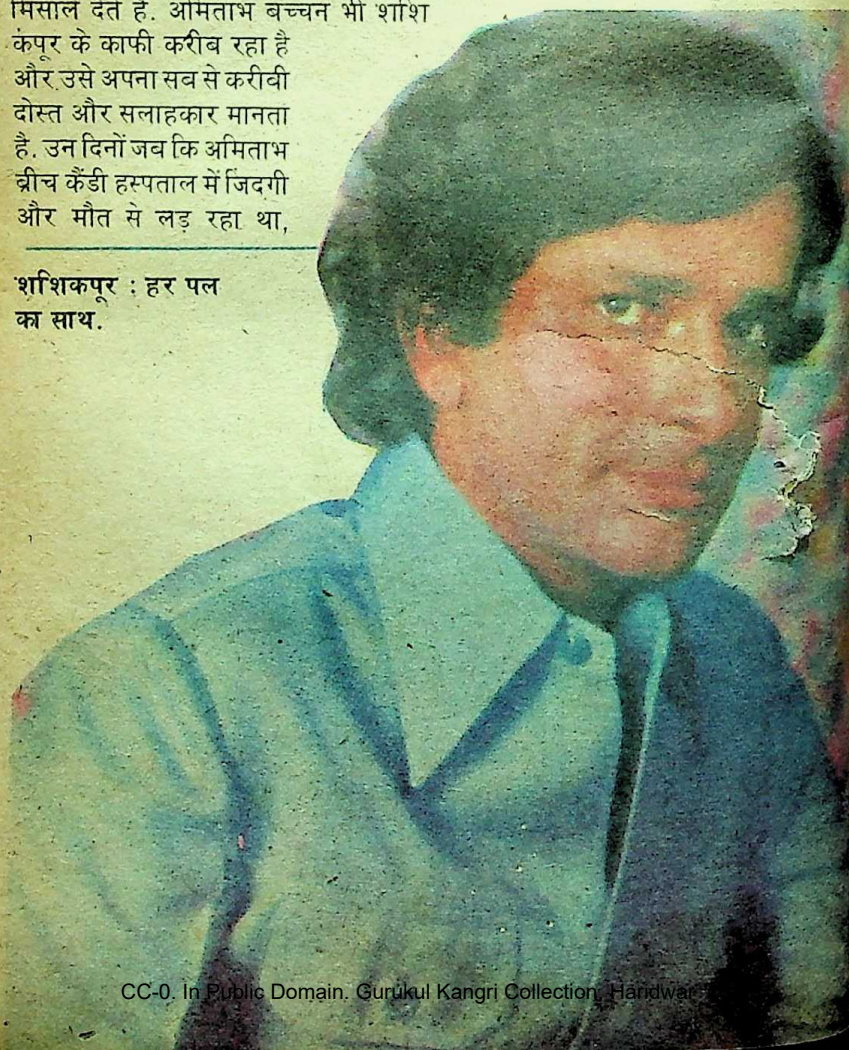
नई दीप्ति : प्रवीणा कपूर

फिल्मों में आने वाली नई लड़कियों में प्रवीणा कपूर फिल्म जगत में आजकल इसलिए काफी चर्चा का विषय बनी हुई है कि उस में और दीप्ति नवल में जरा भी फर्क महसूस नहीं होता. प्रवीणा कपूर की तसवीरें देख कर लोग यही कहते हैं कि यह तो दीप्ति नवल है. प्रवीणा कपूर इन दिनों रवींद्रदास गुप्ता की दो फिल्मों में काम कर रही है. एक में वह मुख्य अभिनेत्री है और दूसरी फिल्म में रति अग्निहोत्री के साथ दूसरे नंबर की अभिनेत्री के तौर पर भूमिका निभा रही है. देखना यह है कि प्रवीणा दीप्ति नवल की कार्बन कापी बनती है या अपना रास्ता चुन कर उस से आगे निकलती है.

प्रवीणा कपूर : नई पहचान की तलाश.

न इधर के रहे न उधर के रहे
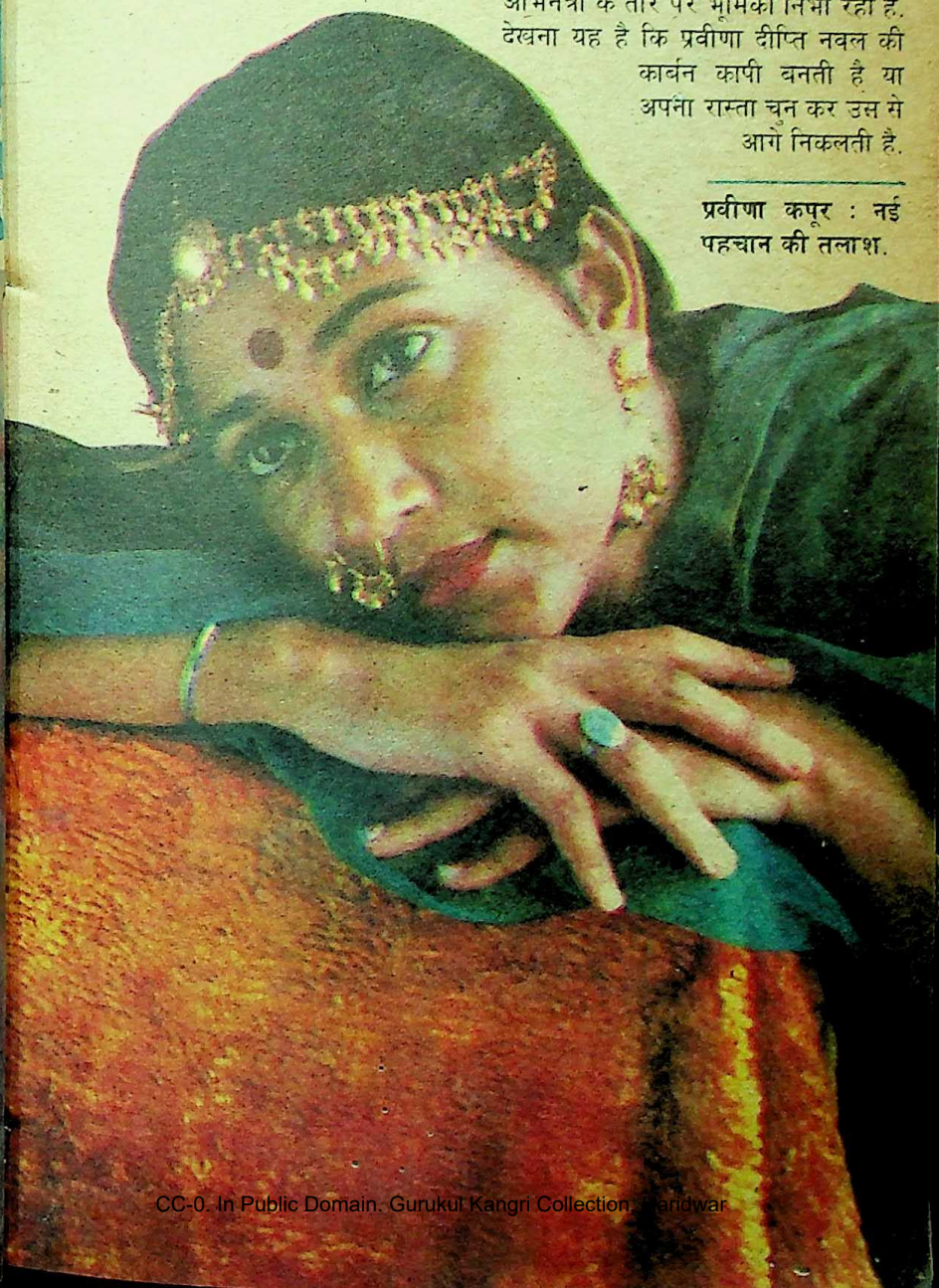
कमल हासन को फिल्म 'एक दूजे के लिए' की सफलता के बाद बंबई फिल्म उद्योग ने अमिताभ बच्चन के मुकाबले का अभिनेता मानना शुरू कर दिया था. यही वजह थी कि उस की तमिल, तेलगू भाषाओं में बनी फिल्मों को भेड़चाल की तरह हिंदी में डब कर के पैसा कमाने की एक होड़ सी बंबई वालों में लगी हुई थी.

सब से पहले 'दो दिल दीवाने' फिर 'दिल का साथी दिल' और अब 'अलाउद्दीन का जादुई चिराग' को हिंदी में डब कर के दिखाया जा रहा है. इन फिल्मों को देख कर दर्शक जब सिनेमा हाल से बाहर निकलता है तो कमल हासन को जी भर कर कोसता है. कमल हासन को चाहिए कि वह अपनी तमिल, तेलगू फिल्मों को हिंदी में डब कराने से रोके वरना हिंदी फिल्मों के दर्शक उसे हिंदी फिल्मों में देखना भी बंद कर देंगे और उस वक्त उस की हालत ऐसी होगी कि न इधर के रहे न उधर के रहे.
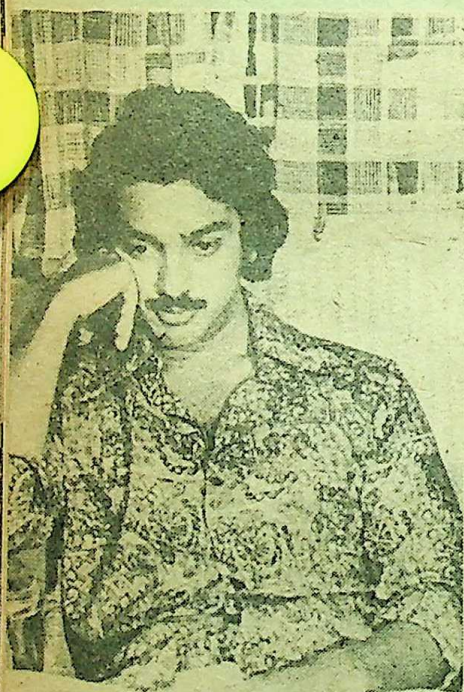
कमल हासन : हिंदू दर्शकों की ऊब का कारण.

अब एक शिफ्ट का निर्णय?

फिल्म प्रोड्यूसर्स कौंसिल ने हाल ही में एक फैसला किया है कि किसी भी अभिनेता को दिन में एक शिफ्ट से ज्यादा काम नहीं करने दिया जाए, क्योंकि इस से कभीकभी निर्माताओं का करोड़ों रुपया एक ही अभिनेता पर लग जाता है जैसा कि इस वक्त अमिताभ पर लगा हुआ है. यह नियम 15 अगस्त से पूरे फिल्म उद्योग में लागू होने के आदेश हैं.

लेकिन अनेक फिल्म वाले इस नियम को मजाक मानते हैं और इसे कोई महत्त्व नहीं दे रहे हैं. उन का कहना है कि पहले भी ऐसा कई बार हो चुका है, लेकिन प्रोड्यूसर्स कौंसिल के आदेश पर उस के सदस्य खुद ही अमल नहीं करते तो दूसरे क्या करेंगे.

'मौत का साया' की चर्चा

नवीन निश्चल, सचिन, अनिल धवन और विजयेंद्र इन चारों अभिनेताओं की पहली फिल्मों ने रजत जयंती मनाई थी, लेकिन बाद में ये चारों असफलता के अंधेरे में डूबते चले गए.

अब रामसे ब्रदर्स ने जो दहशतनाक फिल्में बनाते रहते हैं, इन चारों असफल अभिनेताओं को ले कर एक फिल्म 'मौत का साया' बनाने की घोषणा की है. रामसे ब्रदर्स के लिए कहीं यह फिल्म मौत का साया ही न साबित हो, फिल्म उद्योग में इस की जगहजगह चर्चा हो रही है.

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हिंदी अनुवाद महंगा पड़ा

जयपुर में कृषि विभाग के एक हिंदी भक्त कनिष्ठ लिपिक को फाइल पर 'मिनिस्टर डिजायर' का हिंदी अनुवाद 'मंत्री इच्छा' लिख देना इतना महंगा पड़ा कि उस की नौकरी ही खतरे में पड़ गई है.

फाइल पर 'मंत्री इच्छा' लिख देने के आधार पर अपने तबादले के मामले को कर्मचारी अदालत में ले गया तथा अदालत ने उस फाइल को तामील करवा लिया.

अदालत की यह खबर अखबार में छपने के बाद पूरे कृषि विभाग में खलबली मच गई उस लिपिक को 'दोष' के कारण निलंबित कर दिया गया.

इस कारवाई से कृषि विभाग के कर्मचारियों में व्यापक रोष फैल गया और उन्होंने 'कामरोको' हड़ताल शुरू कर दी.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : रमेश मित्तल)

*

हिंदी भक्त को सजा

रायपुर में एक ग्रामसेवक रामलखन मिश्र को न्याय पाने में 18 वर्ष लग गए.

उसे 8 मई, 1964 को ग्रामसेवक नियुक्त किया गया था. उस का नियुक्ति आदेश अंगरेजी में था, जिस की उस ने हिंदी प्रति मांगी. उस की यह मांग संविधान के अनुकूल थी. लेकिन तत्कालीन आयुक्त ने इसे अनुशासनहीनता बताते हुए उस की नियुक्ति को रद्द कर दिया.

उस ने यह मामला कई स्तरों पर उठाया, लेकिन उसे निराशा ही हाथ लगी.

आखिरकार 18 जून, 1982 को राज्य सरकार ने निर्णय दिया कि उस ने कोई अनुशासनहीनता नहीं की; और उसे फिर नियुक्त किया जाए. अब वह रायपुर जिले में ग्राम सेवक है.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली(प्रेषक: हरिकिशन शर्मा)

*

बीमा अधिकारियों के लिए नई परेशानी

मध्य प्रदेश के खरगोन जिले में दो गधों का बीमा किए जाने से यहां के बीमा अधिकारियों के लिए समस्या खड़ी हो गई है.

प्राप्त समाचार के अनुसार पश्चिम निमाड के एक ग्रामीण खुपाड़िया को स्टेट बैंक ने ऋण स्वीकृत किया और उसे दो गधे खरीदवा दिए. एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम की शर्तों के अनुसार उन का बीमा भी करवा दिया, लेकिन बीमा कंपनी जिनजिन चीजों का बीमा करती है उस सूची में गधा शामिल नहीं है. अब बीमा कंपनीं ने इस बारे में कानूनी राय मांगी है.

—आज, कानपुर (प्रेषिका: भावना कसेरा) (सर्वोत्तम) •

हिमालय के सौंदर्य एवं रहस्यमय तथा विचित्र स्थानों का जादू संसार भर के पर्यटकों के सिर पर चढ़ा हुआ है. न जाने कितनी रहस्यमय घटनाएं हिमालय के साथ जुड़ी हुई हैं. इस विशाल एवं विस्तृत पर्वतमाला का आकर्षण विचित्र है. लाखों व्यक्ति हिमालय की यात्रा के लिए प्रति वर्ष देश के विभिन्न भागों एवं विदेशों से आते

लेख • सतीशकुमार जैन

खौलते चश्मों से पत्थर भी लाल
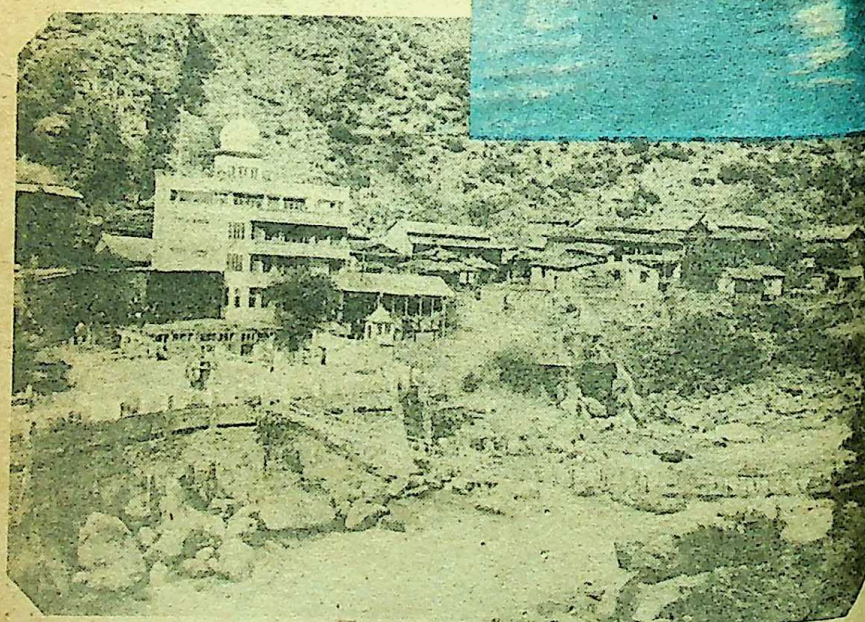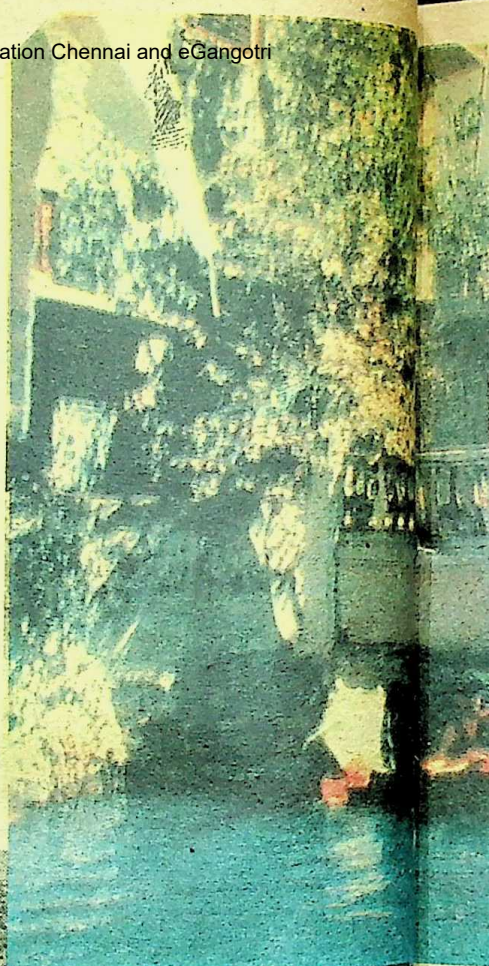
गर्म ...
आक...
सौंद...
अधि...
(बाए...

हैं. इन ...
ऊंचे ...
अदम्य ...
भक्ति ...
तथा ...
सौंदर्य ...
के लिए ...
सौंदर्य ...
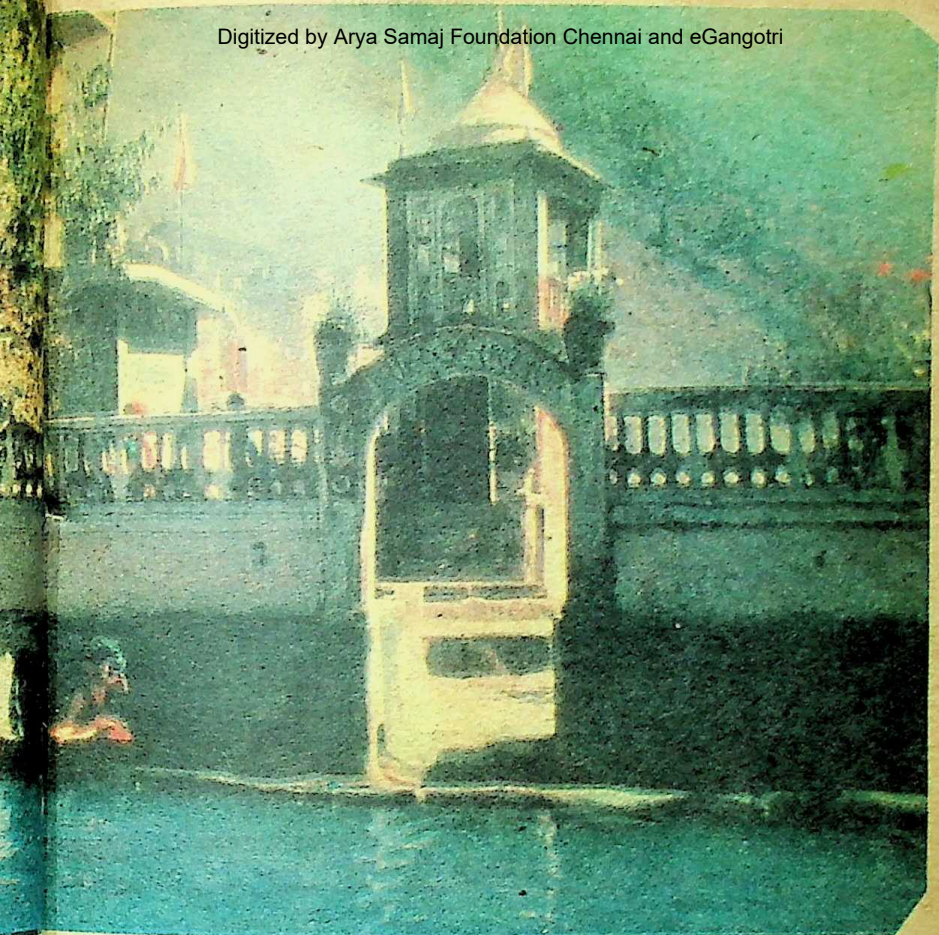
गर्म पानी के चश्मे : मणिकर्ण का खास आकर्षण (ऊपर), मणिकर्ण के प्राकृतिक सौंदर्य को और सजासंवार कर उसे अधिक आकर्षक बनाया जा रहा है. (बाएं)

हिमाचल प्रदेश के पर्यटन स्थल मणिकर्ण में खौलते पानी के चश्मे पर्यटकों के लिए यहां के प्राकृतिक सौंदर्य से भी बड़ा आकर्षण हैं. आखिर इन चश्मों का रहस्य क्या है?

हैं. इन में से कुछ में भीषण कष्टों को झेल कर ऊंचे से ऊंचे पर्वत शिखरों पर चढ़ने का अदम्य साहस एवं उत्साह होता है, अनेक भक्ति भाव से धार्मिक स्थलों के यात्री होते हैं तथा अनेक इस के श्रेष्ठ व अनूठे प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेने एवं ग्रीष्म ऋतु से बचने के लिए यहां आते हैं. इस के पर्वतों के नैसर्गिक सौंदर्य का कलात्मक प्रभाव, उन में
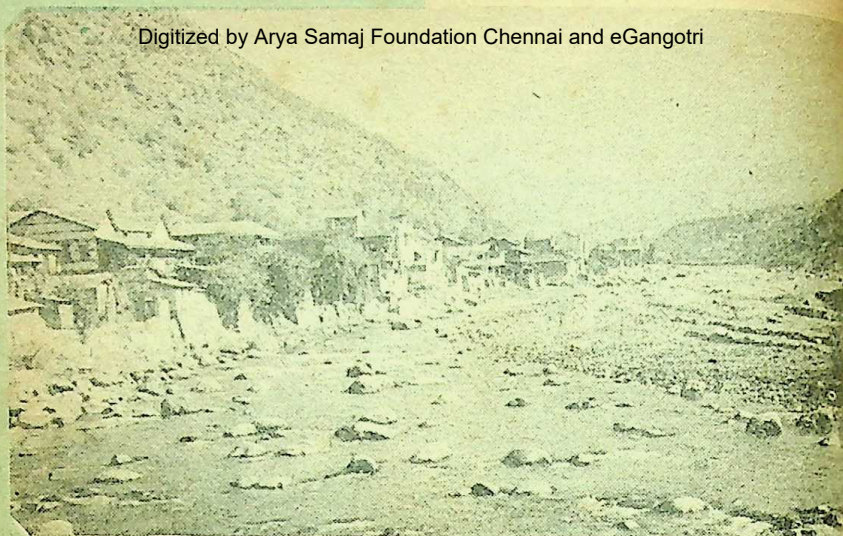
ऊंचेऊंचे पर्वत और व्यास नदी—पर्यटक इन के आकर्षण में बंधा रह जाता है.

दृश्यावलियों की असीम भिन्नताएं, चीड़, कैल, देवदार, ओक, स्प्रूस आदि वृक्षों से आच्छादित ढलान, शुभ्रा एवं अतिमोहक हिमाच्छादित शिखर—ये सब पर्यटकों को दीवाना बनाए रखते हैं.

हिमाचल प्रदेश में स्थित कुल्लू से 44 किलोमीटर दूर मणिकर्ण को विचित्रताओं का अजायबघर कहें तो अतिशयोक्ति न होगी. उपर्युक्त सभी आकर्षण मणिकर्ण में भरपूर विद्यमान हैं अपने अत्यधिक खौलते गरम पानी के चश्मों तथा सुंदर दृश्यावली के कारण विगत वर्षों में इस ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की है. कुल्लू पहुंचने पर यदि मणिकर्ण और रोहतांग दर्रे के अपूर्व सौंदर्य का आनंद न लिया जाए तो पर्यटन वास्तव में अधूरा ही रहता है.

मणिकर्ण : एक पर्यटन स्थल

लगभग, 2,000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित मणिकर्ण का विकास निरंतर एक सुंदर पर्यटन स्थल के रूप में किया जा रहा है. इस तक जाने वाली अधिकांश सड़क बन चुकी है. भुवतर से आगे का मार्ग अभी पूरी तरह तैयार नहीं हुआ है. वहां से बढ़ने पर जीप व बस से
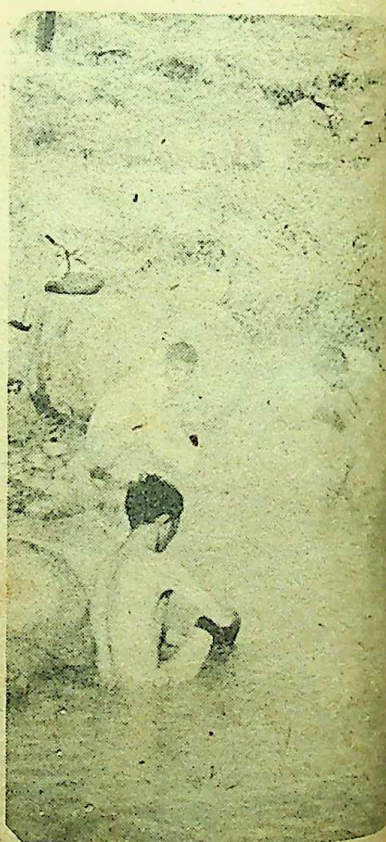
हिचकोले खाने का भी अपना ही आनंद है. कुल्लू से भुवंतर लगभग दस किलोमीटर है और भुवंतर से मणिकर्ण 35 किलोमीटर.

मणिकर्ण पहुंचने पर मनुष्य प्रकृति के विस्मय लोक में पहुंच जाता है. दोनों ओर ऊंचे हिमाच्छादित शिखर, विस्तृत हरियाली, नीचे गहराई में बहती स्वच्छ पार्वती नदी जिस का जल मार्ग में पड़े पत्थरों से टकराटकरा कर हर समय झाग वाला रहता है, नदी पर बना लकड़ी का सुंदर पुल, अत्यंत खौलते गरम पानी के चश्मे तथा उस से उठते भाप के बादल, गुरुद्वारे का सुंदर भव्य भवन, अनेक प्राचीन मंदिर आदि सब मिल कर एक अद्भुत दृश्यावली प्रस्तुत करते हैं. मन उस सौंदर्यपान से भरता नहीं.

देवदार, कैल, तथा सेब के वृक्षों के अतिरिक्त यहां के वन जंगली जामुन, गोभी, गुच्छी व बनफशा आदि अनेक जड़ीबूटियों से भरे हैं. उत्तम जलवायु वाले मणिकर्ण के प्राकृतिक सौंदर्य एवं गंधक विहीन गरम जल के चश्मों के कारण यहां का पर्यटन महत्त्व तीव्र गति से बढ़ रहा है. कुल्लू के अतिरिक्त हिमाचल प्रदेश के अनेक स्थानों से बसें वहां आती हैं. कुल्लू से सवेरे चल कर सायंकाल तक मणिकर्ण देख कर सुगमता से वापस आया जा सकता है. कुल्लू से टैक्सी भी मिल जाती है. भुवंतर में हवाई अड्डा भी है जहां पर्यटन के मौसम में तथा कुल्लू के प्रसिद्ध दशहरा उत्सव के समय चंडीगढ़ एवं दिल्ली के लिए वायुयान सेवा भी उपलब्ध रहती है.

पूर्व काल में मणिकर्ण चांदी की खान के लिए भी प्रसिद्ध रहा है. कहा जाता है कि इस →

चश्मों के गरम पानी से पर्यटक नहाने का लुत्फ भी उठाते हैं.

रुषों के लिए स्वेटर
गबिरंगे डिजाइन वाला टाप
बुनाइयों का स्वेटर
ले बार्डर वाली सफेद जैकेट
रगोश व हिरन की आकृति
ाला हाफ स्वेटर
गबिरंगा कार्डीगन
ड़िया के लिए रेबदार स्कर्ट
ौर टाप
चे ऊन का कंबल
गबिरंगी शाल
ल्ट व शोल्डर बैंड वाला
ौजी कोट
ाकर्षक शाल
च्चे के लिए डंगरी टाप
ारीदार जैकेट
रुषों के लिए स्वेटर
रम पानी की बोतल का
वर
ीकोजी

ए डिजाइनों सहित आकर्षक नमूने..

ाथ ही साजसज्जा, बागबानी, स्वास्थ्य व सौंदर्य,
कवान, दांपत्य व फिल्मों पर सचित्र सामग्री, घर
हस्थी की समस्याएं सुलझाने वाली कहानियां व व्यंग्य

अक्तूबर, 1982 अंक

आज ही सुरक्षित कराएं

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

रोहतांग दर्रा : कुल्लू आने वाले पर्यटक यहां के सुखद व शांत वातावरण का आनंद लिए बिना अपनी यात्रा अधूरी समझते हैं.

घाटी से कुछ आगे चांदी की खान थी.

यहां के विख्यात गरम जल के चश्मों का स्रोत मुख्यत: शिव मंदिर में है. यह शिव मंदिर अब एकदम पार्वती नदी के किनारे पर है. पर्यटकों की सुविधा के लिए एक अन्य मंदिर कुछ मीटर ऊपर बना दिया है. पुराने शिव मंदिर के स्रोत से अत्यंत खौलता हुआ पानी हर समय वहां प्रवाहित होता रहता है.

गर्म जल के चश्में

भारत में जल के लगभग 300 चश्मे पाए जाते हैं, किंतु इन सब में मणिकर्ण के चश्मों का जल सब से ऊष्ण है. गुरुद्वारे के ग्रंथी संत हरिनारायण ने बताया कि यह गरम जल की तपन ही है जिस से पत्थर भी लाल पड़ गए हैं.

मणिकर्ण गांव से लगभग 11-12 किलोमीटर दूर से गरम चश्मे आरंभ हो जाते हैं. गांव में लगभग 40 घर हैं. कुछ के नीचे से ये चश्मे निकलते दिखाई देते हैं. कैसी अद्‍भुत माया है प्रकृति की कि एक ओर पार्वती नदी का शीतल जल व शीत ऋतु में कड़कड़ाती बरफीली सर्दी और दूसरी ओर उसी स्थान प[र] अत्यंत गरम जल के चश्मे व उन के कार[ण] चट्टानें व तपन से झुलसे लाल पत्थर. शी[त] ऋतु में बर्फ भी इन कुंडों तक आने में घबरा[ती] है, साहस भी करे तो पिघल कर पानी हो जा[ती] है.

जब बर्फ पड़ती है उस समय का स[माँ] अजब ही होता है. चोटियों पर सब ओर ब[र्फ] ही बर्फ और इधर नीचे कड़कड़ाती सर्दी [में] इन कुंडों से ऊपर गुरुद्वारे के नीचे वाले छो[टे] सरोवर के गरम जल में डुबकी. चश्मों [के] जल में तो स्नान किसी भी प्रकार संभव नहीं. अतएवं गुरुद्वारे के नीचे एक छोटा सा सरोव[र] बना लिया गया है, जिस में स्रोत से आने वा[ले] गरम जल के साथ शीतल जल भी मिला लिया गया है.

इस सरोवर में जल फिर भी इतना गर[म] रहता है कि यकायक उस में शरीर को डुबो[ना] संभव नहीं हो पाता. थोड़े समय तक हाथपैर को उस में भिगो कर रखने के पश्चात [ही] डुबकी लगाने का साहस हो पाता है. डुबकि[यां] लगाते ही थकावट दूर हो जाती है तथा म[न]

एवं शरीर दोनों ही हलके हो जाते हैं. वहां स्नान का आनंद [illegible] गंधक विहीन होने के कारण जल में किसी प्रकार की गंध नहीं है. निर्मल जल शरीर को पूर्णतया स्वच्छ कर एक अपूर्व उल्लास एवं स्फूर्ति से भर देता है.

इन चश्मों का जल कुछ अंश तक रेडियम धर्मी है. जल में रेडियम धर्मी गुण रेडान के मिश्रण से उत्पन्न होता है जो उन खनिजों के सम्मिश्रण के कारण होता है, जिन में थोरियम एवं यूरेनियम विद्यमान हों. हो सकता है कि जिन चट्टानों के नीचे से अथवा मध्य से यह जल प्रवाहित होता है उन में यूरेनियम मिश्रित खनिज विद्यमान हों. रेडान के मिश्रण के कारण मणिकर्ण के इन चश्मों के जल में गठिया आदि वात रोगों तथा चर्म रोगों को ठीक करने की क्षमता कही जाती है. चश्मों के पास रहना तथा उन में स्नान करना इस प्रकार के रोगियों के लिए आकर्षक बनता जा रहा है.

आकर्षण नदी और पर्वत का

मणिकर्ण में बहती पार्वती नदी का उद्गम मानसरोवर से है. भुवंतर के निकट शमशी में वह व्यास नदी में मिल जाती है. इसी संगम पर एक पुल है जो पार्वती घाटी को कुल्लू से जोड़ता है.

मणिकर्ण के पर्वत का नाम हरींद्र अथवा हरिहर पर्वत भी है, जिस की चोटी पर हर समय बर्फ रहती है. इसी में लगभग 5,300 मीटर की ऊंचाई पर प्रसिद्ध ब्रह्मकुंड है. मणिकर्ण से 25 किलोमीटर पर लगभग 3,500 मीटर ऊंचाई पर खीर गंगा में स्नान करने पर उस का दूधिया जल शरीर से लिपट जाता है. उस से आगे 16 किलोमीटर पर पांडव पुल है तथा 4,000 मीटर की ऊंचाई पर गरम पानी का अन्य स्रोत है. 41 किलोमीटर का यह मार्ग पैदल का है जो दोतीन दिन में पूरा किया जा सकता है.

मणिकर्ण में अनेक प्राचीन मंदिर हैं. यहां का राम मंदिर लगभग 1,100 वर्ष पूर्व, रघुनाथ मंदिर 800 वर्ष पूर्व तथा शिव मंदिर 500 वर्ष पूर्व के बताए जाते हैं. अब यहां अनेक आवासगृह भी बनते जा रहे हैं. उन में [illegible] के कारण नशे का प्रयोग तथा अनाचार भी धीरेधीरे बढ़ रहा है.

सिखों का पवित्र धार्मिक स्थान

मणिकर्ण के चश्मों को प्रकाश में लाने का श्रेय गुरु नानक देव को दिया जाता है. 15 आश्विन, 1574 विक्रमी को गुरु नानक देव अपने भाई बोले साथी मरदाने के साथ उत्तरखंड की यात्रा के लिए रवाना हुए थे. हिमाचल के अनेक स्थानों पर ठहरते हुए वह मणिकर्ण पहुंचे. उस समय मणिकर्ण में कोई आबादी नहीं थी. गुरु नानक देव ने एक पत्थर पर अपना डेरा लगा दिया. मरदाना जब पहाड़ में भ्रमण कर रहा था तब उस ने एक पत्थर के नीचे से धुआं निकलते हुए देखा. आश्चर्यचकित मरदाने ने इस धुएं के विषय में पूछा तो गुरु नानक देव ने कहा कि इस के नीचे गरम जल का स्रोत लगता है जिस से भाप बाहर आ रही है. गुरु नानक देव के कहने पर मरदाने ने जब शिला को वहां से हटाया तो गरम जल की धारा प्रस्फुटित हो गई. कहते हैं कि गुरु नानकदेव ने अपने साथ बांधे हुए आटे में से लोइयां बना कर गरम जल में फिंकवाई. कुछ समय पश्चात रोटियां पक कर ऊपर तैर गईं. उसी समय से यह सिखों के लिए पवित्र एवं धार्मिक स्थान बन गया है.

40 वर्ष पूर्व यहां एक गुरुद्वारा बनाया गया था. यह गुरुद्वारा हरिहर घाट नाम से प्रसिद्ध है. पार्वती नदी पर बने लकड़ी के पुल का दूसरा सिरा गुरुद्वारे के निकट ही है. गुरुद्वारे में पर्यटकों को मुफ्त भोजन एवं आवास की सुविधाएं उपलब्ध हैं. शीत खाए हुए तथा निमोनिया के रोगियों को यहां की गरम गुफा में लिटाने से यथेष्ट लाभ पहुंचता है. गरम जल के चश्मों के कारण वह पूरी चट्टान ही गरम रहती है.

गुरुद्वारे के लंगर का सारा सामान गरम जल के कुंड में ही पकाया जाता है. चावलों की पोटली बना कर गरम जल में रख देते हैं. जो 20-25 मिनट में उबल कर खिल जाते हैं.

(शेष पृष्ठ 136 पर)

शाम नहाई है

कितने गहरे रंगों में-
यह शाम नहाई है.
पिघले सोने से रंग कर
नील समंदर का मन,
लहरलहर में भर देती हो
अजब सुनहरापन.

सम्मोहन ने राग रंगी—
फिर वेणु बजाई है.
होले से झुक आई है
यों गुलाब की डाली,
हटा रही हो धीरे से तुम
अलकें घुंघराली.
खिला चांद क्यों माथे पर-
बेंदी मुसकाई है.
चूम रही है पुरवाई
शोख अधर के पाटल,
झिलमिलझिलमिल सा लगता
सपनों का मधु आंचल
फिर तालताल में किस ने
यह लहर जगाई है?

—प्रकाश म

नए

लेखक
मुक्त
ख्याति

अंकुर
की र

यह
कहा
इन
जाएं
प्रका
जाए
और

पढ़ ल

संपा

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

आजकल मनोरंजन का सब से अच्छा साधन फिल्मों को माना जाता है, लेकिन जब फिल्मों का चलन इतना नहीं था, तब शहरों, कसबों और देहातों के लोग अपना मनोरंजन नौटंकी से किया करते थे.

उस समय नौटंकी या थिएटर में महिलाओं का काम करना अच्छा नहीं समझा जाता था. इन में ज्यादातर पुरुष कलाकार ही होते थे जो सुविधानुसार महिला भूमिकाओं को भी अभिनीत किया करते थे.

संपन्न या अच्छे परिवारों की लड़ जो अपने शौक की वजह से इस क्षेत्र में थीं, समाज उन्हें हीन दृष्टि से देखता था सारी मान्यताओं को ठुकरा कर अपने प का विरोध सहते हुए भोपाल शकीलाबानो ने इस क्षेत्र में कदम रखा फिर इसे पेशे के रूप में अपनाया.

पहले तो मुसलिम समुदाय ने श का बड़ा विरोध किया, लेकिन शकीला विरोधियों से संघर्ष करते हुए एक क गायिका एवं मंच कलाकार के रूप में

भेंटवार्ता • कृष्णकुमार श्रीवास्तव

शकीलाबानो भोपाली

भारत में अपने नाम की धूम मचा दी और जय हिंद थिएटर कंपनी, जिस में शकीला काम करती थी, आगे चल कर 'शकीलाबानो भोपाली थिएटर' के नाम से प्रसिद्ध हुई.

थिएटर छोड़ने के बाद शकीला बंबई चली गई, जहां उस ने फिल्म 'जागीर,' 'जन्नत,' 'टैक्सी स्टैंड' आदि फिल्मों में काम किया, लेकिन उन्हें एक अभिनेत्री के रूप में सफलता नहीं मिली. हां, फिल्म में कव्वाली गायिका के रूप में उन्होंने काफी शोहरत हासिल की.

आजकल शकीलाबानो भोपाली ने अपने बिगड़ते स्वास्थ्य एवं ढलती उम्र के कारण मंच पर एवं फिल्मों में काम करना लगभग छोड़ ही दिया है. लेकिन एक कव्वाली गायिका के रूप में इन का नाम आज भी बहुचर्चित है.

एक भेंट में उन से निम्नलिखित प्रश्न पूछे :

प्रश्न : आप को शेरोशायरी का शौक कब से हुआ?

उत्तर : मेरी जब आंख खुली तो मैं ने अपने चारों तरफ शेरोशायरी का माहौल पाया. वालिद, जो रशीद खान के नाम से मशहूर थे, शेरोशायरी के बहुत शौकीन थे. उन की बड़ी लड़की होने की वजह से उन के शौक का असर मुझ पर भी पड़ा..

प्रश्न : मुसलमानों में तो परदा प्रथा बहुत प्रचलित है, जब आप कव्वाली या शेरोशायरी कार्यक्रमों में गई होंगी तो आप

पारिवारिक मान्यताओं को ठुकरा कर और सामाजिक विरोध को सहते हुए 'शकीलोबानो भोपाली ने कव्वाली गायिका और मंच कलाकार के रूप में प्रतिष्ठा पाई. पर क्या वजह थी कि वह फिल्म क्षेत्र में सफलता न पा सकीं?

के बिरादरी वालों ने काफी आपत्ति की होगी?

उत्तर : अरे जनाब, हमारा घराना कट्टर मजहबी किस्म का था. यानी महिलाओं के लिए परदा लाजिमी था. फिल्म देखना तो दूर की बात, कोई फिल्मी पत्रिका तक घरों में नहीं आ सकती थी. कई घरों में रेडियो तक नहीं थे. मैं जब कव्वाली या शेरोशायरी का कार्यक्रम से बाहर जाने लगी तो मां सख्त नाराज हुईं. खानदान वाले जमा हो गए और कुछ लोग तो इतने नाराज हुए कि उन्होंने मेरा घर से निकलना ही बंद करवा दिया.

लेकिन फिर भी मैं अपने शौक से बाज नहीं आई, तो मुझे कमरे में बंद कर दिया गया जिस की वजह से में सख्त बीमार हो गई. जब काफी इलाज के बाद भी अच्छी न हुई तो डाक्टर ने सलाह दी कि बच्ची को खुश रखा जाए वरना यह कभी ठीक नहीं हो सकती. बस, वालिद के प्यार ने जोर मारा और उन्होंने कहा कि 'शकीला को शेर पढ़ने और गाने से कोई नहीं रोक सकता.'

इस पर मां ने कहा कि 'अगर यह गाएगी तो खानदान की नाक कट जाएगी,' पर वालिद ने उन्हें समझाया कि 'लड़की को गाने से रोका जाएगा तो वह मर जाएगी.' खैर, बहसें होती रहीं, पर मेरे शौक पर से पाबंदी हट गई.

प्रश्न : आप नौटंकी में कैसे आईं. नौटंकियों में तो बड़ी अभद्रता होती है. इस में एक सुंदर महिला को तो बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ता होगा?

उत्तर : जब मेरे मांबाप ने शेर पढ़ने और गाने की छूट दे दी तो मैं ने अपनी पार्टी बना ली जिस ने सारे भोपाल में धूम मचा दी. एक बार भोपाल में एक कार्यक्रम दे रही थी, तभी वहां के मर्दों ने बहुत शोरगुल मचाया जिस की वजह से मैं बिना कार्यक्रम पूरा किए ही वापस आ गई. इस घटना से मुझे इतनी कोफ्त हुई कि मैं ने दोतीन महीने तक कोई कार्यक्रम ही नहीं दिया. इन्हीं दिनों एक थिएटर कंपनी भोपाल आई. मेरी चर्चा सुन कर वे लोग मेरे पास आए और कहा कि मैं उन की कंपनी में शामिल हो जाऊं. कि कंपनी का यह प्रस्ताव मुझे अच्छा लगा, नईनई जगहों पर जाना होगा. मेरी क प्रचार होगा और साथ ही खानदान वा रोजरोज की झिकझिक से भी छुटकारा जाएगा. इस प्रकार मैं जयहिंद थिएटर में शामिल हो गई. इस कंपनी में मैं गान के अलावा, ड्रामे की हीरोइन के सा नाचा भी करती थी. मेरी वजह से इस कंपनी ने, बाद में इतनी लोकप्रियता ह कर ली कि इस का नाम ही मेरे नाम प गया—शकीलाबानो थिएटर. पर दर्श हंसीमजाक, फिकरेबाजी से परेशान हो मेरी मां ने मुझ से थिएटर छोड़ने को कहा बाद में मैं ने थिएटर छोड़ भी दिया.

प्रश्न : आप ने फिल्मों में कैसे रखा.

उत्तर : मशहूर निर्माता बलदेव चोपड़ा अपनी फिल्म 'नया दौर' की श करने भोपाल में बुधनी आए थे. एक फिल्म की शूटिंग नहीं हो सकी. इस से कलाकारों को ऊब होने लगी, मनोरंजन वहां कोई साधन तो था नहीं, अतः वह भूतपूर्व नवाब हमीदुल्ला के सचिव असद खां उर्फ पिट्टू मियां ने बी.आर. चोपड़ा मेरा जिक्र किया और फिर वह हम लोग बुधनी ले गए. हम से कहा गया था कार्यक्रम दो घंटे चलेगा, लेकिन चला घंटे. सुबह के पांच बज गए. यहाँ वालों में अख्तर मिर्जा, दिलीपकु वैजयंतीमाला, जानीवाकर आदि दिलीपकुमार कार्यक्रम के शुरू में तो आए, पर बाद में आ कर सारी रात बैठे कार्यक्रम के बाद बलदेवराज चोपड़ा मुझे कहा कि आप बंबई आ जा दिलीपकुमार ने भी कहा, "आप बंबई आ जाइए. आप केवल भोपाल की चीज नहीं

इन लोगों के बुलावे पर 1957 में बंबई पहुंची तो जानीवाकर ने मेरा पह प्रोग्राम श्रीसाउंड स्टूडियो में करवाया. जि में फिल्मी हस्तियों के अलावा बंबई के ह नागरिकों ने भाग लिया. यह कार्यक्रम

मंच का जादू जो दर्शकों को भावविभोर कर देता है.

सफल रहा कि इस के बाद मुझे 25 कार्यक्रम और मिल गए.

प्रश्न : आप बंबई में एक शायरा और कव्वाली गायक के रूप में पहुंची थीं या फिल्मों में काम करने के इरादे से.

उत्तर : बंबई तो मैं एक शायरा और कव्वाली गायिका के रूप में पहुंची थी. हां, बाद में मुझे कई फिल्मों में काम करने का मौका मिला. लेकिन फिल्मों में मुझे वह सफलता नहीं मिली जो मिलनी चाहिए थी. हां, एक शायरा के रूप में मैं काफी सफल रही.

लता मंगेशकर, मीनाकुमारी, दिलीपकुमार ने तो अपने यहां अलगअलग कार्यक्रम करवाए. बाद में सैकड़ों फिल्मों में कव्वालियां गाईं.

प्रश्न : आप ने भारत के अलावा और कहांकहां कार्यक्रम दिए हैं?

उत्तर : मैं भारत के कोनेकोने में घूमी हूं. इस के अलावा विदेशों में—ब्रिटेन, अमरीका, कनाडा, अफ्रीका व मिस्र के अलावा अन्य 20 देशों में भी अपना कार्यक्रम दे आई हूं.

प्रश्न : आपने शादी क्यों नहीं की?

उत्तर : हां, मैं ने शादी नहीं की, अपनी बिरादरी के एक लड़के को गोद ले लिया है. शादी न करने की कई वजह हैं. पर काम और मिजाज से बढ़ कर क्या वजह होगी? मर्द में बराबरी और जलन की आदत बहुत होती है और औरतों के मामले में इन की यह आदत मर्दानगी समझी जाती है. मुझे शक था कि मेरे साथ जिस की शादी होती उस की मुझ से पट नहीं पाती. इसलिए मैं ने अपनी कला से शादी कर ली.

प्रश्न : परदा प्रथा आप की नजर में कैसी है?

उत्तर : मैं इस की शुरू से ही विरोधी रही हूं और अब तो भारत में परदा प्रथा काफी हद तक कम हो गई है. लड़कियां पढ़लिख कर आधुनिक विचारों की हो गई हैं. परिवार के लोग भी अब उतनी पाबंदी नहीं लगाते हैं.

प्रश्न : और कोई खास बात आप बताना चाहें तो?

उत्तर : हां, मेरी किताब 'फने कव्वाली: अमीर खुसरू से शकीलाबानो तक' जल्दी ही आ रही है. ●

उन दिनों मैं हनुमान गढ़ में था. किसी कारणवश मुझे एक दिन बैंक जाना पड़ा. मुझे के सारे लोग जानते थे. सवा 10 का समय था और सभी कर्मचारी अपनीअपनी जगह बैठे हु

तभी वहां उसी ब्रांच के कृषि अधिकारी आ गए. शिष्टापूर्वक उन्होंने सभी से ह मिलाया. मेरी पास वाली सीट पर एक नया लिपिक, जो अस्थायी लगा था और उसी दिन प बार आया था, बैठा था. उन्होंने उस से भी हाथ मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाया तो पह वह लिपिक कुछ समझा नहीं, फिर उस ने पेन उन के हाथ में दे दिया. लेकिन वह फिर भी बढ़ाए रहे तो उस ने फिर उन के हाथ डिस्पेच का डिब्बा ही दे दिया.

यह देख कर सभी जोर से हंस पड़े. वास्तविकता पता चलने पर वह लिपिक बुरी तरह गयो.

—विजयकुमार

*

हमारे कार्यालय में एक आधुनिक विचारों वाली सुंदर लड़की कार्य करती थी. वह आप को बहुत ज्यादा सजासंवार कर आती थी व कभीकभी इतने आधुनिक कपड़े पहन आती थी कि वे अटपटे लगते थे. इस से दूसरे साथियों पर बुरा असर पड़ता था.

एक दिन कार्यालय में एक अशुभ घटना घटी. हुआ यों कि उक्त लड़की ज्यों ही कि कार्यवश सुपरवाइजर के रूम में गई तो सुपरवाइजर की अनुपस्थिति में एक साथी ने उ छेड़खानी कर दी. बात प्रबंधक तक गई. सभी साथियों को उत्सुकता हुई कि देखें प्रबंधक युवक के विरुद्ध क्या फैसला देता है.

शाम को मालूम हुआ कि प्रबंधक ने बस इतना कह कर उस लड़की को सेवामुक्त दिया है कि एक गंदी मछली पूरे तालाब को खराब कर सकती है, एक लड़की के लिए रोज हम किसकिस को निकालते रहेंगे.

—भगवान गोह

*

हमारे पड़ोसी दफ्तर की फाइलों में ही हरदम डूबे रहते. वह हर रोज दफ्तर से एक फा घर ले आते और रात भर उसी में उलझे रहते. उन की श्रीमती इस से तंग आ गई थ

एक दिन उन्होंने गुस्से में कहा, "अगर कल से दफ्तर की एक फाइल घर में नजर आ अच्छा नहीं होगा."

"ठीक है, कल से मैं दो फाइलें ले कर घर आया करूंगा," वह साहब धीरे से बो

—विनोदकुमार

*

हमारे बिक्री विभाग के अफसर अपने कार्य में इतने व्यस्त रहते हैं कि मिलने व्यक्तियों से पानी तक के लिए नहीं पूछते, बस कामकाज की बातें करते हैं.

एक दिन एक व्यापारी उन से आधे घंटे तक अपने कामकाज की बातें करता रहा थोड़ा परेशान हो गया. एकाएक उस ने अफसर से पूछा, "ठंडा लेंगे या गरम?"

अफसर भी एकदम बोल पड़े, "ठंडा चलेगा."

लेकिन एक क्षण पश्चात ही उन की झेंप देखने लायक थी और तब उन्होंने व्यापारी के लिए चाय का प्रबंध करवाया.

—राजेंद्र माहेश्वरी

*

एक बार मैं एक बैंक में ड्राफ्ट बनवाने गया तो बैंक में एक नवयुवक पैसे निकलवा रहा था.

नवयुवक की पास बुक देख कर प्रबंधक ने कहा, "भई, तुम बहुत रुपए निकलवा रहे हो, शादी नहीं करनी क्या?"

उस ने जवाब दिया, "श्रीमानजी, शादी के लिए बैंक से कर्ज ले लेंगे."

इस पर प्रबंधक तो चुप रहे, लेकिन एक लिपिक बोला, "कर्ज तो हम दे देंगे, लेकिन कर्ज अदायगी तक वह चीज गिरवी रखनी पड़ेगी, जिस के लिए कर्ज लिया जाएगा."

—दलपतसिंह पटेल

*

बात काफी पुरानी है. हमारे कार्यालय में एक अनुभाग अधिकारी अपने अधीन काम करने वाले अधिकारियों पर अकसर बिगड़ते रहते थे. विश्वविद्यालय से निकले एक नवयुवक को उन के अनुभाग में नियुक्त किया गया. वह कार्यालय में प्रचलित शब्दों से अनभिज्ञ था और हर रोज कोई न कोई नया शब्द उसे सुनने को मिलता था. जैसे पी.यू.सी., एफ.आर., डी.एफ.ए., डब्ल्यू.ई.एफ., डब्ल्यू.आर.टी. आदि.

एक दिन अधिकारी ने सब के सामने उसे झाड़ा कि 'मामूली से शब्द नहीं समझ में आते हैं. कैसी डिगरी पाई है.' इस पर वह मन मसोस कर रह गया था.

दोएक दिन बाद अधिकारी कोई कागज बहुत देर से ढूंढ़ रहे थे. वह कागज उस नवयुवक ने ही उन्हें दिया था. जब उन्हें कागज नहीं मिला तो उन्होंने नवयुवक को बुला कर पूछा. उस ने कहा, "वह कागज तो मैं ने उसी दिन दे दिया था और आर.एच.डी. में है."

अधिकारी बड़े चक्कर में पड़े कि आर.एच.डी. क्या बला है. अपनी झेंप मिटाने के लिए उन्होंने कहा, "नहीं, नहीं, तुम तलाश करो, हो सकता है कि तुम्हारे पास हो."

युवक ने कहा, "श्रीमानजी मुझे पक्का याद है, वह आर.एच.डी. में है.

अधिकारी ने हार कर उस से पूछा, "यह आर.एच.डी. क्या है?"

उस ने बड़े भोलेपन से जवाब दिया, "इतने पुराने हो कर आप क्यों मजाक कर रहे हैं. आर.एच.डी. का मतलब है मेज की राइट हैंड ड्राअर."

उस के बाद उस अधिकारी ने लोगों को बातबात में लताड़ना छोड़ दिया.

—चंद्रभान त्रिपाठी (सर्वोत्तम) •

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग, मुक्ता; ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

उस दिन रावी नदी के तटवर्ती उद्यान में कालिज की ओर से पिकनिक का आयोजन था. शीला और सोहन ईंटों के बने चूल्हे के पास बैठे खाने का प्रबंध करवा रहे थे. बहुत से साथी इधरउधर घूम रहे थे. कुछ ताश की बाजी जमाए बैठे थे. कुछ तेज स्वर में बजती अंगरेजी धुन के साथ थिरक रहे थे.

हमेशा वार्षिक परीक्षा से पहले इसी तरह पिकनिक का आयोजन किया जाता था ताकि इतने दिनों तक पढ़ाई में लगे मस्तिष्क को कुछ आराम मिल सके. सोहन इस तरह के आयोजनों में सदा आगे रहता था और उस की सहायक होती थी शीला. शेखर दोनों की मित्रता देख कर कढ़ता रहता था. पर दिन उस ने अपनी चिढ़ का अधिक प्र नहीं किया था. इस से सोहन को भी अजीब सा लगा था. वह सब्जियां धोने के पानी की बालटी भर कर ला रहा था शेखर ने आ कर रसोइए को वह पानी करने से मना कर दिया था. सोहन व सुन कर हतप्रभ से रह गए थे.

''क्या बात है, शेखर? क्यों रंग में डाल रहे हो?''

कहानी • आदर्श मलगू

मंजिल

शी खड़ी हु मुसकान

''

इस मोच करोगी?

सो गई थी. होना उस झुका क सोहन को से बाहर के लिए हो गए थे

शे कि सोहन क्लास श

अ तरह सोह था. पर वि

एक तरफ यारदोस्तों द्वारा की गई उपेक्षा थी, दूसरी तरफ कुछ न कर पाने की बेचारगी. सोहन समझ नहीं पा रहा था कि वह कौन सी राह अपनाए.

शीला नेपकिन से हाथ पोंछती उठ खड़ी हुई थी. शेखर के मुख पर कुटिल मुसकान खेल रही थी.

''भंग तो पहले ही डली हुई है. क्या तुम इस मोची के हाथ का छुआ खाना पसंद करोगी?''

सोहन के हाथ से पानी की बालटी छूट गई थी. शीला के सामने इस तरह अपमानित होना उस से सहन नहीं हुआ था. वह सिर झुका कर उद्यान से बाहर चला गया था. सोहन को इस तरह उदास चेहरा लिए उद्यान से बाहर जाते देख कर सब लोग कारण जानने के लिए शेखर और शीला के आसपास जमा हो गए थे.

शेखर हंसहंस कर सब को बता रहा था कि सोहन का पिता तो फलां पहाड़ पर 'हाई क्लास शू मेकर' है.

अधिकतर विद्यार्थियों ने शेखर को इस तरह सोहन का अपमान करने पर धिक्कारा था. पर विजय ने शेखर का ही पक्ष लिया था.

''अरे भई, उस का बाप कुछ भी काम करे, पर सोहन को देखो, वह कितना अच्छा लड़का है. और फिर ये सब बातें अब क्या मानी रखती हैं? वैसे देखने में तो वह तुम से कहीं अच्छा है,'' आनंद ने शेखर की तरफ देखते हुए कहा था.

''इसी लिए तो यह महाशय उस से जलते हैं.''

रमेश की चुटकी पर सब हंस पड़े थे.

शीला सब से अलग नदी किनारे बनी मुंडेर पर जा बैठी थी. सब जा कर सोहन को

मना कर ले आए थे, करता. मईजून औ
कतराती ही रही थी. सभी ने, विशेषकर शेखर ने, यह बात नोट की थी. शेखर का मंतव्य पूरा हो चुका था. शीला की नजरों से सोहन गिर चुका था. अन्य साथियों के सौहार्दपूर्ण व्यवहार ने उसे सहज बना दिया था, परंतु शीला का बदला हुआ रुख उस के मन को सालता रहा था.

शीला से अपने पिता के पेशे को छिपाने का उस का कतई इरादा न था, परंतु उस दिन की घटना से पहले ऐसा कोई अवसर ही नहीं आया था कि वह उसे इस बारे में कुछ बता पाता. फिर वह यह भी सोचता था कि जब वह अपने पैरों पर स्वयं खड़ा हो जाएगा तो शीला से सब बात कह देगा. उसे विश्वास था कि शीला इस बात को तनिक भी महत्त्व न देगी. परंतु उस दिन उस का सपनों का महल एकाएक ढह गया था.

सच बात तो यह थी कि सोहन का पिता मोची या चमार नहीं था. वह तो जीविकोपार्जन का कोई और उपाय न देख कर उस ने जूते बनाने की दुकान खोल ली थी. इसी बात को शेखर ने शीला के सामने उछाला था. उस दिन के बाद शीला सोहन से दूरदूर रहने लगी थी. फिर सालाना परीक्षा शुरू हो गई थी. परीक्षा के बाद जब सोहन ने एकाएक सुना कि शीला व शेखर की सगाई हो गई तो वह अपना टूटा दिल लिए अपने पहाड़ी स्थान पर वापस आ गया था.

सोहन के पिता मोतीराम की दुकान छोटे माल पर थी. इस छोटे से पहाड़ी स्थान पर जूते तैयार करने वाली बड़ीबड़ी कंपनियों की तो दुकानें थीं नहीं. सभी स्थानीय लोग उसी की दुकान के बने जूते पहनते थे. उस की दुकान के जूते मजबूत और टिकाऊ होते थे. यही वजह थी कि पंजाब व अन्य स्थानों से हर साल आने वाले कई पर्यटक भी उस के स्थायी ग्राहक थे.

मोतीराम दुकान के बाहर की छोटी सी मुंडेर पर बैठा पहाड़ की आंखमिचौली खेलती धूप सेंकता, मूंगफली खाता व आतेजाते लोगों

सितंबरअक्तूबर में जब लोग मैदानों के भयंकर गरमी से बचने और हवाखोरी के लिए उस पहाड़ पर आते तो मोतीराम का जनसंपर्क का काम बहुत बढ़ जाता. अपने ग्राहकों से वह देश के राजनीतिक, आर्थि आदि विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करता. अप मृदु व्यवहार द्वारा नई आई विदेशी डिजाइ की किताब में से नए फैशन के जूतों, सैंडल की तसवीरें दिखा कर वह पर्यटकों से काफ आर्डर ले लेता था. इस प्रकार चारपां महीनों में ही उसे साल भर की कमाई हो जाती थी. इस से उस के परिवार और छः कारीगर का खर्चा मजे में निकल जाता था.

अपने ग्राहकों, अफसरों के बच्चों को अंगरेजी में गिटपिट करते देख मोतीराम बहुत प्रभावित होता था. इसी लिए उस ने अपना इकलौता बेटा सोहन पांच साल का हुआ तो बड़ेबूढ़ों के विरोध के बावजूद उस ने उसे स्कूल में डाल दिया था. घर के लोग तो पढ़ेलिखे थे नहीं, इसलिए मोतीराम ने सोहन के लिए ट्यूशन की भी व्यवस्था कर दी थी. नतीजा यह हुआ कि सोहन ने मैट्रिक पास कर लिया. इस के बाद सोहन के पिता ने उसे करीब के मैदानी शहर के एक कालिज में दाखिल करवा दिया और सोहन होस्टल में रह कर पढ़ने लगा.

मोतीराम के ग्राहकों में ऐसे लोग भी होते थे जो बड़ेबड़े दफ्तरों में अफसर थे. उन्हें देखदेख कर मोतीराम भी सपने लेने लगा कि उस का बेटा कालिज से पढ़ कर कोई बड़ा अफसर बनेगा और फिर चमड़े, जूते के काम से उस को छुटकारा मिल जाएगा. वह बेचारा यह कहां जानता था कि अधकचरी शिक्षा से उस का बेटा साहब भले ही बन जाए, पर अफसर नहीं बन सकता. यह बात शायद उस की समझ के बाहर थी कि जब तक कोई तगड़ी सिफारिश न हो, तब तक किसी भी व्यक्ति को, विशेषकर ऐसे व्यक्ति को जो कोई हुनर नहीं जानता, नौकरी मिलना बहुत मुशकिल होता है.

कालिज में दाखिल होने के बाद सोहन

सोहन को अचानक देख शीला अतीत में खो गई.

के सिर पर आधुनिकता का भूत सवार होता गया. वह पिता की गाढ़े पसीने की कमाई घूमनेफिरने, सिनेमा देखने और रेस्तोरां में जा कर खानेपीने में फूंकने लगा. उधर मांबाप समझते, बेटा शहर में रह कर पढ़ाई कर रहा है.

सोहन किसी तरह रोपीट कर कभी तो फेल, कभी पास होता रहा. किसी भी तकनीकी लाइन की प्रवेश परीक्षा में वह उत्तीर्ण न हो सका. परंतु छुट्टियों में जब वह घर आता तो बाहर पढ़ने के कारण उस की हवा खूब बंध जाती. वह पौलिएस्टर या टैरीवूल के कपड़े व विदेशी जाकेट पहन कर माल पर घूमता या पिता की दुकान के बाहर जेबों में हाथ डाले खड़ा रहता. मोतीराम गर्व से अपने कालिज में पढ़ने वाले स्मार्ट बेटे का परिचय साहब लोगों से करवाता.

कालिज में यों भी सोहन अपने पिता के धंधे के कारण हीन भावना से ग्रस्त रहता था. सो वह सदा बनठन कर रहता और इस प्रकार अपने 'अहं' को संतुष्ट करने का प्रयास करता रहता. वैसे भी बचपन से पहाड़ पर रहने के कारण उस के गाल तो लाल सुर्ख थे ही, अब शरीर भी भर गया था. सो देखने में वह अच्छा सुंदर लगता था. इसी से शीला उस की ओर आकर्षित हुई थी. परंतु शेखर की जलन और सोहन के पिता के पेशे के कारण उस से विमुख हो गई.

तीसरे डिवीजन में स्नातक बन कर सोहन वापस घर आ गया था. आगे पढ़ना उस के बस का न था. बेचारे का दिल भी टूट गया था.

मोतीराम तो सोच रहा था कि कालिज की पढ़ाई पूरी करते ही सोहन को कोई बड़ी नौकरी मिलने में देर न लगेगी, वह बड़ा साहब जाएगा. पर सोहन था कि अर्जियां लिखतेलिखते थक गया, लेकिन उसे कहीं से साक्षात्कार के लिए भी बुलावा नहीं आया. मोतीराम को क्या पता था कि आज तो एम.ए. पास या दूसरे व पहले डिवीजन में बी. ए. पास लोग ही नौकरी के लिए मारेमारे फिरते हैं, फिर तीसरे डिवीजन वाले को कौन पूछेगा.

कुछ काम न मिलते देख मोतीराम ने दबे स्वर में उसे दुकान पर ही बैठने को कहा. उस बेचारे की आशाएं भी मिट्टी में मिल चुकी थीं. वह न घर का रहा था, न घाट का. गीले चमड़े की गंध में जमीन पर रखी गद्दी पर बैठ कर ग्राहकों को डिजाइन पसंद करवाने और जूते पहनाने की सोहन की तनिक भी इच्छा न थी. वह सोचने लगा, आखिर यदि यही करना था तो इतने वर्ष किताबों से क्यों मगजपच्ची करता रहा? पिता की तरह पहले ही पाजामाकुरता पहन कर दुकान में क्यों न बैठ गया?

एक दिन माल पर घूमते हुए उसे अपने कालिज का मित्र रमेश मिल गया. उस का पिता जंगलों की ठेकेदारी करता था. रमेश पिता की देखरेख में अभी इस काम को सीख रहा था. वह उस पहाड़ी स्थान के निकट का एक जंगल देखने आया था. जंगल में पेड़ों की लकड़ी, पेड़ों की कटाई और लाभ आदि का हिसाब लगा कर नीलामी में जंगल की बोली लगाई जाती है. बोली स्वीकार कर लेने पर एक निश्चित रकम जमा करवा कर उस जंगल का ठेका ले लिया जाता है और फिर पेड़ काट कर उन की लकड़ी से स्लीपर बना कर बेचे जाते हैं. इस काम में लाखों का लाभ होता है. अगर इस काम में कई भागीदार शामिल हों तो सारा मुनाफा भागीदारों की पूंजी के अनुसार उन में बांट दिया जाता है. रमेश का पिता भी यह काम भागीदारी में किया करता था.

सुनने में सोहन को यह काम बड़ा आसान लगा. उस ने रमेश से कहा कि अगले जंगल की बोली के समय वह अपने पिता से कह कर उस का भी हिस्सा डलवा दे. वह उस के पिता से भी मिला. रुपए की तो उन्हें आवश्यकता रहती ही थी, सो वह सोहन का हिस्सा भी अगले जंगल में डालने को मान गए.

अब चिंता थी रुपए की. सोहन ने पिता से बात की तो पहले तो मोतीराम बहुत नाराज हुआ, आखिर 10 हजार की रकम का इंतजाम करना आसान नहीं था. लेकिन सोहन की मां के जोर देने पर और बेटे सो[hidden] का उदास मुख देख कर मोतीराम ने कि[hidden] तरह रुपए का इंतजाम कर दिया. उस[hidden] सोचा, शायद इसी तरह उस का बेटा क[hidden] काम पर लग जाए. नौकरी मिलने के आस[hidden] तो कहीं दिखाई दे नहीं रहे थे और दुकान [hidden] बैठना भी सोहन के बस का काम नहीं था.

सोहन ने रमेश के पिता के साथ मि[hidden] कर बड़ी मेहनत से काम किया. लकड़ी की कटाईचिराई के लिए उसे जंगल[hidden] ही जा कर कईकई दिन तक रहना पड़ा. ज[hidden] माल की पहली खेप तैयार हो गई तो सोहन बड़ा प्रसन्न था. उसे विश्वास था कि इस का[hidden] से उसे अच्छा लाभ मिलेगा, जिसे वह फि[hidden] इसी काम में लगा देगा. तभी सहसा पड़ो[hidden] देश के साथ संबंध तनावपूर्ण हो जाने से यु[hidden] छिड़ जाने की संभावनाएं पैदा हो ग[hidden] व्यापारी अधिक माल रखने से डरने लगे[hidden] नतीजा यह हुआ कि बाजार में इमार[hidden] लकड़ी की कीमत एकदम गिर गई.

रमेश के पिता ने किसी प्रकार जंगल [hidden] पट्टा औनेपौने भाव पर दूसरे व्यक्ति के हा[hidden] बेच कर अपना पूरा रुपया डूबने से ब[hidden] लिया. सोहन का भी पांच हजार रुपया डू[hidden] गया. वही ले कर वह अपने को कोसता हु[hidden] घर वापस आ गया. मोतीराम व उस की पत्नी रोधो कर शांत हो गए.

सोहन फिर अखबारों में नौकरी [hidden] विज्ञापन पढ़ कर अर्जियां भेजने लगा. ए[hidden] बार उस ने घर में बताए बिना चपरासी [hidden] स्थान के लिए साक्षात्कार दिया, परंतु इ[hidden] नौकरी के लिए भी चुना वही गया, जिस [hidden] पास तगड़ी सिफारिश थी. बुझे मन से वह घ[hidden] लौट आया. निराशा, कुंठा और हीनभावना [hidden] त्रस्त हो कर वह कई दिनों तक घर में ही पड़ा रहा. मोतीराम उसे दुखी देख कर स्वयं भी दुखी होता.

एक दिन मां ने बेटे को गुमसुम पड़े देख कर समझाया, "बेटा, क्यों व्यर्थ में नौकरी के पीछे भटक रहा है? वर्षों से जो दुकान ह[hidden] पाल रही है, उसी को ठीकठाक कर के क्य[hidden]

खफा

यूं आज हम किसी से
जुदा हो के रह गए,
जैसे भरे जहां से
खफा हो के रह गए.

—मसूदा हयात

नहीं संभालता?"

सोहन के मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी, मां सच कह रही है. क्यों न अपनी दुकान को आधुनिक रूप दिया जाए? हां, समस्या का यही इलाज है. परंतु पिताजी पैसे लगाने पर राजी होंगे क्या? आगे ही वह काफी रुपया गंवा चुका है.

मां ने उस के पिता को राजी करने का बीड़ा उठाया.

रात सोते समय सोहन की मां ने अपने पति से इस बारे में बात की. वर्षों से एक ही ढर्रे से काम करते रहने के कारण पहले तो वह इस बात के लिए राजी नहीं हुआ, पर फिर पत्नी के समझाने पर उस ने भी सोचा कि सोहन को किसी काम पर लगाने का अब यही अंतिम रास्ता बचा है. अपने इकलौते बेटे का हमेशा उतरा हुआ मुख देख कर वह डरता था कि निराशा में सोहन कहीं कोई ऐसीवैसी बात न कर बैठे. आखिर उस ने पहले के बचे पांच हजार रुपए भी सोहन को किसी तरह व्यवस्थित करने के लिए खर्च कर देने का फैसला कर लिया.

दूसरे दिन ही मिस्तरी और बढ़ई को बुला कर काम शुरू कर दिया गया. काम पूरा होते ही दुकान की जैसे कायापलट ही हो गई. जब मोतीराम अपनी पत्नी को दुकान दिखाने लाया तो उसे ऐसे लगा जैसे वह किसी और दुकान में आ गई है. प्लाईवुड का पार्टीशन लगा कर कारीगरों के काम का भाग अलग कर दिया गया. शीशे की अलमारियों में तैयार माल सजाया गया. रैक पर डिजाइन की किताबें, फीता व नाप दर्ज के रजिस्टर रखे गए. एक ओर फोल्डिंग कुरसियां रखी थीं जो आवश्यकता पड़ने पर खोली जा सकती थीं. दरवाजे के पास ही दराज वाली मेज व दो कुरसियां रखी थीं. मेज का शीशे का ऊपरी हिस्सा चमक रहा था.

कुछ ही दिनों में सोहन ने दुकान अच्छी तरह संभाल ली. अपने भटके बेटे को राह पर आया देख मोतीराम की आंखें खुशी से भीग जातीं. सोहन ने आय बढ़ाने का एक अन्य उपाय भी खोज निकाला. बाहर के कारीगरों से परंपरागत तिल्ले की जूतियां, चप्पल व सैंडिलें बनवा कर उन्हें भी शोकेस में सजा देता. सुनहरे तारों के काम वाली ये जूतियां व चप्पलें पर्यटकों में बड़ी लोकप्रिय थीं.

कुछ कर पानी की संतुष्टि से अब सोहन भी प्रसन्नचित रहता. मोतीराम की दुकान का नाम तो पहले ही काफी था. अब वहां चुस्त, स्मार्ट, बातचीत में कुशल सेल्समैन के रूप में सोहन आ गया था. इसलिए बिक्री काफी बढ़ गई. पिता को पुत्र से अब कोई शिकायत नहीं रही थी. केवल मां एक चांद सी बहू के लिए अकसर चर्चा करती रहती, जिसे सोहन हंस कर टाल जाता.

समय किसी के लिए कहां रुकता है. परंतु एक दिन शीला को अपनी दुकान में घुसते देख कर सोहन को लगा, जैसे समय ठहर ही नहीं गया, बल्कि वर्षों पीछे लौट आया है. उसे सहसा कालिज के जमाने के हंसीखेल के दिनों, हंगामों, पिकनिकपार्टियों भविष्य की चिंता से मुक्त मस्ती भरे वातावरण की याद हो आई. लेकिन फिर तुरंत ही अंतिम पिकनिक में हुए अपमान के घाव भी उस के हृदय में हरे हो गए. फिर भी उस ने

गंभीर हो का शीला का एक ग्राहक के रूप में स्वागत करते हुए कहा, "आइए, शीलाजी, कैसी हैं आप? बोलिए क्या चीज दिखलाऊं—चप्पल या सैंडिल?"

जूतों की एक सजीधजी दुकान में सोहन को मालिक के रूप में देख कर शीला भौचक्क रह गई. उस का तो यही खयाल था कि सोहन या तो कहीं छोटामोटा क्लर्क होगा या जैसा कि शेखर ने कहा था, अपने बाप की तरह किसी पेड़ के नीचे बैठ जूते गांठता होगा.

"शीलाजी, आप अकेली ही आई हैं? आप के पति कहां हैं?" सोहन आखिर पूछ ही बैठा.

"कैसा पति?"

शीला के स्वर की तलखी सोहन से छिपी न रही.

"शेखर के साथ तुम्हारी सगाई हो गई थी न?" सोहन एकाएक 'आप' से 'तुम' पर आ गया.

"वह तो शेखर ने तुम्हारा अपमान करने के लिए एक नाटक रचा था. उन लोगों की मांगें पूरी करने की हमारी हैसियत कहां थी? सो सगाई टूटने में क्या देरी लगती."

शीला से आगे कुछ कहा न गया. सोहन को समझते देर न लगी कि दहेज न जुटा पाने व सगाई टूटने के कलंक के कारण अब तक शीला की शादी नहीं हो पाई थी. शीला ने बताया कि बी.एड. कर के वह स्थानीय कानवेंट में अध्यापिका नियुक्त हो कर वह आई है.

"मेरी छोड़ो, अपनी सुनाओ. तुम तो खूब मजे में लग रहे हो."

शीला प्रशंसायुक्त दृष्टि से भव्य शो रूम और सोहन के आकर्षक व्यक्तित्व को देख रही थी.

"हां, अपनी शिक्षा का उपयोग मोची बन कर कर रहा हूं."

सोहन ने जानबूझ कर 'मोची' शब्द का उपयोग किया था. न चाहते हुए भी उस का स्वर रूखा हो आया था.

"ऐसा न कहो, सोहन. मैं भी बहुत देर में समझी. मनुष्य का मूल्य उस के पेशे से नहीं, आचारविचार से आंका जाता है. मैं पहले इस बात को नहीं समझा. इसी लिए मुंह के बल ठोकर खा कर गिरी."

शीला के प्रति सोहन के प्रेम का स्रोत अभी शायद पूर्णतया सूख नहीं पाया था. आज शीला को पश्चात्ताप करते देख सोहन का मन तरल हो आया. उस के मुंह से बेसाख्ता निकल पड़ा, "गिरपड़ी हो तो क्या हुआ, मैं जो खड़ा हूं तुम्हें संभालने के लिए."

सोहन ने उस की आंखों में आंखें डाल दीं. शीला पलकें झुका कर मेज का कोना ही खुरचने लगी. अब कहनेसुनने को क्या बाकी रह गया था. दोनों पथ के भूले मंजिल के करीब आ पहुंचे थे.

कैंसर न होने के बावजूद 11 बार आपरेशन किया

पेनसिलवेनिया (अमेरिका) की एक 33 वर्षीया महिला श्रीमती बोनी फिलाबाम ने जिस का ग्यारह बार कैंसर का आपरेशन किया गया है, अपने डाक्टरों पर मुकदमा ठोंक दिया है. श्रीमती बोनी का कहना है कि उन्हें कभी कैंसर हुआ ही नहीं था.

श्रीमती बोनी ने डाक्टरों पर यह आरोप लगाया कि उन्होंने उन का गलत निदान कर के उन के दोनों स्तनों तथा प्रजनन अंगों को शरीर से निकाल दिया है, जिस से वह बांझ हो गई हैं.

पिछले दिनों जब वह पिट्सबर्ग के एक हस्पताल में उपचार के लिए गईं तो वहां के डाक्टरों ने बताया कि उन्हें कैंसर नहीं था.

"कला को प्रत्येक युग में धर्म और राजनीति के स्वार्थों का शिकार होना पड़ा है. बहुत थोड़े कलाकार स्वतंत्र रह पाते हैं. धर्म ने अपना भय दिखा कर जहां

शरब सिंघे

तिब्बत में दीक्षित एक कलाप्रिय लामा

भेंटवार्ता • सैन्नी अशेष

बौद्ध धर्म में दीक्षा पा कर अंधविश्वासों के प्रति विद्रोह करने वाले इस कलाकार ने अभावों और उपेक्षाओं में जीते हुए भी कला को किस प्रकार जीवित रखा?

कलाकार को [illegible] और कल्पनाओं के दायरे में बंधने के लिए मजबूर किया, वहीं राजनीति ने उसे सदा अपने बुत गढ़ने के उपदेश दिए. आज भी 90 प्रतिशत कलाकार जानबूझ कर या अनजाने ही कला को पराधीन बनाए हुए हैं."

यह विचार हैं शरब सिंघे के, जो शक्लसूरत से भी और अपनी टूटीफूटी हिंदी के कारण भी एक मामूली और अनपढ़ व्यक्ति लगता है, परंतु जिस से कला के विषय में एकाध सवाल पूछते ही ढेरों हृदयस्पर्शी और विचारोत्तेजक उत्तर मिल जाते हैं. वह बड़ी कुशलता से किसी को भी अपनी बात न सिर्फ समझा देता है, बल्कि उस की अनेक जिज्ञासाएं भी शांत करता है.

तिब्बती भाषा के विद्वान इस लामा ने बौद्ध धर्म में दीक्षा पा कर भी उस में व्याप्त वर्तमान अंधविश्वासों के प्रति विद्रोह किया है. उस ने मठ आदि की सुविधाओं, धार्मिक सत्ता तथा तंत्रमंत्र द्वारा उपचार के अधिकारों आदि को तिलांजलि दे दी है.

शरब सिंघे का जन्म 1942 में, हिमाचल के सीमावर्ती क्षेत्र जिला किन्नोर के गांव नेसंग में हुआ. जब वह तीन वर्ष का था तो उस की मां ने अन्यत्र विवाह कर के परिवार से किनारा कर लिया था. अभावों और उपेक्षाओं को सहते हुए इस ने भेड़बकरियों को जंगलों की चरागाहों में चराना शुरू किया. इसी बीच वह चट्टानों पर कंकड़ों से चित्र बनाने लगा.

16 वर्ष पूरे होतेहोते उस ने स्वतंत्र रूप से अनेक कलाकृतियां बनाईं और फिर अपनी इस कला के विकास के लिए रास्ता खोजने लगा. पर अपने गांव और आसपास के गांवों में भी कोई स्कूल न होने के कारण वह पढ़ भी नहीं सका.

उस ने घर से भाग निकलना ठीक समझा और नमग्या नामक गांव में मंदिरों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर अपनी कला का प्रदर्शन करने लगा. पत्थरों, दीवारों, लकड़ियों और वस्त्रों पर चित्रांकन कर के उस ने अपना पेट भी भरा. वहीं से अनेक कठिनाइयों से जूझता हुआ वह अकेला तिब्बत जा पहुंचा. वहां अनेक कला केंद्रों [illegible] धार्मिक केंद्रों में रहते हुए उस ने नौ वर्ष [illegible] दिए.

1959 में वह तिब्बत से लौट आ[illegible] और तब उस ने अपने क्षेत्र तथा हिमाचल [illegible] कुछ अन्य क्षेत्रों में अनेक मंदिरों [illegible] कलाकृतियों का जीर्णोद्धार कर के खूब [illegible] कमाया. लामा के पद पर न जा कर उस[illegible] स्वतंत्र रूप से अपनी रुचि का विकास कि[illegible]

विवाह के बाद आर्थिक कठिनाइयों [illegible] कारण उस ने 1973 में हिमाचल सरकार [illegible] आमंत्रित करने पर सांगला (जिला किन्नोर[illegible] तक्षकला केंद्र में डिजाइनर की नौकरी कर[illegible] और आजकल इसी जगह कार्यरत है. इस [illegible] का उद्देश्य हिमाचल की पारंपरिक कला [illegible] रक्षा करना है. यहां वह उन छात्रछात्राओं [illegible] कला उद्योग में प्रशिक्षित कर रहा है, जो बी[illegible] में ही स्कूल छोड़ देते हैं या अभी रोजगार [illegible] तलाश में हैं. यहां वे छात्रछात्राएं लकड़ी [illegible] शो पीस, प्राकृतिक चित्रों, पशुपक्षियों [illegible] आकृतियों के अलावा मिट्टी की मूर्ति[illegible] बनाना भी सीखती हैं.

एक भेंट में उन से कुछ प्रश्न पूछे के [illegible] प्रकार है:

प्रश्न : आप को कला संबंधी प्रेर[illegible] कहां से मिली?

उत्तर : अलमस्त स्वभाव के कारण घ[illegible] से न भागा होता तो शायद कुछ न सीख पात[illegible] हां, घर पर मेरी थोड़ीबहुत शिक्षा का प्रबं[illegible] होता तो मैं कभी न भागता. बाद में मैं घ[illegible] लौटा और सब के काम आया.

प्रश्न : शादी और सरकारी नौकरी [illegible] बारे में आप का क्या खयाल है?

उत्तर : शादी कर के कलाकार अप[illegible] को बचा सकता है, पर सरकारी नौकरी [illegible] स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति का रह पाना बहु[illegible] कठिन है. वैसे सरकारी नौकरी बेहद मजबू[illegible] में ही करनी चाहिए.

प्रश्न : शादी आप के लिए कैसी रही[illegible]

उत्तर : शादी मेरे कार्य में बाधक नहीं रही. मेरी पत्नी भी अच्छी कलाकार है. [illegible]

ल आदि के कई डिजाइन बना चुकी है. सात वर्षीय पुत्र भी मेरे बिना खास कुछ ए लगभग चार हजार तसवीरें कागज पर र चुका है.

प्रश्न : कला की रक्षा और विकास के ए आप सरकार और समाज से क्याक्या क्षाएं रखते हैं?

उत्तर : हमारे समाज में सवर्ण लोग र के काम करना पसंद नहीं करते. दूसरी र सरकारी कला केंद्रों में हरिजन लकबालिकाएं इस लालच में पहुंचते हैं कि छ समय बाद उन्हें कुछ वजीफा मिल एगा. इस तरह सामाजिक उपेक्षा कला के कास और आत्मनिर्भरता में बाधक बन ई है.

हमारे यहां का बना हुए एक शो पीस 100-100 रुपए तक में आसानी से बिकता है. शिमला में मालरोड पर अनेक पर्यटक इसे बड़े चाव से खरीदते हैं

यदि लोग स्वतंत्रत रूप से गहन लगन के साथ इस उद्योग में आएं तो उन्हें सरकारी नौकरी के पीछे भागने की जरूरत नहीं है. हिमाचल प्रदेश में तो इस से अच्छी कमाई की संभावनाएं हैं. सब से बड़ी बात तो यह है कि कला के क्षेत्र में एक ओर सुरक्षित रोजगार मिलता है तो दूसरी ओर व्यक्ति को अपनी रुचि का काम कर के सुख का अनुभव होता है. अंत में शरब सिंघे ने ठहाका लगा कर कहा, "बाद में कलाकार को सुविधाजनक नौकरी भी मिल जाती है." ●

(पृष्ठ 41 से आगे)

प्रार्थना सीजन में ही लगानी चाहिए. बेहतर है कि पुजारियों को टीम में शामिल कर लिया जाए ताकि भगवान से भारीभरकम किस्म की

भारतीय हाकी खिलाड़ी असलम शेर खां : खेल में भी अंधविश्वास.
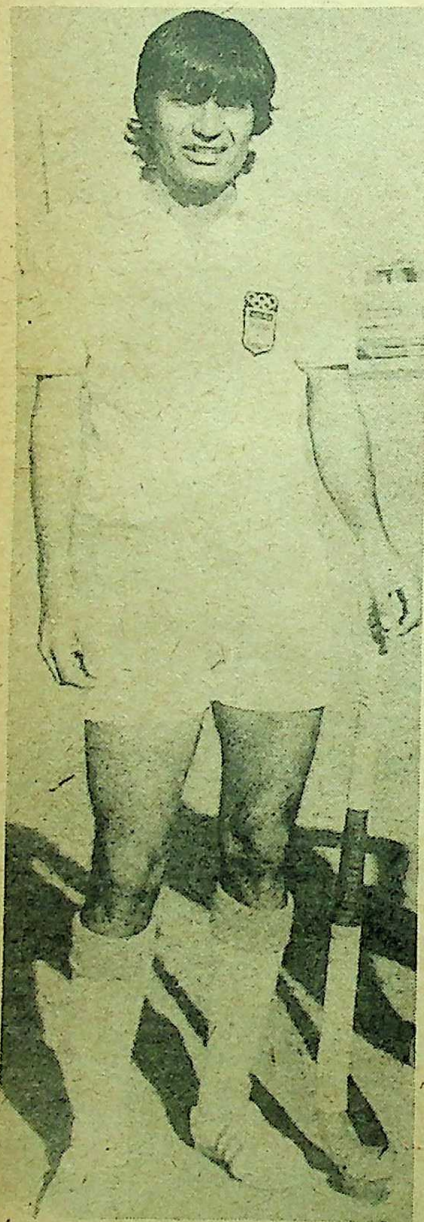
प्रार्थना की जा सके. हाकी के कर्णधा[र] ... ने यहां क्या इस आसान से नुसखे को ... किया हुआ है.

हाल ही में जब एक अंत[रराष्ट्रीय] प्रतियोगिता में हिस्सा लेने भार[तीय टीम] विदेश गई तो उस की रवानगी से ... दिन का समय विभिन्न मंदिरों, म[स्जिदों], गिरजाघरों, गुरुद्वारों व मजारों में ... मांगने में लगा दिया गया, लेकिन नती[जा] ढाक के तीन पात रहा.

1885 में भारत में हाकी का ... क्लब बना था. 1908 में कलकत्ता ... पहला राष्ट्रीय संघ बना. 1926 में पह[ली] कोई टीम विदेशी दौरे पर गई. इसी ... ही अंतरराष्ट्रीय हाकी जगत में भा[रत की] अविस्मरणीय सफलताओं की लगभ[ग] ... दशकों की एक शानदार परंपरा शु[रू] ...

बीते समय की बातें

आज तब के 30 सालों की ज... होती है तो एक जबरदस्त अंतर दे[खने] मिलता है. तब भारतीय टीम के लिए ... गोल कर देना मामूली बात मानी जा[ती थी.] अब इस की कल्पना करना भी मुश्कि[ल] ... जाता है. पहले भारत पर एक गो[ल] ... पाना ही प्रतिद्वंद्वी टीम के लिए गौरव ... थी, लेकिन आज कौन सी टीम कब भा[रत को] पांचसात गोल से पीट दे, कुछ नहीं क[हा जा] सकता. उस जमाने में ध्यानचंद जैसे ... के हिसाब से मैदानी गोल करते थे–1... आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड में खेले गए 4... में भारत की तरफ से किए गए 548 ... से 200 अकेले ध्यानचंद ने किए थे औ[र] आज हालत यह है कि गोल करने ... भारत को पेनल्टी कार्नर का मुंह ... पड़ता है. 10 पेनल्टी कार्नर से भी ती[न] ... ही हो पाते हैं. तब गेंद को ध्यानचंद की ... से ही लगी देख कर उस की जांच की ... कि कहीं स्टिक में चुंबक तो नहीं लगा ... आज हाल यह है कि गेंद भारतीय खि[लाड़ियों] की स्टिक के नजदीक ही नहीं आती ...

उस समय किसी भी मैच में भा[रत] ...
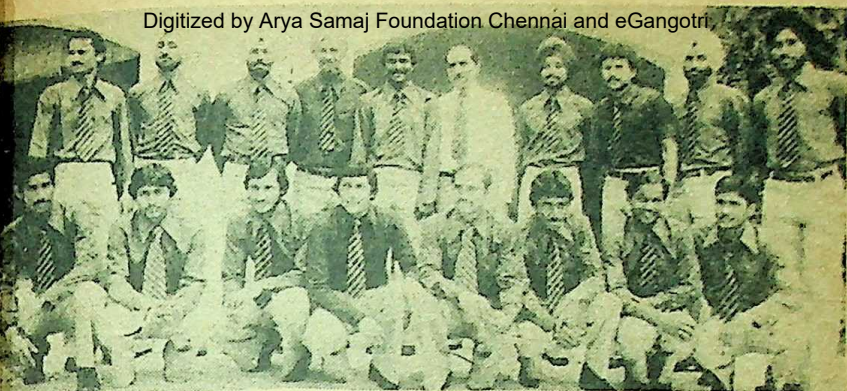
1980 में मास्को में हाकी तमाशे में जीती भारतीय टीम

जीत पर किसी को आशंका नहीं होती थी. आज हर मैच के दौरान भारतीय समर्थकों को भारत की हार की आशंका बनी रहती है. पहले पहला स्थान तय था, फिर तीसरा स्थान भारत के लिए सुरक्षित हुआ और आज भारतीय टीम का उल्लेख किसी बड़ी प्रतियोगिता में पांचवें या छठे स्थान के लिए किया जाने लगा है.

एशियाई स्तर पर कोई मजबूत टीम क्योंकि अभी सामने नहीं आई है, इसलिए पिछले 16 सालों से एशियाई खेलों में भारत को दूसरा स्थान मिलता रहा. लेकिन मलयेशिया व चीन की टीम जिस तेजी से उभर रही है, उस से लगता है कि कहीं ज़ल्दी ही भारतीय टीम चौथे स्थान पर न धकेल दी जाए.

असलमशेर खां व अशोक : हाकी की मौत पर हायतोबा मचाने में हिचकिचाहट क्यों?

यह हालत सिर्फ पुरुष हाकी की ही नहीं है, महिला व जूनियर वर्ग में भी यही स्थिति है. 1925 में भारत में पहला महिला हाकी क्लब बना था. 1938 में दिल्ली में पहली अंतरप्रांतीय महिला प्रतियोगिता हुई.

1953 व 1956 में इंगलैंड व आस्ट्रेलिया में होने वाली विश्व महिला हाकी प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के बाद 1973 में नीस में भारत ने विश्व प्रतियोगिता में चौथा स्थान पाया और दो साल बाद आठवां. आज भी विश्व स्तर पर भारतीय टीम की हैसियत सातवेंआठवें स्थान से ज्यादा नहीं बन सकी है.

1980 के मास्को ओलंपिक में उसे चौथा स्थान मिला था, लेकिन मैदान टीमें भी तो छः ही थीं.

जूनियर वर्ग की अब तक हुई प्रतियोगिताओं में भी भारत पहले चार तक पहुंचने की स्थिति में नहीं आ

भारतीय हाकी का पतन क्यों उस की इस वर्तमान स्थिति के लि जिम्मेदार है? इन मुद्दों का सही हल लिए पिछले सालों में कई समितियां भारतीय हाकी की दुर्दशा पर मग आंसू बहाने वाले अधिकारियों की

आरोपों के घेरे में इंद्रमोहन महाजन

घुड़दौड़ के शौकीन मुथैया ऊतामलाई रामास्वामी के भारी दबाव की वजह से हट जाने के बाद जब केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल के इंस्पेक्टर जनरल इंद्रमोहन महाजन भारतीय हाकी संघ के अध्यक्ष बने तो यह उम्मीद बनी कि शायद वह हाकी के बिगड़ते हुए हालात पर रोक लगा सकेंगे. इस में तो उन्हें सफलता नहीं मिल सकी, उलटे वह तानाशाही व हेराफेरी के कई संगीन आरोपों में घिर गए हैं.

अक्तूबर, 1981 से ले कर फरवरी, 1982 तक के समय में सिर्फ तीन हाकी टेस्टों के सिलसिले में इंद्रमोहन महाजन की तरफ से 90 हजार रुपए की रकम खर्च की गई, लेकिन इस के लिए संघ से न तो पूर्व अनुमति ली गई और न ही इस संबंध में कोई वाउचर या बिल ही पेश किया गया. अधिकांश बार उन्होंने पैसा अपने ही विभाग में सब इं देशबंधु की मारफत लिया. 29 1981 से 13 जनवरी, 1982 तक के लिए, जब बंबई में पांचवीं विश्व क प्रतियोगिता हो रही थी, इंद्रमोहन महा होटल व्यय के नाम पर 40 हजार मनोरंजन भत्ते के रूप में 10 हजार वसूले. खास बात यह है कि विश प्रतियोगिता से पहले भारतीय टी विदेशी दौरे से लौट कर आई थी, उस खर्च की कटौती की वजह से ही उसे स्टेडियम की सीढ़ियों पर रात बिता थी.

1981 के अंत में पाकिस्तान की भारत में हाकी टेस्ट श्रृंखला खेलने आ यह हुआ कि पाकिस्तान की टीम अपन का खर्च देगी जब कि भारतीय टी पाकिस्तान जाएगी तो अपना यात्रा व्य उठाएगी.

दूसरा टेस्ट जालंधर में खेला जा लेकिन उसे रद्द कर दिया गया. इस की पाकिस्तान को दे दी गई लेकिन क्योंकि का नियत कार्यक्रम बदल दिया ग इसलिए बंबई से कलकत्ता व वहां से टीम की दिल्ली वापसी का खर्च भा हाकी संघ को उठाना पड़ा. कलकत्ता वाले दिन इंद्रमोहन महाजन ने बंगाल संघ को बंबई से कलकत्ता व कलक दिल्ली वापसी के लिए पाक टीम के

लेकिन नतीजा वही शून्य रहा है.

तमाम स्थितियों की दो वजहें बताई जाती हैं— एक तो प्रशासनिक, दूसरी मैदानी. लेकिन ये दोनों वजहें मुंह छिपाने के लिए बताई जाती हैं.

प्रशासनिक वजह में पिछले कई सालों से कहा जा रहा है कि हमारे यहां हाकी संघ में पक्षपात, भाईभतीजावाद व आपसी राजनीति का जबरदस्त शिकंजा है. क्षेत्रीयता की राजनीति हावी है. 7 मार्च, 1979 को राज्य सभा में हाकी की दुर्दशा पर बहस की गई थी, लेकिन बहस का खास मुद्दा यह था कि दक्षिण भारतीय खिलाड़ियों को विशेष महत्त्व क्यों [illegible] हिस्सा ही दक्षिण भारत के संसद सदस्यों ने लिया था.

अंतरराष्ट्रीय हाकी संघ के अध्यक्ष रेने फ्रैंक ने एक बार कहा था, "भारतीय हाकी के पतन में उत्तर भारत के वे पंजाबी अधिकारी जिम्मेदार हैं जो नहीं चाहते कि हाकी का प्रभुत्त्व दक्षिण भारत के लोगों के हाथ में चला जाए."

लेकिन हाकी के प्रशासन इन तमाम वजहों को नहीं मानते. वे हार की कोई शानदार वजह तलाश करते रहे. मसलन

किराए का 53,541 रुपए की रकम का बिल दिया, लेकिन इस पैसे को हाकी संघ के खाते में जमा नहीं कराया गया. भारतीय टीम के कलकत्ता जाने व वहां से दिल्ली लौटने का 43,626 रुपए का खर्च बंगाल हाकी संघ ने दिया, उधर इंद्रमोहन महाजन ने बंबई हाकी संघ से भी पाक टीम के किराए के नाम पर 11,350 रुपए ले लिए, लेकिन इस का भी कोई हिसाब नहीं दिया.

बंबई में हुए टेस्ट के दौरान बंबई हाकी संघ ने जेब खर्च के रूप में पाक टीम को पांच हजार रुपए व भारतीय टीम को तीन हजार रुपए दिए, लेकिन कलकत्ता के दूसरे टेस्ट के लिए इंद्रमोहन महाजन ने ही पाक टीम के नाम पर 10 हजार रुपए व भारतीय टीम के नाम पर तीन हजार रुपए इस मद में वसूल लिए, कोई भी बिल दिए बिना.

18 फरवरी, 1982 को पाकिस्तान जाने वाली भारतीय जूनियर टीम के लिए 7,090 अमरीकी डालर की रकम स्वीकार की गई, लेकिन मेनैजर ऊधमसिंह को सिर्फ पांच हजार डालर ही दिए गए. जब कि बाकी 2,090 डालर इंद्रमोहन महाजन के लिए देशबंधु ने लिए.

16 अप्रैल, 1982 को दिल्ली में हुई हाकी संघ की कार्यकारिणी की बैठक में इंद्रमोहन महाजन ने कहा कि संघ के सहायक सचिव पी. एन. शर्मा ने 18 हजार रुपए की यह रकम उन के (महाजन) कहने के बाद भी संघ के खाते में जमा नहीं कराई. लेकिन पी.एन. शर्मा का कहना था कि इंद्रमोहन महाजन की तरफ से उन्हें ऐसी कोई रकम नहीं मिली.

इंद्रमोहन महाजन राजनीतिक व प्रशासनिक स्तर पर काफी मजबूत माने जाते हैं. इसी लिए शायद 9 मई को बिना कोई कारण बताए पी. एन. शर्मा को बरखास्त कर दिया गया. पी. एन शर्मा इस फैसले के विरोध में अदालत का दरवाजा खटखटा चुके हैं.

इंद्रमोहन महाजन द्वारा हाकी संघ के पैसे के खुल्लमखुल्ला दुरुपयोग के विरोध में कोषाध्यक्ष पी. मोतीलाल ने भी इस्तीफा दे दिया.

भारतीय टीम के प्रशिक्षक हरमीक सिंह का नाम भी कई घपलों से जुड़ा. वह इंद्रमोहन महाजन के खास कृपापात्र बताए जाते हैं. 10 फरवरी, 1982 को हाकी संघ की बैठक मे कई सदस्यों ने मांग की कि विश्व कप प्रतियोगिता की निंदनीय हार के बाद प्रशिक्षक व मैनेजर को बदल दिया जाए. लेकिन इंद्रमोहन महाजन ने न सिर्फ इस फैसले का विरोध किया, बल्कि समय से पहले बैठक भी बरखास्त कर दी.

गृह मंत्रालय ने हाकी संघ के घोटालों की जांच कराने का फैसला किया है. लेकिन इस का कोई ठोस नतीजा सामने आने की उम्मीद इसलिए नहीं है, क्योंकि अब तक इस तरह की जांच सिर्फ दिखावा ही साबित होती रही है.

पहले वे कहा करते थे कि भारतीय हाकी की तकनीक स्टिक वर्क पर आधारित है, ताकत पर नहीं. इसलिए ताकत के सामने पिट जाती है.

लेकिन ताकत की हाकी खेलने वाले यूरोपीय देशों ने जब स्टिक वर्क का काम शुरू कर दिया, तब बहाना बनाया– "हमारे खिलाड़ी ज्यादा उम्र के होने की वजह से हार जाते हैं." जब युवा खिलाड़ियों वाली टीम हारी तो कहा गया– "बेचारे जीतते कैसे? अंतरराष्ट्रीय अनुभव तो उन के पास था ही नहीं."

सब से बढ़िया बहाना अधिकारी बनाते हैं कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वही नियम बनाए जाते हैं जो यूरोपीय देशों के लिए फायदेमंद साबित हो सकें. सवाल पैदा होता है कि तब अंतरराष्ट्रीय समिति की बैठकों में भारतीय प्रतिनिधि अपना चेहरा दिखाने जाते हैं.

जब कृत्रिम मैदान (एस्ट्रोटर्फ) पर होने लगे तो यह भारत की हार की वजह गया.

पिछले कुछ समय में तो भारतीय की असफलता के बेहूदे तर्क दिए गए

दौर सफलता असफलताओं का

भारतीय हाकी की कहानी सफलताओं व असफलताओं की एक मिलीजुली कहानी रही है. 1928 में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय हाकी की सफलता का जो सिलसिला शुरू हुआ, वह 1956 तक निर्बाध गति से चलता रहा. लेकिन सफलताओं का इतिहास जितना लंबा रहा, उतना ही असफलताओं का भी रहा. जहां पहले भारत की जीत शानदार ढंग से होती थी, वहीं अब इस की हार बेहद लज्जास्पद ढंग से होती है.

पेश है पिछले 60 सालों में भारतीय हाकी की हारजीत का लेखाजोखा :

सफलता

- 1928 एम्सटर्डम ओलंपिक–हालैंड को 3-0 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1932 सेंट लुई ओलंपिक–जापान को 11-1 व अमरीका को 24-1 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1936 बर्लिन ओलंपिक–जरमनी को 8-1 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1948 लंदन ओलंपिक–इंगलैंड को 4-0 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1952 हेलसिंकी ओलंपिक–हालैंड को 6-1 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1956 मैलबर्न ओलंपिक–पाकिस्तान को 1-0 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1964 टोकियो ओलंपिक–पाकिस्तान को 1-0 से हरा कर स्वर्ण पदक.
- 1966 बैंकाक एशियाई खेल–पाकिस्तान को हरा कर पहला स्थान
- 1975 कुआलालंपुर विश्व कप–पाकिस्तान को फाइनल में 2-1 से हरा कर पहला स्थान.
- 1980 मास्को ओलंपिक–कई देशों के बहिष्कार की वजह से चोटी की टीमें मसलन–पाकिस्तान, पश्चिमी जरमनी, हालैंड, व आस्ट्रेलिया ने हिस्सा नहीं लिया. पालैंड व स्पेन ने लीग मैच 2-2 से बराबर किए. फाइनल में स्पेन को (4-3

मसलन अंपायरों ने बेईमानी की (गोया उन्हें सिर्फ भारतीय टीम से ही कोई निजी दुश्मनी होती है), मैदान या मौसम भारतीय खिलाड़ियों के लिए उपयुक्त नहीं था, भारतीय खिलाड़ी पूरी मेहनत से खेले, लेकिन किस्मत ने उन का साथ नहीं दिया.

गनीमत यह है कि हार की वजह यह नहीं बताई जाती कि हमें मैच खेलना पड़ा इसलिए हम हारे. वैसे कल को इतना जरूर कहा जा सकता है कि मैदान में दूसरी टीम के भी क्योंकि 11 खिलाड़ी थे इसलिए हम हारे.

हाल में हुई चैंपियंस कप ट्राफी के लिए प्रशिक्षण का काम बलबीरसिंह को सौंपा गया. उन्होंने स्पष्ट कर दिया कि इस प्रतियोगिता में व निकट भविष्य में भारतीय टीम से बेहतर परिणाम की उम्मीद नहीं की जा सकती.

लेकिन उन जैसा स्पष्टवादी खिलाड़ी भी यह स्वीकार करने से झिझकता रहा कि भारतीय हाकी की मौत हो गई है और अब उस की अंत्येष्टि कर दी जानी चाहिए. मुर्दा शरीर को सिर्फ इसलिए सड़ाने में कोई तुक नहीं है कि शायद उस में कभी किसी चमत्कार से जीवन का स्पंदन होने लगे. ●

से हरा कर स्वर्ण पदक.

असफलता

- 1958 एशियाई खेल (टोकियो) —भारत पाकिस्तान मैच अनिर्णीत खराब गोल औसत की वजह से भारत को दूसरा स्थान.
- 1960 रोम ओलंपिक—पाकिस्तान से 0-1 से हार कर रजत पदक.
- 1962 जकार्ता एशियाई खेल पाकिस्तान से हरा कर दूसरा स्थान.
- 1968 मैक्सिको ओलंपिक—न्यूजीलैंड से 1-2 से हार कर सेमीफाइनल में आस्ट्रेलिया से 1-2 से हार कर कांस्य पदक.
- 1970 बैंकाक एशियाई खेल—पाकिस्तान से हार कर दूसरा स्थान.
- 1971 बारसीलोना विश्व कप—सेमीफाइनल में पाकिस्तान से 1-2 से हार कर तीसरा स्थान.
- 1972 म्यूनिक ओलंपिक—सेमीफाइनल में पाकिस्तान से 0-2 से हार कर कांसय पदक.
- 1973 एम्सटर्डम विश्व कप—फाइनल में हालैंड से 4-6 से हार कर दूसरा स्थान.
- 1974 बैंकाक एशियाई खेल—पाकिस्तान से हार कर दूसरा स्थान.
- 1976 मांट्रियल ओलंपिक—हालैंड से 1-3 व आस्ट्रेलिया से 1-6 से हारने के बाद छठे स्थान के लिए हुए मैच में 2-3 से हालैंड के खिलाफ हार कर मलयेशिया को 2-0 से हरा कर 11 देशों के बीच सातवां स्थान.
- 1976 कायदे आजम ट्राफी (पाकिस्तान) पांचवां स्थान.
- 1978 बोयनीस आयरीज विश्व कप— 14 देशों में छठा स्थान. कनाडा ने 3-1 से जरमनी ने 7-0 से व स्पेन ने 2-0 से भारत को हराया. आठ मैचों में 11 गोल किए व 18 खाए.
- 1978 बैंकाक एशियाई खेल—पाकिस्तान से हार कर दूसरा स्थान.
- 1979 विश्व जूनियर प्रतियोगिता—पांचवा स्थान.
- 1980 चैंपियंस कप ट्राफी—सात देशों में पांचवां स्थान. कुल 6 मैचों में 4 अंक मिले. 17 गोल किए, 25 गोल खाए.
- 1982 बंबई विश्व कप—12 देशों में पांचवां स्थान, आस्ट्रेलिया से 1-2 व हालैंड से 3-4 से हारा.
- 1982 एशियाई कप (कराची) —पाकिस्तान से हार कर दूसरा स्थान.

1982 चैंपियंस कप (एम्सटर्डम) चौथा स्थान.

- 1982 विश्व जूनियर प्रतियोगिता (कुआलालंपुर)—पांचवां स्थान. ●

एक करोड़ बीस लाख का उपहार

जब डाकिए ने अन्य पत्रों के साथ वह रंगीन लिफाफा हमें थमाया तो हमारे कान खड़े हो गए. उस के फाटक से बाहर निकलते ही झट से लिफाफा खोल डाला. जिस बात की आशंका थी, वही निकली. हम सिर थाम कर वहीं आराम कुरसी पर बैठ गए.

व्यंग्य • चंद्रमोहन प्रधान

चाय का कप लिए श्रीमतीजी बा... निकलीं. हमें यों मुंह लटकाए बैठा देख... उन्होंने बेंत की तिपाई पर कप रख दिया... पूछा, ''क्या बात है? यह लिफाफा कैसा...

चेहरे पर साढ़े छः क्यों बजाए हुए हो?"

"अभी तो साढ़े बारह भी बजेंगे," हम ने कहा, "देख लीजिए खुद."

उन्होंने लिफाफे में से गुलाबी रंग का छपा कार्ड निकाला और बोल कर पढ़ने लगीं:

मान्यवर महोदय,

परमात्मा की असीम अनुकंपा से हमारे विवाह की सत्तरहवीं वर्षगांठ इसी 3 जुलाई को पड़ रही है. इस शुभ अवसर पर आयोजित प्रीति जलपान में हम पतिपत्नी आप की सपरिवार उपस्थिति के आकांक्षी हैं.

समय : संध्या सात बजे से.

विनीत,
हरेंद्रकुमार

"यह भी खूब रही," उन्होंने हंसते हुए कहा, "विवाह की सत्तरहवीं वर्षगांठ."

"अब निकालो सौपचास रुपए और चलो बाजार. आज ही तो तीन तारीख है. उपहार भी खरीदना पड़ेगा."

"तो आप ऐसा मुंह क्यों बनाए हुए हैं?" वह बोलीं, "यह तो सामाजिक कर्तव्य है, लगे ही रहते हैं."

"अरे भई, हद होती है हर चीज की," हम ने कुढ़ कर कहा, "10 साल पहले साल भर में बहुत हुआ तो शादी, तिलक आदि के दोचार निमंत्रण आ जाते थे. इधर तो लगता है लोगों ने पार्टियां देने का फैशन ही बना लिया है. तिलक का कार्ड आता है, फिर शादी का,

हरेंद्रजी द्वारा लाए उपहार को ले कर घर के सभी सदस्य अपनीअपनी अटकलें लगा रहे थे, पर जैसे ही हम ने उसे खोला और उस में जो निकला उसे देख सभी के चेहरे बुझ गए.

फिर बहूभात का, फिर बच्चे के जन्म एवं छठी का, फ़िर अन्नप्राशन, मुंडन, छेदन आदि के होतेहोते उस के अगले जन्मदिन से पहले उस के मातापिता के विवाह की पहली वर्षगांठ आ धमकती है. यह सब भी एक ही बार हो तब तो दरजनों मित्रों, परिचितों के यहां से सालों लगातार यही कार्ड आते रहते हैं."

"तो क्या हो गया? कोई खुशी हो तो वे बुलाएं भी नहीं हमें?"

"जरूर बुलाएं, उन की खुशी हमारी खुशी है. लेकिन हर बार उपहार ले जाने की मुसीबत तो इन खुशियों में किरकिराहट लाने लगती है."

"उपहार तो सभी एकदूसरे के लिए ले जाते हैं."

"यही तो असली बात है," हम ने मायूसी के साथ कहा, "हम लोगों के यहां होता ही क्या है? विवाह की वर्षगांठ हम ने शादी के बाद दो ही साल मनाई. ईमानदारी की बात है कि शादी होने की असली खुशी दो साल तक ही टिकती है. शादीब्याह के योग्य अभी हमारे बच्चे नहीं हुए, उन दोनों की वर्षगांठ भी साल में दो ही बार पड़ती है. उस में भी हम चुने हुए नजदीकी दोस्तों को ही बुलाते हैं."

"तो एक उपाय है," उन्होंने मजाक किया, "आप एक शादी और कर लें."

"जी, और दूसरे दिन चल दें सरकारी ससुराल, दो साल हवापानी बदलने के लिए. माफ कीजिए. वैसे भी आज तो शादी करना हाथी पालने के बराबर है."

"तो आप तो हाथी पाल चुके. अब झटपट तैयार होइए, ताकि बाजार चलें. चलना तो होगा ही, नहीं तो हरेंद्रजी बुरा मानेंगे."

वह भीतर चल दीं.

तैयार होने में हमें कुछ विलंब हुआ. सात बजे जीवन ज्योति पहुंचे और उपहार के लिए कुछ सामान दिखाने को कहा.

"किस मौके के लिए उपहार चाहिए?" दुकानदार ने पूछा.

जब हम ने बताया कि एक मित्र के विवाह की सत्तरहवीं वर्षगांठ के लिए चाहि... तो उस ने बड़ी मायूसी के साथ कहा, "रसो... गृहस्थी का सामान तो हम यहां अधिक न... रखते."

"रसोई आदि का सामान ही क्यों?" श्रीमतीजी ने अपनी भौहें टेढ़ी कीं.

"सत्तरहवीं वर्षगांठ है, आप खुद सो... लें."

उन की सूझ पर मन ही मन दाद देते ह... हम ने कहा, "तो क्यों न बच्चों की खाति... कुछ..."

"चुप भी रहिए," देवीजी ने हमें डां... "बिना समझेबूझे बक देते हैं. वर्षगांठ उन... विवाह की है. इस में बच्चों से क्या मतलब?"

हमारे पास इस एतराज का करा... उत्तर तो था, पर बीच बाजार में अपनी पत्... की (चाहे वह कितनी भी सुंदर क्यों न हो) ड... सब के सामने खाना कौन चाहता है.

"कोई अच्छी सी चीज दिखाइए," उन्होंने फरमाया.

"ऐसा करें," दुकानदार ने सुझाव दिया, "क्यों न एक प्रेशर कुकर ले लीजिए?"

"प्रेशर कुकर!" हमें बीच में कूद... पड़ा, "अरे साहब, बजट गड़बड़ा जाएगा. ... के नीचे का ही बजट रखा है हम ने."

"तो दो डब्बे डालडा..."

"क्या बक रहे हैं आप?" श्रीमती... नाराज हो उठीं, "हमें बदनाम कराएंगे?"

तभी उन की दृष्टि रैकों पर सजे साम... में से कीमती सेंट की शीशियों पर पड़ी. ए... प्रख्यात सेंट की बड़ी वाली शीशी दिखाते हु... बोलीं, "वही बड़ी वाली शीशी दे दीजिए."

वह सेंट हमें 72 रुपए में पड़ा.

खैर मनाते हुए हम सेंट खरीद क... बाहर निकले तो आठ बज रहे थे.

पार्टी से घर लौटे तो हमारे मन ... उधेड़बुन चल रही थी.

श्रीमतीजी सोने से पहले नाइटी पह... कर श्रृंगार मेज के सामने खड़ी हो चेहरे प...

पैकेट खोलते ही हमारी तबियत पर ओस पड़ गई.

कोल्ड क्रीम लगाने लगीं तो हम ने पूछा, "क्यों, भई; तुम्हारा जन्मदिन कब पड़ता है?"

"अभी से भूलने लगे?" उन्होंने कहर बरसाती निगाहों से हमें घूरते हुए कहा, "बड़े अच्छे पति हैं आप."

"अरे साहब, भूल कौन रहा है?" हम ने बात बनाई, आप तो नाहक नाराज होने लगीं. ऐसा है कि मुझे तो याद है... वह...वह... 15 जुलाई को पड़ता है न?"

"यही याद है? क्या कहने हैं," व्यंग्य के साथ उन्होंने कहा, "शादी की तारीख भी जनाब को याद है या नहीं?"

"वह तो बखूबी याद है, 20 फरवरी," हम ने झट बताया.

"खैर, एक चीज़ तो याद रही आप को."

"तो तुम्हारा जन्मदिन 15 जुलाई..."

"जुलाई में नहीं, भले आदमी, जून में. 15 जून को मेरा जन्मदिन है."

"ओह, याद आया," हम ने जरा पास आ कर कहा, "मुझे एक बात सूझी है."

"पता है." उन्होंने पूर्ववत शीशे को कृतार्थ करते हुए फरमाया, "मेरा जन्मदिन मनाने का विचार है, क्यों?"

"अरे भई, तुम्हें कैसे पता चल गया?" हम ने चकरा कर पूछा, "अभी दो घंटे पहले ही तो यह विचार मन में आया है, किसी को कुछ बताया भी नहीं."

"तुम जो सोचते हो, वह मुझे पहले से ही पता रहता है. चले हैं दाई से पेट छिपाने."

"मान गया, भई, मान गया." हम ने हाथ जोड़े, "हे देवी, तुम आधुनिक कंप्यूटरों की नानी हो. तुम से कुछ छिपा सकना असंभव है. तुम लाई डिटेक्टर (झूठ पकड़ने की

मशीन) हो, यह नहीं चल सकता तुम्हारे आगे."

"यह सब मक्खनबाजी रहने दें. कहिए, यह क्या सूझी है? हमें तो बच्चों के ही जन्मदिन मनाने चाहिए. अब इस उम्र में..."

"अजी देवीजी," हम ने तन कर कहा, "कौन कहता है कि जन्मदिन मनाने की हम लोगों की उम्र अब नहीं है? हम लोगों की तो सत्तरहवीं भी नहीं, कुल जमा बारहवीं ही वर्षगांठ है इस साल शादी की, दो बार बच्चों के साथ अब आप की भी मनेगी, यह तय समझिए, ताकि जितने उपहार हमें देने पड़ते हैं, उन के कम से कम आधे तो वापस हों. मानना पड़ेगा उन लोगों को भी कि हम उन के भी गुरू घंटाल हैं."

"यह बात है!" वह हंसने लगीं, "और जब लोग पूछेंगे कि इस से पहले तो कभी जन्मदिन... नहीं मनाया..."

"तो ऐसा करें, विवाह की वर्षगांठ ही मना लें."

"अजीब आदमी हो. इस में भी तो लोग वही पूछेंगे."

"पूछने दो," हम ने चिढ़ कर कहा, "कह देंगे, हर साल गुपचुप मना लिया करते थे, अब यह स्वार्थ लगता है कि दोस्तों को खबर तक न दें. अब सब शामिल हुआ करेंगे."

"लेकिन फरवरी तो कब की बीत गई. अब अगले साल."

"अजी, किस बेवकूफ को हमारी शादी की तारीख याद होगी. फरवरी में नहीं, जुलाई में की शादी हम ने, किसी के बाप का क्या इजारा? फिर, कोर्टशिप तो हम ने जुलाई में ही शुरू की थी. आप के नयन बाण से तो हम जुलाई में ही घायल हुए थे, फिर आप की और आप के पूज्य पिताजी की खुशामद करतेकरते मनातेमनाते, हमें जुलाई से फरवरी तक खींचना पड़ा था. तब आप को अपने घर ला पाए."

"तो मना लो," वह फिर हंसने लगीं, "कार्ड पर क्या छपवाओगे, बारहवीं?"

"नहीं, बस, विवाह की वर्षगांठ."

दूसरे दिन से ही हम दौड़धूप में लग गए. एक प्रेस में जा कर एक सुंदर कार्ड छपवाया. तारीख रखी दस दिन बाद जुलाई की. हम ने सिर्फ 50 कार्ड छपवा लगभग 40 कार्ड शहर और बाहर के लो को डाक से भेजे. कुछ निकटस्थ मि पड़ोसियों को दिए. सोचा, इस बार सफल मिली तो अगली बार जिन से दुआसलाम है, उन सब को बुलाएंगे.

फिर देखेंगे, कैसे हमें बारबार बुला दो मिठाई और जरा से नमकीन के साथ कप चाय पिला कर कीमती उपहार व करने वालों के मिजाज कैसे दुरुस्त होते

15 जुलाई को सुबह से ही हम घर सफाई में जुट गए. खानेपीने के सामान इंतजाम किया, घर में जो चीजें बनानी उन के लिए सामान लाए. हम चाहते थे लोगों को बता दें कि दावत किसे कहते पार्टी कैसे दी जाती है. ऐसी चीजें खिलाने मनसूबे गांठ रहे थे कि लोग बरबस ता करने लगें.

पाक विद्या की पुस्तकें उलटपुलट व्यंजन चुने गए. फ्रेंच, कटलेट, रशि सलाद, मीठे व नमकीन समोसे, काजू बरफी, साबूत भिंडी का चटपटा, ख अचार, मटर वाले स्वादिष्ट आलू चाप, पु की चटनी और खीर. पुडिंग से अच्छी खीर प्रतीत होती है.

बाहर से लाए सामान में केक, रसम और नमकीन चना कुरमुरा. बरफी बाह लेनी पड़ी. सैकड़ों रुपए हमारे खर्च हो सिर्फ बरफी ही 32 रुपए किलो मिली.

श्रीमतीजी की छोटी बहन भी ह बंटाने आ पहुंचीं. उन्हें भी अपनी पाक का चमत्कार दिखाना था, सो कस्टर्ड लाना पड़ा. केले की स्वादिष्ट ब ट्रायफिल भी मेनु में जुड़ गई.

दोनों बहनें रसोई में व्यस्त रहीं, ह बैठक सजा ली. गुब्बारे टांगे, फूलों गुलदस्ते सजाए, सोफों के खोल, परदे बदले और सारा घर दुलहन की तरह दिया.

दिल में बढ़ता हुआ
सन्नाटा है, खामोशी है,
रात जागे मेरी
आंखों में सवेरा देखे.
—सलीम अश्क
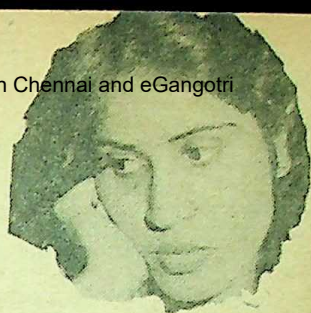
चार बजे रसोई से आधी सरकार दौड़ी आईं,

"जीजाजी! आप ब्रेड तो लाए ही नहीं."

"ब्रेड का क्या होगा, भई? क्या टोस्ट खिलाओगी?"

"इतना भी नहीं जानते आप?" बड़ीबड़ी आंखें और चौड़ी की उन्होंनें, "ब्रेड के चूरे के बिना चाप किस में लपेट कर बनेंगे?"

"अच्छा भई, अच्छा. मंगाता हूं, लेकिन एक अर्ज है हमारी."

"वह क्या?"

"आप मेहमानों के सामने कृपया आंखें यों बड़ी कर उन्हें न देखेंगी, नहीं तो वे बेचारे खानापीना भूल कर बेहोश भी हो सकते हैं."

"धत, जीजाजी, आप तो मजाक करने लगे." यह कह कर आधी सरकार भीतर भाग गईं.

हम ने बाहर झाड़ू लगा रहे नौकर को कहा कि वह हाथ धो कर दो ब्रेड खरीद लाए. उसे पैसे दे कर खुद रंगीन मोमबत्तियां सजाने लगे.

सात बजे से लोग आने शुरू हुए. हमारे दफ्तर के मित्र, सहकर्मी, बास से ले कर चपरासी तक आए. शहर, महल्ले के निमंत्रित लोगों में अधिकतर आ पहुंचे. जो लोग नहीं आए, उन के नाम हम ने सावधानी से दिमाग में नोट कर लिए. तय कर लिया कि उन के यहां हम भी नहीं जाएंगे.

श्रीमतीजी की सहेलियां भी अपनी पलटनों सहित आ पहुंची. स्त्रियों की बैठक जमी सोने के कमरे में.

हमारा हाथ बंटाने के लिए एकदो घनिष्ठ मित्र और पड़ोसी तो थे ही, पर हमारे हाथपैर फूलने लगे. निमंत्रण भेजा था लगभग 50 आदमियों को, लोग सब मिला कर आ गए लगभग सत्तर. हमें घबराहट हुई, खानेपीने में कहीं कमी न पड़ जाए.

मौका निकाल कर श्रीमतीजी से बात की तो उन की बुद्धिमानी का कायल होना पड़ा. उन्होंने पहले से ठीक अंदाजा लगा कर दूने के लगभग लोगों का प्रबंध कर रखा था. हमें कुछ इतमीनान हुआ.

मेज पर उपहारों के ढेर लग गए. हम उन्हें देखदेख कर खुश हो रहे थे. इतने दिन शादी की वर्षगांठ न मनाने का हमें अफसोस भी होने लगा.

पार्टी बहुत सफल रही. लोगों ने खूब तारीफें कर के खाया. नाश्ता क्या, भरपेट खाया. बनाना ट्रायफिल, बरफी, कटलेट और खीर की बड़ी प्रशंसा हुई.

जब खाने वालों के पेट फटने के लक्षण दीखने लगे और उन की नीयत में फर्क आता नहीं दीखा तो हम ने झटपट चाय चला दी.

लोग बारंबार भीतर से आती डकारों की रसीद हमें देते, यह शिकायत करने लगे कि हम ने बहुत खिला दिया. कई मित्रों ने मजाक भी किया कि हमें इतने दिन चुप रहने के बाद अब विवाह की वर्षगांठ की याद आई है. उन्हें वही तय किया पेटेंट जवाब दे कर हम समझाते रहे.

धीरेधीरे जब साढ़े नौदस बजे लोग गए तो हम तीनों बैठक में जमा हुए.

"वाह, उपहार तो बहुत आए हैं," आधी सरकार बोलीं.

"खर्च कितना किया है हम ने, सो भी

देख लीजिए," हम थोक पर बैठे बोले, "यह पार्टी इन लोगों को याद रहेगी."

"खोलिए न," उन्होंने जिद की, और सब से बड़ा बंडल उठा कर खोलने को दिया. वह था दफ्तर वालों की तरफ से. चिट लगी थी–"कार्यालय के सहकर्मियों की ओर से सप्रेम भेंट."

उसे खोलने लगे तो आधी सरकार ने उत्सुकता से कहा, "बंडल तो बहुत बड़ा है, पता नहीं, क्या होगा. होगी कोई कीमती चीज."

"लेकिन फीते काट कर खोलते ही तबीयत पर ओस पड़ गई. एक साथ लपेटे हुए रंगबिरंगें फूलों के दरजन भर गुलदस्ते. हर गुलदस्ते के साथ देने वाले के नाम की चिट.

दोनों बहनें हंसने लगीं. हम ने कुढ़ कर कहा, "बदमाशों ने दफ्तर के बाहर लगे फूल ही तोड़ लिए, इन पर एक पैसा भी खर्च नहीं किया."

एक खूबसूरत से पैकेट को उठा कर श्रीमतीजी ने कहा, "यह मेरी सहेली उषा लाई है."

आधी सरकार ने झपट कर उसे खोल डाला. दो पाकेट बुक्स निकलीं–'रूप शृंगार' और 'युवावस्था के बाद भी सुंदर, स्वस्थ कैसे रहें?'

श्रीमतीजी का पारा गरम हो गया, "देखो तो जरा उस चुडैल को. समझती है युवावस्था उसी पर सवार है और सब बूढ़े हो गए हैं. बताऊंगी उसे."

एक बंडल भारी और देखने में सुंदर था. उसे खोलने पर एक रंगीन मिट्टी की कलात्मक सुराही निकली.

"है तो सुंदर चीज," हम ने तारीफ की, "मेरा दोस्त राजेंद्र लाया है."

"खाक सुंदर है," उन्होंने ताना कसा, "बाजार में आठनौ रुपए में मिलती है, जितनी चाहे खरीद लो."

"भई, कीमत से क्या? उपयोग और कलात्मकता..."

"वह आप ही को मुबारक हो."

इसी तरह किसी ने दरजन भर रूमाल दिए. किसी ने कंघी का सेट. ज्यादातर लोगों ने सस्ते पाकेट बुक्स दिए, घरेलू और गृह विज्ञान से संबंधित विषयों पर. सब से अक्लमंदी दिखाई श्रीमतीजी की सहेलियों ने. बड़े सस्ते में काम चला लिया. हमारे बास का उपहार उन्हें पसंद आया. नकली सोने का हार व इयर रिंग सेट. मूल्य खुरचा हुआ था पर बहुत अच्छी चीज थी और सस्ती भी नहीं.

सारा सामान कुल दो ढाई सौ से नीचे का ही रहा होगा और पार्टी पर हमारे व्यय हुए सात सौ.

सब से अधिक उत्सुकता थी, हमें हरेंद्र का उपहार देखने की. अभी दस दिन हुए, उन्हें हम लोग 72 रुपए का उपहार आए थे. उन का पैकेट जरा छोटा ही था.

आधी सरकार ने अपनी नाक सिकोड़ी, "जीजाजी, यह क्या है?"

"भई, छोटा है तो कीमती बहुत होगा," हम ने कहा.

श्रीमतीजी ने बेसब्री के साथ कहा, "खोलो भी, देखें, हरेंद्रजी क्या लाए हैं."

"मैं शर्त लगाती हूं," आधी सरकार ने कहा, "इस में अंगूठी होगी या और कोई कीमती गहना."

खोला तो जो चीज निकली, उसे देखते ही हम पर हंसी का वह दौरा पड़ा कि क्या कहें.

पैकेट में कई प्रदेशों की लाटरियों के लगभग 15 टिकट थे. कीमत मुबलिग 2[illegible] रुपए. लाटरियों के प्रथम पुरस्कारों का कुल योग एक करोड 20 लाख रुपए.

श्रीमतीजी को, सेंट पर व्यय किए रुपए अब कसकने लगे, बोलीं, "हम ने उन्हें 7[illegible] रुपए का सेंट दिया और..."

"उपहारों में भावना देखते हैं, रुपए नहीं," हम ने मजाक से कहा, "और ये तो एक करोड़ 20 लाख हैं. शायद कोई एक टिकट निकल ही आए."

अब हमें लाटरियां खुलने के दिनों की प्रतीक्षा है.

(पृष्ठ 34 से आगे)

यदि दूसरा गुर्दा भी खराब हो गया तो मुझे या तो शेष जीवन में डायलिसिस करवाते रहना पड़ेगा या गुर्दा तलाश करना पड़ेगा. लेकिन मैं ऐसी सावधानियां वरत सकता हूं जिस में मेरा गुर्दा खराब न हो और शेष जीवन एक गुर्दे से ही पूरा कर लूं. आरती न तो जीवन भर डायलिसिस करवा सकेगी और न ही वह इतना धन एकत्र कर पाएगी कि गुर्दा प्राप्त कर सके, जब कि मैं दोनों चीजें प्राप्त कर सकता हूं." डा. अतुल डा. श्रीकांत से टेलीफोन पर बात कर रहा था. डा. श्रीकांत अतुल का अनन्य मित्र था तथा उस का अपना नर्सिंग होम भी था.

"तुम उसे एक गुर्दा खरीद कर भी तो दे सकते हो," डा. श्रीकांत बोला.

"तुम आरती को नहीं जानते, वह बहुत स्वाभिमानी है. वह आर्थिक सहायता नहीं लेगी और मैं भी ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहता जिस के फलस्वरूप वह जीवन भर मेरा ऋण चुकाने के बारे में ही सोचती रहे."

"तो तुम्हारा यह अंतिम फैसला है?" डा श्रीकांत बोला, "अच्छा, यह बतलाओ इस फैसले के पीछे कोई प्यार का चक्कर तो नहीं?"

"ऐसा कुछ नहीं है, वैसे हम लोग कब तक आएं? मैं ने सब परीक्षण करवा लिए हैं," अतुल ने कहा.

"तुम किसी समय भी आ सकते हो. हां, आने से पहले टेलीफोन कर देना. शालू को लाना मत भूलना."

"शालू तो दार्जिलिंग में है, तुम्हें याद तो होगा कि अब उस की मां से मेरा कोई-नाता नहीं रहा है," अतुल बोला.

"हां, याद आया." और यह कह कर श्रीकांत ने टेलीफोन रख दिया.

"आरतीजी, अब आप बिलकुल ठीक हैं. बस, कुछ परहेज करने होंगे," डा श्रीकांत बोला. "बहुतबहुत धन्यवाद," आरती ने मुसकरा कर कहा. "मुझे धन्यवाद मत दीजिए. इस के पात्र तो डा़ अतुल ही हैं," डा. श्रीकांत ने कहा, आरती 20 दिन पहले बंबई आई थी, जहां उस के दोनों गुर्दे निकाल दिए गए थे और डाक्टर अतुल का एक गुर्दा उस के लगा दिया गया था. डाक्टर अतुल और आरती दोनों ही अब स्वस्थ थे.

"अतुल, मैं तुम्हारा उपकार जीवन भर नहीं भूलूंगी. यदि मैं तुम्हारे किसी काम आ सकती तो..." आरती आंखों में आंसू भर के लगभग भर्राए शब्दों में बोली.

"आरती, मैं उपकार की बात नहीं करता, वैसे मेरी एक समस्या है, शायद तुम और मां उस का हल खोज सको," अतुल बोला.

"कैसी समस्या?" आरती ने जिज्ञासा से पूछा.

"मेरी एक बेटी है—शालू, उस की मां से मेरा नाता टूट चुका है. अभी तो वह दार्जिलिंग में पढ़ रही है, लेकिन मैं उसे अपने पास रखना चाहता हूं..." अतुल अपनी बात पूरी करतेकरते रुक गया.

"हां...हां, बोलो, तुम क्या चाहते हो?" आरती ने पूछा.

"मुझे एक महिला की आवश्यकता है जो मेरे घर और शालू की देखभाल कर सके."

"तुम्हारी देखभाल नहीं?" आरती हंस कर बोली, "फिर शादी क्यों नहीं कर लेते?"

"मैं दोबारा शादी के चक्कर में नहीं पड़ना चाहता."

"तो मतलब यह है कि तुम्हें पश्चिमी देशों की भांति एक स्त्री मित्र चाहिए." फिर कुछ क्षण तक चुप रह कर वह बोली, "ठीक है, अगर तुम चाहो तो इस के लिए मैं अपनी सेवाएं देने को तैयार हूं."

"आरती, मुझे खुशी है कि तुम ने मेरी समस्या हल कर दी. वैसे मैं तुम्हें आश्वासन देता हूं कि मैं तुम्हें किसी बंधन में नहीं रखूंगा, जब चाहोगी वापस लौट सकोगी," अतुल बोला.

"लेकिन मैं तुम्हें छोड़ कर अब कहां जाऊंगी?" आरती शरमा कर बोली. ●

हस्तलिखित अखबार

शासकीय महाविद्यालय महू में छात्र हस्तलिखित अखबार निकालते हैं. सन 1974 में यह अखबार, एक छात्र प्रकाश हिंदुस्तानी द्वारा शुरू किया गया था, जिस में राष्ट्रीय सेवा योजना के समाचार होते थे. इस अखबार को तैयार करने में छात्र काफी मेहनत करते हैं. इस में छात्रों की रचनाएं, महाविद्यालय एवं राष्ट्रीय सेवा योजना की गतिविधियों की खबरें होती हैं.

—दिनेश सोलंकी
वि. वि. प्र.

राजनीतिक सरगर्मियां

दिल्ली विश्वविद्यालय में राजनीतिक सरगर्मियां विश्वविद्यालय खुलने से पूर्व ही शुरू हो गई थीं. अनेक राजनीतिक छात्र संगठनों ने अपनेआप को पुनर्गठित किया. नए सिरे से बैठकें कीं तथा अपने कार्यकर्ताओं और सदस्यों को भावी कार्यक्रम की सूचना दी. समयसमय पर वक्तव्य दिए ताकि छात्रों को अनुमान हो सके कि वे अब भी सक्रिय हैं.

कुछ कालिजों में 'परिचय सम्मेलन' द्वारा आपस में परिचय कराया गया.

केंद्रीय सरकार 28 संगठनों पर सरकार की अनुमति के बिना विदेशी धन प्राप्त करने पर रोक लगा देने के कारण दिल्ली विश्वविद्यालय के कुछ संगठन प्रभावित हुए, जिन में इंडियन यूथ कांग्रेस, इंदिरा कांग्रेस का छात्र संगठन—नेशनल स्टूडेंट्स यूनियन आफ इंडिया और शरद पवार वाली जनता पार्टी का युवा संगठन—जनता युवा मोर्चा शामिल हैं.

दिल्ली विश्वविद्यालय के परीक्षा विभाग में धांधली और अव्यवस्था व्याप्त है.
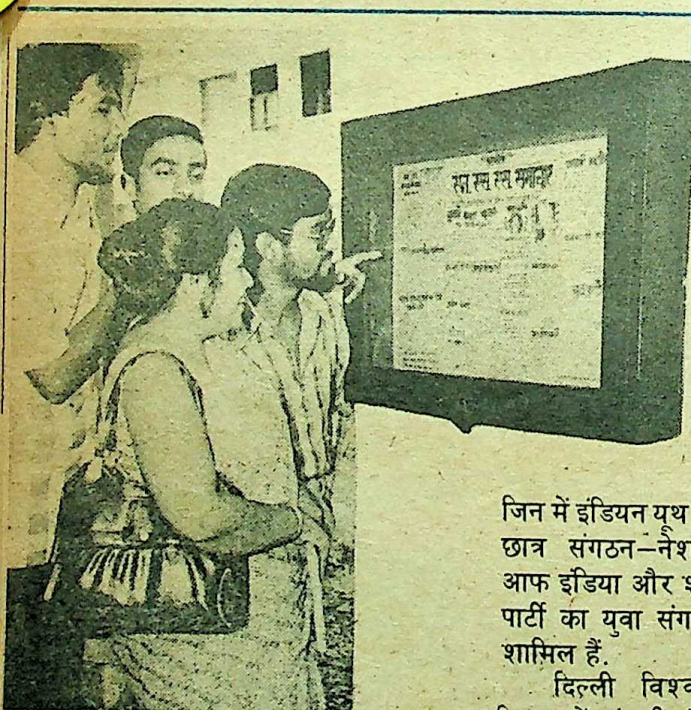
हस्तलिखित अखबार का अवलोकन करते हुए दर्शक.

यह बात उस समय खुल कर सामने आई कि जब एल.एल.बी. के एक छात्र ने चार पेपर दिए जब कि परिणाम पांचों का घोषित हुआ.

उत्तर पुस्तिकाओं में नए उत्तर लिखे जाने के कुछ मामले भी सामने आए.

चुनाव का असर रंग लाने लगा है. 'स्वागत कार्ड' से 'पोस्टर' फिर 'बैनर' उस के बाद कालिजों को रंगने का कार्यक्रम चलने लगा है. दीवारें खराब कर के नए छात्रों का कितना 'हार्दिक स्वागत' हो सकता है, यह कहा नहीं जा सकता, लेकिन इस से यह अहसास जरूर होने लगा है हर रोज मीटिंग, वक्तव्य, छात्र कार्यकर्ताओं का दलबदल, सीट की भागदौड़, घड़ियाली आंसू आदि निश्चय ही राजनीतिबाजों की देन हैं. जो परदे के पीछे यह सब खेल खेल रहे हैं.

—अशोक बजाज
वि.वि.प्र.

प्रदीपकुमार राय चौधरी द्वारा निर्देशित नाटक 'कर्ज' का एक दृश्य

'साहित्य वारिधि' की मानद उपाधि लेते हुए कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर.'

दीक्षांत समारोह

मेरठ विश्वविद्यालय ने इस वर्ष के दीक्षांत समारोह में हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' को 'साहित्य वारिधि' की मानद उपाधि से सम्मानित किया.

प्रभाकरजी ने लघु कथा, संस्मरण, रेखाचित्र, डारी वृत्त, ललित निबंध आदि विभिन्न विधाओं में लेखनी चलाई व अनेक उपशैलियों का निर्माण किया है. इसी लिए वह 'शैलियों के शैलीकार' कहे जाते हैं. अभी

तक उन की 15 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं, कई प्रकाशित होने वाली हैं.

—विजेश जोशी
वि.वि.प्र.

प्रदीपकुमार राय चौधरी

रंगमंच

प्रदीपकुमार राय चौधरी रंगमंच के क्षेत्र में स्वतंत्र रूप से निर्देशन करने वाले कम उम्र के कलाकार हैं. आप निर्देशन के अलावा प्रकाश संचालन, दृश्य परिकल्पना, मंच परिकल्पना आदि में भी कुशल हैं.

श्री राय चौधरी के द्वारा निर्देशित नाटकों में सब से पहला नाटक था—'देखा अनदेखा'. इसी से इन्होंने कलात्मक व स्तरीय निर्देशन के क्षेत्र में स्थान बना लिया. नाटक 'देखा अनदेखा' के साथ 'कर्ज' नाटक को लखनऊ समारोह में प्रस्तुत किया, जिस में इन के नाटक अच्छे नाटकों में प्रथम रहे.

पिछले दिनों उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी के नाट्य समारोह का आयोजन हुआ जिस में लखनऊ की ओर से नाट्य संस्था खोज का नाटक 'इकतारे की आंख' का निर्देशन राय चौधरी ने किया.

इन के द्वारा निर्देशित नाटक 'कर्ज' को आकाशवाणी लखनऊ द्वारा भी प्रसारित किया गया.

—राकेश चंद्र मिश्र
वि. वि. प्र.

बिना धुएं का चूल्हा

थापर बहुतकनीकी संस्था, पटियाला (थापर पौलिटेक्निक, पटियाला) के कम्युनिटी विंग ने दो ऐसे धुएं रहित चूल्हे तैयार किए हैं जिन में आम चूल्हों की कमियां दूर करने की काफी हद तक कोशिश की गई है.

इन के धुआं रहित होने के कारण मकान के गंदा होने या मनुष्य के स्वास्थ्य
हानि पहुंचने का खतरा नहीं रहता. इन चूल्
के प्रयोग से 30 से 50 प्रतिशत ईंधन और
से 20 प्रतिशत समय की बचत होती है. इन
पैदा होने वाले तापमान का अधिक से अधि
उपयोग किया जाता है और इसलिए इन
खाना कम समय में पकाया जा सकता है. इ
चूल्हों की एक और विशेषता यह है कि ए
समय में एक चूल्हे पर दो पकवान बनाए
सकते हैं.

'कम्युनिटी विंग' के इंचार्ज श्री राज
(कार्यकारी अभियंता) से प्राप्त जानकारी
अनुसार भारत के 125 गांवों में अब तक
प्रकार के 1,341 चूल्हे बनाए जा चुके हैं.
के बनाए जाने की मांग बराबर बनी हुई
मेरठ से ही 'दौराला शुगर वर्क्स' व 'मवा
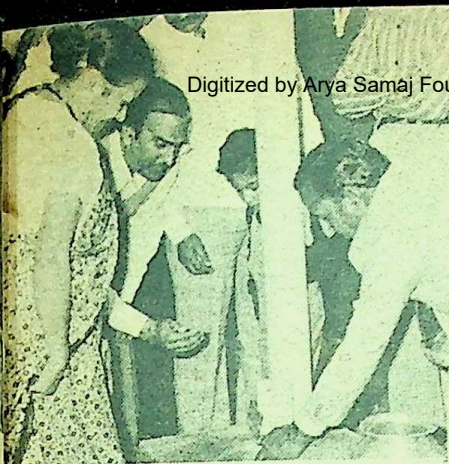
केंद्रीय शिक्षा मंत्री शीला कौल, धुआं रहित चूल्हे के बारे में जानकारी लेते हुए.

'शुगर वर्क्स' से ऐसे 450 चूल्हों की मांग की जा रही है तथा दिल्ली, फ़रीदाबाद और कई बड़े-बड़े शहरों में भी ऐसे चूल्हों की मांग है.

इस चूल्हे को बनाने के लिए नीचे लिखी चीजों की जरूरत होती है:

(क) बैठ कर प्रयोग किया जाने वाला चूल्हा :

1. ईंटें–लगभग 80

2. 25 सेंटीमीटर लंबी और 5 मिलीमीटर व्यास वाली नर्म लोहे की छड़ें-10.

3. चिमनी– 10 सेंटीमीटर व्यास वाली लगभग दो मीटर लंबी.

4. मिट्टी का गारा– जरूरत के अनुसार.

(ख) खड़े हो कर प्रयोग किए जाने वाले चूल्हे के लिए 120 ईंटों की जरूरत होती है, जिस से आधार बनाया जाता है. बाकी सब उन्हीं चीजों की जरूरत होती है जो बैठ कर प्रयोग में लाए जाने वाले चूल्हे के लिए चाहिए. इन चूल्हों में चिमनी का लगाना बहुत जरूरी समझा गया है.

किसी गांव से चार चूल्हे इकट्ठे बनवाने की मांग पर उन के लिए राज (मकान बनाने वाला कारीगर) की सेवा संस्था द्वारा मुफ्त उपलब्ध करवाई जाती है. इस में पेश आने वाली कठिनाई यह है कि गांव के लोग डरते हैं कि कहीं चूल्हा बनाने के बाद सरकार उन से कर लेना शुरू न कर दे.

विस्तृत जानकारी के लिए प्रधानाचार्य, थापर पौलिटैक्निक, पटियाला से संपर्क स्थापित किया जा सकता है.

—कैलाश गर्ग
वि.वि.प्र.

नई प्रतिभाएं

मेरठ विश्वविद्यालय के सहारनपुर स्थित जे.वी. जैन महाविद्यालय की बी.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा मीनू शर्मा इस वर्ष मेरठ विश्वविद्यालय की खेलकूद प्रतियोगिता में उभर कर सामने आई है. इस ने 200 मीटर दौड़ व 200 मीटर बाधा दौड़ में सभी पुराने कीर्तिमानों को तोड़ दिया है.

19 वर्षीया मीनू शर्मा को बचपन से खेलों में रुचि रही है. इस कारण वह निरंतर प्रगति करती रही और उस ने अनेक बार जिला, मंडलीय एवं प्रांतीय स्तर पर कई पुरस्कार प्राप्त किए.

—विजेश
वि. वि. प्र.

पुरस्कार प्राप्त करते हुए मीनू शर्मा.

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए म. : मनोरंजक/देख लें नि. :निर्देशक
स. : समय काटिए/चलताऊ अ. : अपव्यय/समय की बरबादी मु. पा. : मुख्य पा[त्र]

डायल 100 : हीरों की चोरी की मारधाड़ से भरपूर सामान्य अपराध कथा. हीरे गिटार में छिपा दिए जाते हैं. बाद में गिटार की खोज की कहानी बन जाती है. **नि.**: रामनाथन. **मु.पा.**: अशोककुमार, बिंदिया, विनोद मेहरा, रणजीत. **अ.**

मेहंदी रंग लाएगी : एक युवती की कहानी जो अपने पति को छोड़ कर दूसरी स्त्री का घर बसाती है और बाद में एक अन्य लड़की के लिए अपने प्रेम का भी बलिदान कर देती है. तर्कहीन कहानी. **नि.**: दासारी नारायण राव. **मु.पा.**: अशोककुमार, जितेंद्र, रेखा, अनिताराज, अरुणा ईरानी. **अ.**

बगावत : राजसिहासन का उत्तराधिकारी अमर एक कबीले में पलता है. दुष्ट विक्रम को सिंहासन से उतारने और राजकुमारी पद्मा से प्रेम की बेसिरपैर की कहानी. सभी कलाकार फीके. फिल्म हर दृष्टि से ऊबाऊ. **नि.**: रामानंद सागर. **मु.पा.**: धर्मेंद्र, हेमा, अमजद, रीना राय, सुजीतकुमार. **अ.**

खुद्दार : गरीब टैक्सी ड्राइवर छोटू उस्ताद परिश्रम से भाई को पढ़ाता है. मैरी से प्रेम करता है और खलनायक बंसी के षड्यंत्रों का मुकाबला करता है. फिल्म में सभी रस भरने की कोशिश की गई है. **नि.**: रवि टंडन, **मु.पा.**: अमिताभ, संजीवकुमार, परवीन बाबी, विनोद मेहरा, तनूजा, बिंदिया, महमूद. **स.**

मेहरबानी : धर्मेंद्र के परिवार द्वारा डूबे गए सितारों को ले कर बनी इस फिल्म में न तो कोई रोचकता है और न ही नवीनता. हर दृष्टि से फिल्म इतनी लचर है कि सिर्फ बोरियत पैदा करती है. **नि.**: अजीतसिंह, **मु.पा.**: महेंद्र संधु, सारिका, नरेंद्रनाथ. **अ.**

बेगुनाह कैदी : अपराधी के हृदय परिवर्तन की पुरानी जानीपहचानी विषय वस्तु के आधार पर बनी इस फिल्म में वही पुराने मसाले हैं, जिन्हें दर्शक कईकई बार ठुकरा चुके हैं. **नि.**: वी.के. सोबती, **मु.पा.**: राकेश रोशन, आरती शक्ति कपूर. **अ.**

पांच कैदी : अपराधी लोगों को ले कर उन से कानून की रक्षा करवाने की पुरानी कहानी इस फिल्म में भी है. कुछ घटनाएं अच्छा असर डालती हैं. वैसे फिल्म सामान्य ही है. **नि.**: शिबू मित्रा, **मु.पा.**: गिरीश करनाड, अमजद, जरीना, **स.**

घमंडी : दौलत के नशे में अमीर पत्नी का पति के घर से चला जाना और बाद में आंखें खुल जाने पर वापस आ जाना—इस फिल्म का विषय है. लेकिन बेहद घटिया ढंग से इसे फिल्माया गया है. **नि.**: रमेश बेदी, **मु.पा.**: मिथुन, सारिका, रंजीत. **अ.**

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों [पर] चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज [में] एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधि[क] महत्त्व नहीं है. **नि.** : सागर सरहदी, **मु.पा.** : स्मि[ता] पाटिल, सुप्रिया पाठक, सुलभा देशपांडे, नसीरुद्दीन शा[ह], फारुख शेख, **म.**

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने [का] नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शा[दी] कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का [पति] शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लि[ए] बलिदान हो जाता है. **नि.** : नरेंद्र बेदी, **मु.पा.** : विनो[द] खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, करण दीवान. **अ.**

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध [की] कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता [की] हत्या का बदला लेता है. **नि.** : रामा राव, **मु.पा.** : धर्में[द्र], रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरी[श] पुरी, शारदा. **अ.**

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जा[ता]. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. **नि.** अनिल गांगुली, **मु.पा.** : राखी, परीक्षित साहनी, विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. **स.**

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलेक्जें[डर] ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई [गई] एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार [हो] कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एक[एक] कर के सब से बदला लेता है. **नि.** : पाछी, **मु.पा.** : नी[तू] मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश. **अ.**

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को [ले] कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकला[ंग] एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथिया[ने] वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. **नि.**: सी.पी. दीक्षित, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. **अ.**

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरो[इन] बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह [मन का] प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जा[ती] है. कुछ दिलचस्प प्रसंग होने के बाद भी यह एक ...

नि. : मेराज, मु.पा. : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल. स.

आधारशिला : क्षत्रि[illegible] युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अशोक आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.**

शौकीन : एक कामेडी फिल्म जिस में तीन बूढ़े मौज करने के लिए हमेशा लड़कियों की तलाश में रहते हैं. लेकिन बाद में उन्हें अहसास होता है कि उन की उम्र काफी आगे निकल चुकी है. नि. : बासु चटर्जी, मु.पा. : मिथुन, रति, उत्पल दत्त, अवतारकृष्ण हंगल, अशोककुमार. **म.**

बदले की आग : भाईबहनों का अपने परिवार से बिछुड़ना, बदला लेना और डाकुओं वाले प्रसंगों से भरपूर इस फिल्म में कदमकदम पर बेतुकी हिंसा है, कहानी कहीं भी नहीं है. नि. : राजकुमार कोहली, मु.पा. : धर्मेंद्र, सुनील दत्त, जितेंद्र, रीना, स्मिता. **अ.**

अंगूर : विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'कामेडी आफ एरर्ज' पर आधारित एक बेहतरीन हास्य फिल्म जिस में दो जुड़वां जोड़ों की हरकतें गुदगुदा जाती हैं. काफी समय बाद बनी एक अच्छी फिल्म, जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है. नि.: गुलजार, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, दीप्ति, देवेन वर्मा. **म.**

दासी : अंधविश्वासों का शिकार हो नायिका को अंधे नायक से विवाह करना पड़ जाता है. फिल्म की घटनाएं बेतुके प्रेम त्रिकोण की वजह से असहज हो जाती हैं, गीतसंगीत की दृष्टि से भी कमजोर फिल्म. **नि.** : राज खोसला, **मु.पा.**: संजीव, मौसमी, रेखा, विक्रम. **अ.**

हीरों का चोर : आम स्टंट फिल्मों के जानेपहचाने ढर्रे पर बनी फिल्म जिस में फार्मूले तो तमाम हैं लेकिन कहानी कोई नहीं. अभिनय व तकनीकी हिसाब से फिल्म सामान्य है. **नि.**: स.क. कपूर, **मु.पा.**: मिथुन, बिंदिया, अशोक. **अ.**

दिल का साथी दिल : कमला हासन की हिंदी में डब की गई चौथी फिल्म. 'बाबी' और 'जूली' की कहानियों के जोड़ से बनी कहानी. दोषपूर्ण डबिंग के कारण बेकार. **नि.**: शंकरन नायर, **मु.पा.**: जरीना बहाव, कमल हासन. **अ.**

तीसरी आंख : तीन भाइयों की कहानी. एक भाई बचपन में बिछुड़ जाता है और अंत में लाकेट की निशानी से मिलता है. आम फार्मूला फिल्म. **नि.**: सुबोध मुखर्जी, **मु.पा.**: धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत, नीतूसिंह, सारिका, राकेश रोशन, अमजद. **स.**

दो उस्ताद : 'दो चोर' और 'दो ठग' आदि की शैली पर बनी आम फार्मूला फिल्म. बेजान और उबाऊ फिल्म. **नि.**: एस.डी. नारंग, **मु.पा.**: शत्रुघ्न सिन्हा, रीना, डैनी, विक्रम, जगदीप, नाजनीन. **अ.**

अशांती : चोटी के कलाकारों को ले कर बनाई गई अपराध फिल्म. फिल्म में तीन नायक और तीन ही नायिकाएं हैं. सभी मिल कर राजा भीष्म बहादुरसिंह और [illegible] हैं. घटनाओं में गति. नि.: उमेश मेहरा, मु.पा.: राजेश खन्ना, जीनत, शबाना, परवीन बाबी, मिथुन, कंवलजीत, अमरीश पुरी. **स.**

नमकहलाल : एक सीधेसादे ग्रामीण की कहानी जो शहर में जा कर एक होटल मालिक की उस के मैनेजर के षड्यंत्रों से रक्षा करता है. अपराध फिल्म होते हुए भी हास्य का रोचक वातावरण छाया रहता है. **नि.**: प्रकाश मेहरा, **मु.पा.**: अमिताभ, शशि कपूर, वहीदा, परवीन बाबी, स्मिता पाटिल, ओम प्रकाश. **म.**

सवाल : अपराध जगत का बादशाह सेठ धनपतराय तस्करी और अवैध धंधों का बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित करता है, पर मकड़ी के जाले की तरह खुद ही उस में फंस कर रह जाता है. **नि.**: रमेश तलवाड़, **मु.पा.**: शशि कपूर, संजीवकुमार, वहीदा, रणधीर कपूर, पूनम ढिल्लों. **स.**

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोड़ी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डबिंग में काफी खराबियां हैं. **नि.**: के. बालाचंदर, **मु.पा.**: कमल हासन, रति. **अ.**

देश प्रेमी : देशभक्ति पर बनी बेहद सामान्य फिल्म जिस में दोहरी भूमिका में भी अमिताभ सामान्य लगता है. कलाकारों की भीड़ फिल्म में जुटा दी गई है, जो बिना किसी उद्देश्य के दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन देती है. **नि.**: मनमोहन देसाई, **मु.पा.**: अमिताभ, हेमा, उत्तम, शम्मी. **म.**

तुम्हारे बिना : तलाक के बाद पतिपत्नी के बीच पैदा हुए तनाव और उस से बच्चे पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर की सहज फिल्म. **नि.**: सत्येन बोस, **मु.पा.**: सुरेश ओबराय, स्वरूप संपत. **उ.**

बेमिसाल : दो मित्र डाक्टरों की कहानी. डाक्टर प्रशांत चतुर्वेदी धन के लालच में गर्भपात और अवैध काम करने लगता है. डाक्टर सुधीर उसे अपने त्याग द्वारा सीधे रास्ते पर लाता है. **नि.**: ऋषिकेश मुखर्जी, **मु.पा.**: अमिताभ, राखी, विनोद मेहरा, अरुणा ईरानी, शीतल. **म.**

जीवनधारा : 'तपस्या' फिल्म की भांति संगीता नौकरी कर के अपने भाईबहनों का पालनपोषण करती है. परिवार के लिए एक युवती के त्याग की मार्मिक कहानी. **नि.**: त. रामाराव, **मु.पा.**: रेखा, अमोल पालेकर, सिंपल कापड़िया, मधु कपूर, राकेश रोशन, कंवलजीत. **उ.**

प्यारा दोस्त : खजाने की खोज की ऊलजलूल फिल्म. असली कहानी को पीछे हटा कर अमजद खान अपनी भूमिका को तूल देता चला जाता है. **नि.**: इम्तियाज खान, **मु.पा.**: नसीरुद्दीन, रंजीता, अमजद, इम्तियाज खान. **अ.**

(पृष्ठ 97 से आगे)

दाल लगभग 30 मिनट में तथा सब्जियां लगभग 60 मिनट में उबल कर तैयार हो जाते हैं.

ग्रंथी ने बताया कि रोटियां भी गरम जल में डाल कर पकाई जाती हैं. चावल, दाल व सब्जी को बरतनों में भर कर गरम जल में रख देते हैं और वह सामान उबलपक कर तैयार हो जाता है. भाप से तैयार होने के कारण समस्त खाद्य पदार्थ सुपाच्य एवं सुस्वाद बनते हैं.

मणिकर्ण के गरम जल के चश्मों ने वहां के निवासियों को अनेक चिंताओं से मुक्त कर दिया है. मणिकर्ण का स्थानीय सधुक्कड़ी

असीम सौंदर्य का खजाना– रोहतांग दर्रा.

बोली में अर्थ है–'रोटी का पकना.' भीषण सर्दी का प्रकोप भी वहां के निवासियों को नहीं सालता. तपती चट्टानों के पास बने आवासगृहों में ओढ़ने के लिए लिहाफ व कंबल तक की आवश्यकता नहीं होती.

मणिकर्ण में प्रकृति का विचित्र विरोधाभास देखने को मिलता है. एक ओर है बर्फ की श्वेत चादर ओढ़े पर्वत जहां शीत ऋतु में जल भी जम जाता है और दूसरी ओर भाप उगलते हुए 97 डिगरी सेंटीग्रेड ताप के गरम जल के ये चश्मे जिन से चावलों का उबालना तो क्या पत्थर तक भी लाल पड़ जाते हैं.

दक्षिण के राज्यों से भी अनेक पर्य... वहां आते रहते हैं. निरंतर गहरे समुद्र... देखने वाले उन व्यक्तियों को हिमाच्छा... ऊंचे शिखर देख कर अपूर्व आनंद मिलता...

मणिकर्ण में गुरुद्वारे में ठह... तथा भोजन की अच्छी व्यवस्था है. यात्रियों... हर समय आते रहने के कारण वहां लंगर... अधिकांश समय तक अच्छा भोजन मि... जाता है. इस के अतिरिक्त लोक निर्मा... विभाग का आवासगृह भी उपलब्ध... पर्यटकों की संख्या बढ़ने के कारण वहां पर्यट... विकास निगम द्वारा एक भव्य आवास... निर्माणाधीन है. वहां कुछ अत्यंत साधार... स्तर के ढाबे भी हैं जिन में कामचलाऊ भोज... मिल जाता है.

कुल्लू मनाली क्षेत्र में गरम जल... अनेक कुंड हैं. कुल्लू से मनाली जाते सम... सड़क के किनारे पर ही कलात नामक स्था... में गरम जल का चश्मा है सूर्योदय से ले क... सायंकाल तक इस के गरम जल में स्ना... करने वालों की भीड़ लगी रहती है. मनाली... समीप वशिष्ठ आश्रम व श्रीराम मंदिर... प्रागंण में भी गरम जल के चश्मे हैं जिन... स्नानगृह बने हैं. इन में स्नान करने का लो... संवरण करना भी कठिन रहता है.

वसीयत

लेख • सिंधु गोयल

कब, क्यों, कहां और कैसे?
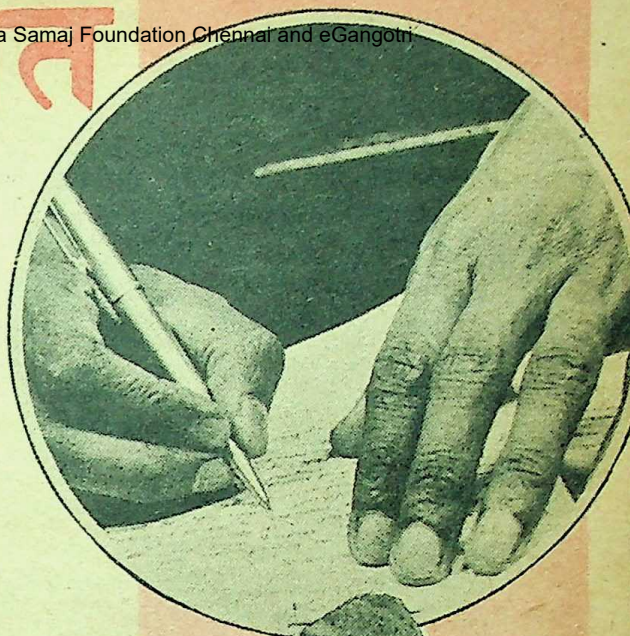
रायजादा साहब 65 वर्ष के होने पर भी एकदम स्वस्थ व चुस्त रहते थे और अकसर मजाक में कहा करते थे कि 100 बरस के होने पर वह एक और विवाह करेंगे.

पर एक माह पूर्व अखबार पढ़तेपढ़ते एकाएक उन की मृत्यु हो गई. बुढ़ापे में बच्चों की मेहरबानी के मुहताज न हो जाएं, इस विचार से उन्होंने बच्चों के नाम कुछ भी नहीं किया था. जमीन, मकान, दुकान, बैंक में जमा धन आदि सभी कुछ उन्हीं के नाम था. रायजादा साहब के तीन लड़के हैं. इन में से बड़ा लड़का बिहार में बड़ा अधिकारी है. दो-एक साल में दोएक दिन को ही पिता के पास आता रहा है, वह भी मात्र औपचारिकता के लिए.

छोटे दोनों लड़के दुकान करते हैं. वे ही पिता की सेवा भी करते रहे थे.

परसों वे दोनों लेखक के पास आए और सलाह मांगने लगे कि जब पिताजी हम दोनों के ही नाम सब कुछ करना चाहते थे, तो भी क्या बड़े भाई को कुछ मिलेगा?

चूंकि रायजादा साहब ने कोई वसीयतनामा नहीं लिखा था. अतः कानून इन लड़कों की कोई मदद नहीं कर सकता था.

बाद में इन दोनों लड़कों को जिला न्यायालय से उत्तराधिकार का प्रमाणपत्र लेना पड़ा जिस में परेशानी के साथसाथ समय व धन भी बहुत बरबाद हुआ.

आजकल अपने जीते जी लड़कों के नाम अपनी संपत्ति करना, अपने हाथ कटाने जैसा है. पुत्र चाहे कितने भी भले क्यों न हों. उन के सामने पल्ला झाड़ कर खड़े हो जाना कतई मुनसिब नहीं है, क्योंकि, पता नहीं उम्र कितनी लंबी हो, अतः अपनी जरूरतें पूरी करने के लिए व्यक्ति किसी का मुहताज न हो इस से अधिक सम्मानजनक व संतोषजनक बात क्या हो सकती है?

पर साथ ही, हर व्यक्ति को अपनी चल व अचल संपत्ति का, जिस को उसे हस्तांतरित करने का भी अधिकार है, अपने रहते हुए बंदोबस्त कर देना चाहिए और यह बंदोबस्त वसीयतनामे द्वारा किया जा सकता है.

प्रत्येक बालिग व्यक्ति अपने जीवनकाल में अपनी वसीयत लिख सकता है.

वसीयत स्टांप कागज पर नहीं लिखी जाती, क्योंकि वसीयत तभी प्रभावी होती है जब कि लिखने वाले की मृत्यु हो जाए. इसी लिए भारतीय स्टांप अधिनियम के अंतर्गत वसीयतनामे को स्टांप शुल्क से मुक्त रखा गया है.

व्यक्ति की चल या अचल संपत्ति भारत में (जम्मू कशमीर के अलावा) चाहे कहीं भी हो, वह देश के किसी भी सब रजिस्ट्रार कार्यालय में अपने वसीयतनामे को पंजीकृत करा सकता है.

यों तो वसीयतनामे का पंजीकरण कराना कानूनी रूप से जरूरी नहीं है, पर इस से वसीयतनामे की प्रामाणिकता में कोई संदेह नहीं रह जाता तथा वसीयतनामा विवादास्पद भी नहीं रहता है.

वसीयत करने का खर्च 100 रुप[ए से] कम ही पड़ता है. वसीयतनामा व्यक्ति [स्वयं] लिख सकता है या रजिस्ट्रार कार्यालय [के] किसी लाइसेंसशुदा वसीका नवीस से लिख[वा] सकता है, जो इस के लिए नाम मात्र [का] निर्धारित शुल्क ही लेते हैं.

खुले और सीलबंद वसीयतनामे

वसीयतनामे दो प्रकार के होते हैं: [एक] खुले व दूसरे सीलबंद. खुले वसीयतनामे [का] पंजीकरण किसी भी सब रजिस्ट्रार या [जि]ला रजिस्ट्रार के कार्यालय में हो सकता है. [खुला] वसीयतनामा वसीयतकर्ता स्वयं रजिस्ट्रार [के] सम्मुख पेश करता है. पेशी के [समय] रजिस्ट्रार वसीयतकर्ता से पंजीकरण करने [की] फीस लेता है. यह फीस असम में सब से [कम] आठ रुपए और उत्तर प्रदेश व मध्य प्रदेश [में] सब से ज्यादा 56 रुपए है.

इस के बाद रजिस्ट्रार वसीयतकर्ता [से] वसीयत तथा उस से स्वयं के बारे में वि[भिन्न] प्रश्न पूछता है और संतुष्ट होने पर कि [यह] वसीयत उसी व्यक्ति ने की है, वह व्य[क्ति] पागल या नाबालिग नहीं है, वह वसीयत[नामे] के प्रावधानों को समझ कर स्वीकार कर[ता] है, वसीयतनामे को पंजीकरण हेतु स्वी[कार] कर लेता है और तब बुक नंबर तीन में [उस] की वसीयत की हूबहू नकल की जाती है. [उस] पर पंजीकरण प्रमाणपत्र लिखा जाता है [और] फिर वसीयतनामा वसीयतकर्ता को वा[पस] कर दिया जाता है.

यहां यह उल्लेखनीय है कि जहां [अन्य] दस्तावेजों के लिए यह प्रावधान है कि [उन्हें] लिखने की तिथि से चार महीने के अंदर [सब] रजिस्ट्रार के समक्ष पंजीकरण हेतु पेश [कर] दिए जाने चाहिए, वहीं वसीयतनामे के [लिए] कोई अवधि निर्धारित नहीं है.

बुक नंबर तीन में पंजी[कृत] वसीयतनामा पूर्णतया गोपनीय दस्ता[वेज] माना जाता है व वसीयतकर्ता के जीवन[काल] में उस की नकल (प्रतिलिपि) केवल [उसी] व्यक्ति या उस के द्वारा अधिकृत [व्यक्ति]
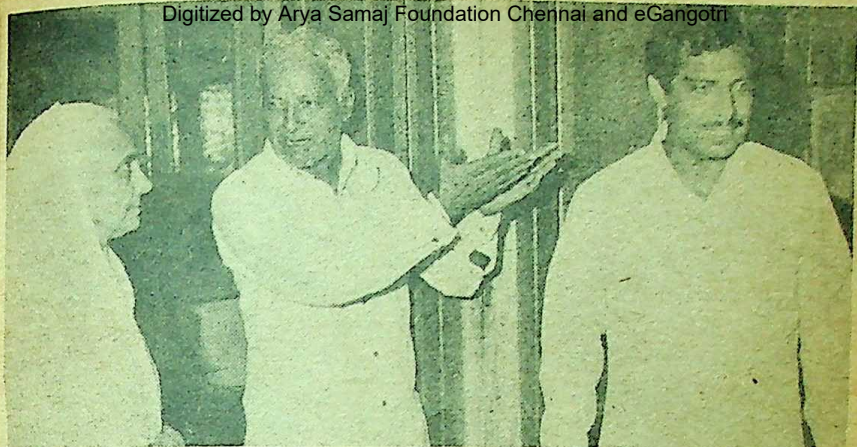
जीते जी अपनी संपत्ति अपनी संतानों के नाम कर देने पर व्यक्ति अक्सर उन की मेहरबानी के मुहताज हो जाते हैं.

व्यक्ति को ही मिल सकती हैं, पर वसीयतकर्ता की मृत्यु के पश्चात कोई भी व्यक्ति उस की नकल ले सकता है.

इस प्रकार की वसीयत करना उन व्यक्तियों के लिए उपयुक्त है जो खुल्लमखुल्ला अपनी संपत्ति का इंतजाम करना चाहते हैं और जिन के जीवन व सम्मान को इस से हानि पहुंचने की संभावना नहीं होती.

पर जब संपत्ति का बेटों में बराबर बंटवारा न हो रहा हो, गुप्त संपत्ति का प्रावधान हो, कुछ शर्त सहित प्रावधान हो या वसीयतकर्ता अपनी वसीयत पूर्ण रूप से गोपनीय रखना चाहता हो, तब सीलबंद वसीयत करना ही बेहतर है.

एक कागज पर ऐसी वसीयत को लिखने के बाद एक मजबूत लिफाफे में रख कर, लिफाफे में जहां पर भी जोड़ हों वहां सील लगा दी जाती हैं.

इन सीलों के लिए बेहतर तो यही होता है कि वसीयतकर्ता बाजार से अपने हस्ताक्षर की पीतल की सील बनवा ले और लिफाफे पर उसी को लगाए.

सीलबंद लिफाफे पर अपना नामपता, गवाहों के नामपते व जमा करने की तारीख लिख कर, उसे जिला रजिस्ट्रार (जो प्रायः अपर जिलाधीश भी होता है) को अग्निरोधक (फायर प्रूफ) बक्से में सुरक्षित रखने के लिए दे दिया जाता है.

यदि रजिस्ट्रार संतुष्ट है कि वसीयतनामा उसी व्यक्ति का है तो वह लिफाफा देने का समय, दिन, तारीख, महीना व वर्ष, साथ ही वसीयतकर्ता की पहचान करने वालों के नाम पते तथा सील पर यदि कुछ-पठनीय है तो उस का विवरण भी अपने कार्यालय की बुक नंबर पांच में दर्ज करा देगा व लिफाफे को अपने अग्निरोधक बाक्स में रख देगा.

बाद में यदि कभी भी वसीयतकर्ता अपने लिफाफे को निकालना चाहे तो वह स्वयं या अपने अधिकृत व्यक्ति के माध्यम से रजिस्ट्रार को लिखित प्रार्थनापत्र दे कर उसे निकाल सकता है.

वसीयतकर्ता की मृत्यु होने के पश्चात यदि कोई भी व्यक्ति वसीयतकर्ता द्वारा जमा किए गए वसीयत के लिफाफे को खोलने की प्रार्थना करता है, और रजिस्ट्रार उस से यदि संतुष्ट हो जाता है तो प्रार्थी की उपस्थिति में वह लिफाफा खोल कर वसीयतनामा निकालेगा, उसे बुक नंबर तीन में नकल

करवाएगा व उसे फिर जमा कर देगा. रजिस्ट्रार अपनी संतुष्टि के लिए प्रार्थी का बयान ले सकता है, उस से हलफनामा मांग सकता है व गवाहों को बुला सकता है.

सीलबंद वसीयत के एक बार खुलने पर अब कोई भी व्यक्ति उस वीसयतनामे की नकल ले सकता है.

सावधानियां

वसीयतनामा व्यक्ति चाहे स्वयं लिखे, या किसी वकील या वसीका नवीस से लिखवाए, उस में निम्नलिखित विवरण देना नहीं भूलना चाहिए:

1. अपना पूरा नाम, पिता का नाम, उम्र व पूरा पता.

2. वसीयत करने के कारण जैसे मृत्यु अनिश्चितता, खराब स्वास्थ्य, अधिक उम्र, झूठे दावेदारों को संपत्ति से दूर रखना, उत्तराधिकारियों में झगड़ा बचाने के लिए, आदि. एक वसीयतनामों में कितने ही क... लिखे जा सकते है.

3. संपत्ति का पूरा विवरण, जैसे, ज... के मामले में लंबाई, चौडाई, कुल क्षेत्र... उस की हद से लगी अन्य जमीनों आदि... विवरण, महल्ले का नाम, वग़ैरह

4. व्यक्ति जिसे संपत्ति देना चाहे... का नाम, पिता या पति का नाम, उम्र व... पता. उसे सपत्ति देने का का... जैसे‒प्रेमवश, सेवा भावना से प्रभावित... कर या किसी रिश्ते के तहत आदि.

5. यदि वसीयतकर्ता अपने बेटे, ... पत्नी आदि को संपत्ति न दे कर किसी गै... अन्य रिश्तेदार को दे तो ऐसा करने... विशिष्ट कारण भी लिखना चाहि... जैसे—बेटे कहने में नहीं हैं, बदचलन हैं, ... सेवा नहीं करती, आदि.

6. यह भी स्पष्ट रूप से लिखना चा... कि जब तक वसीयतकर्ता जिंदा है...

वसीयत लाइसेंस शुदा वजीका नवीस से भी लिखवाई जा सकती है. इस के लिए वह नाम... मात्र का निर्धारित शुल्क लेता है.

संपत्ति क... संपन्न है... उस के द्वा... मिलेगी.

7. ... व्यक्तियों... है.

8. ... जिस के प... व्यक्ति क...

9. ... वसीयतन... अंत में अ... कहलाती...

10. ... तहरीर व... चाहिए, ... अपने दस... दिया गया... पूरा नाम... चाहिए.

वसी... भी निरस्त... वसीयत ... अपनी पह... यह उस ...

वसि... शुल्क से ...

वसी... उस का ... पंजीकरण... जिन के ह...

इस... वसीयतना... शपथपत्र... अतिरिक्त... हकदार ... साक्षियों से... होने पर ... पंजीकृत ... मुक्ता

संपत्ति का पूर्णतया मालिक है व सर्वाधिकार संपन्न है तथा उस की मृत्यु के बाद ही संपत्ति उस के द्वारा नामजद किए गए व्यक्तियों को मिलेगी.

7. वसीयतकर्ता अपने द्वारा नामजद व्यक्तियों में संपत्ति का बंटवारा कर सकता है.

8. वसीयतकर्ता कोई शर्त रख सकता है जिस के पूरी होने या न होने पर संपत्ति अमुक व्यक्ति को मिले.

9. वसीयतकर्ता जिस तिथि को वसीयतनामे पर दस्तखत करे उस तिथि को अंत में अवश्य लिखे. यह तकमील की तारीख कहलाती है.

10. वसीयतकर्ता द्वारा वसीयतनामा तहरीर व तकमील करने के दो साक्षी होने चाहिए, जो वसीयतनामें पर इस आशय से अपने दस्तखत करें कि वसियतकर्ता द्वारा दिया गया विवरण सही है. इस पर उन का पूरा नाम, बल्दियत व पता भी लिखा होना चाहिए.

वसीयत का निरस्तीकरण

वसीयतकर्ता अपनी वसीयत को कभी भी निरस्त कर सकता है. यदि चाहे तो नई वसीयत भी कर सकता है, भले ही उस ने अपनी पहली वसीयत में यह लिख दिया हो कि यह उस की अंतिम वसीयत है.

वसियतनामे का निरस्तीकरण भी स्टांप शुल्क से मुक्त है.

वसीयतकर्ता की मृत्यु के उपरांत भी उस का वसीयतनामा उन व्यक्तियों द्वारा पंजीकरण के लिए पेश किया जा सकता है जिन के हक में वसीयत की गई है.

इस मामले में सब रजिस्ट्रार द्वारा वसीयतनामे के जीवित दावेदारों के बयान शपथपत्र पर लिए जाते हैं कि उन के अतिरिक्त उस जायजाद का और कोई हकदार नहीं है, साथ ही वसीयतनामे के साक्षियों से भी पूछताछ की जाती है व संतुष्ट होने पर सब रजिस्ट्रार द्वारा वसीयतनामा पंजीकृत कर दिया जाता है. ●

एशियाई खेलों के लिए प्र

नई दिल्ली में इसी वर्ष 19 नवंबर से 4 दिसंबर तक होने वाले नवें एशियाई खेलों की तैयारियां पश्चिमी जरमनी तक में हो रही हैं. इन खेलों में 30 देशों के 7,000 खिलाड़ी भाग ले रहे हैं. पश्चिमी जरमनी के बोन स्थित विदेश विभाग ने एशियाई खेलों के खिलाड़ियों के प्रशिक्षण के लिए विभिन्न टीमों को दो लाख जरमन मार्क की सहायता प्रदान की है.

जरमन राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के विकास के लिए सहायता प्रदान करती इस समिति के विदेशी मामलों के निदे हार्मट डोब्रिक को भारत, मलये इंडोनेशिया, थाईलैंड तथा सिंगापुर प्रार्थनापत्र प्राप्त हुए हैं, जिन में इन देश अपने खिलाड़ियों को जरमनी में प्रशि दिए जाने का आग्रह किया है.

लेकिन जरमनी के योग्य खेल संग की सहायता के बिना प्रशिक्षण कार्य संभव होना मुशकिल था. इसी लिए जर एथलीट संगठन स्वर्ण पदक जीत सकने 14 एशियाई एथलीटों तथा उन के प्रशिक्षकों को इस योग्य बना रहा है कि अपने लक्ष्य में सफल हो सकें. इस सम खिलाड़ी तथा प्रशिक्षक जरमनी में सप्ताह का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं.

पांच खेल स्पर्द्धा की विशेषज्ञ महिला एथलीट और 10 खेल स्पर्द्धा के पुरुष एथलीट को छोड़ कर 12 एथलीटों (चार महिला) ने स्वयं को वह मौसम के अनुकूल ढाल लिया है.

एशियाई खेलोंके लिए पश्चिमी जरम में भाला फेंकने का प्राशिक्षण प्राप्त कर वालीं महिला खिलाडी मेरी एंजिल

को (बावेरि अंतरराष्ट्र की प्रगति बात का अंतिम च

प्रशिक्षण
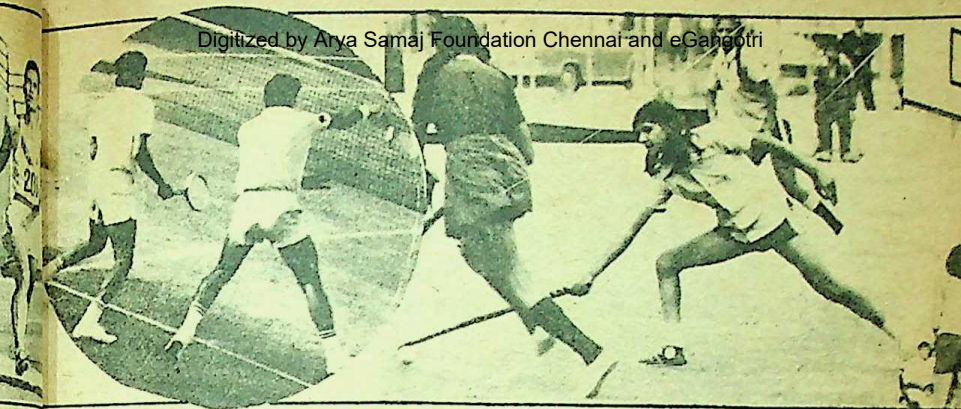
कोलोन, इंगलहैम और फ्रीस्टट (बावेरिया) में आयोजित होने वाली अंतरराष्ट्रीय या प्रांतीय प्रतियोगिताओं में इन की प्रगति का आकलन किया जाएगा तथा इस बात का पता लगाया जाएगा कि प्रशिक्षण के अंतिम चरण में खिलाड़ियों में कौन सी कमी रह गई है और उन्हें कैसे और उच्च प्रशिक्षण दिया जा सकता है.

एशियाई खेलों के संबंध में भारत और जरमनी का सहयोग सिर्फ दौड़कूद या अन्य कसरती खेलों तक ही सीमित नहीं है. बंदूक से निशाना लगाने वाले आठ और खिलाड़ियों ने भी जरमनी में प्रशिक्षण प्राप्त करने का अनुरोध किया है. ये लोग सितंबर के अंतिम सप्ताह में जरमनी पहुंच कर वाइसबेडेन

जरमन प्रशिक्षक गुंटर आईसिगंर से प्रशिक्षण प्राप्त करता एक खिलाड़ी.

के जरमन राइफल एसोसिएशन के स्कल में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे.

'जरमन फुटबाल एसोसिएशन' ने एक वृहद खेल प्रतियोगिता के आयोजन में सहायता देने का निर्णय किया है. फुटबाल एशिया का बहुत ही लोकप्रिय खेल है. 'खेल संगठनों में प्रबंध संबंधी योग्यताएं' विषय पर फ्रेंकफर्ट में राष्ट्रीय ओलंपिक समिति के तत्वावधान में होने वाली एक अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के लिए दो भारतीयों का भी चुनाव किया गया है.

खिलाड़ियों की दिनचर्या

पश्चिमी जरमनी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे भारतीय खिलाड़ी सुबह सवा छ: बजे चायनाश्ता करने के बाद प्रशिक्षण में लग जाते हैं और रात नौ बजे भोजन करने के बाद सोते हैं. उन्हें थक जाने पर विश्राम करने की अनुमति है और समय पर आवश्यक भोजन दिया जाता है. वहां खिलाड़ियों के लिए सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों तरह के प्रशिक्षणों की व्यवस्था है. वे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बहुत कम जाते हैं. वे पूरा ध्यान प्रशिक्षण पर ही केंद्रित करना चाहते हैं.

इन खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे जरमन प्रशिक्षक गुंटर आइसिगर ने खिलाड़ियों की इस भावना की कद्र करते हुए उन के प्रशिक्षण में और तेजी लाने की बात सोची है.

भारतीय खिलाड़ियों ने स्वयं को वहां के प्रशिक्षण स्तर के लायक बनाने के लिए सुझाव दिया था कि उन की जरूरत के मुताबिक प्रशिक्षण का कार्यक्रम ही तैयार कर लिया जाए. उन्हें फ्रेंकफर्ट के एथलीटों के साथ प्रशिक्षण दिया जा रहा है. आशा है कि इन में कुछ खिलाड़ी सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में उभरेंगे.

भारतीय खिलाड़ी गर्ड नागेल जिन का ऊंची कूद का 2.31 मीटर का कीर्तिमान है तथा मैराथन चैंपियन राल्फ मैन जैसे खिलाड़ियों के साथ प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं.

ऊंची कूद के अंतरराष्ट्रीय स्तर के अनुभवी प्रशिक्षक गुंटर आइसिगर ने भारतीय खिलाड़ियों के बारे में कहा है कि एथलीट एशियाई स्तर की दृष्टि से श्रेष्ठ खिलाड़ी हैं. आशा है कि ये एथलीट नई दिल्ली में नवंबर में होने वाले एशियाई खेलों में काफी सफल रहेंगे. उन्होंने 5,000 मीटर की दौड़ के धावक गोपाल सैनी तथा दस खेल स्पर्द्धा के विशेषज्ञ साबिर अली की विशेष रूप से चर्चा की.

बूटासिंह बच गए

खेलों के संबंध में कोई भी बात करते समय सरकार बेहद अटपटे फैसले करने से बाज नहीं आती. खेल मंत्रालय के सवाल को लें. 1976 में जब भारत को एशियाई खेलों के आयोजन का अधिकार मिला था तब से ले कर इस साल सितंबर का महीना शुरू होने तक खेल मंत्रालय बनाने की बात नहीं सोची गई, लेकिन खेल शुरू होने से 78 दिन पहले खेल मंत्रालय बना और उसका जिम्मा उन बूटासिंह को सौंपा गया जिन्हें एशियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था से हटाए जाने की चर्चाएं काफी तेज हो गई थीं.

यह तब है जब खेल मंत्रालय एशियाई खेलों के लिए कतई फायदेमंद साबित नहीं होने वाला, क्योंकि जो कुछ बिगड़ना था बिगड़ चुका. हां बूटासिंह की प्रतिष्ठा जरूर बच गई है. एशियाई खेलों के लिए होने वाले निर्माण कार्य में देरी की वजह से दिल्ली विकास प्राधिकरण के उपाध्यक्ष विद्यासागर एलावादी का तबादला किया गया. नई दिल्ली नगर पालिका के प्रशासक प्राणनाथ बहल व कुछ वरिष्ठ इंजीनियर बदले गए.

यह सारा फेरबदल इसी लिए हुआ क्योंकि अगस्त के तीसरे सप्ताह में एशियाई खेलों की विशेष आयोजन समिति की दो बैठकों में पांचपांच घंटे राजीव गांधी मौजूद रहे.

बूटासिंह उन की शंकाओं का उपयुक्त समाधान नहीं कर सके. तब लगा कि शायद उन्हें एशियाई खेलों से हटा कर उन की जगह विद्याचरण शुक्ल को लाया जाए. जिन के

संबंध अब प्रधान मंत्री से काफी मधुर हो गए हैं.

यदि बूटासिह रहते तो यह उन की अकुशलता का सब से बड़ा प्रमाण तो होता ही, एशियाई खेलों के इतिहास में भी यह पहला मौका होता जब संयोजन प्रमुख को खेल शुरू होने से ढाई महीने पहले बर्खास्त किया जाता.

एशियाई खेलों के दौरान भोजन व्यवस्था

एशियाई खेलों के दौरान कुल कितने लोग दिल्ली में आएंगे, इस की तादाद निश्चित नहीं हो पाई है. फिर भी अगर सरकारी अनुमान को सही मान लिया जाए तो दो लाख अतिरिक्त लोगों के दिल्ली में आने की संभावना है.

दिल्ली महानगर की ऐसी हालत है कि अगर एक दिन दूध या डबलरोटी की आमद रुक जाए तो हाहाकार मच जाता है. एशियाई खेलों के दौरान क्योंकि इस तरह की चीजों की खपत बढ़ जाएगी, इसलिए आम तौर पर यह आशंका व्यक्त की जा रही है कि उन दिनों खानेपीने की चीजों की तंगी हो सकती है और अगर तंगी न भी हुई तो इन चीजों की कीमतें बढ़ सकती हैं.

दिल्ली प्रशासन में खाद्य एवं आपूर्ति आयुक्त एस.पी. अग्रवाल का कहना है, "विभिन्न सरकारी, गैर सरकारी, सहकारी व निजी संस्थाओं से बातचीत कर के हम ने ऐसी व्यवस्था कर ली है कि एशियाई खेलों के दौरान किसी भी चीज की सप्लाई में कोई कमी न होने पाए."

एशियाई खेलों के दौरान दूध व डबलरोटी की आमद 40 प्रतिशत बढ़ जाएगी. मक्खन अब की तुलना में दो गुना ज्यादा आने लगेगा. चावल, चीनी, प्याज व गेहूं भी आसानी से उपलब्ध होगा. ऐसा सरकारी सूत्रों का दावा है.

जहां तक खिलाड़ियों का सवाल है उन के लिए पंचशील एनक्लेव स्थित खेल गांव में
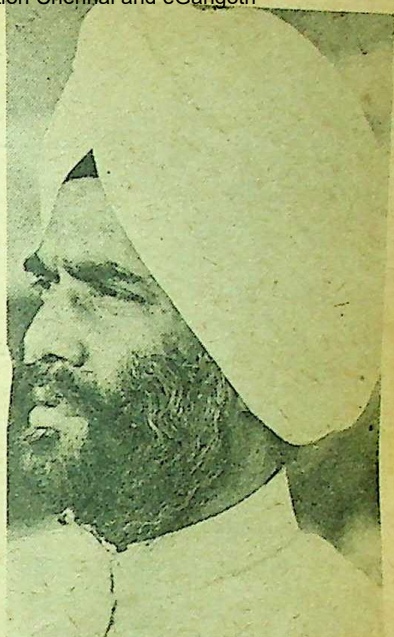
बूटासिंह: प्रतिष्ठा जातेजाते बची.

विशेष रसोई घर बनाया गया है. इस में प्लेटें धोने, खाना पकाने व उसे गर्म करने, सब्जियां काटने, ब्रेडपीस काटने व उन में मक्खन लगाने के स्वचालित यंत्र स्वीडन से कोई सवा करोड़ रुपए में मंगवाए गए हैं. नौ लाख रुपए के भारतीय उपकरण भी इस में लगाए गए हैं. चार भोजन कक्षों में एक साथ दो हजार लोगों को व दिन में सात हजार लोगों को खाना खिलाया जा सकेगा.

रसोईघर में भारतीय खाने के अलावा यूरोपीय व चीनी खाने की भी व्यवस्था होगी. चीनी खाने के लिए हांगकांग से दो रसोइए बुलाए गए हैं. कुल मिला कर 140 रसोइए खाना बनाने का काम करेंगे. एयर इंडिया से चीनीमिट्टी की 15,400 बड़ी प्लेटें, डोंगे व कपप्लेटें उधार ली जा रही हैं. एशियाई खेल गांव में रोज चार हजार मुर्गों, एक टन मांस, डेढ़ टन मछली, दो टन सब्जियों, एक टन फल तथा 30 हजार अंडों की खपत होगी.

एशियाई टिकटों में अव्यवस्था

एशियाई खेलों के लिए निर्माण कार्य में अव्यवस्था व भ्रष्टाचार का जो सिलसिला शुरू हुआ था, वह टिकटों की बिक्री तक में जारी रहा. एशियाई खेलों के दौरान पता नहीं यह मानसिकता क्या गुल खिलाएगी?

एशियाई खेलों के लिए साढ़े तीन महीने पहले ही टिकटें बेचने का फैसला किया गया. लिहाजा लोग बौखलाहट में टिकटें खरीदने भागे. यह सोचने का उन के पास समय ही नहीं था कि कब की और कौन सी टिकट उन्हें लेनी चाहिए. टिकट यदि एशियाई खेल शुरू होने से 15 या 20 दिन पहले बेची जाती तो ज्यादा उपयुक्त रहता.

टिकटों की बिक्री शुरू होते ही कुछ घंटों के भीतर सभी टिकटें खत्म हो गईं. प्रगति मैदान में एशियाई खेलों की विशेष संयोजन समिति के अधिकारियों में से प्रत्येक ने बीस से सौ तक टिकटें अपने कब्जे में कर लीं. संसद सदस्यों व विधायकों के लिए डेढ़ लाख टिकटें अलग से रख दी गईं. आम आदमी के लिए गिनीचुनी टिकटें ही रहीं, जिन में से अधिकांश को काला बाजारियों ने हथिया लिया. उद्घाटन व समापन समारोह की टिकटें 10 गुना कीमत पर अभी भी ली जा सकती हैं. जाली टिकटें भी बिकनी शुरू हो गई हैं.

यह हालत खेलों के ऐन मौके पर कितनी गंभीर स्थिति पैदा कर देगी, इस की सहज ही कल्पना की जा सकती है.

क्रिकेट ही क्रिकेट

1982 से 1989 तक के सात सालों में विश्व कप प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने के अलावा भारत को कुल 15 टेस्ट शृंखलाएं खेलनी हैं. यों तो हर खेल की अंतरराष्ट्रीय समिति की बैठक में भारतीय प्रतिनिधि शामिल होते हैं, लेकिन बाकी खेलों में जहां वे मूक दर्शक बने रहते हैं वहीं क्रिकेट में टेस्ट शृंखलाओं का बंदोबस्त करने में बढ़चढ़ कर आगे रहते हैं. क्रिकेट अभी भी भारत में जबर्दस्त मुनाफे की वजह जो बना हुआ है.

श्रीलंका की टीम एक टेस्ट मैच खेल चुकी है. अक्तूबर 82 से दिसंबर तक भारतीय टीम पाकिस्तान में खेलेगी और फिर फरवरी, 83 में वेस्टइंडीज जाएगी. अक्तूबर 83 में वेस्टइंडीज की टीम भारत आएगी. सितंबर, 84 में पाकिस्तान के साथ घरेलू शृंखला खेलने के बाद जनवरी, 85 में भारतीय टीम भारत में ही इंगलैंड का सामना करेगी. सितंबर, 85 में पाकिस्तान व नवंबर, 85 में आस्ट्रेलिया जाने के बाद भारतीय टीम फरवरी, 86 में श्रीलंका जाएगी. मई, 86 में इंगलैंड का दौरा करने के बाद 1986 की सर्दियों में भारतीय टीम आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैंड की टीमों से टक्कर लेगी. अक्तूबर, 87 में वेस्टइंडीज की टीम भारत आएगी, तो अक्तूबर, 1988 में इंगलैंड की टीम. 1989 के शुरू में भारतीय टीम वेस्टइंडीज जाएगी. इस तरह कुल 80 महीनों के समय में भारतीय टीम करीब 80 ही टेस्ट मैच खेल लेगी.

दिल दहला देने वाली निर्मम हत्या

ब्रिटेन में डोनाल्ड रियान नाम के एक 49 वर्षीय व्यक्ति की हत्या के आरोप में तीन आदमियों को आजीवन कारावास की सजा दी गई है. इन तीनों आदमियों ने बिजली के चाकू से डोनाल्ड को काट कर टुकड़ेटुकड़े कर डाला था.

लंदन के एक न्यायालय में पुलिस ने जब जूरी के सदस्यों को डोनाल्ड के छोटेछोटे टुकड़ों में कटे शरीर के फोटो दिखाए तो उन के दिलोदिमाग में अजीब सी प्रतिक्रिया हुई. वे स्वयं को इतना अस्वस्थ महसूस करने लगे कि न्यायालय को मुकदमे की सुनवाई स्थगित कर देनी पड़ी.

मयूर सूटिंग शर्टिंग
राजस्थान स्पिनिंग एण्ड वीविंग मिल्स, गुलाबपुरा, राजस्थान का श्रेष्ठ उत्पादन।
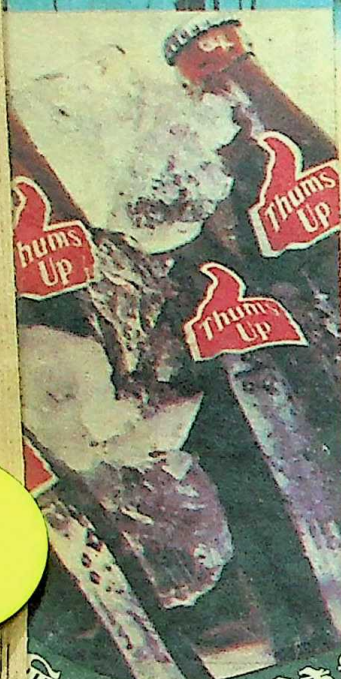
रजि. नं. 6502/60 डी (सी)-104
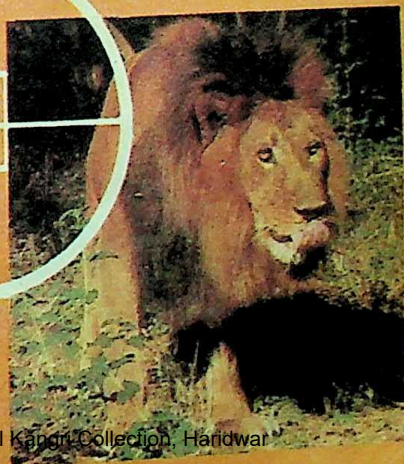
सुमन
बाल मजदूर :
कितने मजबूर
न्य जीव
खत्म हो
रहे हैं
नसय अनुभूतियों
का उद्यान

भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार के लिए आप से भी पहले खरीदारी शुरु कर देता है।

खरीदारी का ऐसा सिलसिला जो भारतीय खाद्य निगम देश भर में चलाता है। हर वर्ष लगभग 130 लाख टन खाद्यान्न खरीदता है। यह खरीद सरकार द्वारा निश्चित मूल्यों पर की जाती है और यह मूल्य उचित और किसान को अधिक उत्पादन करने को प्रोत्साहन देने वाले होते हैं। 180 लाख टन की आधुनिक और वैज्ञानिक भण्डारण क्षमता में आप के लिए संचित सुरक्षित सूखे अनाज जो ऊंचे साइलो और देश भर में फैले सुनियोजित गोदाम समूहों में रखता है। देश भर में पूरे वर्ष में किये जाने वाले कार्य कलाप। यह निश्चित करने के लिए कि आप का थैला भरने के लिए हमेशा पर्याप्त अनाज उपलब्ध हो।

और आपके परिवार की उतनी ही चिन्ता करता है जितनी आप स्वयं करते हैं।

आपके परिवार का स्वास्थ्य

भारतीय खाद्य निगम को इसकी उतनी ही चिन्ता है जितनी आपको। इसका पता अच्छी किस्म के अनाज और भण्डारण में हर स्तर पर कड़ी गुण नियंत्रण व्यवस्था के रूप में देखने को मिलता है। जिसके लिए गुण मानक निर्धारित किये जाते हैं और उनका कड़ाई से पालन किया जाता है। वास्तव में भारतीय खाद्य निगम गुणों का अत्यन्त ध्यान रखता है क्योंकि किसी अन्य खाद्य वस्तु की पूर्ति करने वाले की तरह इस पर भी खाद्यान्न मिलावट निरोधक अधिनियम लागू होता है। जब कभी आपको ऐसा लगे कि आप जो अनाज खरीद रहे हैं वह देखने भालने में इतना अच्छा नहीं है तो आप यह न सोचें कि यह घटिया किस्म का है। भारतीय खाद्य निगम कई किस्मों का अनाज खरीदता है जिनमें से कुछ प्राकृतिक रूप से चमकीली न हों या उनकी चमक खत्म हो गई हो। लेकिन हमेशा की तरह गुणवत्ता को एक जैसा बनाये रखने पर ध्यान दिया जाता है।

आपके परिवार का बजट

उपभोक्ता को खाद्यान्न की निर्बाध पूर्ति कैसे की जाये। यह भी अपने आप में एक कहानी है। विशाल परिवहन व्यवस्था के माध्यम से इस कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करने की चेष्टा की जाती है। भारतीय खाद्य निगम प्रतिदिन कुशलतापूर्वक अनाज भेजने के लिए लगभग 2600 बड़ी लाइन और 300 छोटी लाइन के वैगनों का उपयोग करता है।

भारतीय खाद्य निगम परिवहन व्यय, मण्डी में चुकाये जाने वाले विभिन्न करों, भण्डारण लागत तथा बैंकों द्वारा ऋणों पर लिये जाने वाले शुल्क से आपको राहत

दिलाता है। इनमें अधिकांश खर्चों को भारत सरकार उपभोक्ता सहायता राशि के जरिये पूरा करता है ताकि आपको लागत मूल्य से कम कीमत पर उचित दर पर अनाज मिल सके और इसके फलस्वरूप आपका बजट संतुलित रहे।

खेतों में भण्डारण स्थलों पर तथा भण्डारण स्थलों से राज्य वितरण एजेंसियों (जो उचित दर दुकानों को अनाज पहुंचाती हैं) तक यह एक लम्बी यात्रा है। भारतीय खाद्य निगम गाइड के रूप में साथ रहता है। और आप भी इसके साथ अपनी चिन्ता बांट सकती हैं। भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार की देखभाल करने में आपकी सहायता करता है।

भारतीय खाद्य निगम

राष्ट्र की सेवा में संलग्न

मसूढ़ों को मज़बूत बनाइये दाँतों की ज़िन्दगी बढ़ाइये

21
18-10-82
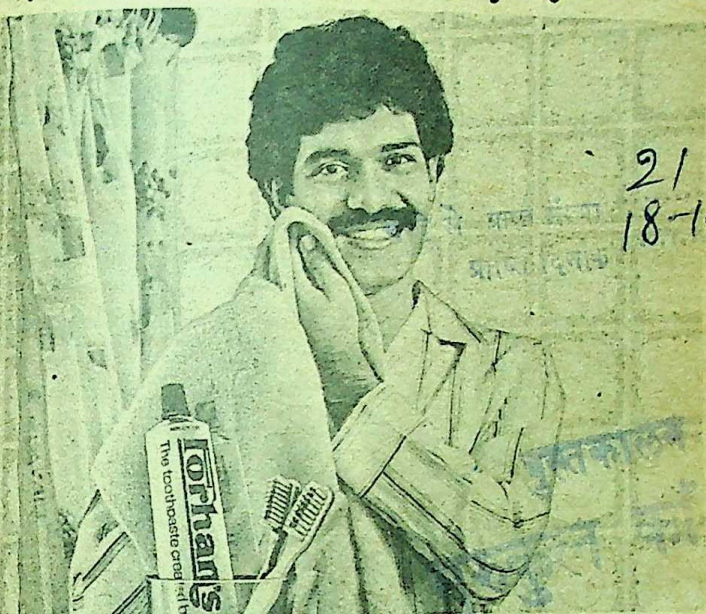
सिर्फ़ फोरहॅन्स में ही मसूढ़ों को मज़बूत बनाने वाला विशेष ऐस्ट्रिंजेंट है

इसका अनोखा स्वाद ही इसके असर का सबूत है!

फोरहॅन्स का ऐस्ट्रिंजेंट मसूढ़ों की विशेष तौर से देखभाल करता है. सूजन रोक कर ऐस्ट्रिंजेंट कमज़ोर और मुलायम मसूढ़ों को संकुचित करके उन्हें स्वस्थ बनाता है. आपके दाँतों को लम्बी ज़िन्दगी और मज़बूत आधार स्वस्थ मसूढ़े ही दे सकते हैं. यहाँ तक कि मज़बूत दाँतों को भी स्वस्थ मसूढ़ों की ज़रूरत होती है. इसीलिये आपको चाहिये फोरहॅन्स-ऐस्ट्रिंजेंट वाला अनोखा टूथपेस्ट.

फोरहॅन्स पर भरोसा रखिये

ये दाँतों के डॉक्टर का बनाया हुआ टूथपेस्ट है

288 F 172 HIN

एक और संग्रहणीय विशेषांक
मुक्त
नवंबर (प्रथम) 198
एशियाई खेल
विशेषां
जिस में आप पाएंगे
31 वर्षों बाद दिल्ली में
से हो रहे एशियाई खेल
संपूर्ण लेखाजोखा; कौनकौन से दे
में भाग ले रहे हैं? एशियाई खे
लिए कैसी तैयारियां की गई हैं?
खेल में कौन सा देश बाजी मा
खिलाड़ियों के लिए कैसी व्यव
हैं? खेले जाने वाले सभी
के बारे में क्रमबद्ध जान
इन के अलावा कई अन्य
मनोरंजक कहानियां तथा कवि
अपनी प्रति
अभी से सुरक्षित करा
पृ-105
वन्य जीव
बाल मज
अंगरेजी
राक गा
महिला
सुबह ज
राम ज
संगीतम
छवि प
सागर
टेप रि

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

अक्तूबर (द्वितीय) 1982
अंक : 389

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : इ-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस प.प्र.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष : 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चैंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए पैंथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.
प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

गोद लेने के नियमों के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) लकुल सही हैं कि यदि लावारिस बच्चे यहां तो जीवन भर अनाथालयों के प्रबंधकों के ए सडकों पर गागा कर पैसे ही कमाते रहेंगे चोरीचकारी करेंगे. अनाथ बच्चों का रत में भविष्य अंधकारमय है. कुछ लोग बच्चों को विदेशों में भेजे जाने पर आपत्ति ठा रहे हैं. वे नहीं चाहते कि इन बच्चों का विष्य उज्ज्वल हो.

लावारिस बच्चों के यहां घुटघुट कर रते रहने से तो बेहतर है कि वे विदेशों में ाएं. वहां कम से कम उन की जिंदगी तो धर जाएगी. परित्यक्त नवजात शिशु या नाथ बच्चे को किसी विदेशी परिवार में लनेबढ़ने का अवसर मिले, उस का जीवन धर जाए तो इस में किसी को कोई आपत्ति हीं होनी चाहिए.

—गुरबीरसिंह चावला

*

खालिस्तान के विषय में आप के विचार मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) पढ़े. कालियों की यह मांग निराधार है. शायद वे यं यह नहीं जानते कि इस से उन्हें क्या भ होगा.

धर्म की आड़ में इस तरह की मांग रना तो और भी गलत है. इस से धीरेधीरे न्य राज्यों में भी इसी तरह की मांग की जाने गेगी, जिस से धार्मिक विद्वेष में और वृद्धि होगी. यदि इस मांग को सख्ती से न दबाया गया तो देश के लिए यह हमेशा ही सिरदर्द बनी रहेगी.

—नरेंद्रसिंह नारंग

*

संपत्ति की बिक्री पर आयकर विभाग का नया नियम (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) मात्र रिश्वतखोरी का एक जरिया बन कर रह जाएगा. काले धन को यदि सरकार समाप्त ही करना चाहती है तो उसे चाहिए कि वह काले धन की उत्पत्ति के कारणों पर ध्यान दे, न कि उस के उपयोग पर प्रतिबंध लगाने के लिए कानून बनाए.

इस नियम के लागू होने का व्यापारिक क्षेत्रों को पूर्वाभास हो गया था. इसी लिए संपत्ति आदि के पंजीकरण में औसत से पांचसात गुना वृद्धि हो गई.

—कुमार पवन

*

संपत्ति की बिक्री पर आयकर विभाग के नए नियम से जाहिर है कि सरकार व अधिकारी किस तरह आम जनता को चूसने में लगे हैं. इस नियम के पीछे आयकर विभाग का अपना स्वार्थ है. इस शिकंजे से बचने के लिए अमीर तो फिर भी लेदे कर अपना काम करा लेता है, मगर सोचने की बात है कि आम

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

जनता इन अधिकारियों की कैसे सुधारेगी?

—विक्रमसिंह सिसोदिया

*

संपत्ति की बिक्री से संबंधित आप के विचारों ने कुछ देर तक सोचने के लिए विवश कर दिया. सरकार की यह बात उचित प्रतीत नहीं होती कि जमीनजायदाद की हर बिक्री का पंजीकरण आयकर विभाग के पास कराना होगा.

साथ ही यह बात भी सोचने लायक है कि आयकर विभाग को यह अधिकार दिया जाना बिलकुल अनुचित है कि तय हुए सौदे से 15 प्रतिशत अधिक राशि दे कर संपत्ति का अधिग्रहण कर सकता है. हो सकता है सौदा बिलकुल सही हो, परंतु कुछ की अवधि में उस का मूल्य डेढ़ गुना या तीन गुना हो जाए. ऐसे में आयकर विभाग केवल 15 प्रतिशत अधिक धनराशि दे कर मुफ्त में ही लाभ उठाने का हकदार हो सकता है.

*

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

'विदेशी दान बंद हो' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में व्यक्त आप के विचारों से मैं सहमत हूं.

वास्तव में यह विदेशी भीख तत्काल बंद होनी चाहिए, क्योंकि इस से हमारे सम्मान को धक्का पहुंचता है. दान देने वाले देश हमें किसी भी रूप में दान दें, हम पर अपनी संपन्नता का प्रभाव जमाते हैं और समय समय पर हमें यह जताते रहते हैं कि "तुम हमारे दान पर निर्भर हो अन्यथा तुम्हारी हैसियत क्या है?" फिर दूसरी बात यह भी कि इस से प्राप्त पैसे का हमेशा दुरुपयोग ही होता है. विभिन्न संस्थाओं से मिलने वाला दान समाज में मनमुटाव पैदा करवाता है. अतः विदेशों से आने वाले इस पैसे पर पाबंदी लगाई जानी चाहिए.

—भुवनेशचंद्र

*

'हिंदी की प्रगति धीमी ही सही' (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) में आप के विचार सही हैं. यदि संयुक्त राष्ट्रसंघ में हिंदी के प्रवेश की कोशिश सच्चे मन से की जाती तो विश्व संस्था में हिंदी राजकीय भाषा के रूप में बहुत पहले ही प्रतिष्ठित हो गई होती. राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को हम कितना सम्मान दे रहे हैं, यह एक विचारणीय प्रश्न है. आज के कथित संभ्रांत आभिजात्य वर्ग के लोग अपने मनोभावों को हिंदी में व्यक्त करना अपनी शान के खिलाफ समझते हैं. कभी हिंदी में बात करते भी हैं तो बीच बीच में अंगरेजी शब्दों अथवा वाक्यों का भी प्रयोग करने लगते हैं.

हिंदी के प्रयोग और प्रसार के मार्ग में यदि सरकार कुछ कठोर रुख अपनाए

संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी को शामिल करने के लिए ईमानदारी से प्रयास करें तो निश्चय ही हिंदी को विश्व में उस का वास्तविक स्थान दिलाया जा सकता है.

—भूपेश पांडेय

*

कोर्ट फीस न हटाने के संबंध में आप के विचारों (मुक्त विचार/सितंबर/द्वितीय) से मैं पूर्णतया सहमत हूं. क्योंकि यदि सस्ते एवं आसान तरीकों से न्याय दिलाने के चक्कर में कोर्ट फीस ही समाप्त कर दी जाएगी तो निश्चय ही अदालतों में मुकदमों की संख्या में चौंका देने वाली वृद्धि हो जाएगी. इस से लोगों को न्याय प्राप्त होने में और देरी होगी. अतः कोर्ट फीस हटाना ठीक नहीं है.

—दशरथकुमार स्वर्णकार

*

गोरे पर्यटकों को यथापूर्व छूट (मुक्त विचार/सितंबर/प्रथम) देने का भारत सरकार का निर्णय उचित नहीं है. यद्यपि भारत आजाद हो चुका है, लेकिन मानसिकता की दृष्टि से हम अभी भी गुलाम हैं. लगता है हम में आत्मगौरव या आत्मसम्मान नाम की कोई चीज नहीं है.

जब पश्चिमी देशों के दूतावास भारतीय पर्यटकों को वीजा देने के मामले में उन के साथ रुखाई के साथ पेश आते हैं तो हमें भी उसी तरह का व्यवहार करना चाहिए था ताकि उन्हें भारतीयों के साथ अपना वैसा व्यवहार बदलने को मजबूर होना पड़ता.

—अशोक बजाज

*

लड़कियों से छेड़खानी से संबंधित लेख (सितंबर/द्वितीय) में आज की बढ़ती हुई सामाजिक बुराई का अच्छा चित्रण किया गया है.

आजकल तो लड़कियां भी छेड़खानी करने लगी हैं. यह बात अलग है कि उन का प्रतिशत अभी बहुत कम है.

मुक्ता के लेखक

लोकेंद्र चतुर्वेदी

इस अंक में प्रकाशित लेख 'अंगरेजी आसान बनेगी' के लेखक इंदौर निवासी लोकेंद्र चतुर्वेदी हैं. आप मूलतः सामाजिक विषयों को अपने लेखन का आधार बनाते हैं. वर्तमान में शिक्षा विभाग में कार्यरत.

ज्योत्सना पान

इस अंक में प्रकाशित कविता 'क्या कभी हो सकता मिलन' की रचयिता कानपुर निवासी ज्योत्सना पान हैं. आप का लेखन के प्रति रुझान बचपन से ही रहा है. वर्तमान में भारतीय रिजर्व बैंक की कानपुर शाखा में कार्यरत.

सहशिक्षा का अभाव छेड़खानी का एक मुख्य कारण है. अगर लड़कलड़कियां साथसाथ पढ़ें, एक दूसरे से बातचीत, हंसीमजाक करते रहें तो फिर लड़कियां लड़कों के लिए कोई अजूबा न रहें. सहशिक्षा को बढ़ावा दे कर छेड़खानी पर काफी हद तक काबू पाया जा सकता है.

—प्रकाश फेरवानी

*

लेखक लड़कियों से छेड़खानी की समस्या के मूल कारण तक पहुंचने में असमर्थ रहा है. तेजी से बढ़ते शहरीकरण, जीवन के सभी क्षेत्रों में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव व दिशाहीन शिक्षा के कारण जीवन के आदर्शों व सिद्धांतों में परिवर्तन आए हैं.

इस प्रक्रिया में लड़केलड़कियां दोनों ही दोषी हैं. खेद की बात यह है कि हम जीवन के आदर्शों में आने वाले परिवर्तनों को तो भोगने को उत्सुक हैं, किंतु उस के फल भोगने से कतरा रहे हैं.

—वि. सागर

लड़कियों से छेड़खानी के सं... दिल्ली के कामकाजी महिला होस्ट... अवैतनिक अध्यक्ष कविता अरोड़ा की बात से बहुत ही हैरानी हुई कि लड़... उत्तेजक वस्त्र पहनते हैं. हम उन से ... चाहते हैं कि आखिर लड़कों की ऐसी कौ... पोशाकें हैं जो लड़कियों को उत्तेजक ... हैं?

—नारायण, महेश एवं श्याम

*

यह सर्वविदित है कि एक हाथ से ... नहीं बजती. जब तक लड़की थोड़... प्रोत्साहन न दे, तब तक लड़का जबान... खोल सकता.

सच तो यह है कि आज फिल्... नायिकाओं को कम से कम कपड़े पहन... उत्तेजक दृश्य पैदा किए जाते हैं और जब... फैशन वास्तविक जीवन में लड़... अपनाती हैं तो लड़के भी कुछ न कुछ ... करते ही हैं.

लेखक का कहना है कि लिफ्ट देना...

अनुभव का महत्व ...

एम० एस० एस० एक लाभनिरपेक्ष व्यवसायिक सोसाईटी है। एम० एस० एस० कल्याणकारी वातावरण में सुरक्षित, गुप्त, किफायती तथा आधुनिक सन्तति–निरोधक सेवाएं उपलब्ध कराने में समर्पित है।

नवीन तथा आधुनिक तकनीकी सहायता से अब तक एम० एस० एस० 1,00,000 से भी अधिक स्त्री–पुरूषों को सफलतापूर्वक सन्तति निरोधक विधियां अपनाने तथा परिवार को नियमित रखने में सहायक सिद्ध हुई है।

मुक्त परिवार नियोजन सलाह, मशवरा तथा गर्भनिरोध

अब नई आयातित टेक्नॉलोजी द्वारा पुरूष/महिलाओं की तुरन्त, सरल व सुरक्षित नसबन्दी। न रातभर क्लिनिक में ठहरना न कोई दर्द न ही आराम की आवश्यकता।

अधिक जानकारी एवं तुरंत सेवा के लिए हमारे निम्नलिखित किसी भी क्लीनिक में मिलें अथवा सम्पर्क करें 9 बजे से 5 बजे तक (करोल बाग – 8 बजे से 7 बजे तक)

- **करोल बाग में 125/-रू**

स्थापित 1921 लण्डन

मेरी स्टोप्स सोसाईटी क्लीनिक

नई दिल्ली करोलबाग — 5439, आर्यसमाज रोड़,(सब्जीवाला चौक तथा किकर वाला चौक, के बीच) फोन:561459, 566739 रविवार को छुट्टी

दिल्ली शाहदरा — शाहदरा नर्सिंग होम, 10906/6 सुभाष पार्क, नवीन शाहदरा रविवार को छुट्टी

दिल्ली नांगलोई — न:4 अशोक मोहल्ला(राजमार्ग 10 बहादुरगढ़/रोहतक के लिए) मंगलवार की छुट्टी

आगरा — 1154, बाग मुज्जफरखान (रास्ता सेन्ट जोन्स कालेज से रघुनाथ टाकिज) फोनः 65530 बृहस्पतिवार की छुट्टी

जयपुर — 21 मिशन कम्पाउन्ड, हाथरोई, अजमेर रोड़, फोनः 79934 बृहस्पतिवार की छुट्टी

कलकत्ता — 27, मिर्ज़ा ग़ालिब स्ट्रीट दूसरी मंजिल (पूर्व फ्री स्कूल स्ट्रीट) फोनः 214005 बुधवार को छुट्टी

आंखें मारना भी छेड़खानी का एक रूप है लेकिन क्या किसी की मदद के लिए लिफ्ट नहीं दी जा सकती? और जहां तक आंखें मारने वाली बात है, अगर लड़की आंख ही चार न करे तो भला कोई कैसे आंख मार सकता है? **—प्रदीपनारायण भट्टाचार्य**

*

'संपादक के नाम स्तंभ (सितंबर/प्रथम) में एक पाठक रामाधीन यादव के विचारों के संबंध में मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि डाकघर आवर्ती जमा खाते से मियाद पूरी होने पर मिलने वाली राशि के संबंध में शायद इस पाठक का कथन सही हो, पर कलेक्टर, सरगुजा (अल्प बचत शाखा) द्वारा 1.5.81 से प्रसारित डाकघर की योजनाओं में ब्याज दर में आकर्षक वृद्धि नामक विज्ञापन में आवर्ती जमा खाते के अंतर्गत 100 रुपए प्रतिमाह जमा की जाने वाली राशि पर 10 साल/120 माह के बाद देय राशि 22.330 रुपए दर्शाई गई है. यहां पर यह कहना असंगत न होगा कि उक्त विज्ञापन में डाकघर आवर्ती जमाखाते में पांच रुपए से ले कर 200 रुपए तक प्रति माह जमा की जाने वाली राशियों के स्तंभों में 10 साल/120 माह के बाद जो देय राशि दर्शाई गई है उन से भी 100 रुपए प्रति माह की जमाराशि पर 10 वर्ष बाद 22.330 रुपए की राशि देय होने की पुष्टि होती है. इसी आधार पर लेख में भी डाकघर आवर्ती जमा खाते से 22.330 रुपए बतलाए गए हैं. **—सोमराज**

*

'नए अंकुर' कहानी प्रतियोगिता के अंतर्गत प्रकाशित कहानी 'देर आयद, दुरुस्त आयद' (अगस्त/द्वितीय) पढ़ी.

किसी पात्र के चरित्र पर प्रकाश डालने के लिए एक या दो घटनाएं काफी होती है, जब कि इस कहानी में फ्लैश बैक में बताई गई इतनी सारी घटनाएं कथा प्रवाह को रोक कर उसे बोझिल बना देती हैं. इस कहानी में से यदि संपूर्ण फ्लैश बैक भी निकाल दिया जाए, तब भी मूल कथानक पर कोई असर नहीं पड़ेगा. साथ ही यह कहानी भाषा में कच्चापन लिए, निरुद्देश्य और बोझिल सी है.—सु

*

लेख 'हिंद महासागर में सैन्य हो फंसा अनोखा द्वीप सेशल्स' (जुलाई/द्वि में अनोखे फल कोको डी मर नट को 'ड कोकोनट' भी कहा जाता है जो न तो डब और न ही कोकोनट. फकीर लोगों के पा काले किश्ते होते हैं. वे इसी फल के आवरण हैं.

'लोडोइसिया सेशलेरम' नाम के प्र वृक्ष का यह फल अब तक ज्ञात फलों में स बड़ा है. डबल कोकोनट का वृक्ष शताब्दियों तक रहस्य के घेरे में रहा आज भी इस के बारे में अनेक किंवद मशहूर हैं. पुराने जमाने में शाही घराने जायदाद समझे जाने वाले इस फल के गिने वृक्ष ही अब सेशल्स द्वीप में शेष बचे हैं. फल की अंतरराष्ट्रीय तिजारत पर रोक कर संसार के वनस्पति प्रेमियों ने इसे विल होने से बचाने के प्रयास आरंभ कर दिए **—नीलमेघ चतुर्वे**
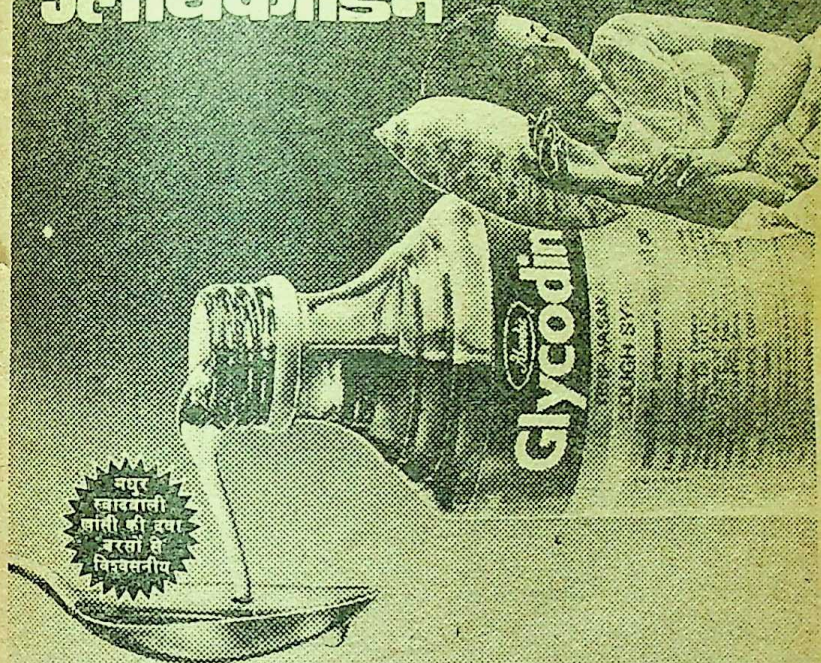
मुक्त विचार

क्षेत्रीय दलों की सफलता

तमिलनाडु में पेरियाकुलम लोक सभा उपचनाव में अन्ना द्रविड़ मुन्नेत्र कषगम की विजय और इंदिरा कांग्रेस तथा जनता पार्टी जैसे अखिल भारतीय दलों के उम्मीदवारों की जमानत तक जब्त हो जाने से कुछ नए प्रश्न उठ खड़े हुए हैं. यह बात पहले से ही तय थी कि मुख्य मुकाबला अन्नाद्रमुक व द्रमुक में होगा, पर इंदिरा कांग्रेस अपना खुद का स्थान बनाए रखने के लिए ही चुनाव में कूदी थी.

पिछले कई चुनावों में इंदिरा कांग्रेस द्रमुक या अन्नाद्रमुक के साथ चुनाव समझौता कर के जीतती रही है. अत: यह पता नहीं चल पाता था कि वास्तव में वे मत अपने को अन्नादुरै का ही अनुयायी बताने वाले द्रमुक और अन्नाद्रमुक में से किसी एक दल को मिले हैं या इंदिरा कांग्रेस को. इंदिरा कांग्रेस यही समझती रही कि उस का तमिलनाडु में खासा प्रभाव है और वह वहां की राजनीति को अपनी इच्छानुसार मोड़ दे सकती है.

अन्नाद्रमुक व द्रमुक दोनों ही न केवल क्षेत्रीय दल हैं, बल्कि एक तरह से केंद्र विरोधी दल भी हैं. इन दोनों दलों ने तमिल भाषियों को बाकी भारत के विरुद्ध उकसा कर ही अपना स्थान बनाया है. कभी हिंदी का विरोध कर के, कभी क्षेत्रीय स्वायत्तता का प्रश्न उठा कर, कभी अपने लिए अलग झंडे की बात कर के और कभी अलग होने के नारे लगालगा कर ही इन्होंने वोट बटोरे हैं.

जब तक एक द्रमुक दल था, इंदिरा कांग्रेस का वहां काफी प्रभाव था, क्योंकि चुनाव में दो उम्मीदवार तो होने ही चाहिए थे. कांग्रेस इसी कारण वोट ले जाती थी. द्रमुक के विभाजन के बाद से अन्नाद्रमुक और द्रमुक ही आपस में मत बांटने लगे हैं और मतों के लिए भी मतदाताओं को केंद्रीय दलों के विरुद्ध एकदूसरे से बढ़चढ़ कर उकसाने लगे हैं.

इस बार भी अन्नाद्रमुक जीता है और द्रमुक दूसरे नंबर पर आया. अधिकांश मत इन दोनों ने ही बटोर लिए. इस उपचुनाव ने तमिलनाडु में अखिल भारतीय दलों का अस्तित्व ही समाप्त कर दिया.

यदि यही स्थिति रही तो तमिलनाडु देश से अलगथलग हो जाएगा. चुनावों में बाकी देश में मुद्दे कुछ होंगे, तमिलनाडु में कुछ और. केंद्रीय मंत्रिमंडल में कभीकभार ही तमिलनाडु का निवासी मंत्री बन पाएगा. इन दलों के संसद सदस्य बाकी देश की समस्याओं के बारे में अनभिज्ञ व उदासीन होंगे और केवल अपने राज्य के मामलों में ही रुचि लेंगे.

अखिल भारतीय दलों के सदस्य इसी प्रकार तमिलनाडु के मामले में नहीं बोलेंगे. जब मत मिलने ही नहीं हैं तो वे अपनी नीति में वहां के जनमत का खयाल भी नहीं रखेंगे.

एक तरह से ये लक्षण विभाजन पूर्व की तैयारी लगती है. लेकिन इस के लिए दोष किसे दिया जा सकता है? तमिलनाडु वाले यदि शेष भारत के साथ मिल कर नहीं चल

रहे हैं तो बाकी भारत के लोग ही कौन से चिंतित हो रहे हैं? जब तक भाषा, जाति, धर्म के भेद इस तरह उग्र रहेंगे, यह तो होगा ही. और सच बात तो यह है कि हमारा चिंतन, हमारा संविधान और हमारी राजनीति इस भेदभाव को भड़काती ही है, उसे कम नहीं करती.

मेनकामेनका

श्रीमती इंदिरा गांधी को आखिर अब अपने जैसा ही विरोधी मिल गया है. उन की अपनी विधवा बहू मेनका गांधी ने राजनीतिक स्तर पर इंदिराजी के विरुद्ध अभियान छेड़ कर इंदिरा खेमे में खलबली मचा दी है और लगता है कि इंदिराजी समझ नहीं पा रही हैं कि इस आफत से कैसे निबटें.

मेनका गांधी को अपनी हाल की पंजाब, उत्तर प्रदेश व बिहार की यात्राओं में भारी जनसमर्थन मिला. कच्ची उम्र की होने के बावजूद उसे देखने और सुनने वालों की भीड़ इंदिराजी को देखने और उन की सभाओं में इकट्ठा होने वाले लोगों से अधिक थी.

इसी कारण इंदिरा कांग्रेस की राज्य सरकारों ने मौका पाते ही मेनका के संजय विचार मंच के सदस्यों की धरपकड़ शुरू कर दी. एक साधारण सदस्य की गोली से मृत्यु के आरोप में वरिष्ठ सदस्यों को जेल में बंद कर दिया. कहीं मंच के सदस्यों को खरीदा गया तो कहीं उन को धमका कर भगाया गया.

मुशकिल यह है कि आज की राजनीति ऐसी है कि इस प्रकार के हथकंडे ज्यादा दिन नहीं चलते. जेल जाने पर लोग शहीद हो जाते हैं. उन का जनसमर्थन बढ़ जाता है. कुछ को खरीद भी लिया जाए तो नए लोग और अधिक संख्या में उन का स्थान लेने आ जाते हैं. संजय विचार मंच के विरुद्ध इंदिरा कांग्रेस के ये पैंतरे इसी लिए बेकार साबित हो रहे हैं.

वैसे तो इंदिराजी की आदत है कि वह अपने हर प्रबल विरोधी पर गलत से गलत इलजाम लगा कर उसे बदनाम कर डालती हैं, पर मेनका के साथ वह ऐसा नहीं कर सकतीं. यदि भारतीय जनता पार्टी लोकप्रिय होती है तो उस पर मुसलिम विरोधी या राष्ट्रविरोधी होने का आरोप बारबार मढ़ा जाता है. यदि लोक दल को बदनाम करना हो तो उसे कुलक यानी अमीर किसानों का दल कह दिया जाता है. किसी पर अमरीका की गुप्तचर संस्था सी.आई.ए. के साथ मिल जाने का आरोप लगा दिया जाता है तो किसी पर कुछ.

पर मेनका गांधी के मामले में इंदिराजी ऐसा कुछ नहीं कर सकतीं. उस पर विदेशों से पैसा लेने या राष्ट्र विरोधी होने का आरोप असल में स्वयं उन के मृत पुत्र संजय की छवि पर ही जा चिपकता है.

मेनका गांधी कभी इंदिरा कांग्रेस का विकल्प बन सकेगी या वह देश की बागडोर संभालने लायक होगी, यह आज कहना कठिन है. हां, इतना अवश्य कहा जा सकता है कि विरोधी दलों की लगातार टूटन के कारण इंदिरा कांग्रेस में जो दंभ पैदा हो गया था, उस के टूटने में अब ज्यादा समय नहीं लगेगा. लोकतंत्र में सब से ज्यादा आवश्यक है ही यह कि कोई भी व्यक्ति या कोई भी दल इतना अधिक शक्तिशाली न बने कि उसे हटाया ही न जा सके.

मेनका इंदिरा कांग्रेस को कमजोर कर के इस प्रकार लोकतंत्र की सब से बड़ी सेवा कर रही है.

कशमीरी सिरदर्द बरकरार

शेख अब्दुल्ला की मृत्यु के बाद नए मुख्य मंत्री फारूख अब्दुल्ला को नियंत्रित कर पाने के केंद्र के सपने धूमिल होते जा रहे हैं. शेख अब्दुल्ला के दौरान जम्मू कशमीर विधान सभा ने एक विधेयक पारित किया था, जिस में यह प्रावधान था कि 1947 में विभाजन के समय जो कशमीरी नागरिक पाकिस्तान चले गए थे, वे, उन की पत्नी/पति या बच्चे यदि अब राज्य में लौटना चाहें तो लौट कर पुनः भारत के नागरिक बन सकेंगे.

जम्मू कश्मीर के राज्यपाल ने हाल ही में यह विधेयक बिना हस्ताक्षर किए विधान सभा को लौटा दिया, क्योंकि उन की दृष्टि में एक तो यह असंवैधानिक है और दूसरे इस के कानून बनने के बाद राज्य और देश की सुरक्षा पर गहरा प्रभाव पड़ेगा.

फारूख अब्दुल्ला की सरकार ने इस विधेयक को समाप्त करने के स्थान पर इसे पुनः विधान सभा में पेश किया जिस ने तत्काल इस का अनुमोदन कर दिया. संविधान के अनुसार यदि कोई विधेयक विधान सभा में दोबारा पेश किया जाता है और विधान सभा उस का अनुमोदन कर देती है तो राज्यपाल की मंजूरी के बिना भी वह कानून बन जाता है. लेकिन चूंकि राष्ट्रपति ने इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय से सलाह लेने का निश्चय किया है, इसलिए जम्मू कशमीर के मुख्य मंत्री ने कहा कि जब तक न्यायालय इस विधेयक को वैध नहीं ठहरा देता, तब तक वह इस पर अमल नहीं करेंगे.

शेख अब्दुल्ला ने यह विधेयक महज केंद्र को परेशान करने के लिए पास कराया था. वह यह सिद्ध करना चाहते थे कि जम्मू कशमीर का भारत के बाकी हिस्सों से अलग स्थान है और उन की अपनी सत्ता को कोई चुनौती देगा तो वह उस का मुंहतोड़ जवाब देंगे.

इस विधेयक का उद्देश्य असल में महज राजनीतिक है. पाकिस्तान में पिछले 35 वर्षों से बसे लोगों का भारत से अब कोई लंबाचौड़ा वास्ता नहीं रहा है. पाकिस्तान और भारत की सीमा केवल अमृतसर के पास ही खुली हुई है और वह भी बीचबीच में बंद हो जाती है. इसलिए पाक अधिकृत कशमीर या पाकिस्तान में बसे थोड़ेबहुत लोग ही घाटी के लोगों से संबंध बनाए रख पाए होंगे.

जो लोग पाकिस्तान में 35 वर्षों से हैं, उन की वहां संपत्ति है, वहां की नागरिकता है, नौकरियां या व्यापार हैं. वे नए स्थान पर क्यों आएंगे, जब कि भारत का कशमीर पाकिस्तान से कोई अधिक खुशहाल तो है नहीं?

यदि हजार दो हजार लोग अपने बिछुड़े परिवारों से मिलने आ भी जाएं तो मानवता की दृष्टि से यह अच्छा ही है और इस से राज्य का कुछ बनताबिगड़ता नहीं. राज्यपाल का यह कहना कि इस कानून का लाभ उठा कर पाकिस्तानी जासूस देश में आ जाएंगे, गलत है क्योंकि यहां आने पर उन्हें पाकिस्तान की नागरिकता छोड़नी पड़ेगी और वे फिर दोबारा पाकिस्तान नहीं जा पाएंगे. दूसरे कोई भी सेना उन जासूसों पर विश्वास नहीं करती जो दूसरे देश में शक की निगाहों से देखे जाते हों.

वास्तव में यह विधेयक उसी परंपरा का हिस्सा है, जिस के अंतर्गत पहले हिंदू राजा और बाद में स्थानीय राजनीतिबाज जम्मू कशमीर को भारत के अंग के रूप में नहीं बल्कि एक अलग स्वतंत्र देश के रूप में देखना चाहते रहे हैं. यह हमारी गलती है कि हम इन 35 वर्षों में जम्मू कशमीर के निवासियों को यह विश्वास नहीं दिला पाए हैं कि भारत में रह कर ही उन के राजनीतिक अधिकार सुरक्षित हैं और वे अपनी आर्थिक समृद्धि व सुखशांति की आशा कर सकते हैं.

विजय का उन्माद?

पश्चिमी बेरूत के दो शरणार्थी शिविरों में लेबनान के ईसाई शस्त्रधारियों द्वारा इजराइल की गुप्त रंजामंदी से एक से तीन हजार निहत्थे व निर्दोष बच्चों, स्त्रियों, बूढ़ों व अन्य नागरिकों की हत्या ने इजराइलियों द्वारा पिछले 70-75 सालों में अर्जित सहानुभूति को दो रातों में ही नष्ट कर दिया. इजराइल इसी सहानुभूति के सहारे अस्तित्व में आया था और इसी के सहारे वह अपने से कई गुना बड़े, कई गुना शक्तिशाली अरब देशों से 1948 से लड़ता चला आ रहा है.

वर्तमान युद्ध में इजराइली सैनिकों ने फिलस्तीनी छापामारों को लेबनान से निकाल बाहर कर अच्छीभली सफलता प्राप्त कर ली थी. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन की हार ने इजराइल विरोधियों के हौसले पस्त कर दिए

थे. यद्यपि वे इजराइल के लेबनान पर आक्रमण की आलोचना कर रहे थे, पर मन ही मन जानते थे कि लेबनान पर फिलस्तीनियों का कब्जा भी उतना ही अवैध था जितना इजराइल का आक्रमण.

जो पश्चिमी देश फिलस्तीनी आतंकवादियों द्वारा विमान अपहरण की घटनाओं, पश्चिमी देशों के शहरों में हत्याओं और बम विस्फोटों से परेशान थे, वे इजराइल की इस सैनिक कारंरवाई पर आंखें मूंद कर एक प्रकार से अपनी सहमति ही व्यक्त कर रहे थे. इजराइल को यह युद्ध बहुत महंगा पड़ा था, फिर भी इजराइली जनता इस बोझ को सहर्ष सहन कर रही थी.

तभी इस कत्लेआम ने स्थिति बदल दी. अमरीका और पश्चिमी देशों में जनमत एकदम इजराइल विरोधी हो गया. स्वयं इजराइल में इस कृत्य की कटु आलोचना हुई और युद्ध के हीरो प्रधान मंत्री बेगिन व रक्षा मंत्री शेरोन की गद्दियां डगमगाने लगीं. उन्होंने इस कांड के प्रति अपनी जिम्मेदारी नकारनी चाही, पर अपनी जनता के दबाव व विश्व जनमत के कारण उन्हें स्वयं एक न्यायिक जांच की आज्ञा देनी पड़ी.

इस जांच का नतीजा इजराइल के वर्तमान नीति निर्धारकों के लिए बहुत कटु हो सकता है, क्योंकि जांच में न्यायाधीश हर तरह के प्रमाण मांग सकते हैं और अधिकारी को शपथ ले कर गवाही देने के लिए बुला सकते हैं.

यह कत्लेआम सिद्ध करता है कि विजय व शक्ति के नशे से बढ़ कर कोई नशा नहीं है. कई युद्धों में विजय पाने व अपने प्रबल शत्रु यासर अराफात को बेरूत से खदेड़ने की सफलता ने इजराइली सैनिक अधिकारियों को इतना उत्तेजित कर दिया कि उन्होंने बेरूत के मुसलिम क्षेत्र में तबाही मचाने के लिए ईसाई शस्त्रधारियों को दावत दे दी.

इजराइल के यहूदी इस तरह के कत्लेआमों को जरमनी में हिटलर के शासनकाल में व इस से पहले भी भुगत चुके हैं और वे जानते हैं कि इन के शिकार परिवारों पर क्या गुजरती है. फिर भी विजय के नशे में वे उसी इतिहास को भूल गए जो उन में से बहुतों की आंखों के सामने खून की स्याही से लिखा गया था.

इजराइल को अब पहले जैसा समर्थन प्राप्त करने में वर्षों लगेंगे. जिस युद्ध को जीतने में उन्होंने सैकड़ों जानें गंवाई और अरबों डालर खर्च किए, उसे उन्होंने अब अपने आप ही विश्व जनमत को अपना विरोधी बना कर पराजय में बदल डाला है.

बेरूत को नया जीवन

बेरूत पर हमलों में जहां हजारों निर्दोष लोगों की हत्याएं हुईं, वहीं इजराइल के कारण आने वाले वर्षों के लिए इस शहर और लेबनान की राजनीतिक समस्याओं का हल भी हो गया लगता है. 1970 के बाद से बेरूत ईसाइयों और मुसलिमों के इलाकों में बंटा हुआ था और आपसी गृहयुद्ध के कारण किसी की जान सुरक्षित नहीं थी.

इजराइल ने फिलस्तीनी छापामारों को निकाल कर इस शहर की बड़ी सेवा की है. अब चूंकि इस में अंतरराष्ट्रीय सेना आ गई है, यह शहर एक बार फिर आतंक, हत्याओं, गोलाबारी से मुक्त हो कर चैन की सांस ले सकेगा.

1970 से पहले पश्चिमी एशिया की पेरिस कही जाने वाली यह नगरी एक बार फिर इस क्षेत्र की आर्थिक व सांस्कृतिक राजधानी बन सकती है.

पूरे पश्चिमी एशिया में आज एक भी ऐसा शहर नहीं है जहां व्यापारी सरकारी कठमुल्लेपन से मुक्त हो कर काम कर सकें. कुवैत और दुबई अन्य अरब शहरों से बहुत अच्छे हैं और इसी लिए अरब देशों का बहुत सा व्यापार इन शहरों में होता है. लेकिन मुख्यतः इसलामी शहर होने के कारण यहां भी रहनसहन और खानेपीने की स्वतंत्रता नहीं है. उदार मुसलमानों, ईसाइयों और अब यहूदियों के कारण बेरूत अपना एक अलग स्थान आसानी से बना सकता है. •

वन्य जीव खत्म हो रहे हैं

लेख • दिनेश तिवारी

वन्य जीवजंतु हमारी सांस्कृतिक गरिमा के प्रतीक हैं. इन का स्मरण होते ही कभी चमकीली आंखें, रोबीले शरीर तथा आकर्षक चित्तियों वाले बाघ की तसवीर आंखों के आगे घूम जाती है तो कभी चौकड़ी भरते हिरनों के झुंडों, मस्ती भरी चाल से एकदूसरे के पीछे जाते हाथियों या पेड़ों की डालियों पर फुदकतेझूलते बंदरों की.

वन्य जीवजंतुओं की संख्या में कमी तथा इन की दुर्लभता के कारण आजकल बहुत से लोग इन को केवल चिड़ियाघरों के बंद पिंजरों या सर्कस में ही देख कर अपनी आंखों की प्यास बुझा लेते हैं. किंतु इन वन्य पशुओं का स्वाभाविक रूप तो संरक्षित व[न] में ही देखने को मिलता है, जहां की प्राकृति[क] सुंदरता तो मन को तरोताजा करती ही है, साथ ही दर्शक अपनेआप को एक रोमांच[क] दुनिया में भी महसूस करता है.

इस समय देश के विभिन्न भागों [में] राष्ट्रीय उद्यान व अभयारण्य हैं. इन्हें स्थापि[त] करने का मुख्य लक्ष्य वन्य जीवजंतुओं [को] सुरक्षा प्रदान करना है, क्योंकि देश में इन [के] शिकार किए जाने, इन्हें उचित संरक्षण प्रा[प्त] न होने तथा लापरवाही आदि के कारण क[...]

वन्य जीवजंतु तो लुप्त हो गए हैं और कुछ की संख्या में निरंतर कमी होती जा रही है.

पर्यटन विभाग की नई विकास नीति के अंतर्गत भविष्य में कई राष्ट्रीय उद्यानों व अभयारण्यों को स्थापित करने की योजना है.

अब तक वन्य जीवजंतुओं के संरक्षण से संबंधित न जाने कितनी योजनाएं बनाई गई हैं और सरकार तथा विदेशों से करोड़ों रुपए की अनुदान की राशि तथा आवश्यक सामग्री

एक ऐसी स्थिति भी आने वाली है जब आप न तो शेर की दहाड़ सुन सकेंगे और न ही चौकड़ी भरते हिरणों को देख सकेंगे. आखिर लगातार खत्म हो रहे इन वन्य जीवों का जिम्मेदार कौन है?
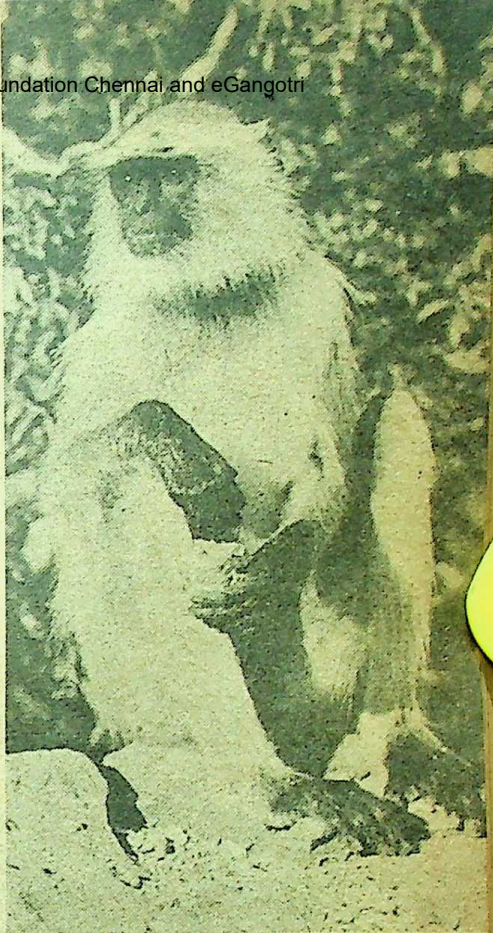
चिड़ियाघर की कैद में हाथी (बाएं) और केरल के पेरियार अभयारण्य में स्वच्छ विचरते हाथियों का एक समूह (दाएं)

का प्रबंध भी किया जा चुका है. लेकिन इस के बावजूद इस दिशा में अब तक किए गए कार्यों के परिणाम बहुत ही असंतोषजनक हैं. वन्य पशुओं का चोरीछिपे शिकार अभी भी हो रहा है.

लेकिन अभयारण्यों, जंतु पार्कों व राष्ट्रीय उद्यानों को देखते हुए यह नहीं कहा जा सकता कि ये प्राकृतिक सुषमा से परिपूर्ण नहीं हैं. यहां का सौंदर्य तो देखते ही बनता है. पेड़पौधों, चारों ओर फैली हरियाली, ठंडीठंडी बयार, स्थानस्थान पर बने जलकुंडों, झरनों व छोटीछोटी नदियों में बहते पानी, विभिन्न वन्य पशुओं के स्वच्छंद विचरण, उन की तरहतरह की आवाजें, मुद्राओं एवं रूपरंग से कोई भी दर्शक अनायास ही मंत्रमुग्ध हो उठता है.

इन स्थलों तक पहुंचने के लिए इन के निकटवर्ती भागों में लगभग 50-100 किलोमीटर की दूरी पर कोई न कोई प्रमुख रेलवे स्टेशन तथा हवाई अड्डा अवश्य है. वहां से सरकारी बसों द्वारा इन स्थलों तक पहुंचा जा सकता है. किसी अभयारण्य या रा उद्यान से 15-20 किलोमीटर की दूरी हरियाली व घने जंगल आरंभ हो जाते हैं परिस्थितियों को विकसित करने का उद्देश्य वन्य पशुओं को प्राकृतिक वाताव प्रदान करना है.

पर्यटन की व्यवस्था

इन स्थलों में आने वाले सैलानि लिए विश्राम गृह बने हुए हैं, जहां खानेपीने की सुविधाएं भी उपलब्ध हैं जाने से पहले वहां रहने के लिए संबंधित अधिकारी से आरक्षण करवाया जा सकत वन्य पशुओं के देखने के लिए हाथियों मोटरगाड़ियों की व्यवस्था भी हो जाती

इन संरक्षित वनों में ऊंचीनी घुमावदार पक्की सड़कें बनी हुई मोटरगाड़ियों में बैठ कर पूरे वन का भ्र किया जा सकता है. कहीं चीतलों का किसी जलाशय में पानी पी रहा होता है कहीं दूर हिरन कुलांचे भरते हुए दिखाई हैं.

कभीकभी तो बहुत ही रोमांचक दृश्य उत्पन्न हो जाता है. जीपों पर भ्र करते समय सड़क पर हाथियों के झुंड आ खड़े हो जाते हैं और वे अपनी सूंडों से कीच भरा पानी जीप पर ही उंड़ेल देते हैं. फिर ही किसी विशाल तालाब में जा कर जलक्री करने में मस्त हो जाते हैं.

यह संरक्षित वन इन के लिए वरदान यहां न तो उन्हें शिकारियों की गोलियों भय होता है, न ही बहेलिए के जाल का. पशुपक्षी स्वच्छंद रूप में विचरण करते

विभिन्न अभयारण्यों व उद्यानों में को देखने का भी प्रबंध है. स्थानस्थान पर या दो मंजिले मचान (वाच टावर्स) बने हु जिस स्थान पर बाघ के आने की संभा होती है, वहां मचान के पास ही बाघ के लि

किसी पाड़े या चौपाए को बांध दिया जाता है. बाघ शिकार की तलाश में जब वहां आता है तो मचान से दर्शक बाघ के शिकार खाने, उस के हावभाव, रूपरंग तथा मस्ती भरी चाल को देखते ही रह जाते हैं और फोटोग्राफी के शौकीन लोग यह सारा दृश्य कैमरे में कैद कर लेते हैं.

सांभर जो दर्शकों को देख कर भागते नहीं बल्कि उन का मनोरंजन करते हैं.
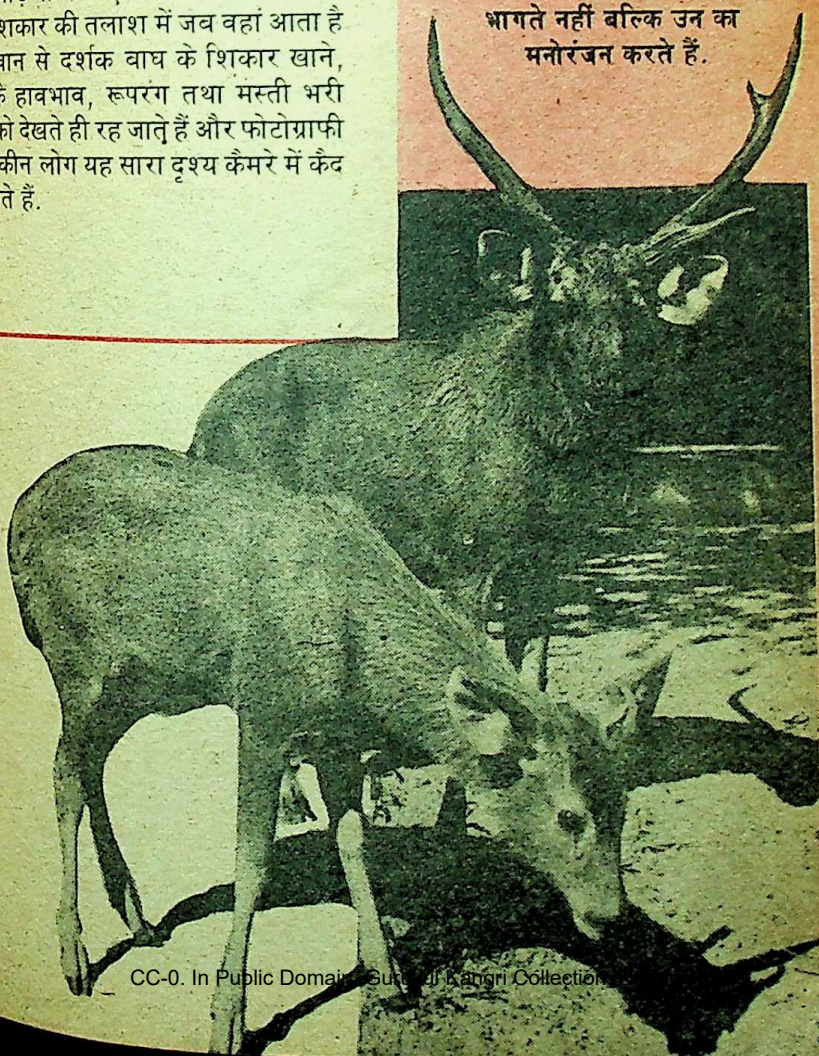
देश के जिन अभयारण्यों में वन्य पशु अपने शरमीले व एकाकी स्वभाव के कारण दिन में बाहर नहीं निकलते, वहां रात के समय जीप में बैठ कर सैर की व्यवस्था है. कभीकभी तो जीप पर लगी स्पाट लाइट की रोशनी देखते ही कुछ वन्य जीवजंतु जीपों के आगे आ कर खड़े हो जाते हैं और जीप के आगेपीछे चहलकदमी कर, जीप को चूमचाट कर या सूंघ कर वापस चले जाते हैं. रात का दृश्य काफी रोमांचकारी होता है. कभी तो बयाबान जंगल में घटाटोप अंधेरा होता है तो कभी दूरदूर तक चांदनी बिखरी होती है.

यहां की प्राकृतिक सुंदरता अविस्मरणीय है. रात की निस्तब्धता में बाघों का गर्जन , प्रातः के समय पक्षियों का कलरव और शीतल पवन भरपूर आनंद और संतोष प्रदान करती है. प्रातःकाल सूर्य की किरणों के फूटने से पहले विश्राम गृहों के सामने 50-60 मीटर की दूरी पर चीतल, हिरण तथा सांभर चरते हुए दिखाई देते हैं.

देश का सब से बड़ा अभयारण्य

जिन स्थलों में झीलों व छोटीछोटी नदियों में जल पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है, वहां नौका विहार की भी सुविधा है.

देश के विभिन्न स्थलों में तापमान, ऊंचाई व जलवायु के कारण भिन्नभिन्न प्रकार की वनस्पतियां व जीवजंतु पाए जाते हैं, वनस्पति के मामले में केरल का पेरियार तथा कर्नाटक का बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान काफी धनी हैं. भारी वर्षा ने पेरियार अभयारण्य को बांस, मसालों व रबड़ के वृक्षों से आच्छादित कर रखा है.

प्रत्येक अभयारण्य व राष्ट्रीय उद्यान अपनी किसी न किसी विशेषता के लिए प्रसिद्ध है. पेरियार अभयारण्य हाथियों के लिए प्रसिद्ध है. यहां तकरीबन हजार बारह सौ हाथी हैं. प्रसिद्ध पेरियार झील में हाथियों की जलक्रीड़ा मंत्रमुग्ध कर देने वाली होती है. यह देश का सब से बड़ा अभयारण्य है.

इसी प्रकार मध्य प्रदेश की सतपुड़ा पहाड़ियों पर बने कान्हा राष्ट्रीय उद्यान को स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य बारहसिं[घे की] तेजी से खत्म हो रही जाति को बचाना [और] उस का विकास करना था. इस समय [यहां] लगभग 100 बारहसिंघे हैं. यह अभया[रण्य] बाघ और चीतल के लिए मशहूर है [और] साथसाथ देश की वन्य पशु संपदा में अग्रणी है.

अन्य अभयारण्यों की विशेषताएं

इसी तरह गुजरात का गीर अभयारण्य सिंहों के लिए प्रसिद्ध है. जिस सिंह गर्जन [को] सुनने के लिए लोग तरसते हैं, वह [यहां] आसानी से सुनी जा सकती है.

भारत-नेपाल सीमा पर 490 किलोमीटर में फैला दुधवा राष्ट्रीय उद्यान देश के उन कुछ स्थलों में से है, जहां [पर] बंगाल नस्ल के विश्वविख्यात बाघों [की] संतानें अभी तक विद्यमान हैं.

इन संरक्षित स्थलों में बाघ, चीता, तेंदुआ, शेर, हाथी, सांभर, मोर, चीतल, हिरन, चिकारा, नीलगाय, बारहसिंघा, जंगली भैंसा, भालू, गैंडा, मगरमच्छ, लंगूर (नीलगिरि के काले लंगूर भी), जंगली बिल्ली, ऊदबिलाव, खरगोश आदि पाए जाते हैं.

भारत में करीब 500 स्तनपायी जातियों के जीव पाए जाते हैं. किंतु इन में [से] बहुत कम ही शेष बचे हैं.

देश में पाए जाने वाले कुछ वन्य जीवजंतु तो ऐसे हैं जो पूरे विश्व में अपने आप में विलक्षण हैं. जैसे बाघ, यद्यपि विश्व [में] बाघों की सात अन्य जातियां भी पाई जाती हैं लेकिन सुंदरता व रूपरंग में उन में [वह] विशिष्टता नहीं है.

इस के अलावा भारत में पाया [जाने] वाला बंदर (जिस की एक जाति लंगूर भी है) बहुत ही अनूठा है. इसी तरह वन्य जंतुओं [में] कस्तूरी मृग का अपना एक अलग स्थान [है]. देश में वन्य पशुओं में हो रही कमी के [लिए] काफी हद तक मानव ही जिम्मेदार है. बढ़ती हुई आबादी और शहरीकरण के कारण मानव ने जंगलों को काट कर उसे रहने [योग्य]

कृषि योग्य बना लिया है. अभी भी जंगलों में मनुष्य की घुसपैठ जारी है, चाहे वह हिमालय की तराई वाला बीहड़ प्रदेश हो अथवा नीलगिरि व पश्चिमी घाट में फैले वनों का इलाका.

वनों के नष्ट हो जाने के कारण वन्य जीवजंतुओं को न तो उचित आश्रय स्थल ही मिल पाते हैं और न ही पर्याप्त भोजन. इसलिए उन में से बाघ जैसे प्राणी या तो नरभक्षी हो जाते हैं या मर जाते हैं और दूसरे जीवों को वनस्पतियों के अभाव के कारण भुखमरी का शिकार होना पड़ता है.

दूसरी ओर अपने यहां अभी शिकार करने की भी प्रवृत्ति कम नहीं हुई है. पहले तो बड़ेबड़े बयाबान जंगल राजामहाराजाओं की शिकारगाह हुआ करते थे. उस समय राजामहाराजा और नवाब शिकार की प्रतियोगिताएं आयोजित करते थे और अपनी झूठी शान बघारने के लिए दोचार शेर, चीतों का शिकार किए बिना उन्हें चैन ही नहीं मिलता था. अंगरेजों के समय में भी शिकार की यह परंपरा कायम रही और उन्होंने भी वन्य जीवजंतुओं के संहार में कोई कसर नहीं रखी.

आजकल शिकार शौक के रूप में तो नहीं, लेकिन पैसे के लालच में चोरीछिपे अवश्य किया जाता है, क्योंकि वन जंतुओं की खालों की विदेशी बाजारों में खूब मांग रहती है और इन की कीमत भी अच्छी मिल जाती है. प्रतिबंध के कारण यह भी तस्करी की एक विशिष्ट वस्तु बन गई है.

वन्य जीवजंतुओं के संरक्षण और उन की वंश वृद्धि के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू की हैं. इन योजनाओं में सब से महत्त्वपूर्ण है—बाघ परियोजना (टाइगर प्रोजेक्ट), जिसे 1 अप्रैल 1973 से उत्तर प्रदेश

गैंडा प्रायः हर संरक्षण गृह में पाया जाता है.
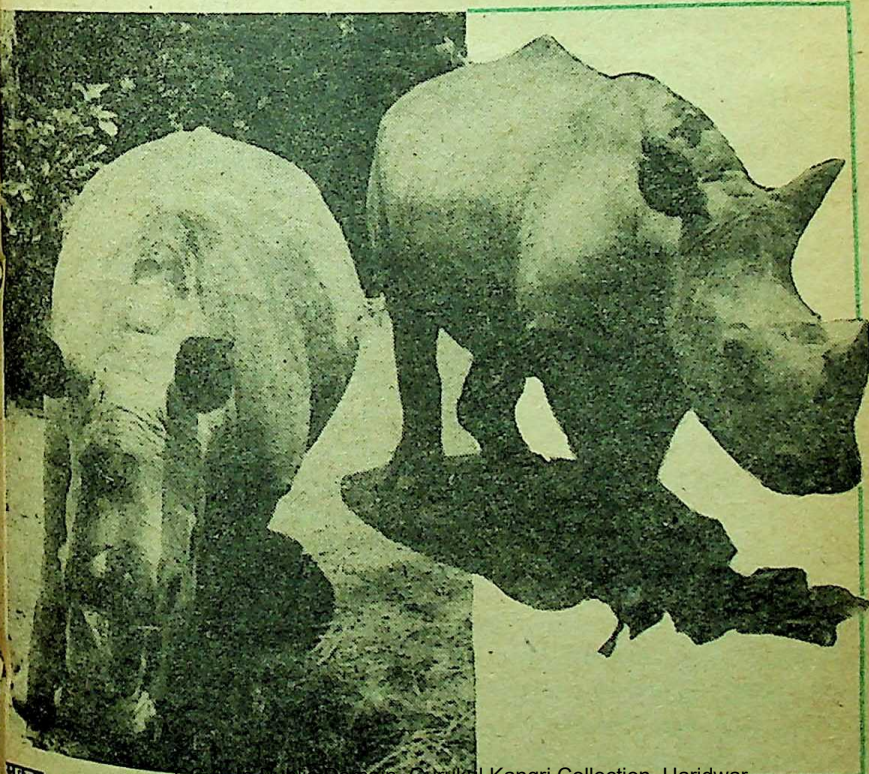
गीर अभयारण्य (गुजरात) जहां सहज रूप से शेरों को देखा जा सकता है लेकिन अब यह नस्ल भी धीरेधीरे खत्म होती जा रही है.

के कार्बेट नेशनल पार्क में आरंभ किया गया था. उस समय इस योजना के लिए सरकार ने चार करोड़ रुपए का अनुदान दिया था. इस बाघ परियोजना का उद्देश्य बाघों की रक्षा करने के साथसाथ अन्य वन्य जंतुओं की सुरक्षा, उन के रहने के लिए अनुकूल स्थान तथा स्वच्छंद वातावरण आदि का प्रबंध करना है.

इस समय देश में कुल मिला कर 11 बाघ संरक्षण केंद्र हैं—मानस अभयारण्य (असम), पालामऊ राष्ट्रीय उद्यान (बिहार), सिमलीपाल राष्ट्रीय उद्यान (उड़ीसा), कार्बेट राष्ट्रीय उद्यान (उत्तर प्रदेश), रणथंभोर अभयारण्य (राजस्थान), कान्हा राष्ट्रीय उद्यान (मध्य प्रदेश), मेलघाट अभयारण्य (महाराष्ट्र), बांदीपुर राष्ट्रीय उद्यान (कर्नाटक), सुंदर वन (पश्चिम बंगाल), पेरियार अभयारण्य (केरल) तथा सिरस्का अभयारण्य (राजस्थान).

सरकारी कानून

हाल ही में बाघ परियोजना की संचालन समिति ने कुछ और संरक्षण केंद्र स्थापित करने का निश्चय किया है. परियोजना के निदेशक श्री पवार के अनुसार नामडाका (अरुणाचल प्रदे[illegible] नागार्जुनसागर (आंध्र प्रदेश), इंद्रावती (म[illegible] प्रदेश) तथा बक्सा (पश्चिम बंगाल) में [illegible] और संरक्षण क्षेत्र बनाने का निश्चय कि[illegible] गया है. इस तरह इन की संख्या 11 से बढ़[illegible] 15 हो जाएगी और इस के अंतर्गत आने [illegible] क्षेत्र 15,008 वर्ग किलोमीटर से बढ़ [illegible] 24,600 वर्ग किलोमीटर हो जाएगा. [illegible] परियोजना समस्त वन्य प्राणियों में किसी [illegible] प्राणी की जाति को संरक्षण प्रदान करने [illegible] लिए बनाई गई सभी परियोजनाओं में सब[illegible] महंगी व महत्त्वपूर्ण है.

पर इस संबंध में यह उल्लेखनीय है [illegible] जहां एक ओर सरकार वन्य जीवजंतुओं [illegible] संरक्षण और शिकार से संबंधित कानून [illegible] रही है, वहीं दूसरी ओर उच्च सर[illegible] अधिकारी व कर्मचारी ही धड़ल्ले के साथ [illegible] का उल्लघंन कर रहे हैं.

वन्य जीवजंतुओं के शिकार से संबं[illegible] एक मामला पिछले दिनों उत्तर प्रदेश [illegible] प्रकाश में आया था. मुरादाबाद व बिजनौ[illegible] कुछ प्रशासनिक व पुलिस अधिकारि[illegible] नैनीताल के निकट कार्बेट राष्ट्रीय उद्या[illegible] अवैध रूप से प्रवेश किया और हिरनों के [illegible] झुंड पर पांच गोलियां चलाईं. जिन में [illegible]

हिरन मर गया और एक घायल हो गया. यहां यह उल्लेखनीय है कि यह उद्यान बाघ परियोजना के अंतर्गत आता है. साथ ही वन्य प्राणी अधिनियम के अनुसार यहां के किसी भी जीवजंतु का शिकार करना या उस पर गोली चलाना अपराध है. किंतु इन उच्च अधिकारियों ने इस की कोई परवाह नहीं की.

हिरनों पर गोली चलने के कुछ ही देर बाद थोड़ी दूरी पर कालागढ़ झील में कपूरथला के कुंवर मछलियों का शिकार करते हुए देखे गए. उन के साथ वन विभाग के एक गार्ड के अतिरिक्त लंदन टाइम्स का संवाददाता भी था. सरकार ने दोषी अधिकारियों का केवल तबादला कर के ही अपने कर्तव्य से मुक्ति पा ली.

कभीकभी बाघों को भी नरभक्षी बता कर वन अधिकारी ही उन्हें मार देते हैं. संदेह किया जाता है कि पिछले दिनों दुधवा नेशनल पार्क में नरभक्षी बाघिन तारा को इसी तरह मारा गया था.

भुखमरी के शिकार जीवजंतु

राजस्थान के एकमात्र पर्वतीय स्थल माउंट आबू में दिन प्रति दिन पेड़ों की अनापशनाप कटाई हो रही है. जिस का परिणाम यह है कि इस क्षेत्र के वन्य जीवजंतु भुखमरी के शिकार हो रहे हैं. तेंदुए गांवों के कुत्तों और चौपायों को ही अब अपना शिकार बना रहे हैं.

एक समय था जब यहां चीतल, हिरन, चिकारा घूमते थे. लेकिन अब तेंदुए भूखे घूम रहे हैं. चीते तो यहां से गायब ही हो गए हैं. पिछले दिनों जब एक भूखा बाघ शिकार की तलाश में भटक रहा था, तब वन विभाग के कर्मचारियों ने उसे पकड़ लिया और एक पिंजरे में बंद कर दिया.

लुप्त होते वन्य पशुओं में से शेष बचे अधिकांश बीमारियों से ग्रस्त हैं.

वन्य जीवजंतुओं की मृत्यु पर भारतीय पशु चिकित्सा शोध संस्थान, आइजट नगर, बरेली ने एक सर्वेक्षण किया था. बाद में उस की एक रिपोर्ट में कहा गया था कि अधिकांश

दूर तक देखती चौकन्नी आंखें

जंतु क्षय व अन्य गंभीर बीमारियों से ग्रस्त हैं.

देश के पांच राज्यों में 15 जंतु पार्कों, दो राष्ट्रीय पार्कों, आठ वन्य पशु अभयारण्यों तथा संरक्षित वनों में पशुओं की शल्य क्रिया की रिपोर्ट का अध्ययन किया गया था. जिस में बताया गया था कि चिड़ियों व तमाम जातियों के जानवरों की मौत क्षय रोग के कारण हुई है.

दीवाली विशेषांक

नवंबर (द्वितीय) 1982

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी दीवाली के खूबसूरत मौके पर विशेष सजधज के साथ आ रहा है— नन्हे नागरिकों के मनोरंजक पाक्षिक चंपक का उतना ही खूबसूरत दीवाली विशेषांक.

अपनी प्रति
आज ही सुरक्षित कराएं

100 पृष्ठों के इस आकर्षक विशेषांक में हमारे नन्हेमुन्ने पाठकों को पढ़ने को मिलेंगी– रंगबिरंगे चित्रों से सजीधजी डेढ़ दरजन से भी अधिक मनोरंजक एवं शिक्षाप्रद कहानियां.

इस के अलावा 'दूर की सूझ,' 'चीकू,' 'चुंचू,' 'पिंटू और मोती' तथा 'पप्पू' जैसी मजेदार चित्रकथाओं के साथसाथ होंगे ज्ञान बढ़ाने वाले स्तंभ–150 रुपए के पुरस्कार वाली 'ज्ञान बढ़ाओ चित्र पहेली' एवं 'खेल का समय.' इस बार 'देशदेश से' स्तंभ में हम बच्चों को मेक्सिको की सैर कराएंगे.

मूल्य : 2.50 रुपए
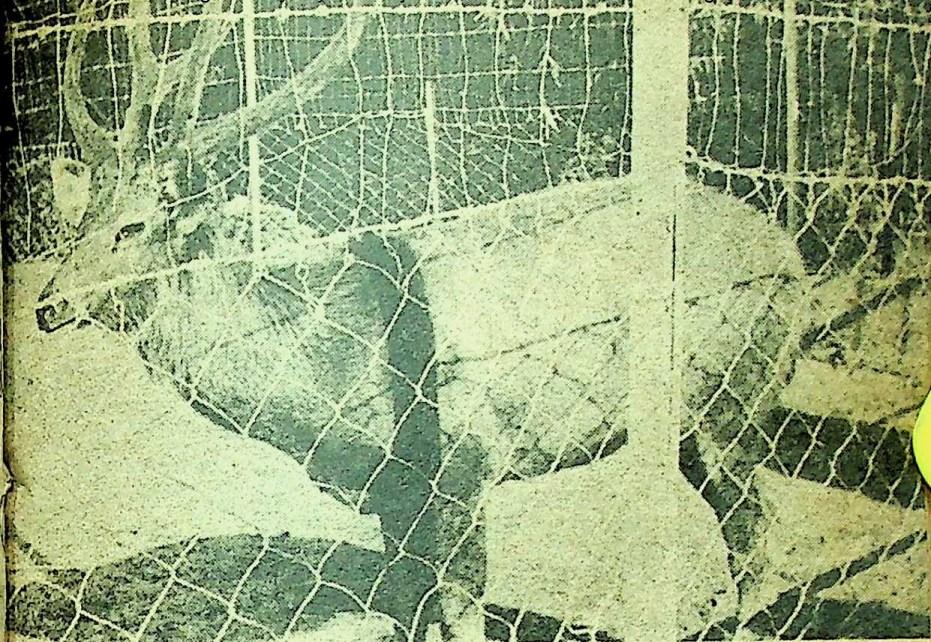
चिड़ियाघर: संरक्षण के नाम पर कितना संरक्षण.

यह रोग चीतल, बंदर, शेर, काले हिरन व रीछ आदि में कुछ अधिक ही पाया जाता है. क्षय रोग के अतिरिक्त प्लेग व संग्रहणी रोग भी इन की मौत के कारण हैं.

चीते व शेर की मौत के लिए फेलाइन नामक एक विषाणु काफी हद तक जिम्मेदार है. दिल्ली के चिड़ियाघर में एक पाड़े को केनाइन डिस्टेंपर नामक बीमारी थी और अधिकांश पाड़ों में कृमि रोग फैला हुआ है.

सरकारी रवैया

अब आवश्यकता इस बात की है कि वन्य जीवजंतुओं के संरक्षण व उन के विकास के लिए स्थापित किए गए अभयारण्यों, जंतु व राष्ट्रीय उद्यानों की देखरेख पर सरकार विशेष ध्यान दे. मिसाल के तौर पर उन के रहने के लिए उचित स्थानों का विकास किया जाए और वहां मनुष्यों के जाने पर पूर्णतया पाबंदी हो ताकि वन्य जीवजंतु अपना स्वाभाविक जीवन जी सकें. इस से जलाऊ व इमारती लकड़ी की कटाई में भी रुकावट आएगी और चोरीछिपे वन्य जीवों का शिकार करने की संभावना भी कम हो जाएगी.

बाघों के अलावा अन्य जंतुओं के लिए शाकाहारी भोजन का प्रबंध होना चाहिए. अक्सर देखने में आता है कि गरमी के दिनों में इन स्थलों में वनस्पतियां कम हो जाती हैं और पशुओं को चारे के लिए इधरउधर भटकना पड़ता है. बीमारी से पीड़ित वन्य जीवजंतुओं को किसी भी कीमत पर मरने नहीं देना चाहिए.

सरकार के साथसाथ आम नागरिकों का भी कर्तव्य है कि वे इस ओर ध्यान दें. उन्हें समझना चाहिए कि वन्य जीव देश के लिए कितने महत्त्वपूर्ण हैं.

यदि वनों की कटाई, वन्य पशुओं का शिकार पैसे की भूख और लालच के कारण होता रहा तो शायद भावी पीढ़ियां चिड़ियाघरों तक में वन्य जीवों को देखने के लिए तरस जाएंगी. •

बाल मजदूर: कितने मजबूर

लेख • चंद्रकुमार मिश्र

कुछ वर्ष पूर्व परीक्षा कार्य हेतु पूर्वी उत्तर प्रदेश के मऊ कसबे में जाना पड़ा. यह कसबा हथकरघे के कपड़ों और गलीचों के लिए मशहूर है. परीक्षा कसबे के एक गांव में स्थित स्कूल में लेनी थी. परीक्षा का समय

स्कूल की जगह रोजीरोटी के लिए जुटे बाल मजदूरों ने आज यह पूरी तरह साबित कर दिया है कि वोट बटोरने वाली सरकार सिवा गरीबी और भुखमरी के देश को क्या दे रही है?
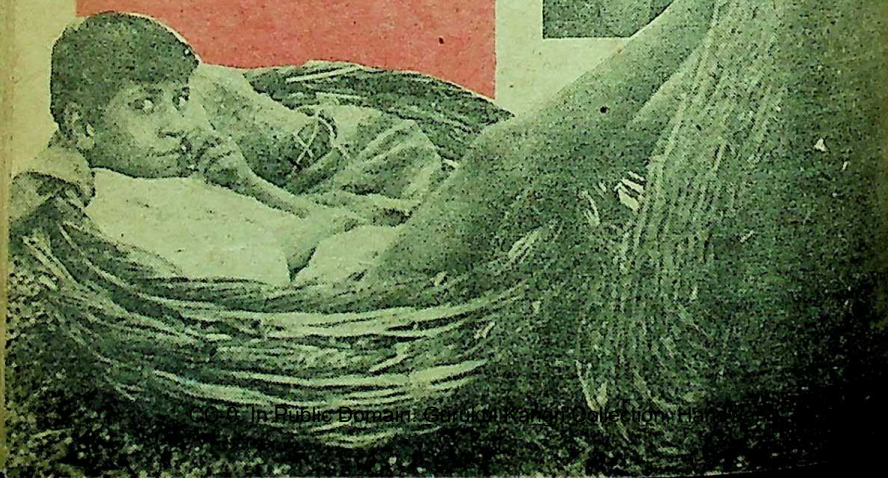
प्रातः 8 बजे का निर्धारित किया था, किंतु उस स्कूल के संबद्ध अध्यापक ने उस समय परीक्षा प्रारंभ करा सकने में असमर्थता व्यक्त की. उन का कहना था कि विद्यार्थी दूरदराज गांवों से आते हैं, अतएव 10 बजे से पहले परीक्षा प्रारंभ न करा सकेंगे. इस बात से बड़ा आश्चर्य हुआ. परंतु परीक्षार्थियों की सूची देख कर तो हतप्रभ ही रह गया. मऊ का वह हिस्सा मुसलिम बहुल है, किंतु वह स्कूल हिंदुओं द्वारा संस्थापित तथा संचालित है और उस में पढ़ने वाले विद्यार्थी भी हिंदू हैं. पूछने पर ज्ञात हुआ कि मुसलमान बालकों को तो

काम कर रहे हैं, परिवार की आय में वृद्धि कर रहे हैं, यह पिता के लिए सुख है. बालकों के श्रम से निर्मित वस्तुएं सस्ती होती हैं, यह उपभोक्ता के लिए अच्छा है और निर्माता व व्यापारी के तो ठाठ हैं. तो बच्चे इस उद्योग की

माचिस के सहारे पलती छोटी सी उम्र.

कुछ बच्चों को मजदूरी विरासत में भी मिलती है.

बचपन से ही करघे और उस से संबंधित कामों में लगा दिया जाता है. पढ़ाई के नाम पर गांव की मसजिद का मौलवी सायंकालीन कक्षाओं में जो कुछ पढ़ा देता है, वही पढ़ लेते हैं.

"अजी साहब, उन्हें पढ़ने की क्या जरूरत, वे तो बचपन से ही कमाते हैं. एकएक जुलाहे की चारचार बीवियां और उन से ढेरों बच्चे, जुलाहे के भी ठाठ और बच्चों के भी." प्राचार्य ने व्यंग्य करते हुए कहा.

बचपन से ही कमाना, कितना अच्छा प्रतीत होता है. पुत्र, पुत्रियां सभी पिता का
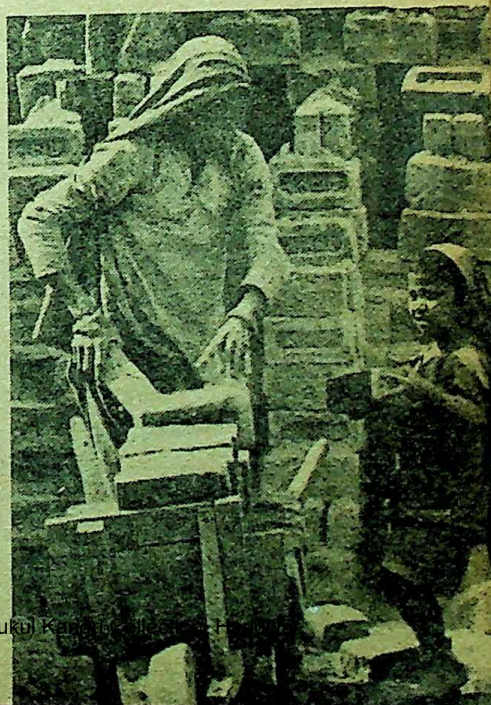
रीढ़ की हड्डी हैं. लेकिन बालक...

मैं ने स्वयं देखा है, चार से चौदह वर्ष के बालकबालिकाएं करघों पर उन के इर्दगिर्द काम करते रहते हैं. छोटेछोटे बच्चे रुई और ऊन को साफ करते या लच्छियां बनाते मिले. पीली और निस्तेज आंखों, दुबले हाथपैरों तथा बढ़े पेट के स्वामी ये बच्चे इधरउधर मशीनी गुड्डों की तरह हरकतें करते, भारतीय संविधान का उपहास उड़ाते, बाल श्रम संबंधी नियमों पर व्यंग करते हुए जीवन को कड़वे घूंट की तरह पीते रहते हैं.

बाल श्रमिक समस्या एक अंतरराष्ट्रीय समस्या है. वर्तमान में यद्यपि यूरोप, अमरीका, आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैंड में 15 वर्ष से कम आयु के बालक श्रमिक की भांति कार्य नहीं करते हैं, किंतु पश्चिमी एशिया, दक्षिणी अमरीका और दक्षिण पूर्वी एशिया में बाल श्रमिकों की संख्या बहुत है. ये विश्व के कुछ श्रमिकों का दस प्रतिशत हैं. यहां के बाल श्रमिक सभी प्रकार के उद्योगों, कृषि तथा कारखानों में कार्य करते हैं.

भारत में भी बाल श्रमिक समस्या काफी पुरानी है. अंगरेजी शासन के प्रारंभ से ही बालक विभिन्न प्रकार के कारखानों में कार्य करते चले आ रहे हैं. अंगरेजी शासन के प्रारंभिक वर्षों में बाल श्रमिक लगभग 14 घंटे काम करने के पश्चात एक आने (छः पैसे) का हकदार होता था. राष्ट्रीय संग्रहालय (नई दिल्ली) में प्रदर्शित चित्रों तथा अभिलेखों से उक्त तथ्य उजागर होता है.

प्रदर्शनी के अनुसार लार्ड रिपन ने सन 1881 में बालश्रम को नियंत्रित करने के लिए कानून बनाए. इन नियमों के अनुसार किसी भी कारखाने में 7 वर्ष से कम आयु के बालक कार्य नहीं कर सकते थे तथा उन से भी कुल 8 घंटे कार्य लिया जा सकता था.

सन 1887 में बालकों की आयु निर्धारण के लिए नियम बनाया गया. इन नियमों का आधार उन के दांत थे. नियम के अनुसार यदि बालक के 28 दांत हैं या 24 निकले हुए तथा चार दांत निकल रहे हैं तो बालक 12 वर्ष का है. यदि केवल 24 दांत हैं तो शारीरिक अवस्था से ज्ञात कि[illegible] सकता है कि वह 12 वर्ष का है या नहीं[illegible] जन्मकुंडली को सही आधार नहीं मान[illegible] था.

बाल श्रमिकों के कार्य की परिस्थि[illegible] की जांच के लिए गठित लेथब्रिज आ[illegible] एक बालक जफर खां की गवाही का [illegible] किया है. जफर खां के अनुसार कारखा[illegible] बालकों को शारीरिक दंड देने वाले[illegible] मुकद्दम कहा जाता था. कारखाने [illegible] जगहजगह कोनों में छोटीछोटी डंडियां [illegible] रहती थीं, जिन से बालकों को पीटा जात[illegible] जफर खां के अनुसार उसे प्रति सप्ताह [illegible] आने मिलते थे, किंतु अनुपस्थिति होने प[illegible] आने का दंड भुगतना पड़ता था.

प्रदर्शनी के अभिलेखों के अनुसार [illegible] 1905 में भारत में 16,000 बाल श्र[illegible] विभिन्न कारखानों में कार्य करते थे. इन[illegible] आधे तो प्रातः 5 बजे ही काम पर पहुंच [illegible] थे.

यद्यपि सन 1905 से 1979 तक भा[illegible] में श्रम कानून में अनेक महत्त्वपूर्ण परिव[illegible] हुए, यहां तक कि उस का स्वरूप ही ब[illegible] गया, किंतु बाल श्रमिकों की दशा में [illegible] विशेष परिवर्तन नहीं हुआ. एक प्र[illegible] अंगरेजी दैनिक में प्रकाशित एक लेख [illegible] अनुसार तमिलनाडु राज्य के रामनाथपु[illegible] जिले के शिवकाशी नामक कसबे में [illegible] श्रमिकों का कार्य दिवस रात 2 बजे [illegible] आरंभ हो कर सायंकाल 6 बजे समाप्त ह[illegible] है. इन बाल श्रमिकों को उन के मातापिता [illegible] अभिभावक रात 2 बजे तैयार रखते हैं. [illegible] शिवकाशी कारखानों की बसें घरों से ले ज[illegible] हैं.

घुटनों चलतेचलते मजूदरी

शिवकाशी आतिशबाजी, दियास[illegible] तथा कैलेंडरों के लिए देश भर में विख्यात [illegible] वहां लगभग 40,000 बच्चे काम करते हैं[illegible] जिन की आयु 14 वर्ष से कम है. सब से [illegible] तथ्य तो यह है कि इन में लगभग 8,000 ब[illegible] 2 से 5 वर्ष की आयु के हैं. इन में से कुछ [illegible]

श्रमिक तो ऐसे हैं जो कारखानों में चलते चलतेचलते वहीं काम करने लगते हैं. ये बाल श्रमिक 26 पैसे प्रतिदिन से ले कर तीन रुपए प्रतिदिन तक कमाते हैं.

कारखानों के अलावा बाल श्रमिकों को नियोजित करने वाले मुख्य धंधे चाय बागान, चाय की दुकानें, ढाबे, भोजनालय, स्कूटर, साइकिल इत्यादि की मरम्मत की दुकानें, मोटर धोने तथा मरम्मत की वर्कशाप, हथकरघे, बिजली चालित करघे, गलीचा बुनाई केंद्र, ऊनी कपड़े के बुनाई केंद्र इत्यादि हैं.

स्टेशन पर नाजायज सामान ढोना, रेलगाड़ियों में सामान बेचना, चोरीचकारी में सहायता करना, बूट पालिश करना, रद्दी कागज तथा पुराना सामान इकट्ठा करना आदि कुछ और धंधे हैं, जिन में बालक लगे हैं. भीख मांगने का धंधा भी मुख्यत: बच्चों पर ही आधारित है. घरों में भी बहुत से बालक घरेलू नौकर का काम करते हैं, किंतु उन की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी है.

यद्यपि यह सर्वेक्षण का विषय है, किंतु शायद देश में भोजन संबंधी कार्यों तथा कताईबुनाई में सब से अधिक बाल श्रमिक लगे हुए हैं.

एक सर्वेक्षण के अनुसार लगभग देश में 2.30 करोड़ बाल श्रमिक हैं. ये बाल श्रमिक अपने परिवार की आय का 23 प्रतिशत कमाते हैं. लगभग 5 प्रतिशत बाल श्रमिक अमानवीय परिस्थितियों में कार्य करते हैं. आंध्र प्रदेश में बाल श्रमिकों की संख्या सब से अधिक है. आंध्र प्रदेश के बाल श्रमिक देश के कुल श्रमिकों के 9.03 प्रतिशत हैं. आंध्र के बाद कर्नाटक (7.94 प्रतिशत) राजस्थान (7.29 प्रतिशत), मध्य प्रदेश (7.27 प्रतिशत), उड़ीसा (7.18) का नंबर आता है. केवल उत्तर प्रदेश में लगभग छ: लाख ऐसे बाल श्रमिक हैं, जो कृषि क्षेत्र में कार्य करते हैं.

बाल कल्याण परिषद के अनुसार दिल्ली में भी लगभग 21,000 बाल श्रमिक हैं. जिन में आधे 12 घंटे से अधिक कार्य करते हैं. जैसा कि आप जानते हैं, बाल श्रमिक 26

दैनिक उपयोग के बड़ेबड़े काम जो इन नन्हे हाथों से होते हैं.

पैसे प्रतिदिन से चार रुपए प्रतिदिन तक कमाते हैं. यहां पर यह ध्यान देने की बात है कि इस शताब्दी के प्रारंभ में बाल श्रमिकों को जो पारिश्रमिक मिलता था, उस से कहीं कम (वास्तविक मूल्य के संदर्भ में) आज मिलता है. रद्दी तथा अन्य व्यर्थ पदार्थों को एकत्र करने वाले बच्चे अन्य बाल श्रमिकों की अपेक्षा कुछ अधिक कमाते हैं.

इस समस्या का एक और विशेष सामाजिक पहलू है. बालक प्रायः मां, बाप अथवा बड़ों के डांटने, दंड देने, भूखे रहने अथवा किसी विशेष क्षेत्र (फिल्म आदि) के लिए फुसलाए जाने के कारण अपना घर छोड़ कर शहरों की ओर भागते हैं. इन बालकों से प्रायः भीख मंगवाई जाती है अथवा भीख तथा चोरी और अन्य नाजायज काम करवाए जाते हैं. इन में से अनेक बालक होटलों, ढाबों में बरतन साफ करने, सब्जी काटने, मसाला पीसने आदि के छोटेमोटे काम करते हैं... में उन्हें बचाखुचा भोजन, फटे पुराने... और सोने की जगह मिल जाती है... और ढाबों में काम करने वाले बच्चों... बाकायदा खरीदफरोख्त तक होती है... समस्या बंधुआ मजदूरों से भी अधिक... है. घर से भागे बच्चे या फुसलाए गए... अकसर बड़े शहरों—विशेषकर इलाहा... वाराणसी तथा कलकत्ता में पहुंचाए ज... और वहीं उन की बिक्री की जाती है.
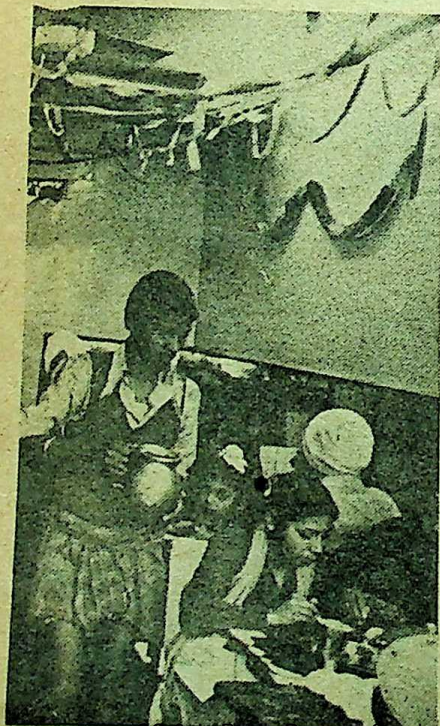
दूसरों की सेवा पर टिकी होटल की जिंदगी.

कानून से नियंत्रण

18वीं शताब्दी के अंत में इंगलैं... बाल श्रम को नियंत्रित करने के... शक्तिशाली आंदोलन चला. इस आंदोलन... फलस्वरूप वहां सन 1802 में बाल... नियंत्रण कानून बना. किंतु नियमों का पा... न करवाया जा सका, क्योंकि नियंत्रण क... वाली व्यवस्था का कोई प्रावधान उन नि... में न था.

सन 1833 में इन नियमों में संशो... कर फैक्टरी निरीक्षकों की व्यवस्था की... और बाल श्रम नियमों का कड़ाई से पा... किया जाने लगा. फलस्वरूप वहां ब... श्रमिक समस्या लगभग समाप्त हो गई.

इसी प्रकार संयुक्त राज्य अमरीका... भी 20 वीं सदी के आरंभ में बाल श्रमिकों... समस्या के समाधान के लिए व्याप... आंदोलन हुआ तथा वहां सन 1920 से ब... श्रमिकों की संख्या में कमी प्रारंभ हो गई... 1938 में 'फेयर लेबर स्टैंडर्ड एक्ट' (उ... श्रम मापदंड कानून) बनने से बाल श्रमि... की समस्या लगभग समाप्त हो गई... नियमों के अनुसार 14 वर्ष का बालक स्... की पढ़ाई के उपरांत श्रमिक हो सकता है... 16 वर्ष का बालक स्कूल में भी श्रमिक... सकता है.

भारत में सर्वप्रथम लार्ड रिपन ने ... 1881 में बाल श्रमिक नियम बनाए... नियमों के अनुसार सात वर्ष से कम आयु... बाल श्रमिकों को नौकरी देने पर प्रति... लगा दिया गया, किंतु सात वर्ष से 12 व...

जोखिम भरा काम पर अभ्यस्त हाथ.

बालकों को श्रमिक के रूप में मान्यता दे दी गई. बाल श्रमिकों से 8 घंटे कार्य करवाया जा सकता था, जो सन 1934 के नियमों के अनुसार 5 घंटे कर दिया गया.

सन 1891 में बाल श्रमिकों की आयु का फिर से निर्धारण हुआ और 9 वर्ष से 14 वर्ष तक के बालक श्रमिक माने गए. कार्य की अवधि भी 7 घंटे प्रतिदिन कर दी गई. रात्रि में काम करवाना भी अवैध करार दिया गया. ये नियम तो बने, लेकिन इन का पालन करने के लिए विशेष प्रयास नहीं किए गए. अतएव नियम केवल कागज पर ही बने रहे. सन 1929 में व्हिट्ले आयोग ने स्वीकार किया कि देश में केवल 29 फैक्ट्री निरीक्षक हैं जो नियमों का पालन करवाने में असमर्थ थे. स्वयं व्हिट्ले आयोग ने फैक्ट्रियों में 5 वर्ष के बालकों को 12 घंटे तक कार्य करते देखा था.

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरांत भारतीय शासकों ने भारतीय संविधान में बाल श्रमिकों के लिए उचित व्यवस्था की. अनुच्छेद 24 के अनुसार 14 वर्ष की आयु से कम के बच्चे श्रमिक नहीं हो सकते हैं. किंतु लगभग 250 केंद्रीय तथा राज्य कानूनों के बन जाने पर भी इस समस्या का समाधान अभी तक संभव नहीं हो सका.

सन 1948 में पारित नियमों के अनुसार किसी भी फैक्ट्री में जिस में दस या अधिक श्रमिक हों, ऐसे श्रमिक को नौकरी पर नहीं रखा जा सकता, जिस की आयु 14 वर्ष से कम हो. इस के अतिरिक्त उस के कार्य में समर्थ होने का प्रमाण पत्र भी आवश्यक हैं. एक अन्य नियम के अनुसार रेलवे या अन्य परिवहन प्राधिकरणों के द्वारा 15 वर्ष से कम आयु के बालकों को नौकरी पर लगाना अवैध करार दिया गया.

14 वर्ष से कम आयु के बालक, बीड़ी बनाने, गलीचे बुनने, दियासिलाई, विस्फोटक पदार्थों, आतिशबाजी, अभ्रक, लास, साबुन, चमड़ा, रंगाई तथा लकड़ी के कारखाने में काम के लिए भी अयोग्य घोषि किये गए हैं.

आयु नियंत्रण के अतिरिक्त रात में काम करवाना तथा हानिकारक व्यवसायों में बालकों को लगाना भी दंडनीय अपराध करार दिया गया है. इन नियमों को तोड़ना दंडनीय अपराध है तथा जुर्माना और कैद

दोनों ही हो सक[illegible]
तथा सेवायोजक दोनों ही हैं.

सरकारी आंकड़े

यदि सरकारी आंकड़ों को सही माना जाए तो गत 30 वर्षों में पंजीकृत फैक्ट्रियों में बाल श्रमिकों की संख्या में भारी कमी आई है. जहां सन 1948 में कुल श्रमिकों में बाल श्रमिकों की संख्या 0.48 प्रतिशत थी वहां 1970 में यह 0.05 प्रतिशत रह गई.

पर स्वयं भारत सरकार के श्रम मंत्रालय ने इन आंकड़ों को विवादास्पद माना है, क्योंकि ये आंकड़े फैक्ट्रियों से प्राप्त रिपोर्टों पर आधारित होते हैं. बाल श्रम नियमों से बचने का हर फैक्ट्री मालिक का ढंग निराला ही होता है. सामान्यतः ऐसे श्रमिकों का लेखाजोखा नहीं रखा जाता है. यदि रखा भी जाता है तो बाल श्रमिकों की आयु को बढ़ाचढ़ा कर लिखा जाता है. यदि कभी निरीक्षण होता है तो इन बच्चों को पीछे के दरवाजे से बाहर निकाल दिया जाता है. निरीक्षकों की सांठगांठ से भी बाल श्रमिकों को रखा जाता है. अतएव केवल कानून के द्वारा समस्या का समाधान संभव नहीं है. हां, इस से भ्रष्टाचार में वृद्धि जरूर की जाती सकती है.

समस्या का स्वाभाविक समाधान

बाल श्रमिकों की समस्या का मूल कारण गरीबी है. बाल श्रमिकों के मातापिता मजबूर हो कर ही अपने बालकों को काम पर भेजते हैं. तमिलनाडु के तीन मुख्य नगरों में हुए सर्वेक्षण के अनुसार 35 प्रतिशत बाल श्रमिक ऐसे हैं, जिन के परिवार की आय 300 रुपए वार्षिक से भी कम है तथा 72 प्रतिशत बालक अपने परिवारों के लिए आय के स्रोत हैं. अतः जब तक रोटी का प्रश्न हल नहीं होता, बाल श्रमिकों की समस्या मुंह बाए खड़ी रहेगी. अनाथ बच्चे या फुसलाए गए बच्चों की समस्या का हल कठिन नहीं है, अनेक समाजसेवी संस्थाएं इस दिशा में कार्य कर रही हैं. मुख्य समस्या तो उन बाल श्रमिकों की है, जो मातापिता या अभिभावक [illegible] से काम करते हैं.

इस समस्या का समाधान घरेलू उ[द्योग] लगाने से भी हो सकता है. यद्यपि यह स[ही है] कि बालकों को तो तब भी काम करना पड़े[गा] किंतु मातापिता अपने बालकों से उतना काम लेंगे, जितना उन से आसानी से संभव [हो] तथा जो अतिरिक्त आय होगी वह उन्हीं [की] सुखसुविधाओं पर व्यय होगी. वैसे अपवाद होंगे ही, फिर भी मानवीय गुणों पर विश्वास किया जा सकता है.

प्रश्न यह है कि ऐसे कौन से उद्योग जो गरीब परिवार लगा सकते हैं तथा उन[के] लिए आवश्यक धन, कच्चा माल, औ[जार] तथा दक्षता कैसे पा सकते हैं. यह प्रश्न [बड़ा] विकट है. इस प्रश्न के अतिरिक्त सब से व[ड़ा] प्रश्न तैयार माल की बिक्री का है. [एक] समाचार के अनुसार चंदेरी के, जहां [की] साड़ियां मशहूर हैं, कारीगर भूखों मरने [की] स्थिति में हैं, क्योंकि उन्हें अपने श्रम का [मूल्य] बहुत कम मिलता है. उस का काफी बड़ा [भाग] बिचौलिए (व्यापारी) खा जाते हैं.

फिर भी हर जनपद में भिन्नभिन्न प्र[कार] का कच्चा माल प्राप्त होता है और उस [जनपद] का खानपान, रहनसहन उस कच्चे माल से नियंत्रित होता है. जनपद की आवश्यकता, कच्चे माल की उपलब्धि इत्यादि को ध्यान [में] रख कर ऐसे उद्योग ढूंढ़े जा सकते हैं, जि[न्हें] कम आय वाले परिवार लगा सकें. जि[ला] उद्योग केंद्र, उद्योग अधिकारी तथा तकनी[की] संस्थाएं इस कार्य में अपना सहयोग दे सक[ती] हैं.

बाल श्रमिकों के लिए सायंका[लीन] पाठशालाओं की भी व्यवस्था होनी चाहि[ए] जिन में उन्हें सामान्य शिक्षा के [साथ] तकनीकी शिक्षा भी दी जानी चाहिए.

बालकों से काम करवाने का विचार कुछ बुद्धिजीवियों को अटपटा लगेगा, [किंतु] गत 100 वर्षों के अनुभव से यह तथ्य स्पष्ट [हो] जाता है कि बाल श्रमिक समस्या कानू[न से] नहीं निबटाई जा सकती. उचित उपायों [से] बाल श्रम समस्या के बोझ को कम अ[वश्य] किया जा सकता है.

मेरी जिंदगी

कभी गंध बन आती है,
कभी हवा सी गाती है,
अनजानों की बस्ती में भी
रखती है पहचान मेरी जिंदगी.

जब सारी दुनिया सो जाती
और दर्द फिर जगता है,
वक्त मुंदी आंखों पै जैसे
ठहराठहरा लगता है,
आ कर मुझे जगाती है,
खोई याद दिलाती है.

मेरे हर क्षण का साथी है
जिंदादिल इंसान मेरी जिंदगी

अंधियारे में जैसे कोई
वस्तु कहीं टकराती है
एक रोशनी पूरे पथ का
ओरछोर समझाती है,
आहट बन कर आती है,
सूने में बतयाती है,
छोड़ अकेला जाती ऐसी
मेरे घर मेहमान मेरी जिंदगी.

– तारादत्त निर्विरोध
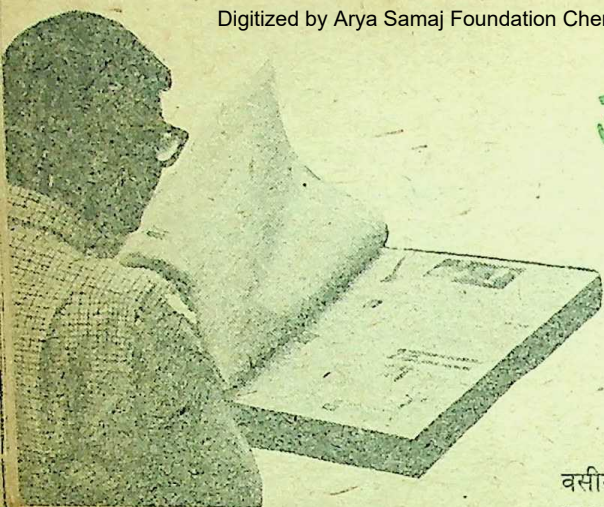
अंगरेजी आसान बनेगी

लेख • लोकेंद्र चतुर्वेदी

अंगरेजी भाषा में शब्दों के उच्चारण और हिज्जे (स्पैलिंग) की समस्या से अंगरेजी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ने वाले तो परेशान हैं ही, साथ ही वे लोग भी परेशान हैं जिन की मातृभाषा अंगरेजी है.

हिज्जे और उच्चारण की गड़बड़ी की सारी जिम्मेदारी अंगरेजी की 26 अक्षरों वाली प्रचलित वर्णमाला पर है. अंगरेजी बोलते समय मूल रूप से 40 ध्वनि संयोग प्रयोग में आते हैं, पर इन में से अधिकांश के लिए अंगरेजी वर्णमाला में अलग से कोई अक्षर नहीं है. अतः इन 40 ध्वनि संयोगों के लिए अक्षरों में जोड़तोड़ कर दो सौ विभिन्न प्रकार के हिज्जे प्रयोग में लाए जाते हैं. अंगरेजी भाषा के इस गड़बड़झाले से त्रस्त हो कर ही विख्यात अमरीकी व्यंग्यकार मार्क ट्वेन ने यहां तक कह दिया था कि "अंगरेजी की यह वर्णमाला विशुद्ध पागलपन का प्रतीक है."

पिछले चार सौ वर्षों से प्रचलित इस वर्णमाला को सुधारने के लिए अब तक सैकड़ों प्रयास किए जा चुके हैं, पर कोई उल्लेखनीय और प्रभावशाली परिणाम सामने नहीं आया. अंगरेजी के विख्यात नाटककार जार्ज बर्नार्ड शा ने तो अपनी वसीयत में उस आविष्कारक के लिए लाख से भी अधिक रुपए के पुरस्कार व्यवस्था की है जो उच्चारित ध्वनि आधार पर अंगरेजी की नई वर्णमाला कर देगा.

इस भारीभरकम इनाम को जीतने लिए भाषा शास्त्र के कई विद्वानों ने कई की वर्णमालाएं बनाने की कोशिशें कीं, व्यावहारिक प्रयोग की कसौटी पर अब कोई खरी नहीं उतरी. सिर्फ 'यूनिफोन' नई वर्णमाला से कुछ आशाजनक परि की संभावना प्रतीत होती है.

यूनिफोन वर्णमाला सिर्फ किताबी नहीं है, बल्कि इस का प्रयोग धड़ल्ले के शुरू हो चुका है. अमरीका के बीसियों इंडियन कबीले इसे सरकारी स्तर उपयोग में ला रहे हैं. इंडियाना पोलिश में तो स्कूलों में इसी वर्णमाला के अंगरेजी पढ़ाई जा रही है.

शिकागो विश्वविद्यालय के जाने अर्थशास्त्री जान मेलोन द्वारा आविष्कृत वर्णमाला में 40 अक्षर हैं और इन अक्षरों आधार अंगरेजी के 40 ध्वनि संयोग हैं.

यूनिफोन के माध्यम से अंगरेजी वाले छात्रों के सामने हिज्जे रटने की सम बिलकुल नहीं होती. जैसा बोलते हैं, सुनते हैं, वैसा ही लिखते भी हैं. यूनिफोन अंगरेजी की पुरानी वर्णमाला के 26 अक्षरों से 23 तो वैसे के वैसे ही ले लिए गए हैं

A
G
O
h

ऍ
ग
औ
थ

तीन अक्षर जगह उच्चा का प्रयोग कि अलग से एक हटा कर उस किया गया है एस' का प्रय

यूनिफ (कैपिटल) जाएगा और मशीनों पर सुविधा होगी जाएगा, आ वाले टाइप

THE UNIFON ALPHABET

A	Δ	Λ	B	Ȼ	D	E	Ɨ	Ǝ	F
G	H	I	⅄	J	K	L	M	N	И
O	Ω	Ⓘ	Ⓘ	ɑ	P	R	S	ẞ	T
Ћ	Ħ	U	U̲	Ū	V	W	Ʃ	Y	Ƶ

उच्चारण

ऍ	ए	ए-ए	ब	च	ड	अॅ	ई	अ	फ़
ग	ह	इ	आइ	ज	क	ल	म	न	ङ
ऑ	ओ	उ	अउ	औ	प	र	स	श	ट
तथ	थ	अ॒	यॅ	उॅ	व	उअ	जॅ	य	ज़

तीन अक्षर हटाए गए हैं उन में से 'सी' की जगह उच्चारण के अनुसार 'के' अथवा 'एस' का प्रयोग किया जाता है. 'च' ध्वनि के लिए अलग से एक अक्षर जोड़ा गया है. 'क्यू' को हटा कर उस के स्थान पर 'के डब्लू' का प्रयोग किया गया है. इसी तरह 'एक्स' की जगह 'के एस' का प्रयोग किया गया है.

यूनिफोन से छोटे (स्माल) और बड़े (केपिटल) अक्षरों का झमेला भी खत्म हो जाएगा और टाइप राइटरों तथा छपाई की मशीनों पर काम करने वालों को काफी सुविधा होगी, कंप्यूटरों का काम आसान हो जाएगा, आवाज सुन कर टाइप कर सकने वाले टाइप राइटर भी बन सकेंगे.

वर्णमाला के साथसाथ अंगरेजी के व्याकरण को भी आसान और तर्कसंगत बनाने की कोशिशें की जा रही हैं. ब्रिटेन में लार्ड साइमन की अध्यक्षता में बनी एक भाषा समिति ने हाल ही में अंगरेजी व्याकरण को सुधारने के लिए अपने सुझाव सरकार को सौंपे हैं. इन सुझावों के अनुसार एकवचन और बहुवचन में लगने वाली सहायक क्रियाएं और प्रत्यय समान हो जाएंगे. 'इज' और 'आर' तथा 'वाज' एवं 'वर' का भेद मिट जाएगा. 'आई आर गोइंग' तथा 'ही आर कमिंग' जैसे वाक्य व्याकरण की दृष्टि से गलत नहीं होंगे तथा 'शी प्ले' और 'राम वर्क' भी सही माने जाएंगे. •

*पुरुषों
*रंगबिरं
*दो बुना
*नीले बा
*खरगोश
वाला ह
*रंगबिरं
*गुड़िया
और ट
*बच्चे ऊ
*रंगबिरं
*बेल्ट व
फौजी
*आकर्षक
*बच्चे के
*धारीदा
*पुरुषों
*गरम प
कवर
*टीकोजी

नए डि

साथ ही
पकवान
गृहस्थ

हमारे कार्यालय में जब भी कोई नए कपड़े, जूते आदि पहन कर आता है तो लोग उस से चाय पीते हैं. एक बार एक साथी नए जूते पहन कर आए. सभी साथियों ने उन से चाय की मांग की. उन्होंने सब को चाय पिला दी.

चाय पीने के बाद एक साथी ने कहा, "भाई साहब, जूते बहुतबहुत मुबारक हों."

उन का इतना कहना था कि सभी हंस पड़े, लेकिन वह नहीं समझ पाए, जिन्होंने चाय पिलाई थी.

थोड़ी देर बाद उन को बात समझ में आई तो वह बहुत शरमिंदा हुए.

—अजयकुमार जैसवाल

*

हमारे दफ्तर में एक दिन एक महिला कढ़ाईबुनाई की किताब ले कर आई और कपड़े पर डिजाइन बनाने लगी. उसी समय एक बाबू ने उसे देखा और मजाक करते हुए कहा, "आप क्या बना रही हैं? इस में बत्तख है, मोर है, गाय है, घोड़ा है, गधा नहीं है क्या?"

वह महिला बोली, "गधा भी है."

बाबू ने पूछा, "कहां है?"

"सामने खड़ा है," महिला ने जवाब दिया तो पूरे विभाग में हंसी का ठहाका गूंजा और वह बाबू अपना सा मुंह ले कर रह गया.

—आदर्श सक्सेना

*

हमारे कार्यालय में एक नए सहयोगी की नियुक्ति हुई. उस की हर बात में 'शायद' कहने की आदत थी. उस की इस आदत से अधिकारी भी झल्ला उठते थे, लेकिन उस की आदत नहीं छूटती थी.

एक दिन हम चारपांच लोग उस के साथ चाय पी रहे थे. हमारे एक सहकर्मी ने पूछा, "आप की शादी कब हुई?"

उसने जबाब दिया, "1974 में."

"कितने बच्चे है?"

"शायद तीन," वह अपनी आदत के मुताबिक कह उठे.

उन की बात सुन कर जोरदार ठहाका लगा और वह बूरी तरह झेंप गए.

—जयप्रकाश [illegible]

*

पिछले महीन हमारे पिताजी अपने पुराने मित्र—एक स्थानीय विद्यालय के प्रबंधक से मिलने गए. उन के दफ्तर में चपरासी और शिक्षकों की भीड़ लगी हुई थी, प्रबंधक हाथ में [illegible] लिए खड़े थे.

मेरे पिताजी को देखते ही वह बोले, "आओ, यार, पता नहीं क्यों मुझ जैसे सफाईपसंद

व्यक्ति के कमरे में पिछले तीन दिनों से भीषण दुर्गंध आ रही है. अरे, जब मैं अंगरेजी राज में गन कैरिज फैक्टरी के स्कूल में प्राचार्य था, तब वाइसराय लार्ड लिनलिथगो ने मेरी फैक्टरी में आ कर फैक्टरी की सफाई की तारीफ की थी. अब देशी राज में मेरी यह हालत हो गई है."

मेरे पिताजी ने कमरे में नजर डाली और सारा माजरा समझ गए. उन्होंने प्रबंधक की मेज की चारों दराजें तुरंत खोल दीं. चौथी दराज में एक चूहा मरा पड़ा था, जिस के सड़ जाने से दुर्गंध फैली हुई थी.

यह देख कर सभी लोगों का हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया और प्रबंधक साहब पानीपानी हो गए.

—मधु दीक्षित

*

मेरे एक परिचित रजिस्ट्रेशन कार्यालय में कार्यरत हैं, जहां खेतीवाड़ी की मिट्टी की रजिस्ट्री की जाती है.

एक दिन दो मुसलिम व्यक्ति अपनी मिट्टी की रजिस्ट्री कराने आए. वे दोनों भाईभाई थे. बड़े भाई का नाम खेरूल हुदा व छोटे भाई का नाम खेरूल हुदी था, बड़े भाई ने अपना खेत छोटे भाई के हाथ बेचा था.

जब दोनों ने अपनेअपने नाम बताए तो मेरे परिचित ने खेरूल हुदी की जगह पुरुष न लिख कर स्त्री लिख दिया. वह समझे कि शायद छोटे भाई की पत्नी के नाम खेत का पट्टा होगा.

कुछ दिनों बाद खेत की सीमा समझाने के लिए दफ्तर से जब अधिकारी महोदय उन के खेत पहुंचे तो यह देख कर चकरा गए कि खरीदार स्त्री की जगह आदमी खड़ा है.

जब उन्हें पूरी बात मालूम हुई तो वह हंसतेहंसते दोहरे हो गए.

—हरीश बजाज

*

हमारा विभाग लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी पेयजल संबंधी समस्याएं हल करता है. जनहित के कार्यों के लिए जन प्रतिनिधि आए दिन हमारे कार्यालय में आते रहते हैं.

एक बार पीने के पानी की समस्या ले कर हमारे यहां धोतीकुरता पहने एक विधायक पहुंचे. उन्होंने अपनी समस्या हमारे कार्यकारी अभियंता को बताई. कार्यकारी अभियंता ने चपरासी से कहा, "जरा बी.डी. को ले कर आओ."

चपरासी बाहर आया. वह कुछ देर सोचता रहा कि अभियंता ने क्या कहा है. फिर एक बीड़ी जला कर उस ने उन विधायक के पास जा कर उन की तरफ बढ़ा दी. वह विधायक चौंक गए और अभियंता की त्यौरियां चढ़ गई. लेकिन उन्होंने उसे समझाते हुए कहा, "मैं ने बी.डी. यानी भगवानदास विश्वकर्मा को बुला कर लाने को कहा था."

तब चपरासी मुझे बुला कर ले गया.

बाद में घटना सुन कर हम सब बहुत देर तक हंसते रहे.

—भगवानदास विश्वकर्मा (**सर्वोत्तम**)

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, 'मुक्ता', ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

राक गार्डन
एक अनूठा राजमहल

लेख : श्रीशचंद्र मि...
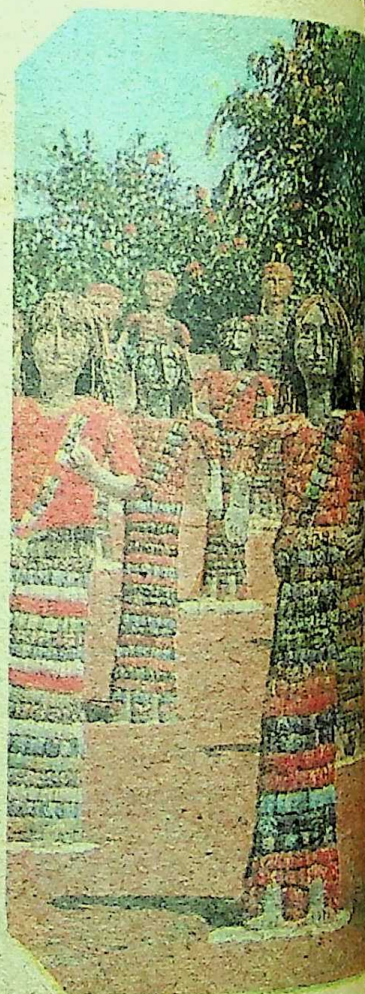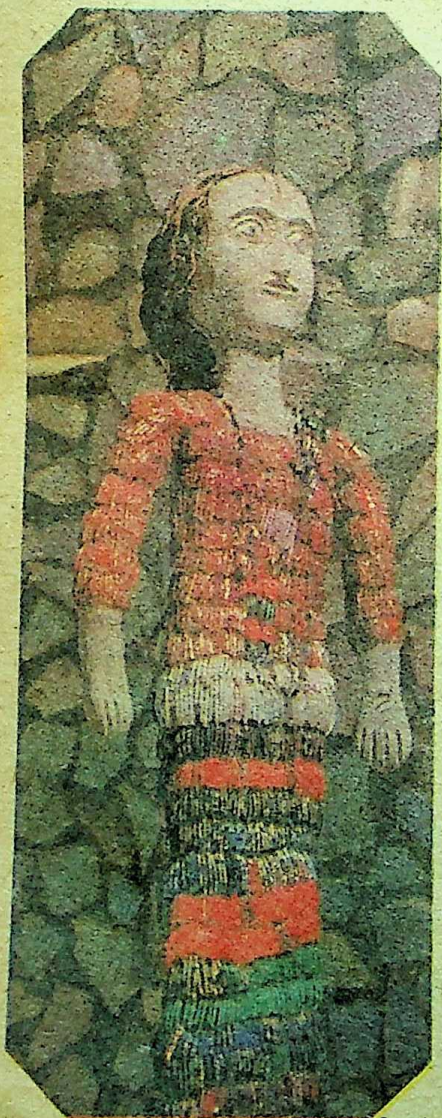
घूमने के लिए चंडीगढ़ जाने वाला को... भी व्यक्ति ऐसा नहीं होगा ... राक गार्डन न जाता हो और उसे देखने के ... उस की इच्छा उस व्यक्ति से मिलने की ... होती हो जिस ने टूटेफूटे पत्थरों व बेका... चीजों की मदद से इस की रचना की है.

लेकिन अक्सर लोग इस तरह ... इच्छा दबा जाते हैं. हालांकि वह यह सोच ... नहीं पाते कि जिस असामान्य कलाकार की ...

टूटे बरतनों, चूड़ियों के टुकड़ों, बोतल के ढक्कनों से बना राक गार्डन अपनेआप में अद्‌भुत है. कौन है वह कलाकार जिस ने निर्जीव वस्तुओं में भी जान फूंक कर रख दी है?
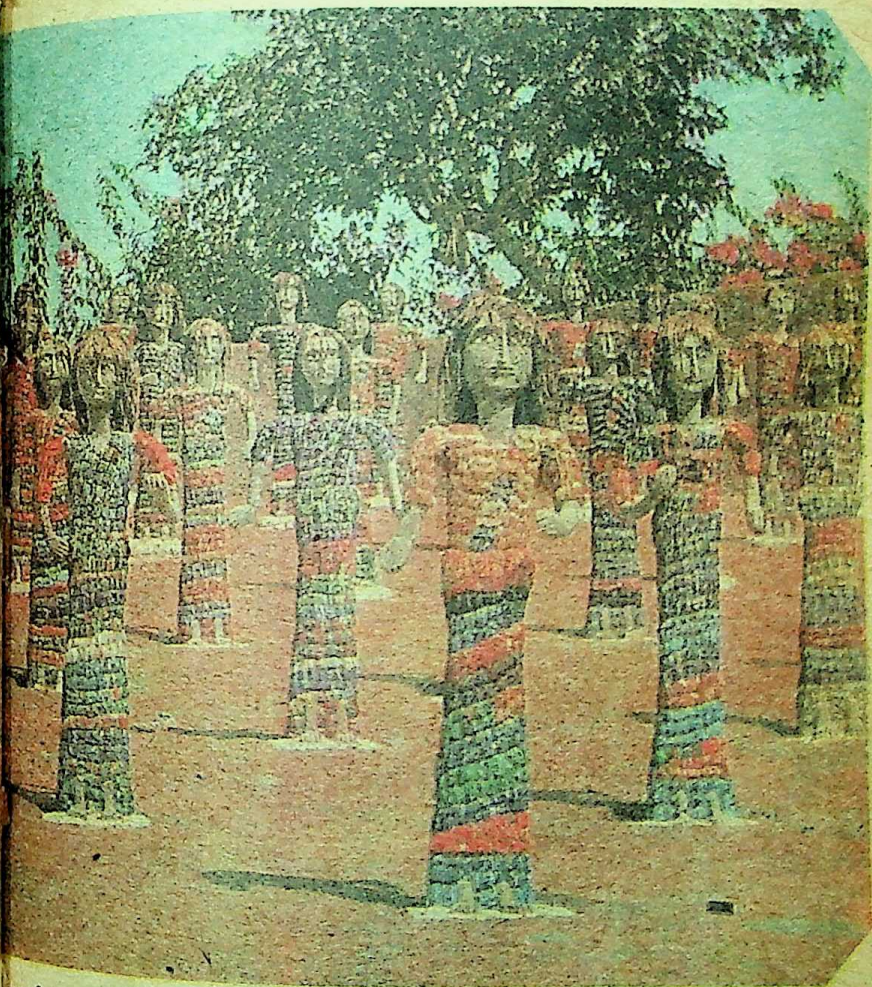
तारीफ कर रहे हैं, वह किसी सामान्य व्यक्ति की तरह उन्हीं के आसपास खड़ा उन के द्वारा की गई अपनी प्रशंसा, आलोचना या मखौल को सहजता से स्वीकार-कर रहा है.

राक गार्डन को सजानेसंवारने में जिंदगी के खूबसूरत 30 साल लगा देने वाले नेकचंद सैनी का कहना है, "यह तो अब जिंदगी का हिस्सा बन गया है. कभीकभी तो ऐसा भी होता है कि लोग मेरी मौजूदगी से बेखबर मेरे परिवार के लोगों अथवा परिचितों के सामने मेरा मजाक उड़ाते हुए निकल जाते हैं."

जैसा निराला उन का राक गार्डन है उसी तरह उन से मुलाकात कर पाने का तरीका भी काफी दिलचस्प रहा.

द्वार पर खड़े सरदारजी से जब नेकचंद सैनी से मिलने की इच्छा जाहिर की तो वह [illegible] लपके, लोहे का
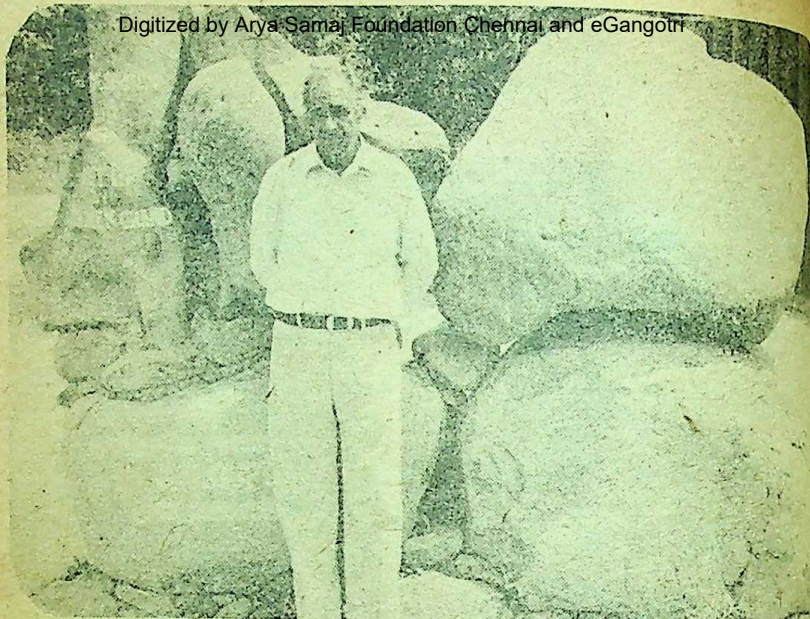
राक गार्डन का प्रवेश द्वार. प्रवेश द्वार पर खड़े हैं राक गार्डन की कल्पना को साकार रूप देने वाले नेकचंद सैनी.

वड़ा सा सरिया उठाया और उसे पास रखे ड्रम पर दे मारा. अलादीन के चिराग की तरह फौरन एक साहब हाजिर हो गए.

"आप राक गार्डन देखिए, वहीं कहीं सैनी साहब आप से मिल लेंगे." तसल्ली दे कर वह चले गए.

और सचमुच कुछ ही मिनटों बाद नेकचंद सैनी सामने थे. बिखरे हुए बाल, अव्यवस्थित कपड़े, एक हाथ में मिट्टी लगी हुई.

चीनी मिट्टी के टूटे बरतनों, चूड़ी के टुकड़ों, बिजली की बेकार राड व टूटे हुए होल्डर तथा इनसुलेटर, कंचों, ठंडे पेय की बोतल के ढक्कनों, साइकिल के फ्रेम, मडगार्ड, सीट व हैंडलों और ऐसी टूटीफूटी कबाड़ चीजों से बनी आदमी, औरत, बच्चों तथा पशुपक्षियों की आकृतियां यों तो वैसे ही आकर्षक लग रही थीं, लेकिन सैनी साहब की मौजूदगी ने उन में नया रंग भर दिया.

हर आकृति उन्होंने कैसे व किस कबाड़ से बनाई, उस की पृष्ठभूमि और उद्देश्य क्या था, इन तमाम बातों की जानकारी साथसाथ देते गए.

राक गार्डन उन की कल्पनाशीलता कड़ी मेहनत का सब से बड़ा प्रमाण बन है.

जिस चंडीगढ़ की हर बड़ी इमारत फ्रांसीसी वास्तुशिल्पी ला काबुर्सिए की दिखाई पड़ती है, वहां करीब 13 एकड़ के में नेकचंद सैनी ने अपनी कल्पना- राजमहल बना लिया है, जो भार शिल्पकला का जीताजागता प्रतीक है.

श्री सैनी ने सारा काम इतने गुपचुप से व किसी प्रचार की लालसा के बिना कि उन के अद्भुत काम को काफी बाद मान्यता मिल सकी. पुरस्कारों व सम्मानों बात तो दूर रही, कहीं 1977 में जा उन्हें वर्ष 1975 का 'दिलगीर' पुरस्‌ प्राप्त हुआ. यह पुरस्कार कला, साहित्‌ संस्कृति के क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए दि जाता है.

पर विडंबना यह रही कि नेकचंद

व उन के राक गार्डन को महान तब माना गया जब विदेशों में उस की तारीफ हुई. जापान व इटली की पत्रिकाओं में राक गार्डन पर सचित्र लेख प्रकाशित किए गए.

पेरिस (फ्रांस) में एक साल के लिए उन्होंने 'भूलभलैया' नाम की प्रदर्शनी लगाई, जिस के लिए पेरिस के महापौर ने उन्हें शहर का सर्वोच्च सम्मान सूचक पदक दिया.

जब वह फ्रांस पहुंचे तो हवाई अड्डे पर उन के स्वागत में बड़ेबड़े बैनर लगाए गए.

अब उन्होंने इसी प्रकार की एक प्रदर्शनी चार माह के लिए बेल्जियम में भी लगाई है.

आस्ट्रेलिया की एक कंपनी ने राक गार्डन व उस के रचयिता पर रंगीन फिल्म बनाई है, जिसे इस समय पूरे आस्ट्रेलिया में दिखाया जा रहा है. उन्हें सिडनी (आस्ट्रेलिया) की यात्रा करने के लिए आमंत्रित भी किया गया है.

वह जल्दी ही अहमदाबाद में भी चंडीगढ़ जैसा राक गार्डन बनाने की शुरुआत करने वाले हैं.

राक गार्डन में ही उन से उन की जिंदगी व उन के काम के कुछ खासखास पहलुओं पर बातचीत हुई.

प्रश्न: आप की पारिवारिक पृष्ठभूमि क्या रही?

उत्तर: शक्करगढ़ तहसील (जिला गुरदासपुर, पंजाब) में मेरा जन्म हुआ. जिस समय देश के दो टुकड़े हुए, मैं 10वीं कक्षा में पढ़ रहा था. शक्करगढ़ पाकिस्तान में चला गया था, इसलिए हमारा सारा परिवार चंडीगढ़ आ कर बस गया.

प्रश्न: राक गार्डन बनाने की बात आप के दिमाग में कब आई? क्या कलाकृतियां बनाने का आप ने बाकायदा कोई प्रशिक्षण लिया था?

उत्तर : नहीं, न तो मैं ने इस बारे में कोई प्रशिक्षण लिया और न ही काम शुरू करते समय राक गार्डन जैसी किसी चीज के बन

बेकार, अनुपयोगी चीजों को ले कर बनाई गई आकृतियां जो दर्शक का मन मोह लेती हैं.
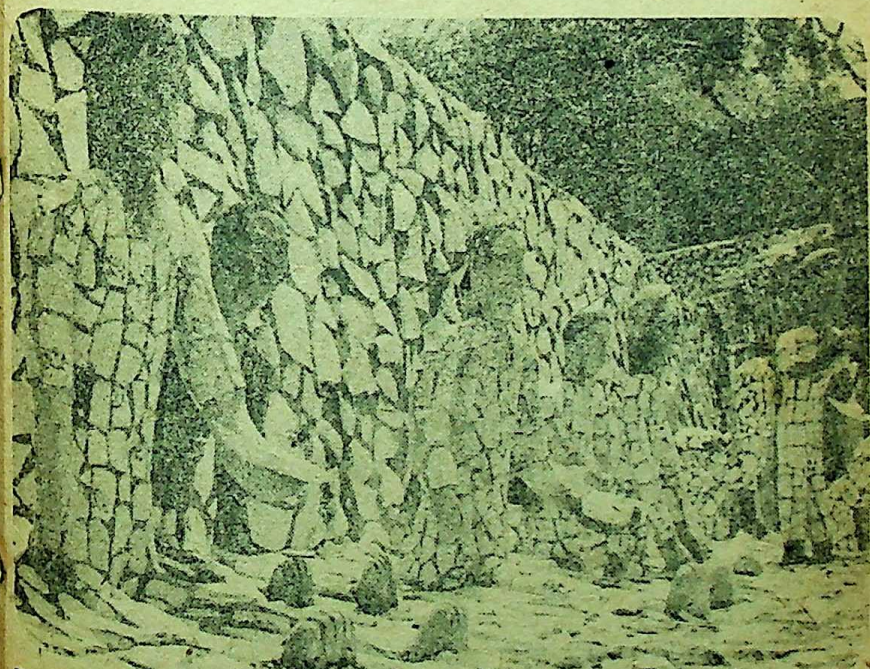
पाने की मैं ने कल्पना की थी. बचपन में चिकनी मिट्टी से कुछ न कुछ बनाता रहता था. बस, यही शौक आगे बढ़ता गया.

साधन मेरे पास थोड़ेबहुत जरूर थे, लेकिन बड़े होने पर मैं ने फैसला किया कि जिस सामान को लोग बेकार समझ कर फेंक देते हैं, उन्हीं से मैं खूबसूरत चीजें बनाऊंगा.

पढ़ाई पूरी करने के बाद मुझे लोक निर्माण विभाग में रोड इंस्पेक्टर की नौकरी मिल गई थी. लेकिन कुछ नया कर दिखाने का शौक अभी मरा नहीं था. जब भी मुझे फुरसत मिलती, मैं साइकिल के पीछे बोरा रख कर गली महल्लों में निकल पड़ता. जहां बेकार चीज अपने काम की लगती, उसे लाता. बेकार चीज किसी से मांग लेने में मुझे कोई हिचक नहीं होती थी.

जिस जगह पर मैं ने कबाड़ (मेरे वह कबाड़ कतई नहीं था) जमा किया, लोगों का आनाजाना लगा रहता था. इ मुझे अपना काम कर पाने में परेशानी थी. रोड इंस्पेक्टर होने की वजह से चंडीगढ़ में इधरउधर घूमने का मौका था. शहर का मास्टर प्लान देख कर अपने काम के लिए वह जगह चुनी
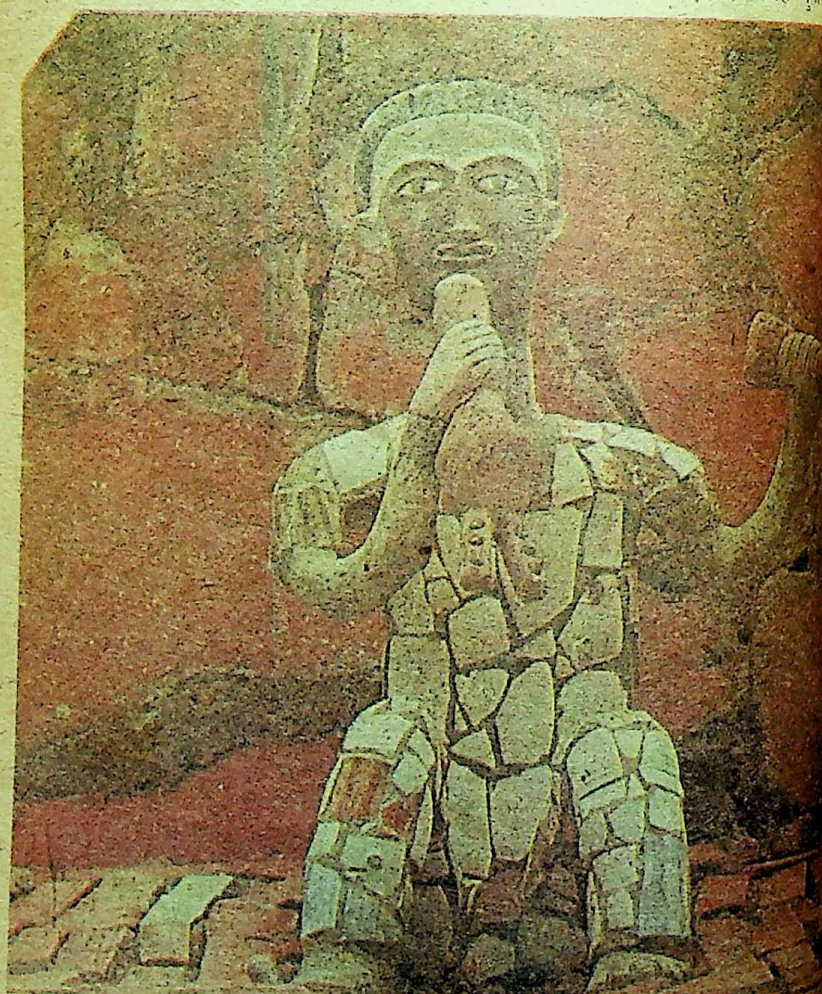
जंगल था, कोई आतजाता नहीं था और मास्टर प्लान में उस जगह के विकास के लिए कोई व्यवस्था नहीं थी.

मुझे यह जगह ठीक लगी. कोलतार के खाली ड्रम लगा कर मैं ने चारदीवारी बनाई और उस में अपनी बनी चीजें व कच्चा माल ला कर जमा कर लिया.

एक छोटी सी कच्ची झोंपड़ी बनाई. पानी का इंतजाम किया और रोशनी के लिए मोमबत्ती व टायरों की मदद ली. नौकरी का समय खत्म हो जाने के बाद मैं वहां आ जाता और रात देर तक काम करता रहता. यह 1965 की बात है.

प्रश्न: रोज रात को देर तक घर से बाहर रहने से आप के परिवार को परेशानी नहीं होती थी?

उत्तर: इस मामले में मेरी पत्नी का पूरापूरा सहयोग रहा. अगर वह नहीं होती तो शायद यह काम ही नहीं हो पाता. शादी से लगभग फौरन बाद से ही मैं रात को देर से घर लौट पाता था. पड़ोसनें मेरी पत्नी को ताना देतीं, उकसातीं व भड़कातीं, लेकिन मेरी पत्नी ने उन की बातों पर कान नहीं दिया. काफी समय बाद एक दिन मैं उसे अपने संग्रहालय में ले गया. उसे देख कर वह इतनी ज्यादा प्रभावित हुई कि घर की तमाम

समूह में बनाई गईं आकृतियां जो अपनी कलात्मकता का परिचय देती हैं.

जिम्मेदारी संभालने के साथसाथ वह मेरे काम में भी हाथ बटाने लगीं.

प्रश्न: आप का यह राक गार्डन लोगों के सामने कैसे आया?

उत्तर: जैसा कि मैं ने पहले कहा, जहां आज राक गार्डन है, उस जगह के विकास के लिए मास्टर प्लान में कोई व्यवस्था नहीं थी. बाद में सरकार ने उसे साफ करने का फैसला किया. मुझे ड्रम हटाने को कहा गया. कुछ दिन तो मैं टालता रहा, लेकिन एक दिन ड्रम हटाने का फैसला कर ही लिया. लेकिन वहां मेरी बनी चीजें देख कर अन्य अधिकारी भौचक्के से रह गए. उन्होंने आपस में बातचीत की. राज्य सरकार तक बात पहुंचाई गई और इस तरह मेरा राक गार्डन कच्ची हालत में उजड़ने से बच गया.

प्रश्न: राक गार्डन को सरकारी मान्यता मिलने के बाद आप ने उस में क्या बदलाव किया? सरकार व निजी संस्थाओं से आप को क्याक्या मदद मिली?

उत्तर: चारदीवारी तो मैं ने वैसी की वैसी रहने दी. बस सीमेंट की मदद से उसे पक्का करवा दिया और घेराबंदी का दायरा भी बढ़ा दिया. सरकार का सब से बड़ा

सहयोग मुझे यह मिला कि मेरे काम में कभी कोई बाधा नहीं पहुंचाई गई. सीमेंट व इसी तरह की अन्य चीजें प्राथमिकता के आधार पर मुझे मिलती रहीं.

बड़ेबड़े कलात्मक पत्थर उठवाने के लिए मैं ने कुछ लोगों की मदद चाही, उन्होंने भरपूर मदद की. कुछ कारखानों ने तो अपने यहां का कबाड़ अपने खर्चे पर मेरे पास भिजवा दिया.

प्रश्न: राक गार्डन में जिस तरह से विभिन्न वस्तुएं रखी हुई हैं, उन की रूपरेखा आप ने कैसे बनाई?

उत्तर: सरकार से मान्यता मिल जाने के बाद मैं अपनी कल्पना का राजमहल व नगर बनाने में जुट गया. एक आदर्श नगर में जो खूबियां होनी चाहिए, उन्हें ले कर मैं कतरनों व कबाड़ के माध्यम से लोगों के सामने एक तसवीर पेश करना चाहता था.

राक गार्डन के बाहर आप ने पत्थर की जो चट्टानें देखी हैं, वे इस राजमहल के पहरेदार हैं. पुराने जमाने में किले में ही पूरा का पूरा नगर बसा होता था. वही कोशिश मैं ने यहां की है.

इस आधुनिक किले की प्राचीर ... मैं ने कोलतार के एक के ऊपर एक ... तीन ड्रमों की कतार का इस्तेमाल कि...

यहां का विशेष आकर्षण ... राजदरबार. यहां पत्थर का बना सिंहा... चीनी मिट्टी के टूटे हुए बरतनों के टुकड़ों ... ने टाइल की दीवारों के रूप में इस्तेमाल ... हैं. यहीं राजा के मंत्रिगण व बाकी स... बैठे हैं. मैं ने इन्हें पत्थर के छोटेछोटे टुक... बनाया है.

नजदीक ही पुराने डिजायन का ... यहीं खुला रंगमंच भी है, जिस की पृष्ठ... छोटेछोटे पत्थरों से बनी जालीदार ... मंच के परदे जैसी है. दूसरे बरा... महारानी के नहाने के लिए फव्वारे बने ... यहीं सरोवर भी है. सरोवर की दीवारें ... आकार के मिट्टी के गोलों से बनी हैं, ... परदे का परदा बना रहे और ताजी ह...

कला के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लि... पंजाब के तत्कालीन राज्यपाल ... मोहन नेकचंद को दिलगीर पुरस्... प्रदान करते हुए.

राक गार्डन ... (ऊपर) व गो... की सहायता ...

आती रहे.

इसी के ... तरह के देवीदे...

मंदिर मे... ...न में पुजारि... भिखारी भी ... बनाए हैं. म... पनिहारिनों ... खानसामों व ... मैं ने कोशिश...

सांप से ... पशुपक्षी आप... नहीं, बल्कि ...

प्रश्न: इ... आप ने किनकि...

उत्तर: ... इस्तेमाल की है ... जिन्हें लोगों ने ... था. ट्रक के स... ...युक्ता
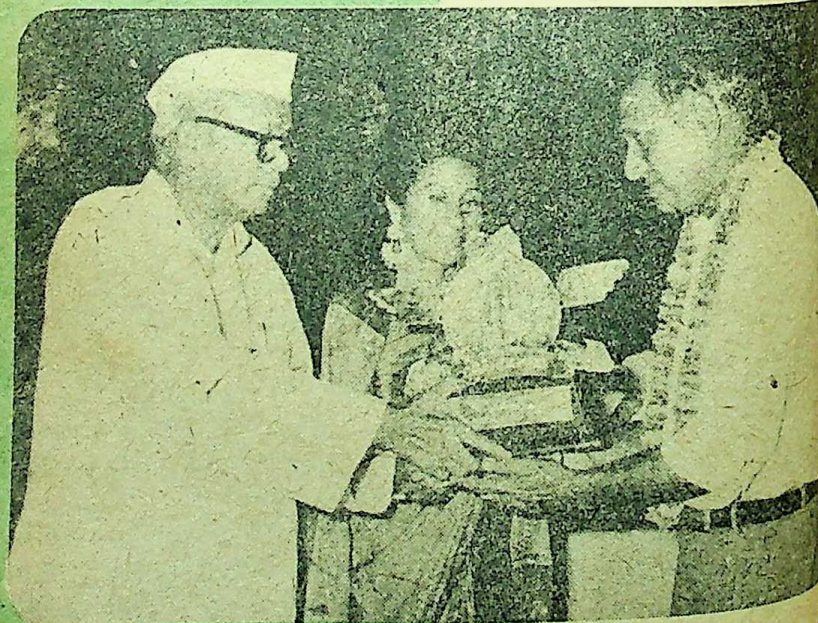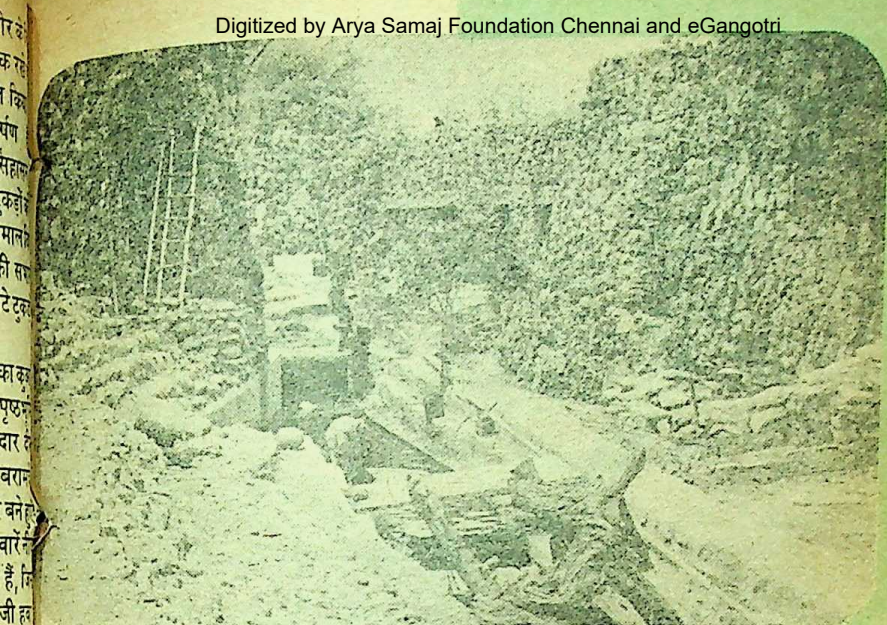
राक गार्डन में निर्माणाधीन एक घाटी (ऊपर) व गोल पत्थरों और लोहे के सरियों की सहायता से बनाई गई दीवार. (दाएं)

आती रहे.

इसी के पास पूजा कक्ष है, जिस में हर तरह के देवीदेवता हैं.

मंदिर में धार्मिक समारोह भी होते हैं. इन में पुजारियों व श्रद्धालुओं के अलावा भिखारी भी होते हैं. ये सभी मैं ने यहां भी बनाए हैं. महारानी से ले कर पुजारिनों, पनिहारिनों, वादकों, नर्तकों, गायकों, खानसामों व भिखारियों तक के रूप गढ़ने की मैं ने कोशिश की है.

सांप से ले कर मोर तक हर किस्म के पशुपक्षी आप को यहां मिलेंगे और एक दो नहीं, बल्कि समूह में.

प्रश्न: इन तमाम वस्तुओं को बनाने में आप ने किनकिन चीजों की मदद ली है?

उत्तर: मैं ने अलगअलग चीजें इस्तेमाल की हैं. अमूमन सारी चीजें ऐसी ही हैं जिन्हें लोगों ने बेकार समझ कर फेंक दिया था. ट्रक के साइलेंसर पाइप से मैं ने ढोलक बनाई. भैंसों के सींग के लिए बच्चों की तिपहिया साइकिल के हैंडिल इस्तेमाल किए. लड़कियों की स्कर्ट के लिए साइकिल की सीट काम में ली. इसी तरह सारी कलाकृतियां मैं ने
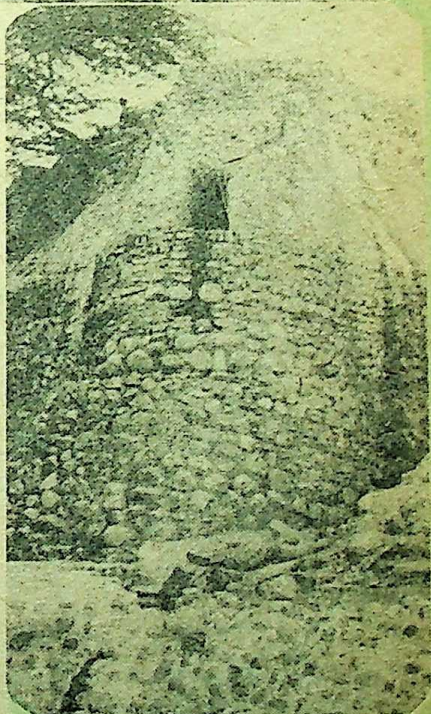
एक और संग्रहणीय अंक
सरिता
दीवाली विशेषांक
नवंबर (द्वितीय) 1982
फुलझड़ियों की जगमगाहट, दीपों की झिलमिलाहट,
पटाखों की रंगीनियों जैसा सरिता का 'दीवाली विशेषांक'
पूरे परिवार के लिए इतनी अधिक सामग्री कि घंटों
पढ़ें और दीवाली का आनंद कई गुना उठाएं.
जगमग साजसज्जा,
दीवाली के खट्टेमीठे,
वातावरण पर
दस कहानियां,
धारावाहिक उपन्यास
की एक नई किस्त,
दीवाली के लिए विशेष
पकवानों की विधियां,
दीपमालिकाओं
सी सजी कविताएं,
नया मार्ग दिखाने वाले
कई ज्योतिर्मय लेख.
इतनी अधिक
इतनी विविध सामग्री
और कहीं नहीं मिलेगी
मूल्य 3.75 रुपए.
भारत में सबसे
अधिक पढ़ी जाने वाली
पाक्षिक पत्रिका.
अपनी प्रति
सुरक्षित कराना
न भूलें.

बेकार समझी जाने वाली चीजों से बनाईं.

मैं ने प्रकृति से भी मदद ली. प्रकृति अक्सर छोटेबड़े पत्थरों पर ऐसी चित्रकारी कर डालती है कि फिर उस में किसी के कुछ करने को नहीं रह जाता. मैं ने कई जगह घूम कर प्रकृति की ऐसी ही अनमोल कलाकृतियां जमा की हैं. बस, थोड़ा सा अंतिम रूप उस में जरूर दिया और चीज तैयार हो गई.

प्रश्न: राक गार्डन बनाने में आप को कितना समय लगा?

उत्तर: यही कोई 30 साल. पहले 16 से 20 घंटे तक काम करता था. अब भी रोज 12 घंटे काम करता हूं.

प्रश्न: पत्थर और कबाड़ की कलाकृतियां बनाने के अलावा आप के बाकी शौक क्या हैं?

उत्तर: बागबानी में मेरी काफी दिलचस्पी है. राक गार्डन में क्रोटन व कैक्टस के फूल और आम, लीची, शहतूत, पीपल, गुलमोहर, अमलतास आदि के पौधे मैं ने ही लगाए हैं.

प्रश्न: भविष्य की आप की क्या योजना है?

उत्तर: मैं राक गार्डन का विस्तार कर रहा हूं. इस में पहाड़ी दर्रे के बाद चार कोनों का महल बन रहा है. जब यह पूरा हो जाएगा तो मैं इस में जीतेजागते सचमुच के पशुपक्षी रखूंगा.

लौहे का कबाड़, टूटी क्राकरी, कपड़े की कतरनें, स्लेट के टुकड़े, छोटेबड़े पत्थर, रुद्राक्ष की मालाएं, बड़े आकार की गुड़ियां मैं ने जमा कर रखी हैं, जिन का सही इस्तेमाल जल्दी ही किया जाएगा.

प्रश्न: आप को अपनी बनाई चीजों में सब से बढ़िया कौन सी लगती है?

उत्तर: मेरे लिए यह बता पाना मुशकिल है. हो सकता है कि मैं ने कुछ बढ़िया चीजें बना ली हों. लेकिन फिर भी ऐसा लगता है कि सब से बढ़िया चीज तो जैसे अभी बनाई जानी है.

प्रश्न: आप के बच्चों को क्या इस काम में दिलचस्पी है?

उत्तर: मेरे दो बच्चे हैं. लड़की की शादी हो गई है. वह इंगलैंड में है. लड़का अभी पढ़ रहा है, लेकिन उस की राक गार्डन में पूरी दिलचस्पी है.

प्रश्न: जो कुछ आप ने किया क्या आप उस से संतुष्ट हैं?

उत्तर: नहीं, लगता है बहुत कुछ करने को था. लेकिन समय इतना ज्यादा निकल गया है कि शायद अब बहुत कुछ नहीं किया जा सकेगा.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बनारसी ठगी

काशी के बनारसी ठगों का स्वर्णयुग भले ही बीत चुका हो, किंतु उस स· परंप नौसिखिए चेले किसी भी व्यक्ति को अभी भी अपना मुर्गा बनाने में सिद्धहस्त हैं. बांस क्षेत्र में गत दिनों दोपहर बाद ऐसी ही एक घटना घटी जब एक किशोर को 'हरिओमहरिओ का गुरुमंत्र दे कर दो व्यक्तियों ने उस की नई साइकिल ऐंठ ली और चंपत हो गए.

बताया जाता है कि औसानगंज का एक किशोर लड़का साइकिल से कहीं जा रहा उसी समय एक अपरिचित व्यक्ति ने उसे रोक कर अपनी करुण गाथा सुनाते हुए कहा कि के रुपए गायब हो गए हैं, उसे कुछ पैसे चाहिए ताकि वह अपने घर पहुंच सके. उन दोनों बातचीत अभी चल ही रही थी कि एक तीसरा आदमी वहां आ गया जिस के हाथ में एक बैग

उक्त तीसरे आदमी ने इस संकट के निवारण का मार्ग सुझाया. उस ने अपना बैग, जि काफी रुपए थे, लड़के को सौंपते हुए कहा, "मैं हरिओमहरिओम का जाप करते हुए 200 क जाऊंगा. फिर तुम भी ऐसा ही करना. इस से पहले वाले आदमी का पैसा मिल जाए

तीसरा आदमी गया और वापस लौट आया. बाद में लड़के ने भी अपनी साइकिल घड़ी सौंप कर ऐसा ही किया. अपने 'गुरु' की आज्ञा के अनुसार वह बिना पीछे देखे 200 क तक 'हरिओमहरिओम' जपता गया. जब वह वापस मुड़ा तो देखा कि वहां कोई नहीं

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी) (सर्वोत्त

*

ठगी का नायाब नमूना

मनेंद्रगढ़ में स्थानीय बस अड्डे पर कुछ यात्रियों को चकमा दे कर रुपए ऐंठ लेने की घटना सामने आई है.

घटना के अनुसार एक व्यक्ति राज्य परिवहन निगम की एक बस, जो कि छूटने ही व थी, के सामने पहुंच कर बिना टिकट यात्रियों से टिकट लेने को कहने लगा. चूंकि बस ठसा भरी थी, अतः यात्रियों ने उसे खिड़की से ही पैसा देना शुरू कर दिया. कुछ देर प्रतीक्षा करने भी जब उस व्यक्ति ने टिकट नहीं दिया तो लोगों ने शोर मचाया. मगर तब तक वह व्य चंपत हो चुका था. मजबूर यात्रियों को दोबारा टिकट खरीदनी पड़ी.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : राजेंद्र हर

*

कर भला हो बुरा

रामसिंह पुर के एक दर्जी रामचंद्र के पास रात को एक व्यक्ति आया. अपनी मज बताते हुए उस ने कहा कि वह रात को उसे अपने यहां आश्रय दे दे. उस ने अपना व अपने का नाम भी बताया. रामचंद्र ने देखा, वह मासूम सा दिखने वाला व्यक्ति साफसुथरे कपड़े

हुए है. रामचंद्र
रात का खाना
प्रातः ज
उस के जूतों

साधुवेषधारी
लोहाघा
ग्रामीण महिल
एक सनसनीख
बताया
था और अपन
सम्मान प्राप्त
उक्त स
तो उस ने उन
आई तो उक्त
कि वे तीन दि
पोर्टलिय
ग्यारह हो गय
स्थान पर रा

कपड़ा चुराने
जोधपु
महिलाओं को
बरामद किए
पुलिस
इस गिरोह ने
सदस्य एक स
कर कपड़ा दे

नौकरी का प्र
महासम
आया है. बला
'समाज' तथा
संस्थाओं द्वार
साथ 10 रुप
इसी सि
आए थे.
जालस
धारा 420 व

हुए है. रामचंद्र को उस पर तरस आ गया और उस ने उसे रात भर रहने को जगह दे दी और उसे रात का खाना भी खिलाया.

प्रातः जब रामचंद्र नहा कर स्नानघर से निकला तो उस की घड़ी, 40 रुपए नकद तथा उस के जूतों सहित उस का अनजाना मेहमान गायब था.

—दैनिक प्रताप केसरी, श्री गंगानगर (प्रेषक : पवन मिढ्ढा 'अंजान')

*

साधुवेषधारी द्वारा ठगी

लोहाघाट से लगभग चार किलोमीटर दूर कुलदेव ग्राम में साधुवेषधारी एक ठग द्वारा दो ग्रामीण महिलाओं से लगभग 12,000 रुपए मूल्य के स्वर्णाभूषण ठग कर चंपत हो जाने का एक सनसनीखेज समाचार प्राप्त हुआ है.

बताया जाता है कि उक्त ठग विगत एक माह से कुलदेव ग्राम के एक मंदिर में पड़ाव डाले था और अपनी वाकपटुता व सम्मोहन की प्रक्रिया के जरिए उस ने ग्रामीणों में श्रद्धा और सम्मान प्राप्त कर लिया था.

उक्त साधु के यहां इसी ग्राम की दो महिलाओं ने अपने कष्ट निवारण हेतु याचना की तो उस ने उन्हें अपने गले के स्वर्णाभूषण लाने की सलाह दी. जब महिलाएं आभूषण ले कर आईं तो उक्त ठग ने उन्हें दो पोटलियों में बांध कर मंत्र पढ़ा और उन्हें यह कह कर लौटा दिया कि वे तीन दिन तक पोटली को स्पर्श न करें वरना वे पागल हो जाएंगी.

पोटलियां महिलाओं को सौंपने के बाद वह अपने भक्तों को धोखें में रख कर नौ दो ग्यारह हो गया. जब तीसरे दिन महिलाओं ने पोटली खोल कर देखी तो उन्हें अपने गहनों के स्थान पर राख मिली.

—अमर उजाला, बरेली (प्रेषक : भुवनेशचंद्र शर्मा)

*

कपड़ा चुराने वाली तीन महिलाएं पकड़ी गईं

जोधपुर में कपड़े की दुकानों से साड़ियां व अन्य कपड़े चुराने वाले एक गिरोह की तीन महिलाओं को पुलिस ने गिरफ्तार किया. इन महिलाओं से अनेक साड़ियां, तौलिए व अन्य कपड़े बरामद किए गए.

पुलिस सूत्रों के अनुसार एक सुबह आगरा से करीब आठ लोगों का गिरोह जोधपुर पहुंचा. इस गिरोह ने सोजती गेट, सर्राफा बाजार व अन्य स्थानों पर चोरी की वारदातें कीं. ये सभी सदस्य एक साथ कपड़े की दुकान पर खरीदारी करने जाते थे और दुकानदार को बातों में लगा कर कपड़ा देखने के बहाने महिलाएं कपड़े चुरा कर चुपचाप खिसक जाती थीं.

—राजस्थान पत्रिका, जोधपुर (प्रेषक : अशोककुमार भंसाली)

*

नौकरी का प्रलोभन

महासमुंद में नौकरी का प्रलोभन दे कर बेरोजगारों को ठगने का एक मामला प्रकाश में आया है. बलांगीर के बंशीधर महापात्र नामक व्यक्ति ने भुवनेश्वर तथा कटक के उड़िया दैनिकों 'समाज' तथा 'धरित्री' में इस आशय का विज्ञापन दिया था कि मध्य प्रदेश के 13 जिलों में निजी संस्थाओं द्वारा संचालित उड़िया स्कूलों में 10 हजार शिक्षकों की जरूरत है. वह आवेदन पत्र के साथ 10 रुपए लेता था, परंतु रसीद पांच रुपए की देता था.

इसी सिलसिले में उड़ीसा के कुछ क्षेत्रों से 100 छात्र उस के पास आवेदन पत्र जमा कराने आए थे.

जालसाजी की भनक मिलते ही पुलिस ने महापात्र को मय कागज़ात के धर दबोचा तथा धारा 420 के अंतर्गत मामला दर्ज कर लिया.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : अनिल किशोर पुष्पकर)●

दुनिया भर की
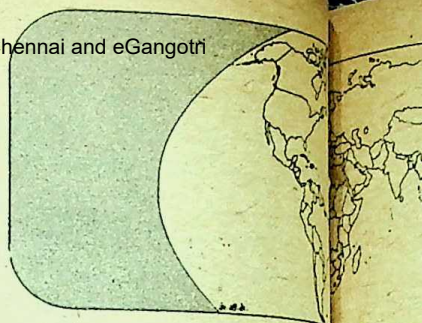
विश्व में मादक द्रव्यों का प्रयोग और उन की अवैध बिक्री अब इतनी बढ़ गई है कि कई राष्ट्रों की स्थिरता को ही खतरा पैदा होने लगा है. पश्चिम यूरोप में हेरोइन का अभिशाप इतनी तेजी से बढ़ रहा है कि पश्चिमी जरमनी जैसे देश में तो संकट की स्थिति पैदा हो गई है. इन दिनों पश्चिमी जरमनी हेरोइन के अवैध व्यापार का सब से बड़ा बाजार बन गया है. हाल में यहां की

हवाई अड्डे के कुत्तों से सावध

पुलिस ने 116 किलोग्राम हेरोइन पकड़ी है. समूचे पश्चिम यूरोप में भी इतना मादक पदार्थ नहीं बिकता.

सन 1970 के बाद से पश्चिमी जरमनी में मादक पदार्थों का चोरीछिपे व्यापार होना शुरू हुआ था और आज यह स्थिति है कि यहां हर साल कम से कम 500 व्यक्ति नशीले पदार्थों के सेवन से मर जाते हैं. एक अनुमान के अनुसार पश्चिम बर्लिन, हैमबर्ग, फ्रेंकफर्ट और दूसरे बड़े शहरों में करीब 43,000 व्यक्ति नशीले पदार्थों के शिकार बने हैं. इन में 18 से ले कर 25 साल तक के युवक ज्यादा हैं. पश्चिमी देशों में फ्रांस, नीदरलैंड व संयुक्त राज्य अमरीका के बाद पश्चिमी जरमनी में मादक द्रव्यों का चोरीछिपे आयात सब से ज्यादा हो रहा है. यहां आने वाले ज्यादातर यात्रियों के पास नशीले पदार्थ पकड़े जाते हैं. इन में तुर्की के लोगों के पास हेरोइन सब से ज्यादा पाई जाती है.

मादक द्रव्यों के अभिशाप से [illegible] दिलाने के लिए पश्चिमी जरमनी [illegible] ज्यादातर हवाई अड्डों और सीमावर्ती [illegible] पर मादक द्रव्यों की सूंघ कर पहचान[illegible] वाले कुत्तों को छोड़ दिया गया है. [illegible] बाहर से आने वाले लोगों के सामान को [illegible] भर में ही सूंघ कर पास में सतर्क खड़ी [illegible] को सूचित कर देते हैं. कुत्तों की मदद[illegible] पश्चिमी जरमनी की पुलिस देश में [illegible] नशीले पदार्थों के व्यापार को रोकने में [illegible] हद तक सफल हो रही है.

धन्यवाद अखबारों [illegible]

एक 66 वर्षीया विधवा को तीन [illegible] तक सड़कों पर पागलों की तरह घूमने के [illegible] अपना प्यारा भाई मिला. फिल्मों जैसी [illegible] घटना है माएमी शहर की, जहां पिछले [illegible] वर्ष से एक महिला इस बात की रट [illegible] सड़कों पर घूमती रही कि वह ब्रि[illegible] राजनयिक सर हरबर्ट फिलिप्स की लड़[illegible] पत्रों में छपी इस महिला की कहानी प[illegible] आक्सफोर्ड में फार्म मैनेजर के पद पर [illegible] कर रहे उस के भाई एंटोनी फिलिप्स [illegible] का मिलन हुआ.

कहा जाता है कि 25 वर्ष पू[illegible] महिला अपने दूसरे पति की मृत्यु के [illegible] अमरीका चली गई थी और वहां पर [illegible]

हैंडरसन नाम के व्यक्ति से शादी कर के रहने लगी थी. पर कुछ अरसे बाद हैंडरसन ने इसे मारपीट कर और इस का सभी सामान छीन कर इसे घर से निकाल दिया. तब से वह माएमी की सड़कों पर नंगे पांव, फटेहाल घूमती रहती थी.

स्वयं को सर हरबर्ट फिलिप्स की लड़की बताने पर रास्ता चलते बहुत से लोग हंस पड़ते थे. अंत में एक पत्र के संवाददाता ने इस की सारी कहानी चित्र समेत छापी. पत्र में छपे विवरण के आधार पर इस के भाई ने अपनी बहन को पहचान लिया. पत्र में छपे विवरण में संवाददाता ने इस के साथ किए गए दुर्व्यवहार और बलात्कार की भी चर्चा की, जिस की वह अकसर रात में शिकार होती रही थी. इस महिला के भाई ने उस अखबार को धन्यवाद दिया है, जिस ने सड़कों पर पागलों की तरह घूमती उस की वृद्धा बहन को उस से मिलवाया है.

बरसों के बिछुड़े मिले

660 कोरियाई परिवारों के पिछले सालों में खोए या बिछुड़ गए सगेसंबंधी कोरियाई रेडक्रास सोसायटी की मदद से फिर परस्पर मिल गए हैं.

कोरियाई रेडक्रास 1973 से इन बिछुड़े लोगों को मिलाने या ढूंढ़ने का कार्य कर रही है. इन बिछुड़े लोगों में जापानी दासता से आजादी के लिए लड़ने वाले परिवारों के लोगों के अलावा वे लोग भी शामिल हैं जो एकदूसरे से 1950-53 में कोरिया के दो टुकड़े होने के समय बिछुड़ गए थे.

कोरियाई रेडक्रास के अनुसार इन लोगों में 67.6 प्रतिशत भाईबहन, 11.6 प्रतिशत पुत्रपुत्रियां और मातापिता, 9.9 प्रतिशत चाचाभतीजे और 7.7 प्रतिशत अन्य रिश्तेदार हैं.

इन लोगों में 71 प्रतिशत या 243 लोग कोरिया युद्ध में बिछुड़ गए थे. 23 प्रतिशत या 76 लोग 1945 में कोरिया के आजाद होने के समय जापान में अलगथलग हो गए थे और 2.4 प्रतिशत लोग कोरिया में 36 वर्षीय जापानी शासन के दौरान एकदूसरे से अलग हो गए थे.

एक अनुमान के अनुसार 1950-53 में कोरिया के दो टुकड़े होने पर एक करोड़ लोग एकदूसरे से बिछुड़ गए थे. परिवारों से बिछुड़े लोग अखबारों, टी.वी., रेडियो द्वारा इन दिनों अपने सगेसंबंधियों को तलाश रहे हैं. अंतरराष्ट्रीय रेडक्रास सोसायटी भी बिछुड़े हुए कोरियाई लोगों को ढूंढ़ने और मिलाने का कार्य कर रही है. बिछुड़े हुए सगेसंबंधी जब

कोरिया युद्ध ने कई परिवारों को अलग कर दिया था, लंबी अवधि के बाद फिर उन का मिलन संभव हो सका.

बिछड़े हुए लोगों की वापसी. बाकी लोग अखबार, दूरदर्शन, रेडियो के जरिए अपने परिजनों को ढूंढ रहे हैं.

आपस में मिलते हैं तो काफी देर तक एकदूसरे को आंसूभरी आंखों से देखते रहते हैं. पतिपत्नी के मिलन का दृश्य बड़ा ही मर्मस्पर्शी होता है.

सरकारी पैसे से दूल्हा

विवाह के खरचीले व आडंबरपूर्ण रस्मोरिवाजों और इस अवसर पर दिए जाने वाले दानदहेज से अब मुसलिम देशों के लोग परेशान हो रहे हैं. कहा जाता है कि खाड़ी के देशों के शेखसुलतानों के पास बेशुमार पैसा होता है, लेकिन ये अमीर कहे जाने वाले लोग भी अब व्याहशादियों में होने वाले खर्चे से इतने परेशान हो गए हैं कि वे अपने देश की लड़कियों से शादी न रचा कर भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में शादियां करने जाने लगे हैं.

अरब देशों में दहेज के कारण लड़के अब कुंआरे रहने लगे हैं. बेचारे क्या क... लड़की को दी जाने वाली मेहर की रकम ... सोनेचांदी की चीजें इतनी अधिक कीमती ... गई हैं कि अब शादी करना हर एक के बस ... बात नहीं रही. अब यदि कोई हिम्मत कर ... शादी कर भी लेता है तो वह कर्ज में इतना ... जाता है कि बजाए विवाह की खुशियां म... के किसी तरह पैसा चुकाने के फेर में पड़ जा... है.

सऊदी अरब में अब एक शादी ... 1,500 डालर से ले कर 45,000 डालर ... मेहर में देने पड़ते हैं. वहां दूसरी तरफ ... पर करीब 4,000 डालर खर्च हो जाता ... कुवैत में होने वाली शादी में 1,500 दीनार नकद लड़की को देने होते हैं. साथ ही ... कई आभूषण भी लड़की को दिए जाते हैं. ... के अलावा शादी पर जो खर्च होता है वह ... होता ही है. इस तरह शादी के लिए नवयुवकों को कर्ज तक लेना पड़ता है.

सऊदी अरब, [illegible] और संयुक्त अरब अमीरात ने नवयुवकों को शादी के लिए सरकारी सहायता देना शुरू किया है. अब इन देशों में विवाह के इच्छुक उम्मीदवार को वहां की सरकार 7,000 डालर अनुदान के रूप में देने लगी है. बाकी का खर्चा युवक को अपने आप उठाना पड़ता है. पर इतनी सरकारी सहायता मिलने के बावजूद इन देशों के लोग शादी के लिए अब भी दूसरे देशों में जा रहे हैं, क्योंकि वहां शादी करना इस से सस्ता पड़ता है.

कुरसी की महिमा

ब्रिटेन ने हाल ही में जिबाब्वे विधान सभा के अध्यक्ष को लकड़ी की बनी नक्काशीदार कुरसी भेंट में भेजी, जिसे विधान सभा के अध्यक्ष ने लेने से इनकार कर दिया. 160 सेंटीमीटर ऊंची तथा 85 सेंटीमीटर चौड़ी लकड़ी की बनी इस कुरसी पर हरे रंग की नरम गद्दी लगी हुई है. कुरसी के पीछे लिखा है– 'लोक सभा की तरफ से भेंट.'

जब ब्रिटेन के दो संसद सदस्य– मार्क कार्ल लिस्टल और डाल कौनकैनन इसे भेंट करने जिबाब्वे पहुंचे तो वे बड़े खुश थे. कुरसी की सुंदरता, बनावट व सजावट की उन्होंने बड़ी तारीफ की. लेकिन जब वहां की विधान सभा के अध्यक्ष ने इसे स्वीकार करने की अनिच्छा प्रकट की तो उन्होंने तुरंत दूसरी बढ़िया कुरसी बनवा कर भेंट में देने का वादा किया.

कहा जाता है कि इस कुरसी को लेने से इनकार करने का मुख्य कारण है कुरसी के पीछे 'ब्रिटेन' शब्द का अंकित होना. विधान सभा के सदस्य अपने अध्यक्ष की कुरसी पर बाहरी देश की मुहर लगी देखना पसंद नहीं करते. राष्ट्रमंडल का सदस्य देश होने के नाते जिबाब्वे ब्रिटेन से मधुर संबंध बनाए हुए है. लेकिन वह ऐसी कोई भी बात नहीं करना चाहता जो उस की स्वतंत्रता या प्रभुसत्ता पर जरा भी फर्क डाले.

आधुनिक [illegible] का यह सुंदर नमूना जिबाब्वे में ही है. गैर सरकारी कार्यक्रमों में इस का उपयोग किया जाएगा. उधर ब्रिटेन एक दूसरी बढ़िया कुरसी बनवा कर जिबाब्वे भेज रहा है.

महंगे अंतिम संस्कार

विवाह और मृत्यु- इन दोनों ही अवसरों पर आम अमरीकी व्यक्ति को काफी खर्च करना पड़ता है. विवाह पर होने वाले खर्चे में तो खैर कटौती कर भी ली जाती है. लेकिन सगेसंबंधियों को दफनाने के समय हैसियत से ऊपर खर्च करना पड़ता है और अब तो यह खर्चा बहुत ज्यादा बढ़ गया है.

बढ़ती महंगाई और व्यस्त जीवन के कारण अमरीकी लोग मृतक के अंतिम संस्कार में ज्यादा खर्चा आने से परेशान हैं. उधर मुर्दों को दफनाने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली चीजें भी अब काफी महंगी हो गई हैं. इसी लिए लोग दफनाने में होने वाली धन और समय की बरबादी से ऊबने लगे हैं.

एक अनुमान के अनुसार मुर्दों को दफनाने का सामान बेचने वाले व्यापारियों को इस धंधे से छः अरब 40 करोड़ डालर की वार्षिक आय होती है. पादरियों को जो कुछ दिया जाता है, वह अलग से है.

इस समय अमरीका में एक मुर्दे को दफनाने पर करीब 2,500 डालर का खर्च आता है. अमरीका में मुर्दों को दफनाने का काम करने वाली एजेंसियां अब इस काम को 150 से 500 डालर में करने लगी हैं. कुछेक एजेंसियों ने अपने धंधे को चमकाने के लिए आकर्षक बोर्ड भी बनवा रखे हैं, जिन पर लिखा रहता है, 'मुर्दे को सस्ते में और शीघ्र दफनाइए' तथा 'अपने प्रियजन को शाही शानशौकत से दफनाइए.'

कभीकभी तो अमरीकी लोग पादरियों के कारण भी दुखी हो जाते हैं और अपने किसी बूढ़े धार्मिक व्यक्ति की निगरानी में खुद ही जल्दी से जल्दी मुर्दे को दफनाने का काम कर लेते हैं. •

तीस रुपए की आभा

कहानी • चंद्रशेखर दुबे

केसर बाई के चेहरे पर इन दिनों नई आभा सी नजर आने लगी है. वह अब हमेशा खिलीखिली सी, खुशखुश सी नजर आती है. उस के घर के सामने से जो कोई भी निकलता है, उस से वह हंसहंस कर कुछ न कुछ बात जरूर करती है.

पहले यह बात नहीं थी. तब तो वह अपने घर के आंगन में बुझीबुझी सी, कुम्हलाईकुम्हलाई सी कुछ न कुछ काम करती नजर आती थी. कभी फटेपुराने कपड़ों को टांका लगा रही होती तो कभी अनाज साफ करती होती थी. काम करते समय हमेशा गली की ओर उस की पीठ ही रहती थी. राह चलता कोई परिचित व्यक्ति जब उसे पुकारता था, तभी वह उस की ओर मुंह करती थी, नहीं तो आम तौर पर वह लोगों से नजरें चुरा जाती थी. किसी में भी जैसे उसे कोई दिलचस्पी ही नहीं थी. अपनेआप में सिमटीसिमटी सी वह जिंदगी की राह पर बढ़ रही थी.

मैं ने जब से होश संभाला था, तभी से उसे इसी तरह देखा था—न सावन सूखी, न भादों हरी. केसर बाई अपंग थी, वह चल नहीं पाती थी. पहले दाएं पैर का पंजा आगे रखती, फिर किंचित घूम कर दूसरे पैर का पंजा बढ़ाती थी. इसी तरह एकाएक दोदो फुट की दूरी भी वह बड़ी मुशकिल से तय करती थी. जब कभी घर से बाहर आती और कोई पशु सामने आ जाता तो लोगों को केसर बाई के आसपास बाड़ सी [illegible]

निकल जाता था तभी लोग केसर बाई के पास से हटते थे. किसी रेवड़ के एकाएक सामने आ जाने पर तो लोग केसर बाई को बच्चों की तरह उठा कर पास के बिस्तर पर रख देते थे.

वर्षों से उदास और परेशान केसरबाई का चेहरा अचानक ही खिल उठा था पर जब असलियत सामने आई तो सब लोग चकित रह गए.

केसर बाई जन्म से अपंग नहीं थी. अच्छीभली हालत में ही उस की शादी हुई थी. शादी के बाद ससुराल आने पर वह हादसा हो गया था, जिस के कारण वह अपंग सी हो गई थी.

यह हादसा देखतेदेखते ही घट गया था. हुआ यों कि कपास की भरी गाड़ी पर वह कुछ और स्त्रियों के साथ बैठी हुई आ रही थी. गाड़ी के ऊपर सहारे के लिए कुछ नहीं था. एक मोड़ पर गाड़ी के बैल छाते से चौंक गए और वे गाड़ी को लीक से परे खींच ले गए. गाड़ी का संतुलन बिगड़ गया तथा वह एक ओर से ऊंची तथा दूसरी ओर से नीची हो गई.
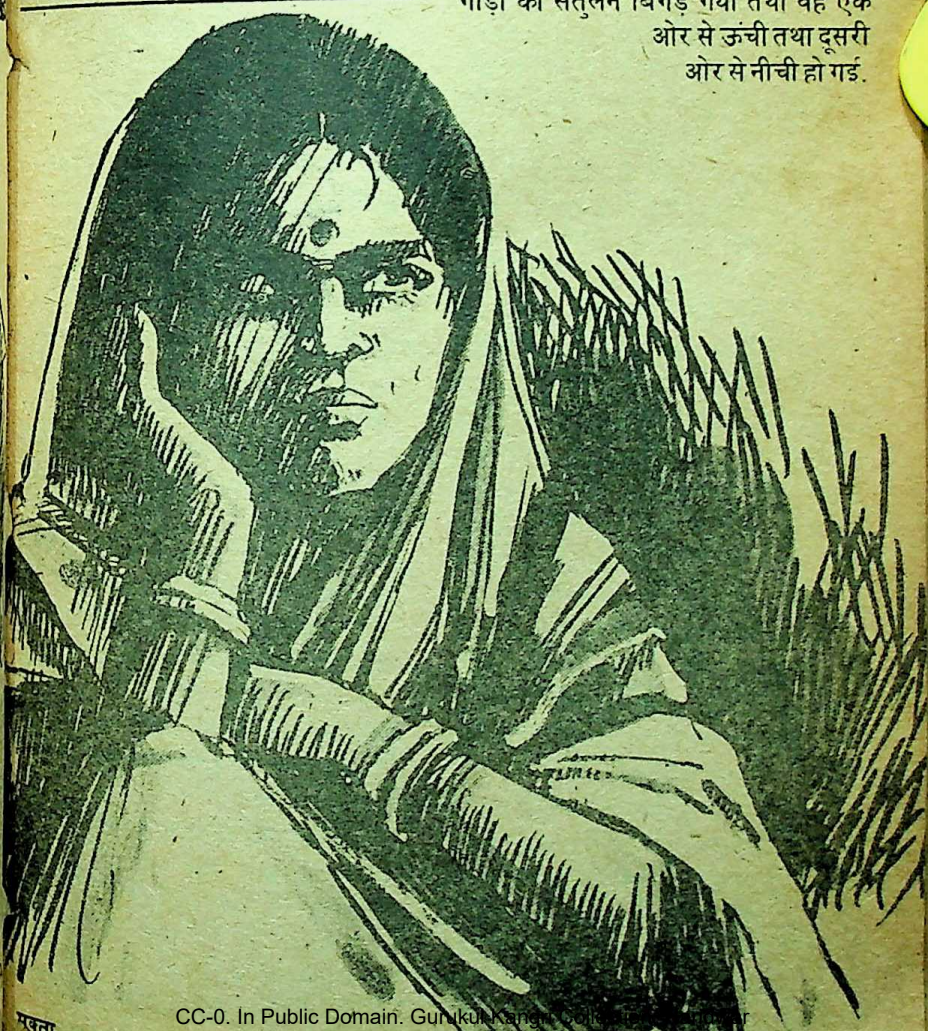
जिस तरफ गाड़ी नीची हो गई थी, उस ओर की स्त्री लुढ़कने लगी. लुढ़कतेलुढ़कते उस ने सहारे के लिए पास बैठी केसर बाई को थाम लिया. अचानक झटका लगने से केसर बाई भी लुढ़क कर उस के साथसाथ गाड़ी में से गिर पड़ी. वह स्त्री तो संयोग से दूर जा गिरी, पर केसर बाई गाड़ी के पहियों के ठीक सामने जा गिरी. ऊपर बैठी स्त्रियां चिल्लाईं. गाड़ी हांकने वाले ने गाड़ी रोक ली थी, मगर तब तक कपास से भरी गाड़ी का चक्का केसर बाई की कमर पर से गुजर गया था. केसर बाई की कमर की हड्डी टूट गई थी.

केसर बाई का काफी इलाज कराया गया. कई दिनों तक वह हस्पताल में भी रही. किंतु उस की कमर की हड्डी नहीं जुड़ सकी. वह जीवित जरूर बच गई. उस के पैर तभी से किसी काम के नहीं रहे.

अपंग हो जाने पर केसर बाई यहां अपने पीहर में आ गई. लौट कर कभी ससुराल नहीं गई. उस की ससुराल वालों ने भी फिर कभी इधर का रुख नहीं किया. केसर बाई जी रही है या मर गई, यह भी पूछने वे लोग नहीं आए.

केसर बाई का भाई गिरधारी अपनी इस बहन से बड़ा स्नेह रखता था. इस हादसे की खबर पाते ही वह भोजन की थाली पर से उठ कर दौड़ पड़ा था. बहन की ससुराल पहुंच कर वह उसे फौरन शहर के हस्पताल ले गया था. उसी ने महीनों बहन का इलाज कराया था. इस हस्पताल से उस हस्पताल और इस डाक्टर से उस डाक्टर के पास दौड़ता फिरा था. किंतु जब किसी भी तरह से कोई फायदा नहीं हुआ तो वह अपनी लाडली बहन को अपने घर ले आया था. केसर बाई की भावज भी उस पर जान छिड़कती थी.

ऐसे अच्छे भाईभावज के होते हुए भी केसर बाई के चेहरे पर इस हादसे के बाद से जो मायूसी उभरी तो वह इतने सालों में भी नहीं गई. भाईभावज कदमकदम पर उस का खयाल रखते थे. किसी काम को नहीं कहते थे. भाईभावज चाहते थे कि वह हमेशा फूल सी खिली रहे. अपने गम को भूल जाए. वे उस का दिल बहलाने के लिए बच्चों को उस की गोदी में डाल जाते थे. इधरउधर की बातें सुनाया करते थे. मगर केसर बाई का जी जैसे उड़ाउड़ा सा रहता था. बच्चों में या दुनिया में भी उस का मन नहीं लगता था. दिन भर कोई न कोई काम ले कर बैठ जाती थी. कोई काम नहीं होता तो खजूर के पत्तों की चटाई बुनने लगती. इस काम में उस की दक्षता का कोई मुकाबला नहीं था.

भाईभावज खुश थे कि चलो चटाई बनाए, केसर बाई का मन तो लगता है. अपना गम तो भूलती है. इतना होने पर भी भाईभावज को यह मलाल जरूर था कि केसर बाई अकसर उदास क्यों रहती है, उस के चेहरे पर हमेशा घटाएं सी क्यों घिरी रहती हैं, उस की आंखों की कोर नम क्यों रहती है, गांव के लोगों से नजरें क्यों चुराती है, खुल कर सब से हंसतीबोलती क्यों नहीं, वह इस घर में अपनेआप को बोझ सा क्यों समझती है.

किंतु भाईभावज को अपने इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिल रहे थे. बारबार पूछे जाने पर केसर बाई यही कह देती, "कोई बात हो तो बताऊं. हंसनेबोलने को भीतर से मन ही नहीं होता है."

गिरधारी ने झुंझला कर आखिर एक दिन कह ही दिया था, "ससुराल जाना चाहती है क्या?"

केसर बाई की आंखों से चिनगारियां सी झड़ने लगी थीं. वह गुस्से से कांपती हुई बोली थी, "गिरधारी आज के बाद फिर कभी ससुराल का नाम लेगा तो मैं जा कर कुएं में कूद जाऊंगी. जिन नासपीटों ने कभी मेरी खबर नहीं ली, उन से मेरा क्या नाता? वे तो मेरे पैरों के नातेदार थे. मैं अपंग हो गई तो उन का मेरा नाता टूट गया है."

उस दिन के बाद से गिरधारी ने इस किस्म की बात कभी नहीं की. बहन जैसे रहती है, रहे. उसे जो सूझे वह करे.

बहन का बुझाबुझा सा, कुम्हलाया कुम्हलाया सा चेहरा देख कर कभीकभी उस के मन में आता था कि बहन की ससुराल

कर उन से खूब लड़े, उन्हें खूब खरीखोटी सुनाए, क्योंकि बहन की उदासी का एक यही कारण उस की समझ में आता था. उस की ससुराल वालों की हृदयहीनता ही उसे बहन के मन की फांस प्रतीत होती थी.

पर गिरधारी बहन के व्यवहार से बेबस हो गया था. उस की व्यथा से जब भी उस का मन भर आता था, वह चुपकेचुपके रो कर अपना मन हलका कर लेता था.

इसी केसर बाई का चेहरा जब पिछले कुछ दिनों से खिलने लगा तो गिरधारी आश्चर्यचकित रह गया. वह हैरानी से देखने लगा कि बहन अब बजाए गली की ओर पीठ कर के बैठने के मुंह कर के बैठने लगी है. हर आनेजाने वाले से बात करने लगी है. हर एक के हालचाल पूछने लगी है. घर के बच्चे तो हैं ही, दूसरों के बच्चों को भी वह हाथ बढ़ा कर लेने लगी है. उस की आंखों में एक नई चमक सी आ गई है. उस के चेहरे पर से गमों के बादल जैसे छंट गए हैं. चटाई बुनतेबुनते अब वह गीत भी गुनगुनाने लगी है.

गिरधारी हैरान था कि यह सब कैसे हो गया है. वह तो हर तरह से कोशिश कर के हार गया था, किंतु केसर बाई की आंखों के आंसू कभी नहीं सुखा पाया था. उस का चेहरा कभी दमका नहीं पाया था. मगर ग्राम पंचायत की 30 रुपए माहवार की मदद ने केसर बाई पर यह क्या जादू कर दिया है कि उस की आंखों के न केवल आंसू खुश्क हो गए हैं अपितु उस के चेहरे के वे बादल भी छंट गए हैं, जो उसे कुम्हलाईकुम्हलाई सी रखते थे. वह अब हर समय खिलीखिली सी, खुशखुश सी नजर आने लगी है.

गिरधारी से नहीं रहा गया. वह बहन से पूछ ही बैठा, "बाई, तुझ पर मैं ने कई तीस रुपए न्योछावर कर दिए, फिर भी तेरे आंसू नहीं थमे. पंचायत के इन 30 रुपयों में ऐसी क्या खासियत है."

केसर बाई ने मुसकराते हुए जवाब दिया, "वीरा, तुझे कैसे समझाऊं?" "मेरी सांससांस तेरी कर्जदार है," भाई के सिर को अपने हृदय से लगाती हुई वह रुंधे गले से बोली, "गिरधारी, पंचायत के इन 30 रुपयों ने मेरे पैर जैसे धरती पर टिका दिए हैं. मुझे कुछ हैसियत मिल गई है. तू गलत मत समझना, भैया, मैं अगर विधवा हो कर तेरे यहां आती तो मेरा रहना जायज होता. पर सधवा होते हुए भी मेरा यहां रहना तुझ पर बोझ ही था. मेरी ससुराल वालों ने मुझे कहीं का नहीं रखा, उन के घर में मेरे लिए दो रोटी भी नहीं निकली. इतना तो मैं उन के यहां काम ही कर देती. पर उन्होंने सिर से उतरे बाल की तरह मुझे फेंक दिया.

"तू मुझे आश्रय न देता तो जाने मेरा क्या होता. यही नासूर मुझे भीतर ही भीतर खाए जाता था. पर अब मुझे 30 रुपयों से पैरों के नीचे जमीन मिल गई है. इन 30 रुपयों ने मुझे नई इज्जत दे दी है. पर, देख, तू सरपंच से जा कर कह दे कि मैं मुफ्त में यह मदद नहीं लूंगी. पंचायत की बैठक के लिए मैं चटाइयां बुन कर दूंगी. दोनों ओर से बुनी हुई चटाई दूंगी. मेरी बुनी चटाइयों पर पंच बैठेंगे, तभी मैं यह सहायता लूंगी. जा कह दे और यह चटाई भी ले जा."

गिरधारी उठ खड़ा हुआ. चटाई के बंडल उठा कर वह पंचायत भवन की ओर चल पड़ा. उस ने पीछे मुड़ कर देखा तो केसर बाई का चेहरा नई आभा से दमकता हुआ सा नजर आया. वह मुग्ध सा देखता ही रह गया. बहन ने जाने के लिए उसे बारबार संकेत किया, तब कहीं वह आगे बढ़ा. फिर भी वह मुड़मुड़ कर बहन को ही देखता रहता. •

जुल्फ

मैं सोचता हूं जमाने का
हाल क्या होगा,
गर उलझी हुई जुल्फ
तूने न सुलझाई.

—अहमद राही.

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता :
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3 रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

एक बार हमारे घर भाई साहब के एक मित्र आए. वह बहुत ही विनोदी स्वभाव के कभीकभी उन पर इश्क का भूत भी सवार हो जाता था.

उन्होंने मेरी बहन से, जो मेडिकल कालिज में पढ़ती है, कहा, "मुझे एक डाक्टर लवलेरिया नामक रोग बता दिया है. लेकिन उस ने कहा है कि इस का निदान एक लेडी डाक्टर ही कर सकती है. क्या तुम्हारे साथ की कोई लड़की इलाज बता सकती है?"

मेरी बहन काफी हाजिरजवाब थी. वह बोली, "इस रोग का इलाज तो बहुत सरल है. आप सुबहशाम नियमित रूप से दो खुराक सैंडिल सैंडोज तथा भोजन में सिर्फ बूट पुलाव का सेवन करें. सात दिन में इस दवा का असर आप महसूस करने लगेंगे."

यह सुन कर हम लोगों का हंसतेहंसते बुरा हाल हो गया

—नलिनी गो[illegible]

*

शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान में सफेद साड़ी अनिवार्य होती है. एक बार मैं तीन सहेलियों के साथ संस्थान से वापस आ रही थी. सामने से तीन लड़के आ रहे थे.

हमारे पास से गुजरते हुए उन में से एक बोला, "अभी हम मरे नहीं हैं, फिर तुम विधवा क्यों बनी हुई हो?"

तभी हमारी साथ की एक लड़की ने कहा, "हमें क्या पता था कि तुम मरघट से उठ कर चले आ रहे हो?" अब लड़कों का मुंह देखने लायक था.

—छाया [illegible]

*

उस समय मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था. एक दिन एक छात्र ऐसी फिल्म देख कर आया जिस में सीता स्वयंवर की कहानी थी. रात में फिल्म देखने के कारण उसे कक्षा में नींद आ रही थी.

कक्षा में अध्यापक सीता स्वयंवर का प्रसंग बता रहे थे. उन्होंने एक लड़के से पूछा, "स्वयंवर कब हुआ?"

उसी के बगल में बैठे हुए उस छात्र ने जवाब दिया, "मध्यांतर के बाद."

—विनो[illegible]

*

एक बार हमारी कक्षा में तीन लड़के झगड़ रहे थे. अध्यापक ने यह देख कर एक लड़के को बुला कर पूछा, "तुम क्या रह रहे थे?"

लड़के ने कहा, "वे दोनों झगड़ रहे थे और मै बीचबचाव करा रहा था."

इस पर शिक्षक ने उसे धोबी के घर में चोर घुस जाने का किस्सा सुनाया और कहा कि धोबी के गधे ने मालिक को जगाने के लिए रेंकना शुरू कर दिया,क्योंकि कुत्ता सो रहा था. धोबी ने उस गधे को असमय नींद खराब करने के लिए पीटना शुरू कर दिया.

अध्यापक ने कहा, "तुम्हें मुझ से इस की शिकायत करनी चाहिए थी."

इस पर लड़का धीरे से बोला, "लेकिन, श्रीमानजी, आप तो सो रहे थे."

—अ[illegible]

एक बार हमारे कालिज में विचार गोष्ठी चल रही थी. जिस में लड़केलड़कियां दोनों हिस्सा ले रहे थे. एक लड़के ने काफी देर तक बोलना जारी रखा. वह प्रत्यक्ष रूप से लड़कियों पर व्यंग्य कर रहा था. उस ने लड़कियों को अविवेकी, अधर्मी और भी न जाने क्याक्या कहा.

वह अभी कह ही रहा था कि एक लड़की से रहा नहीं गया. उस ने कहा, "तभी तो तुम इन गुणों से संपन्न एक नारी के पेट में नौ माह तक रहे थे."

अब उस लड़के की बोलती बंद हो गई.

—दिनेशकुमार बंशीया

*

एक दिन हमारी हिंदी की कक्षा चल रही थी. हिंदी के अध्यापक शृंगार रस के वियोगपक्ष के बारे में उदाहरण सहित समझा रहे थे, कुछ उदाहरण देने के बाद उन्होंने छात्रों से कोई उदाहरण देने को कहा.

पहले तो कक्षा में चुप्पी छाई रही. परंतु कुछ देर बाद पीछे से आवाज आई, "याद आ रही है, याद आने से तेरे जाने से, जान जा रही है."

इतना सुनते ही अध्यापक सहित सभी हंस पड़े.

—राजेश निगम

*

हमारे बाजू वाले घर में बापबेटे की नहीं पटती थी. इसलिए उन में हमेशा झगड़ा होता रहता था. एक दिन बेटे के ज्यादा तंग करने पर बाप ने गुस्से से कहा, "बेटे, जिस तरह तू मुझे तंग कर रहा है, तेरे बेटे भी तुझे इसी तरह तंग करेंगे."

तब बेटे ने पूछा, "क्या आप ने भी अपने पिताजी को इसी तरह तंग किया था. जिस तरह मैं आप को कर रहा हूं?"

—चंद्र हीरानी

*

एक बार हमारे कालिज में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया था. एक कवयित्री को लड़के शोर मचा कर पढ़ने नहीं दे रहे थे. आखिर तंग आ कर कवयित्री ने कहा, "देखिए, आप लोग शांत हो जाइए. आप ही के बीच मेरे पतिदेव भी बैठे हुए हैं. वह बहुत ही खतरनाक किस्म के आदमी हैं. वह विश्व के माने हुए मुक्केबाज हैं. उन्हें अगर गुस्सा आ गया तो आप की खैर नहीं."

तभी एक छात्र हाथ जोड़ कर सब लोगों का अभिवादन स्वीकार करने की मुद्रा में इस तरह उठ खड़ा हुआ, मानो वह ही उस कवयित्री का पति हो.

लोग हंसने लगे और उस कवयित्री का बुरा हाल हो गया.

—शरदकुमार जैन

*

हमारे एक अध्यापक जो चश्मा लगाते थे, अकसर कहा करते थे, "जो चश्मा लगाते हैं, विलक्षण बुद्धि वाले होते हैं."

एक दिन वही अध्यापक कक्षा समाप्त होने पर अपना चश्मा मेज पर ही भूल कर जाने लगे. तभी पीछे से एक छात्र की आवाज आई, "श्रीमान आप अपनी विलक्षण बुद्धि तो मेज पर ही छोड़े जा रहे हैं.

इस के बाद उन अध्यापक महोदय ने अपनी बात कभी नहीं दोहराई.

—गोपालप्रसाद खेतान

*

बात उन दिनों की है जब मैं नवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे भूगोल के अध्यापक बातबात में 'आप ने देखा होगा.' कहते थे.

एक बार वह सूर्य के बारे में पढ़ा रहे थे, "सूर्य आग का एक गोला है."

तभी पीछे से आवाज आई, "आप ने देखा होगा."

इतना कहना था कि कक्षा में हंसी गूंज उठी.

—हरभजनसिंह आबार ●

महिला रोजगार

विज्ञान की समझ रखने
युवतियों के लिए
महत्त्वपूर्ण व्यवसाय.

लेख • प्रतिनिधि

चिकित्सा संस्थाओं के अर्द्ध चिकित्कीय (सेमी-मेडिकल) रोजगारों में रेडियोग्राफर काफी महत्त्वपूर्ण है. इसे एक्स रे तकनीशियन भी कहते हैं. विज्ञान की छात्राओं के लिए यह एक बहुत उपयुक्त व्यवसाय है. डाक्टरों व अन्य विशेषज्ञों को बीमारियों की जांचपड़ताल में

रेडियो ग्राफर
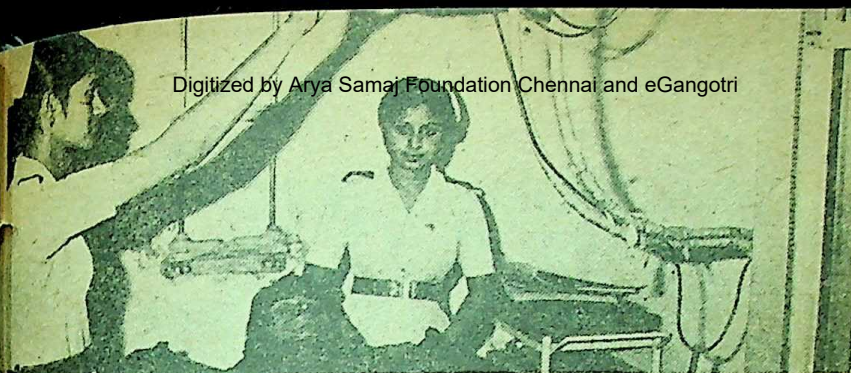
एक्सरे के पूर्व रोगी और मशीन की स्थिति को ठीक ढंग से संयोजित करना जरूरी है.

रेडियोग्राफर की आवश्यकता पड़ती है. रेडियोग्राफर की भूमिका चिकित्सीय प्रयोग शाला (मेडिकल लैबोरेटरी) के तकनीशियन जैसी ही होती है.

रेडियोग्राफर एक्स रे मशीन का संचालन करता है. वह डाक्टर के निर्देश पर रोगी के शरीर के विभिन्न हिस्सों के रेडियोग्राफ लेता है.

रेडियोग्राफी विभाग में रेडियोग्राफर दो प्रकार के काम करता है—पहला काम त्वचा के उपचार से संबद्ध हैं. दूसरा त्वचा के नीचे के हिस्सों के उपचार से.

रेडियोग्राफर विशेष शल्य चिकित्सा के दौरान रेडियम आवेशित सुइयों के इस्तेमाल में सहायता करता है.

बड़ेबड़े हस्पताओं में तो डार्क रूम में फिल्म लोड करने, डैवलप करने और एक्सपोज हुई फिल्म को धोने के काम के लिए अलग से एक्स रे तकनीशियन रखे जाते हैं, पर छोटे हस्पतालों में डार्क रूम का सारा काम रेडियोग्राफर ही करता है.

यदि आप ने भौतिक, रसायन व जीव विज्ञान आदि विषयों के साथ मैट्रिकुलेशन किया है तो आप रेडियोग्राफर के रूप में अपना भविष्य चुन सकती हैं. लेकिन डिप्लोमा पाठ्यक्रम करने के लिए विज्ञान विषयों (जीव विज्ञान आवश्यक) के साथ हायर सेकंडरी या समकक्ष परीक्षा उत्तीर्ण होना जरूरी है.

उपरोक्त योग्यता होने पर, रेडियोग्राफी के व्यवसाय में जाने के लिए एक वर्षीय प्रशिक्षण जरूरी है. वैसे यह प्रशिक्षण तीन प्रकार से लिया जा सकता है:

हस्पतालों में रोजगाररत रह कर, चिकित्सा महाविद्यालयों में प्रमाणपत्र पाठ्क्रम कर के, चिकित्सा महाविद्यालय या अन्य संस्थान से डिप्लोमा कोर्स कर के

रेडियोग्राफर की नियुक्ति के लिए आयु सीमा 18 से 30 वर्ष है.

केंद्र, राज्य सरकारों व निजी संस्थाओं के हस्पतालों में रेडियोग्राफर की नियुक्तियां समयसमय पर होती हैं. नर्सिंग होम, चिकित्सा शोध संस्थान, क्लीनिक और सुरक्षा चिकित्सा प्रतिष्ठानों में भी रेडियोग्राफर के लिए काफी अवसर हैं.

यहां जब भी रेडियोग्राफरों की आवश्यकता होती है तो समाचारपत्रों में विज्ञापन दिया जाता है. रोजगार कार्यालयों के माध्यम से भी नियुक्तियां होती हैं. इस क्षेत्र में जाने के लिए बड़े हस्पतालों और चिकित्सा महाविद्यालयों से संपर्क रखना लाभदायक सिद्ध होगा.

रेडियोग्राफर को आरंभ में 600-700 रुपए वेतन तथा अन्य सुविधाएं मिलती हैं.

लोकनायक जयप्रकाशनारायण हस्पताल में कार्यरत एक रेडियोग्राफर ने बताया, "रेडियोग्राफर का आर्थिक व सामाजिक पक्ष तो सुदृढ़ है ही, काम करने का ढंग भी काफी रोचक है. तरहतरह के लोगों के शरीर की अंदरूनी संरचना को देख कर, जिसे नंगी आंखों से देख पाना संभव नहीं है, बड़ा रोमांच होता है."

दिल जोड़ने के दिन

संकोच भरी कामनाएं खोलने के दिन आए.
भावनाओं की चुप्पी तोड़ने के दिन आए.

रंग भरा मौसम
तनहा क्यों जिएं
दकियानूसी वर्जनाएं क्यों पिएं
पुरनम हवाएं
भीनीभीनी गंध
छिटकी हरीतिमा.
सोनाली धूप
धुली नभ नीलिमा.
अल्हड़ सी उम्र पंख खोलने के दिन

गदबदे काले बादल
क्षितिज अंजा काजल
खरगोशी संध्या
अकुराई प्रीत में
मन मयूर पागल.
पुरानी दीवारें ढहने दो
नई रोशनी, नई धार बहने दो
बहारों में बेझिझक दिल जोड़ने के दि

—रामेश्वर हरिद

आप का भाषा ज्ञान

निम्नलिखित परिभाषा के लिए उपयुक्त शब्द बताइए. अपने उत्तर का मिलान पृष्ठ 118 पर दिए गए शब्दों से करें.

1. झगड़ा करने वाली बात.

2. एक जाति जो अपने यजमानों का वंशचरित सुनाने, स्तुतिपरक तुकबंदी आदि करने का पेशा करती है.

3. लकड़ी या लोहे का बना हुआ पहिया, जिस का घेरा नालीदार होता है और जो सुगमतापूर्वक स्वतंत्रता से घूम सकता है.

4. वह अधिकारी जो संसद या विधान सभा में अपने दल के सदस्यों द्वारा सदन में अनुशासन का पालन कराने, उन की उपस्थिति ठीक रखने, उन्हें आवश्यक सूचना देने, उन्हें वोट देने के लिए बुलाने आदि की व्यवस्था करता है.

5. जंगलों या पहाड़ी स्थानों आदि में रहने वाले ऐसे लोगों का समूह जो शिक्षा, सभ्यता आदि में समीपवर्ती स्थानों के लोगों से कुछ पिछड़े हुए हों और जो अपनेअपने मुखियों या सरदारों के आदेशों के अनुसार चलने के आदी हों.

6. विकार से उत्पन्न होने वाले अतिसूक्ष्म एक कोषीय शाकाणु, जिन में से कितने ही तो रोगों की उत्पत्ति के कारण माने जाते हैं. और कुछ शरीर के लिए लाभदायक भी होते हैं.

7. कर्मचारियों पर दबाव डालने के लिए मालिकों या कारखानों के फाटक पर ताला लगा कर उन्हें बाहर रखने का कार्य.

8. किसी युद्ध या झगड़े पर उतारू व्यक्ति को रिश्वत दे कर, अनुनयविनय द्वारा संतुष्ट करना.

9. वह शासन व्यवस्था, जिस में राज्य का कार्य ईश्वर या धर्म के नाम पर पुरोहितों धर्माध्यक्षों आदि द्वारा ही संचालित हो.

10. वह आवेदनपत्र जो विधान सभा, नगरपालिका आदि के चुनाव में उम्मीदवार की हैसियत से खड़े होने वाले व्यक्ति द्वारा अपनी अर्हता, नाम, प्रामाणिकता आदि का स्पष्टीकरण करते हुए चुनाव के उपयुक्त अधिकारी के सामने उपस्थित किया जाए.

11. किसी कर्मचारी के अपराधी या दोषी होने का संदेह उत्पन्न होने पर उसे तब तक के लिए अपने पद से हटा देना जब तक उस संबंध में यथोचित छानबीन या जांच न हो ले, कोई नियम, अधिवेशन, कार्य आदि कुछ समय के लिए उठा रखना, टाल देना.

12. आवश्यक रकम ले कर वांछित वस्तुएं जुटा देने, पहुंचा देने का लिखित वादा.

13. कोई कर्मचारी काम के योग्य है या नहीं, इस की जांच या परख करने का समय.

मनुष्य और अन्य जीवनधारियों में सब से बड़ा अंतर यही है कि मनुष्य बोल सकता है, अपनी बात दूसरे मनुष्य तक पहुंचा सकता है और दूसरे की सुनसमझ सकता है. आप अपनी अधिक से अधिक बात थोड़े शब्दों में कह सकें. यही मानवीय ज्ञान का रहस्य है.

आप को जो कहना होता है उस के लिए उपयुक्त शब्द नहीं मिलता. यह स्तंभ आप की इस कठिनाई को दूर करने का एक प्रयत्न है. इस से आप का भाषा ज्ञान बढ़ेगा और दैनिक जीवन में सुविधा मिलेगी.

—संपादक.

धरना

व्यंग्य • गोपाल त्रि...
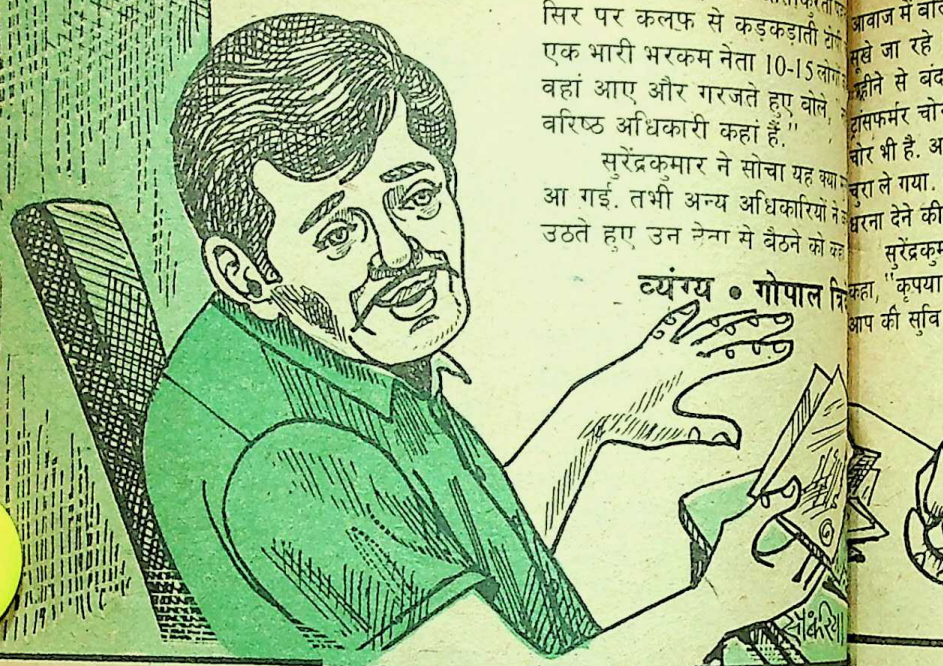
इस बार फिर भयंकर सूखा पड़ गया. सिंचाई विभाग में वरिष्ठ अभियंता सुरेंद्रकुमारजी हर रोज दौरे के लिए बोरियाबिस्तर बांधे तैयार रहने लगे.

अभी वह दौरे से आए ही थे कि फिर चल दिए. इस बार उन्हें एक छोटे से कसबे में जाना था.

वह आ कर कसबे के डाक बंगले में ठहरे. दूसरे दिन दोपहर से कुछ लोग डाक बंगले के अहाते में शामियाना, दरी ले कर इकट्ठे होने शुरू हो गए. खानेपीने की चीजों के एकदो ठेले और खोंमचे वाले भी आ गए. लग रहा था जैसे डाक बंगले में कोई जलसा वगैरा होने वाला हो.

शाम को सुरेंद्रकुमार डाक बंगले में आए और बाहर बरामदे में ही बैठ कर ...

... उन के साथ एक ... अधिकारी भी थे, तभी धोतीकुरता ... सिर पर कलफ से कड़कड़ाती ... एक भारी भरकम नेता 10-15 लोगों ... वहां आए और गरजते हुए बोले, "... वरिष्ठ अधिकारी कहां हैं."

सुरेंद्रकुमार ने सोचा यह क्या ... आ गई. तभी अन्य अधिकारियों ने ... उठते हुए उन नेता से बैठने को कहा ...

सुरेंद्रकुमार बोले, "आइए बैठिए, मैं ... अभियंता हूं, कहिए क्या बात है."

इस पर वह नेता गुस्से से भड़क ... "आप लोगों ने बहुत अंधेर कर रखा ..."

यह कहते हुए वह कुरसी पीछे ... कर बैठने ही वाले थे कि कुरसी ... नीचे लुढ़क गई और वह भी लान में ... कुछेक लोगों को उन के यों अचानक ... पर हंसी आ गई. कई लोगों ने मिल कर ... उठाया. वह धूल झाड़ते हुए उठे और ... बैठ गए.

उन के बैठने के बाद सुरेंद्रकुमार ... पूछा, "अब बताइए कि आप ... परेशानी है. मैं आप लोगों की परेशानी ... दूर करने के लिए ही तो यहां आया ..." ... के इस शिष्ट उत्तर ...

अपने साथियों की ओर इशारा करते हुए, तेज आवाज में बोले, "भयंकर सूखे से इन के खेत सूखे जा रहे हैं और सरकारी ट्यूबवैल दो महीने से बंद पड़ा है. तीन बार उस का ट्रांसफार्मर चोरी हो गया है. आप का विभाग चोर भी है. आप का आपरेटर ही ट्रांसफार्मर चुरा ले गया. हम सब आज सुबह से ही यहां धरना देने की तैयारी कर के आए हैं."

सुरेंद्रकुमार ने गंभीर होते हुए उन से कहा, "कृपया ट्यूबवैल का नंबर बताएं तो मैं आप की सुविधा के लिए कुछ करूं."

धरना देने की पूरी तैयारी कर के आए नेता को उम्मीद नहीं थी कि उन्हें इस तरह बेइज्जत हो कर मुंह की खानी पड़ेगी.

इस पर वह नेता बगलें झांकने लगे और अपने साथियों से बोले, "अब चुप क्यों हो, अपने ट्यूबवैल का नंबर क्यों नहीं बताते, जिसके कारण तुम्हारी खेती सूखीं जा रही है."

नेता और उस के साथी ट्यूबवैल का नंबर नहीं जानते थे अतः एकदूसरे को देखने लगे.

उन की बात समझते हुए सुरेंद्रकुमार बोले, "अच्छा आप को नबंर नहीं मालूम तो आप उस गांव का नाम ही बता दीजिए जहां वह ट्यूबवैल लगा है."

उन लोगों द्वारा गांव का नाम बताने पर कनिष्ठ अधिकारी शंकित हो उठे. तुरंत नक्शा मंगवा कर मेज पर फैला दिया गया. नक्शा देखने पर पता चला कि उस गांव में तो कोई भी ट्यूबवैल सिचाई विभाग की ओर से नहीं लगाया गया था. यह देख कर सुरेंद्रकुमार और उस के साथियों ने चैन की सांस ली. नहीं तो वे धरने के नाम से कांप ही उठे थे. बाद में पता चला कि वह किसी का व्यक्तिगत ट्यूबवैल था.

अब तो नेताजी अपने साथियों पर बरस पड़े, "न कुछ जानते हो, न समझते हो और मुझे यहां ला कर नाहक एक भले अफसर से

लड़वा दिया." फिर बड़े विनम्र हो कर सुरेंद्रकुमार से बोले, "क्षमा करें, मुझ से भूल हुई, गुस्से में मैं ने आप को भलाबुरा कह दिया. मुझे क्या पता था कि यह ट्यूबवैल आप के विभाग का नहीं है."

वातावरण में सन्नाटा छा गया और सुरेंद्रकुमार सोचने लगे कि 'आखिर नेता ही बिना पूरी जानकारी प्राप्त किए किसी से लड़ने क्यों चले आए. मानो यह भाड़े के टट्टू हों, जिस ने भाड़ा दिया उसी के लिए चल पड़े.'

यकायक नेता ने वातावरण की शांति भंग की और अपने साथियों से बोले, "चलो, तुम लोग चलो, मैं आ रहा हूं." और लोगों के वापस जाते ही सुरेंद्रकुमार से बोले, "कल आप मेरे घर चाय पर पधारें...."

बड़ी आश्चर्यजनक बात थी अभी तो यह नेता आग्बबूला हुए जा रहे थे, विनम्रतापूर्वक चाय के लिए आमंत्रि[त करने] लगे थे. कैसेकैसे रंग बदलते हैं ये ने[ता].

"चाय के लिए धन्यवाद, [आप] कृपा बनाए रखें यही बहुत है, डरता [हूं] आप फिर अकारण नाराज न हों," सुरेंद्रकुमार ने डरने के बनावटी अं[दाज में] कहा तो वह खिलाखिला कर हंस पड़े.

बेचारे ठेले वाले निराश से ठेले [ले] कर वापस चल पड़े. खोमचे वाले भी खोमचे रख कर धीरेधीरे बड़बड़ा[ते] चलने लगे, "कहते थे धरना देंगे, यह वह करेंगे, ऐन मौके पर दुम दबा क[र भाग] गए. इस से तो कहीं और बैठे होते तो फ[ायदे में] रहते. आज न जाने किस का मुंह देखा [था]. इन नेताओं के चक्कर में फंस गए, [माल] की बिक्री भी न हुई."

आप देर से आने की बात कहते हैं? मगर जब तक सरकार कर्मचारियों को घड़ियां नहीं देती उसे समय की पाबंदी की आशा नहीं करनी चाहिए.

सुबह जल्दी उठने की आदत डालिए

आप के व्यक्तित्व के विकास और आत्मविश्वास के लिए जरूरी है कि आप इस आदत को अपनाएं.

लेख • जगतार आनंद
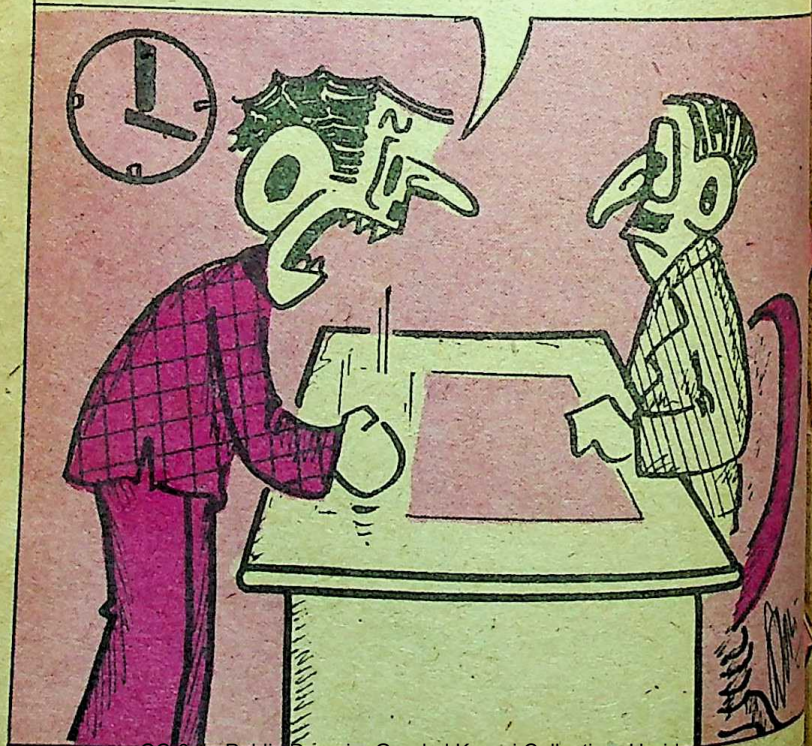
'शहरों में जीवन की रफ्तार बहुत तेज होती है. यहां हर किसी को समय की कमी की शिकायत रहती है. इसी लिए बहुत से व्यक्तियों के काम अटके पड़े रहते हैं. मन की भीतरी परतों में छिपी उन की बहुत सी इच्छाएं दबी रह जाती हैं, क्योंकि उन्हें पूरा करने के लिए उन्हें समय ही नहीं मिलता.

लेकिन एक व्यक्ति ने इस समस्या का
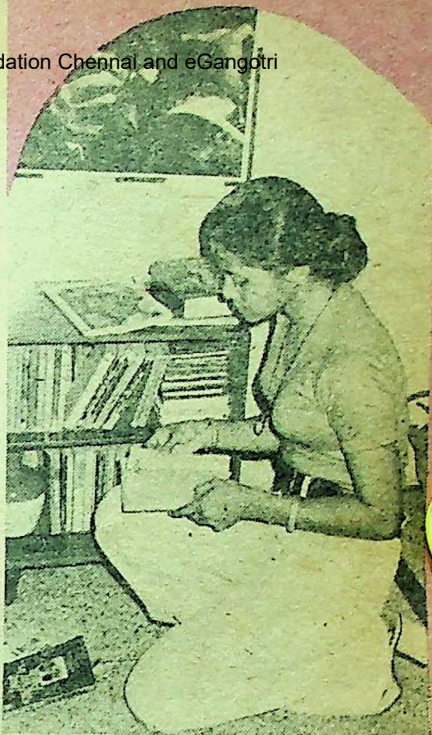
हल बहुत जल्दी [illegible] ने
उसे कहानियां और लेख लिखने का शौक था. उस की इच्छा एक अच्छा लेखक बनने की थी. लेकिन शादी हुई तो उस की जिम्मेदारियां भी बढ़ गईं और उसे एक फर्म में क्लर्क की नौकरी करने पर विवश होना पड़ा. लिखनाविखना सब छूट गया. वह अपने जीवन व वैवाहिक संबंधों से असंतुष्ट रहने लगा. पांच साल की मानसिक अतृप्ति और तनाव ने उस के मन एवं शरीर दोनों को रोगी बना दिया.

उस की समस्या दरअसल पूरी तरह मनोवैज्ञानिक थी. उस के मूल में था साहित्य लिख व पढ़ पाने की अतृप्त लालसा. इस लालसा की पूर्ति में दो बाधाएं थीं– समय की कमी व गृहस्थी के झंझट.

उसे सलाह दी गई कि वह सुबह पांच बजे से पहले उठना शुरू कर दे. इस पर वह बोला कि कम सोने से तो उस का शरीर टूटाटूटा सा रहने लगेगा.

लेकिन उसे समझाया गया. "घड़ी का अलार्म लगाओ और हर हालत में सुबह पांच बजे से कुछ पहले उठ जाओ. पांच बजे से ले कर सात बजे तक प्रतिदिन दो घंटे लिखने का काम करो. रविवार का पूरा आधा दिन मनपसंद पुस्तकें पढ़ने के लिए रखो. फिर देखो तुम्हारे जीवन में कैसा अंतर आता है. जब कुछ दिन बाद सुबहसुबह उठने की आदत पड़ जाएगी तो तुम्हारा शरीर और मन दोनों ही स्वस्थ हो जाएंगे."

उस ने इन सुझावों पर पूरी ईमानदारी से अमल किया. इस से उस के जीवन में अद्भुत परिवर्तन आ गया. लिखने का फिर से अभ्यास शुरू कर देने से छः महीने बाद ही विभिन्न पत्रपत्रिकाओं में उस की रचनाएं छपने लगीं. एक साल बाद वह और उस की पत्नी दोनों ही बेहद प्रसन्न थे. उस व्यक्ति का स्वास्थ्य व चेहरे की रौनक देख कर सभी हैरान हो गए. उस के जीवन में बहारें व खुशियां फिर से लौट आईं थीं.

एक बार लेखक ने उस से उस की सफलता का राज पूछा.

"[illegible] दैनिक जीवन में डेढ़ घं[illegible] वृद्धि." उस का जवाब था.

"वह कैसे?"

"पहले मैं सात बजे उठ करता [illegible] फिर एक बार फैसला किया कि साढ़े पांच [illegible] उठा करूंगा. तब से इसी नियम पर चल [illegible] हूं. अब मैं ने अपने जीवन के प्रत्येक व[illegible] 547½ घंटे अतिरिक्त रूप से जोड़ लि[illegible] इन का उपयोग मैं अपने व्यवसाय से संबं[illegible] पुस्तकें पढ़ने व मनन करने में करता हूं."

उस की इस आदत ने उसे चंद व[illegible] ही धनवान बना दिया.

लेकिन जल्दी उठ पाना हर किसी [illegible] लिए आसान नहीं होता. हो सकता है आप [illegible] इसे एक दुष्कर कार्य समझते हों. पु[illegible] आदतों को बदलना थोड़ा कठिन होता [illegible] लेकिन अगर आप लगातार कोशिश क[illegible] रहें तो सफलता मिलना असंभव नहीं. प[illegible] केवल 15 मिनट जल्दी उठने का अभ्यास [illegible] फिर कुछ दिनों बाद 15 मिनट और बढ़ा[illegible] इस प्रकार आप धीरेधीरे जल्दी उठने [illegible] आदत डाल सकते हैं.

सुबह का समय

सुबह का समय सुहावना व शांति[illegible] होता है. ऐसे समय काम करने में काफी आ[illegible] आता है. इस समय मानसिक शक्तियां प्र[illegible] रहती हैं. शाम या रात के समय आप चार [illegible] में जितना काम करेंगे, उस से कहीं ज्या[illegible] आप सुबह केवल दो घंटे में कर लेंगे. सुबह [illegible] समय आप के मन में जितने विचार आते [illegible] उतने बाद में नहीं आ पाते. हमारे देश [illegible] जितने भी महापुरुष और प्रख्यात प्रति[illegible] संपन्न व्यक्ति हुए हैं, वे सभी प्रायः जल्दी [illegible] कर काम में लग जाते थे. पढ़नेलिखने [illegible] सोचने के लिए सुबह का समय सब से अ[illegible] रहता है.

अगर आप लेखक हैं या आगे चल [illegible] लेखक बनना चाहते हैं तो हर रोज [illegible] जल्दी उठ कर लिखने का अभ्यास कीजि[illegible] उस समय अपने मस्तिष्क में उत्पन्न न[illegible] विचारों को आप लिपिबद्ध करने में स्व[illegible]

सक्षम पाएंगे और अपनी लेखन प्रतिभा का अच्छा विकास कर सकेंगे.

अगर आप कोई कारोबार करते हैं तो अपने कारोबार से संबंधित पत्रपत्रिकाएं व पुस्तकें पढ़ें और अपने व्यापार को और अधिक उन्नत करने के बारे में सोचें. फिर देखिए आप कारोबार में क्याक्या चमत्कार कर दिखाते हैं. दूसरे तो आप की सफलता से आश्चर्यचकित होंगे ही, आप स्वयं भी अपनी तीव्र उन्नति से हैरान रह जाएंगे.

अगर आप नौकरीपेशा हैं तो सुबह जल्दी उठ कर कुछ न कुछ नया सीख सकते हैं, किसी नए विषय पर अपने ज्ञान की वृद्धि कर सकते हैं. इस से आप को अपना जीवन और भी खूबसूरत लगेगा. नौकरीपेशा महिलाएं सुबह जलदी उठ कर जरूरी काम जैसे कपड़े धोना, सफाई इत्यादि करना आसानी से निबटा सकती हैं और विद्यार्थियों के लिए तो यह समय लाजवाब है ही. सुबह उठ कर पढ़ने वाले विद्यार्थी हमेशा प्रथम श्रेणी में आते हैं.

संक्षेप में, जल्दी उठ कर काम करने की [illegible] सुखदायी है. यह आप के जीवन में स्फूर्ति, शक्ति और खुशहाली लाती है. आप के जीवन को तनावों एवं चिंताओं से मुक्त करती है.

लिखने और पढ़ने के लिए सुबह का समय बेहतर बताया जाता है.

नींद की फिक्र मत कीजिए

बहुत से लोगों को यह शिकायत हो सकती है कि जल्दी उठने से उन की नींद कम होगी और पूरी नींद न ले पाने से उन्हें पूर्ण विश्राम नहीं मिल पाएगा, जिस का उन के स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ सकता है.

यहां यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि हर व्यक्ति की नींद की आवश्यकता अलगअलग होती है. ज्यादातार लोगों (बच्चों को छोड़ कर) के लिए प्रतिदिन छः से साढ़े सात घंटे की नींद काफी रहती है. कुछ लोगों का शरीर आठ घंटे की नींद चाहता है और कुछ लोग ऐसे भी है जिन्हें मात्र चार घंटे की नींद पर्याप्त रहती है.

आप को कितनी नींद की जरूरत है यानी आप को कितने घंटे सोना चाहिए, इस की फिक्र आप को करने की जरूरत नहीं. आप के शरीर को जितनी नींद की आवश्यकता होगी, उतनी नींद वह तो ले ही लेगा.

अब मान लीजिए, आप की स्वाभाविक नींद सात घंटे की है. आप रात 11 से सुबह छः बजे तक सोते हैं. लेकिन आप ने अब उठना शुरू कर दिया पांच बजे यानी एक घंटा पहले. घबराइए नहीं. धीरेधीरे आप को रात 10 बजे नींद आने लगेगी.

और अगर आप के शरीर का छः घंटे की नींद भी पर्याप्त है तो आप 11 से पांच बजे तक सो कर भी पूर्णतः स्वस्थ एवं स्फूर्तिवान रहेंगे. इस प्रकार आप जो एक घंटा फालतू सो रहे थे, वह कम हो गया और उस अतिरिक्त घंटे को आप ने किसी उपयोगी कार्य में लगा दिया.

भारत में महिलाएं औसतन कुछ ज्यादा ही सोती हैं, विशेष तौर से गृहिणियां. बहुत सी ऐसी महिलाओं के लिए आठ से 10 घंटे रात को व दो घंटे दोपहर को सोना सामान्य बात है. इतना सो कर भी वे तरहतरह की बीमारियों से ग्रस्त रहती हैं. वास्तव में जरूरत से ज्यादा सोना भी विभिन्न प्रकार की बीमारियों को न्योता देना है. शरीर जितना काम में लगे, उतना ही अच्छा है.

ज्यादा सोना समय का अपव्यय है. समय अगर उपयोगी कामों में लगेगा तो की स्थिति भी सुधरेगी और शारीरिक मानसिक स्वास्थ्य भी बना रहेगा.

किंतु जल्दी उठने का अभ्यास करने आप को प्रारंभ में एक समस्या का साम करना पड़ सकता है. हो सकता है, आप दोपहर के समय कभीकभी नींद के झटके या शरीर में सुस्ती सी महसूस हो, लेकिन निश्चित रहें. ऐसा कुछ ही दिन तक हो आप लगातार जल्दी उठते रहिए. कुछ दि बाद इसी के अनुसार आप का श व्यवस्थित हो जाएगा और आप सारा दि चुस्त बने रहेंगे.

एशियाड–82 के अवसर
पर दिल्ली में आने वाले
पर्यटकों के लिए
सरिता
दिल्ली
पर्यटन
विशेषांक
वंबर (प्रथम)
1982
सही
ार्गदर्शन करेगा
इस विशेषांक में पर्यटकों के लिए बहूपयोगी सामग्री होगी– कहां ठहरें? कौन से होटल महंगे हैं और कौन से सस्ते? खाना कहां खाएं? शाकाहारी व मांसाहारी होटलों के पते, किनकिन दर्शनीय स्थानों को कम खर्च में कैसे देखें? पैदल कहांकहां घूमें? दिल्ली के मुख्य बाजार, जहां से मनचाही वस्तुएं खरीद सकें, मनोरंजन के साधन, किस तरह के लोगों से सावधान रहें? परिवहन के कौन से साधन प्रयोग करें? इत्यादि की संपूर्ण जानकारी बहुरंगी चित्रों के साथ.
साथ ही सदा की तरह पूरे परिवार का मनोरंजन करने वाली 8 कहानियां, कई अन्य लेख, तथा मर्मस्पर्शी कविताएं.
अपनी प्रति
आज ही सुरक्षित करा लें.
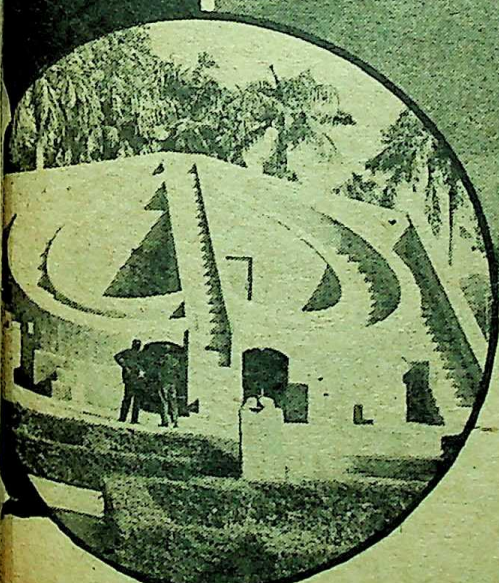
नागरिक क्षेत्र के उद्योगों में कंपनी के अध्यक्ष का पद प्रायः उत्तराधिकार में मिलता है. वह पिता से पुत्र को या मनोनीत अथवा कानूनी उत्तराधिकारी को ही प्राप्त होता है.

यह बात ठीक भी है. कंपनी कोई एक दिन में तो बन नहीं जाती. इस के पीछे संबद्ध परिवार का वर्षों का उद्यम होता है. इसलिए इस में उत्तराधिकार प्रणाली का होना स्वाभाविक है.

लेकिन इस के अपवाद भी होते हैं और राम जवाहरमल शाहानी को इस के उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है.

सिंधी परिवार में जन्मे 52 वर्षीय शाहानी अभी तक अविवाहित हैं और मद्रास की प्रसिद्ध अशोक लीलैंड कंपनी के अध्यक्ष हैं. अशोक लीलैंड कंपनी बसों, ट्रकों, लारियों आदि के चेसिस बनाती है.

शाहानी का संबंध उद्योग से अधिक तकनीकी क्षेत्र से रहा है. उन की व्यावसायिक कुशलता के कारण ही उन्हें इतना महत्त्वपूर्ण पद सौंपा गया है.

उन का साफ शब्दों में कहना है, "मैं ने जो पूंजी लगा रखी है वह एक लाख रुपए से अधिक नहीं है. अशोक लीलैंड में मेरे मात्र 300 शेयर हैं."

आखिर उन की पृष्ठभूमि क्या है? शाहानी का कहना है, "मेरा संबंध

यातायात की गाड़ियां बनाने वाले अशोक लीलैंड के अध्यक्ष

राम जवाहरमल शाहानी से भेंट.

सहज और सादगी पसंद व्यक्तित्व वाले शाहानी किन स्थितियों से होते हुए आज इस पद तक पहुंचे हैं.

भेंटवार्ता • [illegible] सीता रमन

इंजीनियरों के परिवार से है. मेरे पिता विभाजन से पूर्व सिंध में लोक निर्माण विभाग में काम करते थे तथा 'इंडियन सर्विस आफ इंजीनियर्स' के सदस्य थे. मेरे छ: भाई थे. सब के सब इंजीनियर थे. अब तो हम केवल दो भाई बचे हैं. मेरा दूसरा बड़ा भाई जे. के. उद्योग समूह में सिविल इंजीनियर है. मैं अपने परिवार में सब से छोटा हूं."

राम जवाहरमल शाहानी अप्रैल, 1978 में मद्रास आने से पहले कलकत्ता की जेसप एंड कंपनी के अध्यक्ष तथा प्रबंध निदेशक थे.

उन्होंने बताया, "कलकत्ता में मेरा 80 प्रतिशत समय कंपनी की ऋण लेने की साख को पुन: जमाने के चुनौती भरे कार्य में बीता. अशोक लीलैंड तो आर्थिक रूप से काफी सुदृढ़ है. यहां मेरा 80 प्रतिशत समय इंजीनियरिंग से संबंधित समस्याओं को सुलझाने में बीतता है."

शाहानी का शानदार दफ्तर राजाजी सलाइ के ग्रिंडलेज सेंटर की चौथी मंजिल पर है. उन की व्यस्तता का यह हाल है कि उन से मिलने का समय लेने के लिए सप्ताहों से ले कर महीनों तक लग जाते हैं. लेकिन शाहानी से एक बार मुलाकात हो जाने पर आप उन के व्यक्तित्व के आकर्षण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते.

शाहानी की प्रारंभिक शिक्षा हैदराबाद, सिंध तथा कराची में हुई. उन दिनों सिंध के कालिज बंबई विश्वविद्यालय से संबद्ध थे. वहीं से उन्होंने इंटर परीक्षा उत्तीर्ण की तथा उस के बाद लंदन चले गए. 1947-50 के तीन वर्ष उन्होंने 'सिटी एंड गिल्ड इंस्टिट्यूट' में शिक्षा ग्रहण करते हुए गुजारे और मैकेनिकल इंजीनियरिंग में बी. एससी. की डिगरी प्राप्त की. फिर वहीं 'रगबी' में व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए एक कंपनी में काम किया. वह वहां दो वर्ष रहे.

1953 में वह भारत लौट आए और जेसप एंड कंपनी में डिजाइन इंजीनियर के पद पर नियुक्त हो गए. इस कंपनी में उन्होंने पूरे 25 वर्ष तक काम किया.

जेसप में उन्होंने बड़ी तेजी से ... की मंजिलें पार कीं. 1965 में वह ... विभाग के अध्यक्ष बने. 1972 में वह ... निदेशक हो गए और 1975 में उन्हें ... पद की अतिरिक्त जिम्मेदारी भी सौंपी ... अप्रैल, 1978 में उन्होंने अशोक लीलैंड ... प्रबंध निदेशक की हैसियत से काम ... किया और 1979 में वह इस कंपनी के अ... और प्रबंध निदेशक दोनों ही पदों का ... संभालने लगे.

प्रश्न: आप को जेसप से अशोक लीलैंड में आने पर कैसा महसूस हुआ?

उत्तर: जहां तक काम का संबंध है ... बीमार इकाई से एक स्वस्थ इकाई में आ... यह परिवर्तन स्वागत योग्य था. यहां ... दूसरे किस्म की चुनौतियां हैं. कलकत्ता ... मेरी समस्या किसी भी प्रकार कंपनी को ... मुहैया कराने की थी. यहां मेरा सारा ... इंजीनियरिंग से संबंधित समस्याओं ... केंद्रित है. अब मेरा अधिकांश समय गुण... को बनाए रखने, डिजाइन में सुधार ... भविष्य के लिए योजना निर्माण आदि ... बीतता है.

प्रश्न: अशोक लीलैंड में आप के ... के बाद से विकास की दर में कितनी तेजी ... है?

उत्तर: 1977 तक कंपनी 8,000 ... उत्पादन करती थी. 1981 में यह उ... बढ़ कर 15,000 तक पहुंच गया. इस ... उत्पादन में 100 प्रतिशत की बढ़ोतरी ... मेरे विचार में यह कोई कम नहीं है.

प्रश्न: राष्ट्रीय बाजार में आप ... कितना योग है?

उत्तर: लगभग 24 प्रतिशत का ... 73 प्रतिशत योग देता है. दक्षिण भा... हमारी स्थिति उन से बेहतर है. ... 41-42 प्रतिशत की तुलना में हमारी ... 56 प्रतिशत के लगभग है.

प्रश्न: क्या आप अपने वाहनों का निर्यात भी करते हैं?

उत्तर: जी नहीं, भविष्य में ... योजना अपने कुल उत्पादन का 10 प्र...
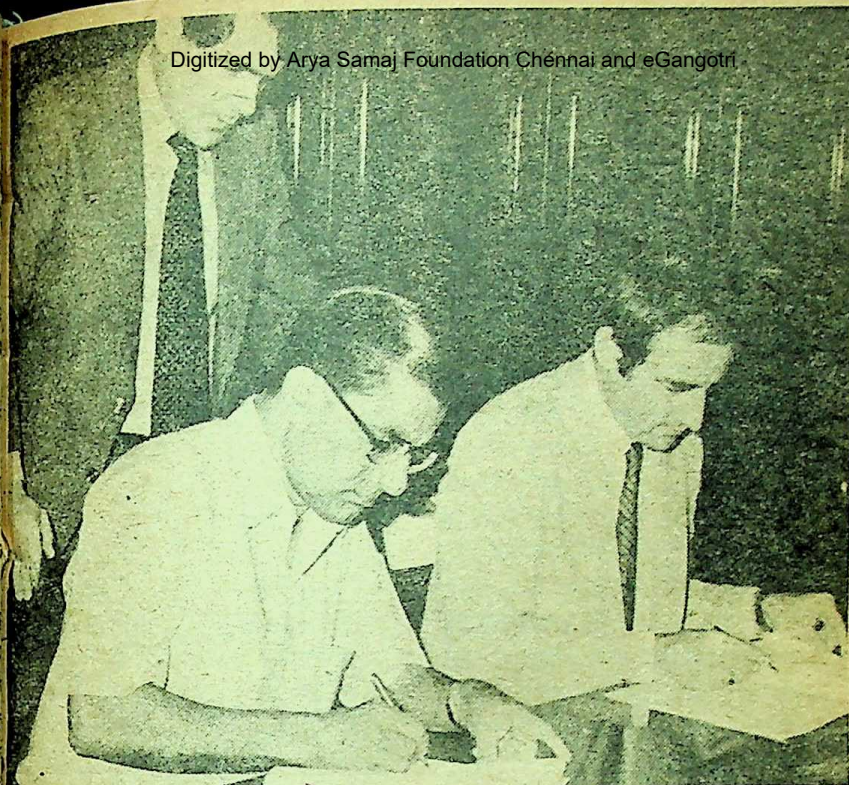
राम जवाहरमल शाहानी : वाशिंगटन में अंतरराष्ट्रीय वित्त निगम के साथ दो करोड़ 80 लाख रुपए के ऋण के एक समझौते पर हस्ताक्षर करते हुए.

बाहर भेजने की है. लेकिन विदेशी मुद्रा हम अब भी कमाते हैं. हमें विश्व बैंक से बसों की आपूर्ति करने के तीन बड़े ठेके मिले हैं. ये बसें (दुमंजिला बसें), कलकत्ता पैलावैन ट्रांसपोर्ट, मद्रास तथा श्रीलंका को दी जाएंगी. हमें इस कार्य के लिए धन का भुगतान विदेशी मुद्रा में होगा. 1981 में हमें 15 करोड़ का लाभ हुआ था. अधिकांश धन के विनियोजन के कारण हमें कोई कर भी नहीं देना पड़ा.

प्रश्न: क्या आप की योजना विकसित देशों के बाजारों में भी प्रवेश करने की है?

उत्तर: नहीं, हमारे वाहन भारतीय सड़कों को ध्यान में रखते हुए बनाए गए हैं. उन में ऐसी कोई विशेष बात नहीं है जो विकसित देशों को मोह सकें.

प्रश्न: एन्नोर, मद्रास के अतिरिक्त आप के कारखाने और किन स्थानों पर हैं?

उत्तर: बंगलौर के नजदीक होसर में एक कारखाना है. लेकिन तमिलनाडु में हम सेना आदि के लिए भारी वाहन बनाते हैं. महाराष्ट्र के भंडारा में हम एन्नोर में बने कलपुर्जों को जोड़ कर वाहनों का निर्माण करते हैं. अलवर (राजस्थान) में भी हमारा कारखाना शीघ्र ही काम शुरू कर देगा. वहां पर भी हम शुरू में कलपुर्जे जोड़ कर वाहन बनाएंगे. लेकिन धीरेधीरे हम उत्पादन भी शुरू कर देंगे. हमारे यहां इस समय लगभग 10,000 लोग काम कर रहे हैं.

प्रश्न: लीलैंड का इस कंपनी में कितना हिस्सा है?

उत्तर: वे 50.6 प्रतिशत के स्वामी हैं. वे आवश्यकता पड़ने पर हमारी मदद करते हैं, लेकिन कंपनी के रोजमर्रा के कामों में वे बिलकुल दखल नहीं देते.

प्रश्न: अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए आप ने क्या व्यवस्था की है?

उत्तर: हमारे युवक विदेशों में जा कर वाहनों के डिजाइन आदि का अध्ययन करते है. वे मशीनी औजारों आदि के बनाने वाले कितने ही कारखानों में प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं. बहुत सारे कर्मचारियों को हम इंगलैंड में लीलैंड कंपनी में भेजते हैं जहां उन्हें विभिन्न प्रकार के विषयों का प्रशिक्षण दिया जाता है.

प्रश्न: आप अपने इंजीनियरों को प्रशिक्षण के लिए जापान क्यों नहीं भेजते?

उत्तर: निस्संदेह औद्योगिक क्षेत्र में आज जापान पश्चिमी देशों से काफी आगे है. प्रजातांत्रिक आदर्शों में विश्वास रखने के बावजूद जापानियों की अपनी एक दबीढकी संस्कृति है. वे औरों को बहुत अधिक नहीं बताते. जापान के आर्थिक चमत्कार का कारण पश्चिमी तकनीक नहीं है. इस चमत्कार के पीछे प्रतिबद्ध कार्य शक्ति, गुणवत्ता के प्रति अटूट आस्था, कड़ा अनुशासन तथा कार्यसिद्धि के प्रति मजदूरों की गर्व की भावना है. जापानी विदेशों से केवल कच्चा माल मंगाते हैं, बना बनाया नहीं. उन्हें अपनी तकनीकी क्षमता तथा व्यापारिक गुणों पर बहुत गर्व है.

प्रश्न : क्या कच्चे माल की आपूर्ति को ले कर कभी आप के सामने कोई समस्या आती है?

उत्तर: जी नहीं. हमें सरकार से सभी प्रकार की सहायता मिलती है. वाहन निर्माताओं के प्रति सरकार का रुख काफी सहानुभूतिपूर्ण है. हमारे सामने जब भी कोई समस्या उठती है तो वह हमें माल मुहैया करने वाले कारखानों के मजदूरों की अनुशासनहीनता के कारण ही उठती है. उदाहरण के लिए हम पेंच आदि 'गेस्ट कीन विलियन' नामक कंपनी से खरीदते हैं. आजकल वहां हड़ताल है जिस का अप्रत्यक्ष असर हम पर भी पड़ता है. लेकिन सरकार की नीति हमारे प्रति काफी उदार है. हमें दुर्गापुर, महींद्रा यूजिन आदि से लौह इस्पात मिल जाता है. यदि उस की कमी होती है तो सरकार

... विदेशों से आयात की अनुमति ...

प्रश्न: आप अपने कर्मचारियों ... कैसे करते हैं? उदाहरण के लिए ... आदि के समय क्या आप को राज... दबावों के समक्ष झुकना पड़ता है?

उत्तर: नहीं. हम अकुशल म... लिए वहीं के लोगों को भरती करते ... कुशल कर्मचारियों के लिए हम इंजी... संस्थानों, पोलिटेक्निक आदि प... करते हैं और फिर अपने केंद्रों में उन... प्रशिक्षण देते हैं. जहां तक अत्यधिक... कर्मचारियों का संबंध है, हम ... तकनीकी संस्थानों आदि से सीधे ... चुनाव कर के उन्हें अपने यहां प्रशिक्ष... हैं.

प्रश्न: क्या पिछले दिनों में आप के ... कोई बड़ी हड़ताल या तालाबंदी हुई?

उत्तर: हां. होसर में 1981 में ... महीने के लिए तालाबंदी हुई थी. ... मजदूरों को राजनीतिबाजों ने भड़का... था. हिंसा की घटनाएं भी हुईं. अब ... कर्मचारियों ने बाहरी लोगों को पूरी... अलग कर के अपनी यूनियन बना ली है ... कर्मचारियों की तात्कालिक समस्याएं ... सुलझाने में सफल रहे हैं. एन्नोर की ... विशुद्ध रूप से गैरराजनीतिक है. यूनि... नेताओं की समझदारी के कारण ... समस्या बिना सरकारी हस्तक्षेप के ... जाती है. दुर्भाग्य से 1977 में एन्नोर ... महीने तक तालाबंदी रही थी, लेकिन ... बाद से स्थिति हमेशा शांत रही है.

प्रश्न: तमिलनाडु सरकार से ... संबंध अवश्य ही मधुर होंगे?

उत्तर:. हां, लेकिन एक बात ... हमेशा महसूस होती है कि यहां की ... औद्योगिक इकाइयों में उतनी दिलचस्... दिखाती, जितनी कि उसे दिखानी ... राज्य सरकार औद्योगिक गतिवि... अनजान सी प्रतीत होती है. उदाहरण ... महाराष्ट्र की सरकार इस बात ... दिलचस्पी दिखाती है कि हम भंडार ... करते हैं, उसे अच्छी तरह मालूम ...

हमारे कारखाने के कारण कितने लोगों को काम मिला है, हमारा उत्पादन कितना है और हम से उसे राजस्व के रूप में क्या प्राप्त होता है.

इस के विपरीत तमिलनाडु सरकार का रुख थोड़ा उदासीन है, यद्यपि होसर कारखाने का उद्घाटन मुख्य मंत्री रामचंद्रन ने ही किया था. होसर में लगभग सभी बड़े कारखाने हैं. यह एक बड़े औद्योगिक नगर के रूप में उभर रहा है, लेकिन इस का फायदा मूल रूप से तमिलनाडु को न हो कर कर्नाटक को होता है. कर्नाटक तथा आंध्र प्रदेश में लघु इकाइयां लग गई हैं, जो होसर में लगे कारखानों को माल मुहैया करती हैं. तमिलनाडु का मजदूर जो कुछ भी वहां से कमाता है उसे बंगलौर में खर्च करता है. बिक्री कर, आय कर आदि से होने वाली सारी आय कर्नाटक सरकार के पास जाती है. मैं अभी तक नहीं समझ पाया हूं कि तमिलनाडु सरकार औद्योगिक प्रगति के प्रति इतनी उदासीन क्यों है. शायद उन लोगों की प्रबंध प्रणाली का ढंग ही कुछ ऐसा है.

प्रश्न: क्या आप ने अशोक लीलैंड के वाहनों के मूलभूत डिजाइन में कोई सुधार किया है?

उत्तर: जी हां. हम निरंतर खोजबीन और अनुसंधान में लगे रहते हैं. हम तेल की खपत कम करने, विश्वसनीयता को बढ़ाने और [illegible] ने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं.

प्रश्न: आप ने 25 वर्ष कलकत्ता में बिताए हैं. आप केवल चार वर्ष से मद्रास में हैं. क्या आप को किसी चीज का अभाव खटकता है?

उत्तर: निस्संदेह कलकत्ता की तुलना में मद्रास में सफाई बहुत है. लेकिन यहां के लोगों में सामाजिक भावना और लोक व्यवहार का अभाव है. उन में अपने बारे में एक विशेष प्रकार की जागरूकता पाई जाती है.

प्रश्न: क्या आप का तात्पर्य जातिगत तथा भाषागत जागरूकता से है?

उत्तर: देखिए, बंगाली स्वभाव से अधिक मैत्रीपूर्ण, सादे तथा खुले दिल के होते हैं. वे बिना इस बात की परवाह किए कि आप क्या हैं, आप को अपने घर आमंत्रित करेंगे. कलकत्ता सफाई की दृष्टि से एक गंदा शहर हो सकता है, लेकिन उस का एक अपना ही चरित्र है. वहां का वातावरण उन्मुक्त और मैत्रीमय है. मद्रास में मुझे हमेशा लगता है कि मैं यहां बाहरी व्यक्ति हूं. इस का कारण मेरी स्थानीय भाषा की जानकारी न होना भी हो सकता है. तमिल भाषा सीखना भी तो बहुत कठिन है.

प्रश्न: आप ने जेसप को उस की खराब स्थिति होने के कारण छोड़ा था या यों ही बदलाव के लिए?

उत्तर: नहीं, मैं जेसप को छोड़ने का इच्छुक नहीं था. मैं वहां बहुत मजे में था. मैं आखिरी के दो सालों में कंपनी को घाटे की स्थिति से निकालने में भी सफल हो गया था. मैं ने अशोक लीलैंड की नौकरी केवल एक चुनौती के रूप में स्वीकार की थी. कुंआरा होने के कारण मुझे पैसे का भी कोई विशेष मोह नहीं था. 1977 में लीलैंड के पास कंपनी के 60 प्रतिशत शेयर थे. लेकिन उन्होंने निर्णय लिया कि कंपनी का मुख्य अधिकारी कोई भारतीय ही होना चाहिए. उन्होंने तीन व्यक्तियों की एक समिति बनाई जिस ने इस प्रकार के व्यक्ति का चयन करने के लिए सारे देश का दौरा किया. जब वे मुझ से मिले तो मैं

ने कोई विशेष ... प्रदर्शित नहीं किया. इस सब के बावजूद 20 लोगों में से सिर्फ मुझे ही चुना गया. मैं यहां पांच साल के अनुबंध पर आया हूं जो 1983 में खत्म होगा. लेकिन बोर्ड ने पहले ही इस अनुबंध को पांच वर्ष के लिए और बढ़ा देने का निश्चय किया है. बोर्ड मेरी सेवाएं इसलिए भी चाहता है, क्योंकि मैं ने कुछ नई महत्त्वपूर्ण योजनाओं की शुरुआत की है.

प्रश्न: आप से एक बड़ा व्यक्तिगत सवाल करना चाहता हूं. आप ने अभी तक विवाह क्यों नहीं किया?

उत्तर: मेरे पारिवारिक जीवन में कुछ इस प्रकार की त्रासदियां घटी हैं जिस से जीवन के प्रति मेरा दृष्टिकोण पूरी तरह से बदल गया है.

प्रश्न: क्या आप की खेलों में रुचि है?

उत्तर: कलकत्ता में तो मैं टैनिस खेलता था और तैरने का भी काफी शौक था, लेकिन अब तो इन सब के लिए मेरे पास थोड़ा सा भी समय नहीं है.

प्रश्न: फिर अपने आप को शारीरिक रूप से दुरुस्त रखने के लिए आप क्या करते हैं?

उत्तर: मैं दफ्तर से घर तक ... मील की दूरी पैदल तय करता हूं.

प्रश्न: क्या आप की पुस्तकें ... में भी रुचि है?

उत्तर: सोने से पहले मेरे हाथ ... लग जाए तो पढ़ लेता हूं. उस में आत्म... ले कर उपन्यास, सामयिक विषय आदि ... भी हो सकता है. मेरा कोई भी प्रिय ... नहीं है, क्योंकि मेरी रुचि विषय में ... इन दिनों मैं दो लेखकों द्वारा लिखी एक ... पढ़ रहा हूं जो माउंटबैटन तथा भा... विभाजन पर लिखी गई है.

प्रश्न: क्या आप अशोक लीलैं... तकनीकी प्रगति से पूर्णतया संतुष्ट हैं?

उत्तर: आज तक की ... उपलब्धियां कोई कम नहीं हैं. अनु... तथा डिजाइनों पर हम काफी पैसा ख... रहे हैं. हम ने बेहतर उत्पादन के लि... तकनीकों का विकास किया है. हम गुण... पर भी विशेष ध्यान देते हैं. मूलत... विनियोजित राशि तथा मजदूरी पर खर्च... वाली राशि के बीच संतुलन बनाए रखने... चेष्टा करते हैं. मजदूरी दिन ब दिन ... होती जा रही है.

क्या कभी हो सकता मिलन

मैं चंद्रमा की शीतल चांदनी
तू सूर्य की स्वर्णिम तपन.
तेरा मुझ से, मेरा तुझ से
क्या कभी हो सकता मिलन?

मैं शीतलता की प्रतिमूर्ति
शशि से नित पाती नवस्फूर्ति
तू ज्वलंत अग्नि का कण
सुलगता रहता है हर क्षण.

अग्निमय है तेरा जीवन
शांतिस्निग्ध है मेरा तनमन,
तेरा मुझ से, मेरा तुझ से
क्या कभी हो सकता मिलन?

तू रवि का प्रिय मित्र सखे
मैं निशा की आजन्म सहचरी हूं,
तू प्रभातवेला की गरिमा
मैं रात्रिकाल की जागृति हूं.

निजनिज नित कर्तव्यों के प्रति
दोनों का है अर्पित जीवन,
तेरा मुझ से, मेरा तुझ से
क्या कभी हो सकता मिलन?

—ज्योत्सना पान

बस एक बार मेरा कहा मान लीजिए

'दिल चीज क्या है, आप मेरी जान लीजिए, बस एक बार मेरा कहा मान लीजि... पंक्तियां फिल्म 'उमराव जान' के गीत की पंक्तियां ही नहीं, बल्कि गोरखपुर हाई स्कूल... छात्रा की ओर से एक परीक्षक को लिखे गए एक निवेदन का अंश भी हैं.

इस लड़की ने अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखा है– "यदि मैं फेल हो जाऊंगी तो मेरे... निराशा का अथाह सागर लहरा उठेगा. कह नहीं सकती कि मुझे घर में पनाह मिलेगी... आप ने 'उमराव जान' फिल्म देखी होगी. यह उसी फिल्म का गाना है. महोदय, ... श्रद्धापूर्वक विनती है कि आप मुझे परीक्षा में पास कर दें और मुझे 'उमराव जान' बनने... लें."

पत्र में आगे लिखा गया था, "मैं मातापिता की इकलौती पुत्री हूं. बड़े परिश्रम से... ने एक जगह मेरा विवाह तय किया है. लेकिन शर्त है, लड़की हाई स्कूल पास हो. पिताजी... यह मुझ से कहा तो मैं ने कह दिया कि कह दीजिए कि लड़की हाई स्कूल पास है. अब मेरी... आप के हाथ में है."

—आज, वाराणसी (प्रेषक : दलजीत...

*

इस तरह हुई शादी एक कुंवारे की

अलवर जिले के बानसूर कसबे के एक युवक विमल को मालूम भी नहीं था कि उस... तरह शादी हो जाएगी.

पिछले लंबे अरसे से काफी प्रयासों के बावजूद उस की शादी नहीं हो रही थी, लेकिन... 24 मई को उस की शादी इतनी तुरतफुरत हुई कि फेरों में बैठने तक उसे पता ही नहीं... उस की शादी की जा रही है.

घटनानुसार यह युवक अपने घर के बाहर सो रहा था कि प्रातः चार बजे कुछ लोग... मेटाडोर में बैठ कर आए और एक जरूरी काम का बहाना कर उसे पास की जीवण... ढाणी में ले गए. वहां पहुंचने पर महिलाओं ने उस के कपड़े उतार दिए और हल्दी की... लगा कर उसे नहला दिया. तब तक वह सब कुछ हतप्रभ दृष्टि से देखता रहा. बाद में... फेरों पर बैठा दिया गया तब उसे यह माजरा समझ में आया. शादी के बाद विमल अपनी... को घर ले कर आया तो घरवाले भी सकते की हालत में आ गए.

इस घटना के पीछे की कहानी यह बताई जाती है कि विमल की शादी जिस ... साथ हुई है. उस की शादी पहले खोहरी शाहपुरा गांव के एक युवक से तय हुई थी. लेकिन... के समय पैसे के लेनदेन को ले कर दोनों पक्षों में झगड़ा हो गया. बताया जाता है कि दूल्हे... बराती उस समय शराब के नशे में धुत थे तथा दूल्हे ने कन्या के भाई के गले में फंदा... व उसे चाकू दिखा कर मारने की धमकी दी थी.

दूल्हे के इस कृत्य से गांव वाले उत्तेजित हो उठे. अतः उन्होंने सारे बरातियों की जम कर पिटाई की और उन्हें गांव से बाहर खदेड़ दिया.

जब बरात बैरंग लौट गई तो लड़की वालों को लड़की की शादी की चिंता लगी. अतः उन्होंने विमल को इस तरह ले जा कर उस की अचानक शादी कर दी.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : ओमप्रकाश सोमानी)

*

नई नवेली दुलहन सब कुछ ले उड़ी

पटना जिले के फतूहा थाने के अंतर्गत दरियापुर गांव के एक संभ्रात व्यक्ति को संतान के लिए की गई दूसरी शादी बड़ी महंगी पड़ी.

बताया जाता है कि उक्त व्यक्ति की पहली पत्नी ने उसे संतान के लिए दूसरी शादी कर लेने को प्रेरित किया. अपने एक निकट संबंधी पर विश्वास कर उस के द्वारा लाई गई एक लड़की से उस ने शादी रचाई. पहली रात को ही उस की पहली पत्नी ने अपनी सौत को करीब 10 हजार रुपए के अपने जेवरात दे दिए.

शादी की चौथी रात को जब घर के सभी लोग सो रहे थे, नई पत्नी सारे जेवरात, दो सौ रुपए ले कर भाग गई. **—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : राकेश बाफणा)**

*

सिनेमा प्रेमी बंदर

उज्जैन में लाल मुंह वाला एक बंदर कुतूहल और चर्चा का विषय बना हुआ है.

बताया जाता है कि यह बंदर एक सिनेमा हाल में घुस गया और एक सीट पर जा कर काफी देर तक बैठा रहा. फिल्म देखने के बाद वह बिना किसी को क्षति पहुंचाए चुपचाप बाहर चला गया. सिनेमा हाल के अंदर बैठे दर्शकों को जब बंदर की उपस्थिति का पता चला तो लोगों ने उसे बाहर भगाना चाहा, किंतु बंदर वहीं बैठा रहा. अच्छे डीलडौल वाला यह बंदर सड़कों पर खुलेआम घूमता है तथा किसी को छेड़ता या काटता नहीं है.

—रांची एक्सप्रेस, रांची (प्रेषक : लीना सिन्हा)

*

चूहों का सामूहिक दाह संस्कार

मनुष्य द्वारा अन्य प्राणियों का प्रेमवश दाह संस्कार करने की घटनाएं तो अब तक सुनी गई हैं, लेकिन अब चूहों से परेशान हो कर चूहों की हत्या के बाद उन का सामूहिक दाह संस्कार करने की एक रोचक घटना धौलपुर में प्रकाश में आई है.

धौलपुर जिले के बसई ग्राम पंचायत के एक भूतपूर्व सरपंच ने चूहों से परेशान हो कर एक ही दिन में 110 चूहे मार दिए तथा बाद में उन का विधिवत सामूहिक दाह संस्कार किया. यह संख्या बिलों के बाहर मरने वाले चूहों की है.

—राजस्थान पत्रिका, जयपुर (प्रेषक : राजेंद्रप्रसाद माथुर)

*

बहन की शादी का पत्र नौ वर्ष बाद मिला

फतेहपुर में एक भाई को बहन के विवाह का निमंत्रण पत्र उस के विवाह के नौ वर्ष बाद मिला. उस समय तक उस की बहन दो बच्चों की मां बन चुकी थी.

देश की डाक व्यवस्था की बदतर स्थिति का यह प्रत्यक्ष उदाहरण उस समय देखने को मिला जब स्थानीय सार्वजनिक निर्माण विभाग में कार्यरत लिपिक नबीउल्ला को उस की बहन के विवाह का कार्ड 2 जुलाई, 1982 को मिला. यह कार्ड नौ वर्ष पूर्व 15 जून, 1973 को इटावा जनपद से भेजा गया था. **—अमर उजाला, आगरा (प्रेषक : अजय तिवारी)**

कमल हासन की परेशानी

कमल हासन की पहली फिल्म 'एक दूजे के लिए' में रति अग्निहोत्री अभिनेत्री थी. उस की दूसरी फिल्म 'सनम तेरी कसम' में रीनाराय ने अभिनेत्री के रूप में काम किया थी. इन दोनों ही फिल्मों के बाद जो निर्माता या निर्देशक कमल हासन के पास जाता है. अपनी फिल्म की अभिनेत्री के बारे में कहता है, ''हम या तो रति अग्निहोत्री को लेंगे या आप के साथ रीना राय ठीक रहेंगी.''

कमल हासन की ख्वाहिश कुछ और है.

कमलहासन : निर्माता निर्देशकों के रवैए से क्षुब्ध.

उस का कहना है, "मैं हिंदी फिल्मों में रति और रीना के साथ ही काम करने के लिए नहीं आया हूं, फिल्मोद्योग में कुछ और भी तो अच्छी और हसीन अभिनेत्रियां हैं," काश, कोई निर्माता निर्देशक कमल हासन के इस दर्द को समझ सके.

सुनील आनंद पर हमला

बंबई में महाराष्ट्र पुलिस कर्मचारी संघ के आंदोलन की वजह से काफी तोड़फोड़ हुई. कई जगह शूटिंग नहीं हुई और कई स्टूडियो उस दिन बंद रहे. देव आनंद का होनहार बेटा सुनील आनंद इस आंदोलन की चपेट में आ गया.

उस की कार कुछ आंदोलनकारियों ने घेर ली और उस के शीशे वगैरह तोड़ दिए.

सुनील आनंद : पुलिस आंदोलन का शिकार.

शशि कपूर : अंगरेजी पुरस्कार में रोड़ा बनी.

कुछ शीशे उस की आंखों में भी गिरे और बेहोश हो गया. अगर जल्द ही उसे हस्प... न ले जाया जाता तो उस का क्या हश्र हो... सुनील आनंद पर हमले की इस खबर से... फिल्मी कलाकार भी स्तब्ध रह गए. और... तक बंबई में हंगामा रहा ये लोग बा... वर्ली, दादर और माहीम के इलाकों में जा... कतराते रहे.

शशि का रहस्योद्घाटन

शशि कपूर ने निर्माता के रूप में अप... सेन से '36 चोरंगी लेन' बनवाई. यह फि... काफी पसंद की गई और उसे राष्ट्रीय और... संस्थाओं के इनाम भी मिले. इस फिल्म... शशि कपूर की विदेशी पत्नी जैनेफर ने... ही अच्छा अभिनय किया है.

जब वह फिल्म शशि कपूर ने 'ऑ... एवार्ड' के लिए भेजनी चाही तो ऑ... कमेटी ने शशि कपूर को एक पत्र लिख... कहा कि 'आप की फिल्म ओस्कर एवा... लिए शामिल नहीं की जा सकती, क्योंकि... फिल्म के संवाद अंगरेजी भाषा में लिखे... हैं.' काश! इस फिल्म को शशि कपूर हि... बनाते.

आपके मुन्ने को जन्म के समय 3 महीने के लिए आयरन की सौग़ात मिली थी
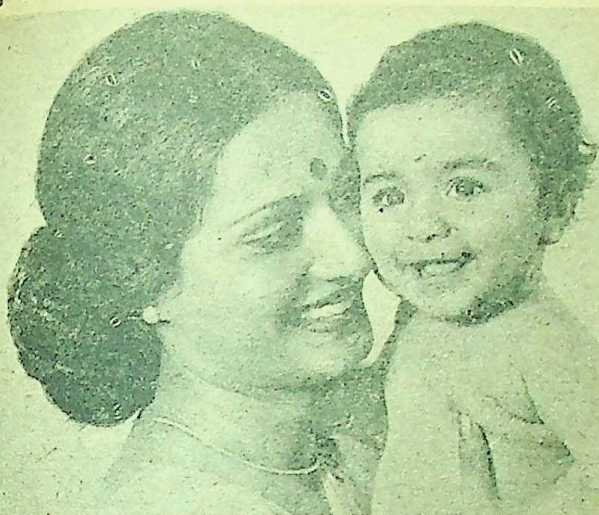
3 महीने बाद दूध से उसे उतना आयरन नहीं मिल पाता जितना उसे चाहिये

उसे दीजिए

फ़ैरेक्स

आयरन से भरपूर

जन्म के समय बच्चे को माँ से जो आयरन भंडार प्राप्त होता है वह जन्म के बाद धीरे-धीरे घटने लगता है। हालाँकि दूध एक अच्छा आहार है फिर भी आयरन की कमी के कारण यह अपने आप में पूर्ण आहार नहीं। इसीलिए बच्चे को आयरनवाले ठोस आहार चाहिए।

डॉक्टर फ़ैरेक्स की सिफ़ारिश क्यों करते हैं?

सुपाच्य फ़ैरेक्स आपके मुन्ने की कोमल पाचनशक्ति के लिए विशेष रीति से बना ठोस आहार है। इसमें बच्चे के जल्द विकास के लिए प्रोटीन, शक्ति के लिए कार्बोहाइड्रेट्स और फ़ैट्स तथा उसके दाँतों व हड्डियों को मज़बूत बनाने के लिए केल्शियम, फ़ास्फ़ोरस और विटामिन मौजूद हैं। फ़ैरेक्स आयरन से भी भरपूर है जो आपके बच्चे के खून, स्वास्थ्य और समुचित विकास के लिए बहुत ही ज़रूरी है।

डॉक्टरों की सिफ़ारिश है-फ़ैरेक्स

मुन्ने का आदर्श ठोस आहार—जल्द और सर्वांगीण विकास के लिए

CASGLF-30-173 Hin

अच्छाखासा [illegible] सदृश 1.28 एकड़ का उद्यान ऊंचे, लंबे तथा बड़ीबड़ी शाखाओं वाले वृक्षों से घिरा है. सारी भूमि मखमल जैसी हरी घास से ढकी है. कहीं भी मिट्टी नहीं दिखलाई पड़ रही. यहां तक कि पगडंडियां भी घनी हरी घास से ढकी हैं और इन पंक्तियों की याद दिलाती हैं :

मैं आती [illegible] में,
मंदिर, कक्षों, मीनारों में,
पगडंडी पर बिछ जाती हूं,
मैं चुपकेचुपके आती हूं,
पशुपक्षी करते हैं कलोल.

लेख • अजयकुमार सिन्हा

संगीतमय अनुभूतियों का उद्यान

ध्वनि नियंत्रण कक्ष: मीनार की घंटियों का संचालन यहीं से होता है. (ऊपर). बाक मीनार का उद्यान: अनुभूतियों का केंद्र स्थल (बाएं).

मेरे आंगन में डोलडोल,
मैं लेती हूं कुछ भी न मोल,
देती हूं जग को सुख अमोल,
मैं जग का ताप मिटाती हूं,
मैं चुपकेचुपके आती हूं."

वृक्षों की शाखाओं के विशाल शामियाने के बावजूद पत्तियों के बीच से छनछन कर रोशनी आती है. नीरवता को भंग करता

अपने संगीतमय वातावरण के कारण यह उद्यान विश्व में अपनी तरह का अनोखा उद्यान है, आखिर इस के इस संगीमय वातावरण का रहस्य क्या है?

पक्षियों का कलरव भंग करता है. जहांतहां फूलों से भरे पौधों की क्यारियां, जलाशयों व

रंगों की भरमार है, कहीं तितलियां घूमती हैं तो कहीं से कोयल की कूक सुनाई पड़ती है और कवि हृदय सहसा गा उठता है:

''आज कोकिल कूजती है,
बह रहा है पवन मलयज,
खिलखिलाता कहीं नीरज
आम्र तरु की मंजरी में,
आज कोकिल कूजती है.''

यहां पर सुख समीर को चूमचूम कर पत्तापत्ता तक हिलता है. यह फ्लोरिडा है. संयुक्त राज्य अमरीका का सूर्य के प्रकाश से जगमगाता राज्य फ्लोरिडा.

प्रसिद्ध बाक मीनार

यहां का विख्यात बाक मीनार का उद्यान (बाक टावर गार्डन) न केवल पक्षियों का शरणस्थल है, अपितु विचित्र मानवीय अनुभूतियों का केंद्र भी है.

उद्यान तो संसार में अनेक और एक से एक बढ़ कर सुंदर हैं, जहां सभी तरह के फलफूल, पेड़पौधे और पक्षी आदि होते हैं, पर बाक टावर उद्यान की तो बात ही और है. वहां प्रकृति के अद्भुत आकर्षणों के बीच घंटियों के मृदु व मधुर संगीत से वातावरण का उदात्तीकरण किया गया है अर्थात उसे अलौकिकता का रूप दिया गया है. वहां मनुष्य को उन सभी चीजों की अनुभूति होती है, जो उसे अलौकिक नजर आती हैं. ये अनुभूतियां हैं—शांति, नीरवता, प्रकृति से निकटता, मौन, निस्तब्धता, आवेगहीनता और एक विचित्र प्रकार की सौम्यता. प्रकृति की मदद से, स्वयं को आंतरिक शांति की ऊंचाइयों

कैरिनाल वाद्य: उद्यान की मीनार में लगी ये घंटियां वातावरण को संगीतमय कर देती हैं.

तक उठाने की प्रेरणा भी इसी वातावरण में मिलती है.

''एक ओर है जीवन,
दूजे है मिट्टी की काया,
कैसे करूं समन्वय
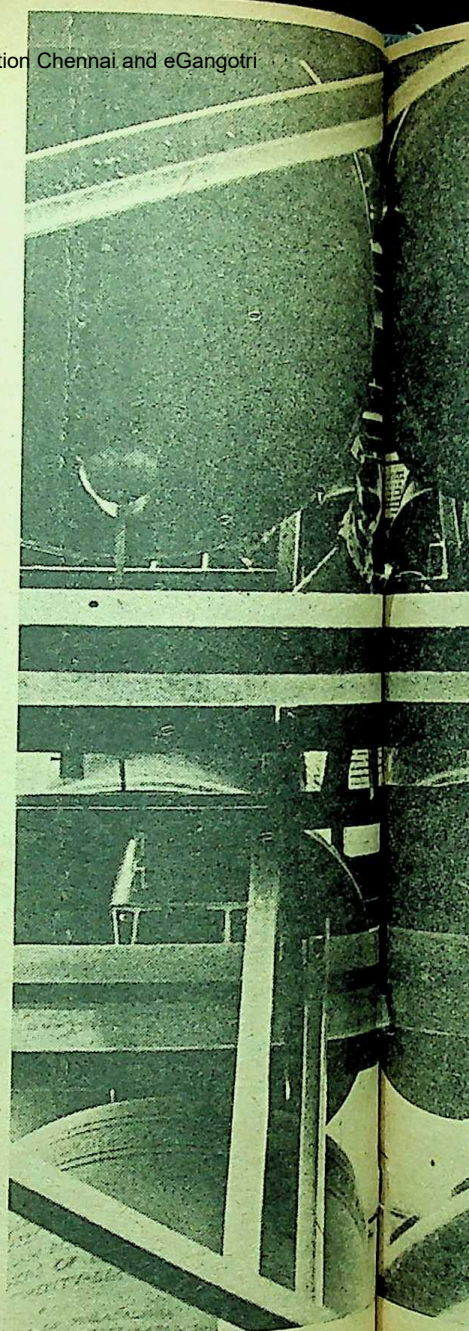
दूरी पर विराम की छाया.''

ऐसे वातावरण की ओर मनुष्य आदि काल से आकर्षित होता रहा है. इस उद्यान में निस्तब्धता और कुंज, लतामंडप, हरी पगडंडियां विशाल वृक्ष, फूलों की बहार लि...

पौधे आप पर ऐसा प्रभाव डालते हैं कि आप एकदम मूक, शांत बने रह जाते हैं.

घंटियों का संगीत कर्णकटु न हो कर बड़ा मधुर होता है, क्योंकि घंटियों की यह ध्वनि आम घंटियों जैसी नहीं होती. यह एक विशेष प्रकार की घंटियों का वाद्य है, जिसे कैरिलान कहते हैं.

इस वाद्य के लिए इस उद्यान में स्तंभ जैसी एक आकर्षक मीनार बनी है, जिस में यह वाद्य लगा हुआ है. यह केरिलान वाद्य अपनेआप में भी खूब बड़ा है और ग्रामिक (ऐसा सुर रखने वाला जो दुहरे सरगम में सम्मिलित नहीं है) है. इस की विशालकाय घंटियां मीनार के भीतर इस्पात के फ्रेम में एक के ऊपर एक चार पंक्तियों या स्तरों में लगी हुई हैं. एक घंटी 22,300 पौंड करीब 9,000 किलोग्राम वजन की है. इस तरह की कई घंटियां हैं. सब से छोटी घंटी का वजन 17 पौंड है. सन् 1928 में इंगलैंड की एक कंपनी ने इन्हें यहां लगाया था, इन घंटियों को कीबोर्ड से संचालित कर बजाया जाता है. यह कीबोर्ड घंटियों के ठीक नीचे स्थित ध्वनि नियंत्रण कक्ष में लगा है. इस कीबोर्ड को दबाने से लकड़ी की हथौड़ियों से घंटियां बजती हैं.

यह मीनार सातमंजिला है और इस के सब से ऊपरी एक तिहाई भाग में यह वाद्य है. घंटियां कांसे की हैं और समस्वरित हैं—अर्थात इन के सुर मिलाए हुए हैं. ये घंटियां संख्या में कुल 53 हैं. इसे बजाने वाला कैरिलानियर कहलाता है. मीनार सिर्फ इसी वाद्य के लिए बनाई गई है. नीचे की मंजिल में संगीत के रिकार्डों का भंडार है. दूसरी और तीसरी मंजिल पर इस वाद्य की मरम्मत के लिए उपकरण हैं. चौथी मंजिल पर कार्यशाला है. पांचवीं मंजिल पर केरिलान वाद्य से संबंधित पुस्तकालय है. छठी मंजिल पर कैरिलान वादक का स्टूडियो है और सातवीं मंजिल पर खुद घंटियां हैं.

घंटियां स्थिर हैं, ये हिलती नहीं हैं. वादक अपनी मुट्ठियों और तलवे से कीबोर्ड में लकड़ी की कुंजियों (की) को दबाता है, तब वे बजती हैं, इस पर वह अनेक धुनें बजा सकता है. हर कोई इसे नहीं बजा सकता. इस के विशेष वादक होते हैं. इस के वादन के लिए बाक टावर में स्थायी रूप से एक वादक रखा गया है. उद्यान के बीच में स्थित टावर से कैरिलान वादन की ध्वनि धीरे धीरे गंध की

तरह पूरे उद्यान में फैलती है. रोजाना तीन बजे अपराह्न में इस का वादन शुरू होता है. जो उद्यान के वातावरण को मोहक बना देता है. पूरे उद्यान में अनेक जगह बेंचें पड़ी हुई हैं. जहां बैठ कर भ्रमणकारी इस संगीत का... हैं. चांदनी रात में भी इस का वादन होता... इस प्रकार प्राकृतिक सौंदर्य के बीच यह... संगीत बड़ा लुभावना लगता है.

इस उद्यान में एक बार प्रवेश कर जाने के बाद दर्शक ख्वाबों में खोने लगते हैं.
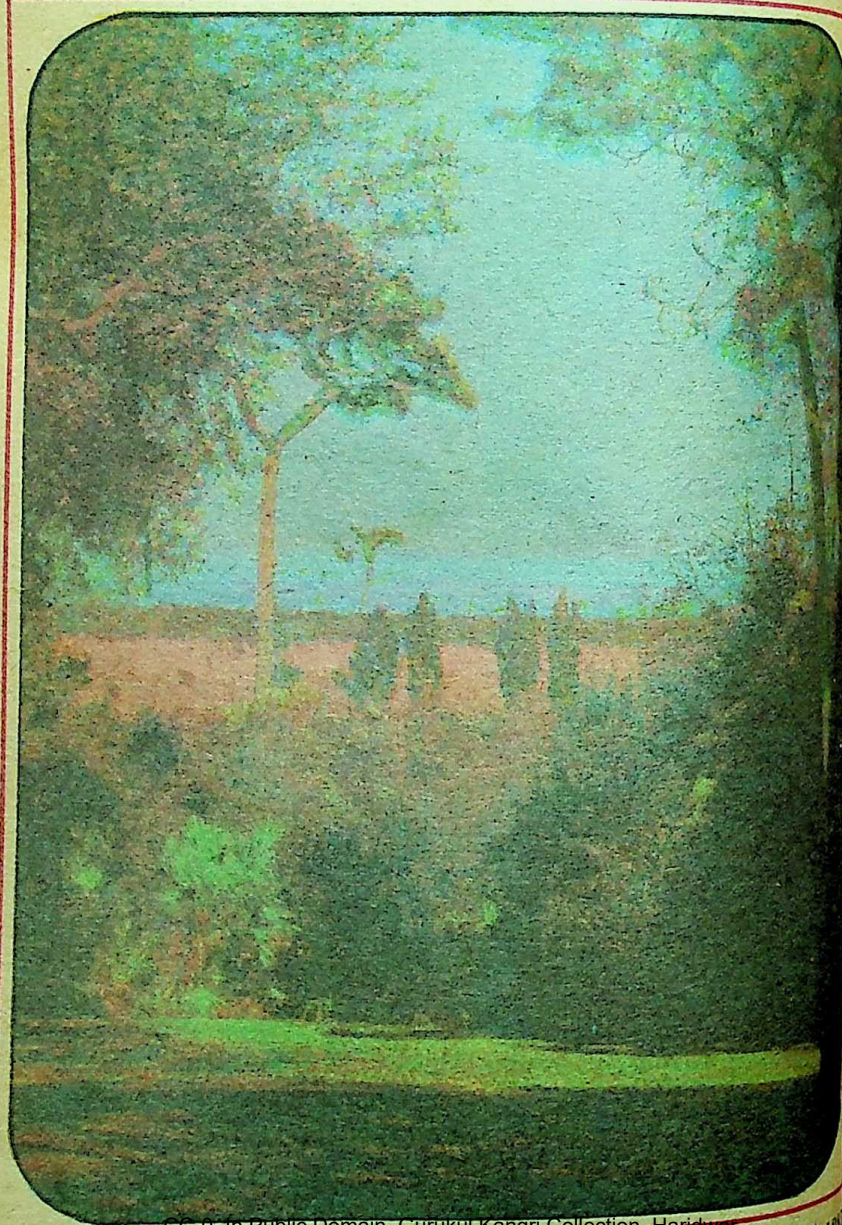
एडवर्ड बाक नामक व्यक्ति ने सन 1923 में इस उद्यान को बनवाया. उन्होंने इस की न केवल पक्षियों के बल्कि मनुष्यों के शरण स्थल के रूप में भी कल्पना की थी. उन को इस की प्रेरणा अपने दादादादी से मिली थी. उन की दादी ने अपने पोतों को यह शिक्षा दी थी, "तुम्हारा जीवन चाहे कहीं बने और

(शेष पृष्ठ ९८ पर)

मीनार का द्वार : सात मंजिला मीनार में संगीत के रिकार्डों का भंडार है.
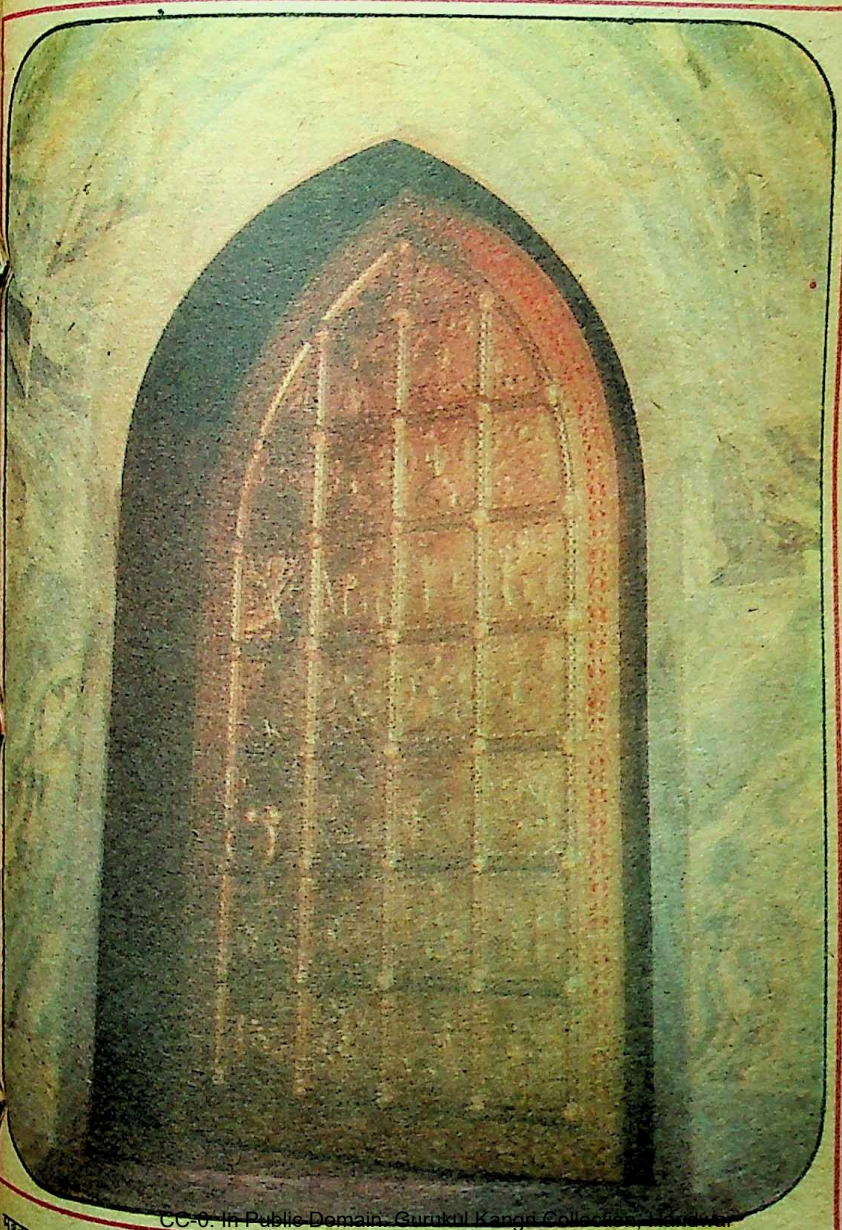
इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

गंदे नाले के पानी से 60 हजार रुपए की कमाई

कलकत्ता के प्रेमतोष घोष ने शहर के गंदे नाले के पानी में मत्स्य पालन के जरिए 1981 के दौरान 60,000 रुपए कमाए. पहले यह गंदा पानी बेकार चला जाता था.

घोष ने पाल्टा में गंदे पानी के नाले के निकास पर इस के पानी को एकत्र किया. इस स्थान को 'भेरी' कहते हैं. उस ने उस में राहु, कटला व मृगेल मछलियां पालीं. घोष 1950 से मत्स्य पालन में जुटा है. विज्ञान में स्नातक और बैरकपुर स्थित केंद्रीय मत्स्य अनुसंधान संस्थान से मत्स्य पालन में प्रशिक्षण प्राप्त घोष ने 1981 में 6,800 क्विंटल मछलियां बेचीं. अब उस के पास भेरी का 7.5 हेक्टेयर क्षेत्र है और उस के फार्म में 18 आदमी काम करते हैं.

—देशबंधु, रायपुर (प्रेषक : शत्रु जय तिवारी) (सर्वोत्तम)

*

एक बाल पर पूरा राष्ट्रीय गान

जयपुर में कमल भट्ट नामक एक कलाकार ने आदमी के एक बाल के ऊपर पूरा राष्ट्रीय गान 'जन गण मन...' लिख दिया है. इतना ही नहीं, उस ने उसी बाल पर स्वर्गीय प्रधान मंत्री लालबहादुर शास्त्री का नारा 'जय जवान जय किसान' भी लिख दिया है.

एक अन्य बाल के ऊपर श्री भट्ट ने मयूर के पांच रंगीन चित्र बनाए हैं. ये कृतियां स्थानीय ओरियंटल इंस्टीट्यूट म्यूजियम में प्रदर्शित हैं. बाल पर अंकित उन की अन्य कृतियां हैदराबाद व नागपुर संग्रहालयों में दिखाई जा रही हैं.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : मनमोहन सोनी)

*

पांच बच्चों की जान बचाई

मध्य प्रदेश के सिंधनपुरी गांव के एक छात्र चंद्रशेखर अवस्थी ने अपनी जान पर खेल कर पांच बच्चों की जान बचाई.

बताया जाता है कि गांव के पास हाफ नदी में पिछले महीने 21 जुलाई को अचानक बाढ़ आ गई और नदी में नहा रहे पांच बच्चे बहने लगे.

चंद्रशेखर ने यह देख कर नदी में छलांग लगा दी और पांचों को डूबने से बचा लिया.

—युगधर्म, रायपुर (प्रेषक : प्रवीण बजाज)

*

हृदय परिवर्तन

दुर्ग में आदिवासियों से ली हुई रिश्वत लौटाने के बाद मध्य प्रदेश सरकार ने बालोद के राजस्व निरीक्षक को 18 महीने की बर्खास्तगी के बाद पुनः नौकरी पर बहाल कर दिया है. घटना के अनुसार राजस्व निरीक्षक लक्ष्मणसिंह ने 16 आदिवासियों से नामांतरण

प्रकरणों में
18 महीने
आदिवासिय

महिला ने
बुलंद
एक कुख्यात
लगभ
पीछे से पक
प्रयास किया
महल्ले के ल
पीटपीट कर

अनुकरणीय
डीग
दो कन्याओं
उदाहरण पे
बताय
का कोई भी
भाइयों ने द्र
इतना
उठाए तथा

कैदी या वि
श्रीनग
जसवंतसिंह
इस अ
स्नातक की
उस ने राज्य
फायदा उठा
सुविधाएं दी

पहल

प्रकरणों में 12 सौ रुपए की रिश्वत ली. मामले की जांच के बाद उसे बर्खास्त कर दिया गया. 18 महीने बाद उस का हृदय परिवर्तन हुआ और उस ने एक समारोह आयोजित कर के आदिवासियों के पैसे वापस कर दिए.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक: मीनाक्षी कौशल)

*

महिला ने डाकू को पकड़ा

बुलंदशहर में स्थानीय शिकारपुर बस अड्डे के निकट रहने वाली एक साहसी महिला ने एक कुख्यात डाकू को पकड़ लिया, जिसे बाद में लोगों ने पीटपीट कर मार डाला.

लगभग चार डाकू रात के समय उक्त महिला के घर में घुस गए. महिला ने एक डाकू को पीछे से पकड़ कर शोर मचा दिया. डाकुओं के साथियों ने अपने साथी को छुड़ाने का बहुत प्रयास किया और घर के कुछ सदस्यों को घायल भी कर दिया. शोर की आवाज सुन कर जब महल्ले के लोग इकट्ठा हो गए तो डाकू फायर करते हुए भाग गए. पकड़े गए डाकू को लोगों ने पीटपीट कर मार डाला.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : अजयकुमार चौरे)

*

अनुकरणीय उदाहरण

डीग से लगभग 19 किलोमीटर दूर ग्राम पंचायत के दो गूजर भाइयों ने एक हरिजन की दो कन्याओं के विवाह का संपूर्ण व्यय वहन कर समाज के संपन्न लोगों के लिए एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया.

बताया जाता है कि गत सप्ताह संतू हरिजन की दो कन्याओं के विवाह के लिए जब गांव का कोई भी व्यक्ति सहायता के लिए आगे नहीं आया तो भप्पू और लिक्खी नाम के दो गूजर भाइयों ने द्रवित हो कर दोनों कन्याओं के विवाह का पूरा खर्च उठाने का वचन दिया.

इतना ही नहीं इन भाइयों ने बरात के जलपान, दावत आदि से ले कर अन्य सभी खर्च उठाए तथा दोनों कन्याओं को चार हजार रुपए नकद दे कर विदा किया.

—राजस्थान पत्रिका, उदयपुर (प्रेषक : विनोद बंब 'विक्रांत')

*

कैदी या विद्वान

श्रीनगर सेंट्रल जेल में आजन्म कारावास की सजा भुगत रहे 33 वर्षीय एक कैदी जसवंतसिंह ने अपनी कोठरी को कालिज के छात्रावास का कमरा बना रखा है.

इस अनोखे कैदी ने 11 वर्ष के अपने कारावास के दौरान कशमीर विश्वविद्यालय से स्नातक की डिग्री प्राप्त कर ली है और कानून के पाठ्यक्रम के दो वर्ष भी वह पूर्ण कर चुका है. उस ने राज्य सरकार द्वारा कारागृहों के कायापलट के लिए शुरू की जा रही योजना का पूरा फायदा उठाया है जिस के अंतर्गत कैदियों को जेल में दूरदर्शन, रेडियो, अखबार आदि की सुविधाएं दी जाती हैं.

—स्वदेश, इंदौर (प्रेषक : अजयकुमार) ●

इस उद्यान का प्राकृतिक सौंदर्य पर्यटक को अपनी ओर बरबस आकर्षित कर लेता है

(पृष्ठ 95 से आगे)

वीन, दुनिया को थोड़ा बेहतर और सुंदर बना जाओ, क्योंकि तुम इस में रहे हो.

उद्यान की जगह पर उस समय एक रेत का टीला था. बाक ने इस भूमिखंड को खरीद कर यह उद्यान बनवाया. फिर इस में यह मीनार बनवाई. अमरीका के तत्कालीन राष्ट्रपति कालविन कूलिज ने इस उद्यान का 1929 में उद्घाटन कर इसे अमरीकी जनता को भेंट किया. मीनार आधार पर 51 फुट और चोटी पर 37 फुट चौड़ी है. मीनार की ऊंचाई 250 फुट है. इसे सिंगिंग टावर (गाने वाली मीनार) भी कहते हैं.

जलाशयों में तैरते हंस बहुत प्यारे लगते हैं. उद्यान में एक बार प्रवेश कर जाने के बाद दर्शक स्वाप्निल होने लगते हैं. उन में कविता जन्म लेने लगती है और हृदय प्रशंसा की भावना से भरभर जाता है. सूर्यास्त का दृश्य तो इस उद्यान में जादुई होता है.

उद्यान के उत्तरी भाग के पाइन रिज में असली चीजों को हटाया नहीं गया है. सूखे और टूटे हुए वृक्षों को हटाया नहीं जाता ताकि उस में जानवर रह सकें. बाक उद्यान में 100 से भी अधिक प्रकार के पक्षी रहते हैं और उन्हें कोई मारता नहीं. उद्यान में हर जगह पानी पीने के लिए संगमरमर के फुहारे लगे हुए हैं.

उद्यान की घास, फल, फूल और वृक्ष इसे एक अलौकिक उपवन बनाते हैं. इस में सभी जीवों का आदर होता है. यहां नीरवता में नवप्रभात की नवल किरण दोपहरी व गोधूलि में भी वही रहती है. दिन के घंटे कैरिलान के संगीत से अंकित होते हैं. पगडंडियों के साथसाथ लिली के फूलों की क्यारियां चलती हैं. फूलों के कटोरों में शबनम छलकती रहती है. वास्तव में यह एक विश्रामदायक प्रसन्नता प्रसारक, शांत, मनोहारी और अनोखा संगीतमय उद्यान है.

मूंछें

भोली जनता पर अपनी वर्दी और मूंछों का आतंक जमाने वाले सिपाही रामपाल सिंह ने गुंडों के सामने अपने हथियार क्यों डाल दिए?
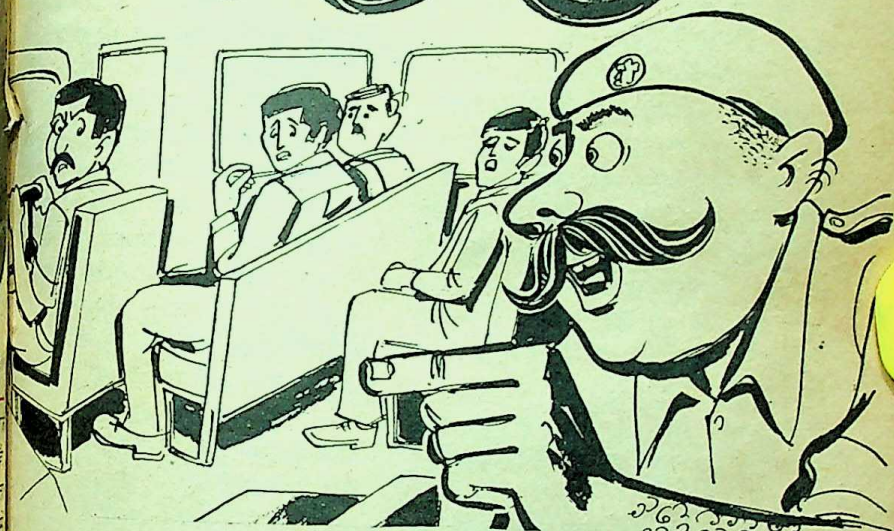
नूर से भोपाल जाने वाली बस तैयार खड़ी थी. मैं अपनी अटैची ...ल कर जल्दी से बस के अंदर घुस गया. ... लगभग पूरी भर चुकी थी, लेकिन सामने ... एक सीट पूरी खाली थी. मैं जल्दी से उधर ...का. अभी सीट तक पहुंच भी नहीं पाया था ... एक रोबदार आवाज गूंजी, "ऐ.... ...उस सीट पर नहीं."

मैं ने घूम कर देखा. एक पुलिस वाला ... सीट के पीछे वाली सीट पर बैठा हुआ ...ला रहा था.

कलफ लगी हुई वरदी पहने और मोटी ...ी मूंछों वाले उस सिपाही को देख कर मैं ... गया. फिर भी साहस कर के पूछा, "...यों, भाई, इस सीट पर क्यों नहीं बैठूं?"

पुलिस वाले को मेरा पूछना शायद अपनी शान में गुस्ताखी लगा. वह गुर्रा कर बोला, "एक बार में सुनाई नहीं पड़ा क्या? उस सीट पर कोई नहीं बैठेगा. साहब के दोस्त आने वाले हैं."

"कितने लोग आने वाले हैं?" मैं ने फिर पूछा.

अब तो उस सिपाही का गुस्सा सीमा

कहानी • आलोक सक्सेना

पार कर गया. वह चिल्ला कर बोला, "कितने भी लोग आएं तुझे क्या मतलब? एक बार कह दिया न, मत बैठ उस पर. ज्यादा कानून मत झाड़, समझा...?"

मैं हैरान रह गया. मैं शक्लसूरत से कोई गुंडाबदमाश भी नहीं लगता. फिर इतनी सी बात पर सिपाही इतना क्यों भड़क गया, यह मैं नहीं समझ पाया.

तभी उस पुलिस वाले की आवाज सुन कर तीनचार अन्य पुलिस वाले धड़धड़ करते बस में घुस आए, "क्या बात है, रामपाल सिंह?" उन में से एक ने पूछा.

मूंछों वाले सिपाही का नाम रामपाल सिंह है, सब को पता चल गया था. रामपाल सिंह से मेरी गुस्ताखी की बात सुन कर वे सब मुझे ऐसे घूरने लगे, जैसे कच्चा ही चबा जाएंगे. मैं चुपचाप बस में पीछे जा कर एक व्यक्ति के साथ बैठ गया. बस के सभी यात्रियों पर रामपाल सिंह का जबरदस्त प्रभाव पड़ चुका था. अब वह खूब तन कर बैठा हुआ अपनी मूंछें उमेठ रहा था. बस में सन्नाटा देख कर बाकी सिपाही नीचे उतर गए थे.

बदनूर छोटा सा जिला है और वहां पुलिस अधीक्षक को बहुत बड़ी चीज समझा जाता है.

पुलिस अधीक्षक स्वयं मुझे जानते थे. बड़े मिलनसार और नम्र स्वभाव के व्यक्ति थे. कुछ रुचि साहित्य में भी रखते थे. उन का एक काव्य संग्रह भी प्रकाशित हो चुका था, लेकिन रामपाल सिंह की मूंछें और उस का व्यवहार देख कर मेरी हालत पतली हो गई. मैं पुलिस अधीक्षक से अपनी मित्रता की बात भी भूल गया और मन ही मन खैर मनाने लगा कि, "चलो अच्छा हुआ, रामपाल सिंह को ज्यादा गुस्सा नहीं आया, वरना आज हवालात का मुंह तो देखना पड़ता ही, डंडे अलग पड़ते.

निर्धारित समय पर बस के चालक ने आ कर हार्न बजाना शुरू किया.

मुझे यह देख कर बहुत खुशी हुई कि चालक भी बड़ीबड़ी मूंछें रखे हुए था और थोड़ीथोड़ी देर बाद उन्हें रामपाल सिंह की तरह ही उमेठता था.

अभी उस ने बस चलाई भी नहीं थी कि रामपाल सिंह ने हांक लगाई, "ए ड्राइवर, बस साहब के बंगले से हो कर जाएगी, साहब के दोस्त को लेना है."

चालक ने पीछे मुड़ कर एक बार रामपाल सिंह को देखा. फिर मूंछें उमेठ कर बोला, "यह सुपर फास्ट बस है, एक बार स्टैंड से छूटी तो सीधी शाहपुर जा कर रुकेगी. जिस को जाना हो यहीं बस स्टैंड से बैठे."

"क्या?" रामपाल सिंह दहाड़ा, "अभी पता चल जाता है कि बस बंगले जाएगी या नहीं." उस ने खिड़की से सिर निकाल कर आवाज लगाई और वही चारपांच पुलिस वाले बस में घुस आए.

सारी बात सुन कर उन में से एक, जो कुछ बुजुर्ग और समझदार लगता था, चालक से बोला, "भैया, काहे फजूल में झगड़ा कर रहे हो? दो मिनट की बात है, उस बंगले ले जाओ. नहीं तो अभी थानेदार साहब आ जाएंगे और फिर घंटों जांचपड़ताल होगी. दोतीन घंटे यहीं निकल जाएंगे और अगर कोई कमी निकल आई तो चालान हो जाएगा."

"चालान काहे का हो जाएगा, यह कोई प्राइवेट बस है—यह सरकारी बस है, राज्य परिवहन की..." ड्राइवर ने दलील दी.

इस पर उस सिपाही ने आंखें तरेरीं, "इस से क्या होगा? तू पुलिस को जानता नहीं है अभी...."

इतना सुन कर चालक ने मूंछें उमेठना छोड़ दिया था. उस की शक्ल पर निरीहता के भाव उभर आए थे. वह अच्छी तरह समझ गया था कि बस नहीं ले जाने का मतलब होगा पुलिस से दुश्मनी. मुंह ही मुंह में कुछ बड़बड़ाते हुए उस ने बस चलाई और पुलिस अधीक्षक के बंगले की तरफ मोड़ दी. बाकी पुलिस वाले उतर गए थे. लेकिन रामपाल सिंह अपनी सीट पर तना हुआ बैठा मूंछें उमेठ रहा था.

बस जैसे ही पुलिस अधीक्षक के बंगले के सामने रुकी, रामपाल सिंह लपक कर उतरा. उस के उतरते ही चालक बड़बड़ाया

...यात्रियों को देख कर लगभग हकलाते हुए रामपाल सिंह ने कहा, "देखिए, मैं... मैं ...अकेला क्या कर सकता हूं"?

...ले, छोटे जिलों में यही मुसीबत है, दो ...का सिपाही, एक लाख की बस को ...बाप की समझता है."

...उस की बात का किसी ने समर्थन नहीं ...सब सहमे हुए पुलिस अधीक्षक के ...की ओर देख रहे थे. जब काफी देर हो ...चालक ने बस बंद कर दी.

...यह सुपर फास्ट बस थी और राज्य ...इस के किराए में तीन रुपए अधिक ...हम सब ने जल्दी पहुंचने के लिए यह ...क्त किराया दिया था. फिर भी हम सब ...रहे थे. शायद रामपाल सिंह के डर से, ...कि हम सभी लोग बदनूर के ही थे और ...भी रामपाल सिंह के हाथ पड़ सकते थे.

...पूरे 30 मिनट के बाद पुलिस अधीक्षक ...उन के मित्र बंगले से बाहर निकले, और ...आराम से चलते हुए बस के पास आए. ...मिनट तक वे दोनों बस के पास खड़े हुए ...करते रहे. मैं ने सोचा, बस से उतर कर ...अधीक्षक से दुआसलाम कर लूं,

लेकिन तभी मेरी नजर वहां खड़े हुए रामपाल सिंह पर पड़ी और मैं ने अपना यह विचार स्थगित कर दिया.

पुलिस अधीक्षक के मित्र उस समय खुद को पुलिस अधीक्षक ही समझ रहे थे. उसी पुलिसयाना शान के साथ वह बस में चढ़े, सारी सवारियों पर एक हिकारत भरी नजर डाली और उस सीट पर बैठ गए जो रामपाल सिंह ने उन के लिए खाली छुड़वा रखी थी.

वह तीन सवारियों वाली सीट थी. पर उस पर वह अकेले ही बैठे थे. उन के बैठ जाने के बाद रामपाल सिंह भी आ कर उन की सीट के पीछे वाली सीट पर बैठ गया और पूर्ववत अपनी मूंछें उमेठने लगा.

चालक ने झुंझलाते हुए बस चलाई. हम सब पुलिस अधीक्षक के मित्र और सिपाही रामपाल सिंह को देख रहे थे, जैसे वे दोनों हमारे लिए बडे विचित्र प्राणी थे.

चालक का मिजाज खराब हो गया था. वह बहुत तेज बस चला रहा था.

अगला स्टेशन शाहपुर था. वह था तो बदनूर जिले में ही, पर बदनूर बस स्टैंड से वहां तक जाने में एक घंटा लगता था.

अभी हम लोग लगभग आधे घंटे की यात्रा ही कर पाए थे कि आगे सड़क पर जाता हुआ एक ट्रक मिला. वह ट्रक भी शाहपुर की ओर ही जा रहा था और पूरी सड़क को घेर कर धीरेधीरे चल रहा था. हमारी बस जैसे ही उस ट्रक के पीछे पहुंची, चालक ने हार्न बजाना शुरू कर दिया ताकि बस आगे निकालने के लिए उसे रास्ता मिल जाए, मगर हार्न का ट्रक वाले पर कोई असर नहीं हुआ. वह उसी तरह आराम से पूरी सड़क घेर कर ट्रक चलाता रहा.

हमारी बस का चालक जहां भी जरा सी जगह मिलती, बस को ट्रक की बगल से निकालने की कोशिश करता, लेकिन सड़क बहुत ही संकीरी थी और सुबह तेज बारिश हो जाने के कारण सड़क के दोनों ओर कीचड़ हो गई थी.

बहुत कोशिश करने पर भी हमारी बस का चालक बस को ट्रक के आगे नहीं निकाल पा रहा था. वह लगातार हार्न बजा रहा था. यही स्थिति लगभग आधे घंटे तक चलती रही. शाहपुर नजदीक आ गया था, लेकिन अभी भी ट्रक वाला रास्ता देने को तैयार नहीं था. तभी अचानक एक मोड़ पर काफी जगह मिल गई और हमारी बस के चालक ने फुरती से अपनी बस ट्रक के आगे निकाल ली.

वह चाहता तो सीधा आगे बढ़ जाता, किंतु उस का दिमाग सुबह से ही बौखलाया हुआ था. अतः उस ने बस आगे निकाल कर खड़ी कर दी और दरवाजा खोल कर सड़क पर कूद पड़ा. ट्रक वाले को भी एकदम ट्रक रोक देना पड़ा. जैसे ही ट्रक रुका बस का चालक चिल्लाया, "क्यों बे, तेरे बाप की सड़क है? 30 किलोमीटर से हार्न बजाता आ रहा हूं, तेरे कान पर जूं भी नहीं रेंग रही थी."

हम सब उचकउचक कर खिड़कियों से झांकने लगे. बस के चालक ने संभवतः यह सोचा था कि वह ट्रक चालक को धमका लेगा, मगर उस की आशा के ट्रक में से भयानक सी सूरत के हट्टेकट्टे लोग कूदे और उन्होंने बिना कुछ कहे चालक को मारना और गालियां देना शुरू कर दिया.

चालक इस अप्रत्याशित आक्रमण से बौखला गया और जोर से चीखने लगा. उस की चीखें सुन कर बस में से, कंडक्टर के अलावा कोई भी उसे बचाने के लिए नहीं उतरा. कंडक्टर अकेला क्या करता? चालक को बचाने के प्रयास में एकदो हाथ उस के भी पड़ गए तो कोई उपाय न देख कर वह चिल्ला कर उन से बोला, "देखो, इस का बहुत बुरा नतीजा होगा. हमारी बस में एस.पी. साहब बैठें हैं और एक पुलिस वाला भी है. तुम को बाद में पछताना पड़ेगा."

बस में बैठे लोगों को रामपाल का ध्यान आया. सब की निगाहें उस की ओर गईं. उस की मूंछें अभी भी ऐंठी हुई थीं, वह कुछ सहमा हुआ सा लग रहा था. लोग कंडक्टर की बात सुन कर और भड़क उठे, "स्साले, पुलिस की धौंस देता है, बुला ले अपने बाप पुलिस वाले को. हम भी देख लेते हैं. भले ही फांसी हो जाए."

उन मुस्टंडों की बात सुन कर रामपाल सिंह और भी सहम गया. तभी बस में से कोई चिल्लाया, "ए दीवानजी, यह तो तुम्हारा जिला है, उतर कर रोकते क्यों नहीं उन को? वे उस बेचारे को मार ही डालेंगे."

दूसरी आवाज आई, "वहां तो धमकी दे रहा था. तेरा इलाका है, अब क्यों नहीं अपनी बहादुरी दिखाता?"

"हां, चल उतर कर बचा उसे," एक और आवाज आई. फिर तो बस में सब तरफ से शोर होने लगा.

"उतारोउतारो, उतारो इस पुलिस वाले को."

"वहां तो शेर बना हुआ था, अब भीगी बिल्ली बना बैठा है."

रामपाल सिंह एकदम घबरा गया. उस एक बार दयनीय भाव से बस के यात्रियों को फिर हकला कर बोला, "देखिए, सुनिए, मैं भला अकेला क्या कर सकता हूं?"
"क्यों, तब तो पूरी बस थाने ले जा रहा ?"

"लेकिन साहब, यहां तो थाना नहीं है, फिर वे लोग तो गुंडे हैं'." रामपाल सिंह होठों पर जीभ फेर कर बोला.

उस की हालत देख कर पुलिस अधीक्षक के मित्र सब को समझाते हुए बोले, "...खिए, इस बेचारे अकेले आदमी से क्या ...! हम लोग शाहपुर चल कर थाने से ...बुला लेंगे."

...हम ने देखा उन की भी पहले वाली ...हवा हो चुकी थी. पूरी बस में से एक भी ...त चालक को बचाने नहीं उतरा. ...पाल सिंह की मूंछें अब नीचे की ओर झुक ...थीं. उस ने काफी देर से उन को नहीं ...रा था. वह बहुत ही डरा हुआ भी लग रहा ...

हमारी बस का चालक लंगड़ाता हुआ ...कर अपनी सीट पर बैठा ओर बस धीरे-धीरे शाहपुर की ओर चल पड़ी. सवारियां सारे रास्ते रामपाल सिंह की खिल्ली उड़ाती रहीं और वह चुपचाप बैठा रहा. रास्ते भर उस ने एक शब्द भी नहीं बोला और न ही अपनी मूंछें उमेठीं. शाहपुर में कुछ नई सवारियां चढ़ीं तो दो लोग जा कर पुलिस अधीक्षक के मित्र के साथ बैठ गए. रामपाल सिंह ने एक बार भी उन्हें मना नहीं किया.

बहुत दिन बाद बदनूर में एक काव्य गोष्ठी में पुलिस अधीक्षक से मुलाकात हुई तो मैं ने अचानक उन से पूछ लिया, "आप मूंछें क्यों नहीं रखते?"

मेरे प्रश्न पर वह हैरान रह गए. बोले, "यह क्या बात हुई, नहीं रखता बस. भई, तुम पत्रकार लोग भी अजीब प्रश्न पूछते हो. लेकिन यह प्रश्न तुम ने पूछा क्यों?"

मैं उन के प्रश्न का उत्तर देने ही वाला था कि दरवाजे पर निगाह पड़ी. वहां खड़ा था—कलफदार वरदी पहने, एक हाथ में डंडा लिए और दूसरे हाथ से मूंछें उमेठता हुआ—सिपाही नंबर 324—रामपाल सिंह. मैं सकपका कर चुप हो गया और बोला, "कुछ नहीं साहब, ऐसे ही पूछ लिया था." ●

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन न... फिर गुलाम होते देर नहीं... भी हजारों वर्ग मील भा... विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्... लिए बहुत बड़े पैमाने प... सहयोग और सद्भाव की... होती है.

सरिता किसी सरकारी... पूंजीपति या राजनीतिक दल... नहीं है, न ही यह किसी से कि... सहायता स्वीकार करती है... एक ही वर्ग की सहायता और... निर्भर है. और वह हैं सरि... इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व... सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई...

हिंदू समाज के नवनि... में भाग लीजि...

आज पत्रकारिता में... सरकार का और देशी...

राजनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण स्वतंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा रही है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल एक ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र पत्रपत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी विश्वास पर निर्भर है. साथ ही आप को यह अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप बिना कुछ खर्च किए एक वर्ष में सरितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी अधिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा सकेंगे.

सरितामुक्ता के प्रसारप्रचार की इस योजना से लाभ उठाने के लिए आप को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए जमा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के रूप में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का नोटिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. सरिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने का नोटिस दे कर आप की अमानत आप को लौटा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता कार्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता व मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की इस विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली प्रेस" के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

ढोंगी तांत्रिक की तलाश जारी

सासाराम में पुलिस एक ऐसे ढोंगी तांत्रिक की तलाश में है जिस ने पिछले दिनों अपने मित्र और उस की पत्नी को सोन नदी में फेंक दिया.

घटना के अनुसार यहां से 18 किलोमीटर दूर डिहरी आनसोन में उस तांत्रिक ने अ बचपन के एक मित्र से कहा कि वह सोन नदी के तट पर पूजा कराए तो उस के परिवार के लि बहुत उत्तम होगा.

तांत्रिक के कहने पर उक्त दंपती 150 रुपए और जेवरात के साथ तट पर पहुंचे. तांत्रि ने उन की आंखों पर पट्टी बांध दी और पूजा कराने लगा.

मौका पा कर तांत्रिक ने अपने शिष्यों की मदद से मित्र और उस की पत्नी को नदी में फें दिया.

तांत्रिक का मित्र तो जिंदा बच गया, लेकिन उस की पत्नी की मृत्यु हो गई.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक: दिलराज सिंह) (सर्वोत्तम

*

जालसाज गिरफ्तार

मोदी नगर में लोनी पुलिस ने एक ऐसे युवक को गिरफ्तार किया है जिस का संबंध ए गिरोह से है जो ड्राफ्टों द्वारा पैसा निकाल कर बैंको को ठगा करता था.

पुलिस के अनुसार हरीश नाम के इस युवक को 10 हजार रुपए का जाली ड्राफ्ट भुना हुए रंगे हाथों गिरफ्तार किया गया.

उस के बताने पर गाजियाबाद के स्टेट बैंक के एक संदेशवाहक के मकान पर छापा मा कर पुलिस ने जाली ड्राफ्ट की किताबें, गाजियाबाद व हापुड़ के बैंकों की जाली मुहरें तथा अ आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद किए हैं.

—विश्वमित्र, कलकत्ता (प्रेषक: बल्लभदास बिन्नाणी

*

नौकरी दिलाने के नाम पर ठगी

पूना में नौकरी दिलाने का प्रलोभन दे कर युवकों से रुपए ठगने के आरोप में पुलि मणिका गांव के अरविंद झा, उस के पिता और भाई की तलाश कर रही है.

बताया गया है कि अरविंद झा अपने को मुजफ्फर डिपो में अफसर बता कर बेरोज युवकों को नौकरी दिलाने के नाम पर मोटी रकम ठगा करता था.

कहा जाता है कि अब तक वह लगभग एक सौ युवकों से छह लाख रुपए ठग चुका है

—राष्ट्रदूत, बीकानेर (प्रेषिका: समिधा सुधि सक्सेना

प्राण फिल्मों के ऐसे कलाकार हैं, जिन्हें 20 वर्ष तक सब से ज्यादा घृणा की दृष्टि से देखा गया. हर नई फिल्म के साथ उन के अभिनय की सराहना पहले से भी अधिक होती थी, परंतु वह आम जनता का दिल जीत पाने में असमर्थ रहते थे. उस समय कुछ ऐसी घटनाएं घटीं, जिन्होंने मुझे आज इस विषय पर लिखने के लिए प्रेरित किया है.

यह आज से 10 वर्ष पूर्व की घटना है. उन दिनों प्राण एक माने हुए खलनायक थे. उन के कुछ प्रशंसकों ने उन्हें दिल्ली में
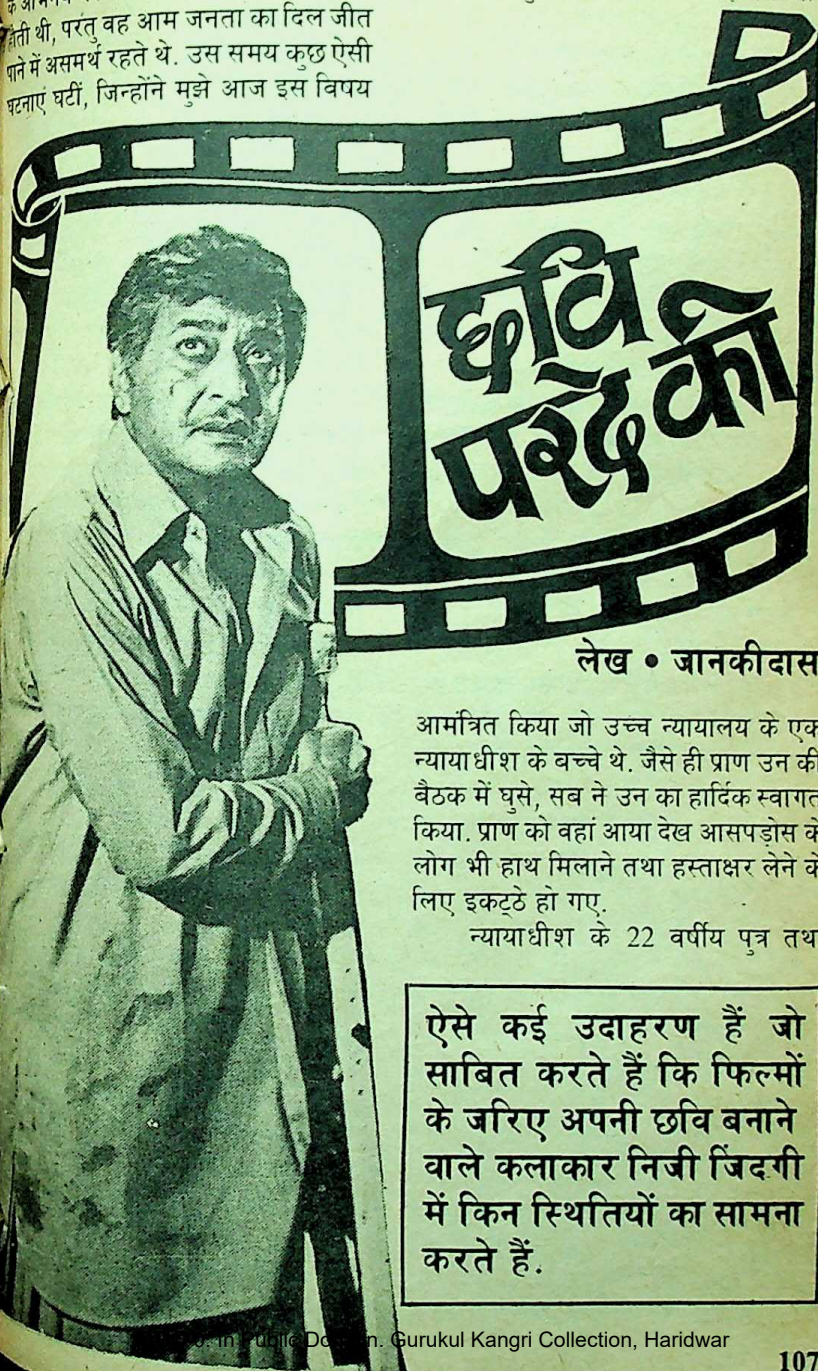
लेख • जानकीदास

आमंत्रित किया जो उच्च न्यायालय के एक न्यायाधीश के बच्चे थे. जैसे ही प्राण उन की बैठक में घुसे, सब ने उन का हार्दिक स्वागत किया. प्राण को वहां आया देख आसपड़ोस के लोग भी हाथ मिलाने तथा हस्ताक्षर लेने के लिए इकट्ठे हो गए.

न्यायाधीश के 22 वर्षीय पुत्र तथा

ऐसे कई उदाहरण हैं जो साबित करते हैं कि फिल्मों के जरिए अपनी छवि बनाने वाले कलाकार निजी जिंदगी में किन स्थितियों का सामना करते हैं.

किशोरी बेटी ने प्राण को लोगों के इस जमघट के बीच सुस्वादु व्यंजन परोसे. न्यायाधीश का कमरा लोगों से खचाखच भरा था. शोरशराबे की आवाज सुन कर साथ के कमरे में बैठे न्यायाधीश चौकन्ने हो गए. तभी उन के पुत्र ने उन से एक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति से मिलने की प्रार्थना की. उन्होंने पूछा, "तुम ने किसे बुलाया है?" पुत्र ने उत्तर दिया, "प्रसिद्ध अभिनेता प्राण को."

प्राण का नाम सुनते ही उन के मुंह से निकला, "प्राण, वह धोखेबाज खलनायक? तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई कि उसे..."

"लेकिन वह हिंदी फिल्म जगत का सब से लोकप्रिय खलनायक है." उस ने पिता की बात बीच में काटते हुए कहा.

उन्होंने गुस्से से उस का कंधा झंझोड़ते हुए कहा, "अबे बेवकूफ, खलनायक खलनायक ही होता है, चाहे परदे पर हो या वास्तविक जीवन में."

फिर वह पांव पटकते हुए सीधे बैठक में पहुंचे और सीधे प्राण से बोले, "श्रीमान खलनायकजी, आप की मेरे घर आने की हिम्मत कैसे हुई?"

प्राण जैसे सकते में आ गए. लेकिन इस से पहले कि वह कुछ कह पाते, कमरे में उपस्थित सब लोगों ने कहा कि यह प्रसिद्ध अभिनेता प्राण हैं. न्यायाधीश ने सभी की बात अनसुनी कर दी और प्राण से साफ शब्दों में कहा, "कृपया बाहर निकल जाइए. मुझे नहीं मालूम था कि आप इस दर्जे तक दुस्साहसी हो सकते हैं कि एक न्यायाधीश के घर में घुस आएं."

प्राण मुसकराते हुए और साथ ही मन ही मन न्यायाधीश को मनुष्यों के बारे में उन की अज्ञानता के लिए कोसते हुए घर से बाहर हो गए.

मारवाड़ी चरित्र

मुझे एक बुरी घटना याद आ रही है जो स्वयं मेरे साथ घटी थी. फिल्म 'कच्चे हीरे' की शूटिंग के लिए हम लोग उदयपुर गए हुए थे. एक खुली कार में निर्देशक नरेंद्र बेदी, रीना राय, डेनी तथा मैं एक सड़क से गुजर रहे थे. "रीना राय एक महान अभिनेत्री है," "डेनी एक शरीफ खलनायक है" जैसे फिकरे लोगों के मुंह से निकल रहे थे. लेकिन मेरा नाम ले कर सभी लोग भद्दी गालियां बक रहे थे.

दूसरे दिन मैं बाजार में कुछ खरीदारी करने निकला. जैसे ही मैं लकड़ी के खिलौनों की एक दुकान के आगे कार रोक कर उतरा तो हुआ, दुकानदार भागता हुआ मेरे पास आया. मैं समझा कि वह मेरा एक कलाकार के रूप में स्वागत करने आया है, लेकिन कुछ और ही हुई. उस ने चीख कर कहा, "अबे गुंडे, मैं ने तेरी फिल्म 'बेटीबेटे' देखी है. क्या मारवाड़ी ऐसे होते हैं जैसा तू फिल्म में था?"

इस से पहले कि मैं कुछ कह पाता, उस ने धड़ाक से मेरी नाक पर मुक्का जमा दिया और बोला, "क्या मारवाड़ी बलात्कारी होते हैं? क्या किसी ने तेरी मांबहन या बेटी के साथ बलात्कार किया है?"

संयोग से मेरा एक मित्र मेरे साथ था जिस ने बीचबचाव कराया. वहां देखते ही देखते खासी भीड़ इकट्ठी हो गई थी और मेरी मारमार कर चटनी बनाने पर उतारू थी. हम लपक कर कार में चढ़े और वहां से निकल भागे.

इस सारे हंगामे का कारण निर्माता प्रसाद की फिल्म 'बेटीबेटे' में मेरी एक मारवाड़ी की भूमिका थी जो फिल्म की नायिका (जमुना) के साथ बलात्कार करने की चेष्टा करता है.

कुछ इसी प्रकार की घटना जैसलमेर में जानी वाकर के साथ घटी थी. वहां के अधिकांश निवासी मारवाड़ी हैं. जैसे ही वह रेलगाड़ी के प्रथम श्रेणी के डब्बे से बाहर निकले, आठदस मारवाड़ियों ने उन्हें दबोचा. अगर वहां पुलिस का सिपाही मौजूद न होता तो जानी वाकर के लिए सहीसलामत बच निकलना मुशकिल ही होता.

इस अचानक हमले का कारण जानी वाकर की अनगिनत फिल्मों में कंजूस मारवाड़ी की भूमिका अभिनीत करना था.

अमिताभ बच्चन: परदे की मारधाड़ से मुक्केबाज मुहम्मद अली भी प्रभावित
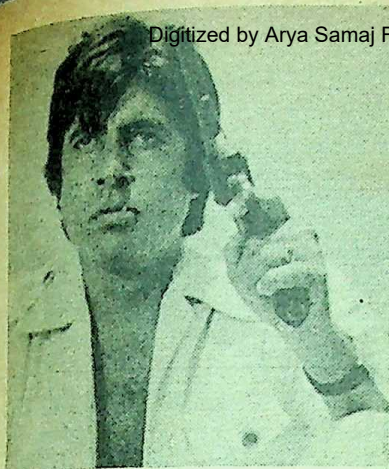
कुछ समय पहले कुछ भारतीय फिल्में देखने के बाद विश्व के प्रमुख मुक्केबाज मुहम्मद अली ने कहा था, "यदि संसार में लड़ने में मेरा कोई उचित प्रतिद्वंद्वी हो सकता है तो वह है अमिताभ बच्चन. मुझे उस समय बड़ी हैरानी होती है जब अमिताभ अकेला ही दरजनों हट्टेकट्टे मुस्टंडों की मारमार कर चटनी बना देता है."

आखिर ये शब्द संसार के सब से शक्तिशाली व्यक्ति के मुंह से क्यों निकले? कारण ढूंढ़ने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं. परदे की छवि सभी को धोखा देती है.

सुपर स्टार अमिताभ बच्चन की विभिन्न छवियां हैं. 'लावारिस' नामक फिल्म में उन्होंने गीत 'मेरे अंगने में तुम्हारा क्या काम है' गा कर भारत के सभी हिजड़ों का दिल जीत लिया. हिजड़ों के सभी संगठनों ने उन्हें एकमत से अपना अध्यक्ष स्वीकार किया है.

भय अमजदखान का

कौन नहीं जानता कि अब भारत के गांवों की औरतें अपने कहना न मानने वाले बच्चों को गब्बरसिंह के नाम से डराने लगी हैं. पर यह गब्बरसिंह है कौन? यह हैं अमजद खान, जिन्होंने अत्यंत सफल फिल्म 'शोले' में एक खतरनाक डाकू की भूमिका इतने अजीब ढंग से अभिनीत की थी कि उन की व्यक्तिगत छवि ही भयानक बन कर रह गई है. यहां यह बता देना आवश्यक है कि अपने निजी जीवन में वह एक निहायत भले और सीधेसादे आदमी हैं.

आदर्श भारतीय नारी

मीनाकुमारी को कौन नहीं जानता? एक के बाद एक फिल्म में उन्होंने भारतीय नारी के चरित्र को उस के महानतम रूप में उजागर किया है. लोग वास्तव में उन्हें पूजते थे. जुहू में उन का पड़ोसी होने के नाते मैं ने स्वयं अपनी आंखों से औरतों को उन के चरणों की धूल माथे से लगाते देखा है. 'पाकीजा' में अभिनीत अपनी एक वफादार औरत जैसी भूमिका के कारण वह आज देशविदेश के लोगों के हृदय में बस गई हैं.

लेकिन आप भले ही विश्वास करें अथवा नहीं, 'सती सावित्री' कही जाने वाली मीनाकुमारी के अपने शब्दों के अनुसार

अमजद खान: फिल्म 'शोले' के गब्बरसिंह का आतंक अब सचमुच में बच्चों को डराता है.

मीनाकुमारी: परदे और निजी जिंदगी के बीच गहन अंतर्विरोध

बचपन में उन के साथ अनगिनत बार बलात्कार किया गया. वह नारी कामोन्माद से पीड़ित थी. इस बात की पुष्टि हमारे संयुक्त पारिवारिक डाक्टर ने की है, जिस के पास वह कमाल अमरोही से संबंध टूटने के बाद आ कर रही थीं. उन के जीवन में कितने ही आदमी आए, जिन में राहुल नाम का एक व्यक्ति विशेष उल्लेखनीय है जिस के साथ उन की शादी तक की बात लगभग तय हो गई थी. निस्संदेह उन के सब से अच्छे मित्र कमाल अमरोही ही थे, जो बरसों तक उन के हित का ध्यान रखते रहे. बाद में उन के बुरे दिनों का साथी धर्मेंद्र रहा.

अंधविश्वास की हद

'जय संतोषी मां' फिल्म के आने से पूर्व निरूपा राय की ख्याति सब से अधिक पूजनीय अभिनेत्री के रूप में थी, जिन्होंने अनगिनत धार्मिक फिल्मों में देवी की भूमिका निभाई थी. उन की एक ऐसी ही फिल्म 'विष्णु भगवान' में मुझे नारद मुनि की भूमिका मिली थी. इसी सिलसिले में मुझे उन के साथ 15 दिन तक अहमदाबाद के समीप साबरमती में रहना पड़ा. जहां हमें ठहराया गया था, वह स्थान गांधीजी के साबरमती आश्रम के एकदम समीप था.

जैसे ही हम मेकअप आदि कर के बाहर निकले, आश्रम में जमा हजारों ग्रामीण दंडवत प्रणाम करते हुए लेट गए जब कि औरतें निरूपा राय के कदमों की धूलि ले कर अपने माथों पर चढ़ाती रहीं. यह तो मात्र शुरुआत थी. अगले दिन भी हमें उसी स्थान पर शूटिंग करनी थी. हम सामने खड़ी निरूपा राय की मूर्ति देख कर भौचक्के रह गए. ग्रामीणों ने यह मूर्ति निरूपा राय के चरणों के नीचे की मिट्टी को इकट्ठा कर के बनाई थी. मूर्ति के गले में कितने ही हार पड़े हुए थे और औरतें बच्चों सहित उस की पूजा कर रही थीं. हमें और भी अधिक आश्चर्य तब हुआ जब वे निरूपा राय को देवी का एक नया अवतार मान कर उन की आरती गा रहे थे.

अगले दिन भीड़ इतनी बढ़ गई कि शूटिंग करना असंभव सा ही हो गया. थोड़ी दूरी पर ही महात्मा गांधी की संगमरमर की मूर्ति लगी हुई थी. लेकिन आप विश्वास करें या न करें, जिस दिन से निरूपा राय की मूर्ति की स्थापना हुई थी, बहुत ही कम लोग गांधीजी की मूर्ति की तरफ जाते थे.

लेकिन यदि किसी ने वास्तव में देवी के रूप में अपनी छवि से देशविदेश में जबरदस्त हलचल मचाई है तो वह हैं 'जय संतोषी मां' फिल्म में संतोषी मां की भूमिका निभाने वाली अनीता गुहा. आज संतोषी मां के रूप में अनीता गुहा की मूर्ति अधिकांश मंदिरों, आश्रमों तथा अन्य पूजा घरों में मिल जाएगी. नाम अनीता गुहा और संतोषी मां एकदूसरे के पर्यायवाची बन चुके हैं. आज करोड़ों लोग शुक्रवार के दिन व्रत रख कर संतोषी मां का पूजन करते हैं. सेल्यूलाइड की छवि का जादू ही कुछ ऐसा है.

छवि बनने के सिलसिले में मुझे पुरानी धार्मिक फिल्मों के मशहूर अभिनेता प्रेम अदीब की याद आ रही है, जिन्होंने 'रामराज्य' तथा 'भरत मिलाप' नामक फिल्मों में राम की भूमिका निभाई थी. आज भी राम के रूप में उन के चित्र तथा मूर्तियां धार्मिक स्थानों तथा मंदिरों में पाई जाती हैं. इन फिल्मों से उन की इतनी ख्याति हुई कि दूरदूर से सैकड़ों पुरुष, स्त्री, बच्चे उन के

केवल उन के दर्शनों को आने लगे हैं.

एक सहयोगी कलाकार के रूप में मेरी जब तब उन से भेंट होती रहती थी. एक दिन मैं अपने एक निर्माता मित्र की ओर से उन से एक धार्मिक फिल्म का अनुबंध करने के लिए गया. लेकिन जब मैं वहां पहुंचा तो वहां का दृश्य देखता ही रह गया. वह इमली के एक पेड़ के नीचे मृगछाला विछाए बैठे थे. एक विशाल भीड़ उन के सामने एकत्र थी. वहां का दृश्य देख कर मुझे रामायण में छपे रांम दरबार के चित्र की याद आ गई.

क्या प्रेम अदीब सचमुच भगवान बन गए थे. मैं इतने दिन से उन के साथ था, लेकिन मुझे नहीं मालूम था कि राम के रूप में उन की छवि दर्शकों के हृदय पर इतनी गहरी पड़ चुकी है. मैं उन का यह चमत्कार देख कर हैरान था. मैं उन के एकदम समीप जा कर बैठ गया और धीरे से पूछा, "यह सब क्या तमाशा है?"

उन्होंने फुसफुसा कर कहा, "भाई जानकीदास, मैं विवश हूं. ये लोग मुझे राम का पुनरवतार समझते हैं. मैं इन को निराश भी नहीं कर सकता."

मेरे जाने से पूर्व उन्होंने फिर कहा, "लेकिन, जानकीदास, यदि मैं तुम्हें सच बताऊं तो मेरा मन कहता है कि मैं अपने किसी पूर्वजन्म में राम ही था."

समय बीतता गया. इस घटना के कुछ वर्ष बाद अचानक मेरी मुलाकात उन से न्यायालय में हो गई. उन को सिपाही हथकड़ी डाले ले जा रहा था और उन के पीछेपीछे भीड़ चल रही थी. मुझे देखते ही वह बोले, "जानकीदास, तुम बिलकुल ठीक समय पर आए हो. इस से पहले कि मैं जेल जाऊं, मैं लोगों तक पहुंचाने के लिए तुम्हें एक संदेश देना चाहता हूं. उन से कहना कि सभी महान आत्माओं के साथ संसार में ऐसा ही व्यवहार किया जाता है. जैसे आज से दो हजार वर्ष पूर्व ईसा को सूली पर चढ़ाया गया था, ठीक उसी प्रकार मुझे भी सजा दी जा रही है."

इस प्रकार परदे की छवि ने छवि बनाने वाले को छल लिया. ●

लेखकों के लिए सूचना

● सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.

● प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.

● प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.

● प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.

● स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.

● मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें :
संपादकीय विभाग
मुक्ता, दिल्ली प्रेस,
नई दिल्ली-110055.

सागर सरहदी

भेंटवार्ता
•
शांतिस्वरूप त्रिपाठी

व्यावसायिक फिल्मों में काफी शोहरत हासिल करने के बाद अब कला फिल्मों की ओर अग्रसर.

जीवन की सब से बड़ी उपलब्धि यही है कि व्यक्ति को अपने स्वभाव के अनुकूल काम मिल जाए. हां, कभी,कभी व्यक्ति परिस्थितियों के हाथों मजबूर हो कर जिस काम को करने की इच्छा न हो, वह भी प्रारम्भ कर देता है, लेकिन जैसे ही परिस्थितियां उस के अनुकूल होती हैं, वह

उस कार्य को अलविदा कह कर अपने स्वभाव के अनुकूल काम अपना लेता है. ऐसे ही व्यक्तियों में से एक हैं फिल्म उद्योग के लेखक निर्देशक सागर सरहदी.

सागर सरहदी को संवाद लेखक के रूप में काफी शोहरत हासिल हो चुकी है. 'अनुभव', 'कभीकभी', 'इनकार', 'दूसरा आदमी', 'नूरी', 'सिलसिला' और 'सवाल' जैसी व्यावसायिक फिल्मों में संवाद या पटकथा आदि लिखने के बाद उन्होंने एक कला फिल्म 'बाजार' का निर्माण किया है.

फिल्म बाजार देखने के बाद लेखक सागर सरहदी से मिलने की इच्छा को न दबा सका. अंततः उन के निवास स्थान पर ही उन से मुलाकात की और कुछ प्रश्न पूछे.

प्रश्न: सागरजी, व्यावसायिक फिल्मों में काफी शोहरत हासिल करने के बाद आप बाजार जैसी कला फिल्म बनाने के लिए कैसे प्रेरित हुए.

उत्तर: व्यावसायिक फिल्मों की ओर एकाएक नहीं मुड़ा. व्यावसायिक फिल्मों के लिए मजबूरी में लिखता रहा, क्योंकि रोजीरोटी के साथसाथ अपनी नाटक संस्था 'दि क़ार्टन' को जिंदा रखने का सवाल भी था. एक दिन मैं ने महसूस किया कि पैसा खर्च कर के नाटक देखने का प्रचलन हमारे देश में कम है और मैं बगैर नाटकों के जिंदा नहीं रह सकता. नतीजा यह हुआ कि कलम को आर्थिक समझौतों के लिए तैयार किया ताकि पैसा कमा सकूं, संस्था को जीवित रख सकूं.

मैं ने व्यावसायिक फिल्मों के लिए लिखना शुरू करने के पहले ही दिन सोच लिया था कि अपनी फिल्म बना सकने की स्थिति में पहुंच जाने पर व्यावसायिक फिल्मों के लिए लिखना छोड़ दूंगा. और जब मैं ऐसी स्थिति में आया तो फिल्म बाजार बना ली. यह फिल्म मेरी पांचसात साल की मेहनत का फल है.

प्रश्न: अब क्या भविष्य में व्यावसायिक फिल्मों के लिए लिखेंगे?

उत्तर: बिलकुल नहीं, हां, यदि एक

सागर सरहदी की कहानी पर बनी फिल्म 'बाजार' के एक दृश्य में सुप्रिया पाठक.

बार फिर भूखा मरने लगूंगा तभी शायद लिखूंगा.

प्रश्न: फिल्म बाजार जैसे कथानक पर फिल्म बनाने के लिए आप को किस घटना ने या किस बात ने प्रेरित किया?

उत्तर: हां, वह एक घटना है. मेरी खुद की देखी हुई घटना, जो मेरे साथ घटी. वैसे भी मैं जो कहानी, कविता या नाटक लिखता हूं, वह अपने खुद के अनुभवों के आधार पर ही लिखता हूं. मैं सिर्फ कल्पना पर नहीं लिख पाता.

प्रश्न: क्या वह घटना बताएंगे?

उत्तर: हां, घटना बताने में तो कोई हर्ज नहीं है. हुआ यों कि कुछ वर्षों पूर्व मेरे एक मित्र ने अपनी लड़की की शादी पर मुझे हैदराबाद बुलाया, यह शादी उस की मर्जी के खिलाफ हो रही थी. लेकिन उस की शादी होना भी आवश्यक थी. परिस्थितियां ही ऐसी थीं, क्योंकि उस के रहते हुए उस की बड़ी बहन की शादी नहीं हो सकती थी. इस घटना ने मुझे प्रभावित किया और मैं ने फिल्म बना डाली.

प्रश्न: इस फिल्म के लिए कलाकारों ने कुछ आनाकानी नहीं की.

उत्तर: फिल्म बाजार की कहानी मैं ने एक स्टूडियो में स्मिता को सुनाई, वह बहुत व्यस्त थी, दूसरे मुझे फिल्मी अंदाज में कहानी सुनानी भी नहीं आती, लिहाजा स्मिता की बहुत उत्साहपूर्ण प्रतिक्रिया नहीं प्राप्त हुई. पर जब मैं ने उसे कहानी पढ़ने के लिए दी तो वह उस विषय पर मुग्ध हो गई.

नसीरुद्दीन शाह की समझ की मैं दाद देता हूं. उस ने पहली बार में ही अपनी स्वीकृति दे दी और फिर उन दोनों के उत्साह और सहयोग से मैं ने एक शेड्यूल में ही फिल्म की पूरी शूटिंग पूरी कर डाली. तकरीबन दो महीने हम पूरी यूनिट के साथ हैदराबाद में रहे. इतना ही नहीं वे दोनों अब मेरी अगली फिल्म में भी काम करना चाहते हैं.

प्रश्न: इस फिल्म में काम करने वालों के बारे में कुछ और बताएंगे.

उत्तर: हां, शूटिंग के दौरान मैं ने पाया कि स्मिता पाटिल, नजमा के चरित्र में पू[illegible] एकाकार हो जाने के लिए प्रयासरत है. [illegible] बार वह कहती थी कि मैं नियति के चक्र[illegible] फंसी बेबस नजमा की लाचारी और अ[illegible] को उतनी शिद्दत से नहीं जी पा रही [illegible] जितनी शिद्दत से जीना चाहिए. यह उ[illegible] कलाकार मन की सच्ची अभिव्यक्ति है [illegible] अपनी प्रतिभा के द्वारा किसी चरित्र के खोल [illegible] पूरी तरह से प्रवेश कर, वही पात्र हो ज[illegible] चाहता है. यानी कि चरित्र की पूर्णता जी[illegible] की ललक. यही हाल नसीरुद्दीन शाह का [illegible]

प्रश्न: क्या इस के अलावा भी आप[illegible] फिल्मों के लिए कहानी लिखी है?

उत्तर: नहीं, कभी फिल्म वालों के लि[illegible] मैं ने कोई कहानी नहीं लिखी. मैं जानता [illegible] कि ये मेरी कहानी पर फिल्म नहीं बना सके[illegible]

प्रश्न: आप की फिल्म बाजार का को[illegible] विशेष उद्देश्य है?

उत्तर: जी, हमारे समाज में [illegible] शिथिलता सी आ गई है, आम आद[illegible] लिजलिजा सा हो उठा है. वह किसी मुद्दे [illegible] आवाज भी नहीं उठा पाता. मैं इसी बे[illegible] और चुप्पी को तोड़ना चाहता हूं.

बाजार की कहानी हैदराबाद [illegible] कहानी है. वे लोग जो किसी जमाने में नि[illegible] के यहां 100-100 रुपए में काम करते [illegible] जिन की सुबहशाम अफीम की पीनक में [illegible] तोड़ती थी. आज वे काम करने के का[illegible] नहीं रहे, और न वे काम ही करना चाहते हैं [illegible] काम करने में अपनी हेटी समझते हैं, [illegible] परिस्थितियों की चोट इतनी क्रूर है कि वे [illegible] इज्जत की आड़ में अपनेअपने घरों में बाज[illegible] खोले बैठे हैं. इस में उन्हें शर्म नहीं आती [illegible] ऐसे ही घर में नजमा का जन्म दिखाया है. [illegible] चारदीवारी के भीतर पेशा करने के लि[illegible] अपने ही लोगों द्वारा मजबूर किया जाता है[illegible]

सागर सरहदी अपने उद्देश्य में क[illegible] तक सफल हुए हैं, यह तो बाजार देख कर [illegible] दर्शक महसूस कर सकेंगे, पर इस में कोई [illegible] राय नहीं हो सकती कि ऐसे समर्पित लोगों [illegible] प्रयास ही आज व्यावसायिक सिनेमा के लि[illegible] बन रहे हैं.

टेपरिकार्डर को कैसे ठीक रखें
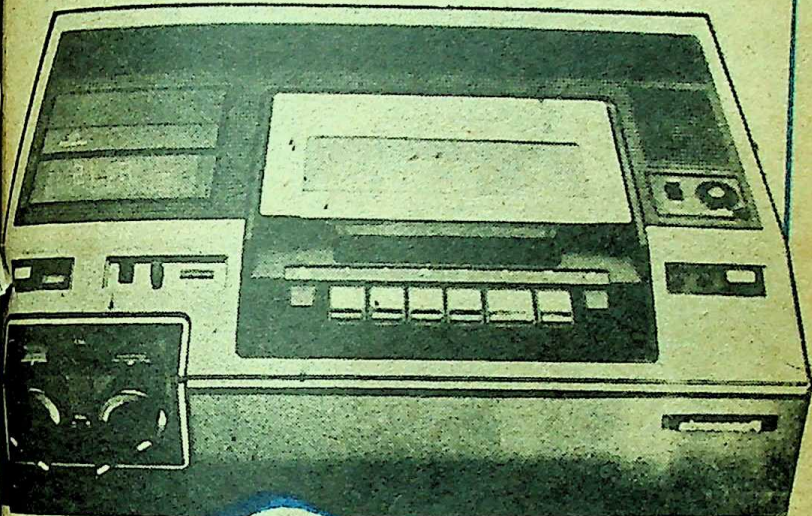
लेख • सुनील नागौरी

टेपरिकार्डर के रखरखाव के बारे में मामूली सी भी जानकारी रखने पर भी आप अनावश्यक खर्च और परेशानी से किस प्रकार बच सकते हैं?

आजकल टेपरिकार्डर काफी लोकप्रिय है. इस की [बढ़ती] लोकप्रियता को देख कर ऐसा लगता है [कि] रिकार्ड प्लेयर का प्रचलन लगभग नगण्य [हो] जाएगा, क्योंकि दाम और उपयोगिता के [आधा]र पर टेपरिकार्डर ही श्रेष्ठ है.

यद्यपि लोगों के पास टेपरिकार्डर हैं, वे [इस का] प्रयोग भी करते हैं, फिर भी इस के बारे में पर्याप्त जानकारी बहुत ही कम लोगों को है, जब कि इस के बारे में जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है. तो आइए सब से पहले टेपरिकार्डर के मुख्य भागों को जानें.

टेप गाइडर: यह प्लास्टिक का बना होता है इस का मुख्य कार्य टेप को सही दिशा देना होता है.

प्रेशर रबर रोलर: यह रबर का बना होता है और इस का मुख्य कार्य है टेप को नियमित गति देना.
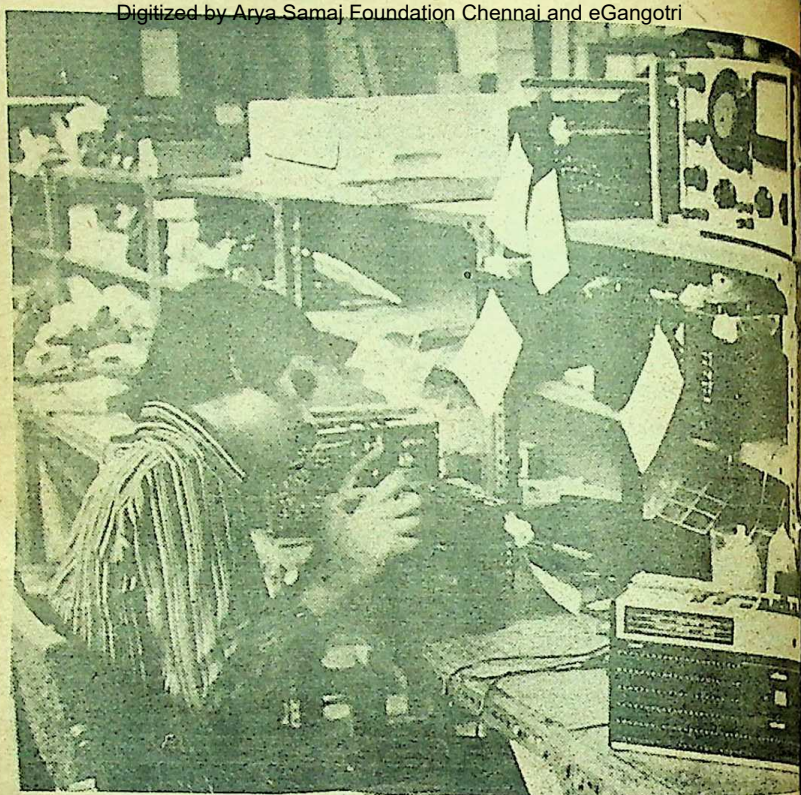
टेपरिकार्डर के बारे में थोड़ी सी जानकारी होने पर भी आप मैकेनिक के झमेलों से बच सकते हैं.

चूंकि यह टेपरिकार्डर में टेप या कैसेट के चलते वक्त हमेशा टेप के संपर्क में रहता है अतः टेप का आक्साइड इस पर चिपक जाता है और इस का रबर कठोर हो जाता है. रबर के कठोर होने से टेप कई बार फिसल जाता है, जिस से टेपरिकार्डर से आवाज एक सी नहीं आती. अतः इस स्थिति में रबर रोलर का साफ करना या बदलना आवश्यक हो जाता है.

हेड: हेड टेप रिकार्डर का सब से महत्त्वपूर्ण हिस्सा है. साधारणतः हर टेपरिकार्डर में दो हेड होते हैं– 1. टेप में आवाज भरते या आवाज सुनते वक्त प्रयोग में आने वाला प्लेयिंग या रिकार्डिंग हेड 2. टेप पर से आवाज को साफ करने में प्रयोग में आने वाला-इरेज हेड.

लगातार टेप के संपर्क में रह... प्लेयिंग हेड घिस जाता है और उस पर... आक्साइड की एक पर्त चढ़ जाती है, जि... आवाज तेज नहीं निकल पाती. अतः आ... तेज करने के लिए हेड को साफ क... आवश्यक हो जाता है.

इसी प्रकार इरेज हेड भी खरा... सकता है, पर चूंकि इस का प्रयोग ज्याद... होता इसलिए यह जल्दी खराब नहीं ह...

टेपरिकार्डर के भागों को साफ क... लिए इथाइल अल्कोहल उत्तम द्र... इथाइल अल्कोहल के न मिलने... आइसोप्रोपाइल अल्कोहल भी काम में... जा सकता है. चूंकि ये दोनों ही जल्दी उड़... वाले द्रव हैं इसलिए इन्हें किसी स्वच्छ... में अच्छी तरह बंद कर के रखना चाहि...

...हेड साफ करने के लिए पेट्रोल, एसिटोन, ...आदि द्रवों का इस्तेमाल करते हैं, जो ...नहीं है.
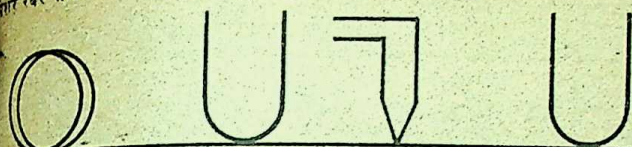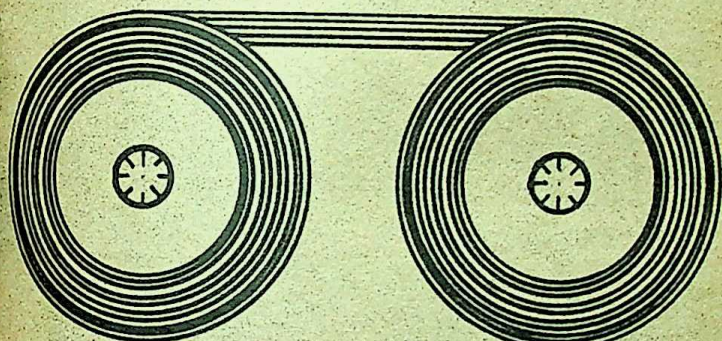
हेड कैसे साफ करें

आजकल बाजार में हेड क्लीनर कैसेट ...हैं. किंतु कुछ बार उपयोग में लाने के ...उन की हेड साफ करने की शक्ति कम ...जाती है. अतः इथाइल अल्कोहल या ...आइसोप्रोपाइल अल्कोहल ही हेड साफ करने ...लिए उत्तम द्रव है.

सर्वप्रथम टेपरिकार्डर की बिजली की सप्लाई बंद कर दें. अब कैसेट निकालने वाले इजेक्ट बटन को दबाएं. जिस से कवर बाहर आ जाएगा. अब प्ले बटन को दबाएं. प्ले बटन को दबाते ही हेड, प्रेशर रबर रोलर और टेप गाइडर दिखाई पड़ जाएंगे. इन्हें ही साफ करना है.

एक स्वच्छ व नरम सूती कपड़े को इथाइल अल्कोहल में भिगो कर उस वक्त तक हेड साफ करते रहें जब तक कि भूरे रंग के आक्साइड का निकलना बंद न हो जाए.

हेड साफ करने के बाद इस बात का भी ध्यान रखें कि कपड़े का कोई भी धागा हेड पर लगा न रह जाए. चमकदार हेड ही साफ हेड की पहचान है.

इसी प्रकार प्रेशर रबर रोलर और टेप गाइडर को भी साफ करें. टेपरिकार्डर के इन सभी हिस्सों को साफ करने के पंद्रह मिनट बाद ही टेपरिकार्डर का प्रयोग करें.

यदि आप अपने टेपरिकार्डर से रिकार्डिंग भी करते हैं तो इरेज हेड साफ करने के लिए इजेक्ट बटन दबाने के पश्चात एक हाथ से इरेज प्रीवेंशन लीवर को नीचे की ओर दबाएं तथा प्ले और रिकार्ड दोनों बटन दबाएं. जिस से इरेज हेड दिखाई पड़ जाएगा. फिर इसे इसी प्रकार साफ कर लें.

हेड का चुंबकीय हो जाना

हर टेपरिकार्डर का हेड इस्तेमाल के साथसाथ चुंबकीय होता जाता है जिस से ऊंची आवाज़ नहीं निकल पाती, अतः हेड का अचुंबकीय होना उतना ही जरूरी है जितना कि साफ होना.

हेड को साफ करने के पश्चात भी अगर तेज आवाज नहीं निकल पाती है तो समझना चाहिए कि हेड चुंबकीय हो गया है. इस का चुंबकत्व खत्म करने के लिए आजकल डीमैग्नेटाइजर बाजार में उपलब्ध हैं. डीमैग्नेटाइजर एक पिस्टन की तरह होता है जिस के एक सिरे पर धातु की पट्टी लगी होती है.

चुंबकीय हेड को अचुंबकीय बनाने के लिए सर्वप्रथम टेपरिकार्डर की बिजली की सप्लाई बंद कर दें. अब इजेक्ट बटन को

आप का भाषा ज्ञान

(पृष्ठ 67 के उत्तर)

1. खुराफात, 2. भाट, 3. घिर्री, 4. सचेतक, 5. जनजाति, 6. जीवाणु, 7. तालाबंदी, 8. तुष्टिकरण 9. धर्मतंत्र, 10. नामांकन पत्र. 11. निलंबन, 12. निविदा, 13. परीक्षणकाल.

रिकार्ड प्लेयर से ज्यादा उपयोगी-टेपरिकार्डर

दबाएं. तत्पश्चात प्ले बटन को दबाए डीमैग्नेटाइजर को लगभग दो मीटर की पर रख कर उस के प्लग को चालू करें की धातु की पट्टी को, इस बात का रखते हुए धीरेधीरे हेड के पास लाएं कि की पट्टी हेड को छू न जाए. कुछ दे डीमैग्नेटाइजर को धीरेधीरे अपनी वापस ले आएं और उस का बटन बंद क

यह कार्य बहुत ही सावधानी करना चाहिए अन्यथा हेड और खरा सकता है. शायद इसी लिए आजकल हेड को इस प्रकार ठीक करने से समझते हैं नया हेड लगवाना.

आवश्यक सावधानियां

1. प्ले और रिवाइंड या फारवर्ड एक साथ न दबाएं.

2. हेड साफ करने के लिए इथा अल्कोहल या आइसोप्रोपाइल अल्कोहल ही प्रयोग करें.

3. टेपरिकार्डर और कैसेट दोनों टी.वी., चुंबक, पंखे की मोटर इत्यादि से रखें ताकि उस में चुंबकीय दोष न आ

4. टेपरिकार्डर और कैसेट दोनों धूप, गर्मी या बहुत नम जगहों से बचा

5. टेपरिकार्डर की मोटर में तेल क दें.

6. हमेशा अच्छी और एक प्रका कैसेट का ही प्रयोग करें.

7. यदि आप का टेपरिकार्डर नार्मल टेप के लिए है तो उस पर मेटल की टेप न चलाएं.
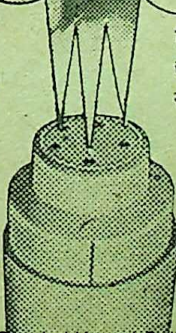
चित्रावली

शेरे कशमीर का अंत : ज[...] कशमीर की नाजुक राजनीति में ज[...] दखल रखने वाले शेख मुहम्मद अब्दु[...] की मौत ने कशमीर घाटी के क[...] राजनीतिक मसलों को अनसुलझा [...] छोड़ दिया है.
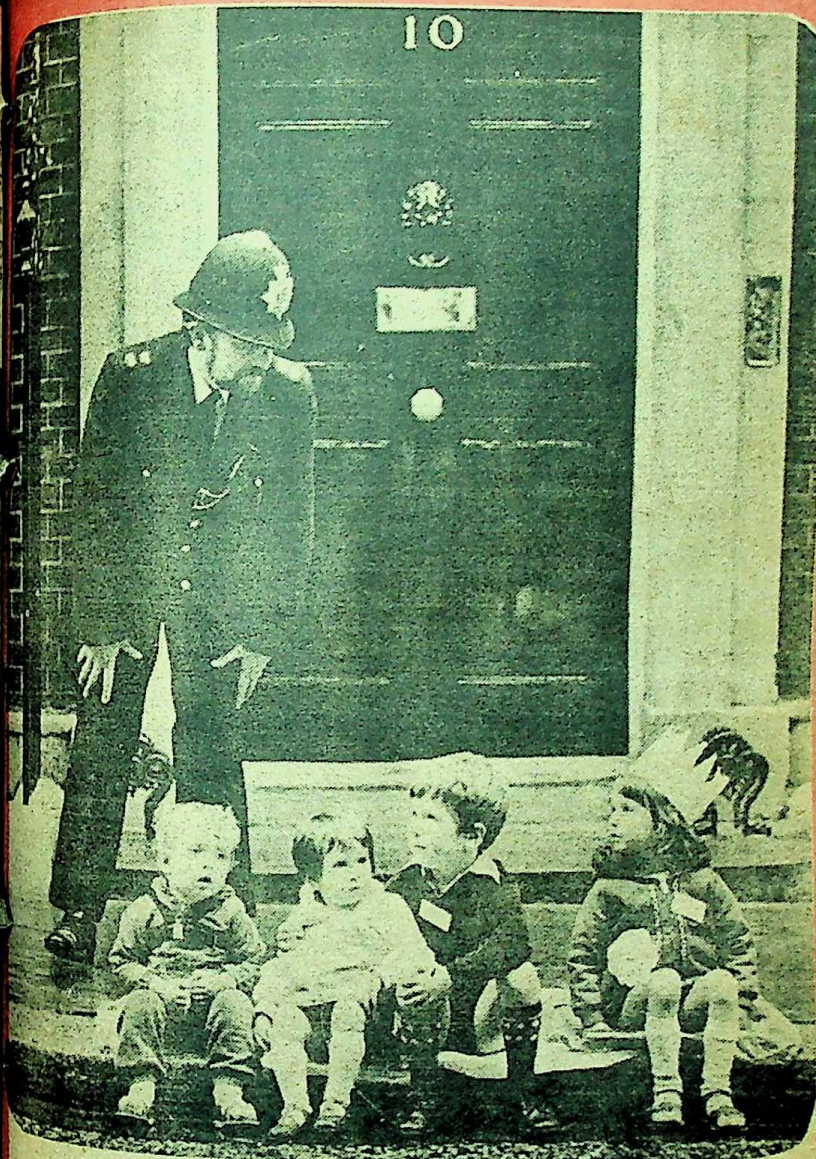
एक मासूम विद्रोह : बी.बी.सी. रेडियो पर बच्चों का एक प्रिय कार्यक्रम बंद कर दिया गया. बच्चों ने 10, डाउनिंग स्ट्रीट के बाहर धरना दे दिया, इस उम्मीद में कि शायद प्रधान मंत्री मार्गरेट थैचर उन की बात सुन लें.
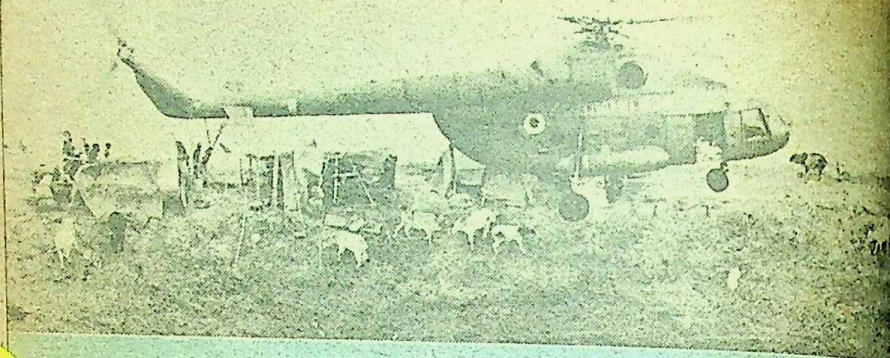
बाढ़ का प्रकोप : महानदी व उस की सहायक नदियों में आइ बाढ़ ने पूरे उडीसा के जनजीवन को अस्तव्यस्त कर डाला. बाढ़ग्रस्त इलाकों में कई दिन तक वायुसेना के हेलीकोप्टरों ने भोजन के पैकेट गिराए.
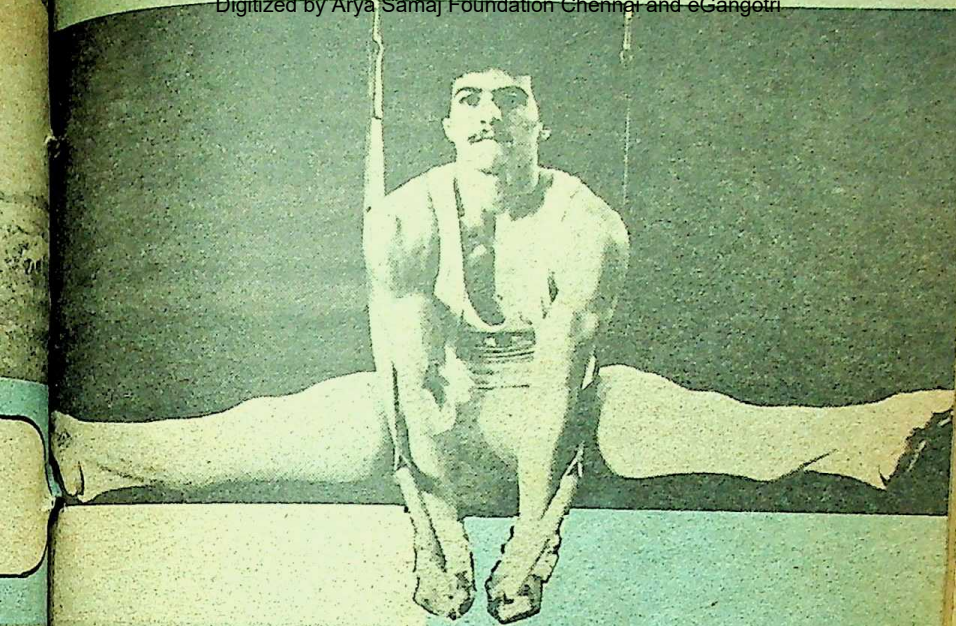
व्यायाम की दुनिया में : 23 साल के जुर्गन गीगर का विषय भले ही अर्थशास्त्र हो, लेकिन जिम्नास्टिक में उस गजब की महारत हासिल है. जरमनी की राष्ट्रीय प्रतियोगिता में हाल में उस ने सात में से पांच खिताब जीते.

नावों की खूबसूरत दौड़ : पिछले दिनों कील (पश्चिम जरमनी) में हुई नौका दौड़ प्रतियोगिता में 25 देशों की 1,500 पालदार नौकाओं में 3,000 नाविकों ने हिस्सा लिया.

जीत की खुशी : राय जेर्नकिंस ने इंगलैंड का अगला प्रधान मंत्री बनने की एक और सीढ़ी पार कर ली है. हाल ही में वह सोशल डेमोक्रेट पार्टी के नेता बने हैं. आगामी चुनावों में लिबरल पार्टी से समझौता कर वह अपनी सरकार बनाने की सोच चुके हैं.

कितना बड़ा पुडिंग : यों तो भोजनोपरांत यार्कशायर पुडिंग (एक प्रकार का मिष्ठान) अपने आकार की वजह से काफी विख्यात है लेकिन स्किप्टन के ब्रोटन हाल में हुए समारोह में विशेष बरतन में 15 रसोइयों द्वारा 22 गैलन दूध, 816 अंडों, 80 पौंड आटे व एक कप नमक से तैयार किया गया यह मिष्ठान तो वाकई शानदार रहा.
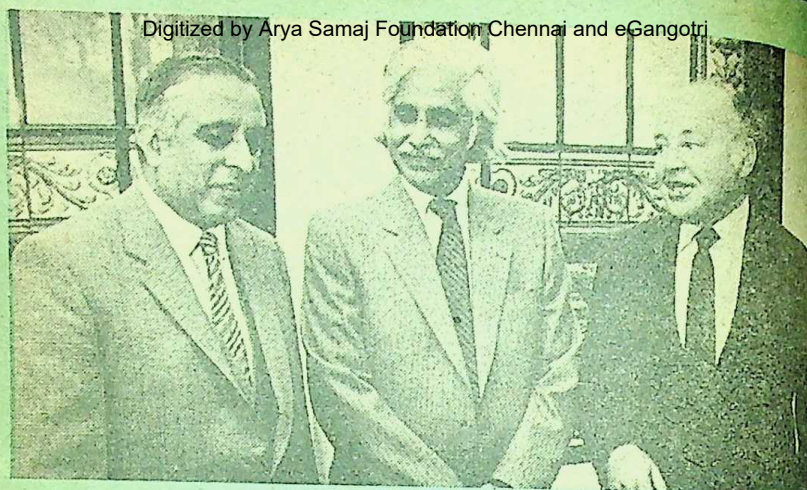
भारतीय शिल्प फिल्म में : भारत की मूर्ति कला की विशेषताओं को चित्रित करने वाली एक फिल्म पश्चिम जरमनी में भारतीय राजदूत डा. खुसरो के बोन स्थित निवास स्थान पर विदेश विभाग के अधिकारियों को दिखाई गई.

कला की नई परिभाषा : वनों, उद्यानों आदि को रोमांटिक व भावनात्मक रूप में चित्रित करने की 'वोर्पस्वेड' नामक शैली 19वीं शताब्दी में कुछ कलाकारों ने शुरू की थी जो आज काफी विकसित हो चुकी है.
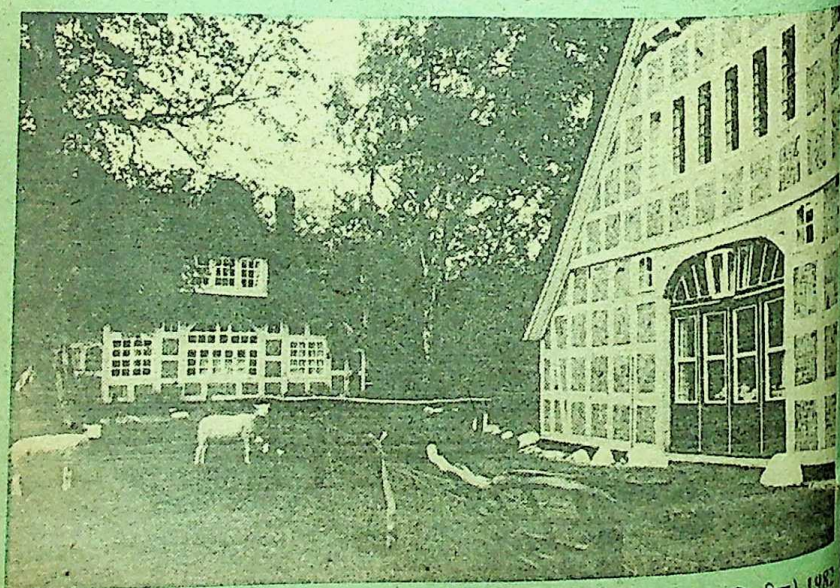
दीवाली के उमंग भरे मौसम में नए उत्साह के साथ

नवंबर (द्वितीय) 1982 अंक

मुक्ता

दीवाली विशेषांक

उल्लास, उमंग और स्नेह के इस अवसर पर दीवाली विशेषांक विविधवर्णी सामग्री और नई सजधज के साथ प्रकाशित हो रहा है.

अंधविश्वास के अंधेरे को तोड़ कर रोशनी तलाशती कहानियां, विचारोत्तेजक लेख और मनभावन कविताओं के साथ अन्य विशेष सामग्री जो पाठकों का न केवल मनोरंजन करेगी, नई राह भी देगी.

अपनी प्रति आज ही सुरक्षित कराएं.

युवा गतिविधियां

नई प्रतिभाएं

हैदराबाद के उस्मानिया विश्वविद्यालय की छात्रा शुभदा श्रीपद पराजणे को 1981 में एम.ए. की परीक्षा में सर्वप्रथम आने पर पांच स्वर्ण पदक प्रदान किए गए.

शुभदा ने बताया कि उसे पढ़ाई के लिए सब से अधिक प्रोत्साहन अपने मातापिता से मिला और शिक्षकों से भी उसे वांछित सहयोग मिला. पढ़ाई के अतिरिक्त चित्रकारी तथा पर्यटन आदि में भी उस की रुचि रही है. अपनी प्रारंभिक परीक्षाओं में भी वह सदा अच्छे अंकों से उत्तीर्ण हुई है. उस की आगे शोध करने में विशेष रुचि है. वह विदेश भी जाना चाहती है.

मराठी भाषी होते हुए भी उसे बी.ए. की परीक्षा में हिंदी विषय में सब से अधिक अंक प्राप्त करने पर नकद पुरस्कार दिया गया.

—मृदुला शर्मा, वि. वि. प्र.

आसमान पर दस्तक

जब एक महिला ने अकेले विमान उड़ा कर एटलांटिक को पार किया था तो उसे एक बहुत बड़ी घटना माना गया था. विदेशों में महिलाओं द्वारा ऐसे रोमांचकारी व जोखिम भरे कार्य करने के उदाहरण देखने को मिलते रहते हैं, पर हमारे देश में अभी भी यह माना जाता है कि उच्च शिक्षा के बाद भी महिलाओं का स्थान केवल रसोइघर या दफ्तरों तक ही सीमित है.

पिछले कुछ समय से यह धारणा भी गलत साबित होने लगी है. इस का

प्रशिक्षण का एक दृश्य.
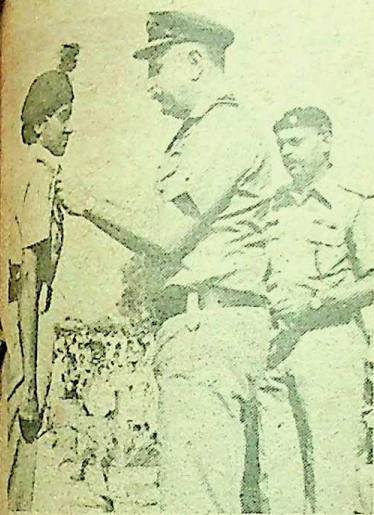
प्रशिक्षण के अंतिम दिन सफल कैडेटों को विंग प्रदान किए गए.

जीताजागता उदाहरण है पिछले दिनों आगरा में आयोजित राष्ट्रीय कैडेट कोर का वह शिविर जिस में पैराशूट की सहायता से विमान से कूदने के प्रशिक्षण में भाग लेने वाले 300 छात्रों में से लगभग 50 छात्राएं थीं.

यह शिविर 34 दिन का था, जिस को तीन भागों में बांटा गया था. इस शिविर में चुने जाने के लिए पहले भाग में उम्मीदवारों की कड़ी डाक्टरी जांच हुई व उन से विभिन्न प्रकार के शारीरिक अभ्यास करवाए गए. इस में चुने जाने वाले प्रशिक्षणर्थियों की शारीरिक चुस्ती व छलांग लगा सकने की क्षमता की भी जांच की गई.

इस शिविर का दूसरा भाग 12 दिन का था. इस में छात्रों को 30 फीट ऊंचे मंच से छलांग लगाना, नीचे कूदते समय पैराशूट खोलना तथा कलाबाजी लगाना सिखाया गया.

यह कलाबाजी हवाई जहाज से पैराशूट ले कर कूदने के समय काम आती है. हवा के रुख के अनुसार ही विभिन्न प्रकार की कलाबाजियां लगाई जाती हैं. पैराशूट की सहायता से जमीन की ओर आते हुए इस बात का ध्यान रखना पड़ता है कि पीठ के बल विशेष पोजीशन ली जाए. इस में जरा सी भी चूक होने पर चोट लगने का डर बना रहता है.

पैराशूट को नियंत्रित करने, उस की दिशा बदलने व डोरी फंस जाने या उस के न खुल पाने पर क्या करना चाहिए, यह भी इस शिविर में सिखाया गया

शिविर का तीसरा भाग सब से ज्यादा महत्त्वपूर्ण था. इस में प्रशिक्षणार्थियों को हवाई जहाज से कूदने का प्रशिक्षण दिया गया. उन की सतर्कता, कुशलता, स्फूर्ति व संकट के समय मन:स्थिति की जांच के लिए पहले दोतीन दिन तक उड़ते हुए हवाई जहाज का दरवाजा खोल कर उस के किनारे कैडेटोंको खड़ा कर के उन की मन:स्थिति व व्यवहार का जायजा लिया गया.

अंत में वह समय भी आ गया जब कैडेटों को उड़ते हुए हवाई जहाज से छलांग लगानी थी. यह छलांगें हवाई जहाज के पिछले भाग में स्थित दो दरवाजों से लगवाई गईं. पांचपांच कैडेटों की टोली ने चारचार सेकंड के अंतर से छलांग लगाई. उन्होंने लाल बत्ती जलते ही अपनी पोजीशन ली और हरी बत्ती जलते ही छलांग लगा दी. हर कैडेट के पास दो पैराशूट थे. कूदने के लगभग चार सेकंड बाद पैराशूट खुलता है. पहले चार सेकंड में कैडेट 32 फीट प्रति सेकंड की गति से नीचे आता है जो पैराशूट के खुल जाने पर बहुत कम हो जाती है.

इन तीनों भागों में सफल रहने वाले कैडेटों को एक विशेष समारोह में विंग प्रदान कर के उन के उत्साह को और बढ़ाया गया.

—राकेशचंद्र मिश्र, वि.वि.प्र.
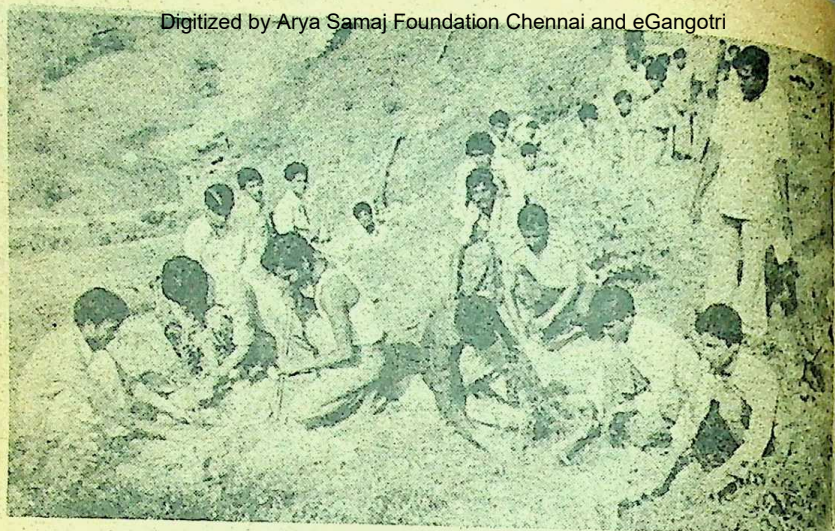
गढ़वाल विश्वविद्यालय के राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, कोटद्वार द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना के एक शिविर में छात्रों ने वृक्षारोपण किया. इस शिविर में 85 छात्रों ने भाग लिया.

—सुभाष गुप्ता, वि.वि.प्र.
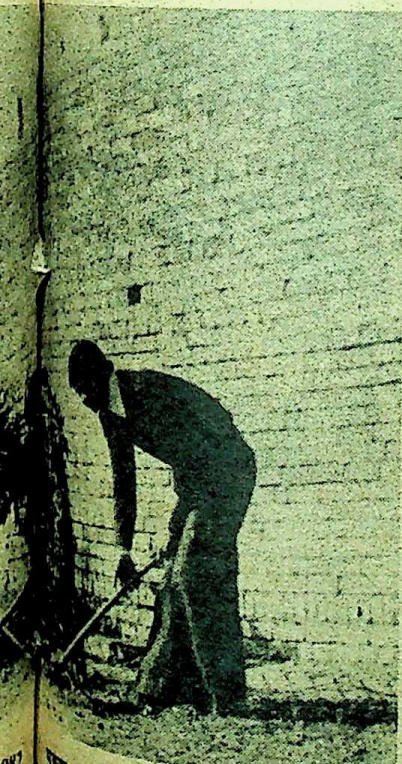
जीवाजी विश्वविद्यालय द्वारा मध्य प्रदेश के दतिया जिले के बाड़ोन कला गांव में राष्ट्रीय सेवा योजना का शिविर लगाया गया, जिस में 27 महाविद्यालयों के 350 छात्रों, शिक्षकों, ने भाग लिया. शिविर में छात्रों ने कच्ची सड़कें बनाईं व वृक्षारोपण आदि का काम किया.

अरूण, त्रि.वि.प्र.

← महाराजसिंह कालेज, सहारनपुर के छात्रछात्राओं ने राष्ट्रीय सेवा योजना के अंतर्गत कालिज प्रांगण को सुंदर बनाने का अभियान चलाया और वहां की सफाई की.

दिवाकर [illegible], वि.वि.प्र.

नीले, हरे और पीले रंग में उपलब्ध.
SPARK

उस वर्ष मैं नयानया प्रबंधक नियुक्त हुआ था. कुछ दिनों सब कुछ ठीकठाक चला, फिर कर्मचारियों को बोनस देने का समय आ गया.

पिछले वर्ष कंपनी की उत्पादकता काफी रही थी. बिक्री भी खूब हुई थी, अतः मुनाफा भी अधिक हुआ था. इस से कर्मचारियों को भी अच्छा बोनस मिलने की आशा थी.

मैं अपने कार्यालय में बैठा जल्दीजल्दी पिछले वर्ष की बैलेंसशीट तैयार करवा रहा था, क्योंकि इस के बाद मुझे निदेशक मंडल के साथ बोनस का मामला तय करना था. तभी मेरे कानों में आवाज पड़ी, "मजदूर भाइयो, आज दिन के दो बजे, इसी गेट पर, बोनस के संबंध में एक आम सभा होगी. जिस में शेर की तरह गर्जना करेंगे— मजदूरों के मसीहा श्री हरभजनलालजी. आप भाइयों से अनुरोध है कि लाखों की संख्या में पधार कर अपने प्रिय नेता के भाषण से लाभ उठाएं."

मुझे अचानक याद आया था कि उस दिन सुबह ही हरभजनलाल के आदमियों ने मिल के मुख्य द्वार के सामने शामियाना लगा कर लाल रंग का झंडा फहरा दिया था और

आंदोलन का आतंक दिखा कर हरभजनलाल अपना उल्लू सीधा करना चाहता था पर ऐसा क्या हुआ कि उस के सारे हथकंडे नाकाम हो गए और उसे मुंह की खानी पड़ी.

कहानी • सियावरशरण श्रीवास्तव

बोनस

लाउडस्पीकर ... कर गया फोड़ने लगे थे.
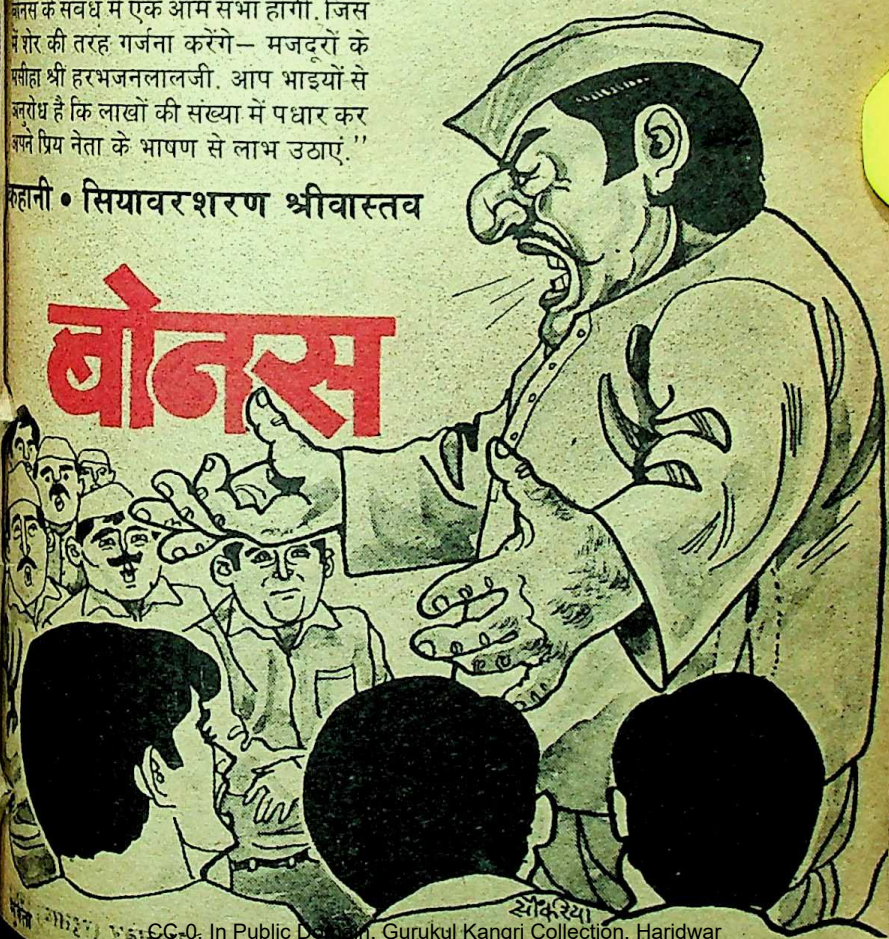
मुझे इस पर हैरानी हुई थी कि मिल में कर्मचारियों की संख्या कुछ हजार ही थी, परंतु लोगों को लाखों की संख्या में बुलाया जा रहा था.

हर वर्ष सभी मिलों और फैक्टरियों में बोनस मिलता है. बहुत पहले यह मालिकों की मर्जी और मिल में हुए मुनाफे पर निर्भर करता था यानी मिल मालिक अपना लाभ, अपनी खुशी अपने कर्मचारियों के बीच बोनस के रूप में बांटा करते थे. पर आजकल यह नियम हो गया है कि चाहे मुनाफा हो या न हो, कर्मचारियों को बोनस के रूप में एक निश्चित न्यूनतम राशि अवश्य दी जाती है. सरकार भी मजदूरों के लिए न्यूनतम बोनस तय करती है.

यदि मुनाफा खूब होता है, तब तो किसी भी प्रतिष्ठान को बोनस बांटने में कोई एतराज नहीं होता है और यदि ज्यादा मुनाफा नहीं हो पाता है तो मिल मालिक ज्यादा बोनस देने से कतराता है. पर कर्मचारी और उन के संघों के नेता जोरजबरदस्ती कर के ज्यादा बोनस पाने की कोशिश करते ही हैं.

आजकल आम तौर पर यह देखा जाता है कि प्रत्येक वर्ष, बोनस मिलने से कुछ समय पहले, लगभग हर औद्योगिक प्रतिष्ठान के सामने कुछ लोग तंबू लगा कर, झंडा टांग कर भूख हड़ताल करते हैं, मजदूर सभा आदि आयोजित करते हैं. यों तो पूरे वर्ष इन का कहीं पता नहीं रहता है, किंतु बोनस का समय आते ही ये लोग बरसाती मेढ़कों की तरह माइक पर टरटर करने लगते हैं.

इन लोगों में कारखानों में काम करने वाले मजदूर कम और बाहरी लोग ही ज्यादा होते हैं. वास्तव में ये बाहरी लोग मालिकों को तरहतरह से परेशान कर के अपने पैसे बना लेते हैं. मजदूरों को कुछ मिले या न मिले उन्हें उस से ज्यादा मतलब नहीं रहता. वे मिलों में हड़ताल, मालिक या प्रबंधक का घेराव आदि करवा देते हैं. मजदूरों के बीच उत्तेजित भाषण दे कर वे उन्हें वह सब करने के लिए भड़काते हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए. ये लोग अपने को मजदूरों का सब से बड़ा ... और मिल के मालिक व प्रबंधक को ... का शोषक बताते हैं. उन के भाषण ... मनोवैज्ञानिक प्रभाव से मजदूरों को भी ... भर को महसूस होता है कि मिल में उन ... शोषण हो रहा है.

ये बाहरी लोग मजदूरों के जरिए ... ज्यादा बोनस की मांग करते हैं जितना ... मिल के लिए देना संभव नहीं हो पाता. ... मिल मालिक से कुछ रुपए गुप्त रूप से ... कर गधे के सिर से सींग जैसे गायब हो जाते ... मजदूर संघों के नेताओं की चाल दरअ... मजदूरों की आड़ में मिल मालिकों से ... वसूलने की होती है. ऐसा ही एक नेता ... हरजभजनलाल.

हरभजनलाल जैसे लोग पेशेवर हो... जो मजदूर आंदोलन का हौवा खड़ा कर ... अपनी रोजीरोटी चलाते हैं. सामान्... मालिक या प्रबंधक इन की धौंस में आ ... इन से समझौता कर लेते हैं. पर कुछ ऐसे ... होते हैं जो इन को घास नहीं डालते.

दो बजे दोनों गालों में पान ... हरभजनलाल मुख्य द्वार के सामने प्रकट हु... उसे देखते ही उपस्थित चमचों ने ना... लगाया.

'''लालजी...जिंदाबाद,' 'मजदूरों ... मसीहा...जिंदाबाद,' 'अपनी मांगें... करवा कर रहेंगे.'''

हरभजनलाल ने सभा स्थल ... निरीक्षण किया. उसे सब कुछ ठीक ही ल... तभी दो बजे समाप्त होने वाली शिफ्ट ... मजदूर मिल से बाहर निकले और काम ... आने वाले भीतर जाने लगे. हरभजनलाल ... आदमी उन्हें रोक कर भाषण सुनने का आ... करने लगे. पर जिन्हें दो बजे ड्यूटी पर ज... था वे नहीं रुके. अतः हरभजनलाल ने ... बदला और मिल के अंदर घुसने वाले द्वार ... हल्ला बोल दिया. फलस्वरूप द्वार बंद ... दिया गया. मजदूरों की भीड़ बढ़ने लगी, त... उस ने देखा कि स्कूटर या मोटरसाइ... वाले कुछ लोग भी मिल से बाहर आ ...

"ठीक है 16 प्रतिशत बोनस ही मिलेगा पर आज नहीं हो सकेगा. आज तो 20 प्रतिशत की घोषणा हो चुकी है." मैं ने मुसकरा कर कहा.

भीड़ को उन्हें रास्ता देना पड़ता था. यह बात हरभजनलाल को ठीक नहीं लगी. उस ने उन्हें अपनी सभा में बाधा समझा. उस ने वहां भी हंगामा कर के वह द्वार भी बंद करवा दिया और स्कूटर व मोटरसाइकिल वालों के सामने खड़े हो कर अब वे लोग नारे लगाने लगे—"ऑफिसर मुर्दाबाद"

जैसे स्कूटर या मोटरसाइकिल सिर्फ अधिकारियों के पास ही होती हैं, मिल के अन्य कर्मचारियों के पास नहीं. इतना हंगामा कराने के बाद हरभजनलाल ने माइक संभाला. चूंकि ...नया था. अतः अपने बेतुके भाषण में उस ने मुझे खूब बुराभला कहा. मजदूरों का खून चूसने वाला और सरमाएदारों का दलाल बताया. पिछले वर्ष सरकार द्वारा निर्धारित 8.33 प्रतिशत की जगह 10 प्रतिशत बोनस दिया था अतः इस बार उस ने 16 प्रतिशत बोनस देने की मांग की. शायद उसे आशा थी कि मिल इतना बोनस नहीं दे पाएगी. इस के ... उस ने उपस्थित भीड़ को संगठित रहने और अपनी मांगों को मनवाने के लिए किसी भी तरह का कदम उठाने के लिए तैयार रहने को कहा. उस ने श्रमिकों को बताया कि बोनस उन का हक है पर यह यों ही नहीं मिलने वाला. इसे लड़ कर लेना पड़ता है.

मुझे लगा था कि वह जैसे अपने हक की बात कर रहा हो और उसी के लिए लड़ भी रहा हो. वरना मजदूरों को तो बिना मांगे ही उचित लाभांश मिल जाता है.

सभा समाप्त हो गई. इस के बाद उस के एक आदमी ने, जो मिल का कर्मचारी भी था, मुझ से मिलने का अथक प्रयास किया, पर मैं ने उस से मिलने से इनकार कर दिया. मेरे इस रवैए ने हरभजनलाल के तनबदन में आग लगा दी. पर अपने पेशे में माहिर उस ने अभी शांतिपूर्वक ही काम करना चाहा.

दूसरे दिन एक अन्य व्यक्ति मुझ से घर पर मिला. वह ठेके पर कंपनी का काम किया करता था. उस समय वह कर्मचारियों के लिए कुछ मकान बनवा रहा था. अतः उस का आना उसी संबंध में समझ कर मैं ने उसे बुला लिया. पर उस ने इधरउधर की कुछ बातें

करने के बाद हरभजनलाल का प्रस्ताव सुना दिया—'श्रमिकों को 10 प्रतिशत बोनस, एक प्रतिशत एक्सग्रेसिया और एक प्रतिशत लाभांश हरभजनलाल को.'

शायद उन लोगों को इतना तो मालूम था कि इस वर्ष पिछले वर्ष से ज्यादा बोनस मिलने वाला था. पर हम ने जो निदेशक मंडल की बैठक में तय किया था वह ठीकठीक तो किसी को भी नहीं मालूम था.

मैं ने उसे झिड़क कर भगा दिया तथा भविष्य में इस प्रकार की मध्यस्थता करने का प्रयास करने पर ठेका निरस्त कर देने की धमकी दी. वह सहम कर चला गया.

दूसरे दिन सवेरे ही मुझे सूचना मिल गई थी कि रात में ही मिल के द्वार पर तंबू लग गया था और हरभजनलाल माला पहन कर 24 घंटे के लिए भूख हड़ताल पर बैठ गया था. इस के बाद उस की ओर से चक्काजाम और अधिकारियों के घेराव की घोषणा कर दी गई थी.

मैं थोड़ा घबरा भी रहा था. पर निदेशक मंडल में बोनस के बारे में लिए गए निर्णय से मुझे बल भी मिल रहा था. इस से मुझे लग रहा था कि मालिकों ने हरभजनलाल की दुकान उठवा देने का पूर्ण अधिकार ही मुझे दे रखा था. फिर भी मैं ने प्रबंध निदेशक को फोन से इस भूख हड़ताल की खबर दे दी. जिला प्रशासन को भी सूचित कर दिया.

मैं युवा होने के कारण चाहता था कि प्रशासनिक सहायता ले कर तंबू उखड़वा दूं. किंतु अनुभवी प्रबंध निदेशक ने मुझे समझाया था, "इस प्रकार तो हरभजनलाल हीरो बन जाएगा. यही सब तो वे लोग चाहते हैं कि हमारी तरफ से कोई प्रतिक्रिया हो और वे लोग उसे प्रताड़ना कह कर मजदूरों की सहानुभूति पा सकें. उसे इसी प्रकार छोड़ दो, जो कर रहा है करने दो. कोई महत्त्व मत दो उसे."

मिल का काम यथावत चलता रहा. कर्मचारीगण भोजनावकाश में या शिफ्ट छूटते व लगते वक्त कुछ देर के लिए वहां इकट्ठे हो जाते थे. भीड़ बढ़ जाने पर हरभजनलाल व उस के चमचे उत्साहित हो उठते थे और भाषण झाड़ने लगते थे. अधिकांश समय उन के पास अपने 10 आदमियों को छोड़ कर और कोई न रहता था.

उस दिन मैं ने भी उसी द्वार से प्रवेश किया. मेरी गाड़ी देख कर वे लोग भड़क उठे. उन के आदमियों ने नारा लगाया—"जनरल मैनेजर...मुर्दाबाद," पर तब तक मैं मिल में प्रविष्ट हो चुका था. उस दिन मुझे हरभजनलाल के चक्काजाम कार्यक्रम का इलाज भी करना था, क्योंकि उस की योजना थी कि द्वार से किसी भी आदमी को भीतर न जाने दे. उस स्थिति में चक्काजाम अपनेआप हो जाता और द्वार पर बिना परिश्रम के भीड़ इकट्ठी हो जाती. और तब वह हमारा घेराव डालता.

मेरे एक सहायक ने सुझाव दिया, "यह सूचना हर विभाग में आज ही दे देनी चाहिए कि कल जो भी आदमी काम पर नहीं आएगा उस का वेतन काट लिया जाएगा और उस के विरुद्ध अनुशासनात्मक कारर्वाई की जाएगी."

पर मैं ने उन्हें समझाया, "इस सूचना से हमारे कर्मचारी भड़क सकते हैं और हरभजनलाल भी हमें दमनकारी कहने लगेगा. कठोर रुख अपना कर हम अपने मजदूरों को हरभजनलाल के तंबू में भेज देंगे. उन के मन में बैठ जाएगा कि उन का नेता ठीक रास्ते पर है."

"पर, वे लोग जब गेट से कामगारों को अंदर नहीं आने देंगे तो..." एक दूसरा सहायक घबराया.

"दरअसल बात यह है कि यदि मजदूर काम पर नहीं आना चाहेंगे तो लाख द्वार खुले रहे या आनेजाने की छूट रहे. एक भी आदमी भीतर नहीं घुसेगा. पर यदि उन में काम पर आने की इच्छा बनी रहेगी तो वे 20- आदमी उन्हें नहीं रोक पाएंगे." मैं ने उन्हें समझाया, "फिर यदि वे लोग व्यर्थ का हंगामा खड़ा कर के कानून और व्यवस्था बिगाड़

...का प्रयत्न करेंगे तो उस समाधान के लिए सरकारी प्रशासन है."

"पर वास्तव में, मैं यही कहना चाहता हूं कि यदि पैसे काटने या अनुशासनात्मक कार्रवाई की चेतावनी नहीं दी गई तो हो सकता है कि मजदूर उस की बातों में आ कर एक दिन के लिए काम पर न आएं."

"हां, यह सोचने वाली बात है. इस का उपाय करना पड़ेगा कि श्रमिकों में काम पर आने की चाह बनी रहे. खैर, मैं ने इस का उपाय सोच लिया है."

मैं ने एक सूचना पत्र हर विभागीय अध्यक्ष को दे दिया और आज ही मिल के सभी विभागों में लगा देने का निर्देश दिया. उस सूचना पत्र में लिखा था कि अगले दिन बोनस की घोषणा की जाएगी. इस का उद्देश्य यह था कि हर कर्मचारी बोनस का प्रतिशत जानने के लिए उतावला रहेगा और ऐसी स्थिति में द्वार पर उन लोगों के लाख रोकने की चेष्टा करने पर भी मिल में आएगा, और हुआ भी यही.

अगले दिन सब से ज्यादा उपस्थिति रही. बोनस की घोषणा की कुछ औपचारिकताएं अभी बाकी थीं. अत: बोनस की घोषणा में निर्धारित समय– दो बजे से थोड़ी देर हो गई और बस तब हरभजनलाल की बन आई.

दो बजे उस ने पुन: एक सभा की. और अपने भाषणों से भीड़ आकर्षित कर ली. वह मजदूरों को समझाने लगा कि वास्तव में मालिक का इरादा बोनस देने का नहीं होता है. वह तो उस जैसे कुछ जुझारू ट्रेड यूनियन नेताओं के परिश्रम से ही मजदूरों को मिलता है. इसी बीच उस के चमचे हाथों में रसीदें लिए लड़ाई और आगे लड़ने के नाम पर कुछ पैसा भी वसूलते जा रहे थे. वे लोग बीचबीच में 'जिंदाबाद, मुर्दाबाद' के नारे भी लगाते जा रहे थे वे यह भी बता रहे थे कि पिछले वर्षों में जो कुछ सुविधाएं मजदूरों को मिली हैं वे उन जैसे कर्मठ लोगों की वजह से मिली है.

वे उदाहरण दे रहे थे कि आज से 20 वर्ष पहले इस मिल की जो स्थिति थी उस में चार गुना अंतर आया, यानी इस मिल के मजदूरों का चारगुना अधिक शोषण हुआ था. पर वह यह नहीं कह रहे थे कि मिल के चार गुना प्रगति करने से चार गुना अधिक व्यक्तियों को रोजीरोटी मिली थी.

> **निगाह**
>
> वो दुश्मनी से देखते हैं
> देखते तो हैं,
> मैं शाद हूं के हूं तो
> किसी की निगाह में.
>
> —अमीर मिनाई

अंत में वे अपने मकसद में कामयाब हो गए. भीड़ की समझ में यह आने लगा कि संघर्ष करना ही पड़ेगा, तभी जा कर मनचाहा बोनस मिलेगा. उन्होंने ऐलान कर दिया कि जनरल मैनेजर का घर जाते समय घेराव कर लिया जाएगा. मेरे घेराव की खबर आग की भांति फैल गई.

"बोनस की घोषणा हो गई." किसी ने कहा और भीड़ एकदम अंदर की ओर दौड़ पड़ी. उसी समय मुख्य द्वार से मेरी गाड़ी बाहर निकली.

"घेर लो, घेर लो, घेरे में ले लो" कुछ लोगों ने मेरी गाड़ी रोक ली.

"क्या बात है?" मैं ने पूछा.

"अपनी मांगें ले के रहेंगे." एक नारा गूंजा और हरभजनलाल आगे आया.

"क्या हैं आप की मांगें?" मैं ने इत्मीनान से पूछा.

"हमें 16 प्रतिशत बोनस चाहिए," कई स्वर एकसाथ उभरे.

"ठीक है 16 प्रतिशत ही मिलेगा. पर आज नहीं हो सकेगा. आज तो 20 प्रतिशत की घोषणा हो चुकी है. कल इसे घटा कर 16 प्रतिशत कर दिया जाएगा," मैं ने मुसकरा कर उत्तर दिया और ड्राइवर को गाड़ी आगे बढ़ाने को कहा.

लोग सामने से स्वयं हट गए. गाड़ी आगे बढ़ गई. मैं ने पीछे मुड़ कर देखा हरभजनलाल मुंह लटकाए खड़ा था उस के कुछ चमचे दरी समेट रहे थे, कुछ लाउडस्पीकर खोल रहे थे, पर श्रमिक खुशी से कूदने लगे थे. ●

अप्पू का प्रशिक्षण

एशियाई खेलों के लिए शुभांकर के रूप में चुना गया हाथी का बच्चा—अप्पू राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय महत्त्व का विषय बन गया

माल्यार्पण की मुद्रा में अप्पू.

यह एक विज्ञापन एजेंसी के चित्रकार रमेंद्रनाथ सरकार की कृति है.

अरुणाचल प्रदेश के मुख्य मंत्री ने ... माह का एक शिशु हाथी केंद्र सरकार को भेंट किया था. केंद्रीय खेल मंत्री बूटासिंह ने उसे अपोलो सर्कस के प्रशिक्षक बाबू नायर को सौंप दिया है. श्री नायर इसे प्रशिक्षण दे कर एशियाड-82 के शुभांकर का सजीव रूप तैयार कर रहे हैं. यह एशियाई खेलों के उद्घाटन के अवसर पर राष्ट्रपति को

माल्यार्पण करे ... मुद्राओं का प्रद...

बाबू नाय... शीघ्र ही ... प्रशिक्षण इसी ... प्रशिक्षण ... पारिश्रमिक तय ... इनाम के तौर ... कर लेंगे.

बाबू नाय... विशेष ध्यान ... किलोग्राम वजन...

अप्पू अपने ... मनोरंजन भी...
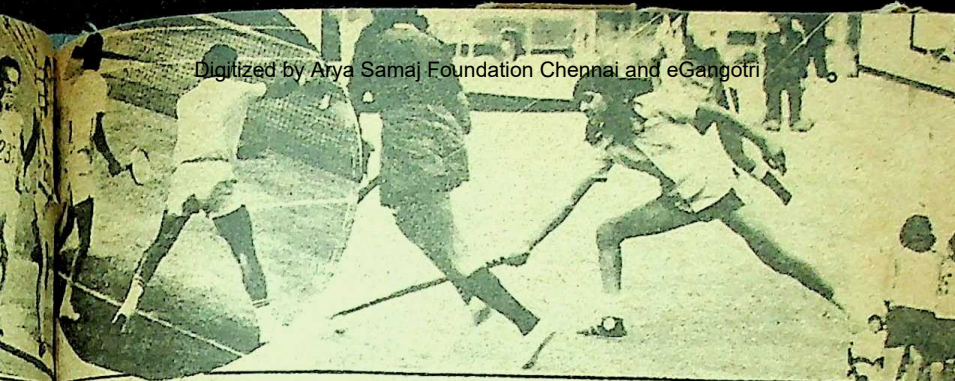
माल्यार्पण करेगा और नृत्य की आकर्षक मुद्राओं का प्रदर्शन करेगा.

बाबू नायर इस के प्रशिक्षण का कार्य शीघ्र ही समाप्त कर लेंगे. यह प्रशिक्षण इसी वर्ष 2 अगस्त को प्रारंभ हुआ था. प्रशिक्षण के एवज में बाबू नायर का पारिश्रमिक तय नहीं है, पर उन का कहना है इनाम के तौर पर दी गई राशि वह स्वीकार कर लेंगे.

बाबू नायर इस के आहार आदि का विशेष ध्यान रखते हैं. यह पूरे दिन में एक किलोग्राम वजन की देशी घी की चार रोटियां

अप्पू अपने करतबों से दर्शकों का मनोरंजन भी करेगा.

अप्पू की यह अभिवादन की मुद्रा क्या दर्शकों का मन नहीं जीत लेगी.

खाता है. सुबह और शाम आठआठ किलोग्राम खीर खाता है और पूरे दिन गन्ने खाता रहता है.

दिन भर प्रशिक्षण में व्यस्त रह कर यह रात को केवल चार घंटे सोता है.

इन दिनों कानपुर में प्रशिक्षण पा रहा यह शिशु हाथी शहर में हो रही वर्षा के कारण बहुत खुश है, पर दिनरात प्रशिक्षण दिए जाने के कारण इस के स्वास्थ्य में गिरावट आई है. प्रशिक्षण के दौरान इस की पिछली टांग में चोट भी आ गई है जिस से यह परेशान है.

इस शिशु हाथी का मन बहलाने के लिए अनारकली नाम की एक छः माह की हथिनी लाई गई है. अब एक ओर इसे अनारकली से मित्र जैसा प्रेम मिल रहा है तो दूसरी ओर सीताराम नाम की एक अन्य हथिनी उसे मां जैसा स्नेह दे रही है.

अप्पू नाम से पुकारे जाने पर यह शिशु हाथी जोर से चिघाड़ता है. इसे अब धीरेधीरे सर्कस के प्रदर्शनों में जनता के सामने लाया जा रहा है जिस से यह एशियाई खेलों के उद्घाटन के अवसर पर जनता को देख कर घबरा न जाए.

अंकुर, वि.वि.प्र.

निराशाजनक परीक्षण खेल

स्कीट और ट्रैप निशानेबाजी के मुकाबले 11 सितंबर को रद्द कर दिए गए, क्योंकि इस के लिए जो उपकरण व लक्ष्य मंगवाए गए थे, वे सही समय पर नहीं [illegible] गए. यही स्थिति बास्के मुकाबलों की भी रही, पोल व बोर्ड नदार बैडमिंटन के लिए होवा कोर्ट भी नहीं आ था. खिलाड़ियों को सफेद सतह पर खे पड़ा. शटलकाक की गतिविधि वे जांच या नहीं, अधिकारियों की बला से. इं इनडोर स्टेडियम को चार कोर्टों में बांट वाली दीवार को अंतरराष्ट्रीय नियमों विपरीत सफेद रंग का कर दिया गया.

● 11 सितंबर को ही एशियाई खेलों प्रचार निदेशालय ने बताया कि फुटबाल मैच बजाए दो के तीन स्थानों पर होंगे, लें शाम को तकनीकी निदेशालय ने कहा मैच दो ही जगह होंगे.

● हाल आफ स्टेट्स में टेबल टेनिस मुकाबलों की तमाम तैयारियां हो चुकी लेकिन जिन खेल मंत्री बूटासिंह को मुका का उद्घाटन करना था, वही नदारद थे 25 मिनट देरी से आए. दर्शकों के लिए त

भारतीय फुटबाल: खाली मैदान अनजान खिलाड़ी.

कीमतें कम करने के लिए :
• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.

कीमतें कम करने के लिए:
• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

फुटबाल के नीरस मुकाबले: खाली मैदान में कोई भला क्या कौशल दिखाता?

खिलाड़ियों तक के लिए वहां ठंडे पानी की व्यवस्था नहीं थी.

• कई खिलाड़ियों ने आरोप लगाया कि एशियाई खेल गांव में उन के रहने की जो व्यवस्था की गई, वह दोषपूर्ण थी. "शायद बढ़िया व्यवस्था विदेशी खिलाड़ियों के लिए की जाएगी. हम देशी खिलाड़ी तो ऐसे घटिया व्यवहार के आदी हो चुके हैं. राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के दौरान हम गंदी से गंदी जगहों पर ठहराए जा चुके हैं," एक खिलाड़ी ने व्यंग्य किया. खेल गांव के कमरों में सफाई नहीं थी, शौचालय के फ्लश काम नहीं कर रहे थे, शाम को जब खिलाड़ी लौटते तो आधुनिकतम रसोईघर में उन्हें सूखी डबलरोटी व गरम पानी ही मिलता. बिजली की आंख मिचौली का अनुभव तो खिलाड़ियों ने आम नागरिकों जैसा ही किया.

माडल टाउन के छत्रसाल स्टेडियम में दिल्ली व बंगाल की जूनियर टीमों के बीच दोपहर दो बजे खेला जाने वाला मैच 40 मिनट देर से शुरू हुआ. बंगाल की टीम 20 मिनट देर से पहुंची, क्योंकि खेल गांव में उसे दोपहर का भोजन देर से दिया गया था.

• तैराकी के परीक्षण मुकाबले दिल्ली तैराकी संघ ने तालकटोरा का तरणताल (स्वीमिंग पूल) न बन पाने की हालत में राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान के तरणताल में किए. तैराकों को अभ्यास के लिए कतई मौका नहीं मिल सका. कुछ मुकाबलों के बाद ही पानी का रंग गंदला होने लगा. क्लोरीन की मात्रा पानी में इतनी ज्यादा हो गई थी कि तैराकों की आंखें दर्द करने लगीं.

• नार गोला फेंक मुकाबले में तीसरा स्थान पाया हैवी इंजीनियरिंग के नछत्तर सिंह ने, लेकिन विक्ट्री स्टैंड पर पहले दो स्थान पाने वाले बलवंतसिंह एवं बल के साथ

बूटासिंह हाकी खिलाड़ियों के बीच: परीक्षण खेल लोकप्रिय क्यों नहीं हो सके.

अजमेरसिंह को खड़ा कर दिया गया.

● सवा करोड़ रुपए की लागत का विशाल इलेक्ट्रानिक स्कोर बोर्ड जवाहरलाल नेहरू स्टेडियम में काम नहीं कर सका. विभिन्न स्टेडियमों के बीच संपर्क सूत्र जोड़ने वाली कंप्यूटर प्रणाली भी ठप हो गई.

● एशियाई खेल गांव के जिस मिनी हाल में मुक्केबाजों का भार लेना था वह तैयार नहीं हो पाया, इसलिए मुक्केबाजों का भार खुले में लिया गया. एशियाई खेलों की विशेष रिंग भी तैयार नहीं थी, उसे वाई.एम.सी.ए. से उधार लिया गया.

● दिल्ली विश्वविद्यालय के मैदान पर हैंडबाल के मुकाबले जो साढ़े तीन बजे शुरू होने वाले थे, दो घंटे बाद शुरू हो सके. साढ़े चार बजे पोल लगाए जाने का काम पूरा हुआ. रोगन का काम बाकी था ही, कुरसियां भी नहीं लगाई गई थीं.

ये बानगियां हैं उन परीक्षण खेलों की जो नवें एशियाई खेलों की आयोजन व्यवस्था को परखने के लिए 11 से 20 सितंबर तक करीब 30 लाख रुपए खर्च कर के किए गए थे.

इन परीक्षण खेलों से पहले तक आयोजकों का दावा था कि उन का सारा काम बेहद सुचारु रूप से चल रहा है और एशियाई खेलों के सफल आयोजन के बाद वे फौरन 1992 में ओलंपिक खेल दिल्ली में आयोजित करने का अपना दावा पेश कर देंगे.

लेकिन परीक्षण खेलों की उपर्युक्त त्रुटियों ने साबित कर दिया है कि उन के दावे कितने पानी में हैं.

एशियाई खेलों का तमाम निर्माण कार्य जून तक पूरा कर लेने के बाद सितंबर में एशियाई खेलों के पूर्वाभ्यास के रूप में परीक्षण खेल आयोजित करने का फैसला काफी पहले कर लिया गया था. लेकिन 30 जून तक निर्माण कार्य पूरा नहीं हो सका (तरणताल तो 30 सितंबर तक भी तैयार नहीं हो पाया) लेकिन अपनी नाक बचाने के लिए आयोजकों ने परीक्षण खेलों का तमाशा कर ही डाला.
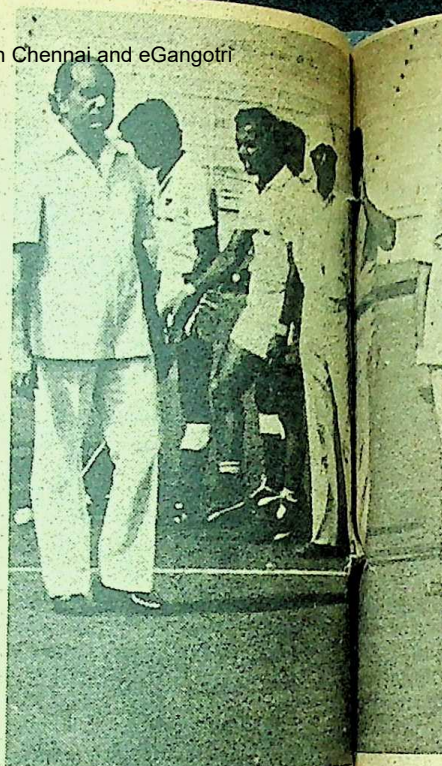
इस के लिए पर्याप्त तैयारियां कर सकने का समय ही नहीं था. इसी लिए यह सारा तमाशा बेहद अस्तव्यस्त माहौल में हुआ और इस की व्यवस्था के नाम पर सिर्फ खामियां ही खामियां दिखाई दीं.

इन परीक्षणों के लिए विभिन्न खेलकूद संगठनों में आपसी तालमेल की भी नितांत कमी रही. राष्ट्रीय खेलकूद संस्थान ने विभिन्न विदेशी उपकरणों को मुहैया कराने में देर की.

आयोजक आखिर तक यह तय नहीं कर पाए कि परीक्षण खेल खिलाड़ियों की प्रतिभा मापने के लिए किए जाते हैं या आयोजन व्यवस्था को मापने के लिए.

यों तो दोनों ही लिहाज से परीक्षण खेल व्यर्थ साबित हुए, लेकिन आयोजन व्यवस्था के मामले में तो तमाम काम ही असफल रहे

कहीं यही हालत एशियाई खेलों के दौरान रही तो क्या होगा?

हड़बड़ी में बनाए गए कार्यक्रम का नतीजा यह निकला कि कई बार मुकाबलों का कार्यक्रम बदला गया, कई नामी खिलाड़ियों ने इन में हिस्सा ही नहीं लिया.

खिलाड़ियों ने जो सफलता पाई उन्हें भी प्रामाणिक नहीं माना जा सकता, क्योंकि विभिन्न मुकाबलों का फैसला करने वाले स्वचालित यंत्र भारत को मिल ही नहीं पाए थे. लिहाजा स्टाप वाच व फीते का 50 साल पुराना तरीका इस्तेमाल किया गया.

आयोजकों की असफलता में खिलाड़ी भी अपना रंग दिखाने से नहीं चूके. एशियाई खेल गांव के कमरों में ठहरे कुछ खिलाड़ी जाते हुए चादरें, गिलाफ व ऐसी ही अन्य ले जा सकने वाली चीजें ले गए.

कुल मिला कर एशियाई खेलों का यह पूर्वाभ्यास बेहद निराशाजनक रहा. जो खामियां सामने आईं, उन में सुधार लाने के लिए पर्याप्त समय ही बाकी नहीं बच रहा है.

ऐसे में यह कटु कल्पना करनी पड़ती है कि एशियाई खेल बजाए देश की प्रतिष्ठा बढ़ाने के विश्व में कहीं भद्द ही न पिटवा दें.

भारत में इतना बड़ा खेल आयोजन पहले कभी नहीं हुआ. इसलिए इस तरह का कोई अनुभव भारतीय अधिकारियों को नहीं है. खास तौर से जब खेलों की जानकारी से जरा सा भी वास्ता न रखने वाले अधिकारियों को यह नया काम सौंप दिया जाए तो अव्यवस्था कितनी फैल सकती है, इस का अनुमान बड़ी आसानी से लग सकता है और यही एशियाई खेलों के मामले में हो रहा है.

एक तरह से यह अव्यवस्था राहत की बात है, क्योंकि अगर यह अव्यवस्था न होती तो एशियाई खेलों में एक हजार करोड़ रुपए खपा देने के बाद पांच हजार करोड़ रुपए लगा कर ओलंपिक खेल आयोजित करने की योजनाएं बनाई जाने लगतीं.

बूटासिंह समेत तमाम अधिकारियों का दावा है कि परीक्षण खेलों की खामियां एशियाई खेलों तक दूर कर ली जाएंगी. अगर

ऐसा नहीं हो ... कि आम आदमी के पैसों से गलत व्यवस्था करने के लिए एशियाई खेलों से जुड़े तमाम लोगों को कटघरे में खड़ा किया जाए?

एक और फीकी जीत

नतीजों के लिहाज से श्रीलंका की क्रिकेट टीम का तीन सप्ताह का भारत का दौरा भारत के लिए सफल रहा है. भारत ने एकएक दिन के तीन अंतरराष्ट्रीय मैचों की श्रृंखला 3-0 से जीती. दोनों देशों के बीच खेला गया एकमात्र टेस्ट मैच अनिर्णीत रहा.

लेकिन यह नहीं भूलना चाहिए कि श्रीलंका की टीम विश्व की सब से कमजोर टेस्ट टीम है. भारत आने से पहले उसे सिर्फ चार टेस्ट मैच खेलने का ही अनुभव था.

फिर भी एकमात्र टेस्ट में पहली पारी में 220 रन से पिछड़ने के बाद भी उस ने भारत को हार से बचने का संघर्ष करने के लिए मजबूर कर दिया. पहली पारी में छः विकेट ... 300 रन बनाने वाली भारतीय टीम ... पारी में जीत के लिए 175 रन भी नहीं ... सकी. खेल खत्म होने तक उस ने 137 रन ... सात विकेट गंवा दिए थे.

भारतीय टीम की सब से बड़ी कम... गेंदबाजी व क्षेत्ररक्षण में देखने को मिली ... कमजोरियों को ले कर अगले पांच महीने ... पाकिस्तान व वेस्ट इंडीज के मुकाबले ... विशेष सफलता की उम्मीद नहीं की ... सकती.

एकएक दिन के मैचों में भारत ... सफलता निश्चित रूप से उल्लेखनीय ... इस क्षेत्र में श्रीलंका की टीम काफी मज... मानी जाती है और पिछली दो ... प्रतियोगिताओं में वह भारत को हरा चुकी ... इस बार भारत ने काफी अच्छे अंतर से ... से रन बनाते हुए तीनों मैच जीते. ... मजबूत टीमों के सामने भी क्या भारत ... यही प्रदर्शन रह पाता है, यह देखने की ... है.

बलात्कार, हत्या, डकैती, तस्करी, जालसाजी, वेश्यावृत्ति, की कहानियां –

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

रजि. नं. 6502/60 डी (ए)-104

मुक्ता
सितंबर (द्वितीय) 1982
लड़कियों से छेड़खानी: दोष किस का?

भारतीय खाद्य निगम आपके परिवार के लिए आप से भी पहले खरीदारी शुरु कर देता है।

खरीदारी का ऐसा सिलसिला जो भारतीय खाद्य निगम देश भर में चलाता है। हर वर्ष लगभग 130 लाख टन खाद्यान्न खरीदता है। यह खरीद सरकार द्वारा निश्चित मूल्यों पर की जाती है और यह मूल्य उचित और किसान को अधिक उत्पादन करने को प्रोत्साहन देने वाले होते हैं। 180 लाख टन की आधुनिक और वैज्ञानिक भण्डारण क्षमता में आप के लिए संचित सुरक्षित सूखे अनाज जो ऊंचे साइलो और देश भर में फैले सुनियोजित गोदाम समूहों में रखता है। देश भर में पूरे वर्ष में किये जाने वाले कार्य कलाप। यह निश्चित करने के लिए कि आप का थैला भरने के लिए हमेशा पर्याप्त अनाज उपलब्ध हो।

और आपके परिवार की उतनी ही चिन्ता करता है जितनी आप स्वयं करते हैं।

आपके परिवार का स्वास्थ्य

भारतीय खाद्य निगम को इसकी उतनी ही चिन्ता है जितनी आपको। इसका पता अच्छी किस्म के अनाज और भण्डारण में हर स्तर पर कड़ी गुण नियंत्रण व्यवस्था के रूप में देखने को मिलता है। जिसके लिए गुण मानक निर्धारित किये जाते हैं और उनका कड़ाई से पालन किया जाता है। वास्तव में भारतीय खाद्य निगम गुणों का अत्यन्त ध्यान रखता है क्योंकि किसी अन्य खाद्य वस्तु की पूर्ति करने वाले की तरह इस पर भी खाद्यान्न मिलावट निरोधक अधिनियम लागू होता है। जब कभी आपको ऐसा लगे कि आप जो अनाज खरीद रहे हैं वह देखने भालने में इतना अच्छा नहीं है तो आप यह न सोचें कि यह घटिया किस्म का है। भारतीय खाद्य निगम कई किस्मों का अनाज खरीदता है जिनमें से कुछ प्राकृतिक रूप से चमकीली न हों या उनकी चमक खत्म हो गई हो। लेकिन हमेशा की तरह गुणवत्ता को एक जैसा बनाये रखने पर ध्यान दिया जाता है।

आपके परिवार का बजट

उपभोक्ता को खाद्यान्न की निर्बाध पूर्ति कैसे की जाये। यह भी अपने आप में एक कहानी है। विशाल परिवहन व्यवस्था के माध्यम से इस कार्य को ठीक प्रकार से पूरा करने की चेष्टा की जाती है। भारतीय खाद्य निगम प्रतिदिन कुशलतापूर्वक अनाज भेजने के लिए लगभग 2600 बड़ी लाइन और 300 छोटी लाइन के वैगनों का उपयोग करता है।

भारतीय खाद्य निगम परिवहन व्यय, मण्डी में चुकाये जाने वाले विभिन्न करों, भण्डारण लागत तथा बैंको द्वारा ऋणों पर लिये जाने वाले शुल्क से आपको राहत दिलाता है। इनमें अधिकांश खर्चों को भारत सरकार उपभोक्ता सहायता राशि के जरिये पूरा करता है ... आपको लागत मूल्य से कम कीमत पर ... अनाज मिल सके और इसके फलस्वरूप आपका बजट संतुलित रहे।

खेतों से भण्डारण स्थलों पर तथा भण्डारण स्थलों से राज्य वितरण एजेंसियों (जो उचित दर दुकानों से अनाज पहुंचाती हैं) तक यह एक लम्बी यात्रा है। ... खाद्य निगम गाइड के रूप में साथ रहता है। और ... गृहिणी इसके साथ अपनी चिन्ता बांट सकती है। ... खाद्य निगम आपके परिवार की देखभाल करने में काफी सहायता करता है।

भारतीय खाद्य निगम

राष्ट्र की सेवा में ...

जलन से सताती,
खुजलाती घमोरियों की
बेचैनी भूल जाइये।

मुक्ता

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सितंबर (द्वितीय) 1982
अंक : 387

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस प.प्र.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष : 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001, बंबई कार्यालय : 79ए, मित्तल चेंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. मद्रास कार्यालय : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31/2 ए पैथल रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक घटनाओं या संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता केवल संयोग मात्र है.

प्रकाशनार्थ रचनाओं के साथ टिकट लगा पता लिखा लिफाफा आना आवश्यक है अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं लौटाई नहीं जाएंगी.

कोर्ट फीस न्याय करने में होने वाले व्यय के लिए ली जाती है. इस के समाप्त होने से न्यायालयों में मुकदमों की बाढ़ सी आ जाएगी. लोग जराजरा सी बात पर मुकदमा दायर करने लगेंगे, क्योंकि हमारे पास समय की तो कमी है नहीं. यह गलत है कि कोर्ट फीस से सही लोगों को न्याय नहीं मिलता, क्योंकि गरीबों के लिए कोर्ट फीस माफ होती है.

—गोवर्धन कोठारी

*

'परदे के पीछे का घूंसा' (मुक्त विचार/अगस्त/द्वितीय) पढ़ कर इस 'सुपरमैन' के प्रति सहानुभूति उत्पन्न हुई. फिल्मी जिंदगी और वास्तविक जिंदगी में थोड़ाबहुत नहीं, बल्कि जमीनआसमान का अंतर होता है. यह इस बात से भी स्पष्ट हो गया कि एक सुपरमैन की असाधारण शक्ति खलनायक के एक घूंसे से ही हवा हो गई.

लोगों में फिल्मों के प्रति रुचि बढ़ती ही जा रही है. वे फिल्म देख कर किसी एक अभिनेता या अभिनेत्री से अपना तादात्म्य बैठा लेते हैं. खलनायक को बुरा आदमी और अभिनेता को देवता समान समझ लेते हैं. हमें फिल्मी दुनिया की चकाचौंध की वास्तविकता को समझना चाहिए. इस गलत धारणा के

'अंतुले की दंड प्रक्रिया चालू' (मुक्त विचार/अगस्त/द्वितीय) में व्यक्त आप के विचार रोचक लगे. केंद्र पहले अंतुले का समर्थन करता रहा, इसलिए उन्हें खुल कर अवैधानिक कार्य करने का मौका मिला. बाद में भी सीमेंट घोटाला आदि पर सरकार चुप्पी साधे रही, जिस का परिणाम यह निकला कि अंतुलेजी और स्वतंत्र हो कर काम करने लगे. लेकिन जब उन के कारनामों की आंच का ताप केंद्र और वहां बैठी नेता श्रीमती गांधी को लगने लगा तो उन्हें मजबूर हो कर अंतुले को हटाने का फैसला करना ही पड़ा. जब किसी का जूता उसी के सिर पर पहुंचने लगे तो जूते का मालिक कब तक सहन करेगा.

—मनोज आंचलिया 'टोनी'

*

कोर्ट फीस न हटाने (मुक्त विचार/अगस्त/द्वितीय) के संबंध में आप के विचारों से मैं सहमत हूं. राज्य सरकारों ने कोर्ट फीस हटाने की सिफारिश ठुकरा कर अच्छा ही किया. यदि कोर्ट फीस हटाई जाएगी तो कानूनकायदा लोग ताक पर रख देंगे.

यदि कोर्ट फीस हटा दी गई तो न्यायालय के सारे खर्च चाहे वह स्टेशनरी हो या कर्मचारियों का वेतन, करों के माध्यम से ही वसूला जाएगा. परिणाम यही होगा कि जनता पर करों का भार और बढ़ेगा.

—गुरविंदरसिंह नारंग

'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :

संपादकीय विभाग,
मुक्ता,
ई-3, झंडेवाला एस्टेट,
रानी झांसी मार्ग,
नई दिल्ली-110055.

बनने में सब से [illegible] का है, जो किसी भी अभिनेता को हलका सा जुकाम होने तक की खबर छाप देती हैं और नमकमिर्च लगा कर जनसाधारण में महत्त्वपूर्ण बना देते हैं. —अशोक

*

यह बात पूर्णतया सत्य है कि फिल्मी कलाकार जिन असंभव करतबों को संभव कर दिखाते हैं, वे वास्तव में अवास्तविक होते हैं. अगर वास्तविक जीवन में भी वे ऐसा ही अभिनय करेंगे तो उन की जान जोखिम में पड़ सकती है. हिंदी फिल्म उद्योग एक ही 'हीरो' के पीछे भाग रहा है. फिल्म निर्माता यह भूल जाते है कि जिसे वे रेस का तेज दौड़ने वाला घोड़ा समझ रहे हैं, अगर वह जिंदगी की दौड़ में पीछे रह गया तो उन का क्या होगा? एक हीरो पर करोड़ों का जुआ खेलना केवल मूर्खता है. —सुरेंद्र खुराना

*

नीमहकीमों और राजनीतिबाजों की समानता (मुक्त विचार/अगस्त/प्रथम) के संबंध में आप के विचार पढ़ कर काफी संतोष हुआ.

आज हालत यह है कि ये फर्जी डाक्टरवैद्य भोलेभाले आदिवासियों, ग्रामवासियों को ठगते फिरते हैं. सरकारी डाक्टर (एम.बी.बी.एस.) वगैरह गांवों में जाने से कतराते हैं, ऐसे में इन्हीं नीमहकीमों की चांदी बन जाती है.

सरकार को चाहिए कि ऐसे नीमहकीमों को खत्म करने पर ध्यान दे और पंजीकृत चिकित्सा प्रणाली समाप्त करे, अन्यथा भोलीभाली जनता के साथ इसी तरह खिलवाड़ होता रहेगा. —अरविंद नागवाण

*

मंदी के दौर (मुक्त विचार/अगस्त/प्रथम) के बारे में आप ने लिखा है कि सचमुच देश मंदी के दौर से गुजर रहा है. बड़ेबड़े उद्योगों में बने हुए माल (तैयार) के ढेर जमा हो गए हैं, क्योंकि मांग में बहुत कमी आई है. अगर ऐसा है, यानी मांग घट गई है तो वस्तुओं की कीमत गिर जानी चाहिए थी, [illegible] उत्पादन को अधिक समय तक अपने पास जमा नहीं रख सकते परंतु उन वस्तुओं की कीमतों में कोई कमी नहीं आई है. इस से तो आम उपभोक्ता को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है. आवश्यक उपभोग की वस्तुओं की कीमतें इस गति से बढ़ी हैं कि उपभोक्ताओं को अपने उपभोग की वस्तुओं में कटौती करनी पड़ रही है, क्योंकि उपभोक्ताओं की आय वही है. आखिर एक आम उपभोक्ता को अपनी उसी आय में ही तो जीवन यापन करना है. इस बात की पुष्टि इस बात से भी होती है कि हमारे यहां गेहूं जैसी आवश्यक जिस की कीमत में पिछले चारपांच मास से ही 25 से 50 प्रतिशत (पहले 175 से 215 रुपए, अब 250 से 300 रुपए) तक की वृद्धि हुई है. यही हाल अन्य आवश्यक वस्तुओं का भी है. संबंधित अधिकारियों का इस तरफ ध्यान ही नहीं जाता है. उधर आए दिन वित्त मंत्री यह घोषणा करते नहीं थकते कि मुद्रास्फीति का प्रतिशत घट कर शून्य हो गया है. अगर ऐसी ही बात है तो फिर आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में इतनी असामान्य वृद्धि क्यों?

देश की आर्थिक स्थिति इतनी असामान्य हो गई है कि आम लोगों का तो जीना ही दूभर हो गया है. आखिर आम लोग किस के आगे हाथ फैलाएं?

—गोपालप्रसाद 'गुड्डे वाले'

*

'बिना सजा 37 वर्ष की कैद' (मुक्त विचार/अगस्त/प्रथम) पढ़ कर बहुत दुख हुआ. लगता है हमारे देश का कानून अंधा ही नहीं, लूलालंगड़ा भी है. आप का यह कहना सोलह आने सच है कि जेल अधिकारियों ने जेल में अपने कानून बना रखे हैं, अपनी अलग अदालतें बना रखी हैं. जहां कैदी ने उस अदालत के जज यानी जेल अधिकारी को नाराज किया, बस वहीं उस की शामत आ जाती है. सरकार को चाहिए कि समयसमय पर प्रत्येक जेल का मुआयना स्थानीय अधिकारियों से न करवा कर बाहर के अधिकारियों से करवाए. जो जेल में सड़

कैदियों की समस्याओं को सुनें तथा उन्हें हल करने का प्रयास करें. —[illegible]

*

'महंगाई के लिए दोषी कौन?' (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) में व्यक्त आप के विचारों से मैं पूर्णतया सहमत हूं. यह बात एकदम सही है कि महंगाई के लिए सरकार ही दोषी है. व्यापारी वर्ग को महंगाई के लिए दोषी ठहराना सरकार की बहुत बड़ी भूल है. व्यापारी तो जनता सरकार के समय भी थे, उस समय तो महंगाई ने इतनी ऊंची छलांगें नहीं लगाई थीं. फिर आज महंगाई इस कदर तेजी से क्यों बढ़ रही है? अंतुले जैसे भ्रष्टाचारी तत्त्वों का इस महंगाई को बढ़ाने में भारी योगदान है, इस से कोई इनकार नहीं करेगा. —पवनकुमार झंवर 'आजाद'

*

सच पूछें तो महंगाई के लिए काफी हद तक आज के राजनीतिबाज ही दोषी हैं. बड़े व्यापारियों से किसी न किसी बहाने से पैसे ऐंठना और चीजों की कमी के लिए उन्हें ही दोषी ठहराना आजकल के राजनीतिबाजों के लिए [illegible] महंगाई कम करने के लिए नेताओं को अपनी तोंदों की माप घटानी होगी, जो दिन दुगनी रात चौगुनी बढ़ती जा रही है. —भुवनेशचंद्र शर्मा

*

'हिमालय को कैसे बचाएं' (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) में आप ने कहा है कि हिमालय क्षेत्र की आबादी बढ़ने से वहां पर जंगलों की कटाई में वृद्धि हुई है. किंतु मैं आप के विचारों से सहमत नहीं हूं. आबादी जरूर बढ़ी है, लेकिन पहाड़ों से आबादी का पलायन भी कम नहीं हो रहा है. हिमालय वासियों की ईंधन पूर्ति का मुख्य साधन लकड़ी ही है, क्योंकि यहां ईंधन के वैकल्पिक साधनों का अभाव है. जंगलों की बेतहाशा कटाई के लिए तो ठेकेदार जिम्मेदार हैं.

आप ने वैज्ञानिक कटान के बारे में लिखा है. जब हमारी सरकार इस विषय से भलीभांति अवगत होते हुए भी इसे लागू नहीं कर पाई है तो ग्रामीणों से कैसे अपेक्षा की जा

सकती है कि वे वैज्ञानिक ढंग से कटाई करेंगे.

अन्य बातों में आप से सहमत होते हुए भी मैं आप के इस विचार से भी सहमत नहीं हूं कि पहाड़ों के विकास (सड़क इत्यादि) पर रोक लगा देनी चाहिए. हिमालय वासियों को भी देश के विकास का पूरापूरा लाभ मिलना जरूरी है और वे इस के हकदार भी हैं.

जंगलों को अनावश्यक कटाई से बचाने के लिए सही नियोजन अत्यंत आवश्यक है. पहाड़ों की चोटियां नंगी न रहें. प्रत्येक स्थान पर वृक्ष लगें एवं उन की पूरी सुरक्षा हो तो कोई कारण नहीं कि वहां पर विकास के साथसाथ वनों का विकास भी न हो. इस से पर्यटन आदि को भी बढ़ावा मिल सकेगा और सौंदर्य भी बढ़ेगा.

अतः आवश्यकता इस बात की है कि हम सभी हिमालय को बचाने का प्रयास करें व लोगों को वृक्षारोपण के लिए प्रोत्साहित करें. सरकार को भी चाहिए कि हिमालय पर वृक्षों का विकास करने के लिए अलग से अभियान चलाए. —वासुदेव प्रसाद पुरोहित

*

'15 अगस्त स्वतंत्रता दिवस-सरकारी औपचारिकता तक सिमट रहा आयोजन' लेख (अगस्त/द्वितीय) में मैं इस बात से पूरी तरह से सहमत हूं कि 15 अगस्त को लोग मात्र छुट्टी का दिन समझ कर खुश होते हैं. आज भी लोग अपने को भारतीय न कह कर सिंधी, पंजाबी, बंगाली, मद्रासी और गुजराती कहने में अधिक गौरव महसूस करते हैं.

राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत करना अत्यावश्यक है. आज भी हरिजन और सवर्णों में लड़ाईझगड़े होते रहते हैं. वही पुरानी अस्पृश्यता जैसी सामाजिक बुराइयां आज भी मौजूद हैं. गांवों में ही नहीं, बल्कि शहरों में रहने वाले लोग भी ऊंचनीच की भावना से ग्रसित हैं. —गुरबीर सिंह

*

'कमीना' कहानी (अगस्त/प्रथम) में नायक अंवधशरण को तपेदिक की बीमारी से ग्रस्त दिखा कर अपने भतीजे सुरेंद्र को इस आशय से गोद लेने की बात करता दिखाया गया है, ताकि सुरेंद्र को उस का पुत्र मान कर सरकार मानवीय आधार पर नौकरी पर लगा दे. पर सरकार ने अपने कर्मचारियों के कल्याण के लिए औषधालय और चिकित्सा की पूरी सुविधा जुटा रखी है. फिर तपेदिक आज ऐसी बीमारी भी नहीं है, जिस पर काबू पाना मुशकिल हो. लेखिका को इस बात की पूरी जानकारी होनी चाहिए. —ललित

*

'प्रदूषण के साए में पल रही दिल्ली' लेख (अगस्त/प्रथम) में आज की दिल्ली की पोल खोल कर रख दी गई है. जिस गति से

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

पिछले दो दशकों में यहां का वातावरण दूषित हुआ है, उसे देख कर लगता है कि यदि इसी गति से वातावरण दूषित होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब यह महानगर संकट में घिर जाए.

रोहतक रोड और नजफगढ़ रोड पर स्थित उद्योगों के कारण निकटवर्ती सभी बस्तियों व पंजाबीबाग की स्थिति बद से बदतर होती जा रही है. दोनों ओर की औद्योगिक इकाइयां अपना जहरीला धुआं छोड़ती हैं. खास तौर से शाम या रात के समय छोड़ा जाने वाला धुआं आंखों में चुभन पहुंचाने वाला होता है.

साथ ही नजफगढ़ का गंदा नाला भी अनेक बीमारियों की जड़ है. समय रहते यदि इस का इलाज न खोजा गया तो शायद एक दिन वह इलाका रहने लायक ही नहीं रहेगा.

—अशोक बजाज

*

'हाथी के दांत' कहानी (जुलाई/प्रथम) में कथाकार यथार्थ चित्रण में सफल नहीं हो पाया है. किराएदार डिसूजा दस हजार रुपए की मोटी रिश्वत न्यायाधीश को दे देता है, किंतु तीन साल का बकाया मकान का किराया नहीं चुका पाता है. यह तर्कसंगत नहीं लगा. दूसरी बात डिसूजा को दूसरे देश का जासूस बताया गया है. यह सर्वविदित है कि ऐसे व्यक्ति छोटेमोटे मामलों में पैसे नहीं रोकते हैं. कथाकार का यह भी कहना है कि डिसूजा के पास पैसों की कमी न थी, फिर उस ने किराए का भुगतान क्यों नहीं किया?

न्यायालयों में व्याप्त भ्रष्टाचार का यह कथा सतही तौर पर चित्रण करती है.

—एम. पांडेय

*

संपादन विभाग की असावधानी के कारण मुक्ता के जुलाई (प्रथम) 1982 अंक में भेंटवार्ता 'तनाव से कैसे बचें?' के साथ डाक्टर हरबंससिंह वासिर की जगह किसी अन्य का फोटो छप गया है, इस के लिए हमें खेद है.

—संपादक

चंपक व सरिता की कहानियों का रेडियो प्रसारण

विविध भारती पर 'सरिता' और 'चंपक' की कहानियों के नाट्य रूपांतर का प्रसारण प्रति सप्ताह आकाशवाणी के निम्न केंद्रों से निम्न समयानुसार किया जा रहा है:

	केंद्र	दिन	रात्रि समय
सरिता -	दिल्ली	मंगलवार	7.45
	बंबई	सोमवार	9.45
	चंडीगढ़	शुक्रवार	9.30
	भोपाल	बुधवार	9.30
	पटना	शनिवार	9.30
	लखनऊ	मंगलवार	9.30
	जयपुर	मंगलवार	9.30
चंपक -	बंबई	मंगलवार	8.45
	दिल्ली	शुक्रवार	7.45
	पटना	शनिवार	7.45

सुनना न भूलें और बच्चों को भी सुनाना न भूलें.

कार्यक्रम सुनने के बाद निम्न पते पर अपनी राय लिखना न भूलिएगा.

प्रचार एवं प्रसार विभाग, 'दिल्ली प्रेस,
ई-3, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-55.

मुक्त विचार

संपत्ति की बिक्री पर आयकर की नजर

सरकार व सरकारी अधिकारी अपने अधिकारों व हितों के लिए आम जनता की सहूलतों और आवश्यकताओं को किस बेरहमी से अनदेखा कर सकते हैं, इस का एक और उदाहरण आयकर विभाग का वह नया नियम है, जिस के अंतर्गत जमीनजायदाद की हर बिक्री का पंजीकरण अब आयकर विभाग के पास कराना होगा और आयकर विभाग को यह छूट होगी कि जितनी राशि पर सौदा हुआ हो उस से 15 प्रतिशत अधिक दे कर वह उस संपत्ति का ही अधिग्रहण कर ले.

इस नए नियम के पीछे जो कारण बताया जाता है वह है संपत्ति के लेनदेन में काले धन को समाप्त करना. यदि खरीदार काला धन दे कर कोई संपत्ति खरीदेगा तो उसे डर रहेगा कि कहीं आयकर विभाग ही संपत्ति न ले ले और उस का काला धन पूरी तरह से डूब जाए.

काले धन को निष्क्रिय बनाने या वसूलने का सरकार को अधिकार है, पर इस के नाम पर हर नागरिक को परेशान करने या संशय की हालत में रखने का अधिकार उसे नहीं होना चाहिए.

इस नियम के अंतर्गत आयकर विभाग यह निर्णय लेने में नौ माह तक लगा सकता है. इस का मतलब है कि नौ माह तक खरीदार व बेचने वाला दोनों अधर में लटके रहेंगे. ज्यादा मुसीबत खरीदार की होगी. उस ने पूरा पैसा बेचने वाले को दे दिया होगा, पर आयकर विभाग की तलवार उस के सिर पर लटकी रहेगी.

यदि उस ने जमीन खरीदी है तो वह मकान बनाने का काम शुरू नहीं कर सकता. दुकान खरीदी है तो उसे सजा कर बिक्री शुरू नहीं कर सकता. फ्लैट खरीदा है तो उस में रहने नहीं जा सकता.

इस दौरान आयकर विभाग के अधिकारी मजे से उस के पंजीकरण की फाइलें इधर से उधर करते रहेंगे. समझदार कर्मचारी खरीदार को उलटेसीधे आश्वासन दे कर रिश्वत भी वसूल कर लेंगे और अंत में अगर अधिग्रहण न करने का फैसला किया ही गया तो अपना निश्चित हिस्सा जरूर ले लिया जाएगा.

जिन स्थितियों में अधिग्रहण का फैसला लिया जाएगा, उन में खरीदार को खरीदफरोख्त में लगाए गए खर्च व शक्ति की तो हानि होगी ही, मुआवजा लेने में भी वर्षों लग जाएंगे. शेर के मुंह में से मांस छीनना आसान है, पर सरकारी कर्मचारी के हाथ से अपना पैसा निकाल लेना मुशकिल है.

आयकर विभाग का यह फैसला काले धन को कम करेगा, इस में भी संदेह है. तथाकथित काले धन की उत्पत्ति व्यापार व कर वंचना से होती है और वह होती रहेगी. यदि व्यापारी उसे मकानों में नहीं लगा पाएगा तो और कहीं लगा देगा. सरकार को तो वह देने से रहा. इस से होगा यही कि जो धन मकानों की कमी को दूर करने में लगता था, है, वह भी बंद हो जाएगा.

इस नए नियम में ऐसी कोई सीमा भी नहीं रखी गई कि इतने मूल्य तक की जमीन-जायदाद का ही पंजीकरण कराना होगा. इस का मतलब यह है कि दोतीन कमरे का छोटा सा मकान भी, जिस की कीमत अब 50 हजार आसानी से हो जाती है, इस जंजाल में आ गया. यानी इस शिकंजे में अमीर को ही नहीं साधारण मध्यम वर्ग को भी कस दिया गया है. अमीर तो जोरदार कानूनी कारखाई कर के अपने हक वसूल भी कर लेते हैं, पर कोई कालिज प्रोफेसर या छोटा मैनेजर अपना काम करेगा या आयकर विभाग के चक्कर लगाएगा? उन्हें तो मोटी रिश्वत दे कर ही छुटकारा मिलेगा.

पर जनता की दिक्कतों से शासकों को क्या? उन्हें तो अपना हिस्सा चाहिए, जनता जाए भाड़ में.

गोद लेने के नियम सरल हों

पश्चिमी देशों के निस्संतान दंपतियों द्वारा भारतीय बच्चों को गोद लेने की बात पर भारत में बहुत होहल्ला मचाया जा रहा है. सभी समाजों की तरह पश्चिमी देशों में भी निस्संतान दंपतियों की संख्या काफी बढ़ी है. देर से विवाह करने, यौन रोगों तथा अन्य बीमारियों के कारण बहुत से दंपती बच्चों के अभाव में तरसते रहते हैं. और समाजों में तो गरीब ही वर्ग के लोग फालतू बच्चे गोद देने को तैयार हो जाते हैं, पर इन विकसित देशों में बच्चे पैदा ही कम हो रहे हैं, अतः गोद लेने लायक शिशु मिलते ही नहीं.

इसलिए ये लोग दक्षिणी यूरोप व एशिया के अधिक जनसंख्या वाले इलाकों से बच्चे गोद लेने को तैयार हो जाते हैं. भारत देश से बच्चे को गोद लेने के लिए वे इसलिए भी ज्यादा तत्पर रहते हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि यहां लाखों बच्चे हर साल गरीबी से व चिकित्सा के अभाव में मर जाते हैं. एक बच्चे को गोद ले कर मानवता की सेवा करने का खयाल भी उन्हें रहता है.

भारत में इस बात पर आपत्ति घिसेपिटे तर्कों पर की जा रही है. सब से पहली आपत्ति तो यह है कि ये बच्चे खरीदे जाते हैं. गोद लेने वाले दंपतियों को उन संगठनों को काफी पैसा देना पड़ता है जो यहां बच्चे ढूंढ़ते हैं तथा फिर कानूनी कारखाई करते हैं. यद्यपि सभी शिशु अवैध या अनाथ होते हैं, फिर भी इस में काफी अदालती कारखाई करनी पड़ती है. संगठन इस के लिए फीस लेता है जिसे किसी भी तरह मुनाफा नहीं कहा जा सकता.

हम हिंदुओं में तो वैसे भी गोद देते समय भुगतान का प्रावधान है. गोद देने वाला ही नहीं, बिचौलिया पंडित भी क्या पैसा नहीं लेता जो विदेशियों द्वारा गोद लेने पर पैसा देने पर हम शोर मचा रहे हैं?

दूसरी भावना यह है कि इस से हमारी गरीबी के साथसाथ यह बात भी जगजाहिर होती है कि भारत में अभी भी बच्चे फालतू हैं. यह बात काफी लोगों को कटु लगती है, क्योंकि वे चाहते हैं कि पश्चिमी देशों के लोग हमारी खराबियों को देखें ही नहीं. जब हमारा देश गरीबी में संसार के सब से गरीब तीन देशों में से है ही तो यह हम कब तक छिपा सकते हैं कि हमारे यहां पशु और मानव एक जैसे रहते हैं?

ऐसे में यदि दया दिखा कर वे हमारे शिशुओं को पढ़ालिखा कर काम का बनाना चाहें तो उस में आपत्ति की गुंजाइश कहां है? यदि ये बच्चे यहां रहें तो जीवन भर अनाथालयों के प्रबंधकों के लिए सड़कों पर गागा कर पैसा कमाते रहेंगे या गुंडों के हाथ पड़ कर चोरीचकारी करेंगे. यदि ये बच्चे लड़कियां होंगी तो वेश्यालयों में जा कर जमा होंगी.

हां, यदि गोद लेने वाले इन बच्चों से अमानवीय व्यवहार करते तो बात दूसरी थीं. गोद लेने की प्रक्रिया ऐसी है कि गोद लिए गए बच्चे न केवल उन दंपतियों की वैध संतान माने जा कर उन की संपत्ति के वारिस होंगे, बल्कि अधिकांश देशों में तो उन्हें अपनेआप वहां की नागरिकता का अधिकार भी प्राप्त हो जाएगा.

होना तो यह चाहिए कि सरकार गोद लेने के नियमों को सरल बनाए ताकि गोद लेने के इच्छुक दंपतियों को महीनों अदालतों और बिचौलिए संगठनों के चक्कर न काटने पड़ें.

खालिस्तान की मांग गंभीर

लोकमत के दबाव में आ कर लोंगोवाल अकाली दल के अध्यक्ष ने कहा है कि उन का दल खालिस्तान नहीं, केवल राज्य के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग कर रहा है, ताकि केंद्र राजनीतिक व आर्थिक मामलों में आवश्यकता से अधिक दखलंदाजी न कर सके. वे तो भारत गणराज्य के ही एक हिस्से के रूप में रहना चाहते हैं, पर अपने धर्म व अपनी नीतियों के अनुसार.

वास्तविकता यह है कि किसी भी गुट से संबंध रखने वाला अकाली दल अब खालिस्तान की मांग करने लगा है, क्योंकि उसी के सहारे वोट लिए जा सकते हैं और पैसा जमा किया जा सकता है.

यदि अकाली दल की मांग के अनुसार पंजाब को अधिक स्वायत्तता दे भी दी जाए तो दल को क्या मिलेगा? इस अधिकार का उपयोग तो दरबारासिंह की सरकार ही कर पाएगी. वह सरकार तो अब उन मामलों पर भी अपना निर्णय खुद नहीं ले सकती, जो संविधान के अनुसार उस के हक हैं. बजाए चंडीगढ़ के हर निर्णय दिल्ली से ही तो होता है.

अकाली दल स्वायत्तता की तो मांग करता है, पर यह नहीं बताता कि उस से सिखों को या पंजाब के अन्य लोगों को क्या लाभ होगा. यह ठीक है कि विकेंद्रीकरण आज की आवश्यकता है, क्योंकि सरकारी ढांचा अब इतना बोझिल और बड़ा हो गया है कि प्रशासन टुकड़ेटुकड़े होना चाहिए. स्वायत्तता की मांग के स्थान पर यदि विकेंद्रीकरण की मांग होती तो अकाली दल का स्पष्टीकरण माना जाने लायक होता.

खालिस्तान की मांग असल में एक गंभीर मांग है और इस के लिए आंदोलन अपने आप समाप्त हो जाएगा, ऐसा नहीं [illegible] फैले सिख आर्थिक पर काफी मजबूत हैं. कईकई पीढ़ियों बिलकुल अलग वातावरण में रहने बावजूद उन्होंने अपने तौरतरीके न बदले बदलने दिए. उन की कट्टरता कम नहीं बढ़ी ही है.

भारत में भी वे आंजादी के लगातार हिंदुओं से कटते जा रहे हैं. उन नेतृत्व पंडेपुजारियों के हाथों में ही है. अपनी नीति समय की आवश्यकता दूरदर्शिता पर नहीं, सैकड़ों साल पहले उपदेशों पर निर्धारित करते हैं. सिखों के गैरधार्मिक नेता आजादी के बाद उभरे उन्हें सिखों से नहीं, बल्कि गैरसिखों से समर्थन मिला.

इसलिए आम सिख के लिए उस धर्म देश की आवश्यकता से ज्यादा महत्त्वपूर्ण हो गया है. खालिस्तान की मांग पीछे यही धार्मिक भावना है.

जब तक पंजाब में अकाली दल धार्मिक दल मौजूद हैं और लोकप्रिय हैं, तक खालिस्तान की मांग बारबार उठ रहेगी और देश के लिए सिरदर्द बनी रहेगी

मेनका का नया दल

श्रीमती इंदिरा गांधी की पुत्रवधू मेनका गांधी ने आखिर अपना अलग दल बनाने निश्चय कर ही लिया. इंदिराजी से झगड़ने बाद वह काफी दिन तो समाज सेवा करने बातें करती रहीं और दावा करती रहीं कि तो संजय गांधी के पांच सूत्री कार्यक्रम को आगे बढ़ाने का काम करेंगी.

अब जब कोई भी फोकट में सेवा नहीं करता, तब मेनका गांधी समर्थकों से ही ऐसी अपेक्षा कैसे की जा सकती थी? संजय गांधी के समर्थक तो वैसे भी बढ़ कर एक छंटे हुए व निठल्ले थे, जिन संजय गांधी का अनुसरण करते हुए जबरदस्ती से पैसा वसूला था. उन लोगों तो समाज सेवा से दूर का भी वास्ता नहीं

इसलिए इस में कोई आश्चर्य की

नहीं है कि श्रीमती मेनका गांधी को जल्दी ही समाज सेवा का ढोंग छोड़ देना पड़ा और विशुद्ध राजनीतिक दल के रूप में आना पड़ा है.

वैसे मेनका गांधी ने राजनीतिक दल बना कर गलती ही की है. जब तक वह इंदिरा कांग्रेस की ही अंग थीं, अंदर से ही दल को चोट पहुंचाने की उन की क्षमता काफी अधिक थी. बाहर निकल कर तथा अपना दल बना कर वह इंदिरा कांग्रेस का कुछ भी बिगाड़ नहीं पाएंगी.

फिर उन्हें इंदिरा कांग्रेस का ही नहीं, अन्य विरोधी दलों का भी विरोध करना पड़ेगा. इतनी सी आयु में वह दोनों तरफ के लोगों से निबट सकें, यह नामुमकिन लगता है. उन के समर्थक भी अपरिपक्व हैं, जो लालच में राजनीति में आए थे, किसी सिद्धांत या नीति के पीछे नहीं.

यही वजह है कि यद्यपि संजय गांधी ने सैकड़ों युवकों को लोक सभा व विधान सभाओं के टिकट दिए थे, अब मेनका के साथ महज मुट्ठी भर लोग हैं. बाकी सब ने संजय के मरते ही इंदिराजी के अकेले वारिस राजीव की जयजयकार करनी शुरू कर दी है.

संजय गांधी कूटनीति से चलने में होशियार था, लोगों को एकदूसरे से लड़ा-भिड़ा सकता था और परिवार नियोजन जैसे स्टंट खड़े कर सकता था. वह कोई नीति निर्धारक या दार्शनिक नहीं था. उस के नाम पर बनाई गई पार्टी वैसे भी किसे क्या आशा दे सकती है?

मारुति कार क्या बनेगी?

अपने छोटे बेटे की याद में उस की बचपन की इच्छा पूरी करने के लिए श्रीमती इंदिरा गांधी ने देश का लगभग 300 करोड़ रुपया मारुति कार उद्योग में लगा देने का फैसला किया है. संजय गांधी द्वारा स्थापित इस कंपनी 1980 में सरकार ने ले ली थी, जब कि स्थापना के बाद के सातआठ सालों में इस फैक्टरी में कुछ टूटेफूटे छकड़ेनुमा वाहन ही बना पाए थे.

अब सरकार जापान की एक कंपनी सुजुकी से समझौता कर के चार लोगों के बैठने लायक छोटी गाड़ी बनाएगी. एक साल में डेढ़ लाख तक गाड़ियां बनाने की योजना है. पर शुरूशुरू में आयातित पुर्जों को जोड़जाड़ कर 20 हजार गाड़ियां हर साल बनाई जाएंगी.

इस में संदेह नहीं है कि देश में गाड़ियों की जरूरत है. बंबई और कलकत्ता की जो दो कंपनियां गाड़ियां बना रही हैं, वे बेहद महंगी और खराब हैं. वर्षों से उन में नई तकनीक का उपयोग ही नहीं हुआ है. एकाधिकार का लाभ उठा कर ये कंपनियां अयोग्य होते हुए भी कामचलाऊ मुनाफा कमाए जा रही हैं. अतः किसी भी नई कंपनी द्वारा गाड़ी बनाने की पेशकश का स्वागत होना चाहिए.

लेकिन मारुति उद्योग देश को गाड़ियां दे पाएगा, इस में संदेह है. सरकारी उद्योगों की हालत से कौन परिचित नहीं है? कहने को तो सरकार दवाइयों से ले कर जहाज तक बनाती है, पर कोई भी सामान ठीक नहीं बनता. अधिकांश सामान एक सरकारी विभाग दूसरे सरकारी विभाग को ही भिड़ाता है. कुछ सामान जबरन जनता पर एकाधिकार बना कर थोपा जाता है.

चूंकि मारुति की गाड़ियों के खरीदार आम व्यक्ति ही होंगे, इसलिए वे घटिया माल कभी भी नहीं खरीदेंगे. कई सरकारी कंपनियां दो पहियों के स्कूटर बना रही हैं, पर उन्हें कोई खरीदता ही नहीं है और हर साल उन पर करोड़ों रुपए लगाए जा रहे हैं. दोएक साइकिल बनाने की फैक्टरियां भी सरकार के हाथ में हैं, पर उन का उत्पादन भी सरकारी विभागों के अलावा कोई नहीं लेता.

फिर सरकारी मारुति को कोई लेगा, यह असंभव है. हां, शुरूशुरू में जापानी तकनीशियनों की सहायता से विदेशी पुर्जों को जोड़तोड़ कर जो गाड़ियां बनेंगी, वे जरूर बिक जाएंगी. उस के बाद यह कारखाना हर वर्ष सौ दो सौ करोड़ की हानि देगा और पांच-सात साल में बंद होने की नौबत आ जाएगी. ●

लड़कियों से छेड़खानी : दोष किस का ?

लेख • विवेक सक्सेना

कालिज का प्रांगण चारों ओर लड़केलड़कियां घूम रहे हैं. एक ओर लड़कों का झुंड खड़ा है. पास से जैसे ही कोई लड़की निकलती है, एक आवाज आती है, "हाय, बाबी," और लड़की सकुचाती हुई निकल जाती है.

बस का सफर. लोग भीड़ में बुरी तरह एकदूसरे के ऊपर गिरे जा रहे हैं. भीड़ में फंसी एक लड़की की मजबूरी का फायदा उठाते हुए न जाने कितने पुरुष उस के साथ चिपके जा रहे हैं. वह बेचारी बेबस खड़ी है.

कार्यालय में एक नई लड़की आती है. उस के साथ बैठने वाले एक अधेड़ सज्जन एक दिन उसे एक कागज चुपके से पकड़ा देते हैं. वह उसे खोल कर देखती है तो विवाह के बाद प्रेम संबंधों पर आधारित एक फिल्म देखने के लिए उसे निमंत्रण दिया गया होता है.

ये तीनों घटनाएं ऐसी हैं, जिन का

छेड़खानी एक संक्रामक रोग की तरह धीरेधीरे फैलती जा रही है. सार्वजनिक स्थानों पर होने वाली ये घटनाएं समाज की किस कमजोरी को दर्शाती है? इस का दोष आखिर किस को दिया जाए?
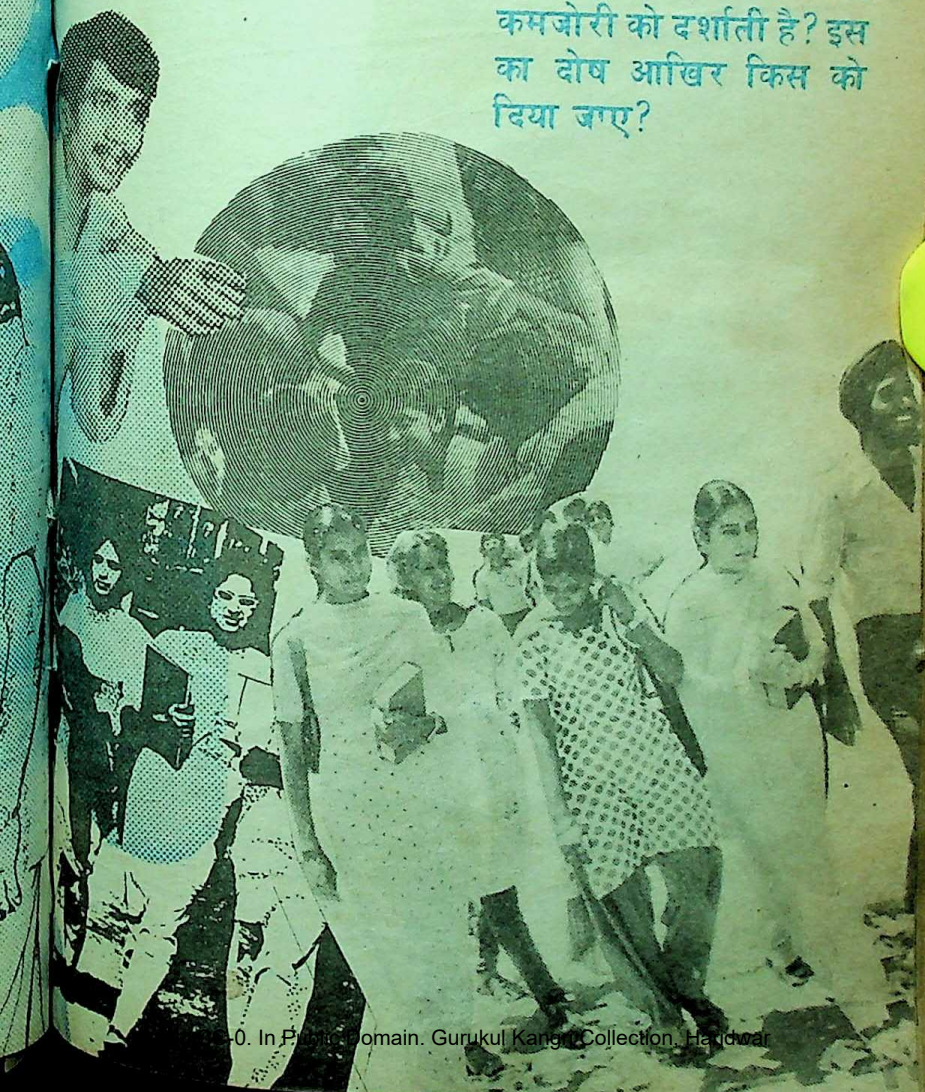
सामना घर से बाहर निकलने वाली हर लड़की या महिला को प्रायः हर दिन करना पड़ता है. इसे आम तौर पर छेड़खानी कहा जाता है. इस समस्या से हमारे देश का कोई भी शहर, कसबा या गांव नहीं बचा है. आए दिन लड़कियों को छेड़े जाने की घटनाएं बढ़ती ही जा रही हैं.

यह समस्या इतनी व्यापक है कि इस को सुलझा पाना कोई आसान बात नहीं है. इस समस्या को ले कर बहुत सारे सवाल उठ खड़े होते हैं. जैसे—किसकिस तरह से छेड़खानी की जाती है? क्यों छेड़खानी की जाती है? और क्या इस छेड़खानी के लिए सारा दोष केवल पुरुषों को ही है? क्या लड़कियां या महिलाएं भी इस छेड़खानी के लिए जिम्मे नहीं हैं? इन सवालों के जवाब पाने के लि हमें थोड़ा गहराई में जाना पड़ेगा और इन के हर पहलू पर नजर डालनी होगी.
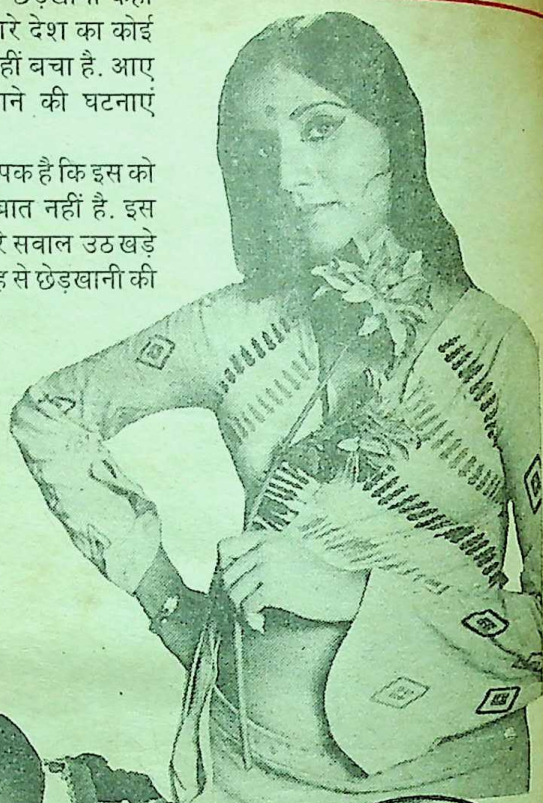
छेड़खानी का सब से ज्यादा शिका युवतियां होती हैं. पर किशोरियों से ले कर साल तक की महिलाओं को भी इस स्थिति

आकर्षक पोशाकें छेड़छाड़ का एक कारण यह भी है.

...ना करना पड़ता है. युवती विवाहित हो या अविवाहित, इस का छेड़खानी पर कोई ...र नहीं पड़ता. अगर वह ज्यादा सुंदर या ...र्षक हो तो उस के छेड़छाड़ किए जाने की ...वनाएं अधिक हो जाती हैं.

छेड़खानी का क्षेत्र बहुत ही व्यापक है. ...से बाहर कदम रखते ही सड़कों पर से ...ड़खानी का जो सिलसिला शुरू होता है, वह ...लेज, दफ्तर या वहांवहां जारी रहता है ...जहां युवतियों को आनाजाना पड़ता है.

आम तौर पर सड़कों पर होने वाली ...ड़खानी कम पढ़ेलिखे और निम्नवर्गीय घरों ...संबंध रखने वाले युवक या अधेड़ व्यक्ति ...ते हैं. ये लोग ज्यादातर युवतियों को देख ...सीटी बजाते हैं, फिल्मी गाने गाते हैं, ...श्लील बातें करते हैं, एक तरफ मुंह कर के ...या अंगरेजी में प्यार का इजहार करते हैं ...लड़के अगर शोहदे किस्म के तथा ...साहसी हों तो अकसर लड़कियों का दुपट्टा ...खींचने का प्रयास करते हैं.

'चलती सड़क' पर दूसरे ढंग की ...खानी उस वर्ग के पुरुषों द्वारा की जाती है ...पढ़ेलिखे संभ्रांत घरानों से संबंध रखते हैं. ...लोग अकसर लड़कियों को देख कर ...फुलकी टिप्पणियां करते हैं या फिर ...में सीटी बजाना, आंख मारना, ...राना या फिर लड़की के पास कार या ...रोक कर उसे लिफ्ट देने की कोशिश ..., इन की आदत होती है. कई लड़कियों ...बताया कि ऐसे बहुत से लोग हैं जो उन्हें ...कर लिफ्ट देने की पेशकश करते हैं.

छेड़खानी का एक रूप यह भी

सब से ज्यादा छेड़खानी बसों में होती है. ...हर नगर में चलने वाली सरकारी बसें ...बुरी तरह भरी होती हैं. खास तौर पर ...परिवहन की बसों की हालत तो और ...खराब है. यहां के बस चालकों की एक ...यह है कि वे केवल यह देखते हैं कि ...यात्री उतर गए या नहीं, चढ़ने वाले ...की ओर उन का जरा भी ध्यान नहीं

ज्यादातर स्टापों पर यात्रियों के खड़े होने के बावजूद इसलिए बस नहीं रुकती क्योंकि वहां उतरने वाला कोई यात्री नहीं होता. लगता है दिल्ली परिवहन इस बात से अच्छी तरह परिचित है, तभी उस की हर बस में चालक के सामने लिखा होता है कि 'स्टैंड आने से पहले यात्री चालक को सूचित करें'.

ऐसी हालत में बस के अचानक चल देने से महिलाओं को चढ़ने में बहुत परेशानी होती है. उन के हाथों में पर्स भी होता है. वे जेबकतरों के डर के कारण उसे बहुत कस के पकड़े रहती हैं और ऐसी हालत में एक हाथ से डंडा पकड़ कर पायदान पर लटक कर यात्रा करना उन के लिए असंभव हो जाता है. उन को सहारा देने के बहाने अकसर लोग उन्हें बांहों में जकड़ लेते हैं या शारीरिक छेड़छाड़ करते हैं.

बस में अगर युवती को खड़े हो कर यात्रा करनी पड़े तो समस्या और भी बढ़ जाती है. जिस हाथ से वह ऊपर का डंडा पकड़ने का

प्रयास करती है. उसे लोग दबाते हैं, कुछ उस से बुरी तरह से चिपक कर खड़े हो जाते हैं. उन का पूरा शरीर उस के शरीर को छूता रहता है. बरसात में तो हालत और भी खराब हो जाती है. कपड़े भीग जाने के कारण अंदर के वस्त्र नजर आने लगते हैं और इस के साथ ही लोग न केवल उसे भूखी नजरों से घूरते हैं बल्कि शारीरिक छेड़छाड़ भी करते हैं.

सब से ज्यादा समस्या मिनी बस में आती है. इन में चढ़नेउतरने का दरवाजा एक ही होता है. लोगों को माल की तरह ठूंसठूंस कर भर दिया जाता है. इस के साथ ही हर बस में तीनचार आवारा किस्म के युवक भी चलते हैं, जो ड्राइवर, परिचालक के दोस्त होते हैं. ये लोग भी लोगों को अंदर तक दबा कर जगह करने की आड़ में छेड़छाड़ करते हैं और उस समय परिस्थितियां ऐसी होती हैं कि वे इन की शिकायत भी नहीं कर पातीं.

अगर लड़की को बस में जगह मिल जाती है तो वह या तो खिड़की की तरफ बैठेगी अथवा सीट के दूसरे सिरे पर. अगर उस के साथ कोई महिला ही बैठी हो तब तो ठीक है वरना यहां भी छेड़खानी जारी रहती है. अगर लड़की खिड़की की तरफ बैठी है तो वह छेड़खानी करने के लिए अपने किसी साथी को भी दो आदमियों की उस सीट पर बैठा लेगा. ऐसा कर के वह लड़की से बुरी तरह चिपक जाता है.

कभीकभी लोग तीसरे को बैठाने के लिए थोड़ा आगे भी हो जाते हैं. उस के बाद जब वह अगली सीट का डंडा पकड़ते हैं तो उन की कुहनी उस लड़की के सीने पर होती है. अगर लड़की दूसरी ओर बैठी हो तो खड़ेखड़े यात्रा करने वाले पुरुष यात्रियों का यह प्रयास रहता है कि उन के पैंट व कमर तक का हिस्सा लड़की के शरीर से छूता रहे.

वे बराबर लड़की के शरीर के साथ अपने शरीर को रगड़ते रहते हैं. उन की यह भी कोशिश रहती है कि भीड़ का फायदा उठा कर वे थोड़ा और सीट के अंदर चले जाएं और उन का पैर लड़की की दोनों टांगों के बीच आ जाए, जिस से वे स्पर्श सुख का आनंद उठा सकें.

कालिजों में पढ़ने वाली छात्राओं के साथ कालिज के अंदर आम तौर से ... छेड़छाड़ चलती है. इन में, "हाय ... जावां" या "अरे, अज तां बड़ी सोनी ... है." आदि कहते हैं. फिल्मों के आधार ... लड़कियों को 'बाबी' या 'जूली' ... बुलाया जाता है. उन्हें चाक या फूल मार... फ्लाइंग किस देना आदि आम बात है.

निम्न स्तर की छेड़छाड़

कालिज के बाहर होने वाली छेड़... काफी निम्न स्तर की होती है. इस में ... के घर तक पीछा करने से ले कर उस ... पकड़ना या सब के सामने उस का ... कर भाग जाना आम बात है. ज्यादा... घटनाओं में उस कालिज के छात्र ... नहीं होते हैं.

कार्यालयों में होने वाली छेड़छाड़ ... अलग प्रकार की होती है. इन में ... सहकर्मियों द्वारा द्विअर्थी शब्दों का ... करना, टाइपिस्ट या दूसरी महिला के ... खड़े हो कर उस के ब्लाउज के अंदर ... की कोशिश करना, फाइलें लेतेदेते ... हाथ दबा देना अथवा अकेले में हाथ ... की कोशिश करना और अश्लील ... करना शामिल है.

सवाल यह उठता है कि क्या ... लड़कियां और महिलाएं छेड़खानी के ... हैं? क्या वे चाहती हैं कि हर ... छेड़खानी पर रोक लगा दी जाए ... लड़कियां खुद पुरुषों को छेड़खानी ... प्रेरित नहीं करती हैं? और क्या इस ... को सुलझाने के लिए लड़कियों ... महिलाओं को भी अपने व्यवहार, ... आदि पर ध्यान देना जरूरी नहीं है, ... लोग उन्हें देख कर उत्तेजित न हों?

इस संबंध में लड़कियों और म... की राय जानने के लिए विभिन्न आयु ... की लड़कियों तथा महिलाओं से बात... गई. जिस से बहुत से रोचक तथ्य ... चला.

सब से बड़ा सवाल तो यह है कि आखिर छेड़खानी की परिभाषा क्या है? इस संबंध में कोई भी युवती स्पष्ट नहीं बता सकी. कुछ लड़कियां लोगों द्वारा घूर कर देखने तक को छेड़खानी की श्रेणी में रखना चाहती थीं तो कुछ के विचार में जब तक शारीरिक छेड़छाड़ या ऐसी टिप्पणियां न की जाएं जो उन को बुरी लगें, तब तक पुरुषों की किसी भी हरकत को छेड़खानी नहीं माना जा सकता.

एक अन्य युवती के अनुसार मिनी या प्राइवेट बसों के ड्राइवर भी अकसर लड़कियों के साथ एक खास तरीके से छेड़खानी करते हैं. ये लोग बस स्टाप पर बस बड़ी तेजी से लाते हैं और लड़की से लगभग छः इंच की दूरी पर ला कर उसे एकदम रोक देते हैं. कुछ ड्राइवर बस को स्टाप के आगे रोकते हैं. जब लड़कियां उसे पकड़ने के लिए दौड़ कर बस के पास पहुंचती हैं तो वे बस चला देते हैं. फिर कुछ दूरी पर बस को रोक देते हैं और इस तरह लड़कियों को दौड़ाने में उन्हें बहुत मजा आता है.

छेड़खानी एक सीमा तक

अधिकांश लड़कियों की बातचीत से यह लगा कि छेड़खानी अगर एक सीमा के अंदर हो तो उन्हें अच्छा लगता है. यह इस बात पर निर्भर करता है कि किस जगह, कोई किस भावना से क्या कह रहा है. अगर कोई लड़की सुंदर है और उस ने कोई नई पोशाक

कालिज परिसर का उन्मुक्त वातावरण. पर यह उन्मुक्तता कहां तक जायज है?

लड़कियों का ध्यान अपनी ओर खींचने के लिए सार्वजनिक स्थानों पर लड़के ऊटपटांग हरकतें भी करते हैं.

पहन रखी है और उस पर कोई अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करता है तो उसे अच्छा लगता है. जिस दिन लोग इन लड़कियों की तारीफ नहीं करते, उस दिन उन्हें अच्छा नहीं लगता.

इस बारे में एक दूसरी लड़की का कहना था कि अगर कोई सुंदर और स्मार्ट लड़का छेड़छाड़ करता है तो लड़कियों को अच्छा लगता है. वे सब से पहले यह देखती हैं कि छेड़ने वाला कैसा है. उसी के अनुसार उन की प्रतिक्रिया होती है. उस के द्वारा कहे गए शब्दों को वे किस तरह लेती हैं, यह भी परिस्थितियों पर निर्भर करता है.

बहुत सी लड़कियां यह चाहती हैं कि उन्हें केवल वही छेड़े, जिस को वे पसंद करती हों. जहां तक भावना का सवाल है, लड़कियों का कहना है कि लड़के की आंखों से यह स्पष्ट हो जाता है कि उस के मन में क्या है. वह लड़की से क्या चाहता है.

प्रत्येक लड़की ने यह बात जोर दे कर कही कि उन्हें लड़कों की अपेक्षा बूढ़े व अधेड़ व्यक्तियों से छेड़खानी का ज्यादा डर रहता है. लड़के तो शायद एक बार उन्हें न भी छेड़ें, पर बूढ़े लोग बिना छेड़े नहीं मानते. बहुत से बूढ़े तो ऐसे होते हैं जो लड़कियों को उसी ललचाई नजर से देखते हैं जिस तरह कुत्ता हड्डी को देखता है.

बूढ़ों के मामले में एक बड़ी समस्या यह भी है कि इन से कुछ कहा भी नहीं जा सकता. अगर कुछ कहो तो वे छूटते ही कह देंगे, "बेटी, तुम तो मेरी लड़की के बराबर हो. तुम्हें जरूर गलतफहमी हो गई है." बूढ़े लड़कियों को पिक्चर दिखाने का निमंत्रण देने से ले कर उन के साथ शारीरिक छेड़छाड़, जिस में आम तौर पर उन के साथ एकदम चिपक कर खड़े होना या बैठना शामिल है, करते हैं.

लड़कियां इन बूढ़ों की छेड़छाड़ से किस तरह परेशान हैं, इस का अंदाजा केवल इस बात से लगाया जा सकता है कि एक लड़की ने तो यहां तक कहा कि अगर कभी मजबूरी में उसे अकेले कमरे में किसी बूढ़े या लड़के में से एक के साथ रुकना पड़े तो वह एक बार लड़के के साथ रुक कर तो अपनी इज्जत सुरक्षित रख पाने की कल्पना कर सकती है पर बूढ़े के साथ नहीं. भले ही वह कुछ कर सकने में समर्थ न हो, पर वह लड़की को शिकारी कुत्ते की तरह नोचने की कोशिश जरूर करता है.

इस तरह की छेड़खानी पर 90 प्रतिशत लड़कियां प्रायः चुप्पी ही लगा जाती हैं. मान लीजिए, बस में कोई लड़की छेड़खानी किए जाने की बात दूसरे यात्रियों से कहती है तो वे भी बजाए उस की सहायता करने के उस स्थिति का फायदा उठाने की बात सोचते हैं. सब से पहले तो उन का सवाल यह होता है कि आखिर उस के साथ किया क्या गया है? ऐसी हालत में कौन लड़की यह बता कर उन के बीच शर्मिंदा होना चाहेगी कि उस के साथ क्या हरकत की गई है?

अगर कोई लड़की घर में आ कर आए दिन छेड़खानी की शिकायत करती है तो घर वाले भी उस से यही कहेंगे कि वह कालिज या दफ्तर जाना बंद कर के घर में बैठ जाए. रही बात पुलिस में शिकायत करने की तो इस मामले में इतना ही कहना बेहतर होगा कि जब लोग बलात्कार जैसे जघन्य अपराध की रिपोर्ट पुलिस में दर्ज करवाने से हिचकिचाते हैं तो छेड़खानी की रिपोर्ट कौन दर्ज करवाएगा.

शिकायत भी नहीं कर सकते

एक युवती ने अपनी सहेली द्वारा पुलिस में छेड़खानी की रिपोर्ट दर्ज करवाने की दर्दनाक दास्तान सुनाई. जब छेड़खानी की शिकार वह युवती थाने गई तो पुलिस वालों ने उसे घेर लिया और तरहतरह के सवाल पूछने लगे. जैसे– उस युवक ने उस का कौन सा स्तन दबाया? कस के दबाया या खाली छुआ था? उस समय उसे कैसा लगा था? क्या इस से पहले भी उस के साथ ऐसा हुआ था? युवक का हाथ ब्लाउज के अंदर था या बाहर? उस की ब्रा का साइज व रंग कैसा था? आदिआदि. अब आप खुद ही सोचिए कि इन सब सवालों को पूछने वालों की मानसिकता क्या होगी व कौन युवती इन का जवाब देना चाहेगी.

सब से ज्यादा छेड़खानी दिल्ली परिवहन की बसों में होती है. इस बारे में जब दिल्ली परिवहन निगम के जनसंपर्क अधिकारी विजय आनंद से बातचीत की गई तो उन्होंने इस बात को स्वीकारते हुए कहा कि दिल्ली परिवहन निगम या पुलिस द्वारा इन हरकतों को अकेले रोक पाना संभव नहीं है.

उन के अनुसार दिल्ली के नागरिक बजाए ऐसी घटनाओं की रोकथाम में मदद करने के खुद उन्हें बढ़ावा देते हैं. अगर बस मे एक या दो व्यक्ति छेड़खानी कर रहे हों तो क्या बाकी यात्रियों का यह कर्तव्य नहीं कि वे उन्हें रोकें या उन्हें पुलिस के हवाले कर दें? वे यह भूल जाते हैं कि उन के परिवार की महिलाओं के साथ भी ऐसी घटनाएं हो सकती हैं.

हर दिन निगम के कार्यालय में छेड़खानी की शिकायतों के पत्र आते रहते हैं. समयसमय पर दिल्ली पुलिस की सहायता से दिल्ली परिवहन निगम विशेष अभियान चला कर ऐसे लोगों को पकड़ने का प्रयास करता है. पर हर बस में हर समय पुलिस को भेजना संभव नहीं है. जब तक लोगों में जागरूकता नहीं आएगी, तब तक इस समस्या का हल नहीं निकल सकता.

लोगों में जागरूकता लाने व उन्हें चेतावनी देने के लिए दिल्ली परिवहन निगम की बसों में यह लिखा रहता है कि महिलाओं के साथ छेड़खानी करना अपराध है. दिल्ली परिवहन निगम द्वारा इस संबंध में एक फिल्म का भी निर्माण किया जा रहा है. पर जब तक लोगों के अंदर यह भावना नहीं आएगी, तब तक इस समस्या का हल नहीं निकाला जा सकता.

किसी भी [illegible] अपराध रोकने व आम व्यक्ति को सुरक्षा प्रदान करने की जिम्मेदारी पुलिस की होती है. भारतीय दंड संहिता में कोई भी ऐसा कानून अलग से नहीं बनाया गया, जिस के अंतर्गत छेड़खानी करने वाले अपराधी को सजा दी जा सके.

भारतीय दंड संहिता की धारा 294 में अश्लील हरकतें करने, बेहूदा गाने गाने पर तीन महीने तक की सजा की व्यवस्था है. इस की धारा 254 के अंतर्गत किसी महिला के साथ शारीरिक छेड़छाड़ करने पर अपराधी को दो साल तक की सजा दी जा सकती है.

इस बारे में दिल्ली पुलिस का कहना है कि कोई भी महिला धारा 254 के अंतर्गत मामला दर्ज करवाना पसंद नहीं करती, क्योंकि इस में उस की बदनामी होती है. वैसे भी बहुत कम महिलाएं छेड़खानी की रिपोर्ट दर्ज करवाती हैं. आम तौर पर छेड़खानी करने वालों के खिलाफ दिल्ली पुलिस अधिनियम की धारा 91, 92 तथा 97 के अंतर्गत मामला दर्ज किया जाता है.

ये सभी धाराएं बहुत मामूली हैं. इन में अश्लील हरकतें करना, शांति भंग करना आदि अपराध आते हैं और 200 रुपए तक जुरमाना या एक सप्ताह तक की सजा दी जा सकती है. इस बारे में ज्यादातर पुलिस वालों का कहना है कि वे अपराधी को सजा दिलवाने के लिए उस के पास से चाकू आदि की बरामदगी दिखा कर उस के विरुद्ध मामला तैयार करते हैं.

पुलिस द्वारा उठाए गए कदम

जब इस संबंध में दिल्ली पुलिस के जनसंपर्क अधिकारी अरविंदनारायण शर्मा से बातचीत की गई तो उन्होंने बताया कि दिल्ली पुलिस ने अलग से किसी प्रकार के विशेष दस्ते की व्यवस्था नहीं की है. दिल्ली पुलिस द्वारा समयसमय पर छेड़खानी की वारदातें रोकने के लिए विशेष अभियान चलाए जाते हैं. जिन दिनों विश्वविद्यालय व कालिज खुलते हैं, तब सादी वर्दी में पुलिस के सिपाही व महिला पुलिस कर्मचारी घूमती हैं जिस से ऐसे असामाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखी जा सके.

उन्होंने यह बात स्वीकार की कि छेड़खानी रोकने के लिए कोई कानून न होने के कारण पुलिस को काफी समस्याओं का सामना करना पड़ता है व अपराधी के खिलाफ दूसरी धाराओं में कारवाई करनी पड़ती है. दिल्ली पुलिस ने महिलाओं व लड़कियों को यह आश्वासन देने के लिए भी कई बार अभियान चलाए कि उन का नाम गुप्त रखा जाएगा, पर फिर भी उन्होंने ऐसे तत्वों को पकड़वाने में अपना सहयोग नहीं दिया. अरविंदनारायण शर्मा के अनुसार यह एक ऐसी सामाजिक समस्या है जिस को अकेले पुलिस हल नहीं कर सकती. उन के अनुसार जब कोई गुंडा पांच लड़कियों को छेड़ता है और उस के खिलाफ कोई भी लड़की कड़ा कदम नहीं उठाती है तो उस की हिम्मत बढ़ जाती है. उन्होंने यह स्वीकारा कि जब तक इस मामले में दूसरे लोग अपना सहयोग नहीं देंगे, तब तक इस समस्या पर काबू नहीं पाया जा सकता.

श्री शर्मा का कहना है कि छेड़खानी रोकने के लिए कड़े कानून बनाने के साथसाथ लड़कियों को भी हिम्मती होना चाहिए. आम तौर पर अब ऐसे मामलों में दिल्ली पुलिस संबंधित लड़के के घरवालों को थाने बुला कर बेइज्जत करती है और उन्हें यह बताती है कि उन का लड़का क्या कर रहा है जिस से भविष्य में वह सुधर सके.

जहां तक लड़कियों की उत्तेजक पोशाकों का सवाल है, उन का यह मानना है कि यह कोई दलील नहीं है कि पोशाक देख कर कोई उत्तेजित हो बैठे या अपराध कर बैठे. पोशाक के कारण उत्तेजना पैदा हो सकती है, पर ऐसी हालत में खुद पर नियंत्रण रखना जरूरी हो जाता है.

अगर कहीं बिना ताले का स्कूटर खड़ा हो तो इस का यह अर्थ तो नहीं है कि आप उसे चुरा लें. अपराध आखिर अपराध ही होता है. भले ही वह किसी भी तरह की परिस्थितियों में क्यों न किया जाए →

"छेड़खानी एक सामान्य चीज है" –कविता अरोड़ा

अपने घर से दूर रह कर नौकरी करने वाली महिलाओं के सामने बहुत तरह की समस्याएं आती हैं और उन में से एक समस्या छेड़खानी की भी है. इस संबंध में दिल्ली के कामकाजी महिला होस्टल की अवैतनिक अध्यक्ष श्रीमती कविता अरोड़ा से की गई बातचीत यहां प्रस्तुत है :

प्रश्न: क्या आप के होस्टल की महिलाएं भी छेड़खानी का शिकार होती रहती हैं?

उत्तर: उन के साथ छेड़खानी तो जरूर होती है, पर आज तक कभी किसी ने मुझ से इस बारे में शिकायत नहीं की. हलकी छेड़खानी पर लड़कियां ध्यान नहीं देती हैं. जब तक उन के साथ शारीरिक छेड़छाड़ न की जाए या वे खुद को दूसरों के सामने अपमानित न महसूस करें वे किसी से कुछ नहीं कहती हैं.

प्रश्न: पिछले कुछ सालों में छेड़खानी काफी अधिक बढ़ गई है. इस के पीछे क्या कारण है?

उत्तर: छेड़खानी कोई नई चीज नही है. जब से समाज बना, तभी से छेड़खानी होती आ रही है. यह बात दूसरी है कि इस का स्वरूप अलगअलग रहा.

प्रश्न: क्या आप ऐसा समझती हैं कि पुलिस में ऐसी घटनाओं की रिपोर्ट दर्ज कराने से इस समस्या को हल करने में मदद मिल सकती है?

उत्तर: मैं ऐसा नहीं समझती. कोई भी सभ्य घर की लड़की न तो पुलिस थाने जाना पसंद करती है और न ही रिपोर्ट करने पर पुलिस कोई काररवाई करती है. रिपोर्ट लिखवाने से लड़की की ही बदनामी होती है.

प्रश्न: बहुत सी लड़कियां ऐसी पोशाकें पहनती हैं जो उत्तेजक होती हैं. क्या आप छेड़खानी रोकने के लिए ऐसी पोशाकों पर रोक लगाया जाना पसंद करेंगी?

उत्तर: क्या लड़के उत्तेजक पोशाक नहीं पहनते हैं? क्या उन की पोशाकों पर प्रतिबंध नहीं लगाया जाना चाहिए? चूंकि लड़की कमजोर होती है और वह लड़कों को छेड़ नहीं सकती, इसलिए सारा दोष उस पर ही आता है. इस से कोई लाभ नहीं होगा. और रोक लगाना भी उचित नहीं होगा.

प्रश्न: क्या आप ऐसा समझती हैं कि छेड़खानी रोकने के लिए कड़े कानून बनाने से कोई लाभ होगा?

उत्तर: बिलकुल नहीं. जब भी किसी चीज पर प्रतिबंध लगाने की कोशिश की गई, वह बजाए नियंत्रित होने के और अधिक फैली. हमेशा ऐसी हालत में विद्रोह की भावना पैदा होती है. छेड़खानी की हरकतें भी ज्यादातर वही छात्र या व्यक्ति करते हैं जिन के लिए लड़की एक अजूबा होती है और जो ऐसे परिवारों या कालिजों से आते हैं जहां लड़कियों से उन का मेलजोल नहीं हो पाता है.

इस का अर्थ यह भी नहीं है कि छेड़खानी की खुली छूट दे दी जाए. लोगों में यह भावना भरी जाए कि अगर वे गलत काम करेंगे तो उन्हें सजा मिलेगी, पर इस से भी ज्यादा जरूरी बात यह है कि ऐसा माहौल तैयार किया जाए जिस में युवकयुवतियां एकदूसरे से मिल सकें. तभी इस समस्या को हल किया जा सकता है. ●

छेड़खानी एक ऐसा अपराध है जिस पर हर हालत में रोक लगाई जानी चाहिए, पर क्या इस के लिए सिर्फ पुरुष ही दोषी हैं? लड़कियों का कोई दोष नहीं हैं? अकसर यह देखने में आता है कि बहुत सी लड़कियों या महिलाओं का पहनावा ऐसा होता है जो लोगों का ध्यान सहज ही अपनी ओर खींच लेता है.

उदाहरण के लिए बहुत सी लड़कियां टाप अंदर डाल कर इतनी कसी जींस पहनती हैं कि उन के शरीर का हर अंग लगभग झलकता हुआ नजर आता है. कुछ लड़कियां व महिलाएं बहुत निचले गले के ब्लाउज पहनती हैं, जिस से उन का वक्ष तक दिखाई पड़ता है. अंदर की ब्रा का दिखते रहना तो आम बात है.

रोकथाम जरूरी है

यह बात विशेष तौर पर तब देखने को मिलती है, जब कोई पुरुष किसी महिला या लड़की से बात करने उस के पास पहुंचता है. उस समय वह पहले उस युवक की ओर देखती है, फिर अपनी साड़ी का पल्लू ब्लाउज के ऊपर लेने की कोशिश करती है. इस से अगर उस व्यक्ति का ध्यान इस ओर न भी जा रहा हो तो चला जाता है.

स्वयं पंजाबी लड़कियों ने यह बात स्वीकारी कि बहुत सी पंजाबी महिलाओं के ब्लाउज इतने छोटे व पेट इतने बाहर निकले होते हैं कि सहज ही लोगों का ध्यान उन की ओर आकर्षित हो जाता है. बसों में चढ़तेउतरते समय या सामान्य रूप से खड़े होने पर भी वे इस बात का ध्यान नहीं रखतीं कि उन का शरीर किस तरह दूसरों से छू रहा है. बहुत सी लड़कियां व महिलाएं पारदर्शी कपड़े पहनती हैं, जिस से उन के अंग या अंदर के वस्त्र स्पष्ट नजर आते हैं.

इस पर भी लड़कियां पुरुषों से यह अपेक्षा रखती हैं कि वे कोई अभद्रता या छेड़खानी न करें. इस तरह अंगों के प्रदर्शन का समर्थन करते हुए एक लड़की ने यह तर्क दिया कि बाजार में शो केस में बहुत सी खूबसूरत चीजें रखी होती हैं, पर इस का अर्थ यह तो नहीं कि कोई उन्हें लूटने का प्रयास करे या छीनना चाहे.

सिर्फ तर्क करने के लिए यह तर्क अच्छा साबित हो सकता है, पर यह बिलकुल भी व्यावहारिक नहीं है. यह तो वही बात हो गई कि लोग यह कहने लगें कि हम तो अपने घरों में ताले नहीं डालेंगे, सामान खुला छोड़ देंगे. आखिर पुलिस किस लिए है? सुरक्षा की दृष्टि से कुछ बातों पर ध्यान देना जरूरी है.

आग बुझाने के लिए दमकल है. यह अच्छी बात है. पर इस का अर्थ यह तो नहीं है कि आप इतने लापरवाह हो जाएं कि जलती तीलियां इधरउधर फेंकते फिरें. कुछ सुरक्षात्मक कदम तो उठाने ही पड़ते हैं.

दोष लड़कियों का भी है

यह देखा गया है कि बसों में अकसर जब लोग उलटे सीधे मजाक या हरकतें करते हैं तो लड़कियों को भी इस में मजा आता है. वे भी मुसकराती हैं या दूसरे तरीकों से उन की बातों में अपनी रुचि प्रदर्शित करती हैं. बाद में जब ऐसा करने वालों की हिम्मत बढ़ जाती है तो वे उन्हें भलाबुरा कहने लगती हैं.

उदाहरण के तौर पर एक बस में एक महिला के लिए कुछ लड़के खास तौर पर बस रुकवाते हैं. वह आगे के दरवाजे से चढ़ती है. किसी अच्छे परिवार से संबंध रखने वाली यह महिला एक बैंक में काम करती है. वह या तो ड्राइवर के पास बोनट पर बैठ जाती है या फिर उन आवारा युवकों के साथ. इस में कोई दो राय नहीं है कि बस में बहुत भीड़ होती है और उस में बैठने की जगह प्राप्त कर सकना तो दूर खड़े हो पाना भी मुशकिल होता है.

ये लड़के उस महिला के साथ छेड़छाड़ करते रहते हैं. उस से चिपक कर बैठ जाते हैं. उस के सामने अश्लील बातें करते हैं. एक दिन वह महिला अपने बैंक में उन लड़कों की छेड़खानी के बारे में शिकायत करने लगी. जब उस की सहकर्मी एक महिला ने उस से यह कहा कि वह उन लोगों के साथ बैठना बंद क्यों नहीं कर देती तो वह छूटते ही बोली, "मजबूरी है."

छेड़खानी से बुरी तरह परेशान एक महिला ने जोरदार शब्दों में मांग की कि जो भी व्यक्ति छेड़खानी करता पाया जाए, उसे इसलामी देशों की तरह 20 कोड़े सार्वजनिक स्थल पर लगाए जाएं. जब उस से यह कहा गया कि क्या वह जानती है कि इन देशों में जो महिलाएं बुरके के बाहर चेहरा निकाल लेती हैं उन्हें क्या सजा मिलती है तो उस ने कहा, "हमारे देश में भी ऐसा कानून बनाया जाए, जिस के अंतर्गत महिलाओं के लिए पोशाक निर्धारित हो. जींस, लो कट ब्लाउज, पारदर्शी कपड़ों पर रोक लगाई जाए."

पर उस महिला के साथ की अन्य युवतियां उस की इस बात से सहमत थीं कि छेड़खानी करने वालों को कड़ी सजा दी जाए. वे इस बात के लिए भी तैयार नहीं थीं कि उन के कपड़ों के बारे में सरकार कोई कानून बनाए. इस बारे में उन का कहना था कि यह उन की व्यक्तिगत आजादी का सवाल है, यह उन की मर्जी है कि वे कुछ भी पहनें. इस पर लोग प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले कौन होते हैं? सभी लड़कियां यह मानती हैं कि बहुत सी पोशाकें ऐसी होती हैं जिन से उन के अंगों का प्रदर्शन होता है, पर इस पर लोगों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त करने को वे उन का ओछापन बताते हुए पश्चिमी देशों का उदाहरण देती हैं जहां मात्र बिकनी पहन कर घूमने वाली महिलाओं के साथ भी कोई अभद्र हरकत नहीं की जाती.

आखिर हल क्या है?

उन के इस तर्क के उत्तर में सिर्फ यही कहा जा सकता है कि वहां इस तरह की पोशाक आम हो गई है. जब इनसान नंगा रहता था तब सिर्फ इसी लिए छेड़छाड़ नहीं की जाती थी कि रोज नंगे शरीर देखना उन के लिए आम बात हो गई थी.

उन का यह तर्क तो वैसा है जैसे स्वयं शराब बेचने का लाइसेंस देने वाली सरकार किसी व्यक्ति के शराब पी कर नशे की हालत में सड़क पर अनापशनाप बकने पर उस से यह कहे, "तुम शराब पी कर सरे आम ये हरकतें क्यों कर रहे थे?" इस का मतलब तो यह हुआ कि सरकार यह तो चाहती है कि यह शराब बेचे, पर लोग उसे पी कर नशे में न आएं, क्या ऐसा संभव है?

जो व्यक्ति छेड़खानी करे, उसे कड़ी सजा जरूर मिलनी चाहिए, पर इस के साथ ही यह भी जरूरी है कि लड़कियां व महिलाएं भी अपनी तरफ से ऐसी परिस्थितियां पैदा न होने दें, जिस से छेड़खानी को बढ़ावा मिल सके. ●

एक दिन के लिए करोड़पति

मिलान (इटली) में रहने वाले अवकाश प्राप्त वयोवृद्ध पतिपत्नी जिन की सालाना आय करीब 80,000 रुपए है, अचानक एक दिन के लिए करोड़पति बन गए.

एक दिन कर विभाग ने अपने कागजात में घोषित किया कि इस दंपती की सालाना आय एक करोड़ रुपए है. इस खबर की गंध मिलते ही अखबारों के संवाददाता उन के घर की ओर भागे. इटली के अखबारों ने इसे सब से महत्त्वपूर्ण खबर के रूप में छापा, क्योंकि ये पतिपत्नी एकएक मिलान के सब से धनी व्यक्ति हो गए थे.

24 घंटे के बाद कर अधिकारियों ने बताया कि उन के कंप्यूटर की गलती के कारण उस कंपनी की आय के आंकड़े गलत हो गए थे.

केरल का पेरियार अभयारण्य
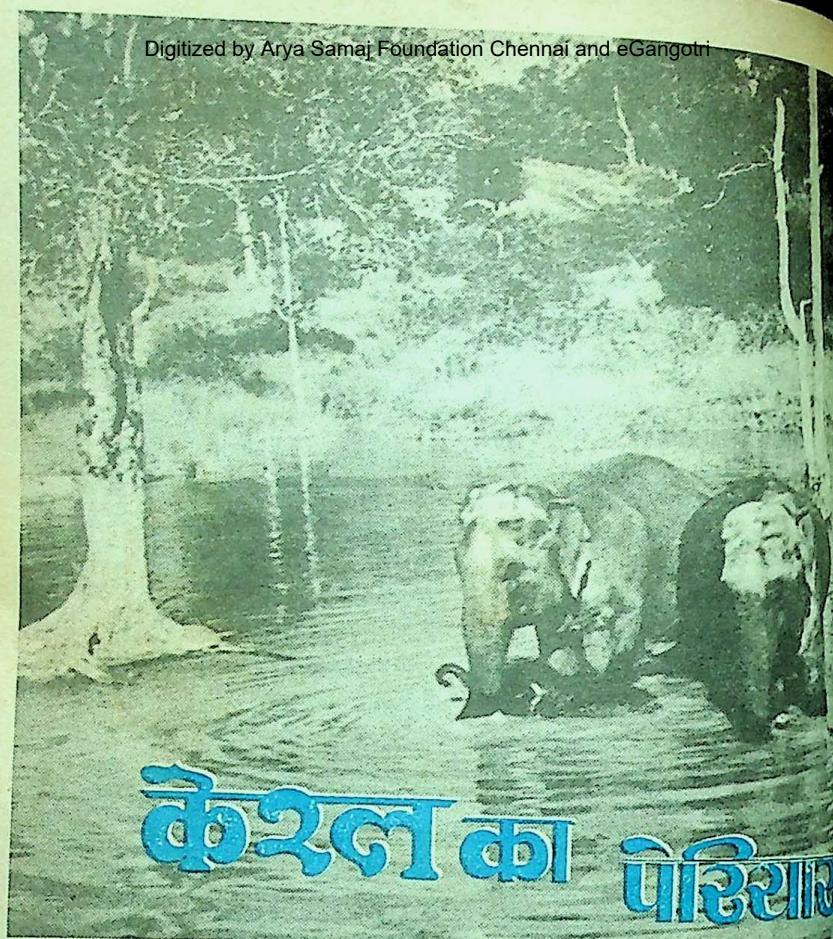
लेख • सतीशकुमार जैन

उत्तर में कशमीर एवं दक्षिण में केरल राज्य प्राकृतिक सौंदर्य के लिए प्रसिद्ध है.

केरल प्रदेश जैसी हरियाली भारत के अन्य किसी राज्य में नहीं है. वर्ष भर समशीतोष्ण जलवायु तथा मई के मध्य से ले कर लगभग अगस्त तक की भारी वर्षा ने केरल को अनेक प्रकार के वृक्षों– बांस, मसालों व रबड़ आदि के वृक्षों से समृद्ध किया है. जहां भी जाइए, हर मौसम में हरियाली ही हरियाली, ऊंचेनीचे घाट क्षेत्र, समुद्री किनारे व कलकल करते नदीनाले मिलेंगे. प्रकृति ने हस्तमुक्त हो कर केरल को हरित सौंदर्य प्रदान किया है.

केरल का प्रसिद्ध पेरियार अभयारण्य देश के राष्ट्रीय वन उद्यानों एवं अभयारण्यों में काफी बड़ा है. यह देश के पश्चिमी घाट के इदुक्की जिले में स्थित है. इस को पेरियार नाम केरल की पेरियार नदी से मिला है, जिस का अर्थ होता है– बड़ी नदी.

1933 में तत्कालीन त्रावणकोर रियासत ने राबिनसन नामक एक अंगरेज की विशेष वन्य जीव रक्षा अधिकारी के रूप में नियुक्ति की. उस समय कुप्रबंध के कारण गिरोहबंद व्यक्ति यहां के हाथियों का उन के दांतों के लिए तथा गौरों (एक प्रकार का हिरन) का मांस के लिए बड़ी संख्या में व

प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर पेरियार अभयारण्य में ऐसा क्या आकर्षण है कि दूरदराज से दर्शक इस की ओर खिंचा चला आता है?

अभयारण्य

करते थे. चीतलों और नीलगिरि के प्रसिद्ध ताहरों का बहुत बड़ी संख्या में शिकारियों एवं घुसपैठियों द्वारा वध किया जाता था और वनों को पशुओं की चराई तथा इलायची की खेती कर के बहुत क्षति पहुंचाई जाती थी. राबिनसन की सिफारिश पर पेरियार झील के पास का 15 वर्ग किलोमीटर का आरक्षित क्षेत्र 1934 में एक अभयारण्य के रूप में परिवर्तित किया गया और उसे नाम दिया गया— नेल्लीक्कामपेट्टी अभयारण्य.

कालांतर में इस का क्षेत्र विस्तृत कर के पेरियार झील के संपूर्ण आरक्षित क्षेत्र को तथा माउंट प्लेटों एवं रटैंडन घाटी को इस के अंतर्गत कर दिया गया. 11 अगस्त, 1950 को केरल राज्य की सरकार ने इस को पेरियार वन्य जीव अभयारण्य नाम से विधिवत घोषित कर दिया.

पेरियार अभयारण्य का क्षेत्रफल 777 वर्ग किलोमीटर है. पठार जैसे दिखने वाले इस संपूर्ण क्षेत्र की समुद्रतल से ऊंचाई 914 मीटर से ले कर 2,438 मीटर तक है. इसी कारण यहां का मौसम सुहावना रहता है. 26 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल वाली पेरियार झील यहां का एक बड़ा आकर्षण है.

अधिक संख्या में होने के कारण हाथी प्रायः यहां झुंडों में दिखाई देते हैं.

वास्तव में यहां का मुख्य आकर्षण है हाथियों के झुंड, जिन को अन्य राष्ट्रीय उद्यानों एवं अभयारण्यों की तुलना में कहीं अधिक सुगमता से गहरी झील में स्नान व जलक्रीड़ा करते अथवा झील के किनारे पानी पीते हुए देखा जा सकता है. यहां के हाथी अपनी घूमने की प्रवृत्ति के लिए अत्यधिक प्रसिद्ध हैं.

झील से कुछ हट कर पहाड़ियों में अनेक सघन वन हैं. इन के सुखद साए में चरते एवं विश्राम करते हुए हाथी हर समय ही देखे जा सकते हैं. मोटरबोट अथवा साधारण नाव में बैठ कर गहरी झील में विचरण करते हुए कुछ ही मीटर की दूरी पर हाथियों के झुंडों को अपनी क्रीड़ा में मस्त या प्यास बुझाते हुए देखना सचमुच ही बहुत रोमांचक एवं आह्लादकारी होता है.

पुस्तकों में पढ़ने पर भले ही जंगली हाथी का नाम भय से शरीर में सिहरन उत्पन्न कर दे, किंतु यहां हाथियों का इतना समीप होना बहुत ही सुखद लगता है. साथ ही वन्य जीवन एवं वन्य जीवों के प्रति सहज ही करुणा एवं स्नेह उत्पन्न होता है.

ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि इस अभयारण्य में लगभग 800-1,000 हाथी हैं. इतनी अधिक संख्या में होने के कारण पर्यटकों को इन का झुंडों के रूप में दिखाई देना अवश्यंभावी है.

इस प्रख्यात अभयारण्य में हाथियों के अतिरिक्त गौर, बाघ, तेंदुए, भालू, जंगली सूअर, कुत्ते, सांभर, हिरन, चूहे जैसे छोटे खरगोश, नीलगिरि के काले लंगूर, जंगली बिल्ली, ऊदबिलाव, बड़ी गिलहरी आदि भी देखने को मिलते हैं. यहां हाथियों, गौरों और सांभरों की संख्या सब से अधिक है. गौरों के झुंड यहां इडापलयम के एयाप्याकुरक्कू के खुले मैदानों में देखे जा सकते हैं. प्रातः व सायंकाल सांभरों का दिखाई देना साधारण बात है. यहां अनेक प्रकार के विषैले व विषहीन सांप भी हैं, जिन में अत्यधिक विषैले किंग कोबरा भी यहां काफी संख्या में हैं.

वृक्षों पर नीलगिरि लंगूरों एवं बड़ी गिलहरियों की कूदफांद, जंगली कुत्तों का तेज दौड़ना तथा भालुओं का पहाड़ियों पर चढ़ना उतरना बहुत कौतूहलपूर्ण लगता है.

अभयारण्य में अधिक वर्षा वाले वन अधिक घने नहीं हैं. इन वनों में वृक्ष बहुत बड़ेबड़े और जोंकों से भरे हुए हैं. इन्हीं वृक्षों

के मध्य कभीकभी दिलेर बाघ एवं चालाक ...ए देखने को मिल जाते हैं. पेरियार अभयारण्य में बाघों की संख्या 35 है. बाघों की संख्या में वृद्धि के लिए देश में अब तक स्थापित 11 बाघ आश्रयस्थलों में यह दसवां है.

यहां के हाथियों की घुमक्कड़ प्रवृत्ति बड़ी विचित्र है. उन के एक स्थान से दूसरे स्थान को जाने की प्रवृत्ति का आरंभ मनुष्य द्वारा उन के आवास क्षेत्र में हस्तक्षेप करने के कारण हुआ. यह हस्तक्षेप इस पेरियार घाटी में बांध बनाए जाने के कारण यकायक पानी भर जाने की वजह से हुआ. इस झील के बनने से पूर्व से हाथी कभीकभार ही एक वन छोड़ कर दूसरे वन में जाते थे. झील बन जाने के पश्चात उन का एक स्थान से दूसरे स्थान पर आनाजाना नियमित रूप से आरंभ हो गया.

घुमक्कड़ प्रवृत्ति के आधार पर यहां के हाथियों को तीन श्रेणियों में बांटा जा सकता है. प्रथम श्रेणी के अंतर्गत आते हैं छोटे आकार के साधारणतया अस्वस्थ से दीखने वाले हाथियों के झुंड. ये यहां के सब से अधिक घुलमिल कर रहने वाले जीव समझे जाते हैं. ये झील के आसपास के क्षेत्र में ही रहते हैं तथा पर्यटकों के आनेजाने तथा मानवीय हस्तक्षेप एवं कोलाहल के अभ्यस्त हो गए हैं. झील में नाव द्वारा इन के पास 10 मीटर की दूरी तक पहुंचने पर भी व्यक्ति के लिए कोई खतरा नहीं है. ये हाथी देखने में डीलडौल से अच्छे नहीं होते.

दूसरी श्रेणी के अंतर्गत वे हाथी आते हैं जो पेरियार घाटी को दक्षिणपश्चिमी मानसून उठने पर छोड़ कर चल देते हैं. वर्षाकाल में संपूर्ण पश्चिमी घाट क्षेत्र में चारा एवं पानी पर्याप्त मात्रा में सुलभ हो जाता है. बांसों के नरम कल्ले और बड़ी मात्रा में चारा खाने वाले हाथी माउंट प्लेटो के घास से भरे मैदानों में घूमतेफिरते हैं. ये खुले स्थानों को छोड़ कर पंबा नदी की घाटी में स्थित भारी वर्षा वाले घने वनों में विचरण करते तथा पहाड़ी क्षेत्र से होते हुए पश्चिमी घाट की तलहटी तक पहुंच जाते हैं. अपनी संपूर्ण यात्रा में उन्हें कहीं न कहीं ऐसे क्षेत्रों से हो कर गुजरना पड़ता है, जहां आदमी काम कर रहे होते हैं. इस कारण मनुष्य उन के लिए अजूबा नहीं रहते.

तीसरी श्रेणी के अंतर्गत वे हाथी आते हैं जो पूर्व एवं दक्षिणपूर्व की ओर मुल्लायार एवं पेरियार नदी के ऊपरी भाग के उन वनों की ओर जाते हैं, जिन में अभी तक विकास कार्य आरंभ नहीं हुए हैं. जल वाले क्षेत्रों को पार करते हुए वे तमिलनाडु के पूर्वी ढलान वाले घाट क्षेत्रों तक पहुंच जाते हैं, क्योंकि इन क्षेत्रों में न तो कोई विकास कार्य हो रहा है और न ही यहां आबादी है. इस कारण ये मनुष्य की उपस्थिति के अभ्यस्त नहीं होते. पर्यटकों की नाव देखने पर या तो ये चौकन्ने हो कर छिपने के लिए भाग जाते हैं या पर्यटकों पर आक्रमण कर देते हैं. ऐसे हाथियों से पर्यटकों का सामना बहुत कम होता है.

यहां कुछ समय सूखा रहता है. इस के
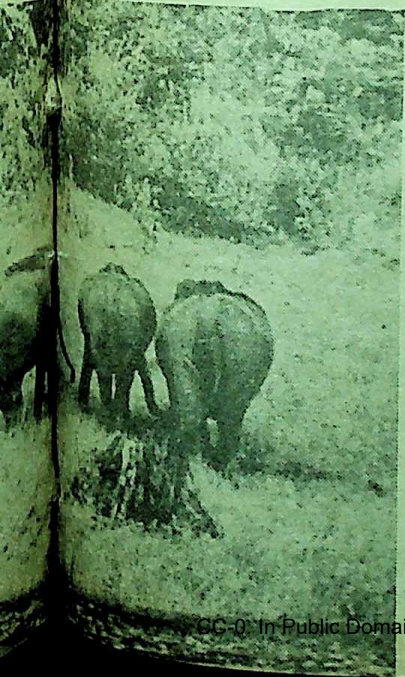
◀ **पेरियार अभयारण्य में क्रीड़ा में मस्त हाथियों को समीप से देखना भयावह नहीं बल्कि सुखद लगता है.**
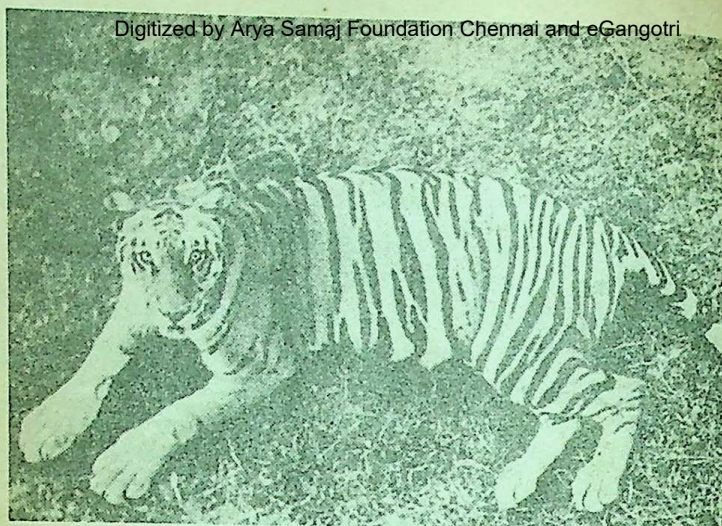
देश के इस दसवें बाघ आश्रयस्थल में 35 बाघ हैं जो बड़ेबड़े जोंकों भरे वृक्षों के मध्य कभीकभी दिखाई दे जाते हैं.

पश्चात वर्षा शुरू हो जाती है. इस प्रकार पर्वतीय क्षेत्रों में अक्तूबर तक हाथियों के लिए चारा एवं जल उपलब्ध रहता है. नवंबर के आरंभ होते ही कुछ माह के लिए शुष्क मौसम आ जाता है. इस में वृक्षों से पत्ते सूख कर गिर जाते हैं. घास व बांसों की झाड़ियां भी शुष्क हो जाती हैं. इस के कारण वनों में आग लगने की दुर्घटनाएं होने लगती हैं. आग से उठते धुएं से आतंकित हो कर हाथी इन क्षेत्रों से निकल कर अधिकतर झील के किनारे जमा हो जाते हैं. इस समय झील का दृश्य बहुत ही रोमांचक होता है.

दिसंबर तक हाथियों का लौट आना पूरे जोर पर रहता है. वापस आने पर वे फौरन ही झील के समीप रहना आरंभ नहीं करते. उन में से अधिकांश पहले तमिलनाडु के अधिक ढलान वाले उन क्षेत्रों में पहुंचते हैं जहां प्राकृतिक रूप से नमक प्राप्त होता है और फिर वहां से पेरियार झील के समीप वाले अपने आवास क्षेत्र में वापस आते हैं. कुछ माह तक तो यह समां बंधा रहता है कि झील के चारों ओर केवल हाथी ही हाथी दिखाई देते हैं. इस कारण इस अभयारण्य को देखने के लिए फरवरी से मई तक का समय सब से अधिक उपयुक्त होता है.

यहां साधारणतया दिसंबर एवं जनवरी में हथिनियां बच्चों को जन्म देती हैं. वर्षा के समाप्त होने तक वह इस योग्य हो जाते कि घूमनेफिरने में परिवार का साथ दे सकें. अपने बच्चों से हथिनियों का प्रेम तो प्रसिद्ध ही, हथिनियां तथा हाथी अपने बहुत छोटे बच्चों की रक्षा के प्रति बहुत सतर्क रहते हैं. बच्चों को बचाने के लिए वे अत्यंत आक्रामक भी हो जाते हैं. कोई हाथी किसी भी दशा में अपने बच्चों को छोड़ना पसंद नहीं करता.

पेरियार झील की गहराई बांध के समीप 46 मीटर और अन्य स्थानों पर [illegible] मीटर है. इस अभयारण्य के जीव मात्र इसी झील से अपनी प्यास बुझाते हैं तथा इसी में स्नान करते हैं. हाथियों के अतिरिक्त अन्य पशु भी इस झील के चारों ओर घूमते रहते हैं.

इस झील में अभी भी सूखे वृक्ष खड़े हैं. इन की कहानी बड़ी दिलचस्प है. 1895 [illegible] पहाड़ियों के मध्य पेरियार बांध का निर्माण पूर्ण होने पर बीच के 26 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में पानी भर गया था और उस को सुंदर व उपयोगी स्थल में बदलने के लिए झील के रूप में विकसित किया गया था पानी भर जाने

कारण वहां खड़े वृक्ष ... उन का प्राकृतिक स्वरूप विद्यमान रखने के तथा उन को वहां से उखाड़ा नहीं गया. इन वृक्षों पर अनेक प्रकार के पक्षी बैठते और चहचहाते हैं. इस झील में अनेक प्रकार की मछलियां भी हैं.

वन्य जीवों के अतिरिक्त पेरियार झील का प्राकृतिक सौंदर्य भी बहुत मोहक है. अभयारण्य के कार्यालय से ले कर झील तक, जहां से मोटरबोट में बैठना होता है, सुंदर पक्का मार्ग बना हुआ है, जिस पर दिन भर पर्यटक आतेजाते रहते हैं. घास से ढकी पहाड़ियां तथा हरेभरे वन वातावरण को सुखद बनाते हैं. चांदनी रातों में झील के ऊपर धीरेधीरे कोहरे की चादर फैलती हुई लगती है. यह चादर हटती है सूरज की सुनहली किरणों से और तब सारा वातावरण फिर वैसा ही सुखद लगने लगता है. यहां के दृश्य देख कर दृष्टि बंधी रह जाती है.

इस अभयारण्य में वर्ष में औसत वर्षा 2,500 मिलीमीटर होती है. यहां वन्य जीवों के लिए विविध प्रकार के आवासस्थल हैं. पूर्व एवं उत्तरपूर्व की पहाड़ियां शुष्क दिखाई देती हैं. पश्चिमी भाग में जहां वर्षा अधिक होती है, पतझड़ वाले वृक्षों से ले कर सदाबहार वृक्षों के वन भी दिखाई देते हैं. पश्चिमी घाट ... ओर अधिक जाने पर फिर पतझड़ वाले वृक्षों के वन मिलते हैं. वृक्षों में उगती नवीन पत्तियां विविध रंगों की झांकी प्रस्तुत करती हैं. नम भागों में तथा झील के किनारेकिनारे कहींकहीं बांस के झुरमुट भी देखने को मिलते हैं. घास से ढका 1,200 मीटर ऊंचा माउंट प्लेटो दूर से बहुत सुंदर लगता है.

अभयारण्य का कार्यालय एवं प्रवेशद्वार ठेक्केडी नामक स्थान में है कोचीन से सड़क द्वारा ठेक्केडी पहुंचने पर केरल के प्राकृतिक सौंदर्य एवं अनेक सुंदर झीलों को, जो ताड़ के वृक्षों से ढकी हैं, देखने का अवसर मिलता है. कोट्टायम से सड़क मार्ग द्वारा जाने में रबड़ व मसालों के वृक्ष दिखाई देते हैं. जैसेजैसे घाट क्षेत्र में ऊंचाई की ओर बढ़ते जाते हैं, वायु शीतल होती जाती है.

पेरियर अभयारण्य की ख्याति दिनोंदिन बढ़ रही है. विगत वर्षों में बहुत से विदेशी पर्यटकों सहित कई लाख व्यक्ति इसे देख कर आनंदित हुए हैं. राज्य सरकार द्वारा पर्यटन संबंधी सुविधाएं निरंतर बढ़ाई जा रही हैं. बाघ परियोजना में सम्मिलित कर लिए जाने के कारण केंद्रीय अनुदान द्वारा भी वन्य जीव स्थल एवं पर्यटन स्थल के रूप में इस का विकास किया जा रहा है. ●

फादर क्रिसमिस आपस में भिड़े

पिछले दिनों लंदन की एक सड़क पर दो प्रतिद्वंदी फादर क्रिसमिस एक दूसरे से भिड़ गए.

पहले दोनों ने एकदूसरे पर आरोप लगाए कि उन्होंने एकदूसरे के हलके में अनधिकार प्रवेश की चेष्टा की है. फिर क्रोध में आ कर वे भिड़ गए.

दोनों को एकदूसरे से गुत्थमगुत्था करते देख कर सड़क से गुजरने वाले लोग उन्हें आश्चर्य से देखने लगे. कुछ लोगों ने इस की सूचना पुलिस को दे दी. पुलिस ने ही दोनों को एकदूसरे से अलग किया.

लंदन के एक मजिस्ट्रेट ने दोनों को 50 पौंड के जुरमाने की सजा देते हुए कहा, "सड़क से गुजरने वाले जिन बच्चों ने आप लोगों को भिड़ते हुए देखा होगा, उन के मन में फादर क्रिसमिस की छवि अवश्य धूमिल हो गई होगी."

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

महिला ने प्रसव करती गाय को मरने से बचाया

कटनी से कुछ दूर कालूपडा घाट रेलवे स्टेशन के निकट रेलगाड़ी को रोक कर रेल की पटरी पर प्रसव कर रही जरसी गाय व बछड़े का जीवन बचा लेने वाली एक महिला को 50 रुपए का पुरस्कार दिया गया है.

सुनोदेवी नामक एक महिला अपनी गाय को चरा रही थी कि उस ने एक जरसी गाय को रेलगाड़ी की पटरी के बीच प्रसव करते देखा. इतने में गाड़ी आने की आवाज सुनाई पड़ी. सुनोदेवी बड़े साहस के साथ गाड़ी की दिशा में दौड़ पड़ी और अपनी लाल साड़ी आधी खोल कर हिलाने लगी. ड्राइवर ने इस खतरे का संकेत समझ कर गाड़ी रोक ली. इस तरह उस ने गाय व नवजात बछड़े को बचा लिया.

गाय के मालिक ने इस से खुश हो कर सुनोदेवी को एक लाल साड़ी और 500 रुपए का पुरस्कार दिया.

—दैनिक न्याय, अजमेर (प्रेषक : सुरेंद्रकुमार शर्मा)

(सर्वोत्तम)

*

उस ने 30 हजार के गहने लौटा दिए

नई दिल्ली में एक तिपहिया स्कूटर चालक ने अपनी ईमानदारी का परिचय दिया.

ऊषाबाला सुब्रह्मण्यम नामक एक महिला लियाकत अली की तिपहिया गाड़ी में डिफेंस कालोनी से जनपथ तक के लिए साकार हुई और 30 हजार रुपए मूल्य के स्वर्णाभूषण उस की गाड़ी में ही छोड़ कर चली गई. उक्त महिला को खोजने में असमर्थ हो कर ड्राइवर ने उक्त स्वर्णाभूषण थाने में जमा करा दिए.

ऊषाबाला सुब्रह्मण्यम को उस समय सुखद आश्चर्य हुआ जब पुलिस से संपर्क करने पर उन्हें अपना माल वापस मिल गया.

नई दिल्ली के पुलिस उपायुक्त ने लियाकत अली को एक प्रमाणपत्र एवं 50 रुपए का पुरस्कार दिया है. उक्त महिला ने भी ड्राइवर को पुरस्कार दिया.

—सन्मार्ग, कलकत्ता (प्रेषक : विजयकुमार पुरोहित)

*

लड़कियां उड़ाने वालों को पकड़ा

देवरिया में युवतियों का अपहरण कर उन्हें बेचने का धंधा करने वाले दो युवकों को पुलिस ने गिरफ्तार कर उन के मुंह पर कालिख पोत कर पूरे महल्ले में घुमाया.

ये दोनों अपहरणकर्ता विजयीपुर क्षेत्र से एक युवती को फुसला कर ले जा रहे थे. शक होने पर गांव के लोग तथा पुलिस वाले उन के पीछे लग गए और उन्हें पकड़ कर युवती को उन के पंजे से छुड़ा लिया.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : लखीराय अग्रवाल) •

गंध की किताब

ले में
ला गुलाब
ने लगा हम से
गई
की किताब

यों की बोलियां
भीगे
के छंद
याद आए
मिट्ठे
के निबंध.

पुरवाई
है बड़ी खराब
पूछने लगी हम से
सुधियों के
रेशमी हिसाब.

गुमसुम सी खिड़कियां
दो दिन
दो साल से लगे,
रंगों के काफिले
मकड़ी के
जाल से लगे.

बेचैनी
बढ़ी बेहिसाब
पूछने लगी हम से,
इस बोझिल
शाम का जवाब.

—हरीश निगम

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं कि[या तो] फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. [आज] भी हजारों वर्ग मील भारतीय [भूमि] विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पू[र्ति के] लिए बहुत बड़े पैमाने पर सा[मूहिक] सहयोग और सद्भाव की आवश्य[कता] होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबं[धित] नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार [की] सहायता स्वीकार करती है. यह के[वल] एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते [पर] निर्भर है. और वह हैं सरिता के पा[ठक]. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साह[न से] सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती [है].

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी [...] सरकार का और देशी व विदे[शी ...]

नीतिक दलों का बड़े पैमाने पर क्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण त्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र त्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी वास पर निर्भर है. साथ ही आप को अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप कुछ खर्च किए एक वर्ष में तामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी धिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा गे.

रितामुक्ता के प्रसारप्रचार की योजना से लाभ उठाने के लिए प को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए मा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का टस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे. रिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने नोटिस दे कर आप की अमानत आप को टा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता र्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ ज़मा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली " के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

यों तो स्विट्जरलैंड की राजधानी बर्न है किन्तु ज़ुरिक को इस की गुप्त राजधानी माना जाता है. राजधानी न होते हुए भी यह नगर अपनी किन्हीं विशेषताओं के कारण एक प्रकार से राजधानी की भूमिका निभाता है.

किसी भी देश की राजधानी इस की विशेषताओं का मुकाबला नहीं कर सकती.

एक बार एक करोड़पति अमरीकी महिला इस नगर में जमीन खरीदना चाहती थी. नगर के कानून के अनुसार कोई भी विदेशी नागरिक यहां जमीनजायदाद नहीं

ज़ुरिक

1,200 करोड़पतियों का नगर

लेख • अजयकुमार सिन्हा

खरीद सकता. [illegible] अधिकारी से तर्क करते हुए कहा, "आप इस बात को क्यों नहीं समझते कि मेरे इस नगर में ज़मीन खरीदने और आने से आप के नगर में करोड़ों रुपया आएगा."

इस पर उस अधिकारी ने जवाब दिया,

झील के उत्तरी छोर पर स्थित ज़ुरिक अपने भीतर तमाम विशेषताओं को समेटे है. पर्यटकों के आकर्षण का यह एक मुख्य केंद्र है. ये आकर्षण क्या हैं?
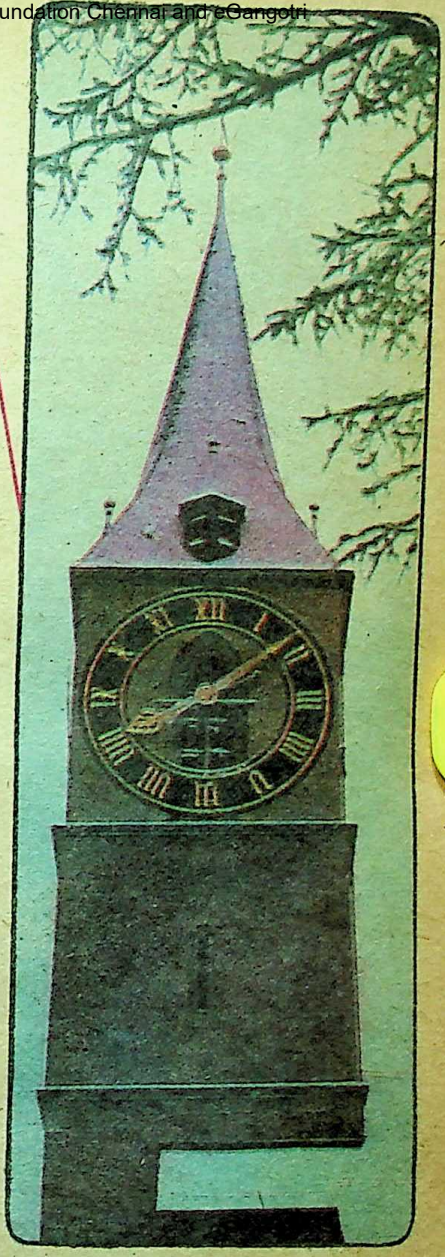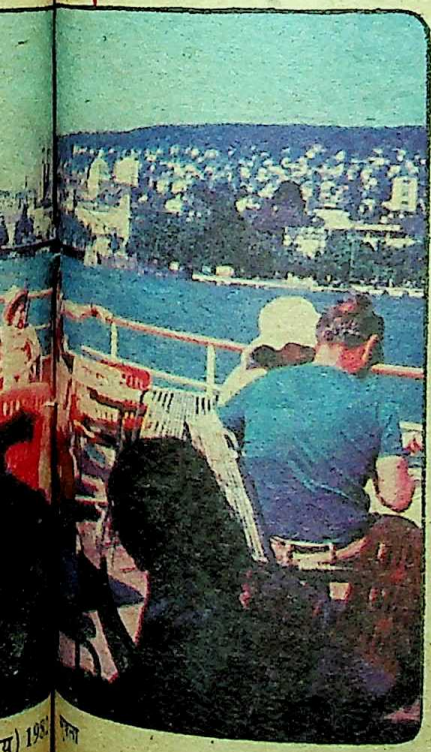
धनी और सुंदर होने के कारण यह नगर प्रमुख पर्यटन स्थल भी है.
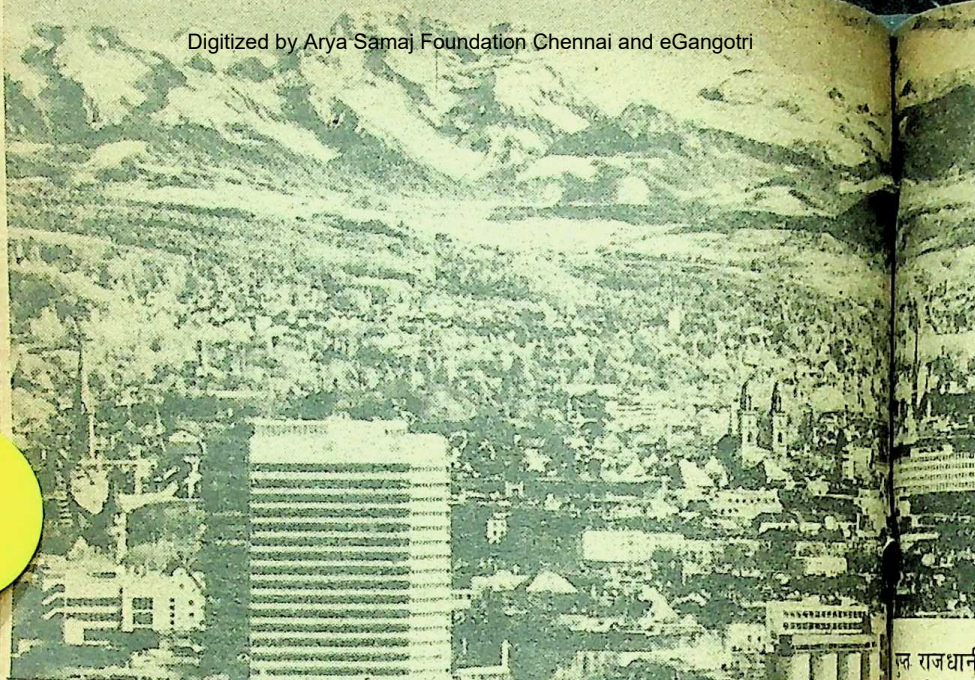
नगर के मध्य स्थित एक खास मनोरंजन क्षेत्र—नीडरडौर्फ. यहां हर समय चहलपहल रहती है.

जुरिक नगर का एक विहंगम दृश्य: प्रकृति और मनुष्य दोनों ने इसे सुंदर बनाया है.

"इस नगर में करोड़पति बहुत हैं. इस सम[य] तो हमें सफाई करने वाली औरतों की जरूरत है."

जुरिक नगर बहुत छोटा है. इस की आबादी सिर्फ चार लाख है. विदेशियों को चाहे यह नगर अपने यहां न बसने दे और उ[न] के आने से आन्ने वाले धन का लालच न करे किंतु यह नगर धन को आकर्षित करने वाला बहुत बड़ा चुंबक है और यहां धन कमाने के सभी स्रोत व जरिए उपलब्ध हैं. उदाहरण के लिए इस छोटे से नगर में 345 बैंक हैं जिनमें [...] गुप्त बैंक भी हैं जहां सारे संसार का गुप्त ध[न] रहता है.

जुरिक नगर में बैंकों के केंद्रित होने के कारण ही स्विटजरलैंड बैंकों का देश कहा जाता है. जुरिक के ये बैंक विदेशियों का गुप्त धन रखते हैं. जिस से स्विटजरलैंड में गुप्त रूप से अकूत मात्रा में विदेशी धन आता है और इसी लिए इस नगर को स्विटजरलैंड [...]
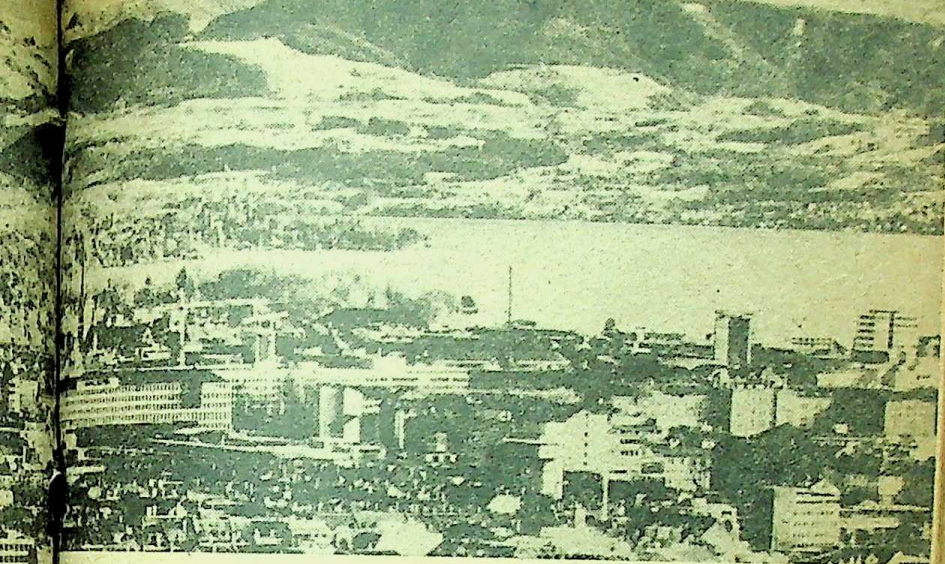
गुप्त राजधानी कहा जाता है. यह जुरिक नगर की पहली बड़ी विशेषता है.

जुरिक नगर का महत्त्व व ख्याति इस के महान विभूतियों से जुड़े होने के कारण भी है. महान वैज्ञानिक आइंसटाइन और मनोवैज्ञानिक कार्ल जुंग ने यहीं के फेडरल इंस्टिट्यूट आफ टेक्नालाजी में अध्ययन किया था. इस संस्था के नौ अध्यापकों को नोबल पुरस्कार मिल चुका है.

इसी नगर के ओडियन नामक कैफे में लेनिन ने कम्यूनिस्ट क्रांति की योजना बनाई थी. ट्राटस्की ने भी इसी कैफे में क्रांति की योजना तैयार की थी. इटली के भूतपूर्व तानाशाह मुसोलिनी ने भी अपनी फासिस्ट क्रांति की योजना इसी कैफे में बिलियर्ड खेल के दौरान बनाई.

विख्यात साहित्यकारों ने भी इस नगर को महत्त्व प्रदान किया. आयरलैंड के लेखक जेम्स जायस ने भी अमर महाकाव्य 'यूलिसिस' का अधिकांश भाग जुरिक में लिखा था. महान जरमन कवि गेटे और अंग्रेज उपन्यासकार समरसेट माम इसी नगर में जा कर विश्राम किया करते थे.

क्षेत्रफल की दृष्टि से जुरिक छोटा जरूर

0 किमी. 200
पश्चिम जरमनी
स्विटजरलैंड
जुरिक
बर्न
आस्ट्रिया
फ्रांस
जेनीवा
एड्रियाटिक सागर
लिगूरियन सागर
इटली
कोरसिका
सर्डीनिया
टिरीनियन सागर
कुमार
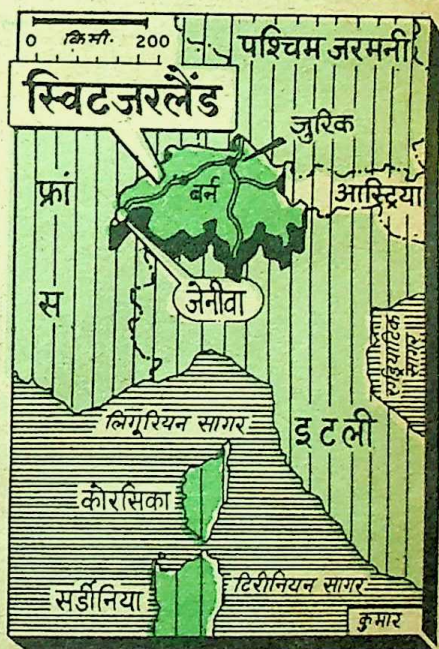
है किंतु स्विटजरलैंड का यह सब से बड़ा नगर है. उद्योग, व्यापार तथा बैंकिंग का यह सब से बड़ा केंद्र है. बहुत कम नगरों की स्थिति जुरिक जैसी होगी. यह नगर चौड़ी जुरिक झील के एक छोर पर गोलाई में बसा हुआ है.

नगर के सामने पानी, हरे मैदान, घने जंगलों तथा ऊंचेनीचे हिमाच्छादित के शिखर हैं. चमचमाते पानी की शांत झील पर सफेद पाल वाली नावें और गल पक्षी तैरते दिखाई पड़ते हैं. नगर के आधे भाग में पार्क, पानी, जंगल और खुले मैदान हैं.

झील के उत्तरी छोर पर स्थित

झील के उत्तरी छोर पर स्थित इस नगर में जहां सीधी ढाल वाली पतली गलियां और पुराने मकान हैं, वहां अत्याधिक आधुनिक इमारतें भी हैं. लिम्मात नदी नगर को दो भागों में विभाजित करती है– दि लिटिल सिटी (लघुनगर) और ग्रेट सिटी (विशाल नगर). ग्यारह पुल नगर के दोनों भागों को जोड़ते हैं.

सब से आश्चर्यजनक बात यह है कि ज़ुरिक में गगनचुंबी अट्टालिकाएं नहीं हैं. आधुनिक इमारतें हैं तो सही, पर बहुत ज्यादा ऊंची नहीं हैं. इस नगर का असली सौंदर्य आल्पस पर्वत है जिसे देख कर मनुष्य स्तंभित रह जाता है. इस सौंदर्य को पूर्ण रूप से सुरक्षित रखा गया है.

इस नगर में 1,200 से ज्यादा करोड़पति रहते हैं. यहां के प्रति व्यक्ति की सालाना आय 1.3 लाख रुपए है. उन के रहनसहन का स्तर यूरोप में सब से ऊंचा है. यद्यपि यहां अपूर्व समृद्धि है, फिर भी यहां के लोग धन का दिखावा व प्रदर्शन करना पसंद नहीं करते. वे विचारशील लोग हैं जो धन का सोचसमझ कर उपयोग करते हैं.

ज़ुरिक का इतिहास उतना ही पुराना है जितनी कि मानव सभ्यता. पांच हजार वर्ष पहले यहां के सब से पहले बाशिंदों ने झील के चारों ओर अपने आवास बनाए थे. दो हजार वर्ष बाद केल्ट जाति के लोग पश्चिमी यूरोप से आ कर यहां बसे. फिर ईसा के समय रोमन लोग यहां आए. प्राचीन रोमनवासियों ने ही इस स्थान को वर्तमान नाम दिया और यहां के अधिकांश निवासियों में रोमन पित्र्यगुण (जीन) है.

14वीं सदी में ज़ुरिक के प्रथम मेयर

लिम्मात नदी नगर को दो भागों में विभाजित करती है. पर 11 पुल नगर के दोनों भागों को जोड़ते हैं.

पाल वाली नौकाओं से चमचमाते पानी की शांत झील की छटा और निखर आती है.

...डोल्फ ब्रून ने स्थानीय शिल्पी संघों (गिल्ड) ...सरकार में भाग लेने का अधिकार दे कर ...नगर के प्रजातंत्र की स्थापना की. ...डुप्सवर्ग शासकों के खतरे से बचने के लिए कुछ ही समय बाद ज्यूरिक स्विस संघ में मिल गया.

(शेष पृष्ठ 46 पर)

तब मैं ग्यारहवीं कक्षा का छात्र था. मेरे एक अध्यापक बहुत ही सीधेसादे थे. उस समय वार्षिक परीक्षा की फीस कालिज में जमा हो रही थी.

एक छात्र उन के पास जा कर बोला, "श्रीमानजी, वार्षिक परीक्षा की फीस जमा करने की कल अंतिम तारीख है. घर में पैसों का इंतजाम नहीं हो सका है, फीस न जमा होने पर मेरा एक साल खराब हो जाएगा."

उन्होंने कहा, "शाम को मेरे घर आना और पैसे ले जाना."

शाम को वह लड़का उन के घर जा कर पैसे ले आया और अगले दिन उस ने फीस जमा कर दी. पर दूसरे दिन जब अध्यापक विद्यालय आए तो उन की हाथ की घड़ी नदारद थी. बहुत दिनों बाद हमें पता चला कि उन्होंने उस लड़के की फीस जमा कराने के लिए अपनी घड़ी बेच दी थी.

—राजेंद्रकुमार वर्मा (सर्वश्रेष्ठ)

*

हमारे गणित के अध्यापक प्रतिदिन 10 सवाल घर से हल कर के लाने को देते थे. एक दिन उन्होंने 10 की जगह 15 सवाल दे दिए. लेकिन कोई भी छात्रा नौ से ज्यादा सवाल हल कर नहीं पाई. तभी उन की नजर एक छात्रा पर पड़ी, जो चुपचाप बैठी थी. उन्होंने उस से पूछा तुम ने कितने सवाल किए. "सर, चौदह...."

अभी वह अपना वाक्य पूरा भी नहीं कर पाई थी कि उन्होंने कहा, "शाबाश, आज से तुम इस कक्षा की मानीटर हो.

शिक्षक के जाने के बाद हम ने उस से पूछा, "सीमा, तुम ने चौदह सवाल कैसे हल किए?"

उस ने कहा, "उन्होंने मेरी बात पूरी सुनी ही कहां? मैं कह रही थी कि, चौदह सवाल हल नहीं कर पाई हूं."

—कविता अग्रहरी

*

हमारे एक अध्यापक की कक्षा में सोने की आदत थी. एक बार वह आ कर बोले, "बच्चो, मैं सो रहा हूं, कृपया तुम शांत रहना."

कुछ समय बाद प्रधानाध्यापक उधर से गुजरे. उन्होंने देखा हमारे अध्यापक सो रहे हैं. उन्होंने कक्षा में आ कर उन्हें जगाया.

अध्यापक घबरा कर उठे और बोले, "हां तो बच्चो, मैं क्या कह रहा था."

इतने में हमारा एक दोस्त बोला, "आप कह रहे थे कि बच्चो मैं सो रहा हूं, कृपया तुम लोग शांत रहना." यह सुन कर सभी छात्र हंस पड़े और प्रधानाध्यापक ने उन्हें खूब डांटा.

—उदयकुमार गुप्त •

(पृष्ठ से 43 आगे)

16वीं सदी के डलरिच ज्विनगली नामक पादरी ने इस नगर को प्रोटेस्टेंट सुधार (ईसाई) आंदोलन का एक बहुत बड़ा केंद्र बना दिया. इंगलैंड, इटली, जरमनी व फ्रांस के प्रोटेस्टेंट शरणार्थी अत्याचार से बचने के लिए जुरिक आ गए. वे अपने साथ कारीगरी भी लाए थे. उन्होंने यहां वस्त्र उद्योग आरंभ किया, जो आज भी फलफूल रहा है. नगर में 19 प्रतिशत कर्मचारी विदेशी या प्रवासी हैं. जुरिक में आज तक कोई भी लड़ाईझगड़ा या संघर्ष और जातीय दंगे या विवाद नहीं हुए हैं. पिछले 50 वर्षों में यहां एक भी हड़ताल नहीं हुई है.

यहां प्रगति का प्रतीक समझी जाने वाली आधुनिक इमारतें तो हैं, पर गगनचुंबी नहीं.
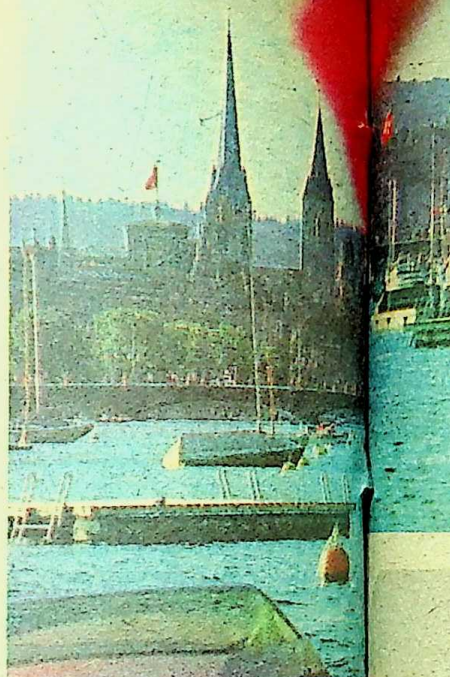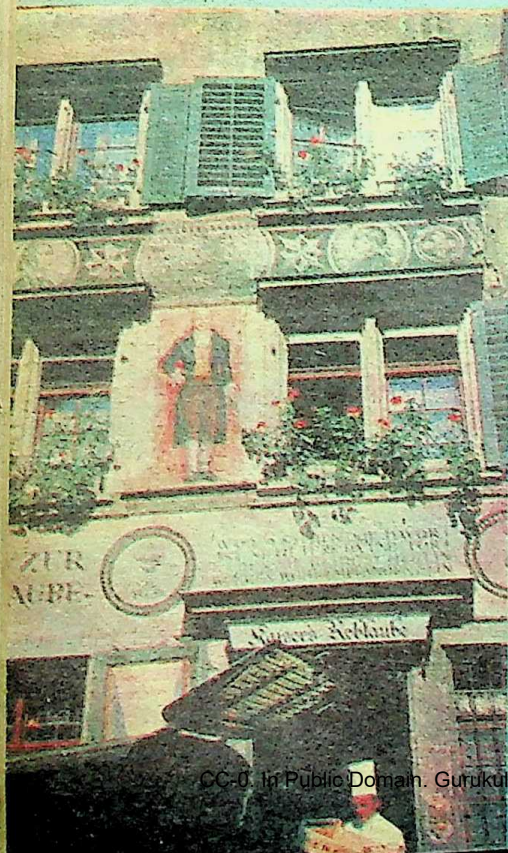
इस नगर की पहचान इतनी लोकप्रिय है कि इस नगर में क्याक्या है, यह सभी की उंगलियों पर रहता है. उदाहरण के लिए किस नगर के प्रशासन को यह ठीकठीक मालूम होगा कि उस के नगर में कितने वृक्ष हैं. जुरिक नगर में 16.079 वृक्ष हैं. यहां का प्रशासन नगर संपदा का कितना खयाल रखता है, यह इस बात को सूचित करता है. नगर में 100 कला केंद्र हैं जो अपने आप में आकर्षण हैं.

जैसा कि सभी जानते हैं, जुरिक अंतरराष्ट्रीय व्यापार और वित्त का केंद्र है. यहां का स्टाक एक्सचेंज (शेयर क्रयविक्रय स्थल), जिस की गतिविधियां, बाजारभाव व मूल्य तालिका को आर्थिक स्थितियों का संकेत देने वाले बैरोमीटर की तरह लिया जाता है और इसे सारी दुनिया के लोग उत्सुकता से देखते रहते हैं. सन 1877 में स्थापित हुआ था. इस की स्थापना से जुरिक वित्तीय मामलों का एक महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गया.

जुरिक में विज्ञान व तकनीक के दो प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय हैं. जुरिक
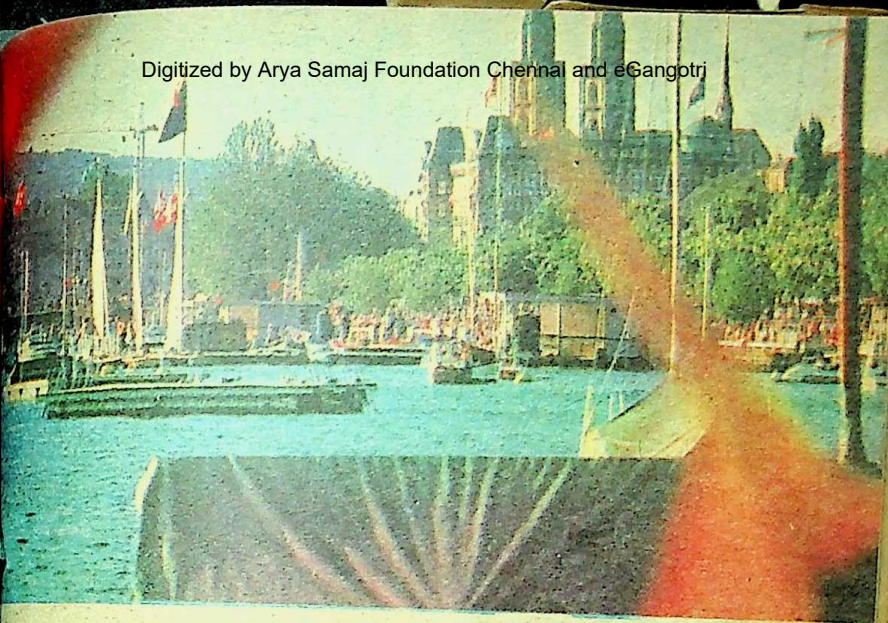
जुरिक के आधे भाग में पार्क, पानी, जंगल और खुले मैदान हैं.
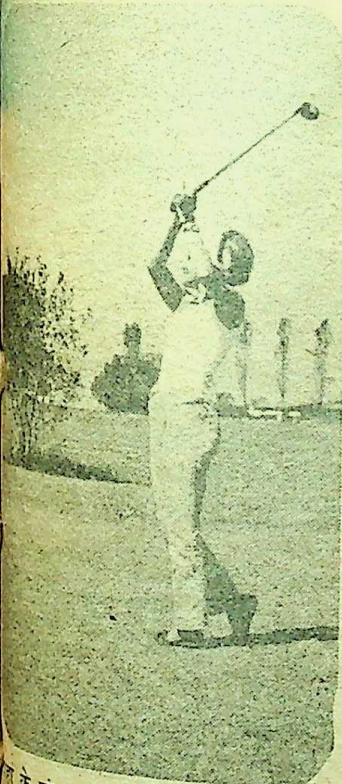
विश्वविद्यालय और फेडरल इंस्टिट्यूट आफ टेक्नालाजी. महान विचारक और नोबुल-पुरस्कार विजेता इन में प्रोफेसर रह चुके हैं.

जुरिक अपने बाजार, वाहनहोफस्ट्रास के लिए मशहूर हैं. इसे यूरोप का शापविंडो कहा जाता है. यहां राजा, महाराजा, राजकुमार, धनाढ्य और विख्यात व्यक्ति चीजें खरीदने आते हैं. उपभोक्ता की सब से महंगी और उच्च कोटि की वस्तुओं तथा विविध वस्तुओं की दुकानों के लिए जुरिक मशहूर है. ये दुकानें इस नगर की आय का सब से बड़ा स्रोत हैं. किंतु पर्यटन उद्योग भी उन से किसी कदर कम नहीं है.

किंतु जुरिक नगर में सब कुछ अच्छा ही नहीं है. यहां पर यूरोप में सब से अधिक यातायात रुकता है. आवास की कमी की समस्या भी जटिल है. भूमि की बहुत कमी है. किंतु यहां के लोग परंपरा और ईमानदारी में विश्वास रखते हैं. यही कारण है कि इस नगर ने इतनी तरक्की की है और यहां हिंसा, अपराध, संघर्ष, तनाव, हड़ताल जैसी कोई चीज नहीं है. ●

...के संपन्न निवासी सुंदर पार्कों में ...पूर मनोरंजन करते हैं.

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए. कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

तीन लाख मिले नहीं, 25 हजार चले गए

बिजनौर में धामपुर के निकटवर्ती ग्राम गोरना का एक अधेड़ ग्रामीण तीन लाख रु... पाने के चक्कर में अपने 25 हजार रुपए भी गंवा बैठा और एक ज्योतिषी उस का सब कुछ ... कर रफूचक्कर हो गया.

ज्योतिषी ने ग्रामीण को विश्वास दिलाया था कि ग्रामीण के घर में तीन कलश दबे हैं, ... में तीन लाख रुपए हैं. ये उसे मिल सकते हैं, यदि वह 25 हजार रुपए का देवी को प्रसाद चढ़ा...

ग्रामीण माया मोह में फंस गया. उस ने अपनी पांच बीघे जमीन व सोने, चांदी की ... चीजें आदि बेच कर ज्योतिषी को 25 हजार रुपए दे दिए.

ज्योतिषी धन ले कर लापता हो गया और ग्रामीण अब इस इंतजार में फक्कड़ बना बैठा ... कि तीन कलश उसे मिलेंगे तो वह लखपति कहलाएगा.

—सांध्य टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : मुकेशकुमार जैन 'पारस'...

*

दिल्ली में अनैतिक व्यापार का रोचक तरीका

दिल्ली में वेश्यावृत्ति का पेशा करने वाली महिलाओं ने शरीर का व्यापार करने का ... नया तरीका अख्तियार किया है. पुरानी दिल्ली के कुछ सिनेमाघरों के बाहर दोपहर से शाम तक ... के शो शुरू होने से पूर्व हर आयु वर्ग की ये महिलाएं इधरउधर खड़ी हो जाती हैं और सिनेमा ... दर्शकों को अपनी तरफ आकर्षित करती हैं. अगर कोई दर्शक इन्हें अपने साथ सिनेमा दिखा... ले जाना चाहे तो उसे इन के टिकट के अतिरिक्त सिनेमा हाल में आ कर दस से पंद्रह रुपए ... अतिरिक्त देने पड़ते हैं. इस के बाद ये महिलाएं एक सीमा तक दर्शक को समर्पित हो जाती हैं.

विशेष बात यह है कि सिनेमा हाल के अंदर ही ये महिलाएं दर्शक ग्राहक को पूरी तरह ... अपने मोहजाल में जकड़ कर अपने अड्डों तक ले जाती हैं और वहां अपने गुंडों की मदद से उन ... काफी पैसा खसोट लेती हैं.

बताया जाता है इन महिलाओं के अधिकतर शिकार वे लोग होते हैं जो दिल्ली भ्रमण ... किसी कार्यवश यहां आते हैं और स्टेशन के पास सिनेमा होने के कारण समय काटने के लिए ... फिल्म देखने आ जाते हैं. इन महिलाओं में एक बड़ा प्रतिशत तीस से चालीस आयु वर्ग का है... कुछ कम आयु की युवतियां भी इस पेशे से जुड़ी हैं.

—विश्वामित्र, कलकत्ता (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी...

*

बच्चे ने बड़े को झांसा दिया

भोपाल में भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स के एक कर्मचारी को एक बालक ने नशीला लड्डू ... खिला कर दस हजार रुपए का माल लूट लिया.

पुलिस के अनुसार चिरोंजीलाल नाम का व्यक्ति रेल से महिदपुर से भोपाल आ रहा था.

...ी रेलवे स्टेशन पर एक अज्ञात बालक ने भगवान के प्रसाद के नाम पर उसे नशीला लड्डू ...ला दिया. लड्डू खाते ही वह मूर्छित हो गया और वह बालक उस की अटैची ले कर फरार हो ...या.

—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : गोविंद राठी)

*

...बा का भंडा फूटा

मुजफ्फरपुर में बाबा रमण नाम के एक तांत्रिक को पुलिस ने धोखाधड़ी के आरोप में ...रफ्तार किया है. उस ने कई व्यक्तियों को ठग लिया.

पुलिस के अनुसार एक स्थानीय पत्रकार, जिस के संतान नहीं थी, बाबा का आशीर्वाद ...ने करने गया. बाबा ने इस के लिए उस से एक लाख रुपए की मांग की और घोषणा कर दी ...के उस की पत्नी गर्भवती हो गई है, लेकिन गुलाब के फूल से आपरेशन करने पर ही बच्चा पैदा ...गा. बाद में पत्रकार की पत्नी को एक कमरे में ले जाया गया और थोड़ी देर बाद उसे एक ...शिशु दे दिया गया. पत्रकार को इस पर संदेह हुआ तो उस ने मामले की सूचना पुलिस को दे दी. ...नी और महिला की डाक्टरी जांच कराई गई, जिस से बाबा का भंडा फूट गया. वह शिशु तीन ...ह का था.

—आज, पटना (प्रेषक : प्राणकुमार)

*

...स ने शेख बन कर नौकरी देने के बहाने ठगा

विदेशों में नौकरी का झांसा दे कर लाखों रुपए ठगने के आरोप में दिल्ली पुलिस ने एक ...कली शेख और उस के चार अन्य साथियों को नई दिल्ली में गिरफ्तार किया है.

पुलिस के अनुसार उन लोगों ने 45 से अधिक व्यक्तियों को धोखा दे कर पौने दो लाख से ...धिक रुपए ऐंठ लिए. उन के शिकार दिल्ली, उत्तर प्रदेश और पंजाब के लोग हुए.

इस गिरोह के सदस्य लोगों को सऊदी अरब में नौकरी दिलाने का झांसा देते थे. गिरोह के ...न से 45 पासपोर्ट, 52 मेडिकल सर्टीफिकेट और अन्य आपत्तिजनक दस्तावेज बरामद हुए हैं.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : गुरविंदरसिंह नारंग)

*

...क्री कर निरीक्षक बन कर धोखा

गाजीपुर में नकली बिक्री कर निरीक्षक बन कर तीन व्यक्तियों के एक गिरोह ने ट्रक ...लकों से हजारों रुपए ऐंठ लिए.

इस गिरोह ने अपनी कार पर भारत सरकार लिखवा रखा था.

इस गिरोह ने एक दिन में कई ट्रक चालकों से चालान फार्म मांगे तथा न दिखा पाने पर ...न्हें धमका कर हजारों रुपए ऐंठ लिए.

इस संबंध में एक ट्रक चालक ने कोतवाली में यह रिपोर्ट लिखाई कि उक्त लोगों ने ...तौल दिखा कर उस से 35 हजार रुपए मूल्य के कपड़े आदि छीन लिए.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : लखनलाल गुप्त)

*

...क पत्नी के होते दूसरी शादी नहीं

गुरुव्यूर में एक पत्नी के रहते दूसरी शादी करने गए युवक को उस समय बैरंग लौटना ...ा, जब उस की पहली पत्नी मंडप में पहुंच गई.

उस युवक की पत्नी ने अपने कुछ समर्थकों के साथ मंडप में पहुंच कर दूल्हे और बरातियों ...झगड़ना शुरू कर दिया, पर कन्या पक्ष के लोगों ने कुछ नहीं कहा.

किंतु जब शोरशराबा अधिक बढ़ गया तो बात जान कर बरात को मंडप से बाहर निकाल ...दिया गया.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषिका : लक्ष्मी नेगी) **(सर्वोत्तम)** •

सलज चुंबन

सैकड़ों बार बरसी
घटाएं मगर,
रंग हलका हुआ तक
नहीं प्यार का.

विश्व ने विघ्न डाले
दीवारें चुनीं,
छल किया सत्य से
फिर कथाएं बुनीं,
इंगितों के मुखर
मौन संसार का.

देख कर भावुकों की
विकल बेबसी
दुख दिया
वक्त ने भी
उड़ाई हंसी
चुंबनों के सलज
सुर्ख व्यापार का.
है नहीं प्यार तो,
व्यक्ति वीरान है,
सांस लेता हुआ
एक श्मशान है,
रूप रस गंध के
तीजत्योहार का.

—इसाक 'अश्क'

सीमा के पार

लेख • जितेंद्र धवन

अपनी इस यात्रा के दौरान मुझे एकदम नए अनुभव प्राप्त हुए. सीमा के पार के इस देश की वर्तमान स्थिति आप भी जान लें.
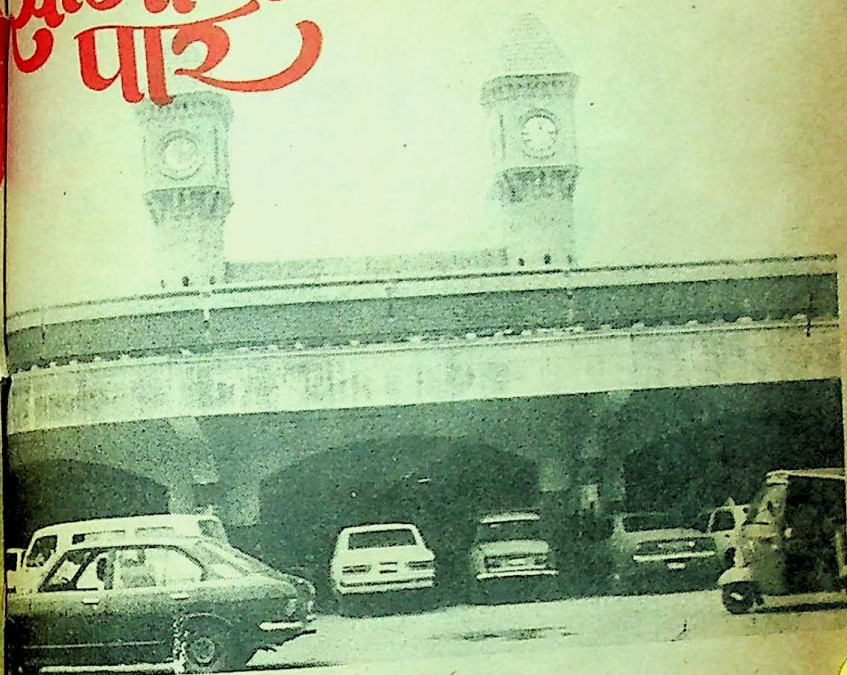
आकाश में सूरज चमक रहा था. धीरे धीरे रेलगाड़ी मुझे उस ान की ओर ले जा रही थी, जिसे देखने की मैं बरसों से मन में संजोए हुए था. तभी न कहां से आकाश में काली घटा घिर आई देखते ही देखते मूसलाधार वर्षा होने . दोनों तरफ हरेभरे खेत दिखाई दे रहे थे. में भीगते हुए एक वृद्ध किसान और उस टे का दृश्य आज भी मेरी आंखों में सजीव उठता है. कहीं दूर से यदाकदा डस्पीकर से निकलती गुरुवाणी की ज मेरे कानों को छू जाती थी.

धीरेधीरे गाड़ी की रफ्तार कम होनी हो गई. अटारी जंक्शन आ गया था. उधर पुलिस वाले घूम रहे थे. हम सभी उतरे. कस्टम आदि की औपचारिकताएं कीं और पुनः रेलगाड़ी में बैठे गए.

र्य अभी तक बादलों के साथ आंख मिचौली खेलता हुआ दोबारा तेजी से चमकने लगा था और मंथर गति से हमारी यात्रा जारी थी.

मेरी जिज्ञासा बढ़ती जा रही थी और मैं एकटक हरे खेतों को निहार रहा था. अचानक किसी ने ऊंचे स्वर में कहा, "हम पाकिस्तान में प्रवेश कर चुके हैं." लेकिन प्राकृतिक दृश्य तो जैसे किसी देश की सीमा के मुहताज नहीं होते. दो मिनट पूर्व जो प्राकृतिक दृश्य मैं देख रहा था, उस में सीमा पार कर लेने के बावजूद
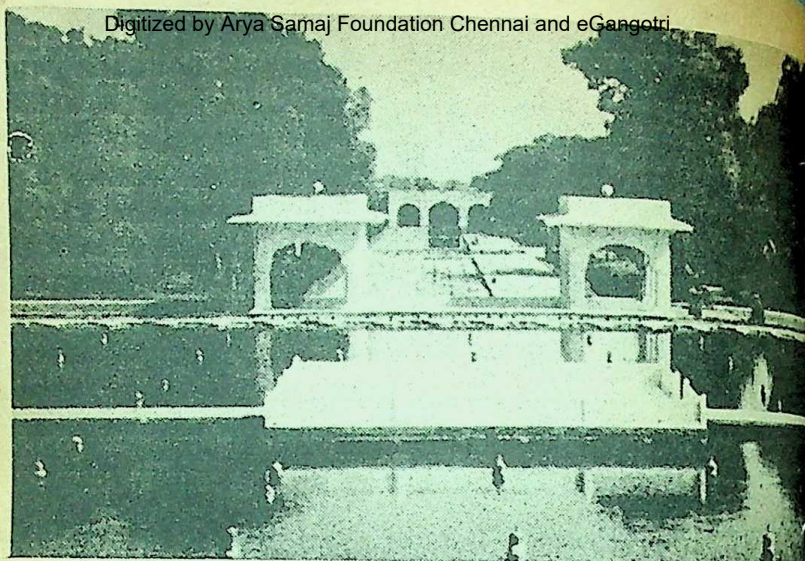
मुगल शानशौकत का नमूना लाहौर स्थित शालीमार बाग.

लेशमात्र भी अंतर नहीं आया था.

चिचियाती आवाज में गाड़ी के ब्रेक लगे और नीचे उतरते ही हम ने अपनेआप को पुलिस वालों की भीड़ से घिरे पाया. हमें कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ी और कस्टम की औपचारिकताएं पूरी करने के बाद मैं खुले में आ गया. अब मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना न था. मैं तो अपने मस्तिष्क में एक पूरे नए संसार की कल्पना ले कर आया था. मैं लाहौर के रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा था, लेकिन ऐसा महसूस हो रहा था कि दिल्ली के ही रेलवे स्टेशन के बाहर खड़ा हूं. कहीं भी कोई अंतर नहीं. वैसे ही चेहरेमोहरे वाले लोग, वैसे ही खोमचे वाले, वैसा ही भीड़भड़क्का. हां, एक चीज जरूर थोड़ी अलग थी– सारी मोटर कारें विदेशी थी. विदेशी कारें, विदेशी मिनी बसें और तभी एक हौंडा मोटर साइकिल जूं... का स्वर करते हुए मेरी बगल से गुजर गई.

मेरे पिता के बचपन का एक मुसलमान दोस्त स्टेशन के बाहर मेरी प्रतीक्षा कर रहा था. मुझ से मिल कर उस की खुशी की कोई सीमा न रही. अब हमारी कार लाहौर की सड़कों पर तेजी से दौड़ रही थी. मैं जैसे खिड़की के बाहर के सारे दृश्यों को अपनी जिज्ञासु आंखों से पी जाना चाहता था. मेरा मेजबान पूछ ही बैठा, "तुम्हें इतना आश्चर्य क्यों हो रहा है?"

जमीन और लोग तो वही है.

"देखिए, साहब, जब मैं यहां आ रहा था तो मेरे मन में यहां की एक बिलकुल अलग तसवीर थी. मैं ने बिलकुल अपने से भिन्न स्थान और लोगों की कल्पना की थी, लेकिन यह तो बिलकुल मेरे शहर जैसा लगता है," मैं ने उत्तर दिया.

"बेटे, ये सभी दूरियां आदमियों ने बनाई हैं. लोग, जमीन तो वहीं के वहीं हैं." और तभी उन का घर आ गया.

घर पहुंच कर मैं नहानेधोने से निवृत्त हुआ और फिर डट कर भोजन किया. घर के सभी सदस्यों से मेरी मुलाकात हुई. एक लड़का डाक्टरी पढ़ रहा था, एक लड़की अभी स्कूल में पढ़ रही थी. वृद्ध दंपती के बाल सफेद हो चुके थे. सब के सब भारत के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे. घर के सभी युवा सदस्य भारत से उतने ही अनभिज्ञ थे जितना कि मैं पाकिस्तान से. वे लाल किला, ताजमहल और जामा मस्जिद के बारे में जानने को उ...

...त्सुक थे.

भारत से एक नौजवान आया है– यह ...बर आसपड़ोस में फैलते देर न लगी. सभी ...हां आ कर इकट्ठा हो गए. एक ने सब से ...हला सवाल यही पूछा, "आजकल ...ल्लीमारान के क्या हालात हैं?" विभाजन से ...वं उस का वचपन दिल्ली के बल्लीमारान में ...वीता था.

लाहौर का अनारकली बाजार

लाहौर का अनारकली बाजार अपने-...प में काफी मशहूर है. विभाजन से पूर्व का ...ह बाजार आज भी जैसे का तैसा है और उस ...साथ ही नया बाजार भी बन गया है. इस ...चमाते बाजार में अधिकतर विदेशी ...स्तुएं बिकती हैं. पटरियों पर लगी दुकानें ...रानी दिल्ली जैसी ही हैं, जहां काफी ...व्यापारिक होड़ है और खूब सौदेबाजी की ...ती है. लता मंगेशकर को वहां सभी बहुत ...सन्द करते हैं और उन के गानों के कैसेट भारी ...संख्या में बिकते हैं.

सड़कों पर तिपहिया स्कूटर, इटली ...निर्मित वेस्पा तथा विदेशी कारें बड़ी संख्या में ...च रही थीं.

एक जगह से मैं ने तिपहिया स्कूटर ...लिया, जिस का ड्राइवर एक बूढ़ा आदमी था. ...समय काटने की गरज से मैं यों ही उस से बातें ...करता रहा. बातों ही बातों में यह जिक्र आ ...गया कि मेरे बापदादा इसी शहर के रहने ...वाले थे. यह जानने पर उस ने मुझ से किराया ...लेने से इनकार कर दिया. उस के इस व्यवहार ...ने मेरे मन को छू लिया.

पाकिस्तान में प्रवेश करते हुए कस्टम ...अधिकारियों ने मेरा ध्यान कुछ अनियमितताओं की ...ओर आकृष्ट किया. इशारा साफ था कि मुट्ठी ...गर्म करने से सब कुछ ठीकठाक हो जाएगा. ...और वास्तव में मुझे ऐसा ही करना पड़ा. ...पाकिस्तान जाने वाले प्रत्येक भारतीय को हर ...चौबीस घंटे के बाद एक विशेष थाने में जा ...कर हस्ताक्षर करने होते हैं. वहां पर भी मेरे ...कागजात एक हाथ से दूसरे हाथ में घूमते रहे ...जब तक कि मैं ने 'भेंटपूजा' नहीं चढ़ा दी.

उजाड़ पड़े हिंदू मंदिर. अधिकतर मंदिरों को मदरसों में परिवर्तित कर दिया गया है.

और पाकिस्तान छोड़ते समय भी कुशल कस्टम अधिकारियों ने किसी भी तरह ढूंढ़ कर मेरे कागजों में एक गलती निकाल दी, जिसे ठीक कराने को फिर भेंटपूजा का सहारा लेना पड़ा. इस बार रिश्वत न देने पर अनिष्ट की धमकी दी गई थी. इन सभी विभागों में रिश्वत का बाजार खुल्लमखुल्ला गरम है.

अपनी यात्रा के दौरान मेरी भेंट सरकारी नौकरी से अवकाश प्राप्त एक हिंदू से हुई. वह अभी तक कुंआरा था. उस ने बताया कि भारत और पाकिस्तान की लड़ाई के समय उस पर कुछेक पाबंदियां आयद की गई थीं. युद्धकाल में उस पर कड़ी नजर रखी जाती थी और जबतब उसे थाने में बुला कर उस से तरहतरह के सवाल किए जाते थे. वैसे उस का जीवन सामान्य था. आंसू भरी आंखों से उस ने मेरे द्वारा अपने रिश्तेदारों को अपना

संदेश भारत ... कुछ हिंदू
मित्रों के साथ मिल कर होलीदीवाली मना लेता था. क्रिकेट का खेल पाकिस्तान में काफी लोकप्रिय है.

व्यवसायों में महिलाएं नगण्य ही हैं. अब लड़कियों को पढ़ने भेजा जाने लगा है और कुछ लड़कियां लाहौर के मेडिकल कालिज में भी शिक्षा ग्रहण कर रही हैं. कालिजों में बुरकों का स्थान जींस आदि नए फैशनों ने ले लिया है.

पाकिस्तान के सुई नामक स्थान से काफी प्राकृतिक गैस निकलती है. सभी ग्राहकों को यह काफी सस्ते दामों पर उपलब्ध है. पटरी पर बैठा छोटे से छोटा खोमचे वाला भी इसे ही इस्तेमाल करता है.

शालीमार बाग पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है. इस के बड़ेबड़े उद्यान और फव्वारे दर्शक को मोह लेते हैं. फूलों से लहलहाती क्यारियां मुगलों के वैभव की याद ताजा कर देती हैं. यह बाग इतना विशाल है कि इस के कुछ हिस्सों को तो बंद कर देना पड़ा है, क्योंकि उन का रखरखाव संभव नहीं था.

गत गौरव की याद दिलाते मंदिर

वहां हिंदू मंदिरों के रखरखाव की कोई उचित व्यवस्था नहीं है, इसलिए अधिकांश मंदिर जीर्णावस्था में हैं. प्रायः सभी मंदिरों को मदरसों में परिवर्तित कर दिया गया है. लेकिन आज भी वे अपने गत गौरव की याद दिलाते हैं.

विभाजन के पूर्व लाहौर में शाह आलमी दरवाजे का इलाका हिंदुओं का गढ़ माना जाता था. कहते हैं मुसलमानों द्वारा इस इलाके में आग लगा देने पर ही हिंदुओं ने लाहौर से भागना शुरू किया था. इस क्षेत्र का पुनः निर्माण हो चुका है. हां, कुछ जीर्ण इमारतें आज भी अतीत की घटनाओं की मूक गवाह के रूप में खड़ी हैं.

पाकिस्तान को ले कर महंगाई की अफवाह एकदम बेबुनियाद नहीं है. जीवन की रोजमर्रा की चीजों से ले कर कभीकभी काम में आने वाली चीजें तक काफी ऊंची हैं और केवल बहुत धनवान ही रोज इस का आनद उठा पाते हैं. गरीबी भी हद हजें की है.

लाहौर में यातायात का सब से लोकप्रिय साधन मिनी बसें हैं. ये बसें हमारी मिनी बसों से थोड़ी छोटी हैं और इन्हें बाहर से रंगीन कागज आदि चिपका कर सजाया गया है. वैसे इन का रंग सफेद होता है. किराए काफी कम हैं लेकिन इन में भीड़ हमारी बसों से भी ज्यादा होती है. कहा जाता है कि यदि मिनी बस वाले हड़ताल कर दें तो लाहौर का सारा यातायात उसी क्षण ठप हो जाएगा. इस कथन से वहां की मिनी बसों की लोकप्रियता का पता चलता है.

भारत लौटते समय मैं उस स्थान को भी देखना नहीं भूला, जहां से दोनों देशों की विभाजन रेखा शुरू होती है. मैं ने ऊपर धरती पर खिंची तीन रेखाएं देखीं. बीच वाला क्षेत्र न हमारा है और न उन का. इधरउधर वाली रेखाएं सीमा रेखाएं हैं.

बीते युग की कहानी

न्यूयार्क में हाल में लगी एक प्रदर्शनी में फोटोग्राफी के क्षेत्र में जरमनी की पिछली शताब्दी की उपलब्धियों को दिखाया गया. यहां दिखाए गए 'इनिमिटेवल फाइडेलिटी' (अद्वितीय संलग्नता) नामक चित्रों में जरमन फोटोग्राफी के विकास का क्रम पेश किया गया है. इस प्रदर्शनी में एग्फागेवर्ट फोटो हिस्तोरया के संग्रह का कुछ हिस्सा रखा गया है और इस में लोगों के चित्रों से फोटोग्राफी की तमाम गतिविधियां, जो प्रेस, विज्ञान, उद्योग, प्रकृति व लोगों के... संबंधित हैं, शामिल की गई हैं.

विश्व सुलभ साहित्य

बेतवा की कसम :
ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित बदलते हुए परिवेश, व मान्यताओं का दस्तावेज.
प्रमोद — मूल्य : 3.00
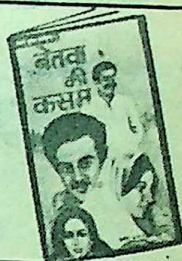
कार में हत्या :
कार में लाश मिलने पर देशपांडे उस हत्या को सुलझाने में और अधिक उलझता गया. असली अपराधी को पकड़ने में कैसे सफल हुआ ?
जनमित्र — मूल्य : 3.00

ईर्ष्या का ज्वालामुखी :
देशपांडे रहस्यपूर्ण हत्याओं को सुलझाने में कैसे उलझता गया. रहस्यरोमांच से भरपूर उपन्यास.
कुसुम गुप्ता — मूल्य : 3.00

इंसानों का व्यापार :
इंसानों के व्यापार के रहस्य का परदा जब देशपांडे ने उठाया तब सभी आश्चर्यचकित रह गए.
जनमित्र — मूल्य : 3.50

पूरा सेट लेने तथा धन अग्रिम भेजने पर डाक खर्च 50 पैसे वी.पी.पी द्वारा.

दिल्ली बुक कंपनी

एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

दिल्ली के रंगमंच की जानी अनजानी नायिकाएं

लेख • रजनी माथुर

यों तो रंगमंच का इतिहास भी उतना ही पुराना है जितना नाटकों का, किंतु जैसेजैसे समय बदलता जा रहा है, नाटकों की इस विधा में भी अंतर आता जा रहा है. जहां पहले के नाटकों में रंगमंच की बारीकियों पर अधिक ध्यान रखा जाता था, वहां अब फिल्मों का प्रभाव नाटकों पर हावी होता जा रहा है. मंच पर फिल्मी अंदाज में संवाद बोलने की अदा स्पष्ट नजर आती है. इस का कारण शायद फिल्मों की बढ़ती हुई लोकप्रियता हो सकती है.

फिल्मी प्रभाव के कारण ही रंगमंच के प्रायः सभी अच्छे कलाकार फिल्मों में चले गए हैं. अच्छेखासे मंच कलाकार भी फिल्मों में छोटी सी भूमिका पा कर गर्व से फूले नहीं समाते. परिणाम यह हुआ है कि रंगमंच पर

रंगमंच पर खुल कर अभिनय करने वाली नायिकाओं की व्यक्तिगत जिंदगी भी घरपरिवार के बंधनों में बंधी होती है. रंगमंच और परिवार के बीच वे कैसे तालमेल बिठा पाती हैं?

अनीला सिंह (बाएं) नाटक में प्रथम बार जाने पर पारिवारिक विरोध हुआ. अब फिल्मों की ओर भी.

साधना भटनागर : साहित्यिक, सांस्कृतिक मूल्य विरासत में मिले.

अच्छे कलाकारों का अभाव हो गया है. इस के अलावा आज के आम दर्शक में नाटकों के प्रति कोई रुचि नहीं रही है. एक वर्ग विशेष ही उन में रुचि लेता है.

नाटकों के बदलते स्वरूप के साथ ही उन के पात्रपात्राओं में आ रहे अंतर का भी सवाल उठता है. पहले नाटकों को पात्रों के नाम से नहीं, अपने नाम से जाना जाता था. उन में एक सूत्रधार होता था, जिस के माध्यम से नाटक के पात्रों का परिचय प्राप्त होता था. सूत्रधार का चलन लंबे अरसे तक नाटकों में बना रहा. पर अब तो यदाकदा ही नाटकों में सूत्रधार नजर आता है.

पहले नाटकों में विदूषक भी होते थे, जो तरहतरह के मुंह बना कर लोगों को हंसाया करते थे. उन की वेशभूषा एवं साजसज्जा भी हंसाने वाली होती थी. तब नाटकों के पात्र

अपने दिल में उठ रहे भावों को बोल कर ही दर्शकों के समक्ष प्रकट करते थे. अगर साथ में कोई पात्र खड़ा है और पहला पात्र उस के लिए कुछ सोच रहा है तो वह थोड़ा आगे आ कर दर्शकों को सुना कर संवाद बोलता था. जाहिर यह होता था कि वह दूसरे पात्र के प्रति दिल में आए अपने भावों को प्रकट कर रहा है. तब बजाए चेहरे के भावों के संवाद बोलने पर अधिक जोर दिया जाता था, जब कि आज पात्र के हावभाव अधिक महत्त्वपूर्ण हो गए हैं.

आजकल सब से ज्यादा बोलबाला पंजाबी नाटकों का है, जिन में द्विअर्थी संवादों को जानबूझ कर पात्रों से बुलवाया जाता है. हमारे समाज का एक वर्ग ऐसा है, जो हर ऐसे नाटक को देखता है. यही कारण है कि 'सोटी नरम ते बोटी गरम' जैसे नाटक में तो हाल खचाखच भरे मिलेंगे और कलात्मक नाटकों में कुरसियां खाली दिखाई देंगी.

जब पात्रों की बात चले तो नाटक की नायिका की बात उठनी स्वाभाविक है. इस से भी ज्यादा स्वाभाविक यह सवाल है कि क्या महिला होने के नाते उन्हें इस जीवन में कोई कठिनाई नहीं होती.

साधना भटनागर

श्रीराम थिएटर एवं राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय (नेशनल स्कूल आफ ड्रामा) में नाटकों का आयोजन होता ही रहता है. इस बारे में कुछ प्रमुख नायिकाओं के विचार जानने की गरज से लेखिका वहां गई.

श्रीराम सेंटर का वातावरण काफी रंगीन नजर आ रहा था. रंगमंच के कलाकारों का जैसे एक जमघट सा वहां लगा हुआ था. इसी जमघट में कई नाटकों की नायिका एवं निर्देशिका साधना भटनागर भी नजर आईं.

साधना भटनागर दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ाती हैं. पर छोटे कद तथा दुबलेपतले आकार के कारण वह प्राध्यापिका से ज्यादा छात्रा लग रही थीं.

साधनाजी ने बताया, "कालिज में प्राध्यापिका होने के बाद ही मुझ में सांस्कृतिक गतिविधियों में रुचि होने के कारण नाटकों में भाग लेने की इच्छा पैदा हुई. हिंदी साहित्य सभा की मंत्री होने के नाते मैं कालिज में नाटकों में भाग लेती ही थी. घर का वातावरण भी साहित्यिक था. पिता श्री बांकेबिहारी भटनागर एक साप्ताहिक पत्र के संपादक थे और मां एक पत्र में उप संपादिका. बड़े भाई मनोज भटनागर भी नाटकों में भाग लेते थे, इसलिए मैं भी उधर ही चल पड़ी.

"पहले भाई साथ थे तो रात को लौटने की दिक्कत नहीं थी. पर अब साथ में तीनचार लोग मिल कर चले जाते हैं और कोई घर छोड़ जाता है."

"साधनाजी, आप की बातों से लगता है कि कलाकारों के जीवन में कुछ हद तक उन्मुक्तता रहती ही है. आप का इस बारे में क्या कहना है?"

"आप चाहें तो इसे उन्मुक्तता सकती हैं. सब मिलजुल कर एक टीम की रहते हैं. एकदूसरे के दुखदर्द बांटते हैं. इस अधिक कुछ नहीं. इस के साथ ही यह बताना जरूरी है कि अभिनय से जुड़े नकारा नहीं जा सकता, पर यह जु खतरनाक हो सकता है. जैसे कई लड़कियां रोने के दृश्य में सचमुच रो प हैं. हम उन्हें ऐसा करने से मना करते हैं.

"प्रेम का नाटक करते हुए हम सच प्रेम नहीं कर बैठते. ऐसे प्रेम हुआ तो ना चौपट हो जाएगा."

"आप प्राध्यापिका हैं. क्या कभी ऐ नहीं हुआ कि आप के प्रणय दृश्यों से छात्र पर गलत असर पड़ा हो?"

"जी नहीं. कालिज की छा परिपक्व बुद्धि की होती हैं. उन को मालूम है कि हम महज नाटक कर रहे

"एक बार 'प्रतिशोध' नाटक के मैं पत्नी की भूमिका कर रही थी. नाटक मेरे 'पति' और मेरे बीच संबंध तनावपूर्ण रहे थे. अचानक मेरा 'पति' मुझे मंच अकेला छोड़ कर चला गया. मैं हक्की रह गई. पर मैं फौरन संभल गई और चक्कर लगाने लगी. तब देखा कि नायक महोदय मंच के पीछे जल्दीजल्दी

संवाद याद कर रहे हैं, उस दिन मैं बाल नहीं संभालती तो सब गुड़ गोबर हो जाना था."

"आप ने नाटकों में अधिकतर किस प्रकार की भूमिकाएं की हैं?"

"अस्सी साल की बुढ़िया से ले कर जवान नायिका तक की सभी भूमिकाएं मैं ने की हैं. कुछ नाटक तो बहुत चर्चित रहे हैं– जैसे 'सराय'. इसे इतना सराहा गया कि मेरे बाहर निकलने पर लोग इसी नाम से मुझे पुकारने लगे थे. 'कंकाल', 'खालिद की खाला', 'मायावी सरोवर' आदि नाटक भी खूब सराहे गए. एक नाटक ताम्रपत्र में मैं ने बुढ़िया की भूमिका अदा की थी."

अनीला सिंह

अनीला सिंह भी नाटकों की एक लोकप्रिय नायिका हैं. वह युवा और सुंदर हैं. अवसर मिलते ही फिल्मों की ओर कदम बढ़ा रहे हैं. उन से बात हुई तो वह बोलीं, "यह नाटक का शौक कैसे लगा, यह तो याद नहीं.

अब नाटकों में फिल्मीपन भी आता जा रहा है.

पर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय से अभिनय का प्रशिक्षण लिया और आ गई इस क्षेत्र में. दरअसल हमारे पड़ोस में विद्यालय के तत्कालीन निदेशक अलकाजी रहते थे. उन्होंने ही नाटक की विधा से मेरा परिचय कराया. वही मेरी प्रेरणा थे.

"नाटक में प्रथम बार काम करने पर परिवार वालों ने विरोध किया. घर के लोग कहते, 'नाटक छोड़ो, शादी करो.' मैं कहती, 'शादी की बात छोड़ो, नाटक करने दो.' खैर, अब सब ठीक हो गया है."

अनीला के लिए पहली बार मंच का अनुभव बहुत ही दिल धड़काने वाला था. उन्होंने बताया "मैं तो बुरी तरह घबरा रही थी, पर जब नाटक समाप्त हुआ तो तालियों की गड़गड़ाहट ने बताया कि मैं सफल रही हूं. तभी से आत्मविश्वास हो गया और मैं मंच की नायिका बन गई."

नाटकों के अन्य पात्रों से संबंधों के बारे में चर्चा चलने पर उन्होंने कहा, "नाटकों में हम भावुक इसलिए नहीं हो पाते, क्योंकि पहली बात तो यह कि वह नाटक होता है. दूसरे, हमें सिखाया गया है कि सभी लड़केलड़कियां एक से हैं, इसलिए सिर्फ नायक से ही क्यों जुड़ा जाए, किसी अन्य पात्र से भी तो जुड़ सकते हैं. फिर प्रणय दृश्य का कई बार पूर्वाभ्यास होता है. वह दृश्य 10 बार 'शूट' हुआ तो क्या हम 10 ही बार भावुक होंगे?"

"आप युवा हैं, सुंदर हैं, क्या रात को अकेले लौटना खतरनाक नहीं नजर आता?"

"मैं अकेले आनेजाने की तो सोच भी नहीं सकती. कोई न कोई रात को घर छोड़ जाता है."

"कहीं यह घर छोड़ जाना ही कभी भावनात्मक संबंध तो नहीं बन गया?"

"जी नहीं. सच पूछें तो कभी किसी पुरुष से गहरी मित्रता तक नहीं हुई. भावनात्मक संबंधों की तो बात ही और है."

"कुछ अपने चर्चित नाटकों की चर्चा कीजिए."

"मेरा सर्वप्रसिद्ध नाटक 'मुख्य मंत्री'

रहा. इस की मैं नायिका थी. इस के अलावा 'चोपड़ा कमाल, नौकर जमाल', 'सैयां भए कोतवाल' एवं 'कबीरा खड़ा बाजार में' में भी मैं नायिका थी. नाटक तो बहुत किए हैं और कर भी रही हूं, पर इधर फिल्मों से जुड़ गई हूं. एक फिल्म में नायिका हूं.

"फिल्मी हीरोइन बनने का मेरा सपना था अब तो इस सपने में रंग भी भरने लगे हैं."

मधुमालती

नाटकों की नायिकाओं में एक नाम मधुमालती का भी जुड़ा है. मधुमालती से भी मुलाकात श्रीराम थिएटर में ही हुई. मधुमालती देखने में तो सुंदर हैं ही, मंजे अभिनय की स्पष्ट छाप भी उन के चेहरे से नजर आती है. उन में आत्मविश्वास है, साथ ही वह धांसू और साहसिक भी हैं.

"शादी अभी नहीं कराई. फिलहाल कोई इरादा भी नहीं है. ध्यान जब नाटकों की ओर हो तो जिंदगी के इस नाटक की ओर ध्यान कम ही जाता है," मधुमालती एक सिगरेट सुलगा कर उस के कश लगाती हुई बड़ी बेबाकी से बोलीं.

"भई, नाटक का शौक तो बचपन से ही था. जब मैं तीसरी कक्षा में थी तो 'काबुली वाला' नाटक में मैं ने मिनी की भूमिका अदा की थी.

"नाचगाना थोड़ाबहुत तो जानती ही थी. अब इस में प्रवीणता भी हासिल कर ली है. स्कूल की पढ़ाई पूरी करने के बाद पांच साल का अभिनय डिप्लोमा किया, उस के बाद से ही मंच पर काम चल रहा है."

"आप ने जब मंच पर काम शुरू किया, तब परिवार में इस का विरोध हुआ था क्या?"

"अजी साहब, क्या पूछते हैं. विरोध क्या एकदम तूफान सा मच गया था. मेरे पिताजी ने तो बेहद हायतोबा मचाई, पर मेरी एक चाची ने बीच में पड़ कर कहा कि इसे राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में दाखिल करा दिया जाए. बुझे मन से घर वालों ने इसे मान लिया. बस, साहब, मनचाही बात हो गई. लेकिन
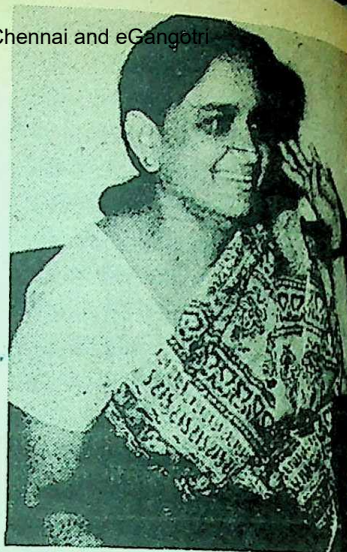
कमलेश गिल : गृहस्थी, नौकरी और नाटकों की व्यस्तता में खूब तालमेल है.

अब मैं परिवार से अलग रह कर गुजारा कर रही हूं. मैं यहां हूं और परिवार करनाल में रहता है.

"भावक दृश्यों में मैं कभी भावुक नहीं होती. क्या होता है भावुक होने से? यह तो महज अभिनय ही तो है."

"मधुजी, रात को अकेले घर लौटने में डर नहीं लगता क्या?"

"अकेली लौटने में डर कैसा? अकेले रहती हूं तो रात को अकेली घर क्यों नहीं लौट सकती? मैं ने कभी सहारे नहीं तलाशे. सहारे तलाशने में कभी सुख मिल सकता है क्या? हां, इस बारे में अलकाजी का जिक्र जरूर करूंगी. मुझे आज यहां तक पहुंचाने में उन का ही हाथ है. वह ही मेरी प्रेरणा रहे."

"क्या आप और लड़कियों को थिएटर की दुनिया में आने की सलाह देंगी?"

"जरूर दूंगी. अपने बच्चों को भी थिएटर में ही लाऊंगी."

"कुछ अपने चर्चित नाटकों का जिक्र कीजिए."

"नाटक ही नाटक किए हैं अब तक. 'दि फूल' मुझे विशेष पसंद है. इस में मैं ने ए

नायिका की भूमिका अदा की थी. लोग कहते हैं कि मैं ने इस पात्र को एकदम सजीव कर दिया था.

"'दि मदर' एक और चर्चित नाटक है. इस में मैं ने मां की मुख्य भूमिका की थी. यह अभिनय के हिसाब से बेहतरीन माना गया."

कमलेश गिल

कमलेश गिल यद्यपि प्रौढ़ावस्था की देहरी पर खड़ी हैं, दो बच्चियों की मां हैं और स्वयं रेलवे में कल्याण अधिकारी भी हैं, पर इन सब के बावजूद रंगमंच को भी समर्पित हैं. कमलेश गिल नाटकों की दुनिया में काफी जानापहचाना नाम है. दिल्ली दूरदर्शन द्वारा प्रदर्शित नाटक 'और भी गम हैं जमाने में' में वह गोमा जमादारनी की भूमिका अदा करती हैं. नाटक का शौक इन्हें कैसे लगा, इन्हीं के शब्दों में सुनिए :

"रंगमंच पर आने की शुरुआत एक मजेदार घटना से हुई. एक बार एक मंच कलाकार हमारे घर तैयार होने को आई. तैयार होने के बाद वह संवाद याद करने लगी. अचानक दूसरे कमरे में आ कर मैं ने कहा, 'आप ऐसे संवाद बोलो, आप का बोलने का ढंग ठीक नहीं है.' वह मेरी बात सुन कर हैरान रह गई.

"इधर मेरे पति ने कहा, 'तुम खुद क्यों नहीं मंच पर आ जातीं?' और बस, मैं सचमुच मंच पर आ गई. तब से आज तक यह सिलसिला चला आ रहा है."

"आप नाटक, गृहस्थी और नौकरी इन तीनों में कैसे तालमेल बिठाती हैं?"

"परिवार में बच्चे अब बड़े हैं, समझदार हैं, कोई दिक्कत नहीं है. नौकरी के बाद के वक्त और छुट्टियों में नाटकों का पूर्वाभ्यास आसानी से हो जाता है. अभी तक तो सब ठीक चल रहा है. मैं भी घर को घर की तरह रखती हूं. बच्चियां बड़ी हैं. नाटक की कोई भी बात घर में नहीं होती. न नाटक वालों को ही घर अधिक आने की इजाजत है. मैं ने घर को मंच नहीं बनने दिया है. घर घर है, इस की अपनी सीमाएं हैं, यह बात हर एक को याद रखनी चाहिए.

"जहां तक मेरी भूमिकाओं का प्रश्न है, मैं हर तरह की भूमिकाएं करती हूं. किसी एक जैसी भूमिका से बंधी हुई नहीं हूं."

"आप रंगमंच की एक समर्थ कलाकार हैं. क्या कभी फिल्मी तारिकाओं से ईर्ष्या तो नहीं होती?"

"जी नहीं, फिल्म वालों से हमें ईर्ष्या क्यों हो? मेरा खयाल है, वहां समय की महज बरबादी होती है. शिक्षाप्रद वृत्त चित्रों में तो मैं काम करती ही रही हूं. इस के अलावा एक पंजाबी फिल्म 'लावा फुट्या' में भी एक भूमिका अदा की है."

लड़कियों के लिए इन की एक सलाह है कि उन्हें रंगमंच की दुनिया में तभी आना चाहिए जब उन में दृढ़ इच्छाशक्ति हो, नहीं तो वे टूट कर रह जाएंगी और 'धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का' वाली मिसाल होगी.

संगीत नाटिका

नाटकों की दुनिया में सदियों पहले से एक और विधा प्रचलन में है– आपेरा. आपेरा अर्थात संगीत नाटिका का अपना एक संसार है. इस में नाच और गा कर अभिनय किया जाता है. बात आपेरा की हो तो अनायास ही दिमाग में मदनबाला सिंधु का नाम उभरने लगता है.

मदनबाला सिंधु का आपेरा से बहुत पुराना ताल्लुक है. दिल्ली आर्ट थिएटर में मदनबाला सिंधु से मुलाकात हुई. उन का कहना है कि दो साल की आयु से ही उन्हें गाने व नाचने का शौक था. अभिनय का शौक भी हुआ और यों आपेरा शुरू हो गया. उन्होंने इस के लिए कोई प्रशिक्षण नहीं लिया, सब शौकिया है. घर में पति है, बच्चे हैं.

"मदनबालाजी, लगता ही नहीं कि आप विवाहित हैं. किस तरह संभाल कर रखा है आप ने अपने को?"

इस बात का जवाब उन्होंने केवल हंस कर दिया.

"जहां तक प्रश्न अभिनय के दौरान भावुक होने या प्रेम होने का है तो सच तो यह

है कि मैं इस ओर आई ही शादी के बाद हूं. हां, इतना जरूर है कि नाटक में [illegible] हम अपने को उसी में समाहित कर देते हैं."

"आप अकसर किस प्रकार की भूमिकाएं स्वीकार करती हैं?"

"जिस प्रकार की भी निर्देशक दे दें. मैं हर भूमिका को करने की क्षमता रखती हूं. निर्देशक भी मेरी क्षमताओं को जान गए हैं. वे खुद ही मुझे उपयुक्त भूमिका देते हैं.

"पारिवारिक विरोध के संदर्भ में यही कहूंगी कि मेरे ससुराल वाले पुराने विचारों के हैं. मेरा थिएटर में नाचनागाना उन्हें पसंद नहीं था, पर पति साथ दे तो सब ठीक हो जाता है.

"शुरू में डर के मारे सासससुर को बताया तक नहीं वे लोग पटियाला में रहते हैं. एक बार हम वहां कार्यक्रम देने गए. एक अखबार में कार्यक्रम से पूर्व समीक्षा छप गई तो देवर ने अखबार ही छिपा दिया. वरना हंगामा हो जाता. खैर, अब तो सब जानते हैं.

"आने वाली पीढ़ी को मैं थिएटर में खास तौर पर आपेरा में आने की सलाह दूंगी. इस से कला मुखरित होगी और उस के प्रति लोगों की अभिरुचि बढ़ेगी."

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय की ऊषा बनर्जी का नाम भी बहुत जानपहचाना है. सरल सौम्य व्यक्तित्व की ऊषाजी से मुलाकात वहीं हुई. उन का कहना है :

"हमें यह शौक परिवार से. मिला. पिताजी मूक फिल्मों के लेखक थे और चाचा सोहराब मोदी के साथ कैमरामैन.

"सई परांजपे, जब्बार पटेल, श्रीराम लागू हमारे साथ के हैं. हम महाराष्ट्र में पुणे के रहने वाले हैं. इसलिए हमें परिवार से विरोध नहीं, सहयोग ही मिला."

"आप का अभिनय के दौरान कभी किसी से प्रेम हुआ?"

"अभिनय के दौरान तो नहीं हुआ, शादी के बाद एक जगह प्रेम जरूर हुआ. इस लिए पहले पति से तलाक ले कर वहां शादी की. संगीत में हमारी रुचि साझी थी, तभी प्रेम हुआ."

"घर में सब ठीक है, बच्चे बड़े हैं, बेटा दांतों का डाक्टर है व विवाहित है.

"नाटकों में हर प्रकार की भूमिका की जो चर्चित हुए उन में 'महाभोज', 'सैयां भए कोतवाल', 'जसमां उड़न' इत्यादि शामिल हैं. फिल्म की भी पेशकश मिली, पर हम ने नहीं."

इस सारी गुफ्तगू से मन पर यही प्रभाव पड़ा कि नाटक जिंदगी के काफी पास है. साथ ही यह बात भी उभर कर आई कि जितनी भी नायिकाएं मंच पर आज हैं, वे प्रायः अपनी मर्जी से आई हैं.

रंगमंच पर अभिनय के शौक ने तमाम पारिवारिक विरोधों को दबा दिया है. यह भी लगा कि अभिनय एक नशा है, जुनून है, जो एक बार किसी को लग जाए तो चिरकाल तक बना रहता है.

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए

विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु 8.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

उत्तरदान
रहस्य, रोमांच एवं रोमांस लिए स्वतंत्रता संग्राम की कहानी रु. 5.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा. क्या मानव हार गया ? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध ज़िहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

क्या नेपोलियन बोनापोर्ट एक औरत था?

नेपोलियन बोनापार्ट

विश्व के इतिहास में नेपोलियन बोनापार्ट का नाम उस की बहादुरी, कुशल नेतृत्व और निडर सेनापति के रूप में काफी प्रसिद्ध है. लेकिन कम ही लोगों को पता है कि प्रौढ़ावस्था में नेपोलियन हार्मोन परिवर्तन से आदमी से औरत, बनता जा रहा था.

ब्रिटेन के एक पत्र 'गार्जियन' में हाल ही में छपी एक खबर के अनुसार नेपोलियन की मृत्यु सेंट हेलिना द्वीप पर एक सैक्स आपरेशन के दौरान हुई थी. उस के यौन परिवर्तन की बात का रहस्योदघाटन किया है- नेपोलियन का आपरेशन करने वाले डाक्टर रोबर्ट ग्रिनबैल्ट ने.

डा. ग्रिनबैल्ट का लिखा एक लेख हाल ही में ब्रिटेन की एक पत्रिका 'ब्रिटिश जनरल आफ सैक्सुअल मेडिसन' में छपा है. इस में यह बताया गया है कि फ्रांस का यह बहादुर राजा और सैनिक धीरेधीरे औरत बनता जा रहा था.

नेपोलियन की मृत्यु 5 मई, 1881 को हुई थी. लेकिन मृत्यु से वर्षों पूर्व उस में यौन परिवर्तन होना शुरू हो गया था.

डा. ग्रिनबैल्ट ने अपनी बात की पुष्टि
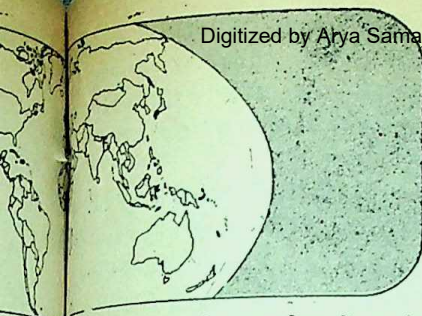
...इन बातों के प्रमाण भी प्रस्तुत किए हैं. इन में मास्को पर कब्जे के समय नेपोलियन को मूत्र त्यागने में परेशानी होने, बोरोडिनो युद्ध के समय टांग सूजने, ड्रेडेन शहर में पेट में दर्द होने और लेपजिग में, पेट के नीचे दर्द होने का हवाला दिया गया है. नेपोलियन अकसर नींद की गोलियां और पेशाब के ठीक तरह होने के लिए अन्य कई दवाइयां इस्तेमाल करता था. वाटरलू के मैदान में भी उसे पेट के दर्द की तकलीफ हुई थी.

नेपोलियन के आदमी से औरत बनने की बात पर टिप्पणी करते हुए 'गार्जियन' अखबार ने लिखा है कि 'यह बात सही है या गलत इस का तो पता नहीं. लेकिन, हां नेपोलियन के इस प्रिय कथन, जो वह अपनी एक चहेती से कहता था- जोसेफिन इस रात नहीं- का अर्थ क्या है. कहीं इस का अर्थ यह तो नहीं कि ऐसी बात फिर कभी नहीं होगी.'

प्रौढ़ावस्था में नेपोलियन आदमी से औरत बनता जा रहा था. स्टाकहोम अकेले रहने वालों का शहर बनता जा रहा है. ब्रिटेन में दिवालिए लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है. दक्षिण अफ्रीका का माल अन्य यूरोपीय देशों के मुकाबले सस्ता है. रूसी लोग अब आक्रामक व झगड़ालू बनते जा रहे हैं. जैसे रोचक विषयों की तथ्यपरक विवेचना.

परिवार-सिर्फ एक अकेले का

आप मानें या न मानें पर यह बात सच है कि इन दिनों स्वीडन की राजधानी स्टाकहोम अकेले रहने वालों का शहर बनता जा रहा है. सन 1980 की जनगणना के अनुसार अब स्टाकहोम में परिवार का पुराना स्वरूप- मातापिता तथा बच्चे, धीरेधीरे लुप्त होता जा रहा है और लोगों में अकेले रहने की प्रवृत्ति बढ़ रही है.

स्टाकहोम में रहने वाले कुल 3,39,000 परिवारों में से 1,65,000 परिवार (49 प्रतिशत) अब सिर्फ एक अकेले का परिवार बन कर रह गए हैं. ऐसे परिवारों में कहीं पत्नी अकेली है तो कहीं पति. 10 वर्ष पूर्व स्टाकहोम में अकेले रहने वालों की संख्या

स्टाकहोम में ऐसे परिवारों की संख्या अधिक है जिन में सिर्फ अकेला व्यक्ति है. कहींकहीं तो बुढ़ापे में पति पत्नी में से सिर्फ एक ही परिवार में रह जाता है.

वहां के परिवारों की कुल संख्या की सिर्फ 38 प्रतिशत थी. यूरोपीय देशों में अब परिवार का स्वरूप धीरेधीरे टूट रहा है. बच्चे बड़े हो कर इधरउधर काम की तलाश में निकल जाते हैं और रह जाते हैं सिर्फ अकेले मातापिता. कहींकहीं तो बुढ़ापे में पतिपत्नी में से सिर्फ एक ही परिवार में रह जाता है. स्टाकहोम के मध्य में तो ज्यादातर परिवार अकेले रहने वालों के हैं. हां, बृहद स्टाकहोम में शहर से बाहर, करीब 28 प्रतिशत लोगों को परिवार के साथ रहते देखा जा सकता है.

अकेले रहने वालों की बढ़ती संख्या से यहां आवास की समस्या भी जटिल होती जा रही है. सरकार को चौड़े और बड़े कमरों वाले मकानों के स्थान पर एक या दो कमरों वाली बहुमंजिली इमारतें बनवानी पड़ रही हैं.

ब्रिटेन में दिवालिए बढ़ रहे हैं.

ब्रिटेन में स्वतंत्र सर्वेक्षण करने वाले एक संगठन ने इस बात का रहस्योद्घाटन किया है कि अब ब्रिटेन में दिवालिए लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है और तरहतरह की नई पुरानी कंपनियां घाटे के कारण बंद हो रही हैं.

ब्रिटेन में अर्थशास्त्री अपने देश की अर्थव्यवस्था को डगमगा देने वाली आर्थिक नीतियों के कारण पिछले कुछ अर्से से चिंतित हैं.

एक समय था जब यह कहा जाता था कि ब्रिटिश साम्राज्य में सूर्य अस्त नहीं होता, लेकिन अब ब्रिटेन के बचेखुचे साम्राज्य में सभी कुछ अस्त हो रहा है.

पिछले दिनों ब्रिटेन की प्रधान मंत्री मारग्रेट थैचर के इस बयान के बावजूद कि 'ब्रिटेन की आर्थिक स्थिति सुधर रही है', 5,500 उद्योग धंधे बंद हो गए हैं.

ब्रिटेन की व्यापार सूचना कंपनी 'डन एंड ब्रौडस्ट्रीट' के अनुसार 1981 में 21.7 प्रतिशत नए उद्योग धंधों की शुरुआत भी हुई, लेकिन 1982 में ब्रिटेन की राजनीतिक और सैनिक नीतियों में अचानक हुए परिवर्तनों और फाकलैंड युद्ध ने ब्रिटेन की आर्थिक व्यवस्था को बुरी तरह झकझोर दिया है.

स्थिति इतनी बिगड़ी है कि 1982 के प्रथम तीन महीनों में तो प्रति सप्ताह 22[illegible] कंपनियां बंद होने लगीं. इस के साथसाथ दिवालिए लोगों की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई. 1982 के छ: महीनों में ही ब्रिटेन की कंपनियों के 2,701 मालिक दिवालिए हो गए. गत वर्ष दिवालिए लोगों की संख्या 1980 के मुकाबले 8.3 प्रतिशत अधिक रही.

न्यूजीलैंड में नर सांप ले जाने की छूट

न्यूजीलैंड सरकार ने हाल में अमरीकी अभिनेत्री बो डेरेक को अपनी फिल्म की शूटिंग के लिए पांच, मीटर लंबा एक सांप न्यूजीलैंड लाने की छूट दे दी है.

हालांकि न्यूजीलैंड ने सांपों के आयात पर कड़ा प्रतिबंध लगा रखा है, पर अब न्यूजीलैंड में राष्ट्रीय पक्षी कीवी के साथ सांप भी रह सकेंगे. लेकिन शर्त यह है कि सांप सिर्फ नर हो, मादा नहीं. नर सांप मादा के बिना अपना वंश बढ़ा नहीं पाएगा और न्यूजीलैंड के प्रधान मंत्री रोबर्ट मुलडोन के अनुसार, इस तरह न्यूजीलैंड की धरती पर रह कर सांप अकेलेपन के कारण या तो दूसरी जगह भाग जाएगा या फिर अकेला रह कर वृद्धावस्था में मर जाएगा.

रूसी अब झगड़ालू बन रहे हैं

वाशिंगटन में 782 रूसी आव्रजकों से लिए गए एक साक्षात्कार से यह बात सामने आई है कि रूस में पिछले कुछ अर्से से खाद्य संकट चरम सीमा पर पहुंच गया है. सरकार

द्वारा नियंत्रित स्टोरों पर मांस और दूध से लेकर 18 चीजों में से सिर्फ चार ही अब राशन से प्राप्त होती हैं.

रूस के शहरों और गांवों में रहने वाले 112 लोगों से पूछताछ के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया है कि रूसी स्टोरों से मिलने वाले खाद्य पदार्थों की सूची में अंकित 18 खाद्य पदार्थों में दूध, मक्खन, पनीर, फल, गोभी और आटे की आपूर्ति, अनियमित है. जब कि वोदका शराब हर स्टोर पर हर समय सस्ते दामों पर उपलब्ध रहती है. दूध, मांस और मक्खन लेने के लिए यहां लोगों को बहुत सुबह उठना पड़ता है और काफी दूर शहर में जा कर सामान तलाश करना पड़ता है.

मास्को में कार्यरत कुछ डाक्टरों ने यह भी कहा है कि चीजों की कमी के कारण यहां के लोग आक्रामक और झगड़ालू बनते जा रहे हैं और यहां कुछ बीमारियों ने भी पनपना शुरू कर दिया है.

अमरीका में एक प्राइवेट कंपनी द्वारा नियंत्रित रेडियो फ्री यूरोन और रेडियो लिबर्टी जो कि रूस में तरहतरह के सर्वेक्षण कर यूरोपीय तथा साम्यवादी देशों को आंकड़े उपलब्ध कराती है, का कहना है कि रूस में बढ़ते खाद्य संकट से अनुशासन टूट रहा है.

पश्चिमी देशों के कृषि समीक्षकों का कहना है कि रूस में कई चीजों के उत्पादन में पिछले कुछ अर्से से गिरावट आई है. 1978 में रूस में 950 लाख, टन दूध होता था, पर 1981 तक 88 5 लाख, टन रह गया. मजेदार बात यह है कि इसी दौरान रूस में एक मिलियन गायों की वृद्धि भी हुई है. पर दूध की मात्रा में कमी का कारण है- गायों को दिए जाने वाले चारे में बढ़ती कटौती. इस से दूध में 15 प्रतिशत की एकदम गिरावट आई है. इसी तरह मांस का उत्पादन 15 5 लाख, टन के स्थान पर 15 2 लाख, टन हुआ.

देश में बढ़ते खाद्य संकट के कारण अब रूस को मजबूरन पश्चिमी देशों की तरफ झुकना पड़ा. सन 1981 में ही गैस, तेल, मशीनरी और हथियार बेच कर प्राप्त हुई रकम से रूस को, अमरीका से 14 40 लाख, डालर का तरहतरह का माल खरीदना पड़ा है. यही नहीं 1972 से 1981 के बीच रूस को विदेशों से 9,80,000 टन मांस का आयात भी करना पड़ा है.

खाने की चीजों की कमी और उन को प्राप्त करने में काफी परेशानी उठने के कारण अब रूसी लोग काफी झुंझलाए हुए रहते हैं.

दक्षिण अफ्रीका : सस्ते माल का विक्रेता

अफ्रीका के बिलकुल दक्षिणी कोने पर बसे रंगभेद के लिए विश्वविख्यात और विश्व में सब से अधिक सोना और हीरा निकालने वाले देश दक्षिण अफ्रीका की यों तो विश्व के राजनीतिक क्षेत्रों में घोर निंदा होती है, इस का आर्थिक बहिष्कार होता है. पर इस देश से चुपचाप व्यापार करने में कोई अफ्रीकी देश नहीं चूकता. ऐसी बात हाल में प्रकाश में आई है.

दक्षिण अफ्रीका के 'दक्षिण अफ्रीकी विदेश व्यापार संगठन' (साउथ अफ्रीकन फारेन ट्रेड आर्गेनाइजेशन– साफ्टो) ने इस बात का रहस्योदघाटन किया है कि अफ्रीका के 46 देश, जिन में कुछ उस के कट्

आलोचक भी हैं और 'अफ्रीका एकता संगठन' (ओ ए यू) के सदस्य भी हैं, दक्षिण अफ्रीका से हर वर्ष लाखों पौंड का व्यापार करते हैं.

दक्षिण अफ्रीकी विदेश व्यापार संगठन के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी विम होल्ट्स का कहना है कि 49 सदस्यों वाले अफ्रीका एकता संगठन के 46 देशों ने 1981 में दक्षिण अफ्रीका से ढेरों सामान खरीदा और अपना सामान दक्षिण अफ्रीका को बेचा भी. मजेदार बात यह है कि इन में से अनेक देश संयुक्त राष्ट्र संघ में दक्षिण अफ्रीका की आर्थिक नाकेबंदी और बहिष्कार करने की जोरदार मांग भी करते रहे हैं.

दक्षिण अफ्रीका का माल अन्य यूरोपीय देशों के मुकाबले सस्ता है. पिछले कुछ वर्षों से यह देश अन्य देशों को डब्बाबंद भोजन, कलकारखानों के पुर्जे, सस्ती दवाइयां, लोहे के बने अन्य छोटेछोटे अनेक पुर्जे सस्ते दामों में बेचता रहा है. अब तो यह कुत्तों के बिस्कुट से ले कर नहाने के खुशबूदार साबुन तक सस्ते दर पर बेच रहा है. सस्ते माल को छोड़ कर भला मंहगा माल कौन खरीदना पसंद करेगा.

दक्षिण अफ्रीका से केनिया, जैर और सोमालिया का व्यापार सब से अधिक होता है. दक्षिण अफ्रीका की कंपनियां अब अन्य कई देशों में ठेके पर काम करवा रही हैं.

पुस्तकें पत्रिकाएं

स्वदेश

"...अपहरण की नई योजना दो दिन बाद बनाएंगे, तब तक सत्यकथा पत्रिकाओं के नए अंक भी बाजार में आ जाएंगे."

वाह रे तकिया कलाम!

हमारे हिंदी के प्रोफेसर 'भयंकर' शब्द का बहुत अधिक प्रयोग करते हैं.
एक दिन वह एक पद्यांश का अर्थ समझाते हुए बोले, "नायक नायिका की भयंकर सुंदरता पर मोहित हो गया."
"जी, भयंकर सुंदरता पर?" एक छात्र ने पूछा.
छात्र का प्रश्न सुन कर उन का मुंह खुला का खुला रह गया, क्योंकि सारी कक्षा ठहाकों में डूब चुकी थी.

—अमला प्रसाद

*

हमारे एक अध्यापक को पढ़ाते वक्त यह कहने की आदत थी— 'तो हम कहां थे.'
एक दिन वह कक्षा में आ कर बोले, "तो हम कहां थे?"
इतने में पीछे से किसी छात्र ने कहा, "इसी कक्षा में."

—विकप असावा

*

मेरे एक मित्र की आदत हर बात में 'सवाल ही नहीं उठता जी' कहने की है. एक बार उन के एक बड़े अधिकारी आए. उन्हें मुर्गा खाने का शौक था. मित्र ने उन के लिए मुर्गा बनवाया.
हम लोग खाने बैठे तो उस अधिकारी से थोड़ी दूरी पर मुर्गे का डोंगा रखा था.
अधिकारी बोला, "जरा मुर्गे का डोंगा इधर करना."
"सवाल ही नहीं उठता जी," मेरे मित्र ने कहा. उस के बाद वह बहुत शर्मिंदा हुए.

—रजत मिश्र

*

हमारी एक परिचिता का तकिया कलाम था 'क्लेश कटे.' उन्हें कई बार इस के लिए लज्जित भी होना पड़ा था, फिर भी उन की आदत नहीं छूटी थी.
एक दिन उन्होंने हमें भोजन पर आमंत्रित किया. हम लोग बैठे हुए थे, और उन से भी खाने का आग्रह कर रहे थे. उन्होंने आदत के अनुसार कहा, "अरे, जल्दी शुरू कीजिए, क्लेश कटे."
हम लोगों के ग्रास हाथ ही में रह गए. जब उन्हें अपनी गलती का एहसास हुआ तो वह झेंप कर क्षमायाचना करने लगीं.

—उर्मिला गौतम •

क्या आप किसी ऐसे व्यक्ति से परिचित हैं जिस का कोई तकिया कलाम हो? इस बारे में आप ने कभी कोई रोचक संस्मरण सुना हो तो उसे मुक्ता के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.
अपने संस्मरण इस पते पर भेजिए:
वाह रे तकिया कलाम! मुक्ता, संपादकीय विभाग, ई-3 रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

हरि दफ्तर से लौटते हुए बहुत प्रसन्न था. उसे उस दिन दलाल ने एक मकान मिलन की बात बताई थी और शाम को सात बजे उस के साथ मकान देखने जाने की बात तय हुई थी.

इस शहर में बदली हुए उसे कई सप्ताह हो गए थे, किंतु कहीं किराए का घर न मिलने से वह फिलहाल एक मध्यम वर्गीय होटल में ठहरा हुआ था. पत्नी को वह अभी घर पर ही छोड़ आया था. सोचा था, जब मकान मिलेगा तो उसे ले आएगा. बहुत दौड़धूप के बाद भी कहीं डेरा डालने की ठीक व्यवस्था न हो पाने के कारण वह बहुत परेशान था. तभी उस के दफ्तर के प्रबंधक कृष्ण गोपाल ने मकानों के दलाल से उस का परिचय करवा दिया और आज दलाल ने किराए का मकान मिलने की खुशखबरी सुनाई.

सात बजे के बाद दलाल होटल पहुंचा और दोनों मकान देखने चल दिए. हरि को बहुत उत्सुकता थी. देखें कैसा मकान मिलता है. वह मन ही मन उसे सजाने के मनसूबे गांठता हुआ दलाल के साथ चला जा रहा था.

सड़कें बत्तियों से जगमगाने लगीं. हरि ने चौंक कर देखा. इस तरफ वह पहले कभी नहीं आया था, इधर छोटीछोटी चायपान

शरीफों का साथ

कहानी • चंद्रमोहन प्रधान
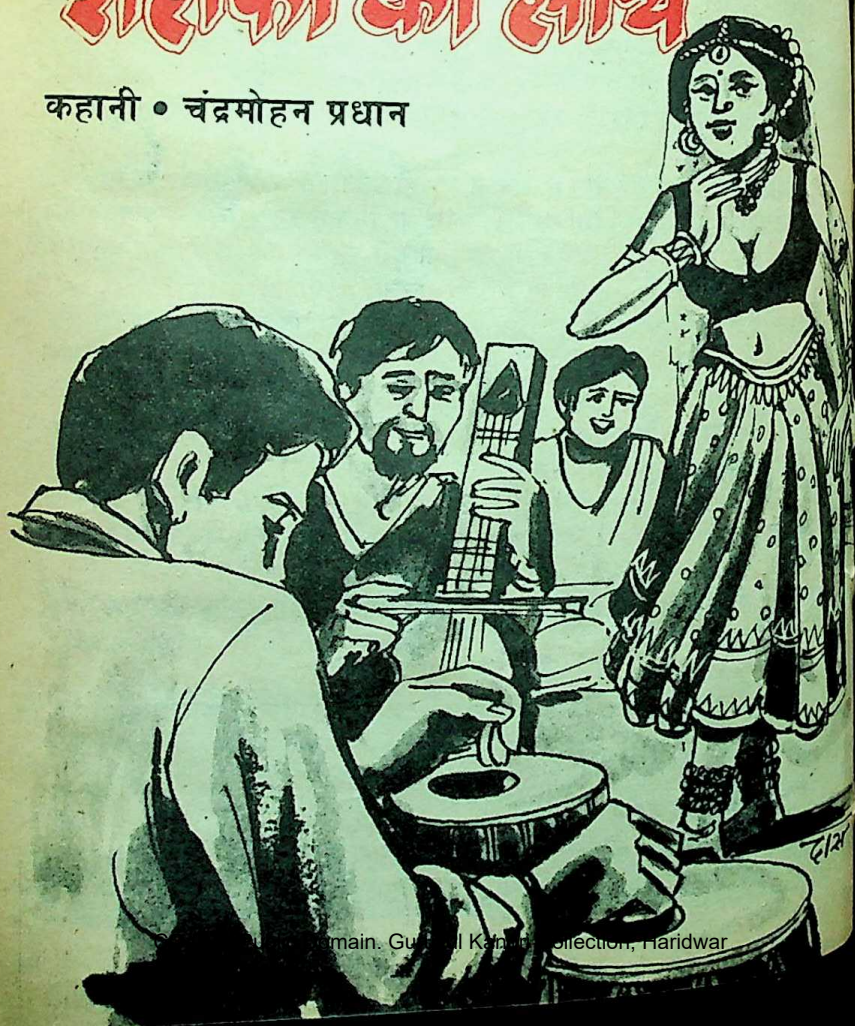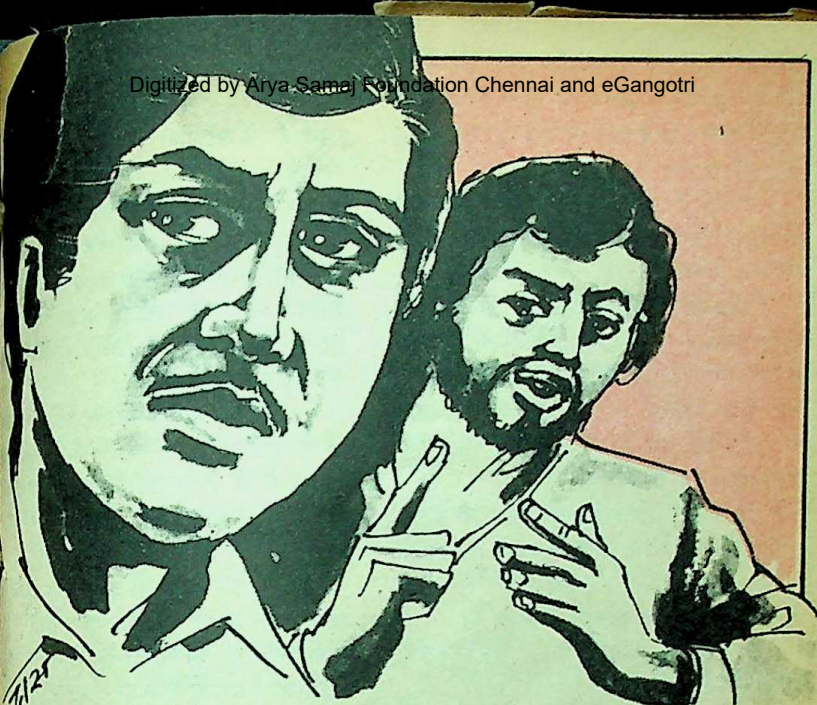
आसपास के वातावरण के कारण ही हरि व लीला अपने सस्ते व बड़े मकान को छोड़ कर कहीं 'शरीफों की बस्ती में मकान लेना चाहते थे. पर जब उन्होंने 'शरीफों के वास्तविक चेहरे को देखा तो वे भौंचक्के रह गए.

...चून आदि की दुकानें बहुत थीं. बत्तियों से ...जार जगमगा रहा था. तभी उसे तबले की ...क और सितार वगैरह के साथ गाने की ...वाज सुनाई दी.

उसे ठमकते देख कर दलाल ने कहा, ...ले आइए, खड़े क्यों हो गए? पास ही है ...कान"

"यह कैसा महल्ला है, मियांजी?"

पान से रंगे दांत दिखाते मियांजी ...स्कराए. जेब से बीड़ी निकाल कर सुलगाते ...बोले, "अजी महल्ला तो ठीक ही है, इधर ...चगाने वालियों का इलाका है. आप को ...स से क्या, आप का मकान तो यहां से हट कर ...है."

"मतलब ये वेश्याएं हैं?" हरि ने आंखें ...चौड़ी कीं.

"अजी साहेब, वेश्या कौन होती है? सब नाचगाने का अपना धंधा करती हैं. वह जमाना तो गया, अब तो यह इलाका शरीफों का है."

हरि ने कुछ नहीं कहा, पर वह समझ गया था. कानूनन वेश्यावृत्ति मना है, किंतु इसी नाचगान, कव्वाली, बुनाई, सिलाई केंद्र आदि की आड़ में पूर्ववत चल रही है. पुलिस जानती है, सब जानते हैं. कानून को तो पेट भरना होता है. पुलिस कचहरी वाले अपने पेट भरते हैं तो किसे दोष दिया जाए?

ऐसी जगह पर घर ले कर रहने की तो कल्पना भी नहीं कर सकता. फिर भी दलाल की बात रखने के लिए वह उस के पीछेपीछे चल पड़ा.

मियांजी एकदो चौड़ी सी गलियों के

चक्कर काट कर महल्ले के पीछे की तरफ पहुंचे, जहां खुली जगह थी. इधर सुंदर नया बना एक घर दीख पड़ा. सामने छोटा सा लान और हरियाली.

"यही है," मियांजी ने उंगली से दिखाते हुए कहा और यों देखने लगे, जैसे अपने काम की दाद चाहते हों.

जेब से चाबी निकाल कर मियांजी ने ताला खोला. एक हाल, पतला गलियारा, बगल में एक कमरा, दो कमरे पीछे और हाल के पीछे भोजन करने का कमरा और बरामदा. आंगन में नल लगा हुआ. पीछे रसोईघर एवं भंडारगृह.

हरि को घर देखते ही पसंद आ गया. ऐसा सुंदर नया बना हुआ घर कहां मिलता है आजकल. उसे इस महल्ले में ऐसा घर, टाट में मखमल का पैबंद मालूम हो रहा था.

"किराया कितना है?" उस ने जरा संदेह से पूछा.

"अजी साहेब, किराया जो आप दे दें," मियांजी ने इतमीनान से कहा, "मकान मालिक तो किसी शरीफ को देना चाहता है. जो मुनासिब समझ कर दे देंगे. खुशी से ले लेगा. मेरा जिम्मा है."

"फिर भी, कुछ अंदाज तो हो."

"चलिए, डेढ़ सौ दे दीजिएगा."

हरि को लगा, जैसे डेढ़ लाख की लाटरी मिली हो. इस जमाने में ऐसा घर डेढ़ सौ तो क्या, तीन सौ में भी मिलना मुशकिल है. साथ ही उसे खटकने लगा, जगह के कारण लोग इस में रहना पसंद न करते होंगे, इसी से मकान मालिक ने इतना कम किराया रखा है.

उस ने जरा पसोपेश में कहा, "मियांजी, घर अच्छा है, किराया भी ठीक है, पर महल्ला जरा..."

"लाहौल बलाकबत. आप कैसी बातें करने लगे. किबला?" मियांजी ने बीड़ी का कश खींचा. "आप को तमाम दुनिया से क्या गरज? ऐसी जगह कोई इस के दूने किराए पर भी निकाल दे तो जनाबे वाला, कान पकड़ कर अर्ज करता हूं. टांगों के नीचे से निकल जाऊं. आप तो अपना सुभीता देखिए."

हरि कुछ सोचने लगा. [illegible] मियांजी ने लोहा गरम देख कर दूसरी चोट लगाई, "और, हजरत, दुनिया में कौन कैसा है, क्या किसी के माथे पर लिखा हुआ है? आदमी अगर खुद सीधी राह पर चलना चाहे तो कौन उसे बहका सकता है? आप मेरी बात मानिए, मकान ले लीजिए. न हो, आप बाद में फिर इतमीनान से दूसरा मकान ले लीजिएगा. कहिए?"

हरि को बात पसंद आ गई. अभी तो ले लें और फिर दूसरे महल्ले में तलाश करें. होटल से तो पीछा छूटेगा. कुछ दिनों के [illegible] से क्या हर्ज हो जाएगा?

उस ने हामी भर दी. मियांजी के साथ पास ही मकान मालिक के यहां जा कर [illegible] जमा कर दिए. कुछ पगड़ी वगैरह न [illegible] पड़ी. मियांजी को भी दस्तूर के मुताबिक [illegible] मास का किराया दे दिया. उन्होंने गृहस्थी का समान खरीदवा देने और एक महरी का [illegible] कर देने का वादा किया. हरि दूसरे दिन अपनी पत्नी को लाने घर चला गया.

हरि जब लीला को ले कर नए घर में आया तो वह बहुत खुश हुई. ऐसे [illegible] घर की कल्पना वह करती रही थी.

किंतु दूसरे दिन ही हरि के घर लौटने पर लीला ने जरा परेशानी के साथ पूछा, "[illegible] जी, यह महल्ला कैसा है?"

हरि इसी बात की आशंका कर रहा [illegible] उस ने बात उड़ाई, "क्यों, महल्ला है. [illegible] तरह के लोग रहते हैं."

"आज पड़ोस से एक स्त्री आई थी. [illegible] से पता लगा, सड़क के उस तरफ पूरा बा[illegible] वेश्याओं का है."

"अरे, वेश्या कहां हैं,' हरि ने हंस [illegible] कहा, "वे सब तो पेशेवर गायिकाएं [illegible] नर्तकियां हैं."

"नहीं, मैं यहां रहना ठीक [illegible] समझती." लीला ने कहा, "दूसरी जगह [illegible] नहीं मिला, जो यहां ले रखा है?"

हरि ने उसें समझाया कि कितनी [illegible]

...क्तों से यह घर मिला है और कितना ...ता है.

''फिर भी'' उस ने आश्वासन दिया, ...दूसरा घर तलाश कर रहा हूं. थोड़े दिनों ...लिए रहने में कोई हर्ज नहीं.''

लीला की बातों से परेशान हो कर हरि ...दफ्तर के बाद घर तलाश करने में जमीन ...आसमान एक कर दिया. मियांजी को भी उस ...लगा रखा था. कभी कोई मकान मिलने की ...पर देखने जाता तो किराया चारछ: सौ से ...अधिक और दो से पांच हजार पगड़ी की बात ...कर वापस लौट आता. वह दो सौ से ...अधिक किराया नहीं दे सकता था.

हरि ने अपने सहायक प्रबंधक कृष्ण ...पाल से इस मुसीबत की चर्चा की. उन्होंने ...सहानुभूति के साथ सब बातें सुनीं. कहने लगे, ...भई, यह तो ठीक नहीं हुआ. शरीफ घराने ...की औरतों को ऐसे महल्ले से दूर ही रहना ...चाहिए. तुम्हारे साथ परिवार है, ऐसी जगह ...पर रहना सचमुच बुरा है.''

हरि की धारणा को बल मिला. उस ने ...बड़ा खुशामद के साथ कहा, ''अब आप ही कोई उपाय करें तो कुछ बात बनें. आप तो जानते ही हैं, मैं यहां के लिए नया आदमी हूं.''

कृष्ण गोपाल ने विचारमग्न हालत में सिगरेट सुलगाई. कुछ सोच कर बोले, ''एक काम करो. यहां स्टेशन के पास मेरे एक दोस्त सरदार त्रिलोकसिंह रहते हैं. बड़े आदमी हैं. ठेका है, ट्रांसपोर्ट है, कई मकान हैं. उन के नाम एक पत्र लिखे देता हूं. उन से मिलो. शायद कोई प्रबंध कर दें.''

हरि को लगा, अब काम बन गया.

दूसरे दिन छुट्टी थी. हरि 10 बजे सरदारजी के घर जा पहुंचा. उन्होंने कृष्ण गोपाल का पत्र देखा. बड़े अपनेपन से कहा, ''तुम कृष्ण गोपाल के दोस्त हो, इसलिए मेरे भी दोस्त हो, तुम ठीक मौके पर आए हो. इधर एक छोटा सा फ्लैट खाली है, देख लो.''

हरि ने हिचकते हुए पहले किराए के बारे में पूछा.

''बादशाहो,'' सरदारजी मूंछों में हंसे, ''जो तुम्हारी मर्जी में आए, दे देना. वैसे किराया दो सौ है. चलो कृष्ण गोपाल की खातिर पौने दो सही.''

हरि की प्रसन्नता का पार नहीं रहा. वही मसल हुई कि ''जो रोगी को भावे, वही वैद फरमावे.'' सरदारजी के आदमी के साथ वह चल दिया.

पास ही एक नई बनी इमारत थी. स्पष्टतः किराए के लिए बनाई गई थी. अगलबगल दो फ्लैटों में उसे बांट दिया गया था. एक फ्लैट खाली पड़ा था. तीन कमरों, एक रसोई, एक स्टोर, दो स्नान घरों वाला यह फ्लैट हरि को बहुत पसंद आया. उस ने लौट कर सरदारजी के सामने ही हां भर ली और शाम को रुपए लाने की बात कह कर चल दिया.

शाम को वह उसी राह से लौटा. उस भवन के सामने पहुंच कर एक बार उसे देखने के लिए सड़क पर ठिठका ही था कि किसी ने पुकारा, ''ओ बाबूजी, जरा सुनिएगा...''

हरि ने देखा, सड़क के उस तरफ पान की एक दुकान है. पान वाला उसे ही पुकार रहा है. वह चकित सा उस तरफ बढ़ा.

''आप इसे किराए पर ले रहे हैं?'' पान वाले ने जरा धीमे स्वर में पूछा.

हरि ने अपने मामले में गैर का यों नाक घुसाना पसंद नहीं आया. जरा रुखाई के साथ बोला, ''हां, ले तो रहा हूं. तुम्हें क्या मतलब है?''

''साहेब, मुझे क्या मतलब होगा,'' पान वाले ने कहा, ''मगर सोचा, आप शरीफ आदमी लगते हैं, अगाह कर दूं.''

वह निर्विकार भाव से सुपारी काटने लगा.

हरि को कुछ परेशानी महसूस हुई. बोला, ''क्या बात है? कुछ समझा कर कहो तो समझूं भी.''

''कुछ नहीं, साहेब!'' पान वाले ने इधरउधर देख कर कहा, ''वह मकान क्या है, पूरा चकला है.''

''चकला? क्या बक रहे हो?'' शरीफों का महल्ला...''

''शरीफों का महल्ला!'' पान वाला हंसा, ''बाबूजी, किसी से पूछ लीजिए यहां. जो आबाद फ्लैट है, उस में एक ऐसा ही परिवार है. मर्द तो समझें, बेकार बैठे र[illegible] हैं, तीनचार लड़कियां हैं. वे बड़ी बदनाम हैं. बड़े लोग भी इधर छिपछिपा कर आते हैं.''

''मगर सरदारजी तो कुछ और ही...''

''सरदारजी क्या कहेंगे,'' पान वाले ने उपेक्षा के साथ मुंह बनाया. ''उन का तो [illegible] ही इस से चलता है. ठेकेदारी करते हैं. अफसरों को तफरीहें कराते हैं. सच बात तो यह है कि किसी शरीफ परिवार के लायक [illegible] जगह नहीं है.''

हरि का सिर घूमने लगा. तभी पान वाले ने कहा, ''यह न समझें, मुझे इस में [illegible] गरज है. महल्ले में किसी से भी पूछ लें. [illegible] या रात को खुद ही अंदाजा लगा लें. [illegible] नहीं, यहां छिपा धंधा होता है. पुलिस वालों को सरदारजी हफ्ता देते हैं. यहां तफरीहें कराते हैं, कौन क्या कहे. लड़कियां क्या [illegible] पूरी खानगी हैं? आप को शरीफ आदमी [illegible] कर बता दिया कि नाहक परेशानी में न [illegible] लीजिए, पान खाइए.''

हरि ने यंत्रवत पान ले कर खा लिया. उस ने पान वाले की बात पर कहीं से संदेह [illegible] गुंजाइश नहीं पाई. सच ही होगा. ऐसा अकसर होता है.

उसे पैसे दे कर जब वह चला तो उस [illegible] समस्या अपनी जगह पर पूर्ववत थी. हरि [illegible] अब किसी के सहारे के बिना अपने भरोसे [illegible] ही कुछ करने की ठानी. वह रोज स्थानीय अखबारों में विज्ञापनों के कालम देखता, छुट्टी में शहर के चक्कर लगाता.

एक दिन शहर के जरा सभ्य इलाके [illegible] घूम रहा था. यहां पैसे वालों के [illegible] थे. सभी मकान थोड़ी जगह छोड़ कर बने [illegible] और कई के साथ लान, वाटिकाएं भी थी[illegible]

एक छोटे से खूबसूरत, फ्लैट के फा[illegible] पर उसे एक नया लिखा बोर्ड 'किराए [illegible] खाली है', दिखाई दिया. उस की बगल में [illegible] बोर्ड और था. ''डा. (मिस) लता एंथोनी [illegible]

हरि कुछ हिचका. लगता है, [illegible] डाक्टर ही मकान मालिक है. पर यह [illegible] ईसाई हैं. क्या इन के साथ रहना ठीक रहे[illegible]

देख लेने में क्या हर्ज है. उस ने कालबेल का बटन दबा दिया.

लगभग 30-32 वर्ष की एक युवती ने दरवाजा खोला. रंग पक्का, चमकदार चेहरा, तीखे कटाव का, आंखें बड़ीबड़ी और रसीली. बाल कंधों तक कटे, खूब सफेद स्कर्ट एवं ब्लाउज पहने.

"कहिए?" बड़ी सुरीली आवाज में युवती ने पूछा.

"जी," हरि ने कुछ हिचकते हुए कहा, "मैं वह 'किराए पर खाली है' का बोर्ड देख कर आया हूं."

"मकान चाहिए आप को? मैं तो परिवार वाले को ही दूंगी."

हरि समझ गया यही डा. लता है. उस ने तुरंत कहा, "जी, मेरे साथ मेरी पत्नी है."

"बच्चे?"

"अभी तो दो हैं, जो घर पर रह कर पढ़ रहे हैं. यहां सिर्फ मेरी पत्नी है और मैं." उस ने अपने दफ्तर का पता बताते हुए अपना परिचय दिया.

"बहुत अच्छा." उस ने बरामदे पर आ कर बगल वाला भाग खोलते हुए कहा, "मैं यहां अकेली रहती हूं. एक नौकरानी है फ्लैट का आधा हिस्सा पूरी तरह खाली है, आप लोग आराम से यहां रह सकते हैं, सभी तरह की सुविधाएं हैं."

फ्लैट बहुत सुंदर था. दो शयन गृह, रसोई, स्टोर, स्नानघर, अलग से बनी बाहर जाने की राह. अपना बरामदा.

किराया उस ने बताया तीन सौ. हरि को कुछ अधिक लगा, किंतु डाक्टर के साथ और ऐसे शांत, सुंदर इलाके में रहने के अपने फायदे हैं. उस ने हामी भर ली.

हरि लौटा तो प्रसन्न था. उस ने लीला को सारी बातें बताईं. ऐसी बढ़िया जगह पर रहने की कल्पना से ही लीला प्रसन्न हो गई. इसी प्रसन्नता में हरि ने शाम को पिक्चर का कार्यक्रम बनाया. लीला की तबीयत भारी होने से वह फिल्म देखने के लिए तैयार नहीं हुई. हरि अकेला चल दिया. जेब में उस ने तीन सौ रुपए रख लिए. सोचा आते वक्त डाक्टर को एक मास का किराया दे देगा. ऐसे मामलों में देर करना उचित नहीं. पता नहीं, कौन जा कर जगह हथिया ले.

अमर टाकीज उसी तरफ थी. हरि ने नौ बजे घर लौटते हुए डाक्टर के घर के पास रिकशा रोका और गेट के भीतर चला गया. चारों तरफ सन्नाटा, बरामदे का बल्ब भी नहीं जल रहा था. सिर्फ किनारे वाले डाक्टर के भाग की दो खिड़कियों के परदों से छन कर रोशनी आ रही थी.

अंधेरे पोर्च में एक मोटर साइकिल खड़ी देख कर हरि चौंका. कोई आया है क्या? वह हिचकिचाया. फिर उसे आशंका हुई, घर की तलाश में न कोई आ पहुंचा हो. वह बरामदे पर चढ़ा.

तभी खिड़की के परदे के भीतर से छन कर आ रही रोशनी के साथ कुछ ऐसी आवाज आई कि कालबेल बजाने को उद्यत हरि वहीं जड़ बन गया. फिर एक हलकी हंसी की आवाज.

वह खिड़की के परदे की दरार से भीतर देखने को बढ़ा.

गिला

यूं तो लब पर
हजार शिकवे थे,
रूबरू उन के कुछ
गिला न हुआ.

—मसूदा हयात

उसे क्षण भर दुविधा हुई. एक अविवाहित महिला के कमरे में यों चोरी सा झांकना...! किंतु उन आवाजों को सुन कर उत्पन्न हुई उत्सुकता ने उस की हिचकिचाहट को दबा दिया और उस ने परदे की दरार में आंखें लगा दीं.

उसे अपनी आंखों पर विश्वास नहीं हुआ. भीतर बैठक में डा. लता एक सोफे पर एक पुरुष की गोद में अस्तव्यस्त पड़ी थी. सामने सेंटर टेबल पर शराब की बोतल, गिलास. वह व्यक्ति हाथ में आधा भरा गिलास लिए, चुसकी ले रहा था.

''आखिर तुम ने किराए पर दे ही दिया वह हिस्सा?'' उस व्यक्ति ने डा. लता से पूछा.

हरि को अब स्पष्ट सुनाई दे रहा था.

''हां,'' डा. लता ने अलसाए स्वर में कह कर मेज से गिलास उठाया, ''दो ही तो हैं, मर्द दिन भर बाहर रहता है. हम दोनों को कोई दिक्कत नहीं हो सकती.''

उस ने एक गहरी चुसकी ली.

हरि के कान सनसनाने लगे. तभी पुरुष ने गिलास मेज पर रख कर डा. लता को यों आलिंगन में बांध लिया कि हरि वहां से तुरंत वापस लौट पड़ा.

रिकशे पर बैठ कर डेरे की तरफ बढ़ते हुए उस के मस्तिष्क में विचारों का तूफान उठ रहा था. वह शरीफों के महल्ले में मकान लेना चाहता है. शरीफ की परिभाषा क्या है? वही काम छिपा कर किया जाए तो शराफत है, और खुले आम किया जाए तो कमीनापन. क्या तमाम दुनिया ऐसी ही है? नहीं. वास्तविक शरीफ, नैतिकता रखने वाले लोग हैं अवश्य और बहुत हैं, पर हरि कहां खोजे?

अपने महल्ले की रौनक आज उसे इतनी अखर नहीं रही थी. तबले, सारंगी, सितार की गमक और संगीत के सुरों को सुनता हुआ वह अपने डेरे के सामने उतरा.

दरवाजे पर एक कार खड़ी देख कर वह चौंका. झटपट रिकशे वाले को पैसा दे कर भीतर पहुंचा, देखा लीला बिस्तर पर पड़ी है. एक डाक्टर उस के माथे पर पट्टी बांध रहा है. पास ही उस की नौकरानी और एक [स्त्री] खड़ी है.

हरि के हाथ के तोते उड़ गए. उस ने घबरा कर पूछा, ''क्या हुआ?''

''कोई खास बात नहीं,'' डाक्टर मुसकराया. ''आप की पत्नी गर्भवती हैं. जरा किसी काम से सामने के चौक पर आईं, वहीं चक्कर खा कर गिर पड़ीं. सिर में चोट लगी है. वैसे घबराने की कोई बात नहीं है.''

''और आप...आप कैसे...'' हरि हकलाया.

''जी, मैं जोहराजी का पारिवारिक डाक्टर हूं... डा. अरुण. उन का घर ठीक सामने हैं. इन्हें वह अपने यहां ले गईं. फिर इन के होश में आने पर डेरे का पता पूछ कर अपनी नौकरानी के साथ यहां पहुंचा दिया और मुझे फोन कर के बुलवाया. अब यह ठीक हैं.''

हरि ने जेब में हाथ डाला, ''डाक्टर साहब, मैं आप का बहुत कृतज्ञ हूं. आप की फीस...''

''जी,'' डाक्टर मुसकराया, ''जोहराजी ने कहा है यह मामला उन का है, फीस उन के हिसाब में लगेगी. आप को देने की जरूरत नहीं.''

हरि कुछ प्रतिवाद करे, इस से पहले ही डा. अरुण नमस्ते कह कर चल दिए.

एक स्त्री ने कहा, ''बाबूजी, अब हम चलते हैं. बाईजी को खबर देनी है. वह बहुत फिक्र में होंगी.''

''वह क्यों नहीं आईं?''

दोनों मुसकराईं. पहली ने धीरे से कहा, ''आप को शायद पसंद...''

''बकवास'' हरि ने कहा, ''मैं खुद कल आ कर उन को धन्यवाद दूंगा. आप जा सकती हैं.''

वे चली गईं.

हरि लीला के सिरहाने बैठा. उस ने क्षीण स्वर में पूछा, ''ठीक कर आए डेरा?''

''कोई जरूरत नहीं!'' हरि ने दृढ़ स्वर में कहा, ''यही सब से बढ़िया शरीफों के साथ की जगह है.''

प्रतिभाशाली युवतियों के लिए टेक्नालाजी के क्षेत्र में भी रोजगार के व्यापक अवसर हैं. पर इस के लिए यह जानकारी कहां से प्राप्त करें?

देश का औद्योगिक विकास टेकनालाजी पर निर्भर है. जितनी विकसित टेकनालाजी होगी, उद्योग उतनी ही तरक्की करेंगे, उतना ही देश आगे बढ़ेगा.

जैसेजैसे औद्योगिक विकास हो रहा है, वैसेवैसे टेकनालाजी के क्षेत्र में रोजगार के अवसर बढ़ रहे हैं. प्रतिभाशाली और चुनौती स्वीकार करने वाली लड़कियों के लिए भी इस क्षेत्र में रोजगार के व्यापक अवसर हैं. इंजीनियरिंग व टेकनालाजी के कुछ प्रमुख रोजगार निम्नलिखित हैं :

लेख • प्रतिनिधि

टेकनालाजी में रोजगार

ऐरोनाटिकल इंजीनियर : इस का काम वायुयानों के निर्माण से संबंधित होता है. वायुयान के ढांचे के डिजाइन से ले कर उस के निर्माण कार्य तक में इस की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है.

एग्रीकल्चर इंजीनियर : इस का कार्य कृषि उत्पादनों के विकास से संबंधित है. इस की शाखाएं हैं– सोल इंजीनियर, राइस टेकनालाजिस्ट, फार्म मशीनरी टेकनालाजिस्ट आदि.

आर्किटेक्चरल इंजीनियर : यह भवन, औद्योगिक क्षेत्र, कारखानों और शहरों के निर्माण की योजना, डिजाइन और रूपरेखा तैयार करता है.

बायो इंजीनियर : बीमारियों की खोजबीन व इलाज में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों को तैयार करवाना, उन में सुधार करना आदि इस इंजीनियर का प्रमुख कार्य है. इस का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम भारत में नहीं है, उस के लिए विदेश जाना पड़ता है.

सिरेमिक्स इंजीनियर : इस का काम चीनी मिट्टी की चीजों के निर्माण, डिजाइन और विभिन्न उद्योगों में उन के इस्तेमाल से संबंधित है. बहुत सी महिलाओं ने तो सिरेमिक्स इंजीनियरिंग का कोर्स करने के बाद लघु उद्योग के तौर पर चीनी मिट्टी की चीजें बनाने के कारखाने भी खोल लिए हैं.

केमिकल इंजीनियर : इस इंजीनियर का काम रासायनिक संयंत्रों की रूपरेखा तैयार करने, उन्हें स्थापित करने, उन का संचालन करने और उन की देखभाल से संबंधित है. इस का कार्यक्षेत्र काफी तेजी से बढ़ रहा है.

सिविल इंजीनियरिंग : इस का कार्य रेल मार्ग सुविधा, सड़क व्यवस्था, जल प्रबंध, नदी नियंत्रण, पुल, बांध और सिंचाई व्यवस्था आदि से संबंधित है.

इलेक्ट्रिकल इंजीनियर : इस का प्रमुख कार्य विद्युत के उत्पादन व वितरण से संबंधित है. विद्युत केंद्रों और बिजलीघरों में प्रयुक्त होने वाले उपकरणों की देखभाल, संचालन आदि भी इसे करना होता है.

इलेक्ट्रानिक्स व इलेक्ट्री... कम्यूनिकेशन इंजीनियर : अपने पद के ... के अनुसार यह इंजीनियर संचार के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले संयंत्रों व उपकरणों का प्रयोग करता है व उन्हें संभालता भी है.

इंडस्ट्रियल इंजीनियर : विभिन्न उद्योगों की रूपरेखा, उन में इस्तेमाल होने वाले संयंत्रों व उपकरणों का संयोजन व संचालन, विभिन्न वस्तुओं के निर्माण की रूपरेखा तैयार करना आदि इस इंजीनियर का प्रमुख कार्य है.

इंस्ट्रूमेंट टेकनालाजिस्ट : विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक सिद्धांत लागू करने से संबंधित कार्य इसे करने होते हैं.

इस का पांच वर्षीय पाठ्यक्रम रुड़की विश्वविद्यालय और रीजनल इंजीनियरिंग कालिज, तिरुचिरापल्ली में कराया जाता है.

लेदर टेकनालाजिस्ट : चमड़ा उद्योग आज का काफी विकसित उद्योग है इस उद्योग के सही संचालन व विकास के लिए पूरी वैज्ञानिक जानकारी होना आवश्यक है. इस उद्योग के वैज्ञानिक पक्ष का सारा काम लेदर टेकनालाजिस्ट को देखना होता है.

इस के लिए 'कालिज आफ लेदर टेकनालाजी, कलकत्ता और 'ए.सी. कालिज आफ टेकनालाजी, मद्रास विश्वविद्यालय, गिंडी,' मद्रास से 'एल.टी.' का कोर्स करना होता है.

रबड़ टेकनालाजिस्ट : इस टेकनालाजिस्ट का कार्य फैशन, शल्य चिकित्सा, जल मार्ग, खेल और अंतरिक्ष यात्रा में रबड़ के इस्तेमाल से संबंधित है. इस का स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 'इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी,' खड़गपुर से किया जा सकता है.

टेक्सटाइल इंजीनियर : वस्त्र निर्माण, वस्त्र रसायन और वस्त्र इंजीनियरी का व्यावहारिक व सैद्धांतिक ज्ञान रखने वाला यह इंजीनियर वस्त्र और धागों के निर्माण के तकनीकी पक्ष का जिम्मेदार होता है.

पैट्रोलियम इंजीनियर : इस का कार्य तेल व पेट्रोल के उत्पादन तथा शोधन ...
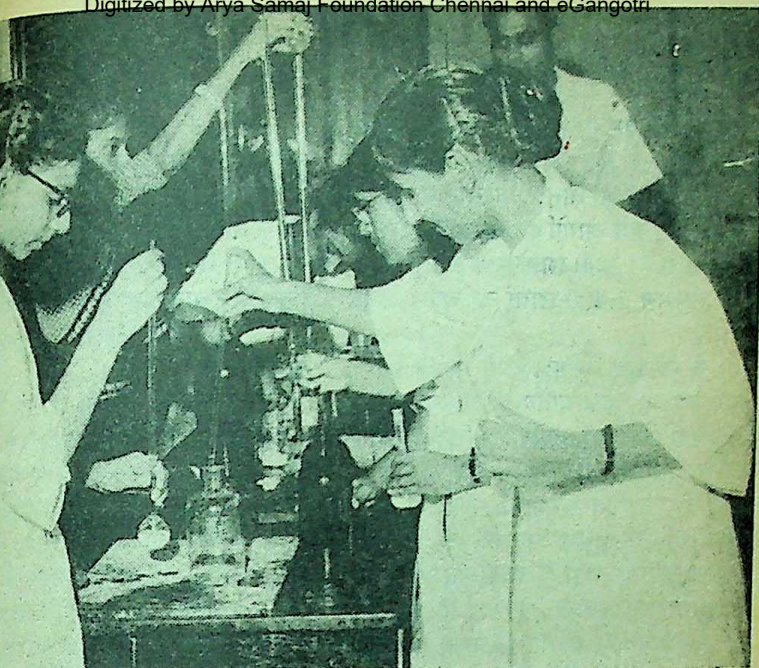
इस क्षेत्र में किताबी ज्ञान के अलावा प्रायोगिक ज्ञान भी जरूरी है.

संबंधित है. इस उद्योग में प्रयुक्त होने वाले यंत्रों, मशीनों आदि की इसे पूरी जानकारी होती है. इस का पाठ्यक्रम 'इंडियन स्कूल आफ माइन, धनबाद' में कराया जाता है.

मैकेनिकल इंजीनियर : इस का कार्य बहुत व्यापक है. यह विभिन्न उद्योगों में इंडस्ट्रियल इंजीनियर, प्रोडक्शन इंजीनियर, डिजायन इंजीनियर और मैनटेनैंस इंजीनियर के तौर पर कार्य करता है.

शिक्षण संस्थान

इंजीनियर और टेकनालाजिस्ट के विभिन्न पाठ्यक्रम कराने वाले प्रमुख संस्थानों का विवरण निम्नलिखित है :

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी : पवाई, बंबई, 400076.

यहां ए.ई., सी.एच.सी.ई, ई.ई., एम.ई, और एम.टी. में बी.टेक (बैचलर आफ टेकनालाजी) का पाठ्यक्रम कराया जाता है.

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, हौज खास, नई दिल्ली-110029.

इस संस्थान में सी.ई, सी.एच, ई.ई., एम.ई. और टी.एक्स. में बी.टेक. करने की सुविधा है.

• इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, कानपुर, 208016.

यहां ए.ई, सी.ई, सी.एच, ई.ई., एम.ई. और एम.टी. में बी.टेक. कराया जाता है.

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, खड्गपुर-721302

यहां पर ए.ई, ए.जी, ए.आर., सी.ई., सी.एच., ई.सी., ई.ई., एम.ई, एम.टी. और एन.ए. में बी.टेक. करने की सुविधा है.

इंडियन इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, मद्रास-600036.

इस संस्थान में ए. ई.,सी. ई, सी.एच. ई.ई., एम. ई. और एम. टी. में बी. टेक. कराया जाता है.

बनारस हिंदू विश्व विद्यालय इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, वाराणसी, 221005.

यहां सी. एच.,सी.आर.सी.ई, ई.ई एम.ई, और एम.टी. में बी. टेक करने की सुविधा है.

उपर्युक्त संस्थान एक संयुक्त प्रवेश परीक्षा प्रति वर्ष आयोजित करते हैं. इस में 35,000 से 40,000 छात्र भाग लेते हैं, जिन में से लगभग 1,400 छात्रों का चयन किया जाता है.

ये संस्थान विभिन्न क्षेत्रों में 'बी.टेक.' कराने के लिए पांच वर्षीय पाठ्यक्रम चलाते हैं. प्रवेश के लिए हायर सेकंडरी परीक्षा विज्ञान विषयों के साथ उत्तीर्ण होना आवश्यक है. इन संस्थानों में प्रवेश और पंजीकरण की सूचना फरवरी के मास में विभिन्न समाचारपत्रों में प्रकाशित होती है.

उपर्युक्त संयुक्त प्रवेश परीक्षा लेने वाले संस्थानों के अलावा अन्य संस्थान हैं:

बिड़ला इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी रांची- 835215.

यहां सी.ई, ई.सी, ई.ई., एम. ई. और पी.ई. में बी.एससी. कराई जाती है. पाठ्यक्रम चार वर्ष का है और प्रवेश के लिए योग्यता है– इंटरमीजिएट या समकक्ष परीक्षा विज्ञान विषयों के साथ. इस में कुल 135 छात्रों को प्रवेश दिया जाता है. प्रवेश परीक्षा की सूचना अप्रैल में प्रकाशित की जाती है और आवेदन की अंतिम तिथि 25 मई के आसपास होती है.

दिल्ली कालिज आफ इंजीनियरिंग, कशमीरी गेट, दिल्ली-110006.

इस कालिज में सी.ई.,ई.ई. और एम.ई. में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम कराया जाता है. 225 छात्रों का चुनाव किया जाता है, जिस में 25 प्रतिशत स्थान योग्यता के आधार पर देश भर के छात्रों के लिए सुरक्षित हैं, शेष दिल्ली प्रदेश के छात्रों के लिए हैं.

वड़ौदरा विश्वविद्यालय, इंजीनियरिंग व टेकनालाजी संकाय, वडौदरा.

यहां सी.ई., सी.एच., ई.ई., एम.ई., एम.टी., एं.आर. और टी. एक्स. में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम है. कुल 330 स्थानों में से 75 प्रतिशत गुजरात के छात्रों के लिए, शेष देश भर के विद्यार्थियों के लिए हैं.

यू.डी.सी.टी. विश्वविद्यालय, रासायनिक टेकनालाजी विभाग, माटुंगा, बंबई–400019.

यहां सी.एच. का चार वर्षीय पाठ्यक्रम है. कुल 60 स्थानों में 18 देश भर के छात्रों के लिए और बाकी महाराष्ट्र के छात्रों के लिए हैं.

भारतीय विज्ञान संस्थान, बंगलौर-560012.

इस संस्थान में ई.सी.,ई.ई. और एम.टी. में तीन वर्षीय पाठ्यक्रम कराया जाता है. कुल स्थान हैं-90.प्रवेश योग्यता : भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान और गणित विषयों के साथ प्रथम श्रेणी में बी.एससी. अप्रैल मई में प्रवेश परीक्षा के लिए आवेदन मांगे जाते हैं.

मणिपाल इंस्टीट्यूट आफ टेकनालाजी, मणिपाल-576119.

यहां सी.ई.,सी.एच., ई.ई. और एम.ई. में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम है. कुल स्थान 240. प्रतिवर्ष आवेदन की अंतिम तिथि 31 जुलाई होती है. यहां अनुदान देने वालों के लिए भी कुछ स्थान सुरक्षित हैं.

बिड़ला टेकनालाजी व विज्ञान संस्थान, पिलानी.

यहां सी.ई., सी.एच., ई.ई. एम.ई. में पांच वर्षीय पाठ्यक्रम के लिए 210 स्थान उपलब्ध हैं. प्रवेश योग्यता : विज्ञान विषयों में इंटरमीजिएट. आवेदन की अंतिम तिथि प्रति वर्ष 30 जून.

मद्रास टेकनालाजी संस्थान, मद्रास-600064.

यहां ई.सी. और आई.एन.टी. के तीन वर्षीय पाठ्यक्रम के 300 स्थान उपलब्ध हैं. प्रवेश योग्यता: प्रथम श्रेणी में विज्ञान स्नातक. आवेदन की अंतिम तिथि: प्रति वर्ष 25 जुलाई.

शासकीय केंद्रीय टेक्सटाइल संस्थान, परबती बागला रोड, कानपुर.

इस संस्थान में टी.एक्स का चार वर्षीय

...क्रम कराया जाता है. स्थान: 120. ...वेदन की अंतिम तिथि: प्रति वर्ष 5 जुलाइ.

इंजीनियरिंग संकाय, जाधवपुर ...विश्वविद्यालय, कलकत्ता-700032.

यहां ए.आर.,सी.ई., सी.एच., ई.ई., ...और एम. ई. के पांच वर्षीय पाठ्यक्रम ...यहां 360 स्थान उपलब्ध हैं. आवेदन की ...अंतिम तिथि सामान्यत: 20 फरवरी होती है.

सिरेमिक टेकनालाजी महाविद्यालय, ...73 अनिवाशचांद्र बानर्जी लेन, ...कलकत्ता-700010.

यहां टी.एक्स. में बी. एससी. का चार ...वर्षीय पाठ्यक्रम चलाया जाता है. प्रवेश ...परीक्षा में लगभग 36 छात्रों का चयन होता ...

टेक्सटाइल टेकनालाजी महा-...विद्यालय, मुरशिदाबाद.

इस महाविद्यालय में टी.एक्स. में ...बी.एससी. का साढ़े चार वर्ष का पाठयक्रम है. ...प्रवेश परीक्षा में 36 छात्र चुने जाते हैं.

श्री जे.जे. स्कूल आफ आर्किटेक्चर-...डा. दादा भाई नौरोजी रोड, बंबई-400001.

यहां प्रवेश परीक्षा द्वारा 60 छात्रों का ...चयन किया जाता है.

लक्ष्मीनारायण टेकनालाजी संस्थान ...नागपुर.

यहां सी.एच. में बी.टेक (रसायन) का पाठ्यक्रम कराया जाता है. कुल स्थान: 60. आवेदन की आखिरी तारीख: प्रत्येक वर्ष 18 जून. यहां केवल कुछ प्रमुख संस्थानों का उल्लेख किया गया है, जो विशेष विषयों में पाठ्यक्रम चलाते हैं. वैसे पूरे भारत में इंजीनियरिंग व टेकनालाजी के लगभग 200 शिक्षण संस्थान हैं.

इन संस्थानों के बारे में और भी अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित स्थानों पर संपर्क किया जा सकता है:

राज्यों के शिक्षा व व्यवसाय निर्देशन ब्यूरो के निदेशक.

क्षेत्रीय अधिकारी,

राष्ट्रीय शैक्षिक शोध व प्रशिक्षण संस्थान परिषद,

(अ) 16, अरविंद रोड, नई दिल्ली-110016.

(ब) ब्लू डाइमंड होटल के समीप, कोरेगांव पार्क, पूणे- 411001.

वेतन

इंजीनियर व टेकनालाजिस्ट का वेतन प्रारंभ में सामान्यत: 700 से 1300 रुपए (मूल) होता है. वेतन के अलावा उसे कई सुविधाएं भी प्राप्त होती हैं. ●

लाखों जीते हजारों का कर्ज चढ़ा

मालकम हेसकिस नाम के एक 35 वर्षीय अंगरेज को एक प्रतियोगिता में 2,90,000 पौंड प्राप्त हुए और उस के खर्च का यह हाल रहा कि पांच वर्षों के बाद उस पर 11,000 पोंड का कर्ज चढ़ गया.

अपने इन शाहाना खर्चों के संबंध में हेसकिस ने बताया कि उस ने अपने मातापिता और भूतपूर्व पत्नी के लिए एकएक मकान खरीदा, अपने लिए एक राल्स रायस कार खरीदी, अपने भाई की शादी के अवसर पर उसे 5,000 पौंड दिए, सेलसी (ससेक्स) में एक क्लब खरीद कर उसे फिर से नया रूप देने में 70,000 पौंड लगाए, एक कालिज को 18,000 पौंड दिए, अपनी भूतपूर्व पत्नी से पुन: मेल हो जाने पर उस के घर को सजाने में कई हजार पौंड खर्च कर दिए तथा 20,000 पौंड प्रति वर्ष अपने रहनसहन पर खर्च किए.

ब्राइटन में अपने दिवालिया होने की दरख्वास्त देते समय हेसकिस ने न्यायालय के समक्ष यह स्वीकार किया कि उसे सरकार तथा शराब की एक फर्म के 11,000 पौंड देने हैं. उस ने अपने क्लब की असफलता का कारण मंदी बताया, लेकिन यह भी माना कि शुरूशुरू में वह बहुत अधिक खर्चीला था.

मनोज की सफलता का राज

परदे के आगे परदे के पीछे

एक फिल्मी पार्टी में मनोजकुमार की सफलता पर काफी बहस छिड़ी हुई थी. कुछ लोग कह रहे थे कि वह जनरुचि को खूब समझता है. कुछ लोगों का मशविरा यह था कि मनोजकुमार को अभिनय नहीं करना चाहिए, क्योंकि वह बहुत ही बंडल किस्म का अभिनेता है. लेकिन सब एक मत से इस बात की सराहना कर रहे थे कि वह एक अच्छा निर्देशक है.

निर्देशक राजेंद्रकुमार नैयर को शायद मनोजकुमार की यह तारीफ अच्छी नहीं लगी. उन्होंने कहा, "यार, हमारी तरह मनोजकुमार न तो शराब पीता है, न ऐयाशी करता है, न पार्टियों में जाताआता है. शाम को जल्दी सो जाता है और सुबह जल्दी उठ जाता है. हम लोगों की तरह अगर वह भी ये सारे काम करे और उस के बाद कोई कामयाब फिल्म बना कर दिखाए तो हम भी मनोजकुमार की दिल खोल कर तारीफ करेंगे, वरना ऐसे तो कोई भी कामयाब हो सकता है." निर्देशक नैयर की इस दलील का किसी के पास कोई जवाब नहीं था.
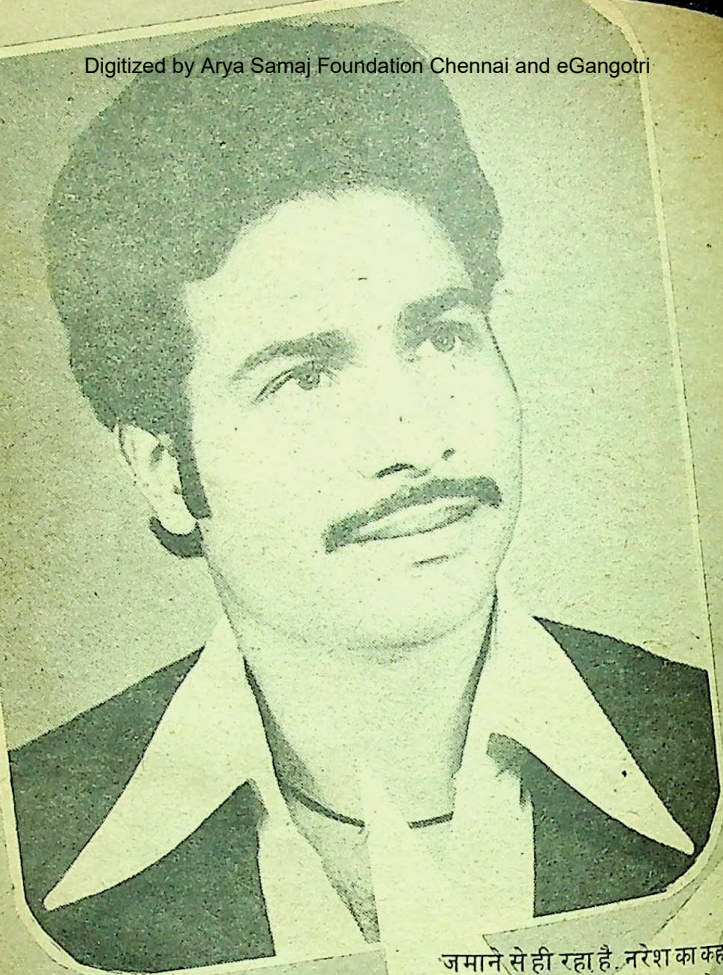
अच्छा लेखक या अभिनेता

"एक अच्छा लेखक अच्छा अभिनेता जरूर साबित हो सकता है और इस की मिसाल कादरखां से दी जा सकती है." नरेशकुमार शिवा कहानीकार बनने बंबई आए थे, लेकिन फिल्म वालों ने उन्हें अभिनेता बना दिया. नरेश इन दिनों 'महबूबा एक रात की', 'दो धमाके', 'सुहाग की क़सम' और कुछ अन्य फिल्मों में काम कर रहे हैं.

नरेशकुमार की कहानियां लोग सुनते हैं, पसंद भी करते हैं, लेकिन अब तक खरीदी किसी ने नहीं है. अभिनय के साथसाथ कहानी लेखन का शौक नरेश को स्कूलकालिज के जमाने से ही रहा है. नरेश का कहना है, "एक दिन वह जरूर आएगा जब मुझे दोनों क्षेत्रों में सफलता मिलेगी. अभी मुझे अभिनय करने के लिए मिल रहा है तो मैं इस के सहारे अपने पांव जमा रहा हूं. उस के बाद मेरी कहानियों पर फिल्में बनने में ज्यादा देर नहीं लगेगी." नरेशकुमार का यह सपना कब पूरा होगा, यह तो आने वाला वक्त ही बताएगा, लेकिन एक बात यह जरूर सिद्ध हो गई है कि फिल्मी दुनिया में आदमी जो सपना ले कर आता है वह आमतौर पर पूरा नहीं होता और फिल्म वाले उसे एक दूसरा ही ख्वाब दिखा देते हैं.

संजय दत्त की तारीफ?

एक साल पहले बड़े जोश के ...

दिलीपकुमा...
शाह की हद...
चौंका दिया...
फायदा हुआ...
लेकिन तारि...
याय कुछ अ...

नरेशकुमार ...
कब साकार ...

संजय दत्त (...
द्वारा की जा...
जाएगी?

दिलीपकुमार ने [illegible] शाह की हद से ज्यादा तारीफ कर के लोगों को चौंका दिया था. तारिक शाह को इस से फ़ायदा हुआ और उसे कई फिल्में भी मिलीं. लेकिन तारिक शाह के बारे में अब लोगों की राय कुछ अच्छी नहीं है.

नरेशकुमार शिवा (बाएं) सपने कब साकार होंगे.

संजय दत्त (नीचे) दिलीपकुमार द्वारा की जा रही तारीफ कहां ले जाएगी?

[illegible] दिलीपकुमार को संजय दत्त की तारीफ करने की सनक सवार है. हर पार्टी में वह उस की हद से ज्यादा तारीफ करता नजर आता है. लेकिन फिल्मी दुनिया वाले

संजय दत्त को 'राकी' में नाकाम होते देख चुके हैं. इधर संजय दत्त की आदतों ने उसे काफी बदनाम कर दिया है. दिलीपकुमार अब उस की कितनी ही ज्यादा तारीफ क्यों न करे, कोई उस की बातों में आने वाला नहीं है.

फिर औरत का सहारा

धर्मेंद्र हमेशा औरत के सहारे आगे बढ़ने की कोशिश में रहा. जिस जमाने में मीनाकुमारी नंबर एक हीरोइन मानी जाती थी, धर्मेंद्र ने 'फूल और पत्थर' के निर्माण के समय उस की कमजोरी का फ़ायदा उठा कर काफी फिल्में अपने हाथ में ले ली थीं. मीनाकुमारी के मरने के बाद हेमा मालिनी के साथ उस ने चक्कर चला कर उस के साथ अपनी जोड़ी बना ली.

शादी के बाद हेमा मालिनी का सितारा गर्दिश में आ जाने से धर्मेंद्र के पास भी फिल्मों की कमी आ गई है और अब उस के चेहरे पर बुढ़ापा भी झलकने लगा है. अपने पैर जमाने

के लिए धर्मेंद्र ने अब नई लड़की अनीता राज पर डोरे डालना शुरू कर दिया है. फिल्म जगत में हर जगह यह चर्चा है कि आजकल अनीता राज धर्मेंद्र की झोली में आ गिरी है. अनीता राज को अपने फिल्मी जीवन की तरफ ध्यान देना चाहिए. अगर धर्मेंद्र के साथ वह इसी तरह जुड़ी रही तो उस का हाल भी मीनाकुमारी और हेमा मालिनी जैसा ही होगा. लेकिन शायद अनीता राज की समझ में यह बात इस वक्त नहीं आएगी, क्योंकि प्रेम अंधा होता है.

रति अग्निहोत्री का झूठ

फिल्म 'एक दूजे के लिए' की सफलता के बाद यह बहस चल पड़ी थी कि फिल्म में रति अग्निहोत्री की अपनी आवाज नहीं है. इस का खंडन करते हुए रति ने यह भी कहा था कि फिल्म में बलात्कार का जो दृश्य है वह उस की डुप्लीकेट ने किया है.

हाल ही में फिल्म के निर्देशक के बालाचंदर ने कहा, ''यह रति अग्निहोत्री इतना झूठ क्यों बोलती है. हम ने डबिंग के

अनीता राज : प्राथमिकता किसे- फिल्मी जीवन या धर्मेंद्र को?

दौरान उस से जब [illegible]
सही हिंदी बोलनी नहीं आती थी. मजबूरन
हम ने जरीना कादिर की आवाज में सारे

रति अग्निहोत्री : झूठ का दोष किस के
सिर?

[illegible] फिल्म में बलात्कार का जो
दृश्य है, वह भी खुद उस ने ही क्रिया है." अब
रति किस को झूठा कहेगी– पत्रकारों को या
खुद को?

'कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता'

भेंटवार्ता • स. खान

निदा फाजली

ग्वालियर से अपनी संघर्ष यात्रा प्रारंभ करने वाले निदा फाजली ने फिल्मों में गीत लिखने से पहले खासा लंबा सफर तय किया है. आज वह इस मुकाम तक कैसे पहुंचे?
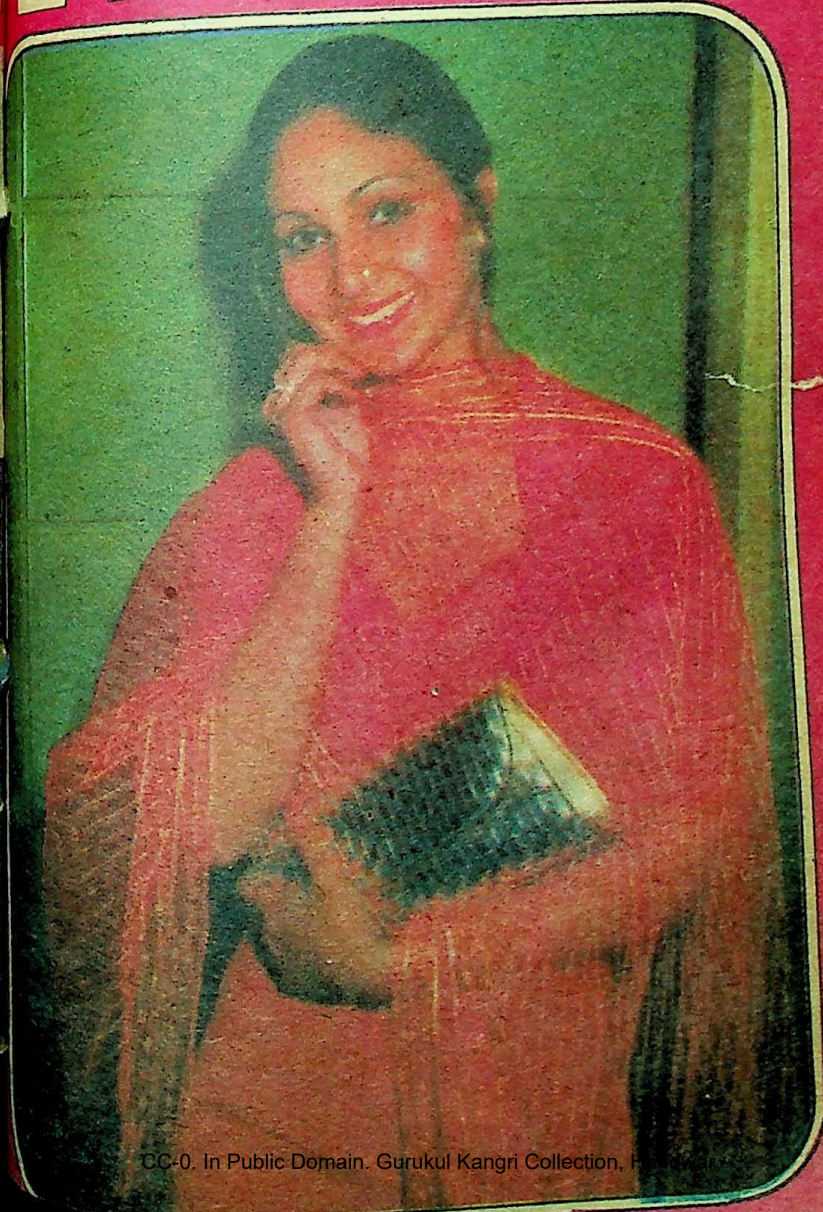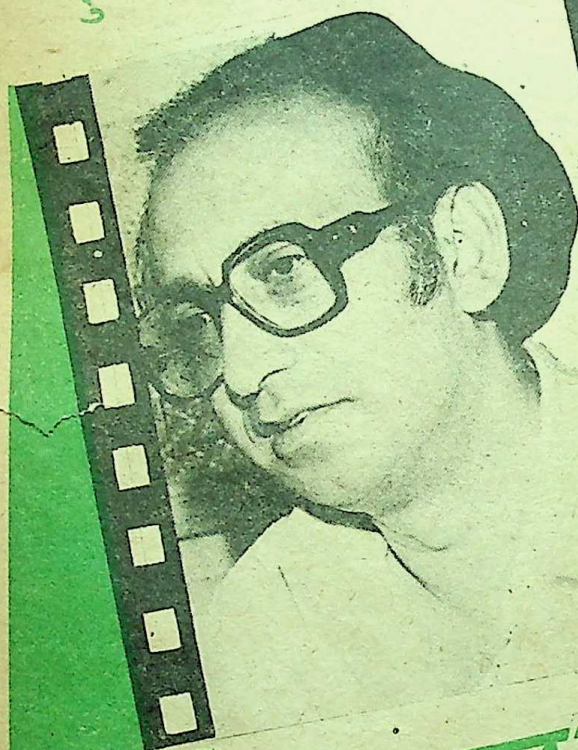
हिंदी फिल्म गीतकारों में इन दिनों निदा फाजली का नाम बड़ी तेजी से उभर कर सामने आया है. दिल्ली में पैदा हुए और ग्वालियर से उर्दू व हिंदी में एम.ए. करने वाले निदा फाजली में शेरोशायरी की दीवानगी उस वक्त पैदा हुई, जब 1965 में वह अचानक अकेले हो गए. उन का अच्छाभला खुशहाल घर देखतेदेखते उजड़

गया– 'यह क्यों हुआ? ऐसा क्यों होता है?' मेरी शायरी में इन्हीं सवालों का जवाब है. वह कहते हैं :

"शहर तो बाद में वीरान हुआ,
मेरा घर खाक हुआ था पहले."

निदा फाजली ने पहला मुशायरा अपने कालिज में ही पढ़ा था. उन्होंने जब लिखना शुरू किया था, उन दिनों पत्रिका 'सरिता' उर्दू व हिंदी दोनों भाषाओं में निकला करती थी. उसी में उन्होंने पहली बार अपना नाम छपा हुआ देखा.

प्रश्न : फिल्मों में आने का खयाल कैसे आया?

उत्तर : फिल्मों में आने का कोई खयाल नहीं था. उर्दू हिंदी के अदबी रिसालों में लिखना और मुशायरे पढ़ना– यही छोटी सी दुनिया थी, जो मुझे पसंद भी थी और जिसे मैं ने रोटीरोजी का जरिया बना लिया था.

हुआ यों कि मेरी एक नसर की किताब 'मुलाकातें' छपी थी. यह तनकीदी (समालोचनात्मक) किताब थी. जिस में उर्दू के कई बड़ेबड़े नामों के पीछे छिपा उन का छोटापन दिखाने की कोशिश की गई थी. इस की वजह से बहुत सारे लोग मुझ से खफा हो गए. मेरी रोटीरोजी के रास्तों पर पहरे बिठा दिए गए.

परेशानी के उन दिनों में मैं अपनी यह किताब राजेंद्रसिंह बेदी को उन के आफिस में देने गया. वहां उन के सहायक जगदीश सदाना से भी मुलाकात हुई. उन को किताब कुछ ज्यादा ही अच्छी लगी. उन्होंने मेरा परिचय सुधेंदु राय से करवाया जो उन दिनों 'सौकार' बनाने वाले थे. संवाद लिखने के लिए मुझे लिया गया. बस, तब से इस फिल्म नगरी की खाक छान रहा हूं.

इस नगरी में फिल्म की कामयाबी ही लेखक की कामयाबी समझी जाती है. 'सौकार' बुरी तरह से नाकाम हुई और उस के साथ मैं भी नाकाम ठहराया गया.

एक बार गीतकार विट्ठल भाई पटेल के घर की एक रंगीन महफिल में सुगनू सक्सेना भी शरीक थे. उन्हें 'हिंदुस्तान-पाकिस्तान बंटवारे पर लिखी हुई मेरी एक नज्म पसंद आई. बाद में उन्होंने अपनी चार फिल्मों में विट्ठल भाई के साथ मेरा नाम भी शामिल किया यानी कि इस तरह से पहली बार फिल्म 'शायद' में गीत लिखे. गीत लोकप्रिय भी हुए.

प्रश्न : फिल्मों में गीत लिखते हुए किसकिस प्रकार की कठिनाइयां आईं?

उत्तर : कठिनाइयां तो हर काम में आती हैं, लेकिन इन कठिनाइयों से निबटना ही जिंदगी है. मैं फिल्मों में गीत लिखने के लिए सीधा स्कूल से नहीं आया था. यहां आने से पहले मैं तीन किताबें लिख चुका था, जिन पर कई रियासतों की सरकारों ने कई ईनाम भी दिए थे. मेरी नज्में और गजलें कई यूनिवर्सिटी और स्कूलों के कोर्सों में शामिल हो चुकी थीं.

प्रश्न : क्या एक गीतकार को फिल्म तकनीक का ज्ञान होना जरूरी है?

उत्तर : फिल्मी गीत की जबान लोक भाषा की तरह तसवीरी होती है. इस में खयालात को शब्दों की तसवीरों के जरिए पेश करना होता है. सिचुएशन की समझबूझ, भाषा का सरल और सहज रूप खास शर्तें हैं. किरदार के लिहाज से शब्दों का इंतखाब भी बहुत जरूरी है.

प्रश्न : आप ने अब तक कितनी फिल्मों में गीत लिखे हैं? अपना लिखा हुआ कोई ऐसा गीत जो आप को भी बेहद पसंद हो...?

उत्तर : फिल्मों की गिनती तो मुशकिल है. मेरे गीतों की मेरी पसंद से ज्यादा अहमियत है, अवाम की पसंद की. अवाम की पसंद ही गीतों की कामयाबी की कसौटी है.

प्रश्न : आप का गीत लिखने का तरीका क्या है?

उत्तर : गीत मैं आम तौर से घर की तन्हाई में लिखने का आदी हूं. टेपरिकार्ड में धुनें होती है और हाथ में कलम. ज्यादा से ज्यादा 10-15 मिनट में गीत तैयार हो जाता है. लेकिन 10-15 मिनट में गीत तैयार करने के लिए अपनेआप को मूड में लाना पड़ता है, जिस में ज्यादा वक्त लग जाता है. →

- पीली धारियों वाला टाप
- बच्चे की जैकेट
- 'वी' आकार का दोरंगा टाप
- योक वाला कार्डीगन
- त्रिकोणों से सजा पुलोवर
- जालीदार बांहों व लंबे कफ वाली स्कीवी
- बिब वाली मिडी स्कर्ट
- टी शर्ट

इन के अतिरिक्त अन्य कई आकर्षक नमूने, सरल विधियां, रंगीन चित्रों व ग्राफों के साथ इस ढंग से प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिन्हें देखते ही आप बनाना शुरू कर देंगी.

गृहशोभा

सितंबर 1982 अंक
आज ही सुरक्षित कराएं

महिलाओं को रिझाने वाली संपूर्ण पत्रिका

प्रश्न : क्या ऐसा कभी हुआ है कि आप का गीत बाद में किसी फिल्म से काट दिया गया हो?

उत्तर : हां, 'सिलसिला' के लिए मैं ने एक गीत 'खुद से जो वादा किया था...' लिखा था, लेकिन फिल्म पूरी होने के बाद उसे शामिल करना जरूरी नहीं समझा गया. यह गीत रेखा और अमिताभ पर फिल्माया गया था. इसी तरह फिल्म 'आहिस्ताआहिस्ता' के लिए एक गीत 'कई साल पहले' रिकार्ड किया गया था, लेकिन इसे भी फिल्म में शामिल नहीं किया गया. ये दोनों गीत फिल्मों के रिकार्डों में शामिल हैं.

प्रश्न : ऐसा कोई गीत जिसे लिखते हुए आप को सब से ज्यादा परेशानी हुई हो?

उत्तर : कमाल अमरोही की फिल्म 'रजिया सुलतान' में एक गीत 'तेरा हिज्र मेरा नसीब है, तेरा गम ही मेरी हयात है...' लिखते हुए मुझे सब से ज्यादा परेशानी आई. क्योंकि कमाल अमरोही खुद एक बहुत अच्छे शायर हैं.

पहली बार जब उन्होंने मुझे बुलाया तो मुझे उन के मिजाज को पहचानने में थोड़ा वक्त लगा. एक ही सिचुएशन को मुखतलिफ तरीकों से टटोलना पड़ा.

कमाल साहब के मयार पर पूरा उतरना मेरे लिए एक इम्तहान भी था. मैं ने एक ही सिचुएशन पर चारपांच गीत लिखे और उन में से एक उन्हें पसंद आ गया. लेकिन दूसरा गीत लिखते वक्त ऐसी कोई परेशानी नहीं हुई, क्योंकि उस वक्त तक मैं उन के स्टाइल से परिचित हो चुका था.

प्रश्न : आप को किनकिन लोगों के साथ काम कर के मजा आया?

उत्तर : काम बजातेखुद एक मजा है. मैं ने जिनजिन लोगों के साथ अब तक काम किया है, उन सभी के साथ काम कर के मजा आया. कभी किसी से कोई शिकायत नहीं हुई.

प्रश्न : अब किनकिन लोगों के साथ काम करने की ख्वाहिश है?

उत्तर : हजारों ख्वाहिशें ऐसी कि हर ख्वाहिश पे दम निकले.

प्रश्न : वाह बहुत खूब. आप की आने वाली फिल्में...?

उत्तर : यों तो दरजनभर से ज्यादा फिल्मों में गीत लिख रहा हूं, जिन में 'रजिया सुलतान,' 'वापसी,' 'प्यारा दोस्त' और 'चोरपुलिस' खास हैं.

"मैं डुप्लीकेट शायर नहीं..."

—निदा फाजली

बंबई से छपने वाली एक फिल्मी पत्रिका में किसी का एक खत 'डुप्लीकेट शायर' शीर्षक से छपा है, जिस में उन्होंने मुझ पर इल्जाम लगाया है कि फिल्म 'आहिस्ताआहिस्ता' की गजल 'कभी किसी को मुकम्मल जहां नहीं मिलता...' शायर कैफी आजमी की गजल 'मैं ढूंढ़ता हूं जिसे वो नहीं मिलता...' को मैं ने थोड़ी सी फेरबदल कर के जनता के सामने परोस दिया है, बिलकुल गलत आरोप है. इस से लिखने वाले की कम वाकफियत जाहिर होती है. काश वह अदब और साहित्य से वाकिफ होते, सिर्फ मुशायरों में सुनीसुनाई गजलों तक महदूद नहीं होते. यह गजल जो आहिस्ताआहिस्ता में ली गई है, मेरी किताब 'मोर नाच' में शामिल है जो सात साल पहले छपी थी. यह गजल कमाल अमरोही अपनी फिल्म 'रजिया सुलतान' में लेना चाहते थे. बाद में यश चोपड़ा ने अपनी फिल्म 'सिलसिला' में इस का पहला शेर अमिताभ की जबान से कहलवाया है. एक ही 'रदीफ और काफिया' (तुकांत) में गजलें लिखना उर्दू शायरी की रिवायत (परंपरा) है. कैफी साहब ने भी ऐसा ही किया है."

आर्किटेक्ट

इन्टीरियर डेकोरेटर

फाइव-स्टार होटल

गृहिणी

सब के सब एक बात से सहमत हैं...
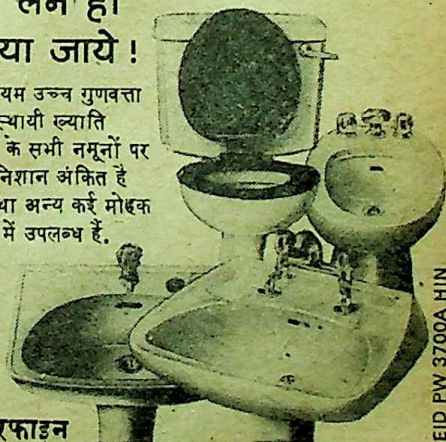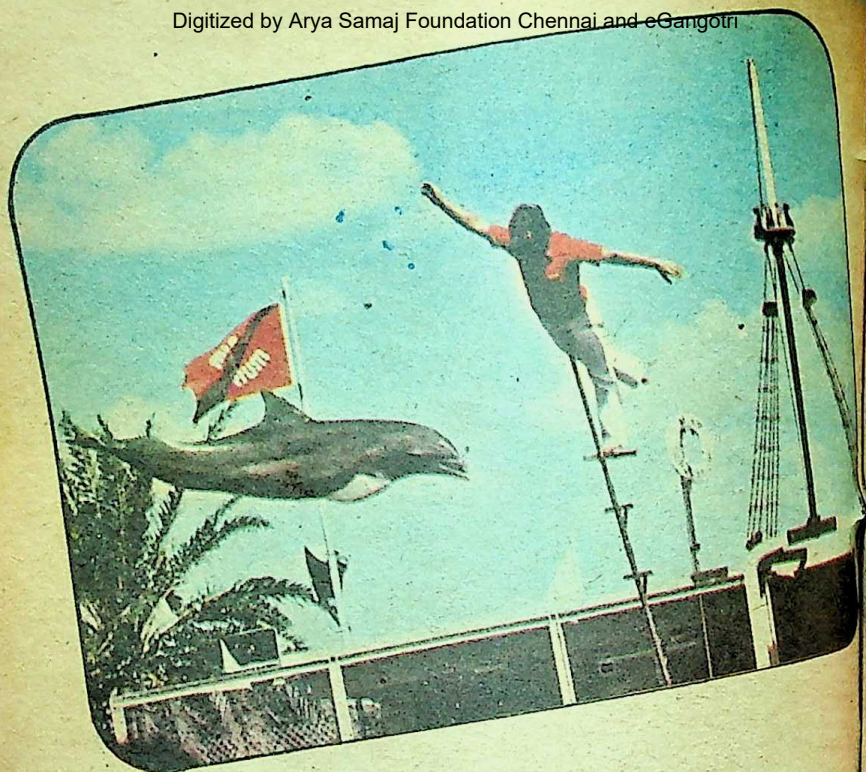
एक वफादार मित्र

डालफिन

लेख • विजयकुमार श्रीवास्तव

आप ने कभी मनुष्य के अतिरिक्त किसी अन्य प्राणी को मनुष्य की तरह कहकहे लगाते सुना है? स्त्रियों की तरह चीखते सुना है? शायद नहीं. परंतु एक प्राणी ऐसा है जो यह विलक्षण कार्य कर दिखाता है और वह है डालफिन.

डालफिन की शारीरिक बनावट मछलियों जैसी होती है, उन्हीं के समान रहती भी पानी में है, परंतु मुंह पक्षियों की चोंच के समान होता है. सामान्य अवस्था में इस के तैरने की गति लगभग 30-40 किलोमीटर प्रति घंटा होती है, परंतु आवश्यकता पड़ने पर यह 60 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से भी तैर सकती है. लेकिन आश्चर्य की बात यह है कि डालफिन मछली न हो कर हमारे आप के समान ही स्तनपान करने वाला प्राणी है. यह मछलियों के समान अंडे न दे कर बच्चे जनती है और उन्हें अपना दूध पिला कर

...ती है.

इस को भी मनुष्य के समान दिल का रोग हो सकता है और निमोनिया भी. चालाकी में भी यह कम नहीं है. कभीकभी डरावनी आवाजें निकाल कर यह अपने शत्रुओं को भगा देती है. इस के क्रियाकलाप को देख कर लगता है कि शायद मनुष्य के पश्चात डालफिन ही सब से बुद्धिमान प्राणी है. आजकल तो इन्हें प्रशिक्षण दे कर विभिन्न करतब करने सिखाए जाते हैं. इन के करतब देख कर कोई भी इन्हें बुद्धिमान मानने से इनकार नहीं कर सकता.

वैसे बुद्धिमत्ता की सहीसही परिभाषा इतनी सरल नहीं है. हम किसी जीव की बुद्धिमत्ता को उस के द्वारा अपने चारों ओर के वातावरण के अनुसार अपने को अनुकूल कर लेने की क्षमता से मापते हैं. हमारे लिए बुद्धिमान वह है जो प्रशिक्षण देने पर अथवा दूसरे को कुछ करते देख कर स्वयं बहुत कुछ सीख लेता है.

ऐसे कई उदाहरण हैं जो साबित करते हैं कि डालफिन मनुष्यों की तरह व्यवहार करती है. इस बारे में वैज्ञानिकों के मत क्या हैं?

विज्ञान की भाषा में प्राणी के मस्तिष्क का आकार तथा उस के मस्तिष्क एवं संपूर्ण शरीर का आनुपातिक भार उस की बुद्धिमत्ता का द्योतक होता है. संसार में एकमात्र डालफिन ही ऐसा जीव है जिस का मस्तिष्क मानव मस्तिष्क से बड़ा होता है. मनुष्य के 1,450 ग्राम भार के मस्तिष्क की तुलना में डालफिन के मस्तिष्क का भार 1,700 ग्राम होता है. इस के मस्तिष्क का अग्रभाग 'प्रमस्तिष्क' मनुष्य के समान ही अत्यंत कुंडलित होता है. मस्तिष्क का पीछे का भाग 'अनुमस्तिष्क' जो मुख्य रूप से अनैच्छिक क्रियाओं को नियंत्रित करता है, मनुष्य की तुलना में बड़ा होता है. परंतु मनुष्य के मस्तिष्क तथा शेष शरीर का आनुपातिक
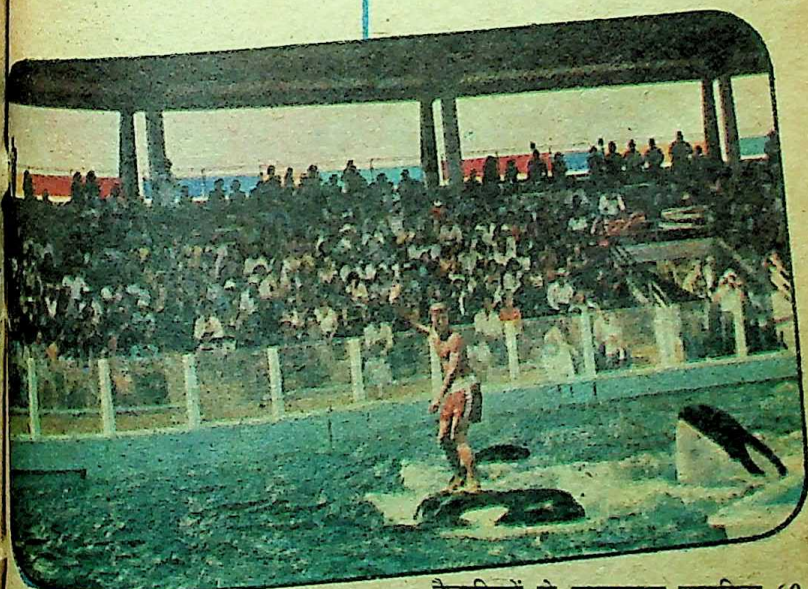
वैज्ञानिकों के मतानुसार डालफिन 60 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैर सकती है.
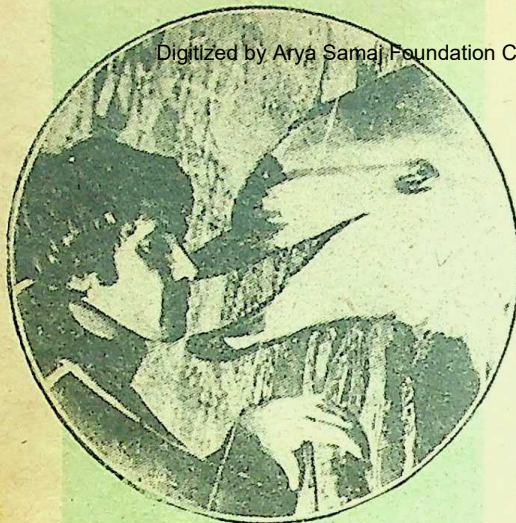
हमारी मित्र डालफिन

भार डालफिन की अपेक्षा अधिक होता है और संभवतः यही मनुष्य के अधिक बुद्धिमान होने का रहस्य है.

बुद्धिमानी का परीक्षण

वैज्ञानिक डालफिन की बुद्धिमत्ता का परीक्षण करने के लिए इसे कोई समस्या देते हैं, जिस का इसे हल खोजना होता है. समस्या का चुनाव इस की मनोवैज्ञानिक रुचियों एवं शारीरिक तथा मानसिक सीमाओं को ध्यान में रख कर किया जाता है. यदि समस्या अत्यधिक जटिल हुई तो डालफिन उस को हल न कर पाने की स्थिति में अशांत हो उठती है.

एक बार फ्लोरिडा (अमरीका) में दो वैज्ञानिकों विन्नथाप कैलाग एवं चार्ल्स राइस द्वारा दी गई अत्यंत जटिल समस्या ने एक डालफिन को इतना हतोत्साहित कर दिया था कि उस ने झुंझला कर मुंह में प्लास्टिक का एक पाइप ले कर उस से प्रयोग में प्रयुक्त उपकरण को चूरचूर कर डाला.

उचित प्रशिक्षण देने पर तो डालफिन एक साथ पांच करतब सीख लेती है. और तो और एक अप्रशिक्षित डालफिन दूसरी प्रशिक्षित डालफिन को कोई करतब करते

समुद्र में खेलतीकूदती डालफिनों का झुंड.

देख कर बिना किसी प्रशिक्षक की सहायता उसे अपनेआप सीखने की क्षमता रखती है. मैरीलैंड में डा. ब्राउन तथा क्लैडवेल ने एक 'स्पिनर डालफिन' को एक 'बाटलनोज डालफिन' के साथ रख दिया. स्पिनर डालफिन की आदत होती है कि वह पानी से बाहर कूद जाती है और पुनः पानी में वापस आने से पहले कार्क पेंच के समान नाचती है. बाटलनोज डालफिन पानी से वापस निकलने के पश्चात पुनः बिना नाचे ही पानी में डूब जाती है. दोनों को साथसाथ रखने पर प्रशिक्षक के इशारे पर स्पिनर डालफिन को नाचते देख कर दूसरी डालफिन ने भी उस की नकल कर के नाचने का प्रयास किया, यद्यपि उस के नाच में स्पिनर डालफिन जैसी निपुणता नहीं थी.

एक जीवित राडार

राडार का अर्थ है– रेडियो तरंगों से स्थिति ज्ञात करना. इस के मुख्य भाग हैं– ट्रांसमीटर तथा रिसीवर. ट्रांसमीटर से थोड़े समय के निश्चित अंतराल से चारों ओर रेडियो तरंगें प्रसारित होती रहती हैं. इन तरंगों के रास्ते में यदि कोई अवरोध हो तो

से टकरा कर वापस लौट आती हैं और ार के परदे (रिसीवर) पर उस वस्तु का िबंब बनाती हैं. तरंगों के भेजे जाने तथा कर आने के बीच लगे समय के ज्ञान से गणना कर के वस्तु की स्थिति, दूरी, कार, गति तथा दिशा का पता लगा लेते हैं.

डालफिन के अत्यंत सूक्ष्म कान सुनने में था असमर्थ होते हैं. यह देखने एवं सुनने काम अपनी नाक तथा मस्तिष्क से लेती इस की नाक तथा मस्तिष्क क्रमशः मीटर एवं रिसीवर का काम करते हैं. लफिन अपनी नाक से इतने तेज कंपन की नि प्रसारित करती है, जिसे सुनने में हमारे न सर्वथा असमर्थ होते हैं. हमारे कान 000 कंपन प्रति सेकंड से ऊपर की नियां सुनने में असमर्थ होते हैं जब कि लफिन द्वारा प्रसारित ध्वनि का कंपन 0,000 प्रति सेकंड से भी अधिक होता है. ध्वनि तरंगें जब किसी वस्तु से टकराती हैं, उस वस्तु में भी कंपन होने लगतें हैं. इस कार डालफिन का रिसीवर मस्तिष्क दो कार की प्रतिध्वनियों को ग्रहण करता है. क तो अपने द्वारा प्रसारित ध्वनि की प्रति नि और दूसरे कंपन करती वस्तु से उत्पन्न नि. इस दूसरी ध्वनि से डालफिन वस्तु के कार के साथसाथ यह भी सरलता से जान ती है कि वस्तु किस पदार्थ से बनी है. इस प्रकार ध्वनि प्रति ध्वनि के आधार पर डालफिन अपने सामने आने वाली वस्तु के आकार, रूप, बनावट, दूरी, गति एवं दिशा आदि के बारे में जानकारी प्राप्त कर लेती है.

अमरीका के फ्लोरिडा राज्य में स्थापित विश्व की प्रथम समुद्र जल जीवशाला के संग्रहालयाध्यक्ष. आर्थर मैकब्राइट ने जाल लगा कर डालफिनों को पकड़ने का प्रयास किया. परंतु वह असफल रहे. वह यह देख कर अत्यंत आश्चर्यचकित हुए कि डालफिनें 40 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से तैरते हुए भी अपने सामने लगाए गए जाल से 30 मीटर पहले ही रुक जाती थीं.

फ्लोरिडा में ही विनथ्राप कैलाग ने एक प्रयोग में एक तालाब को बीच में अवरोध लगा कर उसे दो भागों में बांट दिया. इस अवरोध में दो पारदर्शक दरवाजे लगे थे और एक समय में केवल एक ही दरवाजा खुला रहता था. तालाब का पानी अत्यंत गंदा होने के कारण उस में कुछ भी दिखाई देना संभव नहीं था. परंतु उन्हें यह देख कर आश्चर्य हुआ कि डालफिनों ने तालाब के एक ओर से दूसरी ओर जाने के लिए सदैव खुले दरवाजे का ही प्रयोग किया. बंद दरवाजे से वे एक बार भी नहीं टकराईं.

डालफिन दो भिन्नभिन्न आकार की वस्तुओं में सरलता से भेद कर लेती है.
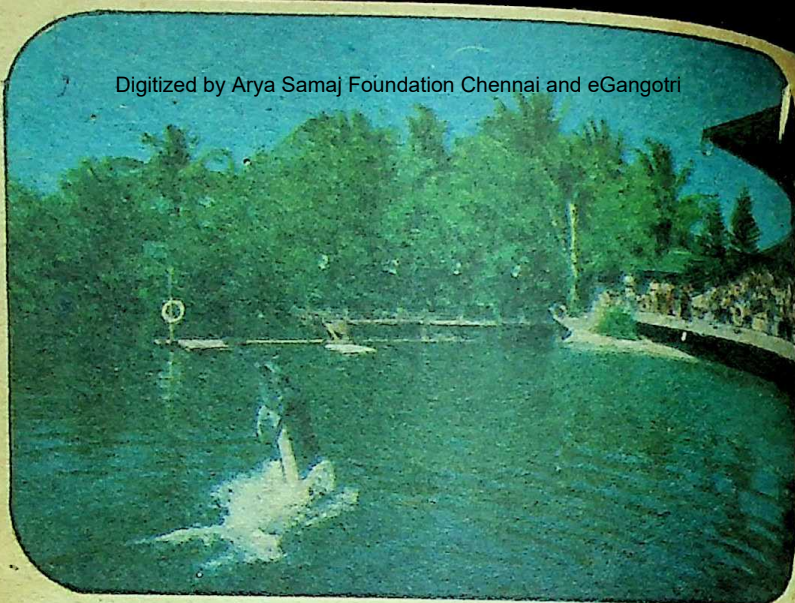
कई देशों में डालफिन के करतब दिखाने के लिए बाकायदा तालाब बने हुए हैं.

रोनाल्ड टर्नर तथा नारिस नाम के दो वैज्ञानिकों ने एक डालफिन को दो विभिन्न आकार के छल्लों में पहचान करने का प्रशिक्षण दिया. यह डालफिन 51 मिलीमीटर तथा 63 मिलीमीटर व्यास के छल्लों को सरलता से अलग कर देती थी. 57 तथा 63 मिलीमीटर व्यास के दो छल्लों में 70 प्रतिशत शुद्धता के साथ भेद कर लेती थी. परंतु जब दोनों छल्लों का व्यास 63 मिलीमीटर ही रखा गया तो डालफिन समझ जाती थी कि उसे मूर्ख बनाया जा रहा है और वह उन में पहचान करने से इनकार कर देती थी.

विलियम इवान द्वारा प्रशिक्षित डालफिन एक ही आकार परंतु भिन्नभिन्न धातुओं के टुकड़ों को सरलता से अलग कर देती थी.

एक वफादार दोस्त

डालफिन की दोस्ती बड़ी प्रगाढ़ होती है. इन की दोस्ती को ले कर कुछ झूठी तथा कुछ सच्ची कहानियां प्रचलित हैं. सुप्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तू ने अगस्तस सीजर के शासनकाल के एक लड़के के बारे में लिखा है कि उस की दोस्ती एक डालफिन से थी. व लड़का प्रतिदिन नदी पार के अपने स्कूल जाने के लिए तट पर आ कर 'सीमो... सी की आवाज लगाता था. आवाज सुन कर ए डालफिन आती थी और उसे उस पार पहुं देती थी.

इयासस शहर में रहने वाला हरमि नाम का एक बालक प्रतिदिन एक डालफि की पीठ पर बैठ कर समुद्र की सैर किया कर था.

एक दिन वे दोनों एक भयंकर समु तूफान में फंस गए जिस में लड़के को अप जान से हाथ धोना पड़ा. उस की दो डालफिन ने उस की मौत के लिए स्वयं जिम्मेदार मान कर समुद्र से बाहर कूद क अपनी भी जान दे दी.

घटना सन् 1965 की है. कर्न मोकालोफ अपनी ग्रीष्मकालीन छुट्टियों क्रीमिया (रूस) गया था. एक दिन प्रातः भ्र के समय पानी के बाहर सूखी जमीन पर उ ने एक डालफिन को तड़पते देखा और उ उठा कर पानी में डाल दिया. धीरेधीरे दोनों दोस्ती हो गई. कर्नल रोज सवेरे तालाब

फिन से मिलने जाता और डालफिन भी की प्रतीक्षा करती हुई मिलती. जब ट्टियां समाप्त होने को आईं तो कर्नल ने सोच कर तालाब पर जाना छोड़ दिया कि फिन उसे भूल जाए. लेकिन जाने से पूर्व वह डालफिन से विदा लेने तालाब पर चा तो डालफिन को मरा हुआ देख कर दुख एवं आश्चर्य हुआ. वास्तव में फिन ने अपने जीवनरक्षक कर्नल की क्षा में अपनी जान दे दी थी.

इसी तरह कालासागर के किनारे बसे पा शहर में समुद्र में स्नान कर रहे ड़ों लोगों की परवाह न कर के एक फिन रेतीले तट पर आ गई. लोग उसे लीमार नाव में रख कर खुले समुद्र में छोड़ . परंतु वह पुन: तट पर आ गई. ऐसा कई हुआ. लोगों के डरानेधमकाने का भी उस कोई प्रभाव नहीं हुआ. ध्यान से देखने पर चला कि वह घायल थी. तब स्नान को एक नर्स ने तटरक्षक से प्राथमिक चार का सामान ले कर उस की मपट्टी कर दी. फिर उसे समुद्र में छोड़ .

इस बार डालफिन ने नाव का एक कर लगा कर मानो अपनी सहायता करने को धन्यवाद दिया और फिर गायब हो थोड़ी देर बाद ही डालफिनों का पूरा झुंड र आ गया और काफी देर तक उछलकूद के अपने साथी के साथ उपकार करने का मनोरंजन करता रहा.

हानुभूति एवं सहायता की भावना

डालफिन आवश्यकता पड़ने पर अपनी के अनुसार मनुष्य की सहायता भी है.

एक बार एक आदमी शार्क मछलियों में आ गया. उन खूंखार मछलियों द्वारा टुकड़ेटुकड़े होने से पहले ही बहुत सी नों ने आ कर उसे अपने घेरे में ले . फिर एक डालफिन उसे अपनी पीठ पर कर तेजी से तैरती हुई किनारे पर छोड़

सन 1943 में फ्लोरिडा में सागर में तैरती हुई एक युवती काफी दूर तक चली गई. जब किनारा बहुत दूर छूट गया, तब उस ने पलट कर देखा और सागर की अथाह जलराशि को देख कर वह डर से बेहोश हो गई. परंतु उस के डूबने से पहले ही एक डालफिन ने उसे बचा कर किनारे तक पहुंचा दिया.

न्यूजीलैंड में पैलोरस नामक स्थान पर रहने वाली एक डालफिन नेलसन बेलिंगटन जलमार्ग से हो कर गुजरने वाले प्रत्येक जहाज का लगभग आठ किलोमीटर तक पथ प्रदर्शन कर के उन्हें जलीय चट्टानों से टकरा कर चूरचूर होने से बचाती थी. लगभग 10 वर्ष तक वह यह कार्य करती रही. परंतु अंतत: वह भी ह्वेल शिकारियों के क्रूर हाथों मार डाली गई.

डालफिन प्रशिक्षक के इशारों पर मजेदार करतब करती है.

डालफिन आपस में आंख मिचौली का खेल खेलती देखी गई हैं. इन का यह खेल लगभग आधे घंटे तक चलता है. ये रबर की गेंद तथा मोटर कार के टायर एवं ट्यूब के साथ भी खेलती हैं. डालफिन गेंद या ट्यूब को पानी से बाहर फेंकती है और बाहर खड़े व्यक्ति उसे दोबारा पानी में फेंकते हैं.

डालफिन : एक होशियार खिलाड़ी भी

न्यूजीलेंड के तट पर पाई जाने वाली 'ओपजैक' नाम की डालफिन तथा वहां के तैराकों के बीच काफी दोस्ती थी. वह उन के साथ वाटर पोलो खेलती थी और छोटेछोटे बच्चों को अपनी पीठ पर बिठा कर तैराते हुए उन का मनोरंजन भी करती थी. एक दिन एक तीव्र गति वाली नाव से टकरा कर उस की मृत्यु हो गई. मृत्यु के पश्चात उस के मित्रों ने उस तट पर ओपजैक की प्रतिमा बनवाई जो आज भी उस की याद दिलाती है.

डालफिनों द्वारा सामूहिक आत्महत्या करने की अनेक घटनाएं प्रकाश में आई हैं. मरना आत्महत्या का कारण अभी तक अ... ही है. सन 1936 में केपकाड में समुद्र के रेतीले तट पर डालफिनों का एक बहुत बड़ा झुंड मरा हुआ पाया गया. 7 मार्च, 1944 को दक्षिणी कैरोलाइना (अमरीका) के एक ... के सागर तट पर 65 डालफिनों ने एक साथ अपनी जान दे दी. उसी वर्ष 15 मार्च को उत्तरी कैरोलाइना के अटलांटिक सागर तट पर 35 डालफिनों ने एक साथ आत्महत्या कर ली, जिन्हें तटरक्षकों ने रेत में दबा दिया.

वैज्ञानिकों की सहायक डालफिन

डालफिन सागर संबंधी वैज्ञानिक अनुसंधानों में मनुष्य की बहुत सहायता करती है.

बीसवीं शताब्दी के छठे दशक में जब अमरीकी वैज्ञानिकों ने समुद्र में वैज्ञानिक अनुसंधान प्रारंभ किए, उस समय ... नामक एक डालफिन ने उन की ... सहायता की. वैज्ञानिकों ने समुद्र में ...

मनुष्य के समान ही अत्यंत कुंडलित डालफिन का मस्तिष्क
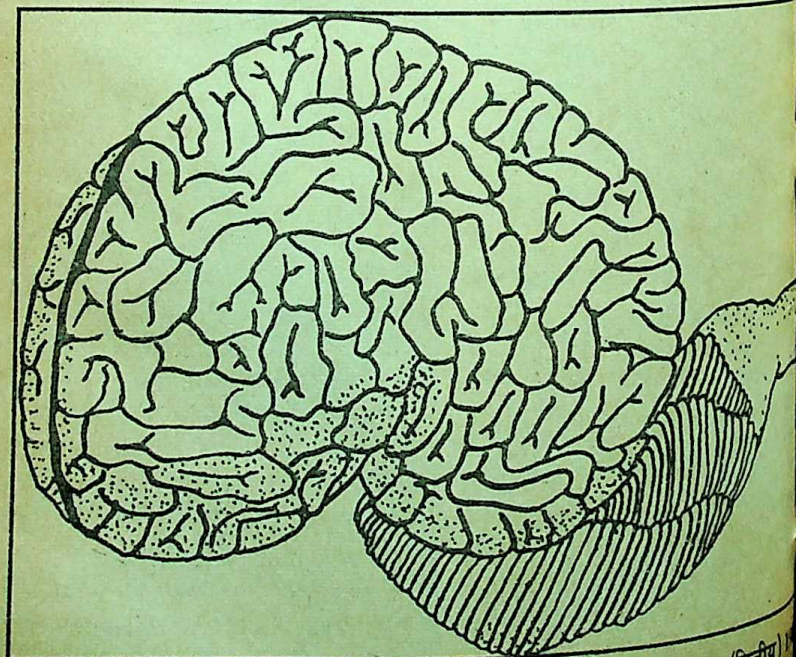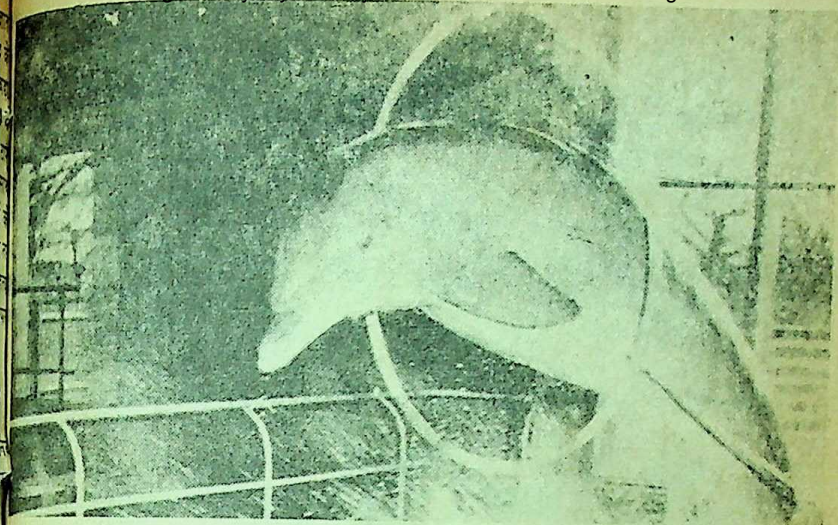
गोलछल्ले से कूदती डालफिन

गहराई पर एक प्रयोगशाला स्थापित की. यदि कोई वैज्ञानिक अथवा गोताखोर रास्ता भूल जाता तो टेफी उस का मार्गदर्शन करती थी.

इस के अतिरिक्त वह कुछ वैज्ञानिक उपकरण भी प्रयोगशाला तक पहुंचाया करती थी.

एक महिला वैज्ञानिक मारग्रेट होउ ने एक डालफिन को अंगरेजी बोलने का प्रशिक्षण दिया. ढाई महीने के अथक परिश्रम के पश्चात उस डालफिन ने कुछ अंगरेजी शब्दों की तरह उच्चारण करना सीख लिया.

एक अन्य वैज्ञानिक जान कनिंगटन लिली के अनुसार डालफिन आपस में बातचीत भी करती हैं. उन्होंने दावा किया है कि डालफिन प्रशिक्षण देने पर पहले अपने शिक्षक द्वारा बोले गए शब्दों के बराबर संख्या में आवाजें निकालना प्रारंभ करती है और बाद में उन शब्दों को भी दोहरा सकती है. लिली द्वारा प्रशिक्षित डालफिनें में सब से मजेदार 'एलोरा' नामक डालफिन 'स्पीक', 'गुड' आदि कुछ अंगरेजी शब्द बोल लेती है एवं उन का अर्थ भी समझती है.

तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण खाद्य पदार्थों की मांग दिनप्रतिदिन बढ़ती जा रही है. हमारे वैज्ञानिक इस से निबटने के लिए भगीरथ प्रयास कर रहे हैं परंतु हमारे खेतों की उत्पादकता की भी एक सीमा है. हमारे खनिज भंडार भी तेजी से समाप्त हो रहे हैं. अब वैज्ञानिकों का ध्यान सागर की ओर आकर्षित हुआ है. सागर में प्रोटीन के सब से समृद्धशाली स्रोत 'शैवालों' की खेती भी व्यापक विस्तार ले रही है. सागर से ऊर्जा प्राप्ति के प्रयास भी बढ़ते जा रहे हैं. सागर का उपयोग यहीं तक सीमित नहीं है. अब तो सागर में मानव बस्तियां बसाने का प्रयास भी किया जा रहा है.

परंतु सागर की अथाह गहराई वैज्ञानिकों के मार्ग में बाधक है. अभी वैज्ञानिक सागर का सीमित उपयोग ही कर पा रहे हैं. डालफिन इन अनुसंधानों में वैज्ञानिकों की बहुत कुछ सहायता कर सकती है. आवश्यकता है उन्हें उचित प्रशिक्षण देने की. इस दिशा में किए गए कार्यों के आशानुकूल परिणाम मिले हैं. इन परिणामों ने वैज्ञानिकों में इस आशा का संचार किया है कि एक न एक दिन सागर संबंधी खोजों में डालफिन वैज्ञानिकों के साथ मिल कर काम करेंगी ●

भला जीवन भी कहीं शतरंज होता है? पर सविता दावे के साथ कहती थी, "जिंदगी ही शतरंज है. इस में मोहरे सोचसमझ कर नहीं चले गए तो कोई खुशी नहीं मिल सकती, इच्छाएं पूरी नहीं हो सकतीं यानी कि जीवन के सुनहले सपनों को पूरा करने के लिए शतरंज की चाल चलना जरूरी है."

वह जब भी शतरंज खेलने बैठती, मुझे जीतने का अवसर ही नहीं देती. उस की चाल ही मात देने वाली होती थी और मैं समझ नहीं पाती थी कि मोहरों को कैसे आगे बढ़ाया जाए.

वह जब भी जीतती थी ठहाके मार कर हंसती थी [illegible] की आंखों में चमक [illegible] हो जाती थी, गालों का रंग गुलाबी हो [illegible] था, होंठों से व्यंग्यात्मक मुसकराहट [illegible] लगती थी. वह विश्वास और अहं भरे स्वर [illegible] पूछती थी, "और खेलोगी?"

वैसे भी वह किसी खेल को पूरी [illegible] के साथ खेलती थी और चाहे जैसे भी, [illegible] का प्रयत्न करती थी. दरअसल मैं उस के [illegible] सीधी और साधारण पड़ जाया करती थी [illegible] सीधों को वह बेवकूफ बनाने में पीछे [illegible] रहती थी.

उस के तीखे हावभाव, आ[illegible] चालढाल और अहं भरे स्वर से मैं सदा [illegible]

मोहरे

कहानी • अरुण अलबे[illegible]

ती रहती. वह कहा करती, "सुमी, आज के युग में साधारण रहना ही जुर्म है. रहना है तो आधुनिक हो कर रहो, बढ़िया कपड़े पहनो, सौंदर्य प्रसाधनों का भरपूर उपयोग करो. अपने में ऐसा आकर्षण पैदा करो कि देखने वालों की नजरें हटें ही नहीं. और उन के साथ ऐसी चाल चलो कि वे मात खा कर हायहाय करने लगें."
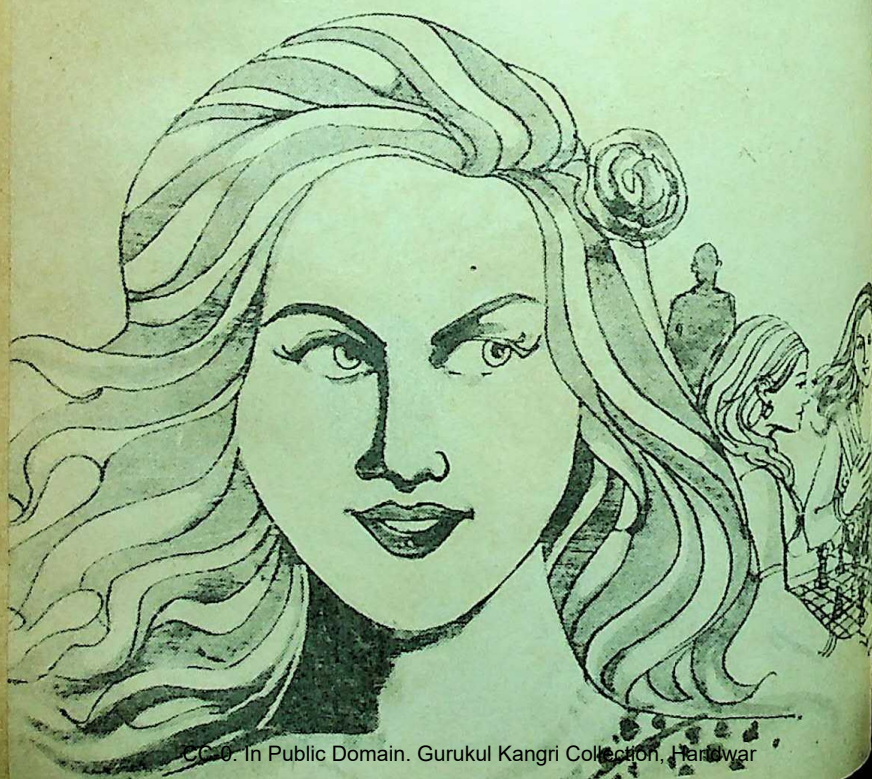
इस पर मैं क्षुब्ध हो कर कहती, "सदा जीत की आशा ही क्यों रखती हो? कभी हारने का आनंद भी तो लो. कभी हार में जीत होती है, कभी जीत में हार. सब के साथ 'चाल' चलने से अपनी छवि बिगड़ती है. हमारे समाज में ऐसे लोग भी हैं जो अधिक चमकदमक पसंद नहीं करते. उन की दृष्टि में हमें कुछ साधारण रहना ही होगा ताकि वे व्यंग्य में यह न कहें कि 'सुमी या सविता तो बड़ी तेज लड़कियां हैं.' हमें तो अपने दायरे में रहने की बात सोचनी चाहिए."

"हिश, दूसरों के लिए अपनी खुशियों और इच्छाओं पर तुषारापात करना कहां की चालाकी है? मैं तो इसे अपनी ही कमजोरी या बेवकूफी कहूंगी."

उस की चाल पर मेरे अंदर कभीकभी विरोध भरा तूफान उठने लगता था. मैं चाहती थी कि उसे कभी इस तरह मात दूं कि
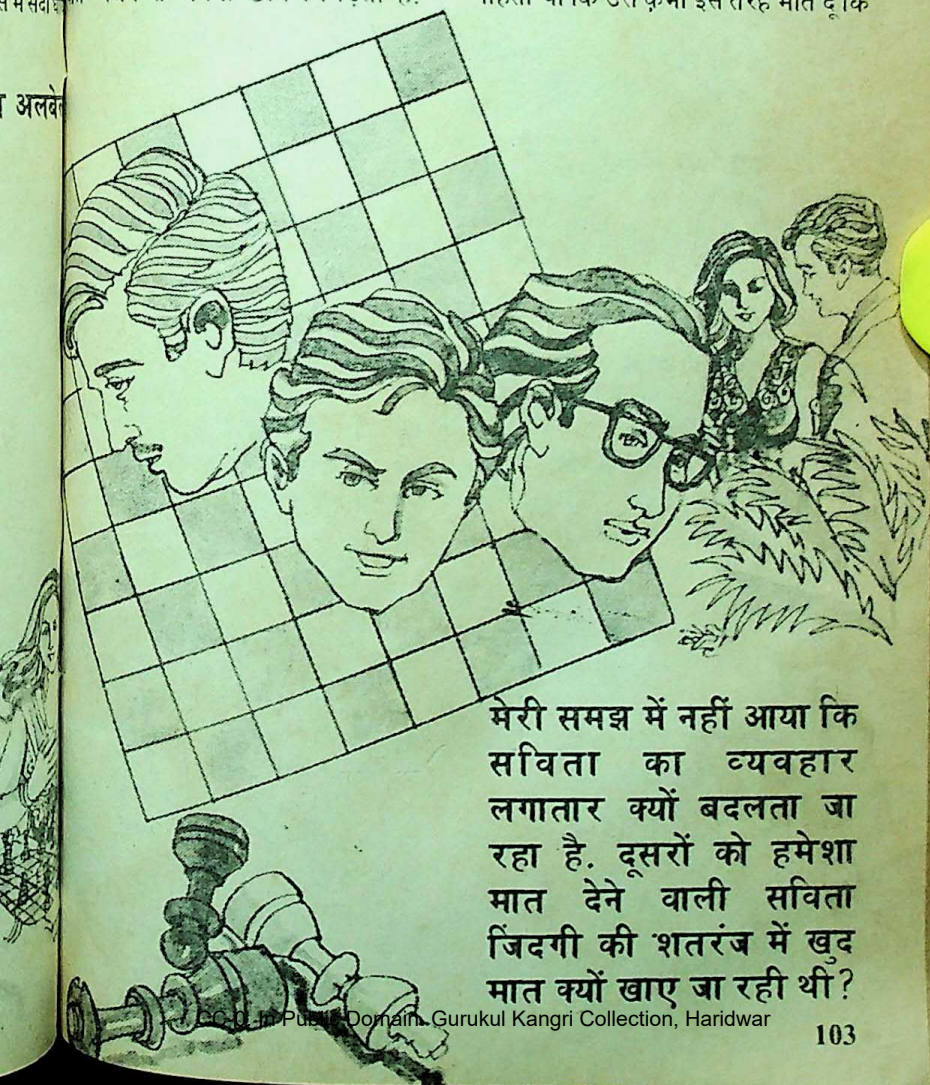
मेरी समझ में नहीं आया कि सविता का व्यवहार लगातार क्यों बदलता जा रहा है. दूसरों को हमेशा मात देने वाली सविता जिंदगी की शतरंज में खुद मात क्यों खाए जा रही थी?

उस के होश ठिकाने आ जाएं और वह सीधी राह पर चलने लगे.

उस की हंसी और खुलेपन पर मेरे अतुल भैया उस से बहुत प्रभावित थे. कहते थे, ''जहां जीत है, वहां उत्साह है. जहां हार है, वहां निराशा है. अगर सवि सदा उत्साहित रहने का प्रयत्न करती है तो क्या बुरा है? तुम्हें उस से जलना नहीं चाहिए.''

उन की बातों से सविता खुश हो जाया करती थी. वह अपनी प्रशंसा चाहती भी थी.

उस की चमकदमक, वेशभूषा और बोलचाल से प्रभावित हो कर भैया उस की ओर झुकते गए थे. मेरे विपरीत प्रयासों के बावजूद वह उस के काफी समीप आ गए थे.

दफ्तर से आते ही, सांझ का सूनापन दूर करने के लिए सविता के यहां जा बैठते और शतरंज खेलने लगते.

उन दोनों की निकटता दोनों के मातापिता को संदिग्ध लगने लगी थी और दोनों ओर से सोचा जा रहा था कि क्यों न दोनों को विवाहसूत्र में बांध दिया जाए?

अतुल भैया का पड़ोस का दोस्त संजय जब कभी हमारे यहां आता, परिहास भरे स्वर में कहता, ''लगता है अतुल पर सविता का जादू चल गया है. पता नहीं कभी शतरंज में जीतता भी है या नहीं.''

''हार का अर्थ यह नहीं कि जीतने वाले के सामने घुटने टेक दिए जाएं,'' मैं ने एक दिन संजय से कहा था, ''और जीत का अर्थ यह नहीं कि किसी का कत्ल कर दिया जाए.''

यह सुन कर संजय मुसकराने लगा था. बोला था, ''तो क्या मुझे तुम्हारे सामने घुटने नहीं टेक देने चाहिए? सुमी, मैं भी तो तुम से हार खाए बैठा हूं.''

यहां यह बता देना ठीक रहेगा कि संजय से मेरे विवाह की बात चल रही थी. वैसे भी हम दोनों एकदूसरे को काफी पहले से चाहते थे और अवसर पाते ही चुहलबाजी पर उतर आते थे. पर मैं ने कभी भी उसे हद से ज्यादा चुहलबाजी नहीं करने दी. फिर उस ने भी कोई खास प्रयास नहीं किया था.

वह स्वभाव से अच्छा तो था, पर कभीकभी बिना सोचेसमझे कुछ कह या कर जाया करता था. मैं कहती थी, ''तुम्हें एक दिन इस के लिए पछताना होगा. तुम जो भी कदम उठाओ, सोचसमझ कर उठाओ.''

इस पर वह कान पकड़ते हुए कहता, ''मैं जानता हूं, सुमी, कुछ गलती हो भी जाएगी तो तुम मुझे माफ कर दोगी.''

''पर गलती माफ करने योग्य होगी, तब न?''

''कुछ दिन नाराज रहोगी, फिर तो माफ करोगी. वैसे जब मुझे अपनी गलती महसूस होगी तो माफी मांगे बिना नहीं रहूंगा.''

मैं उस की बात पर मुसकरा पड़ती थी और वह कभीकभी गलतियां करने से बाज नहीं आता था.

जब भी अतुल भैया शतरंज खेलने बैठते, सविता चुनौती भरे स्वर में कहती, ''हरा कर तो देखिए, जनाब.'' और वह सारे मोहरे पीट कर रख देती. अतुल भैया पानीपानी हो जाते और वह फबतियां कसती, ''हारे हुए लोग मुझे पसंद नहीं आते. अगर आप इसी तरह हारते रहे तो भविष्य में बड़े काम कैसे करेंगे?''

मैं घर में भैया को समझाती, ''थोड़ा गंभीर होना तो सीखिए. जो मन में आता है, वह वही बोलती जाती है. इस तरह शादी के बाद तो वह आप पर पूरी तरह हावी हो जाएगी.

''अरे, ऐसी लड़कियां घर चलाने में बड़ी माहिर होती हैं. कर्ज वसूलने वाला दरवाजे पर पैर रखने का साहस नहीं कर सकता,'' कह कर वह हंसने लगते.

मैं झुंझला उठती, ''क्या शादी के बाद श्रीमतीजी को खुश रखने के लिए आप कर्ज लेने की भी सोचते हैं?''

मां बीचबचाव करती, ''तुम दोनों का झगड़ा कभी नहीं निबटने वाला. कभी तो शांति से रहो.''

अतुल भैया मुझे चिढ़ाते, ''इस के बारे में कहा तो जाता है कि यह बहुत शांत लड़की है, लेकिन सदा बकझक किए रहती है. इस के

तो घर में रहना मुशकिल है.''

''शायद इसी लिए, दफ्तर से आने के बाद सविता के यहां भागता है,'' कह कर मां करा देतीं और फिर भैया शांत पड़ जाते.

एक दिन मैं संजय के साथ सविता के गई थी. सविता ने शतरंज बिछा दिया मेरी गलती थी कि मैं ने संजय को खेलने लिए उत्साहित किया था. पर आश्चर्य यह उस ने सविता के सारे मोहरे पीट कर रख थे और सविता उसे एकटक देखती रह थी. मानों वह उसे सम्मोहित कर रही हो. भी उसे देखता रह गया था. तभी मैं उठी थी, ''क्या बात है? तुम दोनों दूसरे को इस तरह क्यों देखे जा रहे हो?''

''मैं हार मानने को तैयार नहीं हूं,'' वह बोली थी.

भी हार मानने को तैयार नहीं हूं,'' संजय ने कहा था.

और सविता ने अब दूसरी चाल चलनी शुरू कर दी थी. उस ने संजय को अपनी ओर खींचना आरंभ कर दिया था और संजय सविता की हर चाल को मात देने के लिए मुझ से दूर होता चला गया था.

एक दिन मैं ने विनीत स्वर में सविता से कहा था, ''सवि, तू जानती है, मेरे मातापिता मेरा विवाह संजय से करना चाहते हैं और तेरा अतुल भैया से. तू संजय को अपनी ओर खींच लेगी तो न मेरी और न अतुल भैया की गृहस्थी बस सकेगी. अच्छा है कि तू अतुल भैया को स्वीकार ले और संजय को मेरे पास रहने दे.''

वह हंस कर बोली थी, ''हार मान गई न? मैं ने एक चाल में तुझे और तेरे भैया को पछाड़ दिया है. तू ही बता, मैं अतुल को कैसे स्वीकार कर सकती हूं. उस में जरा भी मर्दानगी नहीं. कहीं जीतने का जरा भी उत्साह नहीं, तभी तो वह अपने दफ्तर में तरक्की नहीं पा रहे हैं. जरूर बास के सामने

तुम्हें तो खुश होना चाहिए, सवि, कि तुम्हें दृढ़ स्वभाव वाला पति मिला हैं,'' मैं ने सविता से कहा.
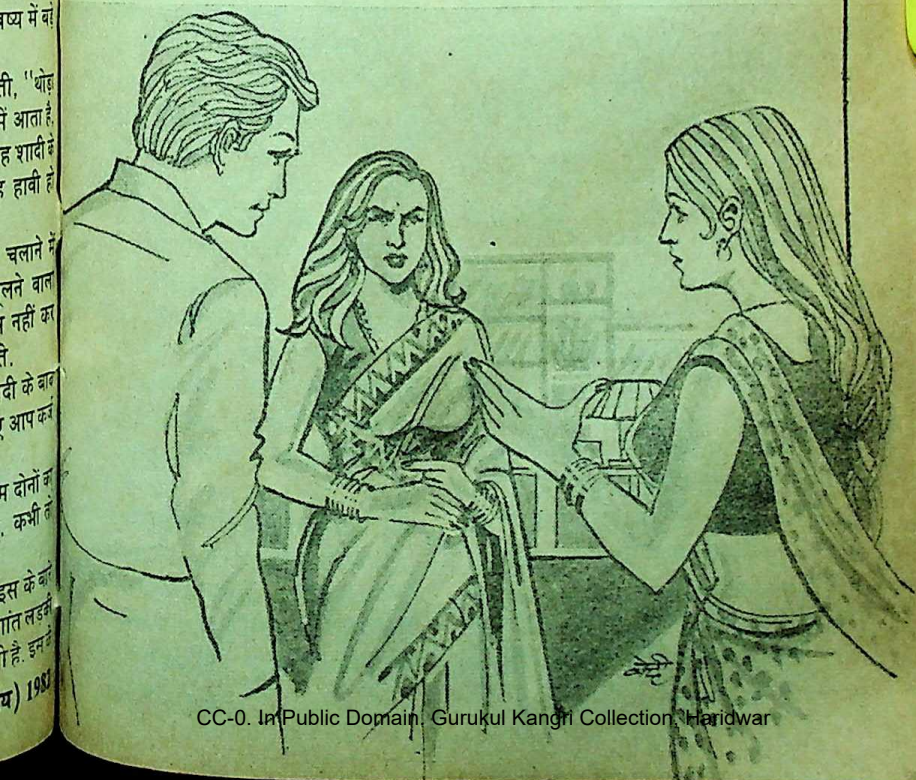
दबेदबे रहते होंगे. दब्बू प्रकृति वाले व्यक्ति को मैं पति नहीं बना सकती. रही संजय की बात, तो मैं उस की खूबियों से वाकिफ नहीं थी. अब जान रही हूं कि वह हीरा है. वैसे तुझे अपने प्यार पर भरोसा है तो उसे खींच ले. मैं ने तो चाल चल ही दी है."

मैं क्रोध से कांपने लगी थी. मेरा दिल हुआ था कि उस से कहूं कि जीवन शतरंज का खेल नहीं है और फिर किसी के प्यार से खेलने का उसे क्या अधिकार है? पर मैं मौन साध गई थी.

अतुल भैया ने उस के यहां जाना छोड़ दिया था और पत्रिकाओं से मन बहलाने लगे थे. संजय यदाकदा सविता के साथ नजर आने लगा था. मैं ने उस से जानना चाहा था कि वह ऐसा क्यों कर रहा है, तो उस ने कहा था, "मैं ने हारना नहीं सीखा, सुमी. वह मुझे कहीं न कहीं हराना चाहती है और मैं उसे दिखाना चाहता हूं कि मैं हार नहीं सकता. वैसे तुम ने ही तो मुझे उस को हराने के लिए उत्साहित किया था. दोष तुम्हारा था, अब मुझ पर दोष थोपने लगी हो. तुम से मैं बस इतना ही चाहता हूं कि उस के जहरीले दांतों को तोड़ने के लिए तुम मुझे अवसर दो."

"लेकिन इस की प्रतिक्रिया मुझ पर क्या हुई है, तुम जानते हो?"

"मैं जानता हूं, तुम नाराज नहीं होगी."

मैं खीज गई थी, "तुम परिणाम के विषय में क्यों नहीं सोचते?"

"अभी समय नहीं है," उस ने सहज भाव से कहा था, पर मुझे उस पर क्रोध आ गया था. मैं उस के स्वभाव से चिढ़ कर उस से कटीकटी रहने लगी थी और उसे मात देने की सोचने लगी थी.

मेरे अंदर यह बात भी थी कि सविता को कहीं न कहीं मात दूं. मेरे अंदर उस के प्रति आक्रोश भरता गया था. पर मैं बदले की भावना से ग्रस्त होना नहीं चाहती थी.

अतुल भैया की शादी रजनी से हो गई थी. बाद में पता चला था कि रजनी रिश्ते में सविता की दूर की बहन लगती है और इसी वजह से सविता यदाकदा उस से मिलने आने लगी थी.

पर उस का आना न तो मुझे, न भैया को और न हमारे मातापिता को ही पसंद आया था. पर रजनी बुरा न माने, यही सोच कर आरंभ में सब ने चुप रहना ही ठीक समझा. किंतु सविता के बदलते स्वभाव को देख कर हम सब को शंका होने लगी थी कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए.

मैं ने एक दिन रजनी को समझाते हुए कहा था, "भाभी, आप समझदार हैं, सविता को समझने की कोशिश कीजिए."

वह भड़क उठी थी, "क्या बुराई है उस में?"

"वह दंभी है."

"ऐसा होना ही चाहिए. इस के बिना जीवन में उत्साह नहीं रहता. हीन भावनाएं घेरे रहती हैं. दंभ रहेगा तभी तो फुर्ती रहेगी और कुछ कर दिखाने का साहस आएगा."

अतुल भैया ने उस से साफ कह दिया था कि वह सविता से बात न करे और उस ने इसे अपमान के रूप में लिया था. तथा 'देखती हूं कौन क्या कर लेता है,' कह कर वह सविता के घर भी जाने लगी थी.

इज्जत के भय से हमारे मातापिता शांत रह गए थे. मैं ने भी चुप रहना बेहतर समझा था.

एक तरह से सवि ने रजनी से सांठगांठ कर के हमें आभास कराया था कि वह कुछ भी कर सकती है, और इस से मेरे अंदर तूफान सा भर गया था. मैं ने उस से बातें करनी कम कर दी थीं. पर वह जब भी मुझे देखती, व्यंग्यात्मक मुसकान फेंक कर मुझे जताना चाहती कि मैं उस के द्वारा हरा दी गई हूं और उसे जीत पाना मेरे लिए आसान बात नहीं.

मैं अपने को अकेला महसूस करने लगी थी. पहले संजय से दिल की बात कहती थी पर अब उस से भी कहने की जरूरत महसूस नहीं होती थी. क्योंकि मैं यह समझ नहीं पाती थी कि वह किस तरह सविता को हराना
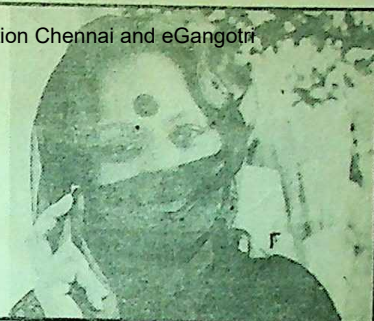
...हता है.

मेरे मातापिता ने गंभीरतापूर्वक सोचना ...रंभ कर दिया था कि मुझे ब्याह देना ही ...क रहेगा.

इधर मैं चाहने लगी थी कि मेरा भी एक ...र हो, एक जीवनसाथी हो. जिस से मैं दिल ...ी बात कह सकूं. पर मैं भाभी की तरह नहीं ...ना चाहती थी जो किसी की बातों में आकर ...पनी ही गृहस्थी में आग लगा रही थी.

भाभी से सहयोग न पा कर भैया ...झलाए रहते थे.. वह कहते थे, ''रजनी को ...विता ने गुमराह कर रखा है.'' इस पर वह ...ग्य करती, ''तुम क्या सविता को गुमराह ...हीं करना चाहते थे? तुम्हारी बदनियती ने ...ो सविता को इस घराने की बहू नहीं बनने ...या. तुम से अलग हो कर उस ने अच्छा ही ...िया.''

''तो अभी तक तुम ने भैया को समझा ...नहीं. भैया ऐसे नहीं हैं,'' मैं जल कर कहती ...ी.

वह ताने मारती थी, ''यह तो तुम संजय ...जान गई होगी. तुम्हारे भैया उसी के दोस्त ...ैं.''

एक दिन पिताजी ने बताया था कि ...टरी के लेखाजोखा विभाग में कार्यरत ...भागीय अधिकारी अखिलेशजी को मेरे ...ए चुन लिया गया है. फिर हम ने ...मनेसामने बैठ कर एकदूसरे को देखा भी, ...संद भी किया. पर कुछ मोटी रकम लेने के ...लच में उन के समाजसेवी चाचाजी अपनी ...त से हट गए और एक सप्ताह बाद पता ...ला था कि सविता के पिताजी अखिलेश के चाचाजी को खुश करने में सफल हो गए. परिवार वालों को खुश रखने के लिए अखिलेश को चाचाजी की बात माननी पड़ी थी और मेरे बदले सविता की शादी उन से पक्की हो गई थी.

तब सविता ने मुसकराते हुए मुझ से पूछा था, ''कहो, यह चाल कैसी रही?''

मैं फुफकार उठी थी, ''क्या संजय से भी मन भर गया?''

''उस बेवकूफ से मन लगा ही कब था? उसे तो लट्टू की तरह नचाने में मजा आता था.''

''सवि... तू सदा जीतती नहीं रहेगी.''

''तू देख रही है... पहले की चाल में मैं ने तुझे और अतुल को हराया था, अब की बार तुझे और संजय को हराया है.''

''पता नहीं मैं ने तेरा क्या बिगाड़ा है कि तू मेरे लिए सदा बदले की भावनाएं रखती है.''

''मैं तुझे बताना चाहती हूं कि हार कर मन को मारे रहना मरने के समान है.''

''कभीकभी हारने में भी खुशी होती है, सवि.''

''बता, अब तक हार कर तूने कितनी खुशी पाई है?''

उस के प्रश्न पर मैं निरुत्तर हो गई थी.

उस का विवाह अखिलेश से हो गया था. मुंह फेरे, डोली में बैठी सवि को देख कर संजय मुसकरा रहा था. मैं ने रोष से पूछ लिया था, ''तुम्हारी चहेती जा रही है और तुम मुसकरा रहे हो? उस के जाने का तुम्हें जरा

भी गम नहीं? अच्छा हुआ, तुम मुझ से दूर हुए थे, सविता तुम से दूर हो रही है."

"नहीं, सुमी. उस ने मुझे हराना चाहा था, पर खुद हार कर भाग रही है."

"कहीं तुम ने उस के साथ कुछ...?" मेरे अंदर शंका तैर गई थी. वह मेरे वाक्य पर हंसने लगा था. मैं ने बौखला कर कहा था, "मुझे तुम से ऐसी आशा नहीं थी, संजय."

उस ने कुछ कहना चाहा था, पर मैं वहां रुकी नहीं थी.

मेरा मन ऊबने लगा था. मैं अपने को व्यस्त रखना चाहती थी. मैं अपनी शिक्षा के सदुपयोग के लिए नौकरी तलाश करने लगी थी. तब मुझे गर्व हुआ था कि मैं बी.ए. कर चुकी थी, पर दंभ के नशे में चूर सविता बारहवीं से आगे नहीं बढ़ सकी थी.

मेरी नौकरी फैक्टरी के लेखाजोखा विभाग में लग गई थी और वहीं मुलाकात हुई थी विभागीय अधिकारी अखिलेशजी से.

मुझे देखते ही वह चौंक पड़े थे, "आप?" उन के मुंह से निकला था, "कैसा चक्र है यह? चाचाजी की चाल ने आप को यहां ला खड़ा किया जब कि आप को सविता की जगह होना चाहिए था."

"छोड़िए इन बातों को. जिसे जो मिलना था, मिल गया."

"हां, चाचाजी को मोटी रकम चाहिए थी, मिल गई. इसी लिए उन्होंने मुझे पालपोस कर बड़ा किया था. अपने एहसानों का बदला ले लिया उन्होंने. किंतु उन्होंने यह नहीं सोचा कि मुझे मेरे उपयुक्त पत्नी मिलनी चाहिए. उन्होंने मुझे भिन्न विचारों वाली युवती से बांध दिया है. मैं अपने मन की कहां कर सका?"

"क्या हुआ?" मैं चौंक उठी थी.

"जी... कुछ नहीं... " कह कर वह संभल गए थे.

तभी मेरी सहायिका इला सामने आ खड़ी हुई थी. उस ने आधुनिक कपड़े पहन रखे थे. अखिलेशजी ने उसे देख कर मुंह टेढ़ा किया था. उन्हें दिखावा कतई पसंद नहीं था. शायद इसी लिए उन्हें सवि पसंद नहीं आई थी.

भैया के कड़े रुख से भाभी कुछकुछ सही राह पर आ गई थीं. एक दिन उन के साथ मैं शापिंग करने गई थी तो अचानक अखिलेशजी सामने पड़ गए थे. "हलो, सुमित्राजी."

"नमस्ते." मैं ने सकपका कर कहा था, फिर संयत होते हुए भाभी का परिचय उन से कराया था.

"आप से मिलिए, हमारी भाभी सविता और आप हैं अखिलेशजी."

भाभी ने नमस्कार में हाथ जोड़ लिए थे तभी बालों को कंधों पर लहराती, आंखों पर नीले शीशों का चश्मा लगाए, आधुनिक वेशभूषा में सविता आ खड़ी हुई थी. उस ने मेरी ओर देख कर माथे पर बल दिया था. उस ने अपने हावभाव से जताना चाहा था कि वह एक अफसर की बीवी है. पर उस की यह बनावट शायद अखिलेशजी को अच्छी नहीं लगी थी. वह जिद कर के हमें अपने साथ चाय पीने के लिए रेस्तरां में ले गए थे.

वहां भाभी ने सविता को चिढ़ाने के लिए मोहरे फेंके थे, "शायद सुमी भी आप के दफ्तर में हैं."

यह सुन कर सविता चौंकी थी और अपने पति से बोली थी, "आप ने मुझे बताया नहीं?"

"यह बताना जरूरी नहीं था."

अपने पति का संक्षिप्त उत्तर सुन कर सविता लाल हो उठी थी और भाभी के होंठों पर हंसी लोट गई थी. उन्होंने चुपके से मुझ से कहा था, "सुमी, सविता ने मेरे दांपत्य जीवन में आग लगाई थी. मुझे सब की नजरों से गिराया था, अब देखना कि इस की जिंदगी..." हम सब वहां से हंसीखुशी आ गए थे, पर सविता अब भी गुस्से में थी.

दफ्तर में साथ काम करने की बात सुन कर सविता के मन में अनेक शंकाएं पैदा हो गई थीं. उसे लगा था

...मैं उस के पति को गुमराह करने लगी हूं.

अखिलेशजी प्रायः कहा करते थे, "...प की सहेली भी लाजवाब है, सुमीजी. ...बात में अकड़बाजी, तुनकमिजाज नंबर ...है, जरा सी बात समझती नहीं, अपनी ...पर अड़ी रहती है. सब को अपनी जेब में ...ने की सोचती है. घर का वातावरण ...वपूर्ण हो रहा है. अब चाचाजी भी अपने ...व पर पछता रहे हैं."

मैं कहना चाहती थी कि आप के ...चाजी लोभ का फल भोग रहे हैं. पर मैं चुप ...जाती थी और यह भी अच्छा नहीं समझती ...कि सविता के स्वभाव और चरित्र का ...जोखा उन के सामने रख दूं. मैं सोचती ...कि वह खुद उसे समझें. हालांकि मैं चाहती ...शतरंज की चाल शुरू कर सकती थी, ...हरे मेरे हाथ में थे. मैं अपने रूप, गुण और ...भाव से अखिलेशजी को अपनी ओर खींच ...ती थी, पर मैं इस तरह का खेल खेलना ...चाहती थी.

जब कभी सविता के कारनामें याद आते ...तो जी चाहता था कि उसे सबक सिखाऊं. ...सविता को समझने का अवसर ...खिलेशजी को शीघ्र मिल गया था. कभी वह कहते थे, "सुमीजी. मैं चाहता हूं कि सविता अपने कर्तव्य को समझे तथा गृहस्थी को सुचारू रूप से चलाए, लेकिन पत्नी शंकालु प्रकृति की हो तो पति के विश्वास को कैसे जीत सकती है? उसे लग रहा है, दफ्तर में मैं आप के बहुत करीब हूं."

"मुझे दुख है, अखिलेशजी. अगर मेरे यहां न रहने से सविता सही राह पर आ जाए तो मैं कहीं और नौकरी खोजने की कोशिश करूंगी."

"नहीं, ऐसा नहीं कीजिएगा. आजकल नौकरी मिलना आसान नहीं है. सविता समझ से काम नहीं लेगी तो अपने पैरों पर खुद ही कुल्हाड़ी मारेगी. मैं अच्छाई के सामने झुक सकता हूं, बुराई के सामने नहीं."

एक दिन सविता अपने मायके आई थी. तब एक बार मुझे देखते ही उस ने रोष प्रकट करते हुए कहा, "मैं नहीं जानती थी कि तू मु... से बदला लेने की ठान लेगी."

"क्या हुआ सवि?" मैं ने आश्चर्य से पूछा था.

"तूने मेरे पति को फांस रखा है," उस ने चिल्ला कर कहा था.
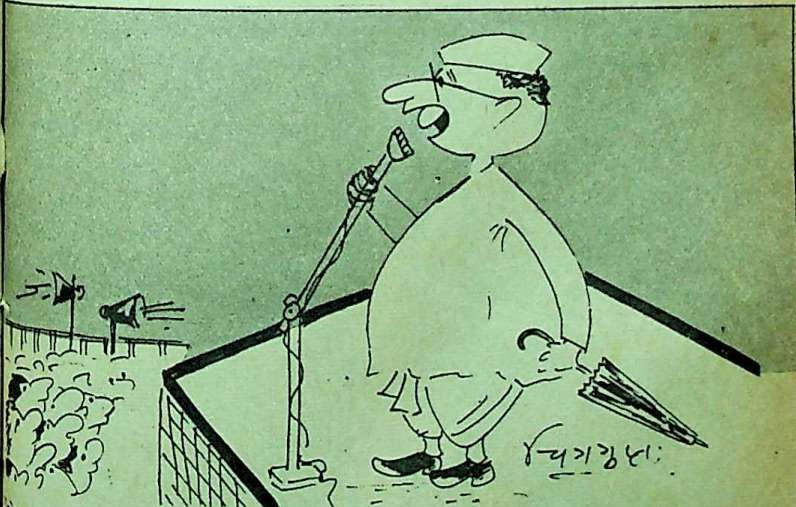
...दोस्तो, हिंदी इज माई मदर टंग. इसलिए वी शुड डू एव्री वर्क इन हिंदी. वी शुड स्पीक इन हिंदी. हिंदी में ही लिखना भी चाहिए."

"मैं यह आरोप सहन नहीं कर सकी थी, फिर भी मैं ने संयम से काम लेते हुए मोहरे की एक चाल चली थी, "तुझे अपने प्यार पर भरोसा है तो उन्हें मेरी ओर न आने दे. मैं तुझे सावधान करती हूं, सवि, कि तू खेल ठीक से खेल, नहीं तो हार जाएगी."

"तो तू मेरा दापंत्य जीवन नष्ट करना चाहती है?"

"इस से अधिक तू सोच नहीं सकती, क्योंकि तूने आज तक ऐसा ही किया है."

वह ससुराल में कम, मायके में अधिक रहने लगी थी. मैं ने जानबूझ कर उसे एक दिन ताना दिया था, "क्या तू उन से हार गई जो यहां रह रही है? अरे, ऐसी चाल चल कि वह चारों खाने चित्त नजर आएं."

वह क्रोध से कांपने लगी थी, पर मैं मुसकरा पड़ी थी. मेरी हंसी उसे जहर लगी थी. मैं कहना चाहती थी, 'तू भी तो मुझ पर हंस कर मुझे ऐसे ही जलाती थी.' पर मैं चुप हो गई थी.

भाभी ने भी मोहरे चलने शुरू कर दिए थे. वह सविता की मां से कहती रहती थीं "मामीजी, आप ने देखा है कि अतुलजी से मेरा झगड़ा होता रहता था, पर मैं कभी मायके नहीं गई. मायके भागने से पति के अंदर अविश्वास, क्रोध और द्वेष जन्म लेता है. मैं ने कुछ गलतियां की थीं. अतुलजी पर शंका भी की थी, पर अब घर में खुशियां लाने का प्रयास कर रही हूं. मैं अब महसूस करती हूं कि घर में शांति और खुशी लाने की पूरी जिम्मेदारी पत्नी पर होती है. पत्नी ही नासमझ हो तो पति का अहं जीने नहीं देता. पत्नी को चाहिए कि वह पति को समझे और उस की इच्छाओं के अनुरूप ढल कर उसे सही रास्ते पर लाए. मेरे विचार से सविता को भी ऐसा ही करना चाहिए."

इस पर सविता चिढ़ कर कहती थी, "तुम मां को बहकाने लगी हो."

"बहकाया तो तुम ने भी था, सवि, पर मैं तुम्हारी बुराई के लिए ऐसा नहीं कर रही. पति से दूर रहना क्या अच्छा है?"

अब सविता की मां भी उसे कोसने लगी थी. जिस दिन वह मातापिता की कटु बातें सुनती, उस दिन अखिलेशजी के चली जाती और वहां से कटु बातें सुन कर मातापिता के यहां चली आती... पर उस का दंभ टूट नहीं रहा था.

यह देख कर अखिलेशजी चिढ़े चिढ़े रहने लगे थे. उन्होंने उसे धमकाने के लिए कह दिया था कि उस ने अपनी आदत नहीं सुधारी तो वह तलाक ले लेंगे. उस के मातापिता ने भी स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि वे उस का बोझ संभालने की स्थिति में नहीं हैं. इस से वह परेशान रहने लगी थी.

उस ने आत्मनिर्भर होने का प्रयास किया था, पर वह नौकरी नहीं पा सकी थी.

संजय ने उस से कहा था, "सवि मैं तुम्हें एक फर्म में रखवा सकता हूं. बशर्ते तुम सचाई के साथ सुमी को विश्वास दिलाओ कि मेरे तुम से कोई गलत संबंध नहीं थे."

इस पर मैं ने संजय से पूछा, "तुम ऐसा क्यों चाहते हो?"

"ताकि तुम्हारी शंका दूर हो जाए और तुम यह जान सको कि मेरा, तुम से दूर रहने का अर्थ यह नहीं था कि मैं सवि से प्यार करने लगा था. दरअसल में सवि का दंभ तोड़ने के क्रम में तुम से दूर रहा था. मैं यह मानता हूं कि मुझे तुम से सलाहमशविरा कर के ऐसा करना चाहिए था, पर तुम तो जानती ही हो कि मैं कभीकभी नासमझी कर ही देता हूं. मैं चाहता हूं, सुमी, कि मेरे लिए अपने दिल से गलतफहमी निकाल दो."

"कहीं ऐसा तो नहीं कि तुम सवि को नौकरी दिलाने का लालच दे कर उस से झूठ बुलवाना चाहते हो?"

"नहीं, उस से सचाई उगलवाना चाहता हूं."

"मैं चाहती हूं, तुम उसे उस की गृहस्थी में लगने की सलाह दो."

"ठीक है."

संजय की बातों से लगा था कि वह अपनी गलती और हार महसूस करने लगा है.

अखिलेशजी के [illegible] तरस आता. मैं चाहती थी कि वह खुश ... उन का मुरझाया चेहरा मुझे खलता था. ... उन के दुख का कारण समझती थी और ...हती थी कि कोई ऐसी चाल चलूं कि सविता ...न की गृहस्थी सही प्रकार संभाल ले.

एक दिन, पहले से ज्यादा उदास और खोए से अखिलेशजी दफ्तर आए थे. ...मैं ने पूछा था, "क्या बात है, अखिलेश-...जी?"

"जी, कुछ नहीं."

"क्या मन की बात छिपाना चाहते हैं?"

"जी नहीं, बात यह है कि आजकल ...ब अजीब सा लगता है. जी चाहता है, कहीं ...शी की खोज करूं."

मैं गंभीर हो कर कह उठी थी, "अखिलेश बाबू, लगता है, आप परिस्थितियों से हार रहे हैं और हारे हुए लोगों ...को सविता पसंद नहीं करती. आप को अगर ...जीतना है तो आप मोहरा सोचसमझ कर ...चलिए."

"मैं सीधासादा आदमी हूं, कोई दांवपेंच ...के खेल नहीं खेल सकता, सुमीजी. हां, आप ...इस में माहिर हैं तो मेरी ओर से खेल कर ...देखिए, शायद जीत हो जाए."

"हालांकि सविता से मैं सदा हारती रही ...पर आप ने कहा है तो एक खेल और सही. लेकिन मोहरा आप को ही बनाऊंगी. कल शाम को चार बजे मेरे यहां जरूर आइएगा."

उस दिन मैं संध्या तीन बजे बाजार से सामान ले कर आ रही थी कि संजय मिल गया था.

मैं ने पूछा था, "संजय, तुम भी अपनी जीत के लिए मोहरा चलने लगे हो शायद. मैं पूछना चाहती हूं कि तुम सविता को नौकरी दिलाने के झूठे आश्वासन क्यों देने लगे हो? क्या इस तरह उसे अपने आगे झुका कर ठीक तरह से अपनी घरगृहस्थी संभाले?

"मैं यह कैसे सोच सकता हूं, सुमी? उस ने भी तो मेरी बसने वाली दुनिया को उजाड़ा था. अब उसे अपने ही इर्दगिर्द नाचते हुए देखना चाहता हूं."

"गलत बात. तुम खुद उस की ओर झुके थे."

"नहीं. उस ने मुझे चुनौती दी थी कि वह मुझे अपनी ओर खींच कर रहेगी और जैसे चाहेगी नचाएगी. लेकिन मैं ने तुम से दूर रह कर, उसे दिखाना चाहा था कि मैं सचमुच उसे चाहने लगा हूं. लेकिन समय आने पर मैं ने उस की कुत्सित इच्छाओं को दुत्कार दिया था और वह तिलमिला कर मुझे जलाने के लिए अखिलेशजी से विवाह करने को राजी हो गई थी."

रंज

मुझे तुम्हारी जुदाई का
कोई रंज नहीं,
मेरे ख्याल की दुनिया में
मेरे पास हो तुम.

—साहिर लुधियानवी

"तुम शायद कहानियां गढ़ना भी सीख गए हो."

"नहीं सुमी, मैं तुम्हें विश्वास दिलाना चाहता हूं कि मेरे दिल में तुम उसी तरह हो, जैसे पहले थीं. मैं मानता हूं कि मैं ने कुछ नासमझी की है और तुम्हारे अंदर शंकाओं को जन्म दिया है. पर सचाई जब सामने आएगी तो तुम खुद जान जाओगी कि मैं जो कुछ कह रहा हूं, सच कह रहा हूं."

तभी सविता को आते देख मैं परदे की ओट में हो गई थी. उस ने आते ही पूछा था, "संजय, क्या मेरी नौकरी की व्यवस्था हो गई?"

"जरूर हो जाएगी. बशर्ते तुम सुमी के सामने सचाई रख दोगी."

"सच, मैं मानती हूं कि मैं ने तुम्हें गलत राह पर ले जाना चाहा और तुम नहीं गए. बल्कि मुझे ही उलटे नसीहतें दीं, जिस से चिढ़ कर मैं ने तुम से और सुमी से बदला लेने के लिए अखिलेश से विवाह कर लिया....किंतु अखिलेश के दृढ़ स्वभाव से मैं घबरा गई हूं. लगता है, मैं उस के सामने टिक नहीं पाऊंगी."

"भागते रहने से क्या लाभ?" मैं परदे से बाहर आ गई थी." तुम्हें तो खुश होना चाहिए सवि कि तुम्हें दृढ़ स्वभाव वाला पति मिला है. जो हारना नहीं जानता. अगर उस ने हारना सीखा होता तो तुम्हारे तलवे सहलाता, तुम्हारे सामने हाथ जोड़ कर गिड़गिड़ाता, लाख मिन्नतें कर के तुम्हें मना ले जाता... लेकिन मैं जानती हूं अखिलेशजी हारेंगे नहीं... भले ही तुम उन की जिंदगी से निकल जाओ."

मुझे देख कर वह क्रोध से कांप उठी थी, उस ने संजय को तेज निगाहों से घूरते हुए कहा था, "तुम ने मुझे बेइज्जत करने के लिए यह चाल चली है. तुम ने मेरे मुंह से सचाई उगलवा कर अपने को पाकसाफ कर लिया है. तुम जीत गए हो संजय. पर मैं भी हारने वाली नहीं. मैं तुम्हारी शादी कहीं नहीं होने दूंगी."

तभी अखिलेशजी अतुल भैया के सा[थ] वहां आ गए थे. उन के पीछे मेरी भाभी और मातापिता भी थे. तब ठीक चार बज रहे थे.

मैं ने सविता को समझाया था, "सविता, गुस्सा छोड़ो और ठंडे दिमाग से सोचो. अखिलेशजी पर शंका करने से कोई ला[भ] नहीं. न मैं नौकरी छोड़ सकती हूं, और न अखिलेशजी. हमें दफ्तर जाना ही होगा. तुम गलत अर्थों में लोगी तो संबंध विच्छेद की बात सोचोगी. यह शायद तुम्हारे लिए अच्छा नहीं होगा. मेरे विचार से तुम्हें अखिलेशजी के साथ ही रहना चाहिए."

"नहीं" वह बिफरी थी.

"ठीक है," मैं ने मोहरा फेंका था. "तुम नहीं जाओगी तो मैं जाऊंगी."

यह सुन कर सविता का दंभ ढह गया था. मेरी बात पर संजय ही नहीं सब चौंक रह गए थे. और अपनी हार होते देख सविता चिल्लाई थी, "नहीं..." संजय फुंसफुसाया था, "नहीं... यह नहीं हो सकता."

मेरी चाल कामयाब हुई थी. सविता गिड़गिड़ाई थी, "नहीं... तुम मेरी गृहस्थी में कदम मत रखना. मैं कहीं की न रहूंगी. मैं हार गई हूं... तुम ने मेरे मोहरे पीट दिए हैं."

फिर वह अखिलेशजी से बोली थी, "मुझे क्षमा कर दो, मुझे अंधकार से प्रकाश की ओर ले चलो. दंभ और द्वेष ने मेरा दिमाग खराब कर रखा है."

जब वह जाने लगी थी तो मैं ने मुसकराते हुए उसे चिढ़ाया था, "कहो, मेरी चाल कैसी रही?"

वह शर्म से सिर झुका कर आगे बढ़ गई थी. मैं ने संजय से पूछा था, "शतरंज खेलोगे?"

"नहीं ... हार जाने की पूरी संभावना है. वैसे भी मैं कभीकभी बिना सोचेसमझे मोहरे चल देता हूं."

उस ने मेरी आंखों में झांकते हुए कहा था. मैं अपनी जीत पर मुसकरा उठी थी.

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

कनिष्ठ डाक्टरों का अनोखा विरोध प्रदर्शन

इंदौर में हड़ताली जूनियर डाक्टरों तथा सहायक सर्जनों ने विरोध प्रदर्शन का एक अनोखा तरीका निकाला है.

आंदोलनकारी सात डाक्टरों के समूह ने इंदौर में रक्तदान किया. उन की एसोसिएशन के एक प्रवक्ता ने बताया कि जब तक हमारी मांगें पूरी नहीं होंगी, प्रतिदिन सातसात डाक्टर रक्तदान करते रहेंगे.

डाक्टरों की हड़ताल से महाराजा यशवंतराव हस्पताल, जो कि रोगियों से भरा रहता है, अब लगभग सूना पड़ा हुआ है. केवल वरिष्ठ डाक्टर काम पर हैं जो गंभीर रूप से बीमार मरीजों को देख रहे हैं.

—अमृत प्रभात, लखनऊ (प्रेषक : दिलीपकुमार गुप्त)

*

कुत्ते और सियार

खागा फतेहपुर के जफराबाद गांव में सियार और कुत्ते एक साथ भोजन करते हैं और बाद में झाड़ियों में चले जाते हैं.

इस संबंध में गांव के एक व्यक्ति ने बताया कि जब गांव में प्रीतिभोज संबंधी आयोजन होते हैं तो भोजन की गंध पा कर सियार गांव के चक्कर लगाते हैं और भोजनोपरांत फेंके गए पत्तलों को चाटते हैं. यहां सियारों की संख्या कुत्तों की संख्या से तिगुनी होती है. यहां के कुत्ते सियारों पर कभी आक्रमण नहीं करते.

—दैनिक जागरण, कानपुर (प्रेषक : बलदाऊप्रसाद द्विवेदी 'शास्त्री)

*

छेड़छाड़ पर जुरमाना

महवा में कोली जाति के युवक के अपनी ही जाति की युवती से छेड़छाड़ करने पर पंचायत ने उस पर 5,100 रुपए का जुरमाना और पांचपांच जूते मारने की सजा सुनाई. पर सजा भुगतने से पहले ही, अगले दिन उस युवक की मृत्यु हो गई.

—राजस्थान पत्रिका (प्रेषक : रवि माथुर)

*

प्राचार्य द्वारा नकल

गुलबर्गा में एक कालिज के प्राचार्य को यहां कानून की परीक्षा में नकल करते हुए पकड़ा गया.

विश्वविद्यालय के अधिकारियों के अनुसार परीक्षा के दौरान जब निरीक्षकों के दल ने छापा मारा तो प्राचार्य के पास से बहुत सी परचियां बरामद हुईं, जो वह नकल करने के लिए लिया था.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : वीरेंद्रकुमार शर्मा)

पशुओं का बीमा

उत्तर प्रदेश सरकार ने वन्य पशुओं द्वारा ग्रामीणों के पालतू पशुओं के मारे जाने पर मुआवजे के रूप में धनराशि देनी निर्धारित की है.

सरकारी सूचनाओं के अनुसार एक वर्ष या उस से अधिक आयु के नर या मादा भेड़ के मारे जाने पर 100 रुपए, घोड़ा, खच्चर या ऊंट प्रत्येक के लिए 750 रुपए और गधे के लिए 300 रुपए मिलेंगे.

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : रामा कपूर)

*

96 वर्ष के वृद्ध के 72 बच्चे

कोटा में 96 वर्ष की आयु वाला हसलिया नाम का एक आदिवासी अब 17वीं शादी करने की सोच रहा है.

राजस्थान और मध्य प्रदेश की सीमा पर स्थित उटी गांव का यह आदिवासी 72 संतानों का पिता बन चुका है और उस के दो दरजन बच्चे और छः पत्नियां अभी जीवित हैं. उस की सब से बड़ी संतान 60 वर्ष और सब से छोटी छः वर्ष की है.

—आज, पटना (प्रेषक : रजनीश आनंद)

*

प्रेमी के पिता की दुकान के आगे भूख हड़ताल

गिरिडीह के इशरी बाजार में एक प्रेमिका ने अपने प्रेमी को अपनाने के लिए बड़ा ही नायाब तरीका ढूंढ़ निकाला है. पर प्रेमी का पिता दोनों की शादी के मार्ग में अब भी बाधक बना हुआ है.

उक्त युवती ने दो साल पहले अपने प्रेमी से मंदिर में शादी की थी लेकिन लड़के के घर वालों ने उसे अपनाने से इंकार कर दिया था.

अब उस युवती ने प्रेमी के पिता की दुकान के आगे आमरण अनशन शुरू कर दिया है और उच्चाधिकारियों को भी इस की सूचना दे दी है.

—आर्यावर्त, पटना (प्रेषक : मुमताज खान दीवाना)

*

कार प्लास्टिक की ही सही

घमतरी में कारवाला दूल्हा आम चर्चा का विषय बना हुआ है, क्योंकि किसी ज्योतिषी ने एक महिला को बताया था कि उस की बेटी की किस्मत बड़ी बुलंद है और किसी कार वाले से ही उस की शादी होगी. अगर कार वाले से शादी नहीं हुई तो कन्या की जान भी जा सकती है.

इस मध्यमवर्गीय परिवार को वर तलाश करने में बहुत समय गंवाना पड़ा. आखिर हार कर उन्होंने एक जगह शादी तय कर दी और शर्त रख दी कि लड़के को अपने साथ कार रखनी होगी, चाहे वह प्लास्टिक की ही क्यों न हो.

यही वजह थी कि दूल्हे मियां जेब में प्लास्टिक की कार ले कर शादी करने आए.

—नवभारत, नागपुर (प्रेषक : नानकराम अनवानी)

*

यातायात मजिस्ट्रेट का चालान

दिल्ली प्रशासन के अवैतनिक यातायात मजिस्ट्रेट का, नियमों का उल्लंघन करने के कारण चालान कर दिया गया.

बताया गया है कि मजिस्ट्रेट ने यातायात बत्तियों की परवाह किए बिना गाड़ी निकाल ली. बाद में ड्यूटी पर तैनात एक सिपाही ने उस का पीछा किया और पकड़ लिया.

बाद में मजिस्ट्रेट का ड्राइविंग लाइसेंस जब्त कर के उसे मजिस्ट्रेट के सामने पेश होने को कहा गया. **—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : तौसीम अहमद)**

ए, याद
कुट्टी
रुक गया.
तर गुजर
नों में गूंज र
रे में मैं सी
हुआ था.
सीमा की
ली भेंट हुई
मीधी जा र
था, "सी
ठ सहेली
बहन ही
कर आइ
रेटर है."
मुझे हैरा
मिला?"

इश्क ए रूहानी

मैं ने कई बार चाहा था कि मैं सीमा के आकर्षण से दूर हो जाऊं, पर चाह कर भी मैं ऐसा नहीं कर पाया पर नरेंद्र की बातों ने अचानक ही मेरे भटकते कदमों को रोक दिया.

''ए, याद है न? शरीर छुआ और बस कुट्टी,'' सीमा ने कहा और मैं ठिठक र रुक गया. नीचे व्यस्त हमीदिया रोड से ंतर गुजरते वाहनों का शोर लगातार नों में गूंज रहा था. 'राहगीर' होटल के उस मरे में मैं सीमा के साथ पिछले दो दिन से हुआ था.

सीमा की मुझ से लगभग एक वर्ष पहले ली भेंट हुई थी. मैं तब किसी सरकारी कार्य सीधी जा रहा था. मेरी पत्नी ने ही मुझ से था, ''सुनिए, सीधी में मेरी एक बहुत ष्ठ सहेली रहती है, सीमा. सहेली क्या बहन ही समझिए. आप उस से जरूर कर आइएगा. वह वहां पर टेलीफोन रेटर है.''

मुझे हैरानी हुई. ''पहले तो कभी उस से मिला?''

''नहीं, मिलते कैसे? हमारी शादी के समय उसे किसी अन्य रिश्तेदार की शादी में जाना पड़ा था और फिर कभी मौका ही नहीं आया.''

मैं ने यों ही सीमा का पता ले कर जेब में डाल लिया था. उस समय शायद यही सोचा था कि कहां ढूंढ़ता फिरूंगा. मगर जिस काम

से सीधी गया था, उस से जल्दी निपट जाने के कारण यों ही समय काटने के उद्देश्य से मैं

सीमा के पते पर जा पहुंचा. परिचय पाते ही सीमा खिल उठी, "अरे वाह, जीजाजी, मुझे तो सपने में भी आशा नहीं थी, आप से यहां इस तरह मुलाकात होगी?" उस ने जिस तरह दौड़दौड़ कर मेरी खातिर की, उस से मुझे उस समय कुछ संकोच ही हुआ था. तब मुझे कहां मालूम था कि हम दोनों जल्दी ही इतने नजदीक आ जाएंगे.

उस बार सीमा से विदा हुआ तो कुछ विशेष भावना मन में नहीं थी. लेकिन, जब कुछ ही दिन बाद दोबारा दफ्तर के काम से फिर सीधी जाना पड़ा तो पैर अनायास ही सीमा के घर की ओर उठ गए. उस बार सीमा के विशेष आग्रह के कारण मैं उस के साथ ही ठहर गया. चारपांच दिन कैसे निकल गए पता ही नहीं चला. लौट कर घर आया तो पत्नी ने पूछा, "सीमा मिली थी?"

"हां, मिली थी. तुम को बहुत याद कर रही थी." मैं उस के साथ ही ठहरा था, यह बात मैं ने नहीं बताई. शायद अपने अपराध बोध के कारण. सीमा अकेली ही रहती थी. परिवार के नाम पर सिर्फ दूर के रिश्ते के एक चाचा उस के साथ थे. उस के साथ ठहरने वाली बात निश्चय ही मेरी पत्नी को पसंद नहीं आती.

न जाने कैसे तभी कुछ ऐसा संयोग हुआ कि साल भर के लिए दफ्तर की तरफ से मुझे सीधी कार्यालय में विशेष नियुक्ति पर भेज दिया गया. मैं अकेला ही सीधी गया. केवल एक वर्ष के लिए पूरे परिवार को वहां उठा ले जाना ठीक नहीं समझा. शायद मन में गहरे कहीं सीमा भी इस तर्क के पीछे एक कारण बन कर बैठी हुई थी. सीधी पहुंच कर पहले ही दिन मैं सीमा से मिलने को बेचैन हो उठा. फोन पर उस से बात की, "सीमा, मैं यहीं आ गया हूं एक वर्ष के लिए."

"अरे यह कैसे?" सीमा फोन पर चहकी.

"तुम्हारे बगैर वहां दिल जो नहीं लग रहा था." सीमा से मैं साली का रिश्ता मानता था और इस नाते इतना मजाक करना अपना अधिकार समझता था.

"हिश्श... कैसी बात करते हैं, आप," उधर से खनकता हुआ स्वर सुनाई दिया, मगर उस में रोष की छाया भी नहीं थी.

"तुम ने पूछा नहीं, साथ में कौनकौन आया है?"

उत्तर में सीमा फिर हंसी. फिर कुछ ठहर कर बोली, "सामान कहां है आप का? घर पर ही ले आइए."

लेकिन मैं ऐसा कोई खतरा मोल लेना नहीं चाहता था, जिस से बाद में बदनामी उठानी पड़े. अतएव मैं ने अपने रहने के लिए कमरा तो अलग ही लिया, लेकिन सीमा के आग्रह करने पर खाना उसी के साथ खाने लगा.

शुरू में मैं सीमा को कुछ आवारा किस्म की लड़की समझा था, लेकिन बाद में मेरी यह धारणा बदल गई. सीमा वैसी नहीं थी. धीरेधीरे हम करीब आते गए. परिचय कब घनिष्ठता में बदल गया, पता ही नहीं चला. सीमा मुझ से कितनी ही बातें करती. अपनी पिछली जिंदगी की बातें, भविष्य की बातें, अपने विभाग की घटनाएं, मजाक और चुटकुले.

उस की बातों का खजाना कभी खत्म ही न होता और मैं चुपचाप मुग्ध हो कर बैठा उसे निहारा करता. सीमा के मन में मेरे लिए क्या भावना थीं, मुझे पता नहीं था. लेकिन मेरे दिल में जरूर सीमा को पाने का आकर्षण बलवान होता जा रहा था.

एक दिन अपने दफ्तर से लौट कर उस के घर जा रहा था तो रास्ते में ही खूब तेज बारिश होने लगी. सीमा के घर तक पहुंचतेपहुंचते एकदम भीग गया. देखते ही सीमा बोली, "अरे, आप तो बिलकुल भीग गए हैं?"

"हां, भीग तो गया हूं, मगर यहां आए बिना रहा नहीं गया."

"अब क्या किया जाए? मेरे पास तो मरदाने कपड़े भी नहीं हैं?" सीमा मुझे

"कितना सुखद लगता है तुम्हारे साथ, बिलकुल घर जैसा," चाय लेते हुए राकेश ने सीमा से कहा.

ड़ा पकड़ाते हुए बोली, "आप चाहें तो धोती की लुंगी ही बना कर बांध लीजिए. तब तक गरमागरम चाय बना कर ले आती

सीमा चाय बना कर लाई, तब तक मैं की एक साड़ी लुंगी की तरह बांध चुका और ऊपर बदन पर तौलिया डाल कर था. सीमा साथ बैठ कर चाय पीने लगी ने उस से कहा, "कितना सुखद लगता म्हारे साथ. बिलकुल घर जैसा."

"यह घर ही तो है, आप का." सीमा कर बोली.

"और तुम?"

वह एकदम चुप हो गई और खाली समेट कर जाने लगी. अचानक उसी न जाने क्या हुआ मुझे, मैं ने सीमा का कड़ कर उसे अपनी ओर खींच लिया. ड़बड़ा गई. न मालूम मुझे क्या हो गया र न जाने मैं क्या कर बैठता, मगर तभी ने दरवाजा खटखटाया. मैं ने अचकचा कर सीमा को छोड़ दिया. छूटते ही वह एकदम अंदर भाग गई. मैं ने उठ कर दरवाज़ा खोला. दूध वाला था. मैं ने सीमा को कई आवाजें दीं, लेकिन वह नहीं आई. दूध भी मुझे ही लेना पड़ा.

वह अंदर के कमरे में थी और दरवाजा अंदर से बंद था. मैं समझ गया, वह नाराज है. शायद बहुत ही ज्यादा. ग्लानि और अपराध के बोझ से दबा हुआ मैं चुपचाप अपने कमरे पर लौट आया. सारी रात चिंता के कारण नींद नहीं आई. यह क्या कर बैठा मैं? सीमा अगर कहीं मेरी पत्नी को यह सब लिख दे तो? शायद लिखेगी ही. फिर क्या होगा? रात भर बेचैनी से करवटें बदलता रहा. सुबह तक सोचने पर इस समस्या का एक यही हल समझ में आया कि सीमा का पत्र पहुंचने के पहले ही मैं घर पहुंच जाऊं और उस का पत्र वहां पहुंचे तो चुपचाप किसी तरह मैं ही प्राप्त कर लूं. दूसरे ही दिन एक सप्ताह की छुट्टी ले कर मैं घर रवाना हो गया.

मुझे अचानक आया देख कर मेरी पत्नी माया और मेरी बच्ची बेहद खुश हुईं. हम लोगों की एक ही संतान थी— साढ़े तीन वर्ष की नीतू. बेहद बातूनी. घर पहुंच कर बहुत अच्छा लगा. चिंता भी अपने आप कुछ कम हो गई. नीतू और माया के सान्निध्य में दिल और दिमाग अजीब से सुख से हलके हो गए. घर पहुंचते ही मुझे नीतू ने घेर लिया. सारा दिन उस की ही बातों में बीत गया.

"पिताजी, आप कहां चले गए थे?"

"सीधी गए थे, बेटे."

"अब तो नहीं जाएंगे?"

"हां, जाएंगे तो."

"नई... नहीं जाना, पिताजी... नहीं तो मैं आप से कुट्टी कर दूंगी." नीतू मुंह फुला कर बोली तो मुझे हंसी आ गई. तभी माया चाय बना कर ले आई. चाय देते हुए बोली, "कहिए, अचानक कैसे चले आए?"

"ऐसे ही, कुछ दफ्तर का काम था."

"और वहां सीधी के क्या हालचाल हैं? सीमा मिलती है कभी?" माया ने चाय सिप करते हुए पूछा.

मेरा मूड एकदम ही उखड़ गया. "क्यों, क्या मुझे वहां कोई और काम नहीं है, बस सीमा से ही मिलता रहूं," मैं ने निहायत कड़वे लहजे में पूछा. माया पल भर के लिए हतप्रभ रह गई. फिर सहज हो कर बोली, "आप चिढ़ क्यों गए? लगता है उस ने बहुत बकबक कर के आप को बोर कर दिया है. मैं जानती हूं उसे, वह बचपन से ही ऐसी है."

"अच्छा, छोड़ो भी, अब यह बताओ खाना क्या बना रही हो. बड़े जोरों से भूख लगी हुई है," मैं ने बात को खत्म करने के इरादे से कहा. माया एकदम उठती हुई बोली, "अभी दस मिनट में खाना बन जाता है, आप की पसंद का खाना. गोभीटमाटर की सब्जी और पराठे." माया का उत्साह और खुशी देख कर मेरे दिल में फिर से ग्लानि की भावना उभर आई. मैं ने मन ही मन तय किया अब सीधी लौट कर सीमा से कभी नहीं मिलूंगा.

जब तक घर रहा, रोज सुबह ही डाकघर पहुंच जाता और अपने नाम आए पत्रों के लिए डाकिए से पूछता, लेकिन कोई भी पत्र मेरा या मेरी पत्नी का नहीं आया. छुट्टी खत्म हो गई तो मैं ने लौटने की तैयारी की. कोई भी पत्र माया के नाम का नहीं आया था, इसलिए मेरा भय कुछ कम हो गया था, मगर फिर भी मन में दबी हुई एक आशंका भी थी. मेरे जाने की तैयारी होती देख नीतू पीछे पड़ गई.

"पिताजी, इस बार हम को भी चलिए."

"नहीं बेटे, अभी नहीं, अगली बार चलेंगे."

"अब आप कब आएंगे?"

"जल्दी आएंगे, जब तुम कहोगी."

"पिताजी, मालूम है आप को मां ने कहा है, तुम गाना गा कर बुलाओगी तो पिताजी आ जाएंगे. मां ने हम को गाना भी सिखाया है. आप को सुनाएं?"

मैं सामान बांध रहा था और नीतू दिमाग खाए जा रही थी. "अच्छा, सुनाओ," मैं ने उसे टालने की नीयत से कहा. नीतू ने लय के साथ सिर हिला कर गाना शुरू किया तो मैं हैरान रह गया.

"**पापा**, जल्दी आ जाना, सात समुंदर पार से, हाट से बाजार से..."

नीतू भी गा सकती है, यह मैं ने सोचा भी नहीं था. माया को फिल्में देखने और फिल्मी गाने गुनगुनाने का बहुत शौक है. लेकिन, वह नीतू को भी गाना सिखा चुकी है, यह मुझे मालूम नहीं था. फिर उस समय नीतू जिस भावना से गाना गा रही थी, उसे समझ कर मेरा दिल भर आया. मैं ने उसे गोदी में उठा कर चूमा और कहा, "बेटे, आप यह गाना गाओगे तब हम फौरन आ जाएंगे."

मन में सोचा यह बच्ची शायद मेरे दूर रहने से बहुत परेशान है. अब अच्छा यही होगा कि कोई अच्छा सा मकान देख कर अगली बार इन लोगों को भी वहीं ले जाऊं.

लेकिन जब मैं सीधी पहुंचा तो यह सब निश्चय धरे ही रह गए. अपने कमरे का दरवाजा खोलते ही एक नीले लिफाफे पर

र पड़ी. खोला तो उस में एक चिट थी, स पर सिर्फ इतना ही लिखा हुआ था— 'ोक कहीं के, डर के मारे आना ही छोड़ ा. मैं प्रतीक्षा कर रही हूं.'

सीमा की लिखावट मैं पहचानता था. र चाह कर भी अपनेआप को रोक नहीं ा. मन में एक बार सारे निश्चय याद , लेकिन मैं ने अपने से तर्क किया, 'एक र मिल आने में क्या हर्ज है, फिर तफहमी भी दूर करना जरूरी है.' और मैं ा के घर की ओर चल पड़ा.

सीमा बिलकुल पहले की तरह से ही ी. उस दिन की घटना का उस के ऊपर ई असर नहीं था. वह पहले की तरह से ही क रही थी, "कहां भाग गए थे, आप?"

मगर मैं बहुत गंभीर था. "सीमा, मैं... उस दिन मालूम नहीं क्या हो गया था... बहुत..."

वह बीच में ही बात काट कर बोली, रे छोड़िए भी, आप भी किस उलझन में गए?"

"तो तुम नाराज नहीं हो?"

सीमा उदास हो गई, "बहुत दिनों से ले रहतेरहते ऐसे मौकों से कई बार ना हो चुका है. मेरी बहुत हंसनेबोलने की त के कारण अकसर लोग मुझे गलत झ लेते हैं, लेकिन अभी तक तो अपनेआप बचाती आई हूं. पता नहीं कब तक बचा गी. इसी लिए मैं ने कई दिनों से पुरुषों से लनाबोलना बंद कर दिया था. पर आप तो ऐसा लगा जैसे जाने कब से आप को ती हूं. आप से दूर नहीं रह सकती..."

मैं ने पूछा, "तुम जानती हो, मैं शादी- हूं. तुम्हारा नहीं हो सकता. फिर इस मिलने से क्या फायदा? कहीं फिर उस की तरह बहक गया तो?"

सीमा की पुरानी हंसी फिर लौट आई, प अब कभी नहीं बहकेंगे. आज से याद — शरीर छुआ तो कुट्टी! छूना मना है,"

"लेकिन, फिर इस तरह मिलते रहने क्या तुक है... मेरा तो कुछ नहीं होगा,

गम

दिल की दुनिया थी
सूनीसूनी सी,
गम तेरा मिल गया
बुरा न हुआ.

—मसूदा हयात

लेकिन तुम्हारी बदनामी हो जाएगी."

"तो मत मिला करिए," वह फिर उदास हो गई.

"लेकिन मैं जानती हूं, हम जरूर मिलेंगे."

मैं चिढ़ कर बोला, "यह सब बेवकूफी की बातें हैं."

"अच्छा, छोड़िए, खाना तो खा लीजिए, नहीं तो मुझे भी भूखा ही रहना पड़ेगा."

कुछ दिन बाद हम फिर सामान्य हो गए. पहले की तरह मिलने लगे. फिर वही साथसाथ खाना, घूमना और ढेर सारी बातें. लेकिन उस दिन के बाद मैं फिर कभी सीमा को छूने का साहस न कर सका. तीन महीने और बीत गए. सीमा मेरे दिल और दिमाग पर छाती चली गई. दिन भर हमारा साथ उतनी देर को छूटता था, जब दफ्तर जाना पड़ता था. सीमा अपने अधिकारियों से कहसुन कर अपनी ड्यूटी मेरे दफ्तर के समय की ही लगवाती थी, ताकि बाकी समय हम साथसाथ रह सकें.

छुट्टी के दिन हम कहीं न कहीं घूमने निकल जाते. उसे घूमने का बहुत शौक था.

एक रविवार को शहर के बाहर बने तालाब के किनारे फोटो खींचने का कार्यक्रम बना लिया उस ने. खाना साथ में ले कर हम सुबह ही वहां पहुंच गए. एक दिन पहले ही माया का पत्र मिला था, मैं कुछ अनमना सा था. मगर सीमा बहुत खुश थी. पानी में पैर डाल कर वह उन्हें जोर से हिला रही थी. मैं पीछे खड़ा, पानी में पड़ रहे उस के और अपने प्रतिबिंब को देख रहा था. अचानक मैं ने पूछा, "सीमा, जानती हो प्रेम क्या होता है?"

वह पलट कर बोली, "हां, और यह भी जानती हूं कि वह कितनी तरह का होता है."

"कितनी तरह का होता है?"

"दो तरह का– इश्क-ए-रुहानी और इश्क-ए-जिस्मानी. मतलब आत्मिक प्रेम और शारीरिक प्रेम. हम दोनों को इश्क-ए-रुहानी हो गया है."

मैं हंस पड़ा, "अच्छा, अगर माया को मालूम पड़ गया तो?"

वह दूर क्षितिज में नजरें गड़ा कर कुछ सोचने लगी. बहुत देर बाद बोली, "नहीं मालूम पड़ेगा उसे. मैं जानती हूं यह गलत है, लेकिन यह गलती करने के लिए मजबूर हो गई हूं, अपने दिल के कारण."

मैं भी जैसे मजबूर हो गया था. कभीकभी मन ही मन में माया और सीमा की तुलना करने लगता. माया और सीमा एक ही आयु की थीं, देखने में भी माया सीमा से कम नहीं थी, लेकिन न जाने क्या बात थी कि सीमा चुंबक की तरह आकर्षित करती थी. माया धीरगंभीर स्वभाव की थी और सीमा बहुत चंचल. माया रुके हुए तालाब के गहरे जल की तरह थी तो सीमा बिना किसी की परवाह किए बहने वाले झरने की तरह थी.

कुछ भी हो, मैं अब सीमा के बिना नहीं रह सकता था. अब कोई न कोई रास्ता खोजना आवश्यक था.

'क्या माया को बता देना ठीक होगा?' मैं सोचता, 'उस के ऊपर क्या प्रतिक्रिया होगी? नहीं, अभी नहीं. अभी कुछ और प्रतीक्षा करनी होगी.'

सीमा के ही कारण मैं चार महीने से घर भी नहीं जा पाया था. माया के कई पत्र आ चुके थे. इसी अपने जिले के गांवों का दौरा करने मुझे 10-15 दिनों के लिए जाना पड़ा. शहर लौटा तो सीमा के कमरे पर ताला पड़ा हुआ था. दफ्तर गया तो उस का पत्र मिला– "मुझे चार दिन के लिए भोपाल जाना पड़ रहा है. अगर आज ही यह पत्र मिल जाए और हो सके तो भोपाल आना, बहुत मजा रहेगा. आओगे न?"

मैं ने तारीख देखी, सीमा कल ही गई थी. उस का भोपाल का पता भी लिखा हुआ था. मैं फौरन ही दीवानों की तरह भोपाल के लिए रवाना हो गया. उस के होटल में पहुंच कर उस के साथ ही रुक गया. मगर वह दो दिनों में सिर्फ कुछ देर के लिए ही मिल पाई. संचार विभाग की कोई गोष्ठी हो रही थी, जिस में वह बहुत व्यस्त थी. रात को आती और सुबह बहुत जल्दी निकल जाती.

दो दिन बाद आज उसे फुरसत मिली थी. हम ने घूमने जाने का कार्यक्रम बनाया था. वह तैयार हो रही थी और मैं उसे एकटक देख रहा था. इतने दिन बाद मिलने के कारण ही शायद, मैं अपना निश्चय भूल गया और व्याकुल हो कर उस की ओर बढ़ा. तभी वह चिल्लाई, "ए, शरीर छूना मना है, जानते हो न, कुट्टी हो जाएगी."

हम लोग भारत भवन घूम कर लौटे तो शाम हो गई थी. सीमा को ऊपर कमरे में चलने के लिए कह कर मैं सिगरेट लेने पान की दुकान की ओर बढ़ गया. पान वाले के पास पहुंचते ही एक गाने की आवाज कानों में पड़ी तो अचानक ही नीतू याद आ गई–

"पापा, जल्दी आ जाना. सात समंदर पार से, हाट से बाजार से..."

मैं जल्दी से सिगरेट खरीद कर वहां से हट गया. वह गाना दूर तक मेरा पीछा करता रहा. लगा जैसे नीतू खुद शिकायत कर रही हो– 'मैं ने गाना गाया था, फिर भी नहीं आए पिताजी.'

'अगले सप्ताह ही घर जाऊंगा,' मैं ने सोचा. गाना अभी भी सुनाई दे रहा था.

आई नीतू की बात— 'फिर आप से कट्टी हो जाएगी.'

मैं और भी तेजी से होटल की ओर बढ़ा. जल्दी से जल्दी मैं ऊपर कमरे में जा कर बंद हो जाना चाहता था, ताकि वह गाना सुनाई न दे. तभी किसी ने आवाज दी, ''ए, राकेश.''

मुड़ कर देखा तो वह नरेंद्र था. मेरा दोस्त. कालिज में हम साथसाथ थे. फिर वह दिल्ली चला गया था. उस से कभीकभी ही मुलाकात होती थी. वह पास आ कर एक धौल जमा कर बोला, ''अरे, वाह... मेरा यार यहां घूम रहा है और हम वहां आप के घर हो कर आ रहे हैं.''

''घर? कैसे?''

''अरे, जबलपुर जाना पड़ा काम से, तो तुम्हारे घर पहुंच गया और कहां जाता? वहां जा कर पता चला कि जनाब आजकल सीधी में हैं, मगर तुम तो यहां घूम रहे हो. तुम नहीं थे तो सोचा, होटल में टिक जाऊं, मगर भाभी ने जाने ही नहीं दिया. मैं दिन भर ही वहां रहा, और भाभी ने वह खातिर की कि जिंदगी भर नहीं भूल सकता. यार, कुछ भी कहो, भाभी बहुत ही अच्छी हैं मानना पड़ेगा...''

मेरे दिमाग में एक खयाल आया. क्षण भर में आंखों के आगे लालपीले तारे से घूम गए. जो मैं यहां कर रहा हूं, वही माया भी करने लग जाए तो? अगर वह भी किसी से आकर्षित हो जाए तो? मुझे लगा जैसे सारा संसार घूम रहा है. नरेंद्र मालूम नहीं क्या बोले जा रहा था. मैं ने बड़ी मुश्किल से अपने आप को संयत किया.

''...भाभी तुम्हें बहुत ही याद कर रही थीं. बहुत परेशान भी थीं. तुम ने कई दिनों से कोई पत्र भी नहीं लिखा और गए भी नहीं. हां, नीतू तो बहुत ही प्यारी बच्ची है. किस कदर बातें करती है! यार मजा आ गया.''

''तुम यहां कहां ठहरे हो?'' मैं ने उस की बात काट कर पूछा.

''कहीं नहीं, अभी वापस जा रहा हूं, दिल्ली, आठ बजे वाली गाड़ी से.''

नरेंद्र से विदा ले कर होटल के कमरे में पहुंचा तो सीमा स्नानगृह में थी. वह जोरों से गुनगुना रही थी. मैं कुछ देर तक वहीं खड़ा उस का गाना सुनता रहा.

नरेंद्र से मिलने के बाद, इतनी ही देर में मेरे ऊपर से एक तूफान गुजर चुका था. मगर अब मैं काफी संयत हो चुका था. अपने पैड में से कागज निकाल कर मैं लिखने लगा, ''सीमा, तुम्हें बुरा तो बहुत लगेगा. शायद बहुत दुखी भी होगी, मगर आज मेरी समझ में यह आ गया है कि जिसे तुम इश्क-ए-रुहानी कहती हो, वह इश्क नहीं, सिर्फ आकर्षण है. यह आकर्षण तुम्हारे लिए, मेरे लिए, माया के लिए और नीतू के लिए, सभी के लिए अब खतरनाक होता जा रहा है. इसे यहीं खत्म कर देना अच्छा है. अचानक मेरी समझ में यह बात कैसे आई, यह फिर कभी विस्तार से लिखूंगा. अभी मैं जा रहा हूं. अब सीधी भी नहीं रहूंगा. किसी और को दफ्तर से भिजवाने की व्यवस्था करूंगा.

''किसी अच्छे सुपात्र को अपना जीवनसाथी बना लोगी— यही मेरी आशा और कामना है और इसी में हम सब की भलाई भी है. अगर मेरे लिए तुम्हारे दिल में कोई जगह है तो उसी का वास्ता है तुम को.''

पैड से कागज फाड़ कर मैं ने मेज पर गिलास से दबा कर रखा और जल्दीजल्दी अपने कपड़े अटैची में भर कर सीमा के बाहर आने से पहले ही नीचे उतर गया.

जबलपुर जाने वाली बस में जब मैं बैठा तो मेरे हाथ में एक पैकेट था जिस में गुड़िया रखी हुई थी, जिसे मैं ने अभीअभी नीतू के लिए खरीदा था. बस चली तो मन उदास हो गया. सीमा के लिए मैं दुखी था. बहुत दुखी. मगर साथ ही स्वयं को बहुत हलका भी महसूस कर रहा था. मैं ने अटैची खोली और संभाल कर नीतू की गुड़िया उस में रख दी.

पैर फैला कर आंखें मूंदीं तो लगा कहीं कोई गाना गा रहा है, ''पापा, जल्दी आ जाना, सात समंदर पार से...''

आंखें खोल कर देखा तो कोई भी नहीं गा रहा था, सब ऊंघ रहे थे और बस पूरी रफ्तार से भागी जा रही थी. ●

विश्व की बढ़ती आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए [illegible] खनिज संपदा कम पड़ती जा रही है. बीसवीं सदी के अंत तक धरती की आबादी छः अरब हो जाएगी तब तक पृथ्वी के गर्भ में छिपी संपदा का काफी हिस्सा चुक जाएगा. [illegible] पर मानव सभ्यता में निरंतरता बनाए रखने और विकास की गति को नियमित रखने के लिए इस भूमंडल पर ही नए खनिज [illegible] का पता लगाया जा चुका है.

सागर तल में छिपी संपदा

जाएगा. रंतरता बना नियमित रख ए खनिज ...

पदा
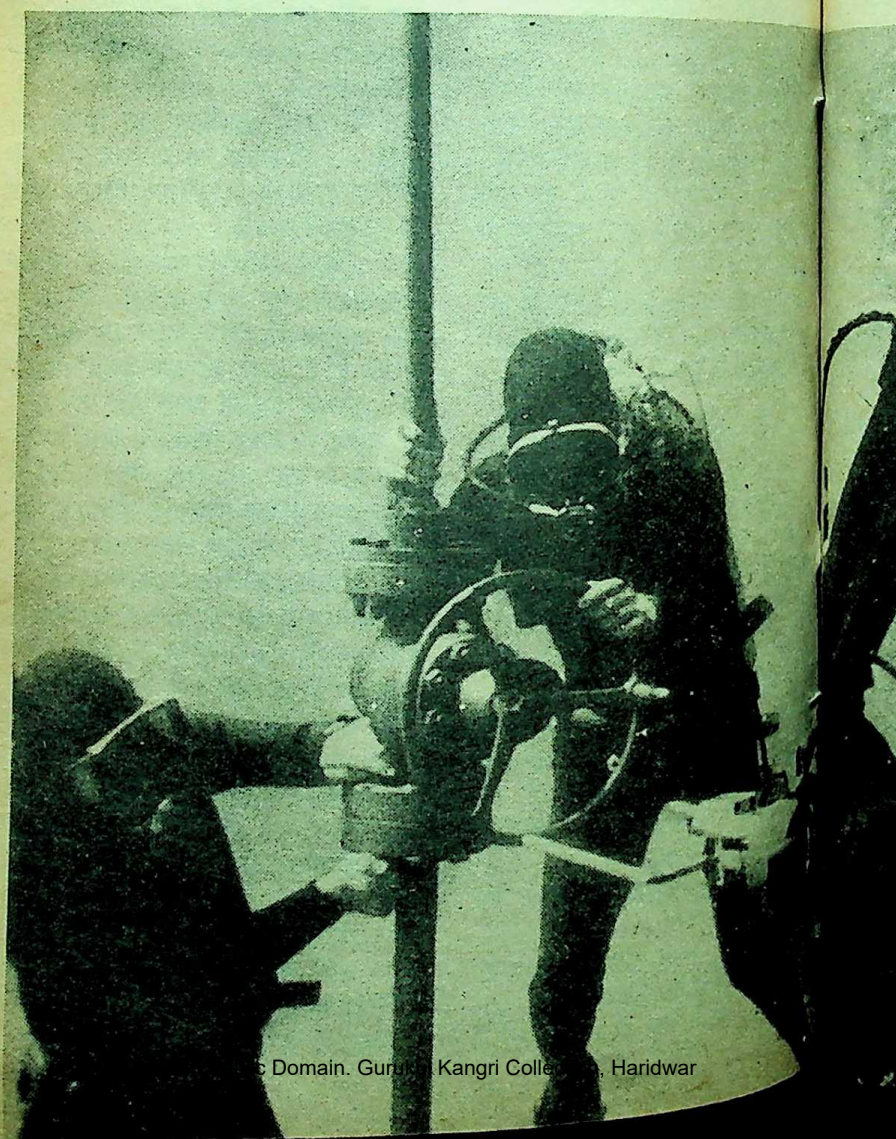
आज अनेक देश अपने औद्योगिक विकास के लिए समुद्र की तलहटी में मौजूद खनिज संपदा को निकाल रहे हैं. पर खनिज संपदा निकालने की काररवाई कैसे होती है?

लेख • रणबीर सिंह
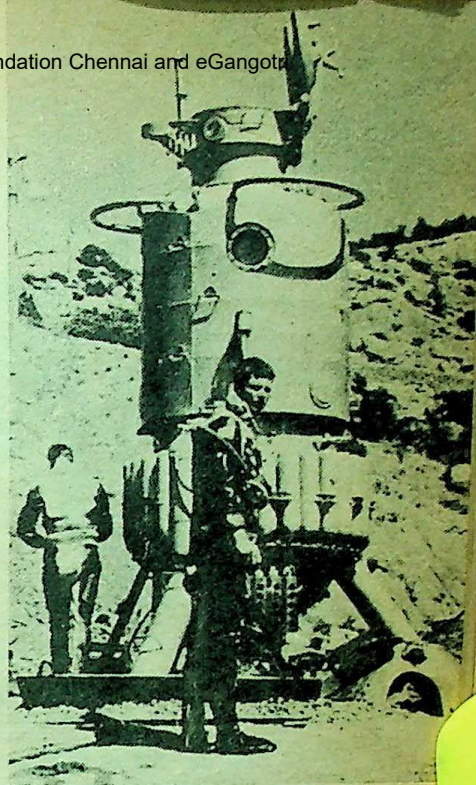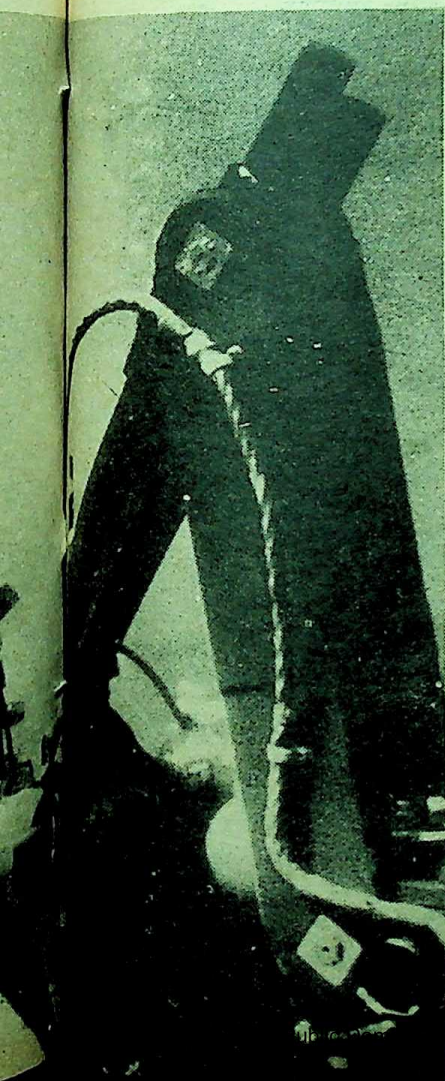
समुद्र की तली में धातु के खनिज पिंडों को खोजने की मानव युक्त प्रयोगशाला (ऊपर) व हस्त चालित पुराने प्रकार की एक बहुउपयोगी अमरीकी मशीन (बाएं).

• पृथ्वी का दोतिहाई भाग समुद्र से ढका है. समुद्र के गर्भ में छिपी खनिज संपदा बीसवीं सदी के बाद की दुनिया के जीवन का आधार बनेगी. अतः वैज्ञानिकों ने नए खनिज स्रोतों का पता गहरे पानी में लगाया है.

गहरे समुद्रों की तलहटी में छिपे खनिज पिंडों पर आज विश्व के अनेक देशों की दृष्टि है. पिछले 30 सालों से जापान, पश्चिमी जरमनी, अमरीका, ब्रिटेन, फ्रांस व सोवियत संघ बड़े पैमाने पर समुद्र की खनिज संपदा को प्राप्त करने के उपाय खोजते रहे हैं. भारत भी इस क्षेत्र में पीछे नहीं रहा है. इस मामले में भारत की सफलताओं की चर्चा करने से पहले
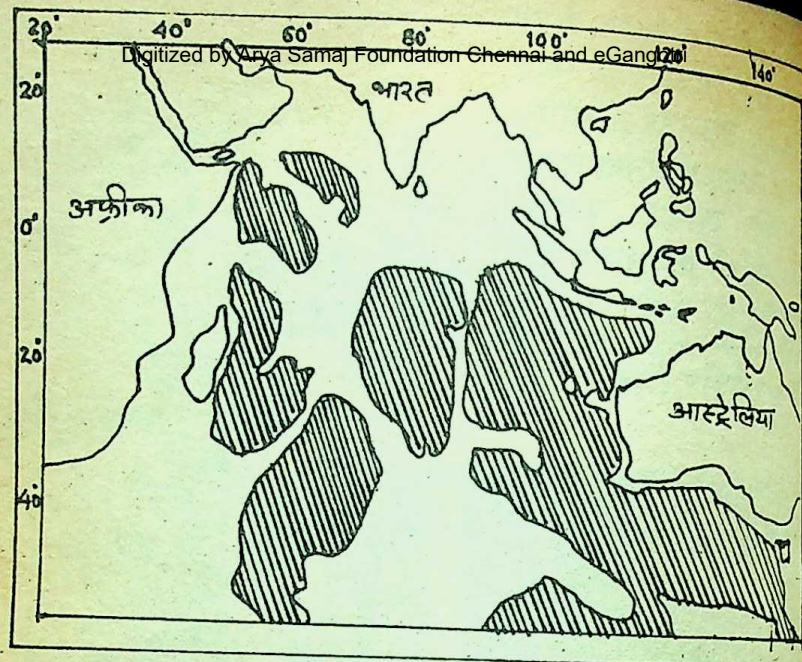
हिंद महासागर में खनिज पिंडों की स्थिति— रेखांकित भाग.

समुद्री खनिज पिंडों की खोज का इतिहास, उन का उपयोग, समुद्र में स्थिति तथा उन की खुदाई के आर्थिक व वैज्ञानिक पहलुओं पर विहंगम दृष्टि डालना उपयुक्त होगा.

समुद्र के गर्भ में छिपी बहुमूल्य खनिज संपदा की खोज का श्रेय एक ब्रिटिश वैज्ञानिक सर जान मरे को है. मरे उस वैज्ञानिक दल के सदस्य थे जो दिसंबर 1872 से मई 1876 तक 'चैलेंजर' नामक जहाज में विश्व के समुद्रों का निरीक्षण करता रहा. इस दौरान समुद्र की तलहटी से खनिज पिंड भी बरामद किए गए. उस वक्त खनिज पिंडों का महत्त्व मात्र वैज्ञानिक जिज्ञासा तक था. पर आज सौ वर्ष बाद वैज्ञानिक खनिज पिंडों की खोज, अध्ययन, खुदाई व उन के उपयोग में अत्यधिक रुचि ले रहे हैं.

खनिज पिंडों को प्राप्त करने के लिए विश्व के देशों में होड़ लगी हुई है. समुद्र की तलहटी में छिपे खनिज पिंडों से अगर 10 प्रतिशत धातुएं भी प्राप्त हो गईं तो इन्हें गहराई से निकालना आर्थिक रूप से लाभकारी होगा. इस लिहाज से समुद्री खनिज पिंडों से प्राप्त धातुएं हमें हजारों साल तक मिलती रहेंगी.

इसी बात को ध्यान में रखते हुए भारतीय वैज्ञानिकों ने हिंद महासागर की तलहटी में छिपी खनिज संपदा की खुदाई करने के प्रयत्न काफी पहले आरंभ कर दिए थे. वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के तत्वावधान में सारा खोज कार्य गोवा स्थित राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान के जिम्मे है. भारत विश्व का प्रथम विकासशील देश है जो दीर्घकालीन नीति बना कर समुद्र से खनिज पिंडों का खुदाई संबंधी कार्य कर रहा है.

हिंद महासागर, प्रशांत महासागर और एटलांटिक महासागर की तलहटी में अनुमानतः 50 अरब टन खनिज पिंड बिखरे पड़े हैं. एक अनोखी बात यह है कि किसी जीवधारी की तरह इन पिंडों का आकार बढ़ता रहता है. नए पिंडों के बनने और पुराने पिंडों की वृद्धि की दर के बारे में किए गए

अनुसंधान से पता लगा है कि सभी समुद्रों में हर साल एक करोड़ [illegible] जाते हैं. इसलिए खनिज पिंड एक ऐसी 'फ़सल' है जो काटने के बाद भी बढ़ती है. दुनिया में आज मैंगनीज की जितनी खपत है उस से तिगुनी मात्रा में हर साल नए खनिज पिंड बनते हैं.

देखने में खनिज पिंड बेशक कुरूप और बेढंगे लगते हैं, पर इन का सौंदर्य तो इन के उपयोग में ही निहित है. बेढंगे खनिज पिंडों को वैज्ञानिकों ने जब इलेक्ट्रानिक सूक्ष्मदर्शी से देखा तो रहस्य की परत दर परत उघड़ती गई. तभी इन की बनावट की प्रक्रिया को समझा गया और इन में उपस्थित अष्टधातुओं का अनुपात सुनिश्चित हुआ.

सागर की तलहटी में खनिज पिंडो के निर्माण की प्रक्रिया के जिस इतिहास को वैज्ञानिकों ने टुकड़ाटुकड़ा जानकारी हासिल कर जुटाया है, वह दिलचस्प है.

खनिज पिंडो के निर्माण के बारे में रोचक बात यह है कि सागर की तली पर इन की केवल एक ही तह बिछी हुई है. प्रारंभ में वैज्ञानिकों का यह मत था कि खनिज पिंड सागर की तलहटी पर लगातार होने वाली गाद की 'बरसात' से न बने हों. पर गाद के जमा होने की तेजी खनिज पिंडो की वृद्धि दर से कहीं अधिक थी, इसलिए वैज्ञानिकों को अपनी धारणा बदलनी पड़ी. इस के अलावा एक रोचक तथ्य यह भी सामने आया कि चाहे कैसी भी परिस्थिति रहे, खनिज पिंड हमेशा सागर तल पर जमी गाद की मोटी नरम परत के ऊपर पड़े रहते हैं.

ये अनगिनत खनिज पिंड सागर तल में लाखों वर्षों से एक ही स्थान पर दबे पड़े हैं. ये पड़ेपड़े बस अपना आकार ही बढ़ाते हैं. वैज्ञानिक शोध के अनुसार खनिज पिंड 10 लाख साल में केवल तीन मिलीमीटर ही बढ़ते हैं. इस दौरान पिंडों के आसपास जमी गाद मोटाई में तीन मीटर बढ़ जाती है.

खनिज पिंडो की आयु का पता लगाने के लिए वैज्ञानिकों ने रेडियोधर्मी थोरियम, वैजाडियम, यूरेनियम-234 व बैरिलियम की रेडियोधर्मी आयुमापक पद्धतियों का [illegible] निकाला है कि दो से आठ मिलीमीटर मोटे खनिज पिंडों की आयु किसी भी तरह 10 लाख वर्ष से कम नहीं हो सकती. बीच में काट कर पालिश किया खनिज पिंड ठीक एक पुराने पेड़ के कटे तने सा लगता है.

वैसे प्रत्येक पिंड केंद्र पिंड में एक नाभिक (न्यूक्लियस) होता है. दो नाभिक भी हो सकते हैं. यह नाभिक किसी शार्क मछली का टूटा दांत या समुद्र में फेंके धातु के मलबे का कोई छोटा टुकड़ा हो सकता है. खनिज पिंड हमेशा डोलते रहते हैं. ऊपर का हिस्सा नीचे और नीचे का ऊपर होता रहता है.

धातुओं का अंश कहां से आता है

खनिज पिंडों के बारे में सब से महत्त्वपूर्ण और दिलचस्प यह जानना है कि

खनिजपिंड अनुसंधान पोत पर उपयोग होने वाला आई.बी.एम.-1,800 सिरीज का कंप्यूटर.
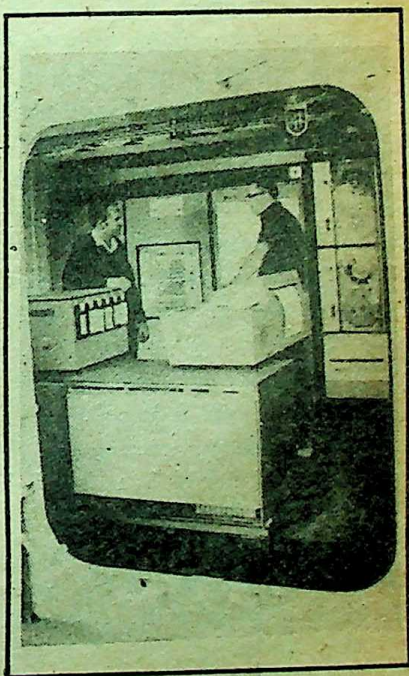
इन में धातुओं का अंश कहां से आता है, वह कौन सी प्रक्रिया है जिस में धातु के सूक्ष्म कण चुनिंदा नाभिक के चारों ओर अपनेआप लिपटना आरंभ कर देते हैं और कैसे करोड़ों वर्षों तक अष्टधातुओं का जमाव होता रहता है, वगैरह.

वैज्ञानिकों ने इस बारे में तीन संभावित उत्तर प्रस्तुत किए है. प्रथम, सागर जल में घुले मैंगनीज व अन्य धातुओं के सूक्ष्म कण एक निश्चित परिस्थिति में उपयुक्त नाभिक के मिलते ही इस के चारों और अपनेआप जमा होते रहते हैं. दूसरे, सागर में डूबे ज्वालामुखी और धरती के सक्रिय होने से निकला लावा समुद्र जल में मिल कर बहना शुरू हो जाता है. इस तरह कालांतर में वही लावा सागर तल में छिपे खनिज पिंडों में बदल जाता है.

तीसरी स्थिति में गहरे सागर की तलहटी में जमी गाद में ही मैगनीज आदि के सूक्ष्म कण उपयुक्त नाभिक के चारों ओर जमा हो कर खनिज पिंड बनाते हैं. पर पिंडों की इन तीनों निर्माण प्रक्रियाओं में विश्वसनीय दूसरी प्रक्रिया ही है.

ज्वालामुखी से बनने वाले खनिज पिंड जल्दी बढ़ने वाले होते हैं, इन में धातुओं की मात्रा भी अन्य पिंडों के मुकाबले ज्यादा होती है.

पिंडों की निर्माण प्रक्रिया में सागर के गर्भ में अनेक शक्तियां काम करती हैं जैसे-गहराई में जलधाराओं की गति व दिशा गहराई में सूक्ष्मतर धातुओं की पूर्ति, गाद जमाव दर, तापक्रम; गहराई और सूक्ष्म जैविक क्रियाएं.

विश्व के प्रमुख महासागरों की तलहटी से प्राप्त खनिज पिंडों में निहित विभिन्न धातुओं की मात्रा का पता लगाया जा चुका है (देखें तालिका).

बड़े आलू के आकार के बराबर काले या गहरे भूरे रंग के खनिज पिंड समुद्र जल से ढाई गुना भारी होते हैं. पिंडों में मैंगनीज व लौह धातुओं के आक्साइड अधिक होते हैं.

सागर तल में छिपे खनिज पिंडों को प्राप्त करने के पीछे मुख्य आकर्षण मैंगनीज और लौह अयस्क नहीं हैं. ये तो धरती पर ही खूब पाए जाते हैं. वास्तव में निकल, कोबाल्ट, और तांबा जैसी दुर्लभ तथा सीसा, वेरियम, मोलिबडैनम, वैनाडियम, क्रोमियम तथा टिटेनियम जैसी अति दुर्लभ धातुएं प्राप्त करने के लिए ही समुद्र की खुदाई की जा रही है. उपर्युक्त धातुओं के आधार पर ही दुनिया के औद्योगिक दृष्टि से विकसित देश आज तकनीकी प्रगति में आगे हैं. भविष्य में भी आगे रहने के लिए उन के सामने महासागरों से खनिज पिंडों को निकालने के सिवा अब दूसरा विकल्प नहीं है.

अब तक महासगरों के तल में छिपे खनिज पिंडों की मात्रा व उन के स्थान की जानकारी देने वाले अच्छे नक्शे बन चुके हैं, जिन के अनुसार मात्रा में सब से अधिक व गुण में सब से अच्छे खनिज पिंड प्रशांत महासागर में हैं. फिर हिंद महासागर व एटलांटिक महासागर का नंबर आता है. हिंद महासागर के पिंडों में भी दुर्लभ धातुओं की अच्छी मात्रा उपलब्ध है.

अष्ट धातु पिंडों का जमाव

अनुमान है कि हिंद महासागर की तलहटी में एक करोड़ वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में अष्टधातु पिंडों का जमाव है. सागर में 2,000 से 6,000 मीटर की गहराई पर समुद्र में डूबे पर्वतों, पठारों, घाटियों और मैदानों पर खनिज पिंडों का जमाव पाया गया है. अत्यधिक गहराई पर लिए गए सागर तल के चित्रों से यह पता लगा है कि तलहटी पर एक स्थान पर न तो एकाकार पिंड है और न ही पिंडों का जमाव एकसार व अटूट है. तलहटी पर एक वर्गमीटर स्थान पर पांच से 20 किलोग्राम तक खनिज पिंड उपलब्ध हुए हैं. कई बार ऐसा भी हुआ है कि अधिक पिंड जमाव वाले ढेर के पिंडों में प्रति वर्गमीटर धातुओं की मात्रा बहुत कम पाई गई.

तट से सैकड़ों किलोमीटर दूर दो से छः किलोमीटर की गहराई से खनिज पिंडों की खुदाई कोई आसान काम नहीं है. आज जिस
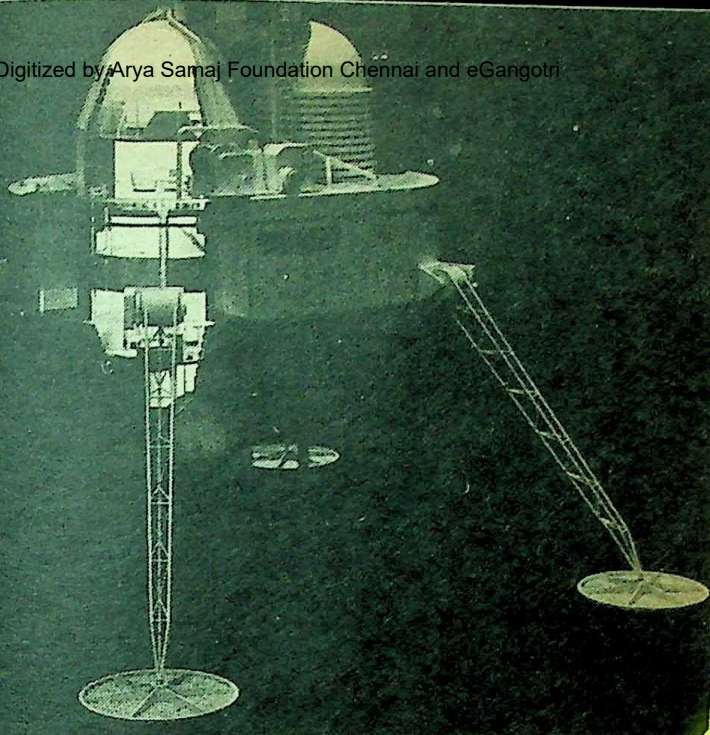
अमरीका द्वारा तैयार किए गए खोज केंद्र का डिजाइन. समुद्र की सतह से 1,800 मीटर नीचे इस में पांच वैज्ञानिक कई महीने एक साथ काम कर सकते हैं.

समुद्री खनिज संपदा के दोहन की बात हम करते हैं उस के लिए हजारों वैज्ञानिकों ने पूरे 100 वर्ष तक अनुसंधान किया है.

समुद्री पिंडों की खुदाई का कार्य दुरूह व खर्चीला है. इसलिए खनिज पिंडों को बड़ी मात्रा में प्राप्त करने की लागत और उन से प्राप्त होने वाली धातु के मूल्य के फर्क को ध्यान में रखा जाना जरूरी है.

उथले समुद्र से खनिज तेल प्राप्त करनें का काम जिस तरह आज आर्थिक रूप से लाभकारी है, उसी तरह खनिज पिंडों को निकालने का कार्य भी लाभप्रद है. भविष्य में 'समुद्र का उद्योगीकरण' अवश्यंभावी है. गहरे समुद्र में जा कर खनिज पिंड निकालने के लिए अमरीका ने 36 हजार टन के एक विशाल जहाज को समुद्र की खुदाई में काम आने वाले जहाज में बदल दिया है.

जापान, ब्रिटेन, सोवियत संघ, फ्रांस और भारत भी या तो पुराने, पर अच्छी हालत के जहाजों को खुदाई के काम आने वाले जहाजों में बदल रहे हैं या फिर नए जहाज बना रहे हैं. अमरीका तथा अन्य कुछ देश शीघ्र ही प्रशांत, एटलांटिक महासागरों से नियमित रूप से खनिज पिंडों को निकालने का काम शुरू करने वाले हैं. दुनिया के सात देशों के पास खनिज पिंडों को निकालने और उन में से धातु को पृथक करने के कई तरीके हैं, कई देश जहाज पर ही धातु गला कर अर्धशुद्ध धातु पिंडों का निर्माण करने की योजना बना रहे हैं. ऐसी स्थिति में बेकार पदार्थ पुनः समुद्र की गहराई में फेंका जा सकता है. वैसे भी बेकार पदार्थ को तट तक ढोने में कुछ फायदा नहीं है. इसलिए विकसित देश खनिज पिंडों से केवल दुर्लभ धातुओं को प्राप्त करने की विधि विकसित करने के लिए ही प्रत्यनशील हैं. इन विधियों से खनिज पिंडों

खनिज पिंडों में धातुओं की मात्रा

धातु	धातुओं की प्रतिशत मात्रा		
	प्रशांत महासागर	हिंद महासागर	एटलांटिक महासागर
मैंगनीज	19.27	15.25	15.46
लोहा	11.79	13.35	23.01
निकल	0.846	0.534	0.308
कोबाल्ट	0.290	0.241	0.234
तांबा	0.706	0.290	0.141

से 80 से 90 प्रतिशत तक शुद्ध धातु प्राप्त करने में सफलता हासिल हुई है.

अष्टंधातु खनिज पिंडों को निकालने से पहले अनेक प्राथमिक तैयारियां करनी पड़ती हैं. सब से पहले तो यही पता लगाना आवश्यक है कि सागर तल में किस स्थान पर किस गुण के खनिज पिंड कितनी सात्रा में उपलब्ध हैं. यह महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं खोजी जहाज.

भारत का व्यापक कार्यक्रम

हिंद महासागर में खनिज पिंडों की व्यावसायिक स्तर पर खुदाई के लिए भारत ने एक व्यापक कार्यक्रम बनाया है. प्रथम चरण के अंतर्गत अनुसंधान पोत 'गवेषणी' की सहायता से पश्चिमी हिंद महासागर में गोवा से मारीशस तक सर्वेक्षण कार्य लगभग पूरा हो चुका है. फिलहाल 'गवेषणी' द्वारा जुटाए गए खनिज पिंडों के नमूनों के विश्लेषण का कार्य प्रगति पर है.

दूसरा चरण खुदाई का है. इस के लिए ऐसे बड़े जहाजों की जरूरत पड़ती है जो 50 सेंटीमीटर व्यास के छः किलोमीटर लंबे पाइप को संभालने और हजारों टन खनिज अयस्क को जमा कर के रख सकें. खनिज पिंड तट से सैकड़ों किलोमीटर दूर गहरे समुद्र से प्राप्त होते हैं, इसलिए जहाज पर कई महीनों तक विपरीत मौसम से मुकाबला करने तथा अपने तटवर्ती परियोजना केंद्र से दूरसंचार संपर्क कायम रखने की पूरी सुविधाएं होनी चाहिए. साथ ही कुछ ऐसे भंडार वाहक जहाज भी होने चाहिए जो खुदाई का काम करने वाले जहाजों से खनिज पिंडों को तट पर कार्य कर रहे प्रोसेसिंग प्लंट तक ला सकें.

वैज्ञानिकों के अनुसार प्रशांत महासागर में खुदाई के लिए भेजा जहाज ऐसा होना चाहिए जो समुद्र में कम से कम चार वर्ष तक रह सके. ऐसे जहाज पर हर माह कार्यदल बदलना पड़ेगा. इस तरह का जहाज किसी भी सूरत में 1,50,000 टन से कम वजनी नहीं होगा. वास्तव में बड़े पैमाने पर अच्छी मशीनरी का उपयोग कर के ही खनिज पिंडों को व्यावसायिक स्तर पर प्राप्त करना लाभप्रद रहता है.

वर्ष भर में 40-50 लाख टन खनिज पिंड निकालने की अगर व्यवस्था न हो तो खुदाई का काम लाभप्रद नहीं माना जाता. पांच किलोमीटर की गहराई से इतनी मात्रा में खनिज पिंड निकालने के लिए जहाज को लगभग चार मैगावाट बिजली चाहिए. एक रास्ते से गुजरते हुए एक ही बार में अधिकतम खनिज पिंड उठाने का प्रयत्न न हो तो दोबारा

ड़ कर उसी रास्ते से खनिज पिंड प्राप्त करना दूभर हो जाता है, क्योंकि सागर तल से खनिज पिंडों को एकत्र करना सागर तल में काफी खलबली मचा देता है, जिस से बाकी खनिज पिंड आसपास की कई मीटर मोटी गाद की तह में दब जाते हैं.

आजकल विश्व की कई बड़ी कंपनियां खुदाई के काम आने वाले जहाजों का डिजाइन तैयार कर रही हैं. कुछ जहाजों में खनिज पिंड एक पाइप के जरिए हाइड्रालिक लिफ्ट प्रणाली से प्राप्त किए जाते हैं. कुछ जहाजों में लोहे के तारों के एक मजबूत रस्से से लोहे की मजबूत बालटियां बांध कर उन्हें रहट की तरह चलाया जाता है. इस प्रणाली में खनिज पिंड से भरी बालटियां उलटी हो कर जहाज में बने भंडार ताल में गिरती रहती हैं.

समुद्र तल से 10 लाख टन वार्षिक की दर से खनन क्षमता वाली हाइड्रालिक प्रणाली का इंतजाम करने पर 25 से 80 करोड़ रुपए तक खर्च होने का अनुमान लगाया गया है. इतनी मात्रा में खनिज पिंडों को सागर तल से जहाज के डेक तक लाने में [illegible] से 16 करोड़ रुपए, जहाज से तट तक ले जाने में तीन से नौ करोड़ रुपए तथा उस के शोधन में आठ से 16 करोड़ रुपए खर्च आने का अनुमान है. इस तरह 10 लाख टन वार्षिक खनन दर के लिए 200 से 800 करोड़ रुपए तक राशि व्यय करनी पड़ेगी. वैसे भी अनेक ऐसी बहुराष्ट्रीय कंपनियां जो सागर तल की खनिज संपदा को प्राप्त करने की तकनीक विकसित कर उसे व्यावसायिक स्तर पर बेचने के लिए तैयार हैं, अब तक इस व्यवसाय में 24 अरब रुपए व्यय कर चुकी हैं. अतः अब पीछे मुड़ कर देखने का तो सवाल ही नहीं उठता.

खनिज पिंडों के भंडारों का दोहन

खनिज पिंडों के विशाल भंडारों का व्यावसायिक स्तर पर दोहन करने के लिए जहां आज अनेक विकसित देश बेचैन हैं, वहीं छोटे, अविकसित या विकासशील देश इसलिए चिंतित हैं कि गहरे समुद्रों से खनिज पिंड निकालने के लिए वे आर्थिक, तकनीकी

भारतीय अनुसंधान पोत—गवेषणी.
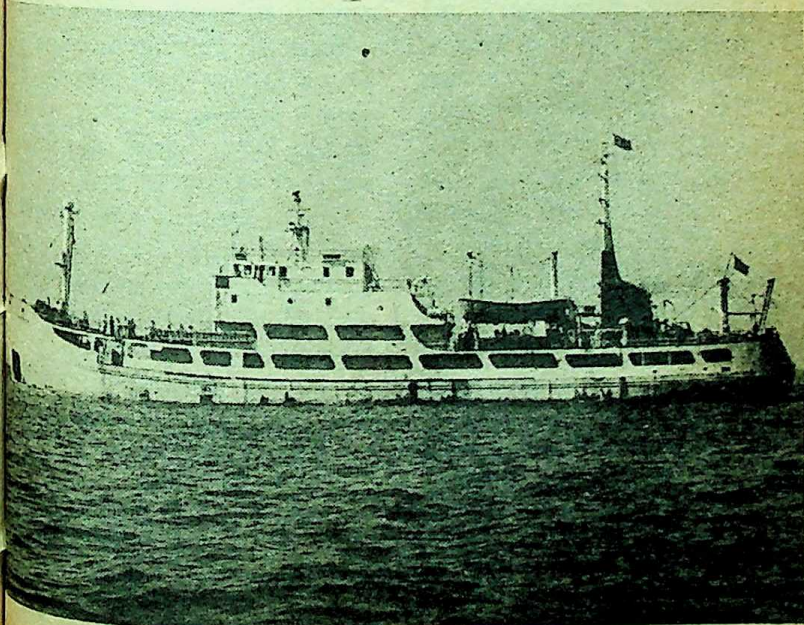
अरब सागर से प्राप्त खनिज पिंडों के नमूने

और वैज्ञानिक रूप से अक्षम हैं. तट से 400 किलोमीटर दूरी के बाद समुद्र में सभी देश शांतिपूर्ण कार्य करने के लिए स्वतंत्र हैं. गहरे समुद्रों में छिपी खनिज संपदा पर किस देश का कितना अधिकार है और कौन सा देश किस क्षेत्र में संपदा के दोहन के लिए स्वतंत्र है, इस का फैसला करने के लिए पिछले एक दशक से 'एक सर्वमान्य समुद्री कानून बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है. तत्संबंधी सम्मेलन में दुनिया के सभी 153 देशों के प्रतिनिधि हैं.

समुद्र के 400 किलोमीटर क्षेत्र पर तटवर्ती देश का प्रभुत्व मानने के लिए सभी देश सहमत हैं. पर गहरे समुद्रों के क्षेत्र के उपयोग और बंटवारे को ले कर अभी तक कोई फैसला नहीं हो पाया है. वैसे संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वाधान में एक 'अंतरराष्ट्रीय समुद्रतल उपयोग प्राधिकरण की स्थापना के लिए सभी देश राजी हैं. यह प्राधिकरण गहरे समुद्र में खुदाई की निगरानी करने और नियंत्रण रखने का काम करेगा.

हिंद महासागर से खनिज पिंडों की योजनाबद्ध प्राप्ति के लिए भारत में 'समुद्र विज्ञान व समुद्र प्रबंध आयोग' बनाने का प्रस्ताव है. दीर्घकाल में भारतीय अर्थव्यवस्था के विकास और हमारी वैज्ञानिक व तकनीकी प्रगति के लिए यह नितांत आवश्यक भी है. भारत ने इस संबंध में 19,000 टन भारी अनुसंधान जहाज 'गवेषणी' की सहायता से एक अच्छी शुरुआत कर दी है.

अंतरराष्ट्रीय समुद्र उत्खनन प्राधिकरण भारत को उस समय सागरतल की खुदाई का कानूनी अधिकार दे देगा जिस समय हम समुद्र में डूबे खनिज पिंडों को निकालने के प्रयत्न व अनुसंधान आदि पर 27 करोड़ रुपया खर्च कर देंगे और एक लाख 50 हजार वर्ग किलोमीटर क्षेत्र के दो उत्खनन क्षेत्रों की निशानदेही कर लेंगे. इस काम को पूरा करने के लिए इस वर्ष अभी तक 'गवेषणी' तीन सर्वेक्षण अभियान पूरे कर चुका है.

आशा है भारत 1995 तक समुद्र की तली से खनिज पिंडों को व्यावसायिक स्तर पर निकालने का काम आरंभ कर देगा. •

ठेकेदारी चुनाव जलूस की

बलेंदरसिंह देश की गरीबी से बहुत दुखी थे और यह चिंता हर वक्त उन्हें परेशान करती. पर चुनावों के दौरान ठेकेदारी का जो नुस्खा उन के हाथों लगा उस ने उन के सारे विचारों को बदल दिया.
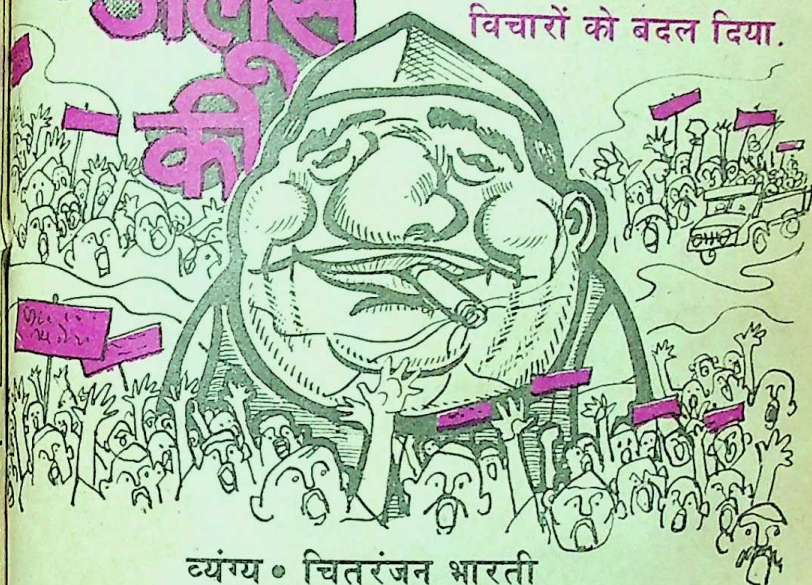
व्यंग्य • चितरंजन भारती

स वार के विधान सभा चुनाव में बाबू बलेंदरसिंह फिर निर्दलीय उम्मीदवार प में खड़े हुए थे. इस से पहले भी वह तीन निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में खड़े हो थे, मगर चुनाव जीतने की तो बात ा, जमानत तक जब्त करवा चुके थे. इस से क्या, उन्हें प्रचार तो मिलता ही ब तो 'बाबू साहब' के साथ 'नेताजी' बोधन भी जुड़ गया था.

बाबू साहब को किसी चीज की कमी न बसें, 18 ट्रक, सात टैक्सियां, एक जीप ट्रैक्टरों के अलावा ढाई सौ बीघा थी. शहर के मकानों से भी दो हजार मासिक किराया आता था. ठेकेदारी भी थी. सरकारी टेंडर भी लेते थे. समाज इज्जत थी और रोबदाब था. बड़ेबड़े प्रशासनिक अधिकारियों से ले कर केंद्र में बैठे राजनीतिबाजों तक पहुंच थी.

फिर भी वह देश की गरीबी से बहुत दुखी थे. अकसर आलोचना किया करते थे कि देश में गरीबी बढ़ गई है, महंगाई बढ़ गई है, बेकारी बढ़ गई है, भ्रष्टाचार बढ़ गया है. और इन सब का तभी उपाय किया जा सकता है जब वह किसी तरह विधान सभा में पहुंच जाएं.

वैसे कुछ सिरफिरे उन की बातों का मजाक भी उड़ाते थे. उन का कहना था कि सब कुछ पा कर अब यही तो शेष रह गया है. अभी तो यह हाल है कि कोई भी मौका मिलते ही लूटखसोट से नहीं चूकते, विधायक बनने पर तो न जाने क्या करेंगे.

मतदान का दिन नजदीक आता जा रहा

था. चुनाव प्रचार जोरशोर से हो रहा था. बलेंदरसिह एक[illegible] करने में माहिर थे. उन्होंने अपने सभी वाहनों में अपना बैनर और झंडा लगवा रखा था. इस के अलावा उन में टेपरिकार्डर और लाउड स्पीकर भी लगे हुए थे, जो दिनरात उन का यशोगान करते रहते थे. इस तरह उन के वाहन किराया भी कमाते और प्रचार भी करते थे.

बाबू बलेंदरसिह का दिमाग बड़ी दूर तक जाता था. उन्होंने विचार किया कि क्यों न एक दिन अपने सभी वाहनों एवं ठेकेदारी के मजदूरों के साथ जलूस निकाला जाए. मजदूरों को केवल खानापानी देना होगा, ताकि जोरों से नारेबाजी कर जनता को आकर्षित कर सकें. जनता जनार्दन इतने लोगों को देख कर काफी प्रभावित होगी और उन्हें ही अपना मत देगी.

बस, फिर क्या था. निश्चित दिन सवेरे ही सभी वाहनों को किराया कमाने नहीं भेजा गया. समीप के कारखाने के दो हजार मजदूरों एवं बेकारों को भी खूब दालभात खिला कर वाहनों में भेड़बकरियों की तरह ठूस दिया गया. वाहनों पर लाउड स्पीकर भी फिट कर दिए गए.

फिल्मी एवं लोक गीतों पर आधारित राजनीतिक गीत बनानेगाने वालों के अलावा ढोलक आदि का भी प्रबंध था. इतना बड़ा काफिला शस्त्रधारियों के बिना चले, बात कुछ बन नहीं रही थी, सो बल्लमभाला के अलावा राइफलें एवं बंदूकों से सुसज्जित बहादुरों के एक दल का भी प्रबंध किया गया था.

बड़ी आनबान और शान के साथ जलूस चला, मानो कोई सेना युद्ध फतह करने जा रही हो. सड़कों पर धूल उड़ने लगी. नारों से आसमान गूंज उठा. प्रतिद्वंद्वियों को अपनी जमानतें जब्त होती दिखाई दीं.

इतना बड़ा जलूस जिले में शायद पहली बार निकला था. सभी सड़कों पर निकल आए और मंत्रमुग्ध दृष्टि से जलूस देखते रहे. सब के मन में यह धारणा बैठ गई कि इस बार बाबू साहब अवश्य मैदान मार लेंगे. इतना समर्थन, इतना विश्वास, जनता को विश्वास नहीं हो रहा था. मगर हाथ कंगन को आरसी क्या? शाम तक बाबू बलेंदरसिंह का डंका पूरे क्षेत्र में बज चुका था.

इस क्षेत्र में विभिन्न पार्टियों तथा निर्दलीय उम्मीदवारों सहित कुल 21 उम्मीदवार मैदान में थे. बाबू बलेंदरसिंह के चुनाव प्रचार को देख कर सब के पैरों तले से जमीन खिसकने लगी. चमचे और भेदिए भी उन की स्थिति मजबूत बताने लगे. एक प्रमुख राष्ट्रीय पार्टी के उम्मीदवार भोजूसिंह के जीतने की काफी संभावना थी. उन्होंने बलेंदरसिंह के पास समझौते के लिए आदमी भेजा, मगर वह इनकार कर गए.

भोजूसिंह ने तब अपनी पार्टी की आपात बैठक बुलाई. रणनीति पर विचारविमर्श किया गया. सब ने एक मत से अपना विचार व्यक्त किया कि उसी तरह का विशाल जलूस निकाल कर जनता के बलेंदरसिंह के प्रति झुकाव को मोड़ा जा सकता है.

मगर दिक्कत यह थी कि इतनी गाड़ियां केवल बलेंदरसिंह के पास ही थीं और वह अपनी गाड़ी भाड़े पर चुनावप्रचार के लिए क्यों देने लगे? फिर भी भोजूसिंह ने स्वयं बातचीत करने का निश्चय कर लिया.

बलेंदरसिंह अब केवल बाबू साहब नहीं रह गए थे. उन की बुद्धि का व्यवसायीकरण हो चुका था. वह हर चीज को एक घाघ व्यापारी की तरह तराजू पर तौल कर हानिलाभ का गणित लगाते थे और पैसे को प्रतिष्ठा से ज्यादा महत्त्व देते थे.

भोजूसिंह के प्रस्ताव पर उन्होंने खूब विचार किया. सोचा कि विधायक बन कर भी वह कौन सा मैदान मार लेंगे. अकेला चना कहीं भाड़ फोड़ता है. सो गाड़ी का ही क्यों न उन के चुनावप्रचार का ही ठेका क्यों न ले लें. कुछ नकदनारायण आ जाएगा. सो उन्होंने भोजूसिंह को अपने विचार से अवगत करा

. वह बोले कि गाड़ी तो क्या, वह आदमी, डस्पीकर से ले कर गीत बनानेगाने वाले ढोलक तक की व्यवस्था भी कर सकते इस में कुल 40 हजार रुपया खर्चा बैठेगा. पचास हजार लेंगे. भोजूसिंह ने मंजूरी दे

वह उन को कुछ राशि अग्रिम देने लगे, र बाबू बलेंदरसिंह ठहरे व्यापारी आदमी. साफ बात करना ज्यादा पसंद करते थे. वह ने कि आजकल के नेताओं का कोई भरोसा . सुबह में कुछ रहते हैं, शाम में कुछ हो ते हैं. इसलिए पूरा पैसा दो, तभी काम . अंत में उन्हें पूरा पैसा दे दिया गया. रे दिन सब ने एक और विशाल जलूस ा.

बलेंदरसिंह ने सारा रुपया बचा लिया . उन का खर्च ही क्या हुआ था. केवल सब एक समय खाना खिलाने और चाय पिलाने अलावा पेट्रोल पर जो खर्च हुआ सो हुआ. हें लगा कि यह ठेकेदारी तो बहुत फायदे ी चीज है. इसी तरह दोचार जलूस और लने की ठेकेदारी मिल जाए तो घर बैठे खों रुपया बन जाए. भाड़ में जाए विधान भा और विधायक पद. उन्होंने इस आशय पत्र सभी उम्मीदवारों को भिजवा दिया अगर वे अपना विशाल जलूस कलवाना चाहें, तो वह स्वयं सारी जिम्मेवारी ले कर शानदार, आकर्षक जलूस निकाल सकते हैं. इतनाइतना खर्च बैठेगा.

उन्होंने जो स्वनिर्मित टेंडर भेजा था वह वाकई बड़े काम का निकला. दूसरे दिन ही एक उम्मीदवार ने पूरे पैसों सहित प्रस्ताव भेज दिया और एक बार फिर जनता जनार्दन ने एक और शानदार जलूस देखा.

अब तो सभी उम्मीदवारों में देखादेखी अपना जलूस निकलवाने की होड़ सी लग गई. सभी अपना जलूस निकलवाना निहायत जरूरी समझने लगे.

क्या शानदार, आकर्षक जलूस थे. वही गाड़ियां थीं, वही लोग थे, वही नारे थे, वही गाने थे, वही फिकरे थे, वही व्यंग्य थे. बस, अंतर होता तो यही कि उम्मीदवारों के नाम, बैनर और झंडे अलगअलग होते. संवाददाताओं की परेशानी थी कि वे क्या नई बात देखें, जो अखबारों में लिख भेजें. ऐसा लोकतंत्र न देखा था और न ही सुना था.

सभी उम्मीदवारों का एक जैसा और उन्हीं समर्थकों द्वारा जलूस निकला. अब सब को मतदान के बाद के चुनाव परिणाम की बेसब्री से प्रतीक्षा है. अगर किसी को बेसब्री नहीं है, तो वह हैं बलेंदरसिंह. उन का तो ढेर सारा पैसा ठेकेदारी के इस नए धंधे में ही बन चुका है. फिर चिंता किस बात की. •

युवा गतिविधियां

पिछले दिनों ललित कला अकादमी लखनऊ में 26 वर्षीय मूर्तिकार शिवबालक की मूर्तियों की प्रदर्शनी लगी. यह उस की मूर्तियों की पहली प्रदर्शनी थी. इसे अकादमी के सहयोग से लगाया गया था.

इस प्रदर्शनी में शिवबालक की 15 मूर्तियों को प्रदर्शित किया गया था. इन में से बुद्ध की आशीर्वाद मुद्रा, पुजारिन, निद्रामग्न युवती, शृंगार करती औरत आदि मूर्तियां उल्लेखनीय थीं.

एक प्रश्न के उत्तर में मूर्तिकार शिवबालक ने बताया कि उसे बचपन से ही चित्रकला का शौक था. उस ने 1978-79 में आर्ट्स कालेज में दाखिला लिया. उस के गुरु अवतारसिंह पवार, मुहम्मद हनीफ, वीरसिंह परमार हैं. उस ने प्रारंभिक शिक्षा त्रिपन सिंह से प्राप्त की है.

शिवबालक की मूर्तियों में भावों की अनूठी अभिव्यक्ति है. प्लास्टर आफ पेरिस से बनाई गई मूर्तियों के विषय मनुष्य की दैनिक समस्याओं से जुड़े हुए हैं. शृंगार करती स्त्री की मूर्ति अपने प्रिय की प्रतीक्षा करती लगती है तो भूख मिटाने के लिए एक औरत की मूर्ति परिश्रम करते हुए है.

उस ने अपनी मूर्तियों में सामाजिक समस्याओं को उठाने की बात बताते हुए कहा, "मैं ने 'परिश्रम' शीर्षक की मूर्ति के माध्यम से बताया है कि झाड़ू लगाना बुरा काम नहीं है. मैं ने 'भूख' मूर्ति में स्त्री को विवश हो कर गलत काम करते दिखाया है और 'रुदन' मूर्ति में दिखाया है कि किस प्रकार एक स्त्री समस्त सुविधाओं के होते हुए भी दुखी है."

उस ने बताया कि उस के लिए मूर्ति की

शिवबालक द्वारा बनाई गई बुद्ध की प्रतिमा.

भाविकता, भावाभिव्यक्ति ही प्रमुख होती है अतः उसे समय का ध्यान नहीं रहता. रिश्रम' को बनाने में उसे तीन माह लगे.

जब उस ने यह बताया कि उसे अनेक भागों व संस्थाओं से सहयोग मिलता रहता है तो लेखक ने उस से पूछा कि वह अपनी र्तियों की बिक्री के लिए दिल्ली इंपोरियम से संपर्क क्यों नहीं करते हैं. इस पर उस ने कहा, 'अगर मूर्ति का मूल्य तीन सौ रुपए है तो पोरियम में बनने के कारण वह तीन सौ रुपए दर्जन बिकने लगेगी और मैं अपनी कला का अवमूल्यन नहीं होने दूंगा.''

एक प्रश्न के उत्तर में उस ने बताया, हां, यह तय है कि मुझे अजंता के चित्रों से प्रेरणा मिली है, परंतु मैं नहीं चाहता कि मेरे चित्रों में अजंता की मूर्तियों का प्रभाव झलके. मैं अपनी अलग पहचान बनाए रखना चाहता हूं. साथ ही मैं यह भी मानता हूं कि समय के साथ कला को भी बदलते रहना चाहिए.''

जब उस से उस की 15 मूर्तियों में से 10 के स्त्रियों से संबंधित होने का कारण पूछा तो उस ने कहा, ''भावनाओं के संप्रेषण में सब से अधिक सक्षम स्त्री ही होती है. इसलिए मैं ने मूर्तियों की पात्र स्त्री ही रखी है.''

अपनी कलाकृति 'रुदन' को अंतिम रूप देते हुए शिवबालक.

—अर्जुन कांडपाल
वि.वि.प्र.

कई मैचों में सर्वोत्तम खिलाड़ी का सम्मान प्राप्त करने वाली भूपिंदर कौर.

उत्तर प्रदेश वालीबाल टीम की कप्तान, कानपुर निवासी 16 वर्षीया भूपिंदर कौर अब तक कई मंडलीय, राज्यस्तरीय व राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले चुकी हैं. राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के अलावा अब तक खेले गए सभी मैचों में उस ने सर्वोत्तम खिलाड़ी का सम्मान प्राप्त किया है. मंडलीय प्रतियोगिता इलाहाबाद (1979), राज्य स्तरीय प्रतियोगिताओं नैनीताल (1979), लखनऊ (1980), पीलीभीत (1982) आगरा (1982) में उस की टीम विजेता रही है.

ग्वालियर के रूपसिंह स्टेडियम में 19वीं महिला हाकी प्रतियोगिता संपन्न हुई जिस में विभिन्न प्रदेशों की 12 टीमों ने भाग लिया. फाइनल में बंबई ने पंजाब को 2-0 से हरा कर चैंपियनशिप जीती. चित्र में मध्यप्रदेश स्वायत्त शासन मंत्री कन्हैयालाल शर्मा से पुरस्कार प्राप्त करते विजेता टीम.

गोरखपुर में हुई नेशनल सीनियर ओपन प्रतियोगिता को भूपिंदर अपनी सर्वश्रेष्ठ प्रतियोगिता मानती है.

भूपिंदर को अब तक तीन स्वर्ण पदक, दो रजत पदक व दो कप मिल चुके हैं. बालीबाल के अतिरिक्त बैडमिंटन, कबड्डी व थ्रोज में भी वह कानपुर चैंपियन है.

1976 में उस ने से खेलना शुरू किया, किंतु खेल में निखार आया 1981 में, एम.जी. कालिज में. भूपिंदर ने हाईस्कूल में प्रथम श्रेणी प्राप्त की थी. इस समय वह एम.जी. इंटर कालिज में 12वीं कक्षा की छात्रा है.

भूपिंदर को शिकायत है कि बालीबाल का अच्छा प्रशिक्षण नहीं मिलता. कानपुर का प्रदर्शन उत्तर प्रदेश के सभी जिलों से बेहतर है, किंतु यहां छात्रावास नहीं है.

भूपिंदर भविष्य में खेल प्रशिक्षक बन कर अपनी टीम तैयार करना चाहती हैं.

—कमलेश राठौर

वि.वि.प्र.

प्रतियोगिताएं

क्षेत्रीय अभियांत्रिक महाविद्यालय वारंगल, आंध्रप्रदेश का तीन दिवसीय वार्षिकोत्सव संपन्न हुआ. जिस में हमेशा की तरह इस वर्ष भी तीन दिनों में पहला दिन 'क्रीड़ा दिवस', दूसरे दिन 'छात्रावास दिवस' व तीसरा दिन 'महाविद्यालय दिवस' के रूप में मनाया गया.

क्रीड़ा दिवस पर विभिन्न प्रकार की खेलकूद की प्रतियोगिताएं हुईं तथा रात्रि में विद्यालय की संगीत परिषद द्वारा का... रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया.

दूसरे दिन 'छात्रावास दिवस' पर महाविद्यालय के छात्रों द्वारा मेला आयोजित किया गया तथा रात्रि में महाविद्यालय की नाट्य परिषद द्वारा हिंदी प्रहसन 'बदलते रुख' एवं तेलगू हास्य नाटक 'रिहर्सल' के साथ अन्य नाटकों का भी मंचन किया गया.

हिंदी प्रहसन 'बदलते रुख' में ...

अभियांत्रि... कार्यक्रम ...

...चक ढंग से ...ले कल में ...ल को स... ...या. रविशं... ...फी सराहन... ...निका भाति...

...रोहतांग ... शिक्षक व ...

अभियांत्रिक महाविद्यालय के वार्षिकोत्सव पर छात्रों द्वारा प्रस्तुत किया गया संगीत कार्यक्रम का एक दृश्य.

...चक ढंग से की गई थी. इस प्रहसन में विनय ...ले कल में पतियों की स्थिति की कल्पना ...ल को सर्वश्रेष्ठ अभिनेता घोषित किया ...या. रविशंकर मिश्र के अभिनय की भी ...फी सराहना की गई. सरला भास्करन व ...निका भाटिया का अभिनय भी प्रशंसनीय रहा.

दक्षिण भारतीय विद्यालय में हिंदी कार्यक्रमों की इतनी सफलता, दक्षिण में हिंदी की बढ़ती लोकप्रियता का द्योतक है.

—शशिप्रकाश गुप्त
वि.वि.प्र.

रोहतांग दर्रे पर पर्वतारोहण करते शिक्षक व छात्र.

पर्वतारोहण

पिछले दिनों महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय की तरफ से एक पर्वतारोहण कैंप का आयोजन किया गया. जिस के अंतर्गत रोहतांग दर्रे पर पर्वतारोहण करना था. दल में एक शिक्षक तथा चौदह छात्र थे. छात्रों का नेतृत्व तरुण तारिखा तथा प्राध्यापक घोष राय कर रहे थे. दल ने कुल दस दिन का दौरा किया. 31 मई को रोहतक से प्रस्थान के बाद 3 जून को रोहतांग दर्रे, 4 जून को भीगू झील तथा 5 जून को व्यास कुंड की चढ़ाई कर के यह दल 9 जून को वापस आ गया.

—संदीप सिंह
वि.वि.प्र.
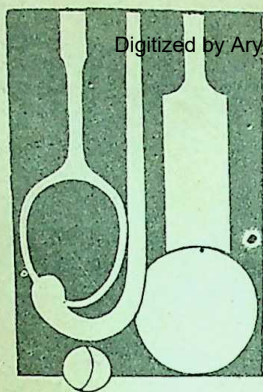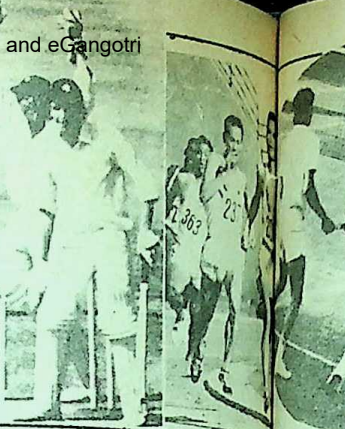
करीब पांच सौ करोड़ रुपए खर्च कर के दिल्ली में जो नवें एशियाई खेल आयोजित किए जा रहे हैं, उन की उपयोगिता व अनुपयोगिता को ले कर आज भी विवाद जारी हैं. लेकिन इस दौरान जो निर्माण कार्य हुए हैं व सुविधाएं जुटाई गई हैं, वे दिल्ली महानगर के लिए बेहद फायदेमंद

साबित होने वाली हैं. अगर एशियाई [illegible] सिर पर न होते तो शायद ये सुविधाएं [illegible] 20 सालों में भी उपलब्ध नहीं हो पातीं.

इंद्रप्रस्थ बिजलीघर की पांचों इका[illegible] को वायु प्रदूषण से मुक्त रखने के लिए [illegible] बड़ा संयंत्र लगाया गया है. चार लाख [illegible] ज्यादा पेड़ लगाए जा चुके हैं. पुराने [illegible]

...मारकों की ...अनधिकृ... ...न्मूलन के ... ...या यत्र इस ... सात ... ...रोकटोक ... ...लों) के

एशियाई खेलों से फा
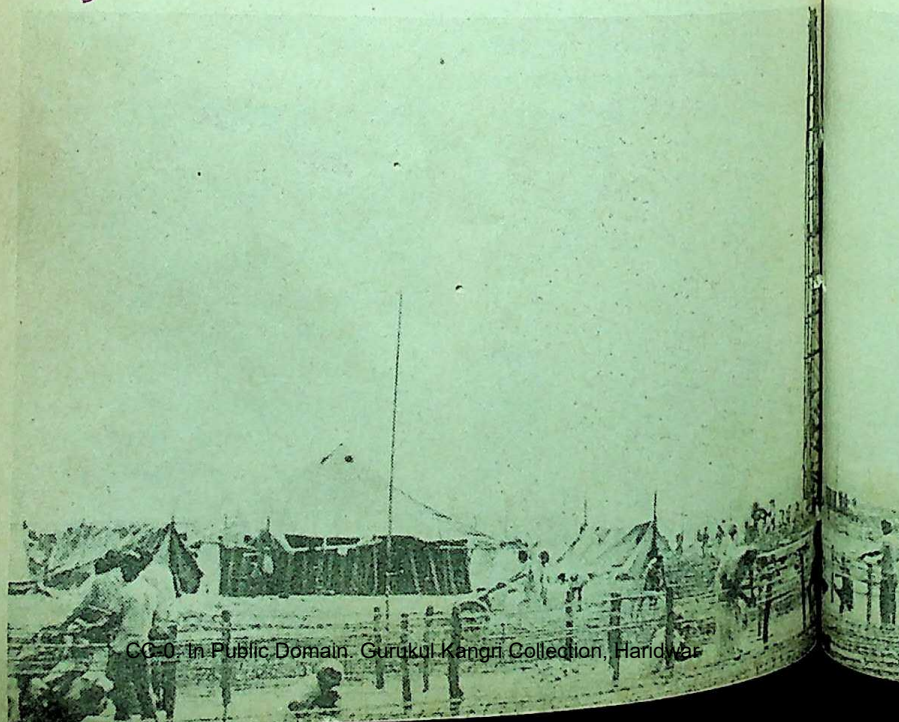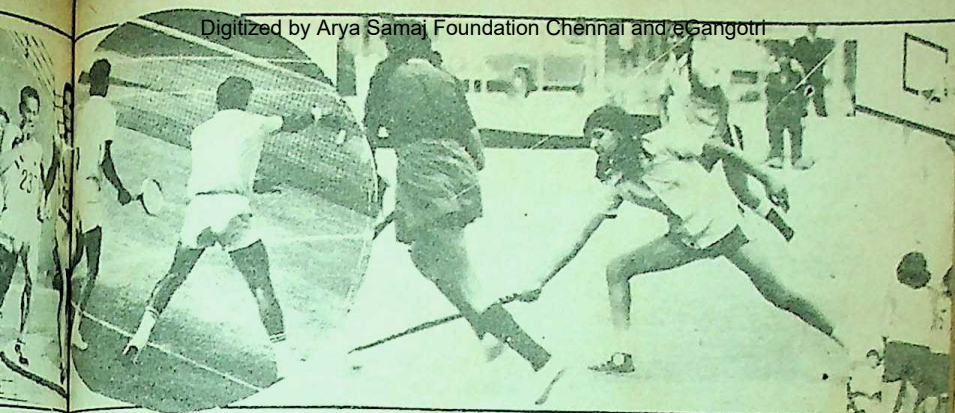
ए़शियाई [illegible] स्मारकों की फिर से खैरखबर ली जाने लगी सुविधाएं [illegible] अनधिकृत कब्जे हटाए जा रहे हैं. मलेरिया हीं हो पातीं [illegible] उन्मूलन के लिए विशेष रूप से आयात किया पांचों इका[illegible] गया यंत्र इस्तेमाल किया जाएगा.

ने के लिए [illegible] सात फ्लाई ओवरों (चौराहों को चार लाख [illegible] गोलचक्कर पार करने के लिए बनाए गए पुराने उपे[illegible] पुलों) के निर्माण के अलावा 1,290 किलोमीटर लंबी सड़कों को चौड़ा किया गया है, 50 चौराहों पर रोशनी की अतिरिक्त व्यवस्था की गई है और रेलों व बसों के बीच संपर्क कायम करने के लिए 19 क्षेत्रों का विकास किया गया है.

दिल्ली परिवहन निगम ने 290 नई बसें खरीदने के अलावा कई नए सेवा डिपो बनाए हैं.

से फायदे

विजयकुमार मलहोत्रा : सरकारी नीति का विरोध.
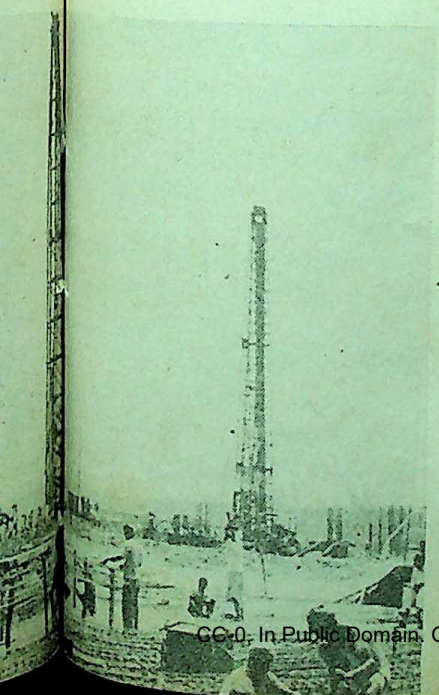
एशियाई खेल शुरू होने से पहले ही गंगा को यमुना से जोड़ दिया जाएगा, जिस से दिल्ली में रोजाना डेढ़ करोड़ गैलन अतिरिक्त पानी उपलब्ध हो सकेगा. इस के लिए दो नए जलाशय बनाए गए हैं.

रंगीन टेलीविजन की व्यवस्था हो गई है. 12 हजार लाइनों, 80 टेलेक्स केंद्र वाले 150 किलोमीटर केबल लगाए गए हैं. खेल गांव में पहली बार स्थायी तौर पर इलेक्ट्रानिक चालित पी.बी.एक्स. लगाया गया है.

खिलाड़ियों के लिए क्या हुआ है

एशियाई खेलों की विशेष संयोजन समिति के भूतपूर्व अध्यक्ष विजयकुमार मलहोत्रा ने आरोप लगाया है कि आयोजन व्यवस्था के नाम पर अंधाधुंध पैसा खर्च करने वाली सरकार खिलाड़ियों को सुविधाएं देने व उन्हें प्रशिक्षण दिलाने में बहुत कम पैसा खर्च कर रही है.

उन के इस आरोप में सचमुच सचाई है. एशियाई खेलों के लिए प्रशिक्षण पाने वाले खिलाड़ियों को दो रुपए का दैनिक भत्ता दिया जा रहा है. इतनी दर पर तो घरेलू नौकर भी नहीं मिल पाते. प्रशिक्षण शिविर के खिलाड़ियों को दूसरे दरजे के डब्बे में धक्के खाते हुए जाना पड़ता है. उन्हें सीट के आरक्षण तक की सुविधा नहीं मिल पाती. जो खिलाड़ी नौकरी करते हैं, उन्हें प्रशिक्षण शिविर में जाने के लिए दो महीने की छुट्टी मिलती है. इस से ज्यादा समय शिविर में रहने का मतलब है अपना वेतन गंवाना.

दूसरी तरफ संयोजन समिति के सदस्य हवाई जहाज से यात्रा करते हैं, वेतन से ज्यादा भत्ते लेते हैं. लगता है पदक जीतने में दिलचस्पी किसी की भी नहीं है. बस, खेल आयोजित करना ही प्रतिष्ठा का सवाल बन गया है.

पेशेवर खिलाड़ी की परेशानी

लान टेनिस में अब इतना पैसा मिलने लगा है कि कोई भी अच्छा खिलाड़ी पैसा कमाने के मोह से नहीं बच पाता. विश्व टेनिस में पेशेवर व गैरपेशेवर का अंतर भले ही खत्म हो गया हो, लेकिन कम्यूनिस्ट देशों में अभी भी खिलाड़ी को पेशेवर बनने की छूट नहीं है.

इसी लिए कई नामी खिलाड़ी किसी दूसरे देश में शरण लेने की कोशिश करते हैं, जहां उन्हें खेल से मनमाना पैसा कमा सकने की स्वतंत्रता मिल सके.

1975 में चेकोस्लोवाकिया की टेनिस खिलाड़ी मार्टिना नावरातिलोवा ने अमरीका में शरण ली थी और अब चीन की सर्वश्रेष्ठ टेनिस खिलाड़ी टू ना ने अमरीका में शरण लेने की प्रार्थना की है.

19 वर्षीया टू ना ने पिछले साल मैक्सिको में एक प्रतियोगिता जीती थी, जिस की वजह से उसे चीन की सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का खिताब मिल गया था.

वह महिलाओं की फेडरेशन कप प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए सांता क्लारा (अमरीका) आई थी. एक दिन वह होटल से यकायक गायब हो गई और दो [illegible] बाद वकील की मारफत उस ने अमरीका में शरण लेने का प्रार्थनापत्र दाखिल करा दिया.

खेलों में पैसा क्यों नहीं

खेलों को प्रोत्साहन देने की तमाम सरकारी योजनाओं के बावजूद आज हालत यह है कि क्रिकेट, हाकी व फुटबाल को छोड़ कर बाकी किसी खेल के लिए भारत में पैसा ही नहीं है.

भारत में हर राष्ट्रीय खेल संघ को उस खेल के राज्य स्तर के संगठन कुछ योगदान देते हैं. भारत की शौकिया एथलेटिक संघ को 15 राज्यों के संगठनों से एक लाख रुपए से ज्यादा की रकम लेनी है. सब से ज्यादा पैसा [illegible] 18,132 रुपए—कर्नाटक के जिम्मे है, [illegible] कि सब से कम— 4,687 रुपए— दिल्ली के हिस्से में.

एक तो भारत में एथलेटिक के मुकाबले कम होते हैं और जितने होते भी हैं उन में इतने दर्शक नहीं आते कि राज्य संगठन आयो[illegible]

का खर्च निकाल कर राष्ट्रीय संस्था को भी बचा दे पाए.

राष्ट्रीय एथलेटिक संस्था भी इस पैसे का इस्तेमाल तरहतरह की बैठकें करने में करती है. खेल और खिलाड़ियों को तो उस का सीधा लाभ मिल ही नहीं पाता.

सरकार को सिर्फ मैडल चाहिए

बिड़ला व्यायामशाला के 81 वर्षीय गुरु हनुमान का कहना है कि सरकार को तो सिर्फ मैडल चाहिए. हाल ही में लास एंजेलेस में हुई विश्व कुश्ती प्रतियोगिता में उन के छ: पहलवान शिष्यों ने चार स्वर्ण पदक व पांच रजत पदक जीते.

एक भेंट में गुरु हनुमान ने बताया, "यह सारी सफलता मेरे शिष्यों ने अपने बल पर प्राप्त की. सरकार या फेडरेशन से उन्हें किसी तरह की कोई मदद नहीं मिली. प्रतियोगिता में शामिल होने के लिए हर पहलवान ने अपनी जेब से पांचपांच हजार रुपए दिए. टीम के साथ जो मैनेजर भेजा गया उसे पहलवानों के नाम तक याद नहीं रहते थे. अकसर मुकाबलों के समय वह स्टेडियम से गोल पाया जाता. हमारी सरकार सिर्फ मैडल चाहती है, लेकिन मदद के नाम पर वह अपनी कोई जिम्मेदारी नहीं समझती."

एशियाई खेलों में भारतीय पहलवानों की स्थिति पूछने पर उन्होंने कहा, "फेडरेशन के गलत रवैए के बावजूद हम पांच स्वर्ण पदक जीतेंगे, लेकिन ये सफलताएं हमारे पहलवान अपने बल पर ही पाएंगे. एशियाई खेलों में कुश्ती मुकाबलों में हमारी टीम का विजेता बनना तय है."

नवम राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी

नवम राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी प्रतियोगिता कानपुर शहर से 14 किलोमीटर दूर भारतीय तकनीकी संस्थान, कानपुर के तरणताल में इस वर्ष 23 जून से 28 जून तक आयोजित की गई.

यह पहला मौका था जब कानपुर में राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी प्रतियोगिता संपन्न हुई. इस से पूर्व 1968 में शहर के मध्य में स्थित तरणताल में 'राष्ट्रीय ओपेन तैराकी प्रतियोगिता' का आयोजन हुआ था.
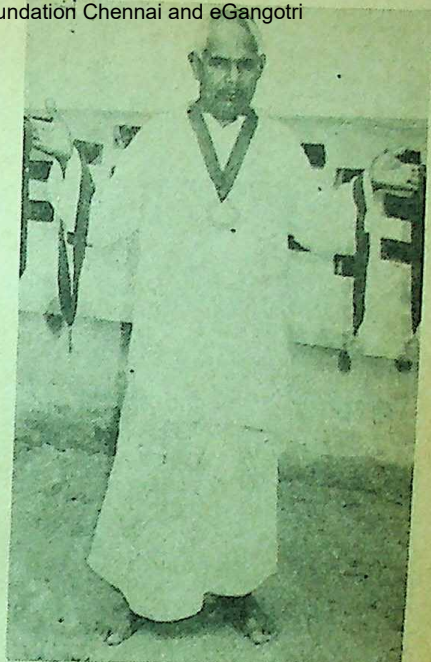
गुरु हनुमान : फेडरेशन के गलत रवैए के बावजूद हम पांच स्वर्ण पदक जीतेंगे.

यह जानकारी प्राप्त करने पर कि राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी प्रतियोगिता के आयोजन का दायित्व भारतीय तकनीकी संस्थान, कानपुर को कैसे प्राप्त हुआ, अनेक रोचक तथ्य सामने आए.

हुआ यह कि इस बार भारतीय तैराकी महासंघ के सामने यह समस्या थी कि राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी प्रतियोगिता का आयोजन कहां किया जाए, क्योंकि भारतीय तैराकी महासंघ की कोई भी इकाई इस प्रतियोगिता की मेजबानी के लिए तैयार न थी. भारतीय तैराकी महासंघ के इस ढुलमुल रवैए से प्रतियोगिता का आयोजन खटाई में पड़ा जा रहा था.

भारतीय तैराकी महासंघ की इस कशमकश की भनक जब उत्तर प्रदेश

तैराकी संघ से निलंबित पदाधिकारी कानपुर के श्री एन.के. पांडेय के कानों में पड़ी तो उन्होंने मौके का पूरा फायदा उठाया और कानपुर को प्रतियोगिता की मेजबानी का अवसर दिलाने के प्रयास शुरू किए. कानपुर की इस प्रतियोगिता की मेजबानी करने की संभावनाएं तब और बढ़ गईं जब लखनऊ में इस के आयोजन की कोई आशा नहीं रही.

गत वर्ष लखनऊ में 'राष्ट्रीय ओपेन तैराकी प्रतियोगिता' का आयोजन चंदा बटोर कर किया गया था और पैसा काफी खर्च होने के बावजूद व्यवस्था बहुत खराब थी. तैराक ही नहीं, स्वयं आयोजक भी परेशान रहे और
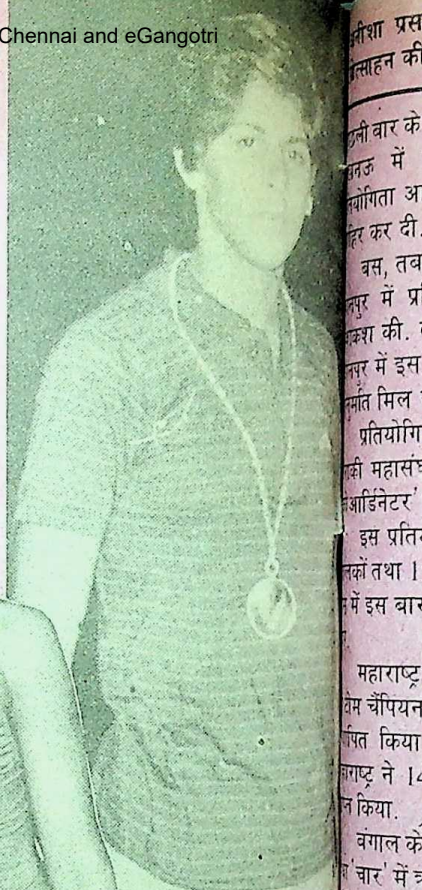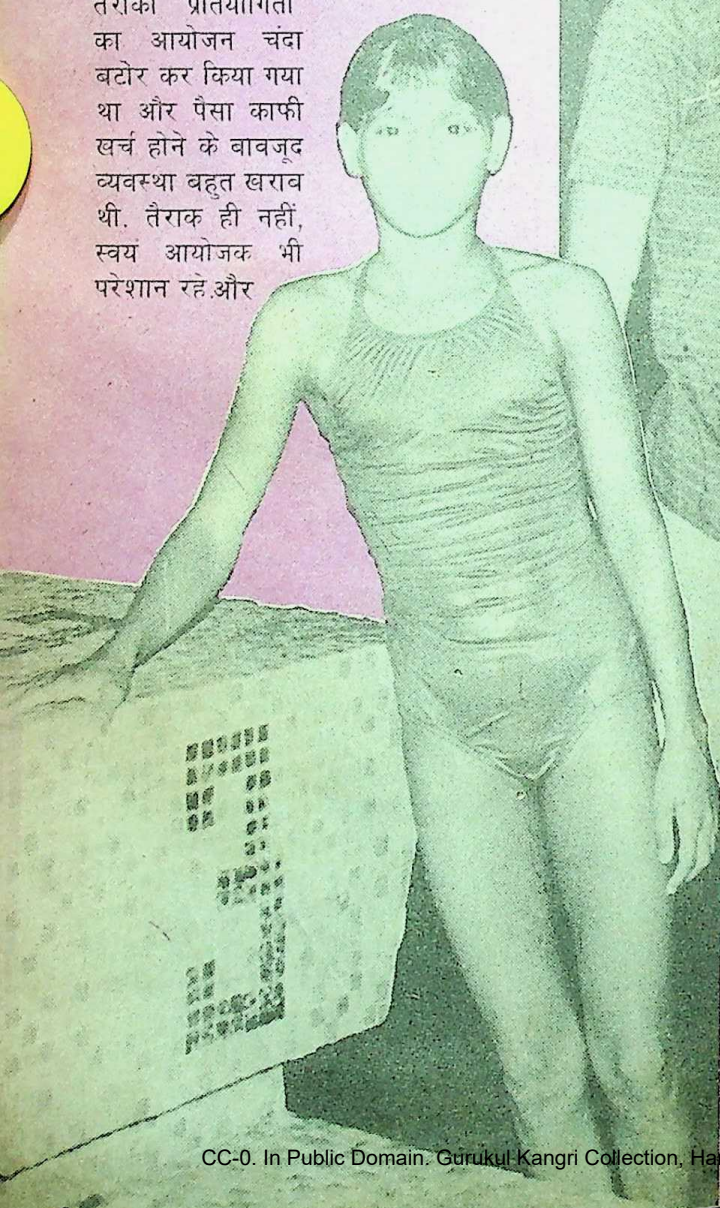
सोनल नानावती ... अपना वर्चस्व बना... रखा.

◄ बूला चौधरी ... प्रतियोगिता का मु... आकर्षण.

मनीशा प्रसाद : उभरते तैराकों को प्रोत्साहन की जरूरत है.

पिछली बार के पीड़ित आयोजकों ने इस बार लखनऊ में राष्ट्रीय आयु वर्ग तैराकी प्रतियोगिता आयोजित कराने में असमर्थता जाहिर कर दी.

बस, तब श्री पांडेय दिल्ली पहुंचे और जयपुर में प्रतियोगिता के आयोजन की कोशिश की. काफी अड़चनों के बाद उन्हें जयपुर में इस प्रतियोगिता के आयोजन की अनुमति मिल गई.

प्रतियोगिता की मेजबानी भारतीय तैराकी महासंघ ने की और श्री पांडेय को 'कोआर्डिनेटर' का एक नया पद दे दिया गया.

इस प्रतियोगिता में 14 टीमों के 300 बालकों तथा 150 बालिकाओं ने भाग लिया. इस में इस बार 25 नए कीर्तिमान स्थापित हुए.

महाराष्ट्र तथा बंगाल ने चारचार वर्ग टीम चैंपियनशिप जीत कर अपना वर्चस्व स्थापित किया. बालकों के वर्ग 'एक' में महाराष्ट्र ने 147 अंक पा कर प्रथम स्थान प्राप्त किया.

बंगाल के बालकों ने ही ग्रुप 'दो', 'तीन' तथा 'चार' में क्रमश: 104, 31 और 48 अंक अर्जित कर के प्रथम स्थान प्राप्त किया.

इसी प्रकार बालिकाओं के ग्रुप 'एक' तथा 'चार' में प्रथम स्थान के लिए महाराष्ट्र ने क्रमश: 143.93 तथा 64 अंक अर्जित किए. बंगाल, बालिकाओं के वर्ग तीन में 52 अंक प्राप्त कर के प्रथम स्थान पर रहा.

इस छः दिवसीय प्रतियोगिता में महाराष्ट्र ने कुल 593 अंक अर्जित कर के 'ओवर आल चैंपियनशिप' जीती जब कि बंगाल 480 अंक अर्जित कर के दूसरे स्थान पर रहा.

अच्छा प्रदर्शन करने वाले कुछ तैराक एशियाई खेलों हेतु चुन लिए गए हैं. इन में सब से कम उम्र की तैराक बंगाल की 13 वर्षीया बूला चौधरी है. बंगाल टीम की 'वंडर गर्ल' नाम से चर्चित, निम्न वर्गीय परिवार में जन्मी

जन्मी बूला चौधरी ने कानपुर में छः कीर्तिमान स्था[illegible] तैराकों की अच्छे तरणतालों व अन्य सुविधाओं की मांगों को निराधार साबित कर दिया.

बूला चौधरी पूरी प्रतियोगिता में मुख्य आकर्षण बनी रही. प्रतियोगिता की आयोजन समिति ने समापन दिवस पर बूला चौधरी को सर्वश्रेष्ठ तैराक भी घोषित किया.

अनीता सूद : एशियाई खेलों में हम से आशा करना बेकार है.

इसी प्रकार महाराष्ट्र की 14 वर्षीया सोनल नानावती ने सदैव की भांति कीर्तिमान स्थापित किया और अपना वर्चस्व बनाए रखा. छः वर्ष की आयु से तैरना प्रारंभ करने वाली कक्षा नौ की छात्रा सोनल का कहना है कि "एक अच्छे स्तर का तैराक बनने के लिए अच्छे प्रशिक्षक और मातपिता का सहयोग आवश्यक है." सोनल ने कानपुर के इस तरणताल की प्रशंसा की.

कुछ विशिष्ट तैराकों से हुए साक्षात्कार के दौरान बंगलौर की 16 वर्षीया अनीशा प्रसाद ने किशोरावस्था की ओर बढ़ती पीढ़ी को तैराकी हेतु प्रोत्साहित करने पर बल दिया.

उस ने बताया कि तैरने का शौक उसे बचपन से था. अपनी मां और प्रशिक्षक से उसे बहुत प्रोत्साहन मिला. वर्ष 1980 में उस ने पहली बार तैराकी प्रतियोगिता में भाग लिया. निरंतर तैराकी के अभ्यास में लगे रहने से अन्य खेलों के लिए उसे समय नहीं मिलता. वह एशियाई खेलों के लिए चुने जाने वाले तैराकों में से एक है.

महाराष्ट्र की अनुभवी युवा तैराक अनीता सूद ने बताया कि "नवंबर में होने वाले एशियाई खेलों में हम से आशा करना बेकार है, क्योंकि तैराकी के क्षेत्र में हम एशिया के ही अन्य देशों की अपेक्षा 10 वर्ष पीछे हैं."

उस ने शिकायत भरे लहजे में कहा कि "हम तैराकों के लिए किया ही क्या गया है जो हम से इतनी आशाएं की जाती हैं."

उस ने बताया कि "भारतीय तैराकों को प्रशिक्षित करने के लिए जरमन प्रशिक्षक श्री जाहुंके को बुलाया गया है और वह लगभग छह माह से प्रशिक्षण दे रहे हैं. इस से भी हमारे तैराकों को कोई खास फायदा नहीं हुआ है."

उस की राय में यदि यही प्रशिक्षण उभरते हुए तैराकों को दिया जाएं तो भविष्य में अवश्य फायदेमंद साबित होगा.

—अनिलकुमार द्विवेदी 'अंकुर'
वि. वि. प्र.

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3,
रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

बात उन दिनों की है जब मैं नवीं कक्षा में पढ़ता था. हमारे भूगोल के अध्यापक बातबात 'आप ने देखा होगा.' कहते थे.

एक बार वह सूर्य के बारे में पढ़ा रहे थे, "सूर्य आग का एक गोला है."

तभी पीछे से आवाज आई, "आप ने देखा होगा."

इतना कहना था कि कक्षा में हंसी गूंज उठी.

—हरभजनसिंह आबार

*

हमारे भूगोल के अध्यापक नएनए आए थे. वह बहुत धीमे बोलते थे. तीनचार दिनों तक की कोई बात हम लोगों के पल्ले नहीं पड़ी. सभी लोग परेशान थे.

अगले दिन जैसे ही वह कक्षा में घुसे, एक छात्र ने पीछे से कहा, "यह आकाशवाणी है, आप प्राध्यापक महोदय से धीमी गति से भूगोल समाचार सुनिए."

सभी लोग हंस पड़े और प्राध्यापक के चेहरे का रंग उतर गया. उस के बाद उन्होंने तेज वाज में बोलना शुरू कर दिया.

—सुनीताकुमार

*

हमारे एक अध्यापक लड़कों को हर गलती पर डांटते हुए कहते थे, "क्या आलसीराम ?"

एक बार एक छात्रा ने काम पूरा नहीं किया. ज्यों ही शिक्षक ने उस की कापी देखी तो उन मुंह से निकला, "क्या आलसीराम हो?"

तभी पीछे से एक लड़के ने कहा, "नहीं, यह आलसी सीता है."

—अजय मूंदड़ा

*

हमारी हिंदी की अध्यापिका गुरु महिमा के बारे में कबीरदास के दोहे का अर्थ समझा रही कि सारी धरती को कागज, सातों समुद्रों को स्याही और सभी वनों की लकड़ियों की लेखनी कर भी अगर गुरु महिमा लिखी जाए तो भी नहीं लिखी जा सकती.

इस पर एक शरारती लड़के ने कहा, "इन सारी चीजों को ले कर कहां बैठा जा सकता ?"

अध्यापिका ने झुंझला कर कहा, "तुम्हारे सिर पर."

लड़के ने तुरंत पूछा, "फिर मैं कहां बैठूंगा."

इस पर सभी लोग हंसने लगे और अध्यापिका सब का मुंह देखने लगी.

—राजेश मुदलियार

*

हमारे अंगरेजी के अध्यापक बहुत हंसमुख थे. वह पढ़ाने में बीचबीच में चुटकुले भी

सुनाया करते थे.

एक दिन प्रोफेसर के एक चुटकुले पर हम लड़कियां जोर से हंस पड़ीं.

लड़कों ने हमारी ओर घूर कर देखा और उन में से एक बोला, "इतनी जोर से हंसने की बात क्या थी?"

मैं ने कहा, "अरे, हंसेगा वही, अंगरेजी जिस की समझ में आएगी. जिसे नहीं आएगी वह कैसे हंसेगा?"

इस पर उन लड़कों ने अपनी झेंप मिटाने के लिए आगे अध्यापक को ध्यान से सुनना शुरू कर दिया.

—सरिता अग्रवाल

*

हम लोग गणित पढ़ रहे थे. अध्यापक ने घर पर करने के लिए कुछ सवाल दिए थे. दसपंदरह लड़कों के अलावा सभी ने काम नहीं किया था.

एक लड़का जिस ने काम नहीं किया था, बाहर की ओर देख रहा था.

अध्यापक ने उस से पूछा, "तुम ने घर का काम क्यों नहीं किया?"

लड़का बोला, "श्रीमान, घर का काम हमारा नौकर करता है, हम नहीं करते."

कक्षा में जोर का ठहाका लगा, लेकिन जब उस लड़के की समझ में बात आई तो वह बहुत शर्मिंदा हो गया.

--विशेश्वर राय

*

कालिज छात्रसंघ के चुनाव हो रहे थे. अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ने वाले युवक ने लड़कियों के वोट प्राप्त करने के लिए एक लोकप्रिय लड़की की सहायता ली और चुनाव में भारी बहुमत से जीत गया.

चुनाव जीतने के बाद वह उस लड़की से संबंध बढ़ाने लगा. उस ने कुछ लड़कों से यह भी कहना शुरू कर दिया कि वह लड़की उसे प्यार करती है.

उस लड़की ने भी भांप लिया कि दाल में कुछ काला है. उस ने उसे सबक सिखाने का फैसला किया. उस ने उस से कीमती उपन्यास व पत्रपत्रिकाओं की मांग शुरू की, जिसे वह बेझिझक पूरी करने लगा.

एक दिन उस लड़की ने 15-20 लड़कियों के सामने उन से साइंस की कापी लाने को कहा और पैसे देने लगी.

वह बोला, "भला अपनों से पैसा लिया जाता है." फिर वह अपना स्कूटर ले कर कापी लेने चला गया.

जैसे ही उस ने कापी ला कर लड़की को सौंपी, वह बोली, "वाह, भाई, वाह, भैया हो तो ऐसा जो अपनी बहन का इतना खयाल रखता है."

यह सुनते ही वह अपना सा मुंह ले कर रह गया और फिर उस लड़की से कटने लगा.

—हरीशकुमार साहनी

*

कालिज के दिनों में मैं राष्ट्रीय सेवा योजना के श्रमदान में शामिल था. लड़कियों का एक दल भी इस कार्य में था. लड़कियां काम करतेकरते लड़कों का मजाक उड़ा रही थीं. उन में एक लड़की जो बहुत सुंदर थी, कुछ ज्यादा ही बोल रही थी.

लड़कियां एक गड्ढा खोद रही थीं और वह सुंदर लड़की बड़ी नजाकत से मिट्टी हटा रही थी. अचानक वह चिल्ला पड़ी, "सांपसांप."

यह सुनते ही हमारे परियोजना अधिकारी सहित बहुत से अधिकारी उधर दौड़े. उन्होंने गड्ढे में झांक कर देखा तो वे हंस पड़े. उन के साथ सभी छात्र हंसने लगे. असल में लड़की जिसे सांप समझ रही थी, वह केंचुआ था. इस पर लड़की बहुत झेंपी.

—दिनेश सोलंकी

क्या आप का सही मानसिक विकास करती हैं?

क्या आप का सही मनोरंजन करती हैं?

क्या आप को सही राह दिखाती हैं?

नहीं...

वे सिर्फ क्षणिक रोमांच देती हैं...

गलत दुनिया में भटकाती हैं...

चरित्रहीनता की ओर ले जाती हैं...

सुरुचिपूर्ण, स्वस्थ मनोरंजन के लिए प्रेरक और उद्देश्यपूर्ण साहित्य पढ़ें.

दिल्ली प्रेस की पत्रिकाएं
ज्योति नए युग की घरघर जगाएं.

रजि. नं. 6502/60 डी (सी)-104

सितंबर (प्रथम) 1982

यासर अराफात इजराइली घेरे में

रु. 3.00

सदा सबके लिए सेवनीय

स्फूर्ति

यौवन

विकास

कफ खांसी नाशक

दिमागी ताजगी

बलवर्द्धक

आदर्श आयुर्वेदिक पारिवारिक टानिक

बैद्यनाथ च्यवनप्राश क्यों ?

क्योंकि यह ५० से ज्यादा जड़ी-बूटियों के तत्वों से बना ऐसे प्राकृतिक विटामिनों से भरपूर है जो मानव शरीर के लिए आसानी से पाचन योग्य है। रासायनिक प्रक्रिया से बनाये गये दूसरे टानिकों में यह गुण नहीं होता। इसके अलावा, बैद्यनाथ च्यवनप्राश आपके लिए और आपके परिवार के लिए अति आवश्यक स्वास्थ्यवर्धक टानिक है क्योंकि यह है :

- विटामिन 'सि' से भरपूर
- कफ खांसी, जुकाम नाशक
- केल्शियम एवं खून की कमी के लिये
- ताजगी और तन्दुरुस्ती के लिये
- यौवन के लिये
- आयु व बलवर्द्धक
- त्रिदोष नाशक

BAB/2-81/HIN

बैद्यनाथ ७०० से अधिक दवाएं पांच आधुनिक कारखानों में तैयार करता है

श्री बैद्यनाथ आयुर्वेद भवन लिमिटेड

कलकत्ता • पटना • झाँसी • नागपुर • इलाहाबाद

मुक्ता

कला · क्रांति · कर्मण्यता

संपादक व प्रकाशक
विश्वनाथ

सितंबर (प्रथम) 1982
अंक : 386

सजग, सफल, सरस जीवन की पत्रिका

लेख

कथा साहित्य

कविताएं

स्तंभ

संपादन व प्रकाशन कार्यालय : ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-55. दिल्ली प्रेस पत्र प्रकाशन प्रा.लि. के लिए विश्वनाथ द्वारा दिल्ली प्रेस, नई दिल्ली व दिल्ली प्रेस प.प्रा.लि. गाजियाबाद में मुद्रित.

मूल्य : एक प्रति 3.00 रुपए, एक वर्ष 72.00 रुपए, विदेश में (समुद्री डाक से) एक वर्ष 150.00 अमरीका में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 400.00 रुपए, यूरोप में (हवाई डाक से) एक वर्ष : 325.00 रुपए. **मुख्य वितरक व वार्षिक शुल्क भेजने का स्थान** : दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055. **व्यक्तिगत विज्ञापन विभाग** : एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001. **बंबई कार्यालय** : 79ए, मित्तल चेंबर्स, नारीमन पाइंट, बंबई-400021. **मद्रास कार्यालय** : अपार्टमेंट नंबर 342, छठी मंजिल, 31-2 ए, पैथन रोड, खलील शिराजी एस्टेट, मद्रास-600008.

सामाजिक व पारिवारिक पुनर्निर्माण की पाक्षिक

आवश्यकता पड़ सकती है.

—सुशील अग्रवाल

*

महानगरों के जीवन के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) सटीक हैं. यह निर्विवाद सत्य है कि महानगरों से जुड़ी आस्थाएं अब टूटटूट कर बौनी और घिनौनी समस्याओं में परिणत होती जा रही हैं. वर्तमान समय में हर एक के मन में महानगरीय चकाचौंध का आकर्षण बढ़ता जा रहा है, जिस का परिणाम यह है कि आज महानगरों की आबादी बढ़ती जा रही है. साथ ही वहां का जीवन मशीनी व नारकीय होता जा रहा है.

—डा.अखिलेश शर्मा

*

दलबदल के संबंध में आप के विचार (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) बिलकुल सही हैं. देश की जनता जिन लोगों के भले होने की अपेक्षा करती है जब वे ही भ्रष्ट हों तो किसी भी भ्रष्ट व दोषी अधिकारी या कर्मचारी को सजा कैसे मिल सकेगी?

देश के आम नागरिक को अब यह कतई आशा नहीं करनी चाहिए कि कोई भी राजनीतिबाज या सरकार लोगों का खयाल

संपादक के नाम

'इंदिराजी असंतुष्टों के घेरे में' (मुक्त [विच]ार/अगस्त/प्रथम) पढ़ कर हंसी छूट [ग]ई. हरियाणा, पश्चिम बंगाल, हिमाचल [प्रदे]श के चुनाव परिणामों का अभी गम भी [कम] नहीं हुआ था कि महाराष्ट्र, गुजरात के [असंत]ुष्ट कांग्रेसी भाइयों का दुखड़ा पहुंच [गया]. आखिर इंदिराजी किसकिस की चिंता [करें]गी?

—कल्पना आंचलिया 'टोनी'

*

हिमालय के पर्यावरण के संबंध में [(मुक्]त विचार/जुलाई/ द्वितीय) आप ने पेड़ों [की] अवैध कटाई रोकने के लिए जो सुझाव [दिए] हैं, वे अच्छे लगे.

इस समस्या को सुलझाने के लिए यह [तरी]का अच्छा साबित हो सकता है कि जंगलों [को] 40-50 या 100 साल तक के लिए [प्रति]ष्ठित कंपनियों को पट्टे पर दे दिया जाए. [इ]स से कंपनियां उन जंगलों को थोड़ाथोड़ा [कर] के वैज्ञानिक ढंग से कटवाएंगी, जिस से [देश] को पूरी अवधि तक लाभ भी बराबर [मिल]ता रहेगा.

दूसरे सुझाव के अनुसार यदि हिमालय [के कु]छ इलाकों को बिलकुल बंद कर दिया [जाए]गा तो वास्तव में ऐसा करना अलाभप्रद [है].

ऐसा अवश्य किया जा सकता है कि [प्रति]बंध 10-10 वर्ष के लिए लगाया जाए, [क्योंक]ि इस में कटाई के समय अनेक [परेश]ानियां और कटाई बरतने की ...

> **'संपादक के नाम' के लिए मुक्ता की रचनाओं पर आप के विचार आमंत्रित हैं. साथ ही आप देश के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आदि विषयों पर भी अपने विचार इस स्तंभ के माध्यम से रख सकते हैं. प्रत्येक पत्र पर लेखक का पूरा नाम व पता होना चाहिए, चाहे वह प्रकाशन के लिए न हो. पत्र इस पते पर भेजिए :**
>
> **संपादकीय विभाग,**
> **मुक्ता,**
> **ई-3, झंडेवाला एस्टेट,**
> **रानी झांसी मार्ग,**
> **नई दिल्ली-110055.**

रखेगी. उन का उद्देश्य तो सत्ता प्राप्त करना है, चाहे वह कैसे भी प्राप्त हो. अभी जनता अपने साथ विश्वासघात करने वाले इन कथित नेताओं को सजा देने को तैयार नहीं मालूम पड़ती.

पता नहीं हमारे देश का भविष्य क्या होगा.

—मोहन शर्मा

*

दलबदल के विषय में व्यक्त किए गए आप के विचारों से मैं सहमत हूं. यह शतप्रतिशत सही है कि इंदिरा कांग्रेस हाल के चुनावों के बाद पैसे के बल पर ही हरियाणा एवं हिमाचल प्रदेश में अपनी सरकारें गठित करने में सफल हुई है. राजनीतिबाजों ने बिकाऊ लोगों से जो दलबदल करवाया है, उस से जनता के सामने इंदिराजी व उन के दल की छवि बजाए सुधरने के और बिगड़ी ही है.

—संजयराम लोढ़ा 'मायूस'

*

राष्ट्रपति पद के बारे में आप के विचार (मुक्त विचार/जुलाई/द्वितीय) युक्तिसंगत हैं. जब तक देश की स्थिति डांवांडोल न हो, तब तक राष्ट्रपति की कोई प्रभावी भूमिका नहीं होती, इसलिए जैलसिह एक अच्छे राष्ट्रपति भी साबित हो सकते हैं. लेकिन ऐसा कोई नहीं कहेगा कि उन से बेहतर उम्मीदवार इंदिरा कांग्रेस के पास नहीं था. हकीकत तो यह है कि इस समय इंदिरा कांग्रेस को एक ऐसे राष्ट्रपति की जरूरत थी जो कठिन स्थिति में भी पूर्णतया प्रधान मंत्री पर निर्भर रहे और हर अवसर पर प्रधान मंत्री ही वास्तविक सर्वेसर्वा रहे.

—उमेशकुमार मीना

*

जीवन बीमा योजनाओं से संबंधित लेख (जुलाई/द्वितीय) अच्छा भी लगा और खराब भी. लेखक ने हर संभव तरीके से एजेंटों को बदनाम किया है, लेकिन वह यह नहीं जानता कि एजेंटों को बीमा कराने के इच्छुक लोगों को तलाश करने के लिए क्याक्या पापड़ बेलने पड़ते हैं. एकएक आदमी के पास कितनी बार जाना पड़ता है और कितने आत्मविश्वास, साहस के साथ काम करना पड़ता है. लेखक ने लिखा है कि बीमा एजेंटों की न कोई जोखिम होती है और न कोई जिम्मेदारी है, सिर्फ लाभ ही लाभ होता है. यह सरासर गलत है. मैं भी एक बीमा एजेंट हूं और मैं इस बात से कभी सहमत नहीं हो सकता. हां, बीमा कंपनी का व्यवहार जरूर खराब है. वह एजेंटों को कोई सहयोग प्रदान नहीं करती. एजेंटों से कार्य करवा कर उन्हें बेवकूफ बनाया जाता है.

देखिए न, मैं तीन वर्ष पुराना एजेंट हूं, लेकिन मुझे अभी तक अपना कमीशन प्राप्त नहीं हुआ. मैं इस अवधि में 12 लाख का

मुक्ता के स्तंभों के बारे में सूचना

मुक्ता में प्रकाशित होने वाले विविध स्तंभों के लिए चुटकुले, अपने रोचक अनुभव, संस्मरण व अन्य सामग्री भेजने के लिए अलगअलग लिफाफा प्रयोग करने की आवश्यकता नहीं है. एक ही लिफाफे में एक से अधिक स्तंभों में प्रकाशन योग्य सामग्री भेजी जा सकती है.

सामग्री भेजते समय स्पष्ट अथवा सुपाठ्य शब्दों में अपना नाम, पता और भेजने की तारीख अवश्य लिखें. साथ ही यह भी लिख कर भेजें कि रचना मौलिक एवं अप्रकाशित है. भेजी हुई सामग्री किसी भी हालत में लौटाई नहीं जाएगी. अतः बजाए टिकट लगा व पता लिखा लिफाफा भेजने के उस की एक प्रति अपने पास सुरक्षित रख लें. जहां तक संभव हो, सामग्री टाइप करवा कर अथवा साफ शब्दों में कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर लिख कर भेजें. हर तरह की सामग्री कम से कम शब्दों में और रोचकतापूर्ण होनी चाहिए.

सभी स्तंभों के लिए सामग्री एक ही लिफाफे में रख कर इस पते पर भेजें: संपादन विभाग, मुक्ता, ई-3, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

...साय दे चुका हूं. ... ला खानों में हुआ है, जहां वेतन से बचत ...ना के तहत ये बीमे हुए हैं. पर मुझे अभी ...इन का कमीशन नहीं मिला. मालूम नहीं ...मिलेगा. बाद में शाखा कार्यालय से ...र्क करने पर पता चला कि कंपनी के ...मों के अनुसार मैं अभी तक प्रशिक्षित ...हुआ, इसलिए मेरा कमीशन रुका हुआ ...आश्चर्य है कि प्रशिक्षित हुए बिना मैं ने ...नी बड़ी रकम का व्यवसाय कैसे कर डाला ...र वह कंपनी द्वारा स्वीकार कैसे कर लिया ...?

...अगर लेख में बीमा कंपनी के दोषों, ...यों का विवरण दिया जाता तो कहीं ...दा अच्छा होता. लेखक को चाहिए था कि ...त लेख को लिखने से पहले बीमा एजेंटों से ...र्क करता और उन की जिम्मेदारी, ...श्रम, मजबूरी, लाभ को अच्छी तरह जान ...व सोचसमझ कर लेख लिखता.

—सतीशकुमार 'कुजामा'

*

बीमा संबंधी लेख अपनेआप में काफी ... है और इस में लेखक ने एक राजकीय उपक्रम की धज्जियां उड़ा कर रख दी हैं. लाखोंकरोड़ों अनजान बीमेदारों की खूनपसीने की कमाई किस प्रकार कुछ बीमा एजेंटों व संबंधित कर्मचारियों की जेब में पहुंच जाती है. यह एकदम स्पष्ट कर दिया गया है. वैसे तो असामयिक मृत्यु का हौआ दिखा कर जीवन बीमा निगम अपना धंधा फैलाए हुए है, जब कि दूसरी ओर आज कितने ही जीवित बीमेदार बीमा की किस्तों के रूप में दी गई अपनी रकम के मिलने की बाट जोह रहे हैं. जनता और जीवन बीमा निगम की आंखें खोलने के लिए यह लेख पर्याप्त है.

—नाथूलाल गुप्त

*

भारतीय जीवन बीमा निगम के एकाधिकार संबंधी लेख में लेखक का यह कहना कि एक सौ रुपए प्रतिमाह जमा करने पर 10 वर्ष पश्चात डाकघर आवर्ती जमाखाता में 22,330 रुपए मिलते हैं. ठीक नहीं है. अभी अप्रैल में ब्याज बढ़ने के बाद भी इस प्रकार के खाते में 20,991 रुपए ही

मिलते हैं. हां, एक बात अवश्य है कि अगर एक वर्ष की किस्त एक साथ जमा की जाए तो 40 रुपए छूट के प्राप्त होते हैं. इस प्रकार एक वर्ष में 400 रुपए और मिल जाते हैं. इस तरह कुल 21,391 रुपए प्राप्त होते हैं. यह धन राशि किसी भी सरकारी बैंक के आवर्ती जमाखाते की राशि से अधिक है. परंतु डाकघर के खातों में जमाकर्ता को पैसा वसूल करने में जो परेशानी होती है उस से कोई भी व्यक्ति अनभिज्ञ नहीं है. वसूली में परेशानी होने के कारण अधिक ब्याज का महत्त्व भी लगभग समाप्त होता जा रहा है. दबाव डाल कर अगर डाकघर में खाते न खुलवाए जाएं तो बहुत थोड़े खाते स्वेच्छा से खुल सकेंगे. आवश्यकता तो ब्याज बढ़ाने के साथ-साथ सुविधाएं बढ़ाने एवं कानूनी दावपेंच कम करने की है.

–रामाशीष यादव

*

लेख 'आतंक मासिक टिकट यात्रियों का' (जुलाई/द्वितीय) पढ़ा. रेलों में दिन प्रतिदिन बढ़ते हुए अपराध वास्तव में चिन्ता का विषय है. रेलों में बढ़ती हुई गुंडागर्दी को रोकने के लिए पुलिस की व्यवस्था की गई है. परंतु रेलों में पुलिस की व्यवस्था होना न होना बराबर है, क्योंकि पुलिस के सामने ही कई लोग गुडांगर्दी करते रहते हैं और पुलिस मूक दर्शक बनी देखती रहती है.

–गुरबीर चावला

*

लेख 'भविष्य निधि से लाभ किसे सरकार को या कर्मचारियों को' (जुलाई प्रथम) बहुत पसंद आया. मैं इस विचार से पूर्णतया सहमत हूं कि भविष्य निधि का लाभ बजाए कर्मचारियों के सरकार को ही अधिक हो रहा है.

कर्मचारी की खूनपसीने की कमाई में से कुछ रकम बतौर भविष्य निधि काट ली जाती है, जिस से सेवा निवृत्त होने के बाद उसे उस की वह जमा रकम मालिक के उतने ही अंशदान तथा इन दोनों पर जुड़े ब्याज सहित दे दी जाए. उद्देश्य यह होता है कि सेवा निवृत्त कर्मचारी इस से अपनी आर्थिक

समस्या निबटा सकेगी. लेकिन उसी को पैसा देने के लिए उसे परेशान क्यों किया जाता है? उस से रिश्वत क्यों मांगी जाती है? उसे दौड़ाया क्यों जाता है? यदि उसे किसी कारणवश भविष्य निधि राशि में से ऋण लेना हो तो और भी कई तरह की बाधाएं उस के सम्मुख आती हैं. —निलिन बक्षी

*

उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित नाट्य समारोह की मेरी रिपोर्ट पर (जून/प्रथम) उर्मिल शर्मा की प्रतिक्रिया (संपादक के नाम/जुलाई/द्वितीय) पढ़ने को मिली. इन्होंने लिखा है कि 'पंच परमेश्वर' नाटक का प्रदर्शन कई बड़ेबड़े सभागारों में देख चुके हैं. मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि उक्त सज्जन मुक्ताकाश नाट्य संस्था से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप में किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं. नहीं तो कोई ऐसा व्यक्ति नहीं होगा, जो शहरशहर में अपने खर्चे से 'पंच परमेश्वर' नाटक देखे. रही किसी नाट्य ग्रुप की झूठी प्रशंसा को सत्य साबित कर के सस्ता प्रचार पाने की बात तो लखनऊ जैसे नगर में असंभव है.

प्रेमचंद जैसे महान साहित्यकार की कहानियों को व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए विकृत कर उन पर अपनी मुहर लगाने वाले उर्मिल शर्मा जैसे व्यक्ति साहित्य की आलोचना के नाम पर कलंक हैं. किसी भी प्रकार की

मुक्ता के लेखक
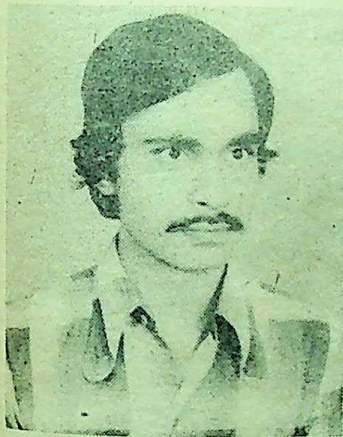
शैलेंद्रकुमार दुबे

इस अंक में प्रकाशित कहानी 'रास्ते पर' के लेखक शैलेंद्रकुमार दुबे जौनपुर (उ.प्र.) के निवासी हैं. आप कविताएं और कहानियां लिखते हैं. आप की कहानियां सामाजिक समस्याओं पर आधारित होती हैं. लिखना व घूमना आप के शौक हैं.

हरीश निगम

इस अंक में प्रकाशित कविता 'दो मुसकराहटों के बीच' के रचयिता सतना निवासी हरीश निगम हैं. मूल रूप से आप नवगीतकार हैं, पर अपने भावों को कहानी और निबंधों में भी व्यक्त करते हैं. फोटोग्राफी में भी आप की रुचि है.

आलोचना करते समय व्यक्तिगत स्वार्थ को ताक पर रख कर अपनी बुद्धि का उपयोग करना चाहिए.

किसी नाटक का मेले में प्रदर्शन किया जाना अलग बात है, क्योंकि मेले में नाटक के प्रदर्शन का उद्देश्य मात्र हलका मनोरंजन होता है. वहां ग्रामीण एवं सीधीसादी जनता के सामने गलतियों को नजरअंदाज किया जा सकता है. लेकिन लखनऊ जैसे सुसंस्कृत शहर के जो बंबई, कलकत्ता, दिल्ली के बाद नाट्य गतिविधियों का प्रमुख केंद्र बन गया है, बुद्धिजीवियों, जागरूक दर्शकों एवं पत्रकारों की आंख में धूल नहीं झोंकी जा सकती. नाट्य समारोह में सातों नाटकों में से सब से ज्यादा आलोचना 'पंच परमेश्वर' नाटक की ही की गई है. 'मुक्ताकाश' नाट्य संस्था से मेरी कोई दुश्मनी नहीं है जो एकतरफा समीक्षा लिखूंगा.

मैं चाहता हूं कि यह महोदय इस नाट्य समारोह की उत्तर प्रदेश के प्रमुख दैनिक समाचारपत्र या अन्य किसी लोकप्रिय पत्रिका में छपी समीक्षा दिखाने का कष्ट करें, जिस में इस नाटक की आलोचना न की गई हो. मैं ने तो इस नाटक की आलोचना कम ही की है.

दिल्ली के समाचारपत्रों ने प्रेमचंद शताब्दी समारोह में इस नाटक की प्रशंसा की होगी, मानता हूं. लेकिन लखनऊ की इस प्रस्तुति पर किसी लोकप्रिय समाचार पत्र ने प्रशंसा की हो तो उस की एक प्रति मुझे भी अवलोकनार्थ भेजें. मैं ने जैसा नाटक देखा, उस की स्पष्ट आलोचना अपने लेख में कर दी.

संपूर्ण लेख में केवल एक ही गलती है, जिसे मैं स्वयं स्वीकार करता हूं. वह यह कि 24 मार्च को बादल सरकार का नाटक 'भोगा' का निर्देशन ए. आर. भौमिक ने किया था न कि सुरेंद्र कौशिक ने. इस के अलावा पूरा लेख निष्पक्ष है.

—कृष्णकुमार श्रीवास्तव
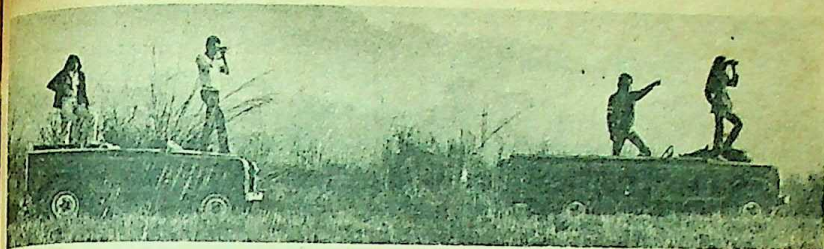
मुक्त विचार

विदेशी दान बंद हो

यह आश्चर्य की बात है कि देश की विभिन्न संस्थाओं को हर वर्ष लगभग 400 करोड़ रुपए विदेशों से दान के रूप में प्राप्त होते हैं. इन में गांधीवादी संस्थाओं से ले कर धर्म प्रचार की संस्थाएं तक शामिल हैं. गांधीवादी संस्थाओं की सहायता पर तो सरकार ने हाल ही में आपत्ति की है और इस की जांच के लिए एक आयोग भी बैठाया है, पर अन्य संस्थाओं को प्राप्त होने वाले पैसे की कोई जांच नहीं की जा रही है.

वैसे तो विदेशी मुद्रा प्राप्त करने के बारे में एक कानून है, जिस के अंतर्गत दान प्राप्त करने वालों को सरकार को पूरी जानकारी देनी पड़ती है, पर इस जानकारी के आधार पर सरकार कुछ भी कदम उठाने में असमर्थ है. सरकार ज्यादा से ज्यादा यह कर सकती है कि कुछ संस्थाओं को पैसा पाने से रोक दे. पर सरकार इस बारे में कोई नियंत्रण नहीं कर सकती कि जिस कार्य के लिए किसी संस्था को पैसा प्राप्त हुआ, वह उसी कार्य के लिए प्रयुक्त हुआ या नहीं.

विदेशों से प्राप्त हुए धन का आम तौर पर दुरुपयोग ही होता है. इस के सदुपयोग का हिसाब रखने वाले तो होते नहीं हैं. विदेशी दानदाता भी यहां आ कर दान प्राप्त करने वाली संस्था के हिसाबकिताब की जांच करने से रहे. इसलिए पैसा या तो मौजमस्ती में उड़ा दिया जाता है या फिर दानदाता की इच्छानुसार काम करने में.

दोनों ही स्थितियों में यह धन देश के किसी काम का नहीं होता. उलटे यह अशांति पैदा करता है, क्योंकि दान पाने वाला अपनी कारगुजारी दिखाने के लिए ऊटपटांग स्टंट करता है. धर्मप्रचारकों को मिलने वाला धन तो और भी खतरनाक होता है, क्योंकि विदेशों से मिले धन का दुरुपयोग करने में उन्हें कोई हिचकिचाहट नहीं होती.

हाल के सालों में मसजिदों की मरम्मत करने व इसलाम के प्रचार के नाम पर अरब देशों से भेजे जाने वाले दान की मात्रा एकदम बढ़ गई है. इसी तरह ईसाई संस्थाओं को भी बहुत पैसा मिलता है. ये सब मिल कर एकदूसरे के विरुद्ध जहर ही उगलते हैं, जिस से धार्मिक दंगे फैलते हैं.

जिस देश की वार्षिक आय लगभग एक लाख करोड़ हो, जहां केंद्र सरकार का वार्षिक बजट 25,000 करोड़ का हो और जो 15 दिन के खेलों के लिए एक हजार करोड़ रुपए बरबाद कर सकता है, उस का इन तीनचार सौ करोड़ रुपए के दान से क्या बनेगा या बिगड़ेगा?

अच्छा यही होगा कि सरकार विदेशों से प्राप्त होने वाले हर प्रकार के दान पर पूरी तरह पाबंदी लगा दे, चाहे वह धर्म के नाम पर मिले या राजनीतिक सहयोग के नाम पर.

दो व्यावहारिक संशोधन

संसद के मानसून अधिवेशन में दो महत्त्वपूर्ण विधेयक पारित किए गए हैं जो बहुत ही व्यावहारिक व आवश्यक थे. पहला विधेयक भूसंपत्ति कर के बारे में है और दूसरा श्रमिकों से संबंधित.

भूसंपत्ति कर विधेयक से पिछले कानून

ने संशोधन कर के [illegible] में मिलने वाले एक रिहायशी मकान की कीमत लागत 1970 के मूल्य के बराबर निर्धारित कर दी गई है. भूसंपत्ति कर का मुख्य उद्देश्य समाजवादी राज की स्थापना करना है और इस के माध्यम से कोशिश की जाती है कि अमीर व्यक्ति अपनी धनसंपत्ति अपने बच्चों के लिए छोड़ कर न जा सके.

जब यह कानून बना था तब यह वास्तव में अमीरों के लिए था, पर जैसेजैसे रुपए की कीमत घटी, मध्यम वर्ग भी इस की चपेट में आ गया. सब से अधिक कठिनाई रिहायशी मकानों के बारे में थी, क्योंकि कानून के अंतर्गत किसी व्यक्ति की मृत्यु के समय उस के मकान का जो बाज़ार भाव हो उस पर कर लगता था. अब जब छोटे से छोटे मकान की कीमत भी डेढ़दो लाख हो गई तो मृत्यु के बाद उस के वारिसों को मृतक के लिए तो रोना ही पड़ता, कर चुकाने के लिए उन के सामने मकान तक बेचने की नौबत आने लगी.

नए संशोधन के अनुसार रिहायशी मकान की कीमत 1970 की कीमत के अनुसार ही लगाई जाएगी. इस से उन लाखों विधवाओं और बच्चों को राहत मिली है जो अभिभावक के मरने के बाद रहने के स्थान के लिए भी मुहताज हो जाते थे.

दूसरे विधेयक से श्रमविवाद कानून में संशोधन कर के हस्पतालों, स्कूलकालिजों तथा धर्मार्थ या सेवार्थ चलाई जाने वाली संस्थाओं के कर्मचारियों को श्रम कानूनों की हद से बाहर कर दिया गया है. कानून में तो पहले भी उन का कोई स्थान न था, पर, कर्मचारी वर्ग की वाहवाही लूटने के लिए सर्वोच्च न्यायालय ने 'कर्मचारी' शब्द की ऐसी व्याख्या की कि उस में पत्नी को छोड़ कर सभी कर्मचारी शामिल हो गए.

जहां काम मुनाफे के लिए हो रहा हो, वहां कर्मचारियों को सुरक्षा देना एक बार इसलिए माना जा सकता है कि कहीं नियोजक कर्मचारियों को बहुत कम पैसा दे कर सारा लाभ अपनी जेब में न डाल ले. पर जहां संस्था का उद्देश्य ही सेवा करना हो वहां न तो कर्मचारियों के शोषण का प्रश्न उठता है, न मनमानी का.

जब कोई संस्था अनाथ, विद्यार्थी या बीमार की सेवा में लगी हो तो वह कर्मचारी के साथ दुर्व्यवहार कर ही कैसे सकती है? लेकिन मजदूर नेताओं को सेवा से तो मतलब था नहीं. उन्हें तो अपनी रोजी कमानी थी. अतः उन्होंने इन संस्थाओं में अपना जो जाल फैला कर कमाई की, उतनी तो उन्हें उद्योगों में भी नहीं हुई.

इन संस्थाओं में कर्मचारी हड़ताल करते तो आम जनता को ही परेशानी होती थी, इन संस्थाओं को चलाने वालों को नहीं.

इस नए संशोधन से इन संस्थाओं को चलाने वालों को राहत मिलेगी और आशा है कि जनता को भी अच्छी सेवा मिलेगी.

बिखरे दल : मतदाता भी दोषी

लोक दल के एक और विभाजन पर अधिकांश लोग दल के नेताओं को दोष दे रहे हैं कि वे अपने व्यक्तिगत अहं व आकांक्षाओं के लिए अच्छेभले दलों को तोड़ रहे हैं और इस प्रकार श्रीमती इंदिरा गांधी के हाथ मजबूत कर रहे हैं. जैसेजैसे विरोधी दल छोटेछोटे होते जा रहे हैं, उन की अहमियत घटती जा रही है और वे अब राष्ट्रव्यापी स्तर पर तो क्या राज्य के स्तर पर भी इंदिरा कांग्रेस का मुकाबला नहीं कर सकते.

लेकिन इस स्थिति के लिए जितने दोषी ये नेता हैं, उस से ज्यादा दोषी उन के समर्थक और आम जनता है. आजकल नेता नेतृत्व नहीं कर पाते, अपने समर्थकों द्वारा धकेले जाते हैं.

यशवंतराव बलवंतराव च्व्हाण का इंदिरा कांग्रेस में जाना या हरियाणा में दलबदल होना या लोक दल के दो टुकड़े होना सब में नेताओं से ज्यादा दोष उन के समर्थकों का है जो "हमारी मानो वरना हम चले" का रुख अपनाए रखते हैं.

कठिनाई यह है कि अब इन नेताओं की पोल इस बुरी तरह खुल चुकी है कि आम

जनता के मन में इन के प्रति आदर का भाव है ही नहीं. इसलिए इन्हें अपने समर्थकों को बना कर रखना पड़ता है, क्योंकि उन के बिना ये बिलकुल प्रभावहीन हो जाएंगे.

दूसरे, अब राजनीति पूरे समय का व्यवसाय हो गया है. चाहे दुकानदारी छोटी रहे या बड़ी, रहनी चाहिए. इसलिए नेताओं को दलों को तोड़ना पड़ता है ताकि छोटी ही सही, उन की अपनी दुकान तो चलती रहे.

आम जनता भी इन दलों के विभाजन के लिए जिम्मेदार है. हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के चुनावों में दो स्पष्ट पक्ष एकदूसरे के विरुद्ध थे, फिर भी लाखों मत निर्दलीय उम्मीदवारों या अन्य महत्त्वहीन दलों को मिल गए. जगजीवन कांग्रेस, जनता पार्टी और विद्रोही खासे मत ही नहीं, सीटें भी बटोर ले गए.

जब तक मतदाता यह फैसला न करेगा कि इंदिरा कांग्रेस के विरुद्ध उसे किस एक दल को समर्थन देना है, तब तक कईकई विरोधी दल खड़े रहेंगे और हर दल यही आशा लगाए रखेगा कि वह ही इंदिरा कांग्रेस का असली विकल्प है.

विरोधी दलों की भीड़भाड़ कम करने का एकमात्र हल उन के नेताओं के पास नहीं, मतदाताओं और नेताओं के समर्थकों के पास है. जब तक वे अलगअलग खेमों में हैं, विरोधी दल अलग रहेंगे.

विमान अपहरण : सरकारें दोषी

खालिस्तान की मांग को ले कर इंडियन एअरलाइंस का एक और विमान अपहरण का शिकार हो गया. 4 अगस्त को दिल्ली से श्रीनगर जाने वाले 126 यात्रियों के विमान में एक सिख ने हथगोला फेंकने की धमकी दे कर विमान को लाहौर ले जाना चाहा, पर लाहौर में उतरने की अनुमति न मिलने पर उसे अमृतसर लाया गया और चालक व पुलिस की चतुराई से अपहरणकर्ता को पकड़ लिया गया.

चूंकि अपहरणकर्ता एक आम गोंद को हथगोला बता कर विमानचालकों को डरा रहा था, अतः उड़ान से पहले ली जाने वाली तलाशी की तो कमी बताई नहीं जा सकती. लेकिन फिर भी यह घटना काफी गंभीर है, क्योंकि अभी थोड़े दिन पहले ही अलइतालिया के एक विमान का दिल्ली से चढ़े श्रीलंका के एक निवासी ने अपहरण कर लिया था.

विमान अपहरण की घटनाएं हवाई यात्रा की सब से बड़ी जोखिम बनती जा रही हैं. यह संतोष की बात है कि दोचार मामलों को छोड़ कर अधिकांश मामले बिना किसी बड़े हादसे के ही सुलझा लिए गए हैं. फिर भी विमान में प्रवेश करते समय हर यात्री के दिमाग में इस का खौफ रहता है.

हवाई जहाजों ने ही विश्व को इतना निकट ला दिया है कि जो स्थान पहले महीनों दूरी पर हुआ करते थे, वहां अब कुछ घंटों में ही पहुंचा जा सकता है.

यह खेद की बात है कि कुछ लोग विज्ञान की इस अद्भुत देन का इस तरह दुरुपयोग कर रहे हैं. वैसे इस कार्य के लिए केवल अपराधी ही दोषी नहीं हैं. संसार के अनेक देशों के शासक स्वयं अपहरणकर्ताओं को सहयोग देते रहे हैं. इन में श्रीमती इंदिरा गांधी भी शामिल हैं, जिन के दल के दो सदस्यों ने जनता पार्टी के राज में एक विमान का अपहरण किया था. उन में से एक अब भी उत्तर प्रदेश में मंत्री है.

हिंदी की प्रगति धीमी ही सही

यह संतोष की बात है कि सर्वोच्च प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में अब देशी भाषाओं को स्थान मिलने लगा है. पिछले वर्ष 873 चुने गए परीक्षार्थियों में से 50 ने केवल हिंदी माध्यम से ही परीक्षाएं दी थीं.

कुल चुने गए 873 उम्मीदवारों को देखते हुए यह संख्या भले ही नाममात्र की हैं, पर एक अच्छी शुरुआत जरूर है. अब तक तो यही समझा जाता रहा है कि हिंदी जानने

वाले जाहिल होते हैं और उन्हें प्रशासकीय नौकरी तो दूर चपरासी की नौकरी देना भी ठीक नहीं है.

इन परीक्षाओं में हिंदी माध्यम से परीक्षा देने वाले 50 उम्मीदवारों ने सफलता प्राप्त कर के यह दिखा दिया है कि अंगरेजी का ज्ञान पर कोई एकाधिकार नहीं है.

असलियत तो यह है कि अंगरेजी पढ़ना और लिखना सीखने के चक्कर में आम तौर पर ज्ञान को दूसरा स्थान दे दिया जाता है. आप को समस्याओं से निबटना आता हो या न आता हो, आप वाकपटु हों या न हों, फर्राटेदार अंगरेजी जरूर आनी चाहिए.

एक तरह से अंगरेजी का महत्त्व संस्कृत की तरह होता जा रहा है. जैसे पहले संस्कृत पढ़ालिखा व्यक्ति सहज ही पंडित मान लिया जाता था, चाहे वह दो कौड़ी का व्यावहारिक ज्ञान न रखता हो, वैसे ही अब अंगरेजी के जानकार की पूजा की जाने लगी है.

अंगरेजी का एकाधिकार तोड़ने का एकमात्र तरीका यही है कि हिंदी के जानकार और जोरशोर से अपने ज्ञान का प्रदर्शन करें और सिद्ध करें कि हिंदी में भी अभिव्यक्ति उतनी ही आसानी से हो सकती है, जितनी अंगरेजी में. हिंदी में अपने विचार प्रकट करने में सब से बड़ी आसानी यह है कि सोचविचार भी आम तौर पर हिंदी में ही किया जाता है. अंगरेजी की शान मारने वाले भी आम तौर पर पहले हिंदी में ही (चाहे वह अंगरेजी मिश्रित क्यों न हो) अपने विचार बनाते हैं, फिर अंगरेजी में अनुवाद कर के बोलते हैं.

भाईचारा अरबी किस्म का

अरब देशों के भाईचारे का भी जवाब नहीं है. पिछले डेढ़ माह से बेरूत में इजराइली सेनाओं द्वारा पूरी तरह घिरे फिलस्तीनी छापामारों को ये अरब देश अपने यहां तो बसाने को तैयार हैं नहीं, पर उपदेश यह देते हैं कि इजराइल को सबक सिखाने के लिए वे (फिलस्तीनी छापामार) मर जाएं पर बेरूत न छोड़ें.

वैसे तो हर मंच में अरब देश फिलस्तीनियों के प्रति हमदर्दी के ही नारे लगाते हैं, पर जब उन के लिए अपनी सेनाएं भेजने की बात आती है तो वे मुंह फेर लेते हैं. एक तरफ ये सब अरब देश इजराइल की आक्रामक नीति के लिए अमरीका को गालियां देते नहीं थकते, पर दूसरी ओर अपना सारा पैसा वहीं अमरीका में जमा करा रहे हैं और वहीं से सैनिक साजोसामान खरीद रहे हैं.

दक्षिण बेरूत में इस समय लगभग 6,000 फिलस्तीनी छापामार इजराइली सेनाओं से घिरे हुए हैं. इजराइल चाहे तो इन्हें बंदी बना सकता है, पर इस से दोनों तरफ की सैकड़ों जानें जाएंगी और इस से न इजराइल को कोई लाभ होगा, न ही फिलस्तीनियों को. इसी लिए इजराइली चाहते हैं कि फिलस्तीनी छापामार मिस्र, सीरिया, जोर्डन, सऊदी अरब आदि किसी देश में चले जाएं.

फिलस्तीनी तो बेरूत छोड़ने को तैयार हैं, पर कोई उन्हें अपने यहां बसने दे तब न. ये सभी अरब देश जानते हैं कि इन छापामारों को अपने यहां बुलाना मुसीबत मोल लेना है. ये लोग कामधाम तो कुछ करेंगे नहीं, अरब देशों से दान में मिले पैसे से मुफ्त की रोटियां तोड़ेंगे. अमीर अरब देशों को पैसे की तो चिंता नहीं है, उन्हें तो डर है इन छापामारों की कारगुजारियों से.

ये लोग जहां भी जाएंगे, अपने साथ हथियार ले कर जाएंगे और फिर उस क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश करेंगे. वहां के शासकों में फूट डलवा कर खूनखराबा कराएंगे.

यही वजह है कि कोई अरब देश इन्हें लेने को तैयार नहीं हैं. वैसे ही सभी अरब देशों के शासक बड़ी कमजोर जमीन पर अपनी कुरसी जैसेतैसे टिकाए हुए हैं.

अरब लोग सिर्फ मुसलमान होने के कारण भाईचारे का शोर मचाते हैं जब कि सचाई यह है कि कोई भी धर्म भाईचारा सिखाता ही नहीं है. यदि ऐसा न होता तो चौदह सौ वर्षों में पूरा पश्चिमी एशिया एक हो गया होता.

जनता के मन में इन के प्रति आदर का भाव है ही नहीं. इसलिए इन्हें अपने समर्थकों को बना कर रखना पड़ता है, क्योंकि उन के बिना ये बिलकुल प्रभावहीन हो जाएंगे.

दूसरे, अब राजनीति पूरे समय का व्यवसाय हो गया है. चाहे दुकानदारी छोटी रहे या बड़ी, रहनी चाहिए. इसलिए नेताओं को दलों को तोड़ना पड़ता है ताकि छोटी ही सही, उन की अपनी दुकान तो चलती रहे.

आम जनता भी इन दलों के विभाजन के लिए जिम्मेदार है. हरियाणा और हिमाचल प्रदेश के चुनावों में दो स्पष्ट पक्ष एकदूसरे के विरुद्ध थे, फिर भी लाखों मत निर्दलीय उम्मीदवारों या अन्य महत्त्वहीन दलों को मिल गए. जगजीवन कांग्रेस, जनता पार्टी और विद्रोही खासे मत ही नहीं, सीटें भी बटोर ले गए.

जब तक मतदाता यह फैसला न करेगा कि इंदिरा कांग्रेस के विरुद्ध उसे किस एक दल को समर्थन देना है, तब तक कईकई विरोधी दल खड़े रहेंगे और हर दल यही आशा लगाए रखेगा कि वह ही इंदिरा कांग्रेस का असली विकल्प है.

विरोधी दलों की भीड़भाड़ कम करने का एकमात्र हल उन के नेताओं के पास नहीं, मतदाताओं और नेताओं के समर्थकों के पास है. जब तक वे अलगअलग खेमों में हैं, विरोधी दल अलग रहेंगे.

विमान अपहरण : सरकारें दोषी

खालिस्तान की मांग को ले कर इंडियन एअरलाइंस का एक और विमान अपहरण का शिकार हो गया. 4 अगस्त को दिल्ली से श्रीनगर जाने वाले 126 यात्रियों के विमान में एक सिख ने हथगोला फेंकने की धमकी दे कर विमान को लाहौर ले जाना चाहा, पर लाहौर में उतरने की अनुमति न मिलने पर उसे अमृतसर लाया गया और चालक व पुलिस की चतुराई से अपहरणकर्ता को पकड़ लिया गया.

चूंकि अपहरणकर्ता एक आम गेंद को हथगोला बता कर विमान चालकों को डरा रहा था, अत: उड़ान से पहले ली जाने वाली तलाशी की तो कमी बताई नहीं जा सकती. लेकिन फिर भी यह घटना काफी गंभीर है, क्योंकि अभी थोड़े दिन पहले ही अलइतालिया के एक विमान का दिल्ली से चढ़े श्रीलंका के एक निवासी ने अपहरण कर लिया था.

विमान अपहरण की घटनाएं हवाई यात्रा की सब से बड़ी जोखिम बनती जा रही हैं. यह संतोष की बात है कि दोचार मामलों को छोड़ कर अधिकांश मामले बिना किसी बड़े हादसे के ही सुलझा लिए गए हैं. फिर भी विमान में प्रवेश करते समय हर यात्री के दिमाग में इस का खौफ रहता है.

हवाई जहाजों ने ही विश्व को इतना निकट ला दिया है कि जो स्थान पहले महीनों दूरी पर हुआ करते थे, वहां अब कुछ घंटों में ही पहुंचा जा सकता है.

यह खेद की बात है कि कुछ लोग विज्ञान की इस अद्‌भुत देन का इस तरह दुरुपयोग कर रहे हैं. वैसे इस कार्य के लिए केवल अपराधी ही दोषी नहीं हैं. संसार के अनेक देशों के शासक स्वयं अपहरणकर्ताओं को सहयोग देते रहे हैं. इन में श्रीमती इंदिरा गांधी भी शामिल हैं, जिन के दल के दो सदस्यों ने जनता पार्टी के राज में एक विमान का अपहरण किया था. उन में से एक अब भी उत्तर प्रदेश में मंत्री है.

हिंदी की प्रगति धीमी ही सही

यह संतोष की बात है कि सर्वोच्च प्रशासनिक सेवाओं की परीक्षाओं में अब देशी भाषाओं को स्थान मिलने लगा है. पिछले वर्ष 873 चुने गए परीक्षार्थियों में से 50 ने केवल हिंदी माध्यम से ही परीक्षाएं दी थीं.

कुल चुने गए 873 उम्मीदवारों को देखते हुए यह संख्या भले ही नाममात्र की है, पर एक अच्छी शुरुआत जरूर है. अब तक तो यही समझा जाता रहा है कि हिंदी जानने

वाले जाहिल होते हैं और उन्हें प्रशासकीय नौकरी तो दूर चपरासी की नौकरी देना भी ठीक नहीं है.

इन परीक्षाओं में हिंदी माध्यम से परीक्षा देने वाले 50 उम्मीदवारों ने सफलता प्राप्त कर के यह दिखा दिया है कि अंगरेजी का ज्ञान पर कोई एकाधिकार नहीं है.

असलियत तो यह है कि अंगरेजी पढ़ना और लिखना सीखने के चक्कर में आम तौर पर ज्ञान को दूसरा स्थान दे दिया जाता है. आप को समस्याओं से निबटना आता हो या न आता हो, आप वाकपटु हों या न हों, फर्राटेदार अंगरेजी जरूर आनी चाहिए.

एक तरह से अंगरेजी का महत्त्व संस्कृत की तरह होता जा रहा है. जैसे पहले संस्कृत पढ़ालिखा व्यक्ति सहज ही पंडित मान लिया जाता था, चाहे वह दो कौड़ी का व्यावहारिक ज्ञान न रखता हो, वैसे ही अब अंगरेजी के जानकार की पूजा की जाने लगी है.

अंगरेजी का एकाधिकार तोड़ने का एकमात्र तरीका यही है कि हिंदी के जानकार और जोरशोर से अपने ज्ञान का प्रदर्शन करें और सिद्ध करें कि हिंदी में भी अभिव्यक्ति उतनी ही आसानी से हो सकती है, जितनी अंगरेजी में. हिंदी में अपने विचार प्रकट करने में सब से बड़ी आसानी यह है कि सोचविचार भी आम तौर पर हिंदी में ही किया जाता है. अंगरेजी की शान मारने वाले भी आम तौर पर पहले हिंदी में ही (चाहे वह अंगरेजी मिश्रित क्यों न हो) अपने विचार बनाते हैं, फिर अंगरेजी में अनुवाद कर के बोलते हैं.

भाईचारा अरबी किस्म का

अरब देशों के भाईचारे का भी जवाब नहीं है. पिछले डेढ़ माह से बेरूत में इजराइली सेनाओं द्वारा पूरी तरह घिरे फिलस्तीनी छापामारों को ये अरब देश अपने यहां तो बसाने को तैयार हैं नहीं, पर उपदेश यह देते हैं कि इजराइल को सबक सिखाने के लिए वे (फिलस्तीनी छापामार) मर जाएं पर बेरूत न छोड़ें.

वैसे तो हर सांस में अरब देश फिलस्तीनियों के प्रति हमदर्दी के ही नारे लगाते हैं, पर जब उन के लिए अपनी सेनाएं भेजने की बात आती है तो वे मुंह फेर लेते हैं. एक तरफ ये सब अरब देश इजराइल की आक्रामक नीति के लिए अमरीका को गालियां देते नहीं थकते, पर दूसरी ओर अपना सारा पैसा वहीं अमरीका में जमा करा रहे हैं और वहीं से सैनिक साजोसामान खरीद रहे हैं.

दक्षिण बेरूत में इस समय लगभग 6,000 फिलस्तीनी छापामार इजराइली सेनाओं से घिरे हुए हैं. इजराइल चाहे तो इन्हें बंदी बना सकता है, पर इस से दोनों तरफ की सैकड़ों जानें जाएंगी और इस से न इजराइल को कोई लाभ होगा, न ही फिलस्तीनियों को. इसी लिए इजराइली चाहते हैं कि फिलस्तीनी छापामार मिस्र, सीरिया, जोर्डन, सऊदी अरब आदि किसी देश में चले जाएं.

फिलस्तीनी तो बेरूत छोड़ने को तैयार हैं, पर कोई उन्हें अपने यहां बसने दे तब न. ये सभी अरब देश जानते हैं कि इन छापामारों को अपने यहां बुलाना मुसीबत मोल लेना है. ये लोग कामधाम तो कुछ करेंगे नहीं, अरब देशों से दान में मिले पैसे से मुफ्त की रोटियां तोड़ेंगे. अमीर अरब देशों को पैसे की तो चिंता नहीं है, उन्हें तो डर है इन छापामारों की कारगुजारियों से.

ये लोग जहां भी जाएंगे, अपने साथ हथियार ले कर जाएंगे और फिर उस क्षेत्र पर अपना अधिकार जमाने की कोशिश करेंगे. वहां के शासकों में फूट डलवा कर खूनखराबा कराएंगे.

यही वजह है कि कोई अरब देश इन्हें लेने को तैयार नहीं हैं. वैसे ही सभी अरब देशों के शासक बड़ी कमजोर जमीन पर अपनी कुरसी जैसेतैसे टिकाए हुए हैं.

अरब लोग सिर्फ मुसलमान होने के कारण भाईचारे का शोर मचाते हैं जब कि सचाई यह है कि कोई भी धर्म भाईचारा सिखाता ही नहीं है. यदि ऐसा न होता तो चौदह सौ वर्षों में पूरा पश्चिमी एशिया एक हो गया होता.

लेख • मनमोहन वशिष्ठ

यासर अराफात इजराइली घेरे में

15 मई, 1982. इजराइल के रक्षा मंत्री शेरोन लेबनान से जुड़ी इजराइल की उत्तरी सीमा का दौरा कर रहे थे. आंखों पर शक्तिशाली दूरबीन लगा कर उन्होंने दूरदूर के इलाकों को गौर से देखा. लेबनान से जुड़ी सीमा के ऊंचेऊंचे पर्वतीय स्थलों और बहती लेटिन नदी को देख कर उन का ध्यान 800 वर्ष पुराने ब्यूफोर्ट किले की ओर गया और उन का चेहरा गुस्से से तमतमा उठा. यह किला फिलस्तीनी छापामारों के लिए इजराइल पर गोले बरसाने का सब से सुरक्षित स्थल बना हुआ था. छापामार जब चाहते थे, तभी इजराइल के उत्तरी सीमावर्ती कसबों पर गोले बरसा कर ठहाके लगाने लगते थे. रक्षा मंत्री शेरोन ने आंखों से दूरबीन हटा कर पास में खड़े फौजी अफसर को थमा दी और वापस लौट गए.

मई के आखिरी सप्ताह में शेरोन ने इजराइली प्रधान मंत्री बेगिन को अपनी एक योजना प्रस्तुत की. 5 जून, 1982 तक इजराइली मंत्रिमंडल शेरोन की योजना के हर पहलू पर सावधानी से विचार करता रहा और 6 जून को सर्वसम्मति से इस योजना पर अपनी सहमति व्यक्त कर दी.

सैनिक योजना की स्वीकृति देने से पूर्व इजराइली मंत्रिमंडल को फ्रांस और लंदन में अपने राजदूतों की हत्याओं के संबंध में प्राप्त विवरणों और कैंप डेविड समझौते के अंतर्गत मिस्र से छीने गए सिनाई क्षेत्र को खाली करने से उत्पन्न कई राजनीतिक परिस्थितियों पर विचार करना पड़ा था. मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की हत्या के बाद इजराइल के प्रति कुछ मुसलिम देशों के शासकों के बयानों और उन की नई व्यूह रचना, आपसी समझौतों और बढ़ते सैनिक और राजनीतिक सहयोग से इजराइल को पश्चिम एशिया में शांति स्थापन की अपनी योजना खत्म होती नजर आने लगी. इन परिस्थितियों में शेरोन की सैनिक योजना ने इजराइल मंत्रिमंडल को नया कदम उठाने को बाध्य कर दिया.

रविवार, 6 जून, 1982. इजराइली मंत्रिमंडल ने काफी बहस के बाद शेरोन को सुबह 11 बजे अपनी योजना के अनुसार काररवाई करने की अनुमति दे दी. 6 जून को दोपहर से कुछ पूर्व ही इजराइली सेना 63 किलोमीटर लंबी इजराइली लेबनानी सीमा

रूत की ओर कूच करने को तैयार राइली टैंक (ऊपर), दक्षिणी बेरूत में मानभेदी तोपों के साथ मोर्चे पर डटे लस्तीनी छापामार (नीचे), ('टाइम' साभार)

को पार करने लगी. संयुक्त राष्ट्र संघ के लेबनानी इजराइली सीमा पर तैनात सैनिक अवाक खड़े ताकते रहे. इजराइली सेना का उद्देश्य इस समय लेबनान के किसी हिस्से पर कब्जा करना ही नहीं था, बल्कि पिछले आठ वर्षों से फिलस्तीनी छापामारों द्वारा पैदा की

सहज व्यक्तित्व, नरम नीतियों और दौड़धूप के बल पर यासर अराफात को जहां एक ओर राजनीतिक पहचान मिली, वहीं दूसरी ओर वह फिलस्तीनी जनता के एकमात्र नेता हो गए. पर आज के मौजूदा हालात में अराफात की गतिविधियां क्या हैं? वे अपनी मुहिम में कहां तक सफल हैं?

गई विषम परिस्थितियों का खात्मा कर उन्हें सीमा से 40 किलोमीटर दूर धकेलना भी था. अपनी योजना को पूरा करने के लिए

इजराइल के प्रधान मंत्री मेनकम बेगिन : रक्षा मंत्री की आक्रामक काररवाइयों से परेशान.

इजराइली सेना तीन टुकड़ियों में बंट कर लेबनान के अलगअलग हिस्सों में आगे बढ़ने लगीं.

8 जून तक इजराइली सेना ने लेबनान के विभिन्न शहरों—रशिदिया, तायर, सिडोन, मूर—में बने फिलस्तीनी छापामारों के अड्डों पर कब्जा कर लिया. इजराइली सेना ने राजधानी बेरूत के पूर्वी भाग पर कब्जा कर पश्चिम बेरूत के मुसलिमबहुल इलाके में छापामारों की नाकाबंदी कर दी.

पश्चिमी बेरूत : विनाश के कगार पर

सात लाख से भी अधिक आबादी वाले बेरूत शहर का पश्चिमी भाग आज इजराइल की आठ डिवीजन सेनाओं से घिरा हुआ है. इस घेरे में दो लाख फिलस्तीनी और करीब आठ हजार फिलस्तीनी छापामार भी हैं. इजराइल ने फिलस्तीनी छापामारों को हथियार छोड़ कर लेबनान से चले जाने को कहा है. बेरूत के अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे को अपने कब्जे में ले कर इजराइली सैनिक अब निर्णायक स्थिति में आ गए हैं. उधर फिलस्तीनी छापामारों में शुरू में लेबनान को छोड़ कर किसी और देश में जाने के खिलाफ कड़ी प्रतिक्रिया हुई है. पश्चिमी बेरूत की चौड़ी सड़कों पर रूसी स्टेनगन लटकाए फिलस्तीनी छापामारों का हौसला बढ़ाने वाले यासर अराफात का अपना मुख्यालय इजराइली गोलों के काले धुएं में घिरता नजर आ रहा है. अराफात के हितैषियों ने उन्हें सलाह दी कि वह पश्चिमी बेरूत को छोड़ कर कहीं अन्यत्र चले जाएं. लेकिन काफी समय तक अराफात यही कहते रहे, "क्या द्वितीय विश्व युद्ध के समय चर्चिल ने लंदन को संकट के समय छोड़ा था?"

इस कथन की कई लोगों ने आलोचना की, क्योंकि पश्चिमी बेरूत तो लेबनानियों का है, न कि फिलस्तीनियों का. और फिर यह कोई फिलस्तीनियों की राजधानी भी तो नहीं है. उधर फिलस्तीन की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील लोकप्रिय मोर्चे के जार्ज हब्बास ने धमकी दी कि 'वह पश्चिमी बेरूत को फिलस्तीनियों का स्टालिनग्राड या वियतनाम बना देंगे.' हब्बास की इस धमकी का भी लेबनानियों ने विरोध कर प्रश्न किया कि उनकी लेबनान में स्थिति बिलकुल बाहर से आए मेहमान जैसी है. फिर लेबनान में खूनखराबा करने से क्या फायदा?

शायद लेबनानियों के इस विरोध का ही फल था कि फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अधिकारियों ने यह घोषणा की कि बेरूत से फिलस्तीनी सैनिकों को हटाने से संबंधित सभी मुख्य मुद्दों पर अमरीकी राष्ट्रपति के विशेष प्रतिनिधि फिलिप हबीब के साथ अंतिम समझौता हो गया है और अब इस योजना पर अमल करने के लिए तफसील की कुछ बातों को तय करना बाकी रह गया है.

इन अधिकारियों के अनुसार यासर अराफात ने यह मान लिया कि फिलस्तीनी

मारों की दो व[illegible] करीब 700
सी–अंतरराष्ट्रीय शांति सेना की अग्रिम
टुकड़ी के पहुंचने से पहले ही पश्चिमी
से समुद्र के रास्ते जोर्डन के अकाबा
गाह के लिए रवाना हो जाएंगी.

फिलस्तीनी मुक्ति संगठन ने सिद्धांततः
भी मान लिया कि फिलस्तीनी सैनिक
ने भारी हथियार पूर्वी सीरिया द्वारा
त्रित बेका घाटी में लेबनानी सेना को न दे
बेरूत में ही छोड़ जाएंगे.

लेकिन जहां तक इजराइल का सवाल
उस ने अमरीकी राष्ट्रपति के इस अनुरोध
मानने से इनकार कर दिया कि इजराइली
जें लेबनान की राजधानी के इर्दगिर्द से हट
एं. इजराइली प्रधान मंत्री बेगिन का कहना
कि यह प्रश्न उन के देश की सुरक्षा से जुड़ा
आ है.

अलबत्ता इजराइली प्रधान मंत्री इस
पर राजी हो गए कि जब तक बेरूत में
राष्ट्रीय शांति सेना नहीं आ जाती, वहां
00 फिलस्तीनी सैनिक रह सकते हैं, किंतु
का कहना था कि 8,000 फिलस्तीनी
कों को अंतरराष्ट्रीय शांति सेना के आने
हले ही वहां से हट जाना चाहिए.

इजराइल ने अमरीकी राष्ट्रपति के
ष प्रतिनिधि फिलिप हबीब की
स्तीनी सैनिकों संबंधी योजना को
कार कर लेने की तो घोषणा कर दी, फिर
उस ने बेरूत पर तोपों और हवाई जहाजों
जबरदस्त हमले जारी रख कर अपना
व बनाए रखा. नतीजा यह हुआ कि
या, जोर्डन, इराक, मिस्र आदि अरब
ों ने कुछ तो वस्तुस्थिति को देखते हुए और
अमरीका के दबाव के कारण आखिर यह
ा कर दी कि वे फिलस्तीनी सैनिकों को
यहां लेने को तैयार हैं. अब यदि कोई
याशित घटना न घटी तो यह आशा
चाहिए कि लेबनान में मौजूद
स्तीनी सैनिक छोटीछोटी टुकड़ियों में
र विभिन्न अरब देशों में चले जाएंगे.
जहां लेबनान का संकट हल हो जाएगा,
इजराइल के लिए भी वहां अपना
ना

[illegible] कोई बहाना
नहीं रहेगा. साथ ही फिलस्तीनी सैनिकों के
अनेक टुकड़ियों में बंट जाने से अन्य अरब
देशों को भी अपने यहां उन की मौजूदगी के
कारण कोई विशेष खतरा महसूस नहीं होगा.

लेबनान से फिलस्तीनी छापामारों के
चले जाने से लेबनान का संकट भले ही हल हो
जाए, पर 35 लाख फिलस्तीनियों का भविष्य
एक बार फिर अनिश्चय की स्थिति में आ
गया है. सन 1947 में इजराइल के जन्म के
एक वर्ष बाद फिलस्तीनियों को फिलस्तीन से
भागना पड़ा था. 1967 में इन्हें जोर्डन के
पश्चिमी तट और गाजा पट्टी से उखड़ना
पड़ा. सन 1970 में इन्हें जोर्डन से भागना
पड़ा. अब 1982 में इन्हें लेबनान से भागना

इजराइल के रक्षा मंत्री एरील शेरोन : फिलस्तीनियों को नेस्तनाबूद करने पर उतारू.

पड़ रहा है. सन 1947 से अब तक लाखों की
संख्या में फिलस्तीनी अनेक मुसलिम
देशों–जोर्डन, सीरिया, इराक, मिस्र,
लीबिया, सऊदी अरब तथा इजराइल में
शरणार्थी बन कर रह रहे हैं. कुछ देशों में तो
फिलस्तीनी छापामारों के कारण शरण देने
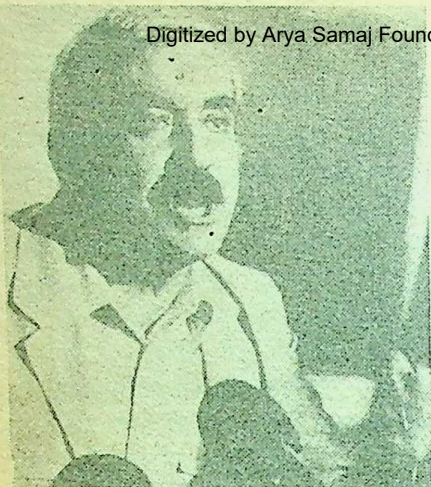
फिलस्तीन की मुक्ति के लिए प्रयत्नशील लोकप्रिय मोर्चे के नेता जार्ज हब्बास : अराफात के जबरदस्त विरोधी.

वाले बादशाहों का तख्ता ही पलट गया. कहींकहीं उन का तख्ता पलटवाने में इन्होंने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है.

मिस्र के राष्ट्रपति अनवर सादात की हत्या पर फिलस्तीनी छापामारों ने जश्न मनाया था. मिस्र ने फिलस्तीनियों समेत अनेक मुसलिम राष्ट्रों की रक्षा के लिए इजराइल से दुश्मनी मोल ली, उस से कई बार लड़ाई लड़ी, अपनी जमीन खोई, दिवाला निकाला और इतना सब कुछ करने के बाद जब इस देश का शासक (सादात) मरा तो फिलस्तीनी छापामारों समेत अनेक मुसलिम देशों ने राहत महसूस की.

इंजीनियर से राजनेता

फिलस्तीनियों के अधिकारों को मान्यता दिलाने और अंतरराष्ट्रीय मंच पर फिलस्तीनी राज्य के निर्माण के लिए जोरदार प्रचार करने में फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अल फतह ग्रुप के नेता यासर अराफात ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है. अराफात का पूरा नाम है– मुहम्मद आबेद आरूफ अराफात. सन 1929 में जेरूसलम में जन्मे अराफात की शिक्षा काहिरा (मिस्र) विश्वविद्यालय में हुई. इंजीनियरिंग में डिग्री प्राप्त अराफात ने 1944 में फिलस्तीनी छात्र लीग में प्रवेश ले कर अपनी राजनीतिक गतिविधियां बढ़ाईं. बाद में 1952 से ले कर 1956 तक वह इस के अध्यक्ष भी रहे. सन 1956 में ही अपने अनेक साथियों के साथ इन्होंने 'अल फतह' नामक संगठन को जन्म दिया.

अलफतह संगठन के निर्माण के साथ ही अराफात ने 1956 में मिस्र में इंजीनियर के पद और 1956 से ले कर 1965 तक कुवैत में कार्य किया. जून 1968 में अल फतह ने सर्वसम्मति से अराफात को अपना अध्यक्ष चुन कर फिलस्तीन की समस्या को अंतरराष्ट्रीय मंच पर उठाने का जोरदार अभियान शुरू किया. 1969 में अल फतह फिलस्तीनी मुक्ति संगठन में मिल गया. कुछ अरसे बाद अपनी राजनीतिक गतिविधियों के कारण अराफात फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अन्य संगठनों में भी प्रभावशाली नेता माने जाने लगे. 1973 में वह फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के राजनीतिक विभाग के प्रमुख बन गए.

सन 1962 में मोरक्को की राजधानी रबात में हुए अरब देशों के शिखर सम्मेलन में 18 अरब बादशाहों, राष्ट्रपतियों, अमीरों और शेखों ने फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को फिलस्तीनी जनता के प्रतिनिधि के रूप में मान्यता दे दी और यासर अराफात को इस का नेता मान लिया गया. अराफात को सब से अधिक प्रसिद्धि मिली सन 1964 में जब उन्होंने इजराइल समेत दुनिया के अनेक राष्ट्रों के विरोध के बावजूद संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में प्रथम बार भाषण दे कर फिलस्तीनी समस्या को विश्व के सामने रखा. महासभा के मंच पर अराफात ने 'यहूदियों को समुद्र में 'डुबोने' की धमकी दी. जोलियट क्यूरी गोल्ड मैडल प्राप्त यासर अराफात को 1975 में विश्व शांति परिषद ने सम्मानित किया.

सन 1969 से ले कर 1975 तक फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के साथी ग्रुपों के

छापामारों की अपहरण और आतंक की विश्वव्यापी घटनाओं ने समस्त विश्व को चौंका दिया. तब जगहजगह हवाई अपहरण की घटनाएं घटने लगी थीं. इन्हें वर्षों में

अमरीकी राष्ट्रपति के विशेष प्रतिनिधि फिलिप हबीब : कारगर भूमिका निभाई.

म्यूनिक ओलंपिक का मर्मस्पर्शी कांड हुआ. फिलस्तीनी छापामारों ने अनेक इजराइली खिलाड़ियों को मौत के घाट उतार दिया.

अराफात को अंतरराष्ट्रीय मान्यता

संयुक्त राष्ट्र संघ में भाषण देने के बाद अराफात का राजनीतिक महत्त्व तेजी से बढ़ता गया. अपने मिलनसार स्वभाव, नरम नीतियों और दौड़धूप के बल पर अराफात को जो राजनीतिक पहचान मिली, वहां वह फिलस्तीनी जनता के एकमात्र नेता बन गए. 1980 और 1981 में फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के इस नेता ने काफी उन्नति की. अक्तूबर, 1981 में अराफात का क्रैमलिन (मास्को) में भव्य स्वागत किया गया और रूस ने उन के संगठन को राजनीतिक दरजा मिल गया. अराफात ने तत्काल रूस में अपना दूतावास खोल दिया. रूस के बाद ग्रीस के समाजवादी प्रधान मंत्री पपन्द्रिउ ने भी फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को मान्यता दे कर अपने यहां दूतावास खोलने की अनुमति दे दी. बाद में भारत ने भी अपने यहां इस संगठन को मान्यता दे कर दूतावास खोलने की इजाजत दे दी.

भारत द्वारा फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को मान्यता देने के बाद चीन ने यासर अराफात का चीन में भव्य स्वागत कर हर तरह की सहायता देने का तो वचन दिया, किंतु दूतावास खोलने के प्रश्न पर वह चुप रहा. चीन का मिस्र से प्रेम है, अतः वह भला मिस्र से नफरत करने वाले देश को इतना बड़ा दरजा कैसे दे सकता है?

यासर अराफात की जगहजगह भागदौड़ का सब से बड़ा परिणाम यह निकला कि उन के संगठन को 1980-81 के दौरान विश्व के करीब 110 मुसलिम, एशियाई, यूरोपीय और कम्यूनिस्ट देशों द्वारा मान्यता मिल गई. यासर अराफात ने जगहजगह जा कर फिलस्तीनियों के भविष्य के बारे में बयान दे कर जनमानस में सहानुभूति पैदा करने की कोशिश की.

वैसे यह उल्लेखनीय है कि आतंकवादी संगठन के नेता होने के बावजूद यासर अराफात वक्त पड़ने पर नरम और बीच की नीतियों पर चलने पर भी तैयार रहते हैं. यही कारण है कि इन के विचारों और नीतियों से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के अन्य संगठनों के नेता अबु दाऊद (ब्लैक सेप्टेंबर), अहमद जिबरिल (पैल्प संगठन), जार्ज हब्बास (पैल्प संगठन की एक अन्य शाखा के नेता), वादी हदाद, अबु अल अब्बास (फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता), असम अल वादी (सैका सीरियन ग्रुप के नेता) और नैफ हावतमह (पी.डी.एफ.एल. पी. के नेता) से काफी मतभेद रहे. लेकिन अराफात में एक विशेषता यह भी है कि वह विभिन्न आतंकवादी छापामारों के गुटों के मध्य कुछ बातों पर एकता और समझौता करवाने में माहिर हैं. पिछले आठ वर्षों से अराफात फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के सर्वेसर्वा नेता बन कर फिलस्तीन की समस्या को विश्व

मंच पर काफी [illegible] हैं.

अराफ्फात की सब से बड़ी परेशानी यह रही है कि वह अपने गुटों के मध्य तो एकता स्थापित करने में सफल रहे हैं, लेकिन कट्टरपंथी और मजहबी मुसलिम शासकों के मध्य इजराइल के खिलाफ एकजुटता पैदा करने में उन्हें सफलता नहीं मिल सकी है.

अराफात की नीतियों के परिणामस्वरूप आज फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को जहां काफी देशों ने मान्यता दी है, वहां करोड़ों रुपयों की आर्थिक और फौजी सहायता भी दी है.

सन 1974 में संयुक्त राष्ट्र संघ के मंच पर यहूदियों को समुद्र में डुबोने की घोषणा के ठीक आठ वर्ष बाद इजराइल ने यासर अराफात को अपने शूरवीर आतंकवादी छापामारों के साथ पश्चिमी बेरूत में घेर कर साफ कह दिया है– कि यहां से भी भागो. पश्चिमी बेरूत की इजराइल ने कड़ी नाकेबंदी कर रखी है. यहां तक कि बेरूत की बिजली और पानी की लाइन भी बारबार काट कर फिलस्तीनी छापामारों को इजराइल की शर्तों को मानने के लिए मजबूर करने की कोशिश की है.

आज पश्चिमी बेरूत में इतिहास अपने-आप को दोहरा रहा है. यहां की स्थिति वैसी ही है जैसी 1947 में तेल अबीब में रहने वाले यहूदियों की थी. आज इजराइल ने फिलस्तीनी छापामारों को अपने घेरे में कर रखा है, ठीक उसी तरह जैसे 1947 में ब्रिटेन की सेनाओं ने यहूदी आतंकवादी संगठनों के छापामारों को अपने घेरे में ले लिया था. इजराइल के वर्तमान प्रधान मंत्री बेगिन उस समय एक यहूदी संगठन इरगन में इजराइल के निर्माण के लिए काम करते थे.

दोस्तों द्वारा धोखा

विचित्र बात यह है कि आज मुसलमान ही मुसलमान को अपने यहां शरण देने में हिचकिचा रहा है. करीब 42 मुसलिम देश, जो काफी बड़ी मुसलिम जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते हैं, मौत के मुंह पर खड़े

फिलस्तीनियों को अपने यहां बुलाने में आनाकानी कर रहे हैं. ऐसा लगता है जैसे सभी इजराइल की ताकत से घबराते हैं. इजराइल के सभी पड़ोसी मुसलिम देश जानते हैं कि जब इजराइल मारता है तो बहुत बुरी तरह मारता है. सब से मजेदार बात तो यह है कि इजराइल को नेस्तनाबूद करने की बात कहने वाले अराफात ही अब इजराइल के अस्तित्व को मानने और संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा पारित 242 और 338 नंबर के प्रस्तावों को स्वीकार करने की सरेआम घोषणा कर रहे हैं.

इधर रूस द्वारा बरती गई तटस्थता से अब फिलस्तीनी छापामारों के आगे लेबनान को छोड़ने के अलावा और कोई चारा नहीं रह गया है. अमरीका को दिनरात कोसने वाले यासर अराफात रूस व चीन से निराश हो कर अब अमरीका से सहयोग की आशा कर रहे हैं.

अमरीका के फिलिप हबीब इस बात की कोशिश में हैं कि पांच से ले कर छः हजार फिलस्तीनी छापामार लेबनान से बाहर चले जाएं. अमरीका पश्चिमी बेरूत में घिरे फिलस्तीनी छापामारों को बाहर जाने के लिए हवाई जहाज और नौकाएं देने को तैयार है. ऐसी ही पेशकश फ्रांस और ग्रीस ने भी की है.

एक प्रस्ताव यह भी है कि लेबनान की सेना पश्चिमी बेरूत का सारा भार खुद ले और फिलस्तीनी छापामारों को निशस्त्र कर दे. कुछ अरब देशों द्वारा फिलस्तीनी छापामारों को सीमित संख्या में अपने यहां शरण देने की पेशकश करने से पहले यह सुझाव रखा गया था कि सीरिया सभी फिलस्तीनी छापामारों को अपने यहां स्थायी तौर पर आने की इजाजत दे. लेकिन सीरिया अपने यहां फिलस्तीनियों का दफ्तर बनाने की छूट ही देने को तैयार था.

हाल ही में वाशिंगटन में सऊदी अरब व सीरिया के विदेश मंत्रियों ने रेगन प्रशासन से लेबनान समस्या के समाधान के लिए बातचीत की, जो आगे नहीं बढ़ पाई. एक तरफ इजराइली विमानों की भीषण बमबारी

लेबनान की राजधानी बेरूत का अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा : इजराइल की बमबारी का एक खास निशाना

दूसरी तरफ मुसलिम देशों की बेवफाई कर बेचारे अराफात काफी परेशानी में

पशिचम एशिया में इजराइल की ...त के आगे मुसलिम देश किंकर्तव्यविमूढ़ ...ए हैं. इराक और ईरान आपस में लड़ कर ...र हो चुके हैं, सऊदी अरब के शासक युद्ध ...अपने तेल कुओं तक नहीं खींचना चाहते, ...या व जोर्डन की इजराइल गत युद्ध में ...न दुर्गति कर चुका है और हाल की झड़पों ...न की काफी सेना मैदाने जंग में मात खा ... है. सुना यह भी जाता है कि सीरिया ने ...न में इजराइल का विरोध करना बंद ...का एक गुप्त समझौता भी कर लिया है. ...से इजराइल का सन 1979 में कैंप डेविड ...समझौता हो चुका है. अब कौन सा ऐसा ...है जो इजराइल को धमका सके? ...रूस की इस युद्ध में तटस्थता से साफ जाहिर हो चुका है कि वह दूर खड़े हो कर मात्र एक तमाशबीन की भूमिका अदा कर सकता है, वह अपनेआप को युद्ध में फंसाना नहीं चाहता. इधर फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता यासर अराफात की हालत इतनी पतली हो गई है कि फिलस्तीनी मुक्ति संगठन से संबद्ध अनेक संगठन यासर अराफात के खिलाफ हो गए हैं और अराफात को किसी न किसी प्रकार नीचा दिखाने के चक्कर में हैं. फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के ढेर सारे अन्य संगठनों के नेता,जो अनेक मुसलिम देशों के समर्थक हैं, अब चुपचाप इधरउधर खिसकने की तैयारी में हैं. जार्ज हब्बास ने तो सीरिया या दक्षिणी यमन जाने की तैयारियां भी शुरू कर दी हैं.

फिलस्तीन के निर्माण की संभावना

राजनीतिक पर्यवेक्षकों का कहना है कि यह संभव है और यह निश्चित भी लगता है

प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी के साथ यासर अराफात : भारत द्वारा भी फिलस्तीनी मुक्ति संगठन को मान्यता.

कि फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के सैनिक और छापामार सीरिया नियंत्रित लेबनानी इलाके बेका घाटी या सीरिया में ही चले जाएं. सीरिया में इस समय मुक्ति संगठन के छः प्रशिक्षण केंद्र हैं और वहां करीब पांच लाख फिलस्तीनी रहते हैं. सीरिया ही एक ऐसा देश है, जहां बस कर फिलस्तीनी छापामार संगठित हो सकते हैं. अनुमान है कि आगे आने वाले समय में आतंकवाद की घटनाओं में एकदम से वृद्धि हो जाएगी. एक संभावना यह भी है कि लेबनान से फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के फौजी सैनिकों की निकासी के बाद अमरीका इजराइल पर इस बात का दवाव डालेगा कि वह जोर्डन नदी का पश्चिमी तट और गाजा पट्टी को फिलस्तीनी शरणार्थियों को सौंप दे. इस क्षेत्र में फिलस्तीनियों को स्वायत्तता दे कर स्वतंत्र फिलस्तीन राज्य की स्थापना की शुरुआत की जा सकती है.

शांति और युद्ध के नए बनतेबिगड़ते समीकरणों के बीच फिलस्तीनी मुक्ति संगठन के नेता यासर अराफात फिलहाल पश्चिमी बेरूत की गलियों में अपने नेतृत्व को बचाए रखने के लिए अपने और लेबनानी लोगों का हौसला बंधाते घूम रहे हैं. और लेबनानी अल्लाताला से फिलस्तीनियों के लेबनान से चले जाने की दुआ मांग रहे हैं. इस युद्ध ने फिलस्तीनियों को शायद इस बात से परिचित करा दिया है कि उन्हें अकेले आगे चलना पड़ेगा. उधार की ली हुई बंदूकों, तोपों और खोखले, जोशीले नारों से युद्ध नहीं लड़ा जाता. युद्ध लड़ा जाता है अदम्य साहस और देशभक्ति की मर मिटने वाली भावना से

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. उन्हें आप के नाम के साथ प्रकाशित किया जाएगा और प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण पर 15 रुपए एवं सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. संस्मरण के साथ अपना नाम व पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, ई-3, मुक्ता, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

पिछले साल की बात है. मैं चौथी कक्षा में विज्ञान पढ़ा रहा था और बच्चों को अंडज और जरायुज जंतुओं के बारे में बता रहा था. मैं ने बच्चों से अंडज जंतुओं के नाम पूछे तो उन्होंने चिड़िया, कबूतर, तोता आदि के नाम बताए.

मैं ने चुटकी लेते हुए बच्चों से पूछा, "चिड़िया छोटी होती है, इसलिए उस का अंडा भी छोटा होता है तो बताओ हाथी का अंडा कितना बड़ा होगा?"

इतने में ही मेरे एक दूसरे साथी अध्यापक कक्षा में कुछ काम से आए. एक लड़का जो बहुत ही चालाक था, उस ने तुरंत ही मेरे साथी अध्यापक से पूछ लिया, "क्यों श्रीमानजी, हाथी का अंडा कितना बड़ा होता है?"

इस पर मेरे साथी अध्यापक ने अकड़ कर कहा, "चल बे; हाथी अंडा नहीं देता, हथिनी देती है."

यह सुनते ही सभी बच्चे खिलखिला पड़े. मैं खामोश रह गया.

—गोपालप्रसाद गुप्ता

*

बात कुछ समय पहले की है. हमारी कक्षा के अध्यापक हम से प्रश्न पूछ रहे थे. उन्होंने तीन लड़कियों को उत्तर देने के लिए खड़ा किया किंतु वे सभी प्रश्नों के उत्तर देने में असमर्थ रहीं. तब अध्यापक ने एक लड़के से प्रश्न पूछा. किंतु वह भी उत्तर न दे सका. इस पर अध्यापक ने कहा, "भई, लड़कियां यदि प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहीं तो कम से कम तुम्हें तो उत्तर देना चाहिए. लड़कियों का क्या है, इन की तो शादी हो जाएगी."

यह सुन कर वह लड़का तुरंत मायूसी से बोल पड़ा, "श्रीमान, तब मैं क्या कुंवारा ही रह जाऊंगा?"

—राजकुमार शर्मा

*

तब मैं 10वीं कक्षा में पढ़ता था. हमारी कक्षा में एक छात्र गणित में बहुत होशियार था. उसे अर्द्धवार्षिक परीक्षा में 100 में से 97 अंक प्राप्त हुए थे. प्राचार्य महोदय ने यह देख कर उस की कापी एक दूसरे अध्यापक को यह जांचने के लिए दी कि कहीं उसे जानबूझ कर ज्यादा अंक तो नहीं दे दिए गए.

परंतु दूसरे शिक्षक ने कापी जांच कर यह नोट लगा कर कापी वापस दे दी कि "जब इस छात्र ने सारे ही प्रश्न सही हल किए हैं तो इसे 100 में से 100 अंक ही मिलने चाहिए, इस के तीन अंक भी क्यों काटे गए हैं?"

बाद में अंक सूची में उस छात्र के गणित में 100 में से 100 ही अंक थे.

—दिलीप घामारीकर (सर्वोत्तम)
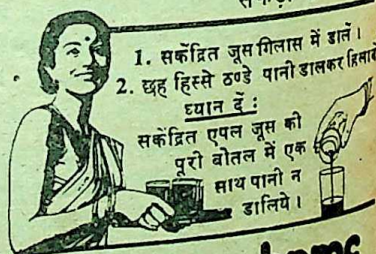
ात: सात बजे मैं अंतरराज्यीय बस अड्डे पर जा पहुंचा, लेकिन दिल्ली की र जाने वाली एक भी बस वहां दिखाई न तीसपैंतीस व्यक्ति पहले से ही बस की तीक्षा कर रहे थे. मैं ने इधरउधर पूछने की पेक्षा पूछताछ खिड़की से ही जानकारी प्त करना उचित समझा, पर उस खिड़की र कोई न था. लोग आते और खिड़की में झांक कर चले जाते. वैसे वहां बसों की मय सारणी भी लगी थी, पर उसे पढ़ कर गा कि यह केवल यात्रियों को बहकाने के लिया है, क्योंकि जब बसों का ही कुछ पता नहीं है तो समय सारणी को क्या चाटना है?

एक यात्री कह रहा था, "पौन घंटा हो गया अब तक कोई बस नहीं आई."

मैं जानता था कि एक्सप्रेस बस का समय ठीक साढ़े सात बजे है, लेकिन अब 7.35 हो चुके थे. सवारियां बढ़ती जा रही थीं. अचानक मेरी दृष्टि पूछताछ खिड़की पर पड़ी तो एक व्यक्ति बैठा दिखाई दिया.

मैं ने जा कर पूछा, "भाई साहब, दिल्ली के लिए एक्सप्रेस बस कब जाएगी?"

"आएगी तो जाएगी," उस का उत्तर था.

"क्या मतलब?"

गुबार देखता रहा

व्यंग्य • रमेशचंद्र छबीला

स के रंगढंग देख र मेरी समझ में हीं आ रहा था कि क्या करूं. हर यात्री पने राग अलाप रहा . पर जब बस ने पना कमाल दिखाया मैं भौंचक्का रह ।.

''आप एक्सप्रेस की बात कर रहे हैं, अभी तो पैसेंजर बस का भी पता नहीं है.''

''कहां लापता हो गई?''

''मरम्मतघर से बस आएगी तब जाएगी.''

''कब तक आएगी?''

''पता नहीं.''

''जब आप को पता ही नहीं तो इस पूछताछ खिड़की पर आप के बैठने की जरूरत क्या है?'' मैं ने कहा.

वह बाबू मेरी ओर घूर कर रह गया.

ठीक पौने आठ बजे एक बस आई, जिस पर 'अति तीव्र' की पट्टिका लगी हुई थी. दिल्ली की ओर जाने वाली सवारियां धक्कामुक्की कर के उस में घुसने लगीं. पांच मिनट में ही बस खचाखच भर गई. कुछ लोग बीच में खड़े हो गए.

बस परिचालक ने चेतावनी भरे स्वर में कहा, ''इस बस में रास्ते की सवारी न बैठे. बस जमुनापुर और गोपीगढ़ ही रुकेगी. यह एक्सप्रेस बस है—सुपर फास्ट.''

लेकिन बस की हालत देख कर लग रहा था कि यह एक्सप्रेस तो क्या साधारण बस के रूप में भी सही समय पर दिल्ली पहुंचा दे तो गनीमत है. टूटीफूटी खिड़कियां. कई स्थानों से गाड़ी की चादर कटी या उखड़ी हुई. बिलकुल घटिया सीटें. किसी की रैक्सीन फटी हुई, किसी का फोम निकला हुआ.

ड्राइवर ने बस चालू की. बस चल दी तो जरा जान में जान आई. परिचालक टिकट बनाने लगा. लेकिन यह क्या? कुछ दूर चल कर बस रोडवेज वर्कशाप में प्रविष्ट हो गई.

''अब क्या कमी रह गई?'' एक यात्री ने ड्राइवर से पूछा.

''डीजल लेना है.''

''जब आप यहां से चले थे तब आप को लेना चाहिए था.''

''याद नहीं रहा था.''

बस में डीजल डलवाने के बाद ड्राइवर ने बीड़ी पीते हुए एक मिस्तरी से कहा, ''अरे कल्लन मियां, जरा ब्रेक सही कर दो. आज फिर कुछ गड़बड़ है.''

मिस्तरी कल्लन ने बीड़ी का कश ले कर धुआं छोड़ते हुए कहा, ''अभी लो उस्ताद...''

अधिकांश यात्री नीचे उतर गए. आधे घंटे के बाद बस वर्कशाप से बाहर निकली. लगभग 20 किलोमीटर चल कर बस अचानक रुक गई. ड्राइवर ने स्टार्ट करने का बहुत प्रयत्न किया, पर बस टस से मस नहीं हुई. केवल घुर्रघुर्र कर के यात्रियों को चिढ़ा देती.

ड्राइवर ने मेरी ओर देख कर कहा, ''स्टार्ट नहीं हो रही है. धक्का लगाना पड़ेगा.''

सुन कर मैं ने इधरउधर देख कर कहा, ''भई ड्राइवर, जब तुम्हारी बस इतनी खटारा है तो इस से 'सुपर फास्ट' का नाम बदनाम कर यात्रियों को धोखा देने की क्या जरूरत थी? अब तक 20 किलोमीटर ही आए हैं. डेढ़ घंटा हो चुका है. अभी दिल्ली 200 किलोमीटर दूर है. तुम लोग बस को बिलकुल ठीक करा कर वर्कशाप से क्यों नहीं निकालते? ऐसी बसों में यात्रा करा कर क्यों लोगों का समय और पैसा बरबाद करते हो?''

''बाबूजी, हम तो अपनी तरफ से देखभाल करा कर ही वर्कशाप से निकालते हैं, पर मशीनरी है. इस का क्या भरोसा कि कब बिगड़ जाए,'' ड्राइवर ने बड़े आराम से कहा और सिगरेट सुलगा ली.

परिचालक ने यात्रियों से कहा, ''आप लोग नीचे आ कर बस को धक्का मारिए.''

यात्री एकदूसरे की ओर देखते हुए बगलें झांकने लगे. कौन मारे धक्का? मन ही मन उस मनहूस घड़ी को कोस रहे थे जब इस सुपर फास्ट बस में घुसे थे.

परिचालक नीचे उतर कर जिस यात्री की ओर देखता, वही मुंह फेर लेता. परिचालक नीचे खड़ा हो कर चिल्लाता रहा, पर चिकने घड़े की तरह किसी भी यात्री पर कोई प्रभाव न पड़ा.

परिचालक ने पुनः बस में घुस कर यात्रियों से कहा, ''भाई साहब, जरा कष्ट
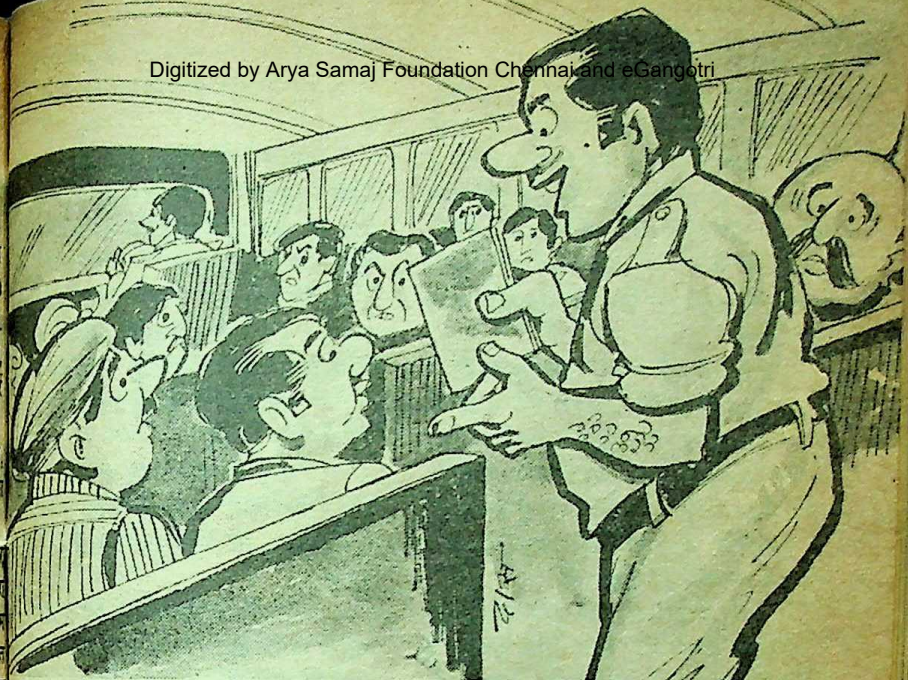
"यह तो मशीनरी है लेकिन आदमी का ही पता नहीं कब और कहां रुक जाए," निरीक्षक ने मुसकरा कर कहा.

...जिए."

"हम बस को धक्का नहीं लगाएंगे. ...ने क्यों नहीं बताया कि इस फटीचर बस ...धक्के भी लगाने पड़ते हैं? हम क्या नौकर ..." एक यात्री ने कहा.

"तो ठीक है खड़ी रहने दो बस, हमारा ...ा जाता है?" परिचालक बोला.

"हम ने कभी प्राइवेट बसों के यात्रियों ...धक्के मारते नहीं देखा. प्राइवेट बसों के ...वरों, परिचालकों की सेवा, व्यवहार ...ना बढ़िया होता है कि यात्रा करने का मजा ...जाता है. पर उत्तर प्रदेश परिवहन की ये ..."

"तभी तो प्राइवेट बसों के मालिक लाभ ...ते हैं. हमारे प्रदेश की रोडवेज हर साल ...में रहती है, फिर भी सरकार की आंख ...खुलती."

"चलो छोड़ो, यार, आओ पहले धक्का ...ने हैं. दिल्ली पहुंचने की चिंता और जल्दी ...है, ड्राइवर या परिचालक को नहीं," उस यात्री ने अपने साथी से कहा.

चौदहपंद्रह यात्री उतर गए. बस को धकेला तो बस चालू हो गई. बस चालू होते ही यात्रियों के चेहरों पर प्रसन्नता फैल गई.

बस तीनचार किलोमीटर दूर ही चली थी कि पुनः रुक गई. यात्रियों में बेचैनी, घबराहट और परेशानी बढ़ गई. पीछे बैठे यात्री गरदन ऊपर उठा कर देखने लगे कि क्या मामला है. तभी एक सांवले रंग का गोलमटोल व्यक्ति हाथ में एक डायरी लिए बस में घुसा और सवारियों को गिनने लगा.

मैं जान गया कि यह बस निरीक्षक है जो रास्ते में कहीं भी बस रुकवा कर यात्रियों की गिनती करता है. इस को भी अभी आना था, जब कि बस पहले से ही बहुत लेट थी.

एक बाबूजी ने कहा, "भाई साहब, आप यात्रियों की चेकिंग करते हैं, कभी बस की हालत भी चैक कर लिया करो. यह बस सुपर फास्ट नहीं, खटारा है. कुछ पता नहीं

कब और कहां रुक जाए."

"भाई साहब," निरीक्षक ने मुसकरा कर कहा, "यह तो मशीनरी है, आदमी का ही पता नहीं कब और कहां रुक जाए. सरकार के मंत्रियों को अपना पता नहीं कि कब त्यागपत्र ले लिया जाए. इसलिए, भाई साहब, इनसान जिस हाल में भी हो, बस मुसकराता रहे," कहते हुए वह बहुत जोर से हंसा और नीचे उतर गया.

एक पत्रकार यात्री ने अपने साथी से कहा, "इन सरकारी अफसरों की जड़ों को हम पहचानते हैं. ये चेकिंग केवल खानापूरी के लिए करते हैं. इन का महीना बंधा होता है. देखा, कितना गोलमटोल हो रहा है जनता का माल खा कर. भ्रष्ट अधिकारियों की धज्जियां तो हम पत्रकार ही उड़ाते हैं."

यात्री इधरउधर की बातें करते रहे. कुछ यात्री ऊंघने लगे. मैं भी आंखें बंद कर के विचारों में खो गया. कुछ देर बाद ऐसा लगा कि बस धीमेधीमे चल रही है.

मैं ने आंखें खोलीं. वास्तव में बस बहुत कम गति से चल रही थी. यात्री भौंचक्के से एकदूसरे की ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देख रहे थे. समझ में नहीं आ रहा था कि क्या मामला है.

ड्राइवर के पीछे बैठे एक व्यक्ति ने पूछा, "ड्राइवर साहब, बस की चाल कम क्यों कर दी? जरा तेज चलाओ न. बस का स्पीड मीटर भी बंद पड़ा है."

मैं ने तो पूरा एक्सेलेरेटर दबा रखा है. इस से तेज नहीं दौड़ सकती. इंजन के छोटे पंप में कहीं गड़बड़ हो गई है," ड्राइवर बोला.

"भई, सारी गड़बड़ का ठेका इस बस ने ही ले रखा है क्या?"

"भला मैं क्या कर सकता हूं? आगे जमुनापुर आने वाला है, वहां तक ही बस चली जाए तो गनीमत समझो," ड्राइवर बोला.

यात्रियों के चेहरे पर क्रोध की रेखाएं गहरी होती जा रही थीं. बस की गति जितनी कम हो रही थी, यात्रियों का खून उतना ही अधिक उबल रहा था.

एक लंबेचौड़े पहलवान टाइप व्यक्ति ने ड्राइवर को घूर कर कहा, "वैसे तो उतर

राज्य परिवहन की बसें परेशान करने में प्रसिद्ध हैं ही, लेकिन आज इस खटारा डब्बे से ज्यादा गुस्सा तुझ पर आ रहा है. क्या तुझे बस की हालत पता नहीं थी? क्या आज ही ड्राइवर के रूप में भरती हुआ है? क्या तू ने सब यात्रियों को उल्लू का पट्ठा समझ रखा है?"

ड्राइवर ने पहलवान की ओर देखा और थूक निगल कर बोला, "पहलवानजी, आप तो नाराज हो रहे हैं."

"और क्या खुश होऊं? दिल कर रहा है तुझे उठा कर बाहर फेंक दूं. हम लोगों का कितना वक्त बरबाद हुआ. मैं ने दिल्ली में ठीक तीन बजे एक दंगल में कुश्ती लड़नी है. उम्मीद थी एक्सप्रेस बस है, बारह साढ़े बारह तक पहुंचा देगी, लेकिन दस तो तू ने यहीं बजा दिए हैं. हरामखोर..."

"पहलवानजी, गाली मत दो."

"अबे, मैं तेरा भुरता बना दूंगा," पहलवान ने ड्राइवर को दबोचना चाहा.

परिचालक व अन्य यात्रियों ने बीचबचाव करा दिया. पहलवान क्रोध से ड्राइवर को घूरता हुआ बड़बड़ाता रहा.

पत्रकार यात्री चुप न रह सका. वह बोला, "हमारे देश के नेता और मंत्री भी तो इन खटारा बसों में यात्रा नहीं करते, क्योंकि वे जानते हैं कि इन बसों में यात्रियों की क्या दुर्गति होती है. वे जनता को सुविधा देने के लिए नहीं, किराए या टैक्स बढ़ाने के लिए ही कुरसी पर बैठते हैं. उन्हें यात्रियों के आराम की नहीं, अपने आराम की चिंता रहती है."

यात्री इधरउधर की बातें करते रहे. बस रुक गई. ड्राइवर ने बस को आगे बढ़ाना चाहा, लेकिन बस घूंघूं करती रही. परिचालक ने बोनट खोला.

ड्राइवर ने इंजन की ओर देखभाल कर कहा, "गाड़ी नहीं जा सकेगी."

यात्री चौंके नहीं, क्योंकि पूत के पैर पालने में ही दिखाई दे रहे थे. सभी जानते थे कि ऐसा ही होगा. सभी को पहुंचने की जल्दी थी. हर किसी को कोई न कोई जरूरी काम था. पर क्या किया जा सकता था? उन के चेहरे पर घृणा, अवसाद और वैमनस्य की

रेखाएं बढ़ने लगीं.

मैं ने परिचालक से पूछा, "अब क्या कार्यक्रम हैं?"

"गाड़ी तो जाएगी नहीं. आप लोगों को दूसरी बस से दिल्ली भेज दिया जाएगा," परिचालक ने कहा.

"यदि दूसरी बस में जगह न हुई तो?"

"जितने यात्री उस बस में आ सकेंगे, उन्हें भेज दिया जाएगा, फिर अगली बस की प्रतीक्षा करनी होगी."

"इस का मतलब यह हुआ कि आने वाली बसों में जगह होगी तो जा सकेंगे नहीं तो यहीं लावारिस सवारियों की तरह खड़े रहना पड़ेगा?"

"क्या करें, साहब, मजबूरी है."

"क्या तुम इस छोटे पंप को ठीक नहीं करा सकते? जमुनापर केवल दो किलोमीटर ही तो दूर है."

"अफसोस तो इसी बात का है कि हम लोग गाड़ी की मरम्मत आदि नहीं करा सकते. यह काम वर्कशाप में ही होगा. दो लाख रुपए की बस में हमें 10-20 रुपए का काम कराने की छूट है. हम अधिक रुपयों का काम करा भी लें तो कौन रुपए देगा? गाड़ी खराब होने पर हम वर्कशाप को सूचना दे देते हैं. वर्कशाप से आ कर मिस्तरी गाड़ी ठीक करते हैं. यदि सरकार हमें हजार पांच सौ रुपए का काम कराने की छूट दे दे तो..."

एक यात्री बोल उठा, "सरकार का दिवाला ही निकल जाए. फिर तो ड्राइवर, परिचालक गाड़ी में काम कराने के फर्जी बिल बनवा कर रुपए डकारने लगेंगे. वर्कशापों में कितनी हेराफेरी होती है, किसे पता नहीं?"

परिचालक ने बुरा सा मुंह बना कर उस यात्री की ओर देखा.

मैं भी अन्य यात्रियों के साथ नीचे उतर गया. बस में कुछ महिलाएं व बच्चे ही बैठे थे. लगभग आधा घंटा प्रतीक्षा करने के बाद परिवहन की एक बस देख कर आंखों की चमक व हृदय की धड़कन बढ़ गई.

बस रुकी. लेकिन उस में पैर रखने की जगह न थी. इस बस के परिचालक ने नीचे खड़े हुए यात्रियों की ओर इस प्रकार देखा, जैसे कोई दुकानदार मुफ्तखोरों की तरह देखता है. वह सुपर फास्ट एक्सप्रेस के परिचालक की बात सुन कर बोला, "यार, इस बस में यात्रियों की हालत तो तुम देख रहे हो. गरमी के इस मौसम में यात्रियों का दम घुट रहा है. मैं दोचार सवारियां ही ले जाऊंगा."

बस में घुसने के लिए फिर धक्कामुक्की शुरू हो गई. 'पहले आप... पहले आप' के पुराने फार्मूले को भाड़ में झोंक कर 'पहले मैं... पहले मैं,' का फार्मूला प्रयोग में लाया जा रहा था. सभी को जल्दी थी, जरूरी काम थे. महिलाएं व बच्चे भीड़ में दब कर चिल्ला रहे थे.

पहलवान भला पीछे क्यों रहता? उस ने पांचसात लोगों को एक तरफ धकेला और बस में घुसते हुए परिचालक से बोला, "मुझे तीन बजे कुश्ती लड़नी है दिल्ली पहुंच कर."

सात व्यक्तियों के बस में घुसते ही अंदर ठसाठस खड़ी सवारियां चीखने लगीं, "भई कंडक्टर, कहां भर रहे हो? हम इनसान हैं, भेड़बकरी नहीं, चलो बहुत हो गए. गरमी में मारने का इरादा है क्या?"

बड़ी कठिनता से परिचालक ने खिड़की बंद करते हुए कहा, "पीछे बस आ रही है. वह बिलकुल खाली है. आप सभी उस में आ जाना." फिर सीटी देते ही बस चल दी.

जो यात्री चढ़ नहीं सके थे, वे हाथ मल कर खिसियाने से हो गए. मैं भी बाकी यात्रियों के साथ खड़ा हुआ जाती हुई उस बस का गुबार देखता रहा. अब दूसरी बस की प्रतीक्षा आरंभ हो चुकी थी. •

आभूषण

ऐश्वर्य का भूषण सज्जनता, शूरता का वाकसंयम, ज्ञान का शांति, बलवान का क्षमा, धर्म का निश्छलता और सब गुणों का आभूषण केवल शील है.

—भर्तृहरि

दो मुस्कराहटों के बीच

बोलती रहो
यूं ही,
कुछ न कुछ
बोलती रहो.

मुझे थोड़े से फूल चाहिए
उन फूलों में से
जो बिखरते हैं निरंतर
तुम्हारे होंठों से,
दो मुस्कराहटों के बीच.

मैं उन फूलों की परछाइयों को
शब्द बना कर
अपनी कविता में रचा लूंगा.
और
शब्दों से गीतों तक जाती
उस पगडंडी को
जो मुझे तुम से
और तुम्हें मौसम से
जोड़ती है.
तुम्हारी देह की महक तक
इसलिए रुको मत
बोलती रहो
यूं ही
कुछ न कुछ.

—हरीश निगम

धूपछांव

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

डोली से उतरते ही दुल्हन को चप्पलें पड़ीं

झोकर के निकट स्थित ग्राम दतोतर में पिछले दिनों एक शादी में एक बड़ी विचित्र घटना घटी.

एक प्रत्यक्षदर्शी के अनुसार ग्राम कंपेली से एक बरात दतोतर ग्राम गई. प्रणय सूत्र की मधुर बेला में डोली उतरते ही दूल्हे ने दुलहन की चप्पलजूतों से पिटाई करनी शुरू कर दी और तब तक पीटता रहा जब तक कि वह बेहोश न हो गई. इस से उपस्थित लोगों में हैरानी फैल गई.

बेहोश दुलहन के मुंह पर पानी छिड़क कर उसे होश में लाने का प्रयत्न किया गया. होश में आने के बाद दुलहन न बोली तो दूल्हे से घटना का कारण पूछा गया. दूल्हे का एक ही उत्तर था कि दुलहन से ही पूछो.

आखिर दुलहन ने ही बताया. "डोली के अंदर उन्होंने मेरा घूंघट उघाड़ दिया, जिसे मैं सहन न कर सकी. मैं ने सिर पर एक चप्पल जड़ दी. उस समय तो यह चुप रहे लेकिन डोली से जैसे ही उतरी कि वह शुरू हो गए. फिर क्या हुआ मुझे पता नहीं. मैं चक्कर खा कर गिर गई."

वरवधू पक्ष के लोगों ने इस घटना पर कुछ नहीं कहा. क्या कहते? दलहन को विदा दे दी गई थी. दोनों पक्ष मौन थे —**दैनिक स्वदेश, इंदौर (प्रेषक :सुनील मेहता) (सर्वोत्तम)**

*

हथकड़ी से बंधे हुए भी हाथ की सफाई

खैरथल (अलवर) में आठ सिपाहियों के पहरे में एक जेब कतरे ने अपने हथकड़ी लगे हाथों से ही एक यात्री की जेब काट कर अपने हाथ की सफाई से लोगों को आश्चर्य में डाल दिया.

प्राप्त जानकारी के अनुसार राज्य परिवहन निगम की किशनगढ़ से धासोली जा रही एक बस में सवार एक पाकिस्तानी यात्री की जेब से दिलीपसिंह नामक एक अभियुक्त ने, जो आठ सिपाहियों के पहरे में पेशी के लिए जा रहा था, एक हजार रुपए निकाल लिए.

बाद में तलाशी लेने पर अभियुक्त की जेब से रुपए और पासपोर्ट बरामद कर के उस के मालिक के हवाले कर दिए गए. —**सन्मार्ग, कलकत्ता, (प्रेषक : बल्लभदास बिन्नानी)**

*

लुधियाना के होटल में गब्बरसिंह

लुधियाना के एक स्थानीय होटल में एक नकली गब्बरसिंह द्वारा रिहर्सल किए जाने का एक दिलचस्प समाचार मिला है.

बताया जाता है कि इस होटल में कलकत्ता का एक युवक व्यापारी ठहरा हुआ था. उस ने अपने कमरे में होटल के वेटर को बुलाया और दरवाजा बंद कर जेब से रिवाल्वर निकाल लिया. वेटर ने डर के मारे हाथ ऊपर कर लिए. फिर युवक ने 'शोले' फिल्म के गब्बरसिंह की तरह

हा, "इस रिवाल्वर में छः जिंदगियां और छः मौतें बंद हैं.

उस ने रिवाल्वर से तीन गोलियां निकाल कर फेंक दीं और रिवाल्वर के चैंबर को घुमा या. फिर वह बोला, "अब कुछ पता नहीं, कहां जिंदगी और कहां मौत है." उस ने ट्रिगर दबा या पर गोली नहीं चली. तब युवक ने कहा, "बच गया साला." यह कर वह जोरजोर से हंसने गा. और वेटर को कमरे से जाने दिया.

होटल के मालिक ने बताया कि उस युवक ने बाद में अपने किए की माफी मांगी और विष्य में ऐसा न करने की कसम खाई. वेटर के अनुसार वह युवक उस समय शराब पिए हुए ा.

—पंजाब केसरी, जालंधर (प्रेषक : राजकुमार सकोलिया)

*

ार दुलहन की तलाश जारी है

जयपुर के एक निकटवर्ती ग्राम के नागरिक एक कुतिया की तलाश में हैं. उक्त कुतिया क माह से फरार है.

बताया जाता है कि इसी ग्राम के जमींदार के विदेशी नस्ल के कुत्ते की शादी पड़ोसी गांव ी इस कुतिया से होनी तय हुई थी. लगभग एक लाख रुपए दोनों ओर से इस विवाह पर खर्च िए गए. पर झमेला तब खड़ा हुआ जब कुत्ते की बरात उस गांव पहुंची तो कुतिया अपने ालिक के घर से फरार हो गई. इस से बरात वापस चली गई.

—लोक स्वर, बिलासपुर (प्रेषक : सुभाषचंद्र अग्रवाल)

*

ब गधों ने भी विरोध किया

हिमाचल प्रदेश में चुनाव प्रचार खत्म होने वाले दिन मंडी जिले के भारतीय जनता पार्टी े प्रत्याशी श्री दामोदर दास के समर्थन में आयोजित एक जनसभा को जब अटल बिहारी ाजपेयी संबोधित कर रहे थे तो कुछ गधों ने अचानक सभा स्थल पर आ कर ढेंचूढेंचू की ावाजों से पूरे माहौल को हंसी में बदल दिया.

श्री वाजपेयी इस से पहले कह रहे थे कि इंदिरा कांग्रेस सरकार गेहूं व काली मिर्च के ितिरिक्त कुछ विदेशी नस्ल के गधे भी आयात करने पर विचार कर रही है.

तभी गधों ने वहां आकर रैंकना शुरू कर दिया था. इस पर श्री वाजपेयी ने चुटकी ली, ो, गधे भी सरकार के प्रति विरोध कर रहे हैं."

—नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली (प्रेषक : भोपालसिंह मेफावत)

*

ल में पानी की जगह शराब निकली

बड़नगर में विगत दिनों नल से शराब युक्त पानी निकलने पर लोगों को आश्चर्य हुआ.

बताया जाता है कि रेलवे स्टेशन के नजदीक बनी पानी की टंकी में कुछ मनचले शराबी कों ने शराब के नशे में धुत हो कर थोड़ी बहुत शराब पानी की टंकी में उड़ेल दी थी. जब ों में पानी आया तो उस में से शराब की बदबू आने पर लोगों ने इस की शिकायत की.

—साप्ताहिक स्पूत्निक, इंदौर (प्रेषक : अतीकुर्रहमान)

*

ख्य अध्यापक का शून्य नतीजे के लिए अभिनंदन किया गया.

रायपुर की एक बस्ती के लोगों ने एक माध्यमिक पाठशाला के मुख्य अध्यापक का भिनंदन किया. उस की आठवीं कक्षा का एक भी छात्र उत्तीर्ण नहीं हुआ था.

लोग जुलूस बना कर स्कूल गए और गुलाल लगा कर उन्होंने मुख्य अध्यापक को बधाई ी. मुख्य अध्यापक ने अपनी असफलता स्वीकार कर ली. अब उन्होंने अपने विभाग को अपने बादले के लिए लिखा है. **—नई दुनिया, इंदौर (प्रेषक : शरदनारायण खरे 'राही')**

ब्रसल्ज

लेख • अजयकुमार सिन्हा
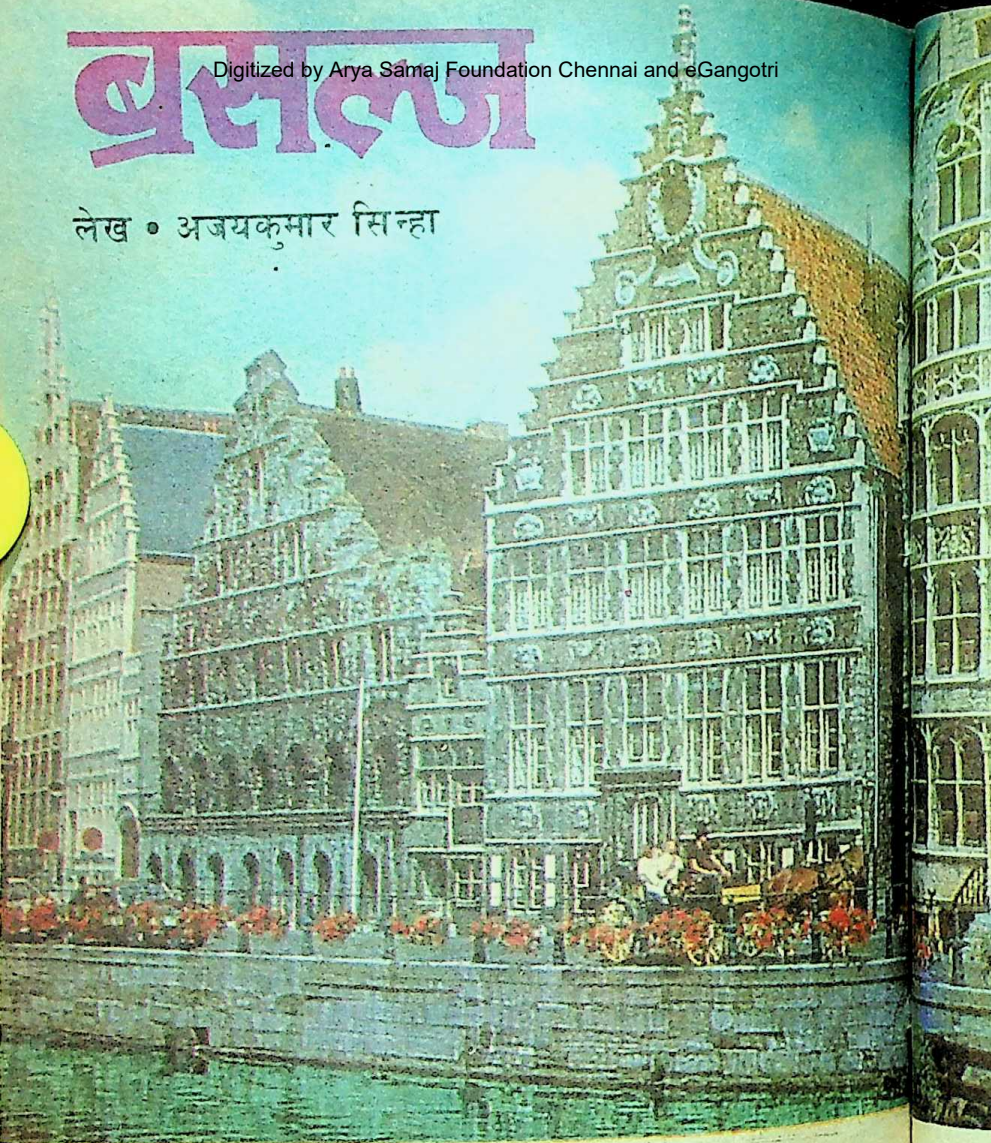
बेल्जियम की राजधानी तथा अंतरराष्ट्रीय नगर

यदि आप बेल्जियम की राजधानी ब्रसल्ज में कोई टूथपेस्ट खरीदें तो उस पर उस का नाम दो भाषाओं—फ्रांसीसी व डच में छपा होगा. यहां हर चीज के दो नाम होते हैं, क्योंकि यह नगर द्विभाषी है. भारत तो चूंकि एक बहुत बड़ा देश है, इसलिए यहां कई भाषाओं का होना स्वाभाविक है, किंतु बेल्जियम जैसे छोटे देश में भी भाषा का

ब्रसल्ज सारे यूरोप की साझा मंडी होने से ही नहीं बल्कि अपनी अनेक आश्चर्यजनक और मनोरंजक विचित्रताओं की वजह से भी प्रसिद्धि पा रहा है. आखिर क्या हैं वे विचित्रताएं...
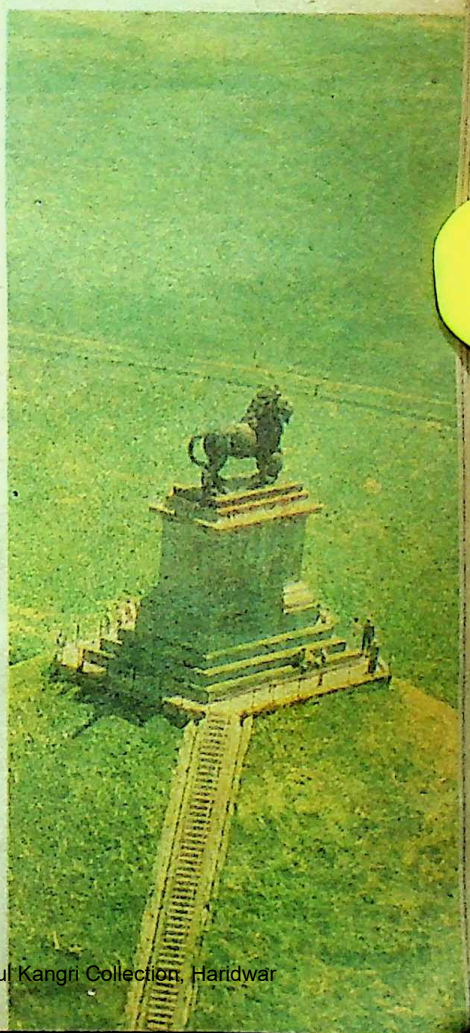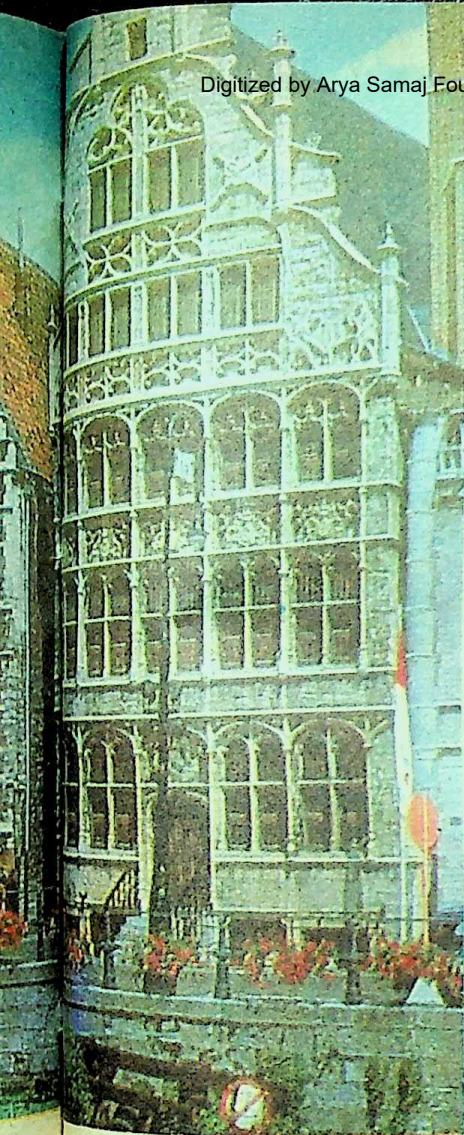
झगड़ा और समस्या है. यहां यह विवाद दिन ब दिन कटु होता जा रहा है. बेल्जियम के उत्तरी भाग में जिसे फ्लेंडर कहते हैं, फ्लेमिंग लोग रहते हैं. इन की भाषा डच है और दक्षिण में वैलून लोग, जो फ्रांसीसी बोलते हैं.

यद्यपि ब्रसल्ज फ्लेमिंग क्षेत्र में स्थित है, पर इस की 10 लाख की जनसंख्या में लगभग 80 प्रतिशत लोग फ्रांसीसी बोलते हैं. दोनों समूहों में सदा तनाव रहता है. फ्लेमिंग राष्ट्रवादियों का आरोप और दावा है कि
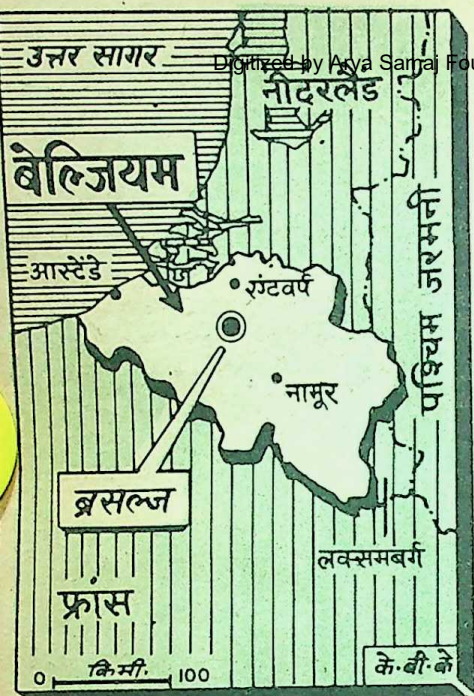
'ब्रसल्ज फ्लेमिश नगर है, जिस पर फ्रांसीसियों ने कब्जा कर रखा है." जब ब्रसल्ज में फ्रांसीसी भाषी लोगों की संख्या बढ़ने लगी तो इस से वहां फ्रांसीसी प्रभाव के बढ़ने का खतरा पैदा हो गया. फ्लेमिंग लोगों ने इस का बदला लिया. उन्होंने फ्रांसीसी भाषा के माध्यम वाले स्कूलों के बनने का विरोध किया.

बेल्जियम सरकार ने प्रशासन का विकेंद्रीकरण कर के तथा सांस्कृतिक समितियां स्थापित कर के इस विवाद को दूर करने का प्रयास किया है, परंतु भाषा विवाद यहां इतना उग्र रहा है कि 1968 के चुनावों में लोगों ने अल्पसंख्यक उग्रपंथियों को खूब जिताया. 1971 और 1974 में फिर उक्त कदम उठाए गए.

चाहे ब्रसल्ज एक फ्लेमिश नगर हो, पर आज यह सारे यूरोप की 'आर्थिक राजधानी' है. यूरोपीय साझा मंडी (आर्थिक समुदाय) का मुख्यालय यहीं है. इतना ही नहीं, इस नगर में 250 अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के मुख्यालय भी हैं और इस बात में यह जेनीवा नगर से टक्कर लेता है. पश्चिमी गुट के सैनिक संगठन 'नाटो' (उत्तरी एटलांटिक संधि संगठन) का मुख्यालय, बेनीलक्स (बेल्जियम, नीदरलैंड, लग्जमबर्ग) संगठन का मुख्यालय भी यहीं हैं.

ब्रसल्ज में यूरोप के अन्य सभी नगरों की अपेक्षा अधिक गगनचुंबी इमारतें हैं. घास भरे पार्क और खुली जगहें भी बहुत हैं. यूरोप के सर्वोत्तम रेस्तोरां भी यहीं हैं. भुने हुए आलू यहां का एक मशहूर और सर्वोत्तम खाद्य पदार्थ है. यह सभी भोजनों में अनिवार्य रूप से होता है और स्टालों पर भी बिकता है.

ब्रसल्ज का अर्थ है– संपूर्ण राजधानी. किंतु असल में यह कोई एक नगर नहीं है, बल्कि 19 विभिन्न कम्यूनों (क्षेत्रों) का समूह है, जो सब के सब अलगअलग और स्वायत्तशासी हैं. असली ब्रसल्ज इन्हीं के बीच का एक कम्यून है. नगर के अधिकतर बड़े बैंक, होटल, रेलवे स्टेशन, संसद और मंत्रालय यहीं पर हैं.

मजे की बात है कि इन 19 क्षेत्रों (कम्यूनों) में आपस में एकता नहीं है. सब का अपना अलगअलग स्वतंत्र स्थानीय प्रशासन

प्रधान मंत्री विलफ्राइड मार्टेंस : क्या सरकार भाषा विवाद निबटा सकेगी?
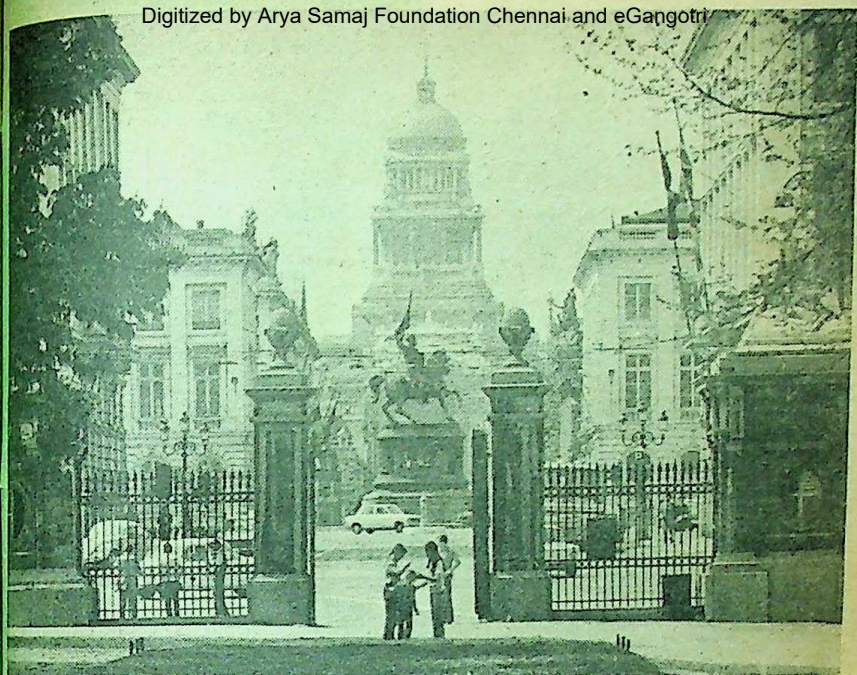
ब्रसल्ज का शाही भवन और न्यायालय : मध्ययुगीन शिल्प का बेजोड़ नमूना.

है. सभी की कोई एक पुलिस भी नहीं है. हर क्षेत्र में अपने कानून हैं, जो एकदूसरे से भिन्न हैं. एक व्यक्ति को एक क्षेत्र में एक प्रकार का कर देना होता है तो उसी को दूसरे क्षेत्र में दूसरे प्रकार का कर देना पड़ता है. सब के कर और नियम भिन्नभिन्न हैं.

विचित्रता का एक रूप यह भी

पहले ऐसा होता था कि एक क्षेत्र में अपराध कर के गिरफ्तारी से बचने के लिए अपराधी सड़क पार कर दूसरे क्षेत्र में भाग जाता था. उस क्षेत्र में अपराधी के क्षेत्र की पुलिस को अपराधी को पकड़ने का अधिकार न था. ब्रसल्ज क्षेत्र में जब एक बार आग लगी तो अन्य क्षेत्रों के दमकलों को बुलाया गया, किंतु एक क्षेत्र के दमकल के पाइप दूसरे क्षेत्र के दमकल में नहीं लग सके, क्योंकि दोनों के आकार भिन्न थे.

यूरोप की राइन नदी ब्रिटिश चैनल की राह समुद्र में मिलती है. यह महत्वपूर्ण जलमार्ग है. इस महत्वपूर्ण मार्ग पर स्थित
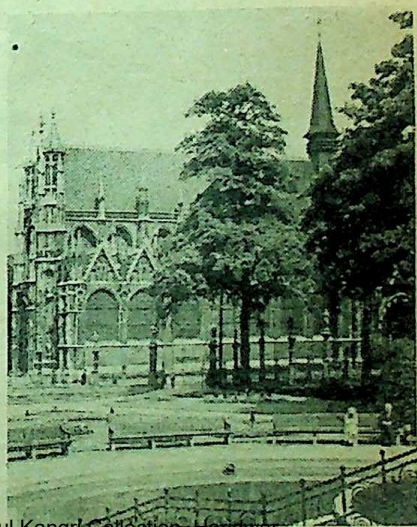
ब्रसल्ज में 250 महत्वपर्ण अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के मुख्यालय भी हैं.

(ऊपर) ब्रसल्ज की पुरातात्विक धरोहर— सैंकड़ों वर्ष पुरानी इमारत और (दाएं) साझा मंडी का मुख्यालय : फ्लेनिश नगर ब्रसल्ज सारे यूरोप की आर्थिक राजधानी बना हुआ है.

होने के कारण बेल्जियम पर हमेशा आक्रमण होते रहे हैं. जूलियस सीजर ने भी इस पर हमला किया था. प्रथम विश्व युद्ध में जरमनी के राजा कैसर द्वितीय ने और दूसरे विश्व युद्ध में हिटलर ने भी इस पर कब्जा किया था. इस देश की स्थिति युद्ध और व्यापार दोनों के लिए बड़ी महत्वपूर्ण है. इसी लिए इस देश पर

(शेष पृष्ठ 46 पर)

और बिना कुछ खर्च किए लगातार दोनों पत्रिकाएं प्राप्त कीजिए

आप जानते ही हैं कि आप के पूरे परिवार की प्रिय पत्रिका सरिता शुरू से ही सामाजिक क्रांति के क्षेत्र में आगे रही है और अपने देशवासियों को विश्व के उन्नत समाजों के साथ कदम बढ़ा कर चलने के लिए अनेक आंदोलन चलाती रही है. इस के अलावा आप का स्वस्थ मनोरंजन करने में भी सरिता कभी पीछे नहीं रही. रूपरंग व साजसज्जा में भी सरिता अपने क्षेत्र की हर पत्रिका से बढ़चढ़ कर है.

सरिता की पूरक मुक्ता भी हिंदी की प्रमुख पाक्षिक पत्रिका है, जो आप के अपने जीवन को सरस, सजग व स्पष्ट बनाने में आप की सहायता करती है.

सरिता और मुक्ता के प्रकाशन के पीछे जो मूल दृष्टिकोण है, वह अन्य पत्रिकाओं की तरह व्यापारिक नहीं है. सरिता और मुक्ता तो अपने में ऐसी संस्थाएं हैं, जिन का लक्ष्य है हजारों वर्षों से गुलाम, विदेशियों द्वारा पांवों से रौंदे हुए हिंदू समाज को संसार में गर्व से सिर उठा कर चलने के लिए प्रेरणा देना. यदि हिंदू समाज ने अपना पुनर्गठन नहीं किया तो फिर गुलाम होते देर नहीं लगेगी. आज भी हजारों वर्ग मील भारतीय भूमि विदेशियों के कब्जे में है.

किसी भी ऐसी लक्ष्य की पूर्ति के लिए बहुत बड़े पैमाने पर सामूहिक सहयोग और सद्भाव की आवश्यकता होती है.

सरिता किसी सरकारी संस्थान, बड़े पूंजीपति या राजनीतिक दल से संबंधित नहीं है, न ही यह किसी से किसी प्रकार की सहायता स्वीकार करती है. यह केवल एक ही वर्ग की सहायता और बलबूते पर निर्भर है. और वह हैं सरिता के पाठक. इन्हीं की प्रेरणा, सहायता व प्रोत्साहन से सरिता बड़ी से बड़ी लड़ाई लड़ लेती है.

हिंदू समाज के नवनिर्माण में भाग लीजिए

आज पत्रकारिता में बड़ी पूंजी, सरकार का और देशी व विदेशी

जनीतिक दलों का बड़े पैमाने पर
तक्षेप है. इस 'बड़े धन' के कारण
तंत्र पत्रकारिता प्रायः खत्म होती जा
ी है. स्वतंत्रता बनाए रखने का केवल
क ही तरीका है—पाठक स्वतंत्र
पत्रिकाओं को अपना कर उन्हें बल दें.

सरितामुक्ता विकास योजना इसी
वास पर निर्भर है. साथ ही आप को
अभूतपूर्व सुविधा भी देती है: आप
ना कुछ खर्च किए एक वर्ष में
रितामुक्ता के 48 अंकों 9,000 से भी
धिक पृष्ठों की सामग्री से लाभ उठा
केंगे.

रितामुक्ता के प्रसारप्रचार की योजना से लाभ उठाने के लिए प को सिर्फ यह करना होगा:

सरिता कार्यालय के पास 750 रुपए
ा करा दीजिए.

आप के ये रुपए आप की धरोहर के
में जमा रहेंगे.

आप जब भी चाहें, छः महीने का
टिस दे कर अपने रुपए वापस ले सकेंगे.
रिता कार्यालय भी इसी प्रकार छः महीने
नोटिस दे कर आप की अमानत आप को
टा सकेगा. जब तक यह रकम सरिता
र्यालय में जमा रहेगी, तब तक सरिता
मुक्ता बिना किसी शुल्क के आप को
बराबर मिलती रहेंगी. जब यह रकम आप वापस मंगाएंगे या सरिता कार्यालय द्वारा आप को वापस कर दी जाएगी तो सरिता व मुक्ता भेजनी बंद कर दी जाएंगी.

आप यदि 750 रुपए एक साथ जमा न कराना चाहें तो तीन मासिक किस्तों में भेज सकते हैं. पहले मास 300 रुपए, दूसरे मास 300 रुपए और तीसरे मास 150 रुपए. आप की पहली किस्त प्राप्त होते ही सरिता व मुक्ता पाक्षिक के अंक आप के पास भेजे जाने लगेंगे. दूसरी और तीसरी किस्त ठीक एकएक महीने के अंतर से कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए अन्यथा सरिता कार्यालय को अधिकार होगा कि तब तक भेजी जा चुकी प्रतियों का मूल्य काट कर आप की रकम आप को लौटा दे.

आप केवल सरिता या केवल मुक्ता भी केवल 400 रुपए जमा कर के प्राप्त कर सकते हैं.

विशेष उपहार
सात सौ पचास रुपए एक किस्त में जमा कराने पर पचास रुपए की पुस्तकें मुफ्त.

अपनी रकम सुरक्षित रख कर बिना कुछ भी व्यय किए सरितामुक्ता की विस्तार योजना में भाग लीजिए. मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट व चैक "दिल्ली ..." के नाम बनवाएं व इस पते पर भेजें:

दिल्ली प्रेस, 3-ई झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-55

स्वतंत्र पत्रकारिता को प्रोत्साहन दीजिए

ब्रसल्ज में यूरोप के अन्य सभी नगरों की अपेक्षा अधिक गगनचुंबी इमारतें हैं.

(पृष्ठ 42 से आगे)

करीब 1,800 वर्षों तक विदेशियों का राज रहा है, इन विजेताओं में रोम, हालैंड, फ्रांस, आस्ट्रिया, स्पेन भी शामिल थे. यहीं के वाटरलू नामक युद्ध स्थल में ब्रिटेन के सेनापति वैलिंगटन ने फ्रांस के सम्राट और अधिकांश यूरोप को जीत चुके नेपोलियन को हराया था. 1815 में नेपोलियन के पतन के बाद बेल्जियम को नीदरलैंड का हिस्सा बना दिया गया. 1830 में यहां स्वतंत्र संवैधानिक राजतंत्र की स्थापना की गई.

इस छोटे से देश की समस्याएं बड़ी पेचीदगी, संकीर्णता, उलझाव व गुत्थियों से भरी हुई हैं. फ्लेमिंग और वैलून समुदायों में भाषायी खींचतान चलती रहती है. यहां की परंपरा है कि प्रधान मंत्री को दोनों ही भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए. किंतु अन्य मंत्री द्विभाषी नहीं होते. यही एक ऐसा देश है, जहां इन मंत्रियों के लिए मंत्रिमंडल की बैठकों में दुभाषिए भी होते हैं. क्रम से प्रधान मंत्री एक वार फ्लेमिंग समुदाय का तो दूसरी बार वैलून समुदाय का होता है.

आर्थिक व सामाजिक मतभेद

दोनों समुदायों में सामाजिक और आर्थिक मतभेद भी हैं. पिछले सौ वर्षों से फ्रांसीसी भाषी वर्ग ही विशिष्ट और विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग रहा है. उद्योग, बैंक और सरकार इन्हीं के हाथों में रहे हैं. दूसरी तरफ फ्लेमिंग वर्ग निर्धन, अशिक्षित और निम्न वर्ग रहा है. फ्रांसीसी भाषी वैलन नाग

हां पुरानी इमारतों को तोड़ने व उन की जगह नई इमारतें बनाने पर पाबंदी लगी हुई है.

मगों पर बहुत ज्यादतियां करते थे. 37 महले फ्लेमिंग वर्ग का पुनरुत्थान शुरू ा. उन की जनसंख्या भी तेजी से बढ़ी और हुसंख्यक वर्ग हो गए.

बेल्जियम में हमेशा कई दलों की क्त सरकार ही बनती है. राजनीतिक दल बहुत सारे हैं, जो विभिन्न क्षेत्रीय मुद्दों पर हैं.

ब्रसल्ज नगर में कोई भारी उद्योग नहीं यहां का एक प्रमुख आकर्षण है– ग्रांड (बड़ा चौक). यह चौक 13वीं सदी में था. इस की मुख्य इमारतों में सोने के क बेलबूटे बने हैं. फ्रांसीसी हमलावरों ने तोपों से नष्ट कर दिया था. इस को फिर से या गया है. अब इस चौक की इमारतों को ने और यहां आधुनिक गगनचुंबी इमारतें बनाने पर स्थायी पाबंदी लगा दी गई है. इस चौक में एक 584 वर्ष पुराना होटल 'होटल डी विले' भी है. चौक के दूसरी तरफ ब्रेड मारकेट हाल है, जिस का नाम 'किंग्स हाउस' भी है. पास में ही एक फव्वारा है जो सन 1619 में बनाया गया था. इस पर एक बालक की मूर्ति है.

ब्रसल्ज की पुरानी इमारतें अत्यंत सुंदर हैं जिन में यहां का टाउन हाल भी है, जो ग्रांड प्लेस चौक में है. ब्रसल्ज में नहरें भी हैं, जिन में लोग नौकाविहार करते हैं. यहां की वास्तुकला मध्ययुगीन है. पर आज तो यहां अत्याधुनिक गगनचुंबी इमारतों की भरमार है. बेल्जियम कैथलिक देश है और यहां वंशानुगत राजतंत्र है पर सरकार प्रजातांत्रिक तरीके से चुनावों द्वारा चुनी जाती है. •

क्या आप एक अच्छी पुस्तक ढूंढ रहे हैं जिस को सब चाहते और पसंद करते हैं?

'विश्व पुस्तकें' देखिए!

'विश्व पुस्तकें' सारे भारत में पढ़ी जाती हैं और पसंद की जाती हैं

अब तक लाखों पुस्तकों की बिक्री 'विश्व पुस्तकों' की लोकप्रियता का प्रमाण है.

हमारी सब से अधिक बिकने वाली पुस्तकों में से कोई भी पुस्तक चुनिए.
लगभग 300 शीर्षकों में 6 विभिन्न मूल्यों में 'विश्व पुस्तकें' उपलब्ध हैं.

पाठ

दिल्ली

पूरा

'विश्व पुस्तकें' व्यापक दृष्टिकोण वाले

पाठकों के लिए विस्तृत जानकारी लिए हुए हैं.

पूरे परिवार के लिए मनोरंजक व प्रेरक.

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें या आदेश भेंजे:

दिल्ली बुक कंपनी एम-12, कनाट सर्कस, नई दिल्ली-110001

पूरा सैट केवल 100 रुपए में. कोई भी पांच पुस्तकों के लेने पर एक पुस्तक मुफ्त. डाक खर्च में भी छूट.

महिला रोजगार

नृत्यशाला

लेख • प्रतिनिधि

इस व्यवसाय के बारे में कुछ बताने से पहले आइए, आप की मुलाकात नूर जहीर से कराएं.

यदि नृत्य में आप की रुचि है तो एक सफल कत्थक नर्तकी के रूप में आप नूर जहीर को अवश्य जानती होंगी. अब उन्होंने कत्थक नृत्य की शिक्षा भी देनी शुरू कर दी है और मालवीय नगर (प्रेस एनक्लेव), नई दिल्ली स्थित अपने घर पर ही वह अपना स्कूल चलाती हैं.

नूर उर्दू की विख्यात कहानी लेखिका रजिया सज्जाद जहीर (400 कहानियों के अलावा 'सुमन', 'ये शरीफ लोग', 'अल्लाह मेघ दे', 'फूल और सुमन' जैसे चर्चित उपन्यासों की रचनाकार) की पुत्री हैं. उन के पिता सज्जाद जहीर प्रसिद्ध राजनीतिक और भारतीय कम्यूनिस्ट पार्टी के संस्थापकों में से थे. मातापिता के विलक्षण व्यक्तित्वों का प्रभाव नूर पर पड़ना स्वाभाविक था.

नूर के साथ सब से बड़ी विलक्षणता और विशेषता तो यही है कि उन्होंने एक मुसलिम घराने में जन्म लेने के बावजूद नृत्य को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया, जब कि

मुसलमानों में नृत्य, संगीत और गायन को हराम (वर्जित) माना जाता है.

पहले सवाल में उन का ध्यान इसी बात की ओर आकर्षित किया गया. उन्होंने कहा, "मेरे अम्मी अब्बा दोनों ही बहुत प्रगतिशील विचारों के रहे हैं. उन की तरफ से मुझे कभी भी नृत्य में दिलचस्पी लेने से नहीं रोका गया, बल्कि प्रोत्साहित ही किया गया. जब अम्मी अब्बा का सहयोग मिल रहा हो तो अड़ोसपड़ोस और समाज की कौन परवाह करता है?"

आज जब कि आधुनिक परिवारों में नृत्य के प्रति रुचि बढ़ रही है, नृत्यशाला खोलना एक अच्छा व्यवसाय सिद्ध हो सकता है.

● "लेकिन मजहब (इसलाम) में तो इसे अच्छा नहीं समझा जाता?"

"मैं मजहबी नहीं हूं. मेरे पिता भी

धार्मिक नहीं थे. पहले वह कट्टर मुसलमान थे, नमाज पढ़ते थे, रोजे रखते थे. बाद में ऐसी कुछ प्रतिक्रिया हुई कि धार्मिकता से उन्होंने पूरी तरह मुंह मोड़ लिया और कम्यूनिस्ट हो गए. अम्मी थोड़ीबहुत मजहबी हैं, पर वह जोरजबरदस्ती नहीं करतीं कि हम भी वैसे ही बनें."

धर्म से जुड़े न होने का सबूत नूर ने अपना विवाह धर्म और जाति से बाहर कर के दिया है. उन के पति हिंदू हैं. उन के अंतरजातीय विवाह में भी उन का (नूर का) प्रगतिशील परिवार बाधा नहीं बना.

नृत्य में रुचि कैसे ली?

● "आप को कत्थक में रुचि कैसे हुई और इसे आप ने कैसे सीखा?"

"मुझे बचपन से ही नृत्य में रुचि थी. मेरे अब्बाजान ने मुझे काफी प्रोत्साहन दिया. वह तो चाहते थे कि मैं व्यावसायिक तौर पर नृत्य करूं. वह मुझे अकसर नृत्य की कक्षाओं में भेजने के लिए जोर डाला करते थे. हायर सेकंडरी के बाद मैं ने जयपुर घराने के पंडित दुर्गालाल (भारतीय कला केंद्र) से विधिवत रूप से कत्थक सीखा. पंडित दुर्गालाल 'सांस्कृतिक संबंधों की भारतीय परिषद' से सहायता वृत्ति ले कर दक्षिण अमरीका चले गए. उन के बाद मेरे गुरु रहे– बंसीलाल और उमा शर्मा. उमा शर्मा के 'ट्रुप' से मेरा अब भी ताल्लुक है और मैं उमा शर्मा को कत्थक की महान कलाकार समझती हूं."

● "आप ने उमा शर्मा का जिक्र किया तो याद आया कि अभी पिछले दिनों यह खबर (या अफवाह) काफी गरम थी कि उमा शर्मा का स्कूल शारीरिक व्यापार का केंद्र भी है और वह लड़कियां 'सप्लाई' करती हैं. इस सिलसिले में आप का क्या कहना है?"

"असल में आम आदमी नृत्य से इतना दूर है कि तबला हारमोनियम, लड़का लड़की को एक साथ या स्त्रीपुरुष का अनौपचारिक व्यवहार देखता है तो यही समझता है कि यहां शारीरिक व्यापार हो रहा है. हमारे यहां ऐसी कुछ मानसिकता ही है, कुछ फिल्में देख कर भी बन गई है. शारीरिक व्यापार का आरोप लगाने वाले लोगों के पास कोई सबूत तो है नहीं. उन की धारणाएं पूरी तरह निराधार हैं."

डांस स्कूल या शारीरिक व्यापार के अड्डे?

● "लेकिन एक वर्ग तो ऐसा भी है जो कहता है कि नृत्यशालाएं (डांस स्कूल) खोली ही इसलिए जाती हैं कि इस की आड़ में शारीरिक व्यापार चल सके."

"संभव है, बहुत से स्कूल ऐसे हों. हर व्यवसाय में अच्छे भी लोग होते हैं और बुरे भी. इस व्यवसाय में बुराई लाने के जिम्मेदार सीखने वाले लोग भी हैं और सिखाने वाले गुरु भी. मंच पर अपने आप को प्रदर्शित करने का एक ग्लैमर होता है, जिस के मोह में हर कोई आसानी से गिरफ्तार हो जाता है. और ज्यादातर लोग अपनी कला में निपुण हुए बिना मंच पर आ जाना चाहते हैं. बहुत से स्कूल उन्हें 'शार्टकट' से मंच पर पहुंचाने का दावा करते हैं और अकुशल लोग तुरंत ऐसे स्कूलों में प्रवेश ले लेते हैं. ये लोग इतनी जल्दी में होते हैं कि शारीरिक व्यापार जैसी कोई चीज उन के लिए सीढ़ी बनती है तो उसे फौरन स्वीकार कर लेते हैं.

"इन लोगों को जिन स्कूलों में पनाह मिली होती है, वे स्कूल ऐसे गुरु चला रहे हैं, जो नृत्य के क्षेत्र में सफल नहीं हो सके. जिन में प्रतिभा की कमी या कोई शारीरिक दोष होता है और जिस के पास योग्य छात्र फटकते तक नहीं.

"इस किस्म के गुरुओं के साथ आप एक खास बात यह भी देखेंगे कि ये अपनी बेटियों को कभी नृत्य नहीं सिखाते, क्योंकि उन्हें अपने स्कूल की वस्तुस्थिति पता होती है, उन्हें मालूम होता है कि उन का स्कूल कितना कला का केंद्र है और कितना किसी अन्य 'व्यापार' का. हां, ये गुरु भी अपने लड़कों को अवश्य नृत्य सिखाते हैं.

"इन अधकचरे गुरुओं की दूसरी विशेषता (यानी बुराई) यह है कि ये कला के मामले में लकीर के फकीर होते हैं. ये ज्यादा
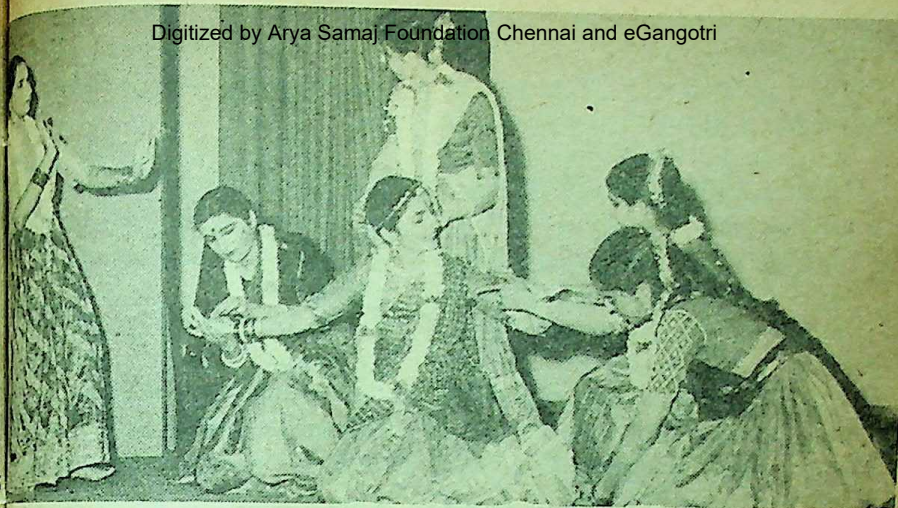
नृत्यशाला के प्रचार के लिए अपने कलाकारों द्वारा समयसमय पर सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते रहना जरूरी है.

पढ़ेलिखे नहीं होते. न इन के पास रचनात्मक दृष्टि होती है, न प्रयोग करने की क्षमता. नए प्रयोग करने को ये लोग बुरा भी समझते हैं. यह प्रवृत्ति तो आप को और भी कई गुरुओं में मिलेगी. इन्हें कुछ रूढ़िगत चीजें बपौती में मिल गई हैं, जैसे शिव स्तुति, गणेश स्तुति, भस्मासुर वध या कोई और प्रसंग हिंदू पुराणों से ले लिया और उसी के आधार पर कत्थक की संरचना कर डाली. बस, पीढ़ी दर पीढ़ी यही सिलसिला चल पड़ा. इस सिलसिले से हट कर नई बात सोचने की इन में बुद्धि ही नहीं होती. यही कारण है कि आप को ज्यादातर मंचों पर वही कत्थक देखने को मिलता है जो सदियों पहले दिखाया जाता था.

"दूसरे क्षेत्रों की तरह अब कत्थक में भी नए प्रयोग करना जरूरी है. अब वक्त बदल रहा है. आम दर्शक पौराणिक कहानियों से न तो वाकिफ है और न ही उस के जीवन से इन का कोई तालमेल है.

"उमा शर्मा जैसे लोग कत्थक के क्षेत्र में नएनए प्रयोग कर रहे हैं. उन्होंने कत्थक के लिए आधुनिक हिंदी साहित्य में से विषयवस्तु लेने की परंपरा को जन्म दिया है. दूसरे लोग उन की इस उपलब्धि पर ईर्ष्या करते हैं और अफवाहें गढ़ कर उन्हें बदनाम करते हैं."

कत्थक के दो घराने

● "कत्थक में दो चीजें सुनने में आती हैं– लखनऊ घराना और जयपुर घराना. इन दोनों में क्या फर्क है? और क्या इस फर्क को दूर नहीं किया जा सकता?"

"लखनऊ घराने के कत्थक में जयपुर घराने की अपेक्षा 'नफासत' ज्यादा होती है. दोनों घरानों के फर्क को दूर किया जा सकता है और किया जाना चाहिए.

"गुरुओं का यह पाखंड है कि उन्होंने घराने के आधार पर कलाकारों के बीच खाई पैदा की. उन के पास सीखने आई हुई लड़की को वह छोटी उम्र में ही 'गंडा' बांध देते हैं कि अब तू जयपुर या लखनऊ घराने की हो गई और अब तू दूसरे घराने में नृत्य सीखने नहीं जाएगी. यहां तक कि दूसरे घराने के कलाकारों का नृत्य भी नहीं देखेगी.

"यह उन गुरुओं द्वारा रचा गया षड्यंत्र है, जिन का अपना व्यक्तित्व बौना होता है और उन्हें डर रहता है कि उन के शिष्य अन्य गुरुओं से सीख कर उन से बड़े कलाकार न बन जाएं."

● "क्या इस प्रवृत्ति को खत्म करने की कोशिश की जा रही है?"

"हां, उमा शर्मा ही की मिसाल दी जा सकती है. उन्होंने एक ही साथ लखनऊ और जयपुर घरानों के गुरुओं से नृत्य सीखा. उन के गुरु शंभु महाराज लखनऊ घराने के थे और सुंदरप्रसाद जयपुर घराने के. घरानावाद की परंपरा को तोड़ने के कारण कई लोगों ने उन का मजाक उड़ाया, जिस की उन्होंने परवाह नहीं की. उमा शर्मा ने अपने कत्थक में जयपुर और लखनऊ दोनों घरानों की प्रवृत्तियों को मिला कर नई चीज पेश करने के प्रयोग भी किए.

"नृत्य के क्षेत्र में आने वाले नए लोगों को मैं सलाह दूंगी कि वे कत्थक पर हावी पौराणिक प्रभुत्व और घरानावाद को खत्म करने की दिशा में कार्य करें."

नृत्य क्षेत्र की समस्याएं

● "नृत्य सिखाने के काम को व्यावसायिक स्तर पर शुरू करने में क्याक्या समस्याएं पेश आती हैं?"

"पहली समस्या तो वही, जिस पर अभी बात हुई कि लोग आप को बदनाम कर सकते हैं कि आप स्कूल नहीं शारीरिक व्यापार चला रही हैं. मैं ने जब सिखाने का काम शुरू किया तो लोगों ने काफी बुराभला कहा.

"दूसरी समस्या है कि नृत्य के समय तबला, हारमोनियम और घुंघरुओं की आवाज पर पड़ोस के लोग आपत्ति कर सकते हैं कि 'साहब, हमें इस से परेशानी होती है.' इन समस्याओं पर काबू पाने का यही तरीका है कि आप लोगों को समझाएंबुझाएं, उन की गलतफहमियां दूर करें. बिना शोरशराबे के भी नृत्य का रियाज कराया जा सकता है. कत्थक सीखने के बहुत से स्तर तो ऐसे हैं, जिन का शोर से कोई लेनादेना नहीं. जैसे भावभंगिमाओं, थिरकन और मुद्राओं का अभ्यास, व्यायाम, योगाभ्यास आदि. बाकी थोड़े समय के लिए जो संगीत का सहारा लिया जाता है, उस के लिए लोगों को आहिस्ताआहिस्ता तैयार किया जाता है."

● "व्यावसायिक दृष्टि से इस व्यवसाय में महिलाओं के लिए भविष्य में क्या संभावनाएं हैं?"

"देखिए, अमीर घरों में अब कुछ रिवाज सा हो रहा है कि लड़की को नृत्य अवश्य सिखाना चाहिए. दूसरी योग्यताओं के साथसाथ इसे एक अतिरिक्त योग्यता माना जाता है.

यह रिवाज काफी बढ़ रहा है. उसे देखते हुए संभावनाएं तो काफी हैं. महिलाएं निजी तौर पर लड़कियों को नृत्य सिखा कर उन्हें विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में भी बिठा सकती हैं. कालिजों और विश्वविद्यालयों की नृत्यछात्राओं को भी 'ट्यूशन' के तौर पर नृत्य सिखाया जा सकता है."

नृत्यशाला कैसे खोलें?

इस व्यवसाय को शुरू करने से पहले महिला का एक अच्छी नर्तकी होना जरूरी है. यह काम वह घर में भी शुरू कर सकती है. इस के लिए नाचने का एक बड़ा कमरा, कुछ वाद्य यंत्र और कुछ 'कास्ट्यूम' (परिधान) होने चाहिए. वाद्य यंत्र और कास्ट्यूम आदि खरीदने में एक से दो हजार रुपए का खर्च आता है. बाद में अधिक छात्राएं आने पर नृत्यशाला में ज्यादा सुविधाओं की व्यवस्था की जा सकती है.

नृत्य किसी भी कुशल और अनुभवी गुरु से सीखा जा सकता है. अधिकांश विश्वविद्यालयों में नृत्य के पाठ्यक्रम हैं. वे पाठ्यक्रम पूरे करने पर नृत्य में स्नातक डिगरी, प्रमाणपत्र, डिप्लोमा और नृत्य विशारद, नृत्य निपुण तथा नृत्य आचार्य जैसी डिगरियों से सुशोभित किया जाता है.

प्रचार के लिए नृत्यशाला चलाने वाली महिला को अपने स्कूल के कलाकारों द्वारा समयसमय पर सार्वजनिक मंचों पर नृत्य कार्यक्रमों का आयोजन करते रहना चाहिए. नृत्यशाला खोलने के लिए सरकार के शिक्षा विभाग और उद्योगपतियों से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त किया जा सकता है.

मुक्ता

नए लेखकों के लिए कहानी प्रतियोगिता

नए अंकुर

मुक्ता ने अपने जन्म ही से नए लेखकों को प्रोत्साहित किया है. कभी लेखकों के नाम से प्रभावित हो कर उन की रचनाओं को तरजीह नहीं दी है. मुक्ता के लिए रचना ही महत्वपूर्ण होती है. लेखकों का नाम या उस की ख्याति नहीं.

नए लेखकों को प्रकाश में लाने के लिए मुक्ता द्वारा समयसमय पर नए अंकुर प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती रही हैं, जिन में केवल उन्हीं लेखकों की रचनाएं स्वीकृत की जाती हैं जिन की कोई रचना पहले कहीं न छपी हो.

अब इस प्रतियोगिता को सामयिक की बजाए स्थायी रूप दे दिया गया है. यह प्रतियोगिता निरंतर चलती रहेगी. इन में उन सभी नए लेखकों की कहानियों का स्वागत है जिन की कोई रचना पहले कहीं प्रकाशित नहीं हुई है. इन रचनाओं के लिए कोई अंतिम तिथि नहीं है. जैसेजैसे ये प्राप्त होती जाएंगी इन पर विचार कर के निर्णय किया जाता रहेगा और यथासंभव शीघ्र प्रकाशित कर दिया जाएगा. प्रत्येक रचना पर 75 रुपए का पारिश्रमिक दिया जाएगा. वर्ष के अंत में सभी 'नए अंकुर' रचनाओं पर पुनः विचार किया जाएगा और सर्वश्रेष्ठ रचनाओं पर निम्नलिखित पुरस्कार दिए जाएंगे :

प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
प्रथम पुरस्कार : 200 रुपए
द्वितीय पुरस्कार : 100 रुपए
तृतीय पुरस्कार : 50 रुपए

ये पुरस्कार पारिश्रमिक के अतिरिक्त होंगे.
इस विषय में संपादक का निर्णय अंतिम व मान्य होगा.

रचनाएं भेजने से पहले कृपया मुक्ता कार्यालय से लेखकों के नियम मंगवा कर पढ़ लीजिए ताकि आप की रचनाओं पर विचार करने में सुविधा रहे.

इस के लिए 50 पैसे का टिकट लगा, अपना पता लिखा लिफाफा भेजिए.

संपादक, मुक्ता, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055.

दुनिया भर की
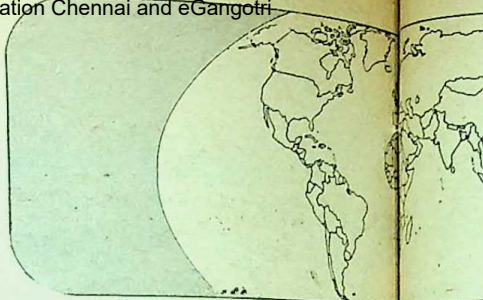
आयरलैंड के लोग दुनिया में

एक अमरीकी संस्थान द्वारा आयरलैंडवासियों से एक सर्वे में पूछे गए प्रश्न के उत्तर से पता चला कि आयरलैंड के 39 प्रतिशत लोग खुश हैं.

आप मानें या न मानें पर यह सच है कि पश्चिमी देशों में आयरलैंड निवासी सब से अधिक खुश हैं, अमरीकियों को अपने देश पर सब से अधिक नाज है और जापानी अपने देश के लिए अब मरमिटने के लिए जरा भी उत्सुक नहीं हैं.

यह निष्कर्ष है पिछले दिनों वाशिंगटन में प्रकाशित एक सर्वे रिपोर्ट का. इस सर्वे में बेल्जियम, ब्रिटेन, डेनमार्क, फिनलैंड, फ्रांस, आयरलैंड, इटली, नीदरलैंड, स्वीडन, अमरीका और पश्चिमी जरमनी के 1,500 से ले कर 2,000 निवासियों से तरहतरह के प्रश्न पूछे गए. पूछताछ के दौरान बाद में विश्लेषण कर के जो निष्कर्ष निकले वे काफी मजेदार और चौंकाने वाले हैं.

अमरीका के 80 प्रतिशत, ब्रिटेन के 50

प्रतिशत और टर्की के 41 प्रतिशत लोगों ने अपने देश के बारे में पूछे गए प्रश्न के बारे में कहा कि हमें अपने देश पर गर्व है. जब कि 33 प्रतिशत जापानियों, 30 प्रतिशत फ्रांसीसियों और 30 प्रतिशत पश्चिमी जरमनवासियों ने इसी प्रश्न का बहुत ही उदासीनता के साथ उत्तर दिया.

आप अपने देश में कितने खुश हैं? इस प्रश्न के उत्तर में आयरलैंड के 39 प्रतिशत,

...या में सब से अधिक खुश

सर्वे में अमरीकियों से पूछे गए एक अन्य प्रश्न के उत्तर में पता चला कि अमरीका के 80 प्रतिशत लोगों को अपने देश पर नाज है. यह प्रतिशत विश्व के सब देशों से ज्यादा है.

आयरलैंड के लोग सब से ज्यादा खुश हैं. फाकलैंड जैसे युद्ध और भी होंगे. आप आकाश के सितारों पर जगह खरीद सकते हैं. इटली में ट्रोपिया समुद्र के किनारे केवल सुंदर महिलाएं ही नग्न स्नान कर सकती हैं— जैसी घटनाओं पर आश्चर्यजनक व रोचक जानकारी...

ब्रिटेन के 38 प्रतिशत, अमरीका के 32 प्रतिशत और पश्चिम जरमनी के 10 प्रतिशत लोगों ने अपने देश में खुश होने की बात स्वीकार की.

अमरीका के 71 प्रतिशत, ब्रिटेन के 62 प्रतिशत, स्पेन के 53 प्रतिशत, आयरलैंड के 49 प्रतिशत, फ्रांस के 42 प्रतिशत लोगों ने अपने देश के लिए लड़ने की बात कही.

'धार्मिक आस्थाओं में कितना विश्वास है' प्रश्न के उत्तर में आयरलैंड व अमरीका के 95 प्रतिशत, ब्रिटेन के 76 प्रतिशत, फ्रांस के 62 प्रतिशत और जापान के 39 प्रतिशत लोगों ने कहा कि वे धर्म में विश्वास रखते हैं.

'क्या आप अपने काम से संतुष्ट हैं?' इस प्रश्न के उत्तर में 84 प्रतिशत अमरीकियों, 37 प्रतिशत जापानियों, 15 प्रतिशत पश्चिमी जरमनों और 13 प्रतिशत फ्रांसीसियों ने संतोष प्रकट किया.

वाशिंगटन में इस बारे में जानकारी एकत्र करने वाला संस्थान अब एक जनमत संग्रह द्वारा आस्ट्रेलिया, आस्ट्रिया, कनाडा, नार्वे, न्यूजीलैंड, स्विटजरलैंड और लेटिन अमरीकी देशों में भी इन्हीं प्रश्नों के उत्तर जानने का शीध्र प्रयत्न करेगा. संस्थान का इरादा कुछ कम्यूनिस्ट देशों में भी इसी तरह का एक सर्वे करने का है.

फाकलैंड जैसे युद्ध और भी होंगे

यद्यपि फाकलैंड पर अधिकार जमाने के लिए आर्जेनटीना और ब्रिटेन के मध्य हुई लड़ाई में अंततः ब्रिटेन की विजय हुई, पर इस प्रकरण ने दुनिया के उन देशों की नींद हराम कर दी है, जिन्होंने दूसरे देशों की ज़मीन या क्षेत्र को हथिया रखा है या जो किन्हीं प्रदेशों पर अपना दावा पेश करते हुए किसी न किसी तरह वापस लेना चाहते हैं. जिन विवादग्रस्त क्षेत्रों के बारे में इस समय विभिन्न देशों में झगड़ा है, वे निम्नलिखित हैं:

ऐसेक्विबो: गियाना के इस खनिज क्षेत्र पर वेनेजुएला अपना दावा वर्षों से जताता रहा है.

पश्चिम सहारा: सन 1975 में स्पेन से आजाद हुए इस क्षेत्र पर मोरक्को और अल्जीरिया अपनाअपना दावा कर रहे हैं.

जिब्राल्टर: ढाई मील के इस क्षेत्र को जिसे ब्रिटेन ने स्पेन से कभी ले लिया था, स्पेन वापस मांग रहा है. दोनों देशों में बातचीत निर्णायक दौर में है.

बीगल चैनल: टेराडेल फयूगो के दक्षिण में स्थित इस समुद्री नहर पर आर्जेनटीना और चिली अपनाअपना दावा कर रहे हैं. इस समय इस पर चिली का कब्जा है.

बेलिजा: हाल में ब्रिटेन से आजाद हुए डेढ़ लाख की जनसंख्या वाले इस देश पर ग्वाटेमाला ने अपना दावा कर इस को कब्जे में लेने की धमकी दी है.

नावासा: कैरीबियन सागर में स्थित इस दो किलोमीटर लंबे टापू को ग्वानो पक्षियों का टापू भी कहते हैं. यहां हजारों टन बीट पड़ी रहती है. अमरीकी इस बीट को लेना चाहते हैं. जब कि हेटी इस पर अपना क्षेत्र होने का दावा कर रहा है.

टाइरोल: इटली द्वारा अधिग्रहीत दक्षिणी टाइरोल पर आस्ट्रिया अपना दावा कर रहा है.

डिएगो गार्शिया: मारीशस के इस द्वीप पर ब्रिटेन ने वर्षों पूर्व अपना कब्जा कर लिया था. बाद में ब्रिटेन ने इसे एक समझौते के अंतर्गत अमरीका को दे दिया. अब यहां अमरीका का सैनिक अड्डा बना हुआ है. हाल में डा. रामगुलाम की लेबर पार्टी को हरा कर मारीशस का शासन सूत्र संभालने वाली मार्क्सवादी विचारों की पार्टी मारीशस मिलिटेंट मूवमेंट ने इस द्वीप को लौटाने की मांग की है. इस पार्टी ने अपनी चुनावी घोषणा का इसे भी एक बड़ा मुद्दा बनाया था.

हवार: हाल में बहरीन ने अपने एक लड़ाकू विमान का नाम हवार रखा है जिस पर कातार देश ने आपत्ति की है. हवार एक प्रायद्वीप का नाम है जिस पर दोनों देशों में विवाद है.

'वाशिंगटन सेंटर फार डिफेंस

कुत्ते प्यार के भूखे होते हैं. उन्हें उन की जरूरत के अनुसार प्यार दे कर आदमी से ज्यादा शिक्षित बनाया जा सकता है.

नफारमेशन' द्वारा की गई एक पड़ताल के नुसार यूरोप में 20, पश्चिमी एशिया में 6, लेटिन अमरीका में 15 और अफ्रीका में 9 ऐसे स्थल हैं जो क्षेत्रीय विवाद के अंतर्गत ाते हैं.

सिर्फ सुंदर महिलाओं के लिए

इटली में कैलाब्रिरिया क्षेत्र में स्थित पिया के समुद्री किनारे पर नग्न स्नान करने र अब पाबंदी लगा दी गई है. पिछले अनेक र्षों से इस मनोहारी किनारे पर बालू की रेत ं हलकी धूप सेकते ढेरों औरतें और मर्द नंगे ड़े रहते हैं. जून 1982 से इस समुद्री किनारे र स्थानीय प्रशासन ने लोगों के नंगे नहाने र प्रतिबंध लगा दिया था. नगरपालिका में क्रिश्चियन डेमोक्रेटिक पार्टी का बहुमत है. बस इस पार्टी ने प्रस्ताव पास कर दिया और पुलिस को समुद्री किनारे पर नंगे नहाने वाले लोगों के खिलाफ काररवाई करने का आदेश दे दिया.

पर भारी बहुमत से पास किए गए इस प्रस्ताव में एक छूट दी गई है, जिस के मुताबिक अब यहां वृद्ध या कुरूप औरतें और आदमी नंगे नहीं नहा सकेंगे. हां. जो युवा महिलाएं अति सुंदर हैं या जिन का शारीरिक गठन आकर्षक हैं, सिर्फ वे ही अब यहां नग्न स्नान कर सकती हैं.

बिकाऊ हैं आसमान के सितारे

यदि आप के पास अपने गांव या शहर में कोई जमीन का टुकड़ा, मकान, दुकान या खेत नहीं है तो चिंता की कोई बात नहीं है. आप धरती पर कुछ भी बनाने का इरादा छोड़ कर क्यों न आसमान पर ही कुछ बनाएं. आसमान में आप ने नंगी आंखों से चमकते ढेरों सितारे तो देखें होंगे. क्यों न इन सितारों पर ही घर बनाएं. यह कोई काल्पनिक अथवा अनोखी बात नहीं है. कैलिफोर्निया (अमरीका) की एक कंपनी सिर्फ 25 डालर में आप को आसमान के किसी भी मनचाहे सितारे में जमीन दे सकती है. इस कंपनी ने 'नेम ए स्टार' नामक एक सूचीपत्र बना रखा है. आप जिस सितारे पर जमीन खरीदना चाहते हैं उस के आकाशीय रास्ते का एक नक्शा और सितारे में खरीदी जमीन का रजिस्ट्रेशन सर्टिफिकेट यह आप को देगी.

वैज्ञानिकों ने आसमान में करीब 2,50,000 सितारों की गिनती की है. लेकिन इन में से कुछ को छोड़ कर वे बाकी किसी का भी नामकरण नहीं कर सके हैं. जो बड़े सितारे हम नंगी आंखों से देखते हैं उन का ही परंपरागत रीति से नामकरण किया गया है. बाकी सितारे जो बहुत दूर हैं, उन को तो सिर्फ गिनती में शामिल कर रखा है.

आप दृश्य या अदृश्य नाम वाले सितारे या बिना नाम वाले जिस सितारे को पसंद करें उस की जमीन का एक टुकड़ा आप खरीद सकते हैं. जमीन की लंबाईचौड़ाई और स्थिति का कोई प्रश्न नहीं है. आप चाहे जितनी जमीन ले लीजिए. यदि आप को यह विवरण अच्छा लगता है और आंसमान में अपना एक न्यारा बंगला बना देखना चाहते हैं तो इस पते पर कंपनी को लिखिए—'नेम ए स्टार' 5,068, मक्का एवेन्यू टारजना, कैलिफोर्निया—91356, यूनाइटेड स्टेट्स आफ अमरीका.

कुत्ता संस्कृति पर नई पुस्तक

72 वर्षीया बारबरा वुडहाउस को कुछ समय पहले तक कोई नहीं जानता था, लेकिन हाल में बी.बी. सी. पर उस की एक घंटे की भेंटवार्ता ने उसे विश्व भर में प्रसिद्ध कर दिया है. बारबरा का बोलने का विषय था — 'कुत्तों और मालिकों को प्रशिक्षण दो.' अपनी भेंटवार्ता में बारबरा ने सगर्व घोषणा की कि कुत्तों को अच्छी तरह प्रशिक्षण दे कर आप अपने घर को सुंदर बना सकते हैं.

कुत्ते पालने वाले तो आप ने देखे हैं और देखा है उन कुत्तों को भी जो किसी अनजान के घर में प्रवेश करते ही भौंकने, चिल्लाने और जंजीर तुड़ा कर भागने की कोशिश करते हैं. बारबरा की नजर में ऐसे कुत्तों के मालिक सभ्य नहीं होते क्योंकि कुत्तों का जोरजोर से भूंकना उन के मालिक के स्वभाव और स्तर का परिचायक है. बारबरा अब तक करीब 1,700 कुत्तों को प्रशिक्षण दे कर उन्हें सभ्य जानवर बना चुकी है. उस का दावा है कि कोई भी कुत्ता बुरा नहीं होता.

बी. बी. सी. के कार्यक्रम के बाद इन दिनों बारबरा के पास यूरोप के कई देशों के रेडियो और टी. वी. स्टेशनों से कुत्ते के बारे में बोलने के लिए प्रस्ताव आए हैं.

बारबरा का कहना है कि कुत्ते प्यार के भूखे होते हैं. उन्हें उन की जरूरत के अनुसार प्यार दे कर उन्हें आदमी से ज्यादा शिक्षित बनाया जा सकता है. यही नहीं, कुत्तों से ज्यादा कुत्तों को पालने वाले मालिकों को कुत्ते पालने का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, क्योंकि 95 प्रतिशत मालिकों को कुत्तों को ठीक ढंग से रखना नहीं आता.

बारबरा जहां इतनी बड़ी उम्र में कुत्तों को प्रशिक्षण देती है, वहां उस ने कुत्तों पर कई किताबें भी लिखी हैं.

सब से मजेदार बात यह है कि कुत्तों को प्रशिक्षण देने और कुत्तों पर किताबें लिखने वाली बारबरा ने स्वयं कोई कुत्ता नहीं पाल रखा है.

जब बड़े शहरों में भीड़ ही भीड़ होगी

इस सदी के अंत तक दुनिया की जनसंख्या के छः अरब हो जाने का अनुमान लगाया गया है. बढ़ती जनसंख्या से जहां तरहतरह की समस्याएं पैदा होंगी, वहां सब से बड़ी समस्या भीड़ भरे शहरों की होगी. इन दिनों दुनिया के सभी देशों के शहरों में गांवों में रहने वाले लोगों का पलायन तेजी से हो रहा है. एक अनुमान के अनुसार सन 2000 के अंत में 50 प्रतिशत जनसंख्या शहरों में रहने लगेगी. शहरों में भीड़ इतनी होगी कि आसानी से निकला नहीं जा सकेगा. और तो और परिवहन, धूल, धुआं तथा बढ़ते शोर की समस्या सब से अधिक जटिल हो जाएगी.

हाल में संयुक्त राष्ट्रसंघ के तत्वावधान में विश्व भर में मनाए गए पर्यावरण दिवस के संदर्भ में कुछ चौंकाने वाले आंकड़े प्रकाशित हुए है. सन 2,000 के अंत में बंबई में (1.9 करोड़), कलकत्ता (2 करोड़), न्यूयार्क (2.22 करोड़), टोकियो-शांघाई (2.5 करोड़), मैक्सिको सिटी (3.16 करोड़) विश्व के सब से बड़े जनसंख्या वाले नगर होंगे. इन नगरों की संख्या दिए गए अनुमानित आंकड़ों से भी कहीं अधिक हो जाएगी.

दिन में रात्रि आकाश देखिए

लेख • प्रदीप गुप्ता

प्लेनेटेरियम में

बंद हाल में बैठेबैठे ही की जाने वाली आकाशलोक की यह रोमांचक सैर किस प्रकार संभव होती है?

गोल गुंबदाकार छत के नीचे बैठे 800 से अधिक लोग किसी नाटकीय घटना की प्रतीक्षा में थे. सहसा धीरेधीरे प्रकाश कम होता गया और घटाटोप अंधेरा फैल गया. इतना अंधेरा कि साथ की कुरसी पर बैठी महिला या पुरुष भी दिखाई न दे. तभी वातावरण ब्रह्मांड संगीत से भरने लगा. गुंबदाकार छत के आंतरिक भाग पर रात्रि आकाश उभरा... अनगिनत तारे... वही

सुपरिचित ग्रह. धीरेधीरे पुनः अंधेरा छाने लगा, घुप्प अंधेरा. गरज के साथ बिजली कौंधी, दर्शक अगले ही क्षण घटने वाली रोमांचकारी घटना की उत्सुकता से प्रतीक्षा करने लगे.

तभी गुंबदाकार छत के कृत्रिम आकाश पर तेजी से एक यान उभरा और देखतेदेखते धरातल पर उतर आया. पार्श्व से रहस्य को बढ़ाने वाला संगीत उभरने लगा. तभी गोलाकार यान का ऊपरी भाग खुला. तीनचार मनुष्य जैसी कुछ विचित्र आकृतियां सतह पर उतरीं, एकदो मिनट तक उन की गतिविधियां देख कर लगा, जैसे वे किसी चीज की तलाश में हैं. पुनः यान का ऊपरी हिस्सा खुला और विचित्र प्राणी उस में बैठ गए. इस के साथ ही निःशब्द यान सुदूर अंतरिक्ष की ओर रवाना हो गया. इस के साथ ही कहीं से पुरुष स्वर उभरा, "यह स्वप्न था या वास्तविकता?" फिर एक महिला स्वर सुनाई दिया, "मैं सचमुच जाग रही थी या नींद में थी?"

प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर, जिस के माध्यम से विश्व के किसी भी भाग या वर्ष के किसी भी मास के रात्रि आकाश को हूबहू पेश किया जा सकता है.
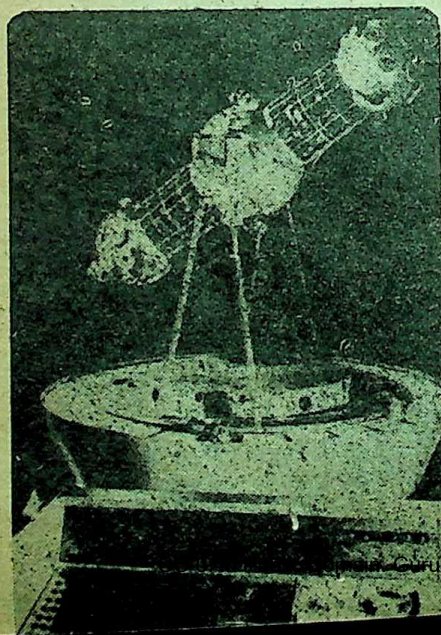
यह सब किसी विज्ञान का कथा अंश नहीं, वरन बंबई के नेहरू ग्रह मंडप (प्लेनेटेरियम) में आजकल चल रहे स्काई थिएटर कार्यक्रम 'ब्रह्मांड जीवन' का प्रारंभिक भाग था. लगातार 36 घंटे तक चलने वाला यह कार्यक्रम इतना रोचक है कि पता ही नहीं चलता कि समय कब बीत गया. कार्यक्रम में अंतरिक्ष विज्ञान की नवीनतम खोजों के आधार पर इस महत्वपूर्ण प्रश्न का उत्तर खोजने की कोशिश की गई है कि अरबोंखरबों प्रकाश वर्ष (प्रकाश वर्ष का अर्थ है एक वर्ष में प्रकाश द्वारा आकाश में तय की गई दूरी, यानी 58,78,00,00,00,000 मील) की लंबाईचौड़ाई वाले ब्रह्मांड में पृथ्वी के अतिरिक्त अन्य तारामंडलों में जीवन की क्या संभावनाएं हैं.

प्रसिद्ध ग्रहमंडप

भारत में इस समय दो ग्रहमंडप आकारप्रकार की दृष्टि से विश्व भर में प्रसिद्ध हैं. इन में पहला ग्रहमंडप 1962 में कलकत्ता में तैयार हुआ था. इसे बिड़ला ग्रहमंडप कहते हैं. दूसरा ग्रहमंडप– नेहरू प्लेनेटेरियम बंबई में वर्ली क्षेत्र में मार्च 1977 में बन कर तैयार हुआ. वैसे छोटे आकार के ग्रहमंडप सलेम, विजयवाड़ा, मुजफ्फरपुर, बड़ोदरा, सूरत, पोरबंदर, इलाहाबाद और दिल्ली में भी हैं.

ग्रहमंडप की गुंबदाकार छत ही परदे का काम देती है. नीचे बैठे दर्शक को छत की ओर देखने से यही लगता है जैसे वह खुले आकाश के नीचे रात को तारे देख रहा हो. यह सब प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर की सहायता से संभव होता है. प्लैनेटेरियम प्रोजेक्टर विश्व के किसी भी भाग या वर्ष के किसी भी मास के रात्रि आकाश को हूबहू पेश कर देता है.

प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर बनाने वाली विश्व की एकमात्र जरमनी की कार्ल जेसिस जेना है. यह संस्था चार विभिन्न आकारों के प्रोजेक्टर बनाती है, स्काई थिएटर के आकार और दर्शक क्षमता के अनुरूप इस का चुनाव किया जा सकता है.

दरअसल प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर 50 से अधिक छोटेछोटे स्वतंत्र प्रोजेक्टरों का समूह है. इस के दोनों सिरों पर 750 मि.मी. व्यास के ग्लोब होते हैं. बीच में 1,500 वाट का प्रोजेक्शन लैंप रखा होता है. दोनों ग्लोबों में 16-16 स्वतंत्र प्रोजेक्टर होते हैं. ऊपरी ग्लोब की सहायता से पृथ्वी के उत्तरार्द्ध व निचले ग्लोब से पृथ्वी के दक्षिणार्द्ध से दिखने वाले रात्रि आकाश की स्थिति दिखाई जा सकती है.

ये ग्लोब मनचाही दिशा में घुमाए जा सकते हैं. हर स्वतंत्र प्रोजेक्टर में रात्रि आकाश के छोटेछोटे भागों में दृश्यों की स्लाइड लगी होती हैं. ये स्लाइडें टेलीस्कोप द्वारा आकाश के विभिन्न भागों के लिए गए वास्तविक छायाचित्रों से इस प्रकार तैयार की जाती हैं कि सभी प्रोजेक्टर से मिल कर रात्रि आकाश का संपूर्ण चित्र बन जाए.

तारों के प्रतिबिंब कापर फाइल पर 0.023 से ले कर 0.452 मि.मी. के आकार के सूक्ष्म छिद्रों से तैयार किए जाते हैं. 52 से भी अधिक आकार के इन छिद्रों की मोटाई तारे के सापेक्ष चमकीलेपन का प्रतिनिधित्व करती

चमकीले तारों की अनुकृतियां

कार्ल जेसिस जेना के यूनिवर्सल प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर से 8,900 से अधिक तारे, 18 तारापुंज और आंख से दिखाई देने वाले नेब्यूला स्काई थिएटर स्क्रीन पर प्रदर्शित किए जा सकते हैं. प्लेनेटेरियम प्रोजेक्टर में 20 अन्य सहायक प्रोजेक्टर 20 अधिक चमकीले तारों की अनुकृतियां बनाते हैं. इस के अतिरिक्त ग्लोबों को जोड़ने वाली धुरी में लगे अन्य सहायक प्रोजेक्टर सूर्य, सूर्य ग्रहों, चंद्रमा, चंद्रमा की विभिन्न कलाओं को प्रदर्शित करते हैं. ये सभी प्रोजेक्टर स्वतंत्र रूप से घूम सकते हैं. इन की विभिन्न गतियों से ग्रहों की सापेक्ष गति दिखाई जाती है. यूनिवर्सल प्रोजेक्टर में लगे अन्य प्रोजेक्टर चित्र नक्षत्र मंडलों की काल्पनिक आकृतियां, आकाशगंगा, सूर्य व चंद्र ग्रहण के

नेहरू प्लेनेटेरियम बंबई के निदेशक डा. वैंकटवर्धन : हमारे कार्यक्रमों का उद्देश्य सरल भाषा में अंतरिक्ष की नईनई जानकारी मनोरंजन के रूप में दर्शकों तक पहुंचाना है.

विशेष प्रभाव, पुच्छल तारों व मानव निर्मित उपग्रहों को दिखाने के लिए प्रयोग में लाए जाते हैं.

स्काई थिएटर स्क्रीन पर मात्र रात्रि आकाश दिखाना दर्शक को बांधने के लिए पर्याप्त नहीं है. शो देखने आने वाला प्रत्येक दर्शक अंतरिक्ष विज्ञान का प्रकांड पंडित नहीं होता. इन सब तथ्यों को सामने रखते हुए डेढ़ घंटे का कार्यक्रम इस प्रकार तैयार किया जाता है कि अंतरिक्ष के बारे में नवीनतम जानकारी तो मिले ही, साथ ही यह वैज्ञानिक तथ्यों पर वैज्ञानिक शब्दावली में रूखा भाषण मात्र बन कर न रह जाए.

बंबई के नेहरू ग्रहमंडप ने अंतरिक्ष के बारे में अब तक आठ कार्यक्रम तैयार किए हैं, जिन में नवीनतम कार्यक्रम अंतरिक्ष में जीवनी की खोज के प्रयासों पर आधारित 'ब्रह्मांड जीवन' है. इन कार्यक्रमों को तैयार करने में सक्रिय भूमिका रहती है यहीं की वरिष्ठ वैज्ञानिक अंजना गुप्त की. पिछले
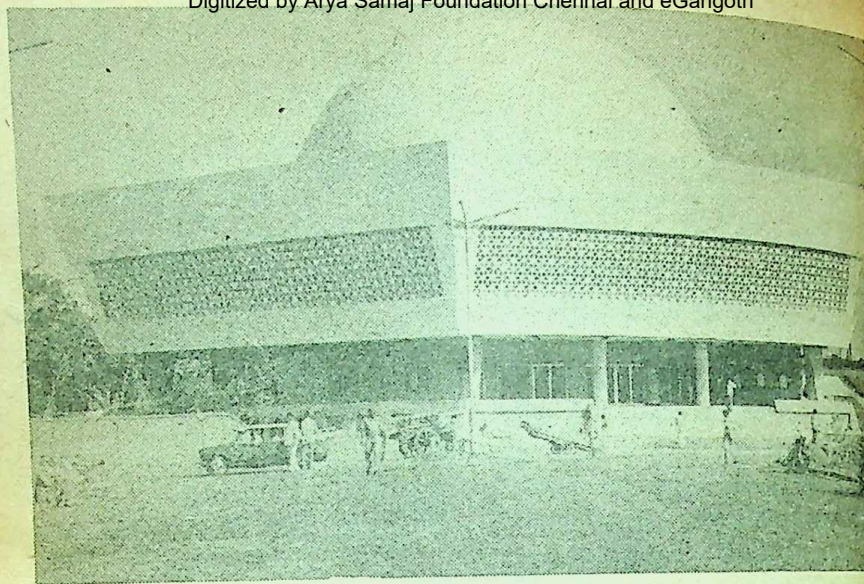
बंबई में.वर्ली स्थित नेहरू प्लेनेटेरियम का बाह्य दृश्य.

दिनों लेखक ने उन से मिल कर जानना चाहा कि ये कार्यक्रम किस प्रकार तैयार किए जाते हैं.

अंजना गुप्त ने बताया, "हमारे शो का उद्देश्य सरल भाषा में अंतरिक्ष की नई से नई जानकारी मनोरंजन के रूप में दर्शक तक पहुंचाना है. इस के लिए पहले तो हम एक विषय का चुनाव करते हैं. फिर उस विषय से संबंधित छोटी से छोटी बात को विभिन्न स्रोतों से एकत्र करते हैं. संकलित सामग्री के आधार पर पटकथा तैयार की जाती है. यह पटकथा उस विषय के अधिकारी विद्वानों को उन की सम्मतियां जानने के लिए भेज दी जाती है. प्राप्त किए हुए सुझावों के आधार पर पटकथा को अंतिम रूप दिया जाता है. पटकथा के अनुरूप दृश्य सामग्री की तलाश की जाती है. जहां तक संभव हो ट्रांसपरेंसियों और फोटोग्राफों का ही प्रयोग किया जाता है. जिस चीज के फोटो नहीं मिलते, उन का रेखांकन करा लिया जाता है.

"हमारे शो का सबल पक्ष उस का विषय के अनुरूप संगीत और प्रस्तुतीकरण है. संगीत के लिए हर बार किसी मंजी हुई टीम को लेते हैं. 'ब्रह्मांड जीवन' का संगीत कल्याणजी आनंदजी और विजय राघवराव ने दिया है. प्रस्तुतीकरण के लिए हम व्यावसायिक उद्घोषकों की आवाज लेते हैं. विषय के अनुरूप संगीत और आवाज का उतारचढ़ाव कार्यक्रम में विशेष प्रभाव डालता है. कार्यक्रम तैयार करने के बाद स्टूडियो में दृश्य और संगीत को सिंक्रोनाइज्ड (एकाकार) किया जाता है, इस के बाद विशेषज्ञों को आमंत्रित कर के उन्हें शो दिखाते हैं और उन के सुझाव ले कर कार्यक्रम का संपादन किया जाता है. इस के बाद हमारा शो प्रदर्शन के लिए तैयार हो जाता है."

"सामान्यतः एक कार्यक्रम की तैयारी कितने दिनों में संभव हो पाती है?"

"चारपांच महीनों में."

"आप निरंतर अपने बनाए हुए कार्यक्रम ही दिखाती हैं या अन्य ग्रहमंडपों के कार्यक्रम भी मंगा कर प्रदर्शित करती हैं?"

"अन्य कार्यक्रमों का विनिमय तो चलता है, लेकिन स्काई थिएटर शो को अन्यत्र दिखाने की हमारी निकट भविष्य में योजना है."

"आजकल आप किस विषय पर ...र्यक्रम तैयार कर रही हैं?"

"कार्यक्रम का नाम है 'वायलेंट ...नीवर्स.' इस में हम ब्रह्मांड के प्रचंड रूप को ...खाने की कोशिश कर रहे हैं. ब्रह्मांड में ...तिदिन अनेक तारे एकदूसरे से टकरा कर ...कदूसरे का विनाश कर देते हैं तो कई तारे ...ी उम्र चमकने के बाद रिटायर हो जाते हैं. ...अंततोगत्वा सफेद बौने (व्हाइट ड्वार्फ) या ...र ब्लैक होल में बदल जाते हैं. रोज नई ...काश गंगाएं बनतीबिगड़ती हैं. ...बोंखरबों उलकाएं और पुच्छल तारे जन्म ...ते हैं. वैसे भी ब्रह्मांड के स्वरूप, उद्भव का ...धार यह कल्पना है कि एक बहुत बड़े ...माके से ब्रह्मांड की उत्पत्ति हुई है. हमारे शो से दर्शकों को ब्रह्मांड के विराट और विनाशकारी स्वरूप का परिचय मिलेगा."

"स्काई थिएटर शो के अतिरिक्त ग्रहमंडप की क्या गतिविधियां हैं?"

"विज्ञान के प्रति सामान्य लोगों में चेतना जगाने के लिए विविध विषयों पर फिल्म प्रदर्शनों, व्यांख्यानमालाओं का आयोजन किया जाता है. इस के अतिरिक्त नई खोजों पर प्रदर्शनियों, छात्रों के लिए विज्ञान प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया जाता है."

अंजनाजी के साथ बातचीत के बाद लेखक ने उन से ग्रहमंडप की पहली मंजिल पर प्रदर्शित उपकरणों, चित्रों और माडलों की जानकारी ली. यहां चंद्रमा की सतह,

धब्बे सूर्य के

चंद्रमा की सतह के धब्बे नंगी आंख से ...ने में स्पष्ट नजर आते हैं, जिन को ले कर ...हित्य में अनेक रोचक कल्पनाएं की गई हैं. ...कन सूर्य पर भी धब्बे हो सकते हैं, इस का ...गैलेलियो ने लगाया था. वैज्ञानिक प्रचंड ...से गरम सूर्य की सतह के धब्बों के रहस्य सुलझाने के लिए जोरशोर से प्रयास कर ...हैं.

बंबई के नेहरू प्लेनेटेरियम में 2 मार्च, ...82 को एक सौर दूरबीन लगाई गई है. इस ...सफेद परदे पर सूर्य का प्रतिबिंब बनता है, ...तिबिंब में सूर्य की सतह पर विभिन्न स्थानों ...छोटेबड़े कई धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं.

सौर विज्ञान की नवीनतम खोज के ...सार धब्बों का तापक्रम शेष सतह की ...ना में 2,000 अंश कम होता है. यद्यपि ...वाले हिस्से पूर्णमासी के चंद्रमा से कम ...श नहीं छोड़ते, फिर भी सूर्य के ...स्फेरिक भाग की तुलना में तो यह बहुत ...माना जाएगा. पूर्ण रूप से विकसित धब्बे ...विशिष्ट स्थितियां हैं. धब्बे के आंतरिक ...को उंब्रा और चमकीली सतह के करीब के भाग को न्यूंब्रा कहते हैं.

यह देखा गया है कि सूर्य के भूमध्यकीय क्षेत्र के धब्बे अन्य भागों की तुलना में तेजी से स्थान बदलते रहते हैं. धब्बों के स्थान परिवर्तन से पता लगा है कि सूर्य अपनी धुरी पर 25 पृथ्वी – दिन में एक चक्कर लगता है. लेकिन उस के ध्रुवीय क्षेत्रों को एक चक्कर पूरा करने में 34 दिन लगते हैं. कुछ वैज्ञानिकों का अनुमान है कि घूमने की गति के इस अंतर के कारण ही सूर्य पर धब्बे बनतेबिगड़ते हैं.

ये धब्बे अपने स्थान पर स्थिर नहीं रहते, वरन स्थान बदलते रहते हैं. 1975 में सूर्य की सतह पर न्यूनतम धब्बे थे. कुछ ही वर्षों में इन की संख्या तेजी से बढ़ गई. धब्बों के घटनेबढ़ने का चक्र 11 वर्ष आंका गया है. जिस वर्ष सूर्य की सतह पर धब्बों का अधिक जोर होता है, उस वर्ष पृथ्वी पर मौसम में विनाशकारी परिवर्तन आते हैं, आकस्मिक तूफान, बाढ़, सूखा तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं की संख्या बढ़ जाती है. ऐसा क्यों होता है, इस गुत्थी को सुलझाने में वैज्ञानिक लगे हुए हैं.

मंगल ग्रह, शनि और उस के विभिन्न चंद्रमाओं के सजीव माडल रखे हुए हैं. पहली मंजिल की छत पर सौरमंडल के विभिन्न ग्रह सापेक्ष गति से घूमते हुए दिखाए गए हैं. विभिन्न ग्रहों पर गुरुत्वाकर्षण की जानकारी के लिए कई गुरुत्वाकर्षण बूथ बने हुए हैं. जिस ग्रह पर आप अपना वजन जानना चाहें, उस ग्रह के बूथ में जा कर सिक्का डालिए, टिकट पर आप का वह वजन आएगा जो उस ग्रह पर उतरने के बाद आप को महसूस होगा.

दूसरी मंजिल पर स्काई थिएटर के अतिरिक्त एक सौर दूरबीन भी है, जिस से आप सूर्य की सतह और उस के आसपास का वातावरण देख सकते हैं. यह दूरबीन सूर्य का प्रतिबिंब एक सफेद स्क्रीन पर बनाती है. इस में सूर्य की सतह के काले धब्बे स्पष्ट नजर आते हैं. इन धब्बों की गुत्थी सुलझाने में सौर वैज्ञानिक जुटे हुए हैं.

यदि आप दिन में तारे देखना चाहें तो मुहावरा प्रयोग करने की जरूरत नहीं, बस आप को ग्रहमंडप तक जाना होगा. ●

तभी तो आप

- हिंदी की बोलचाल में और वाक्य में दो तीन शब्द अंग्रेजी के जरूर रखते हैं. हर दूसरा वाक्य अंग्रेजी का बोलते हैं.
- अपने नाम का संक्षिप्तीकरण अंग्रेजी अक्षरों में करते हैं बी.पी. शर्मा, एस.एन. वर्मा, के.एम. गुप्ता, आई.एम. दास......
- अपने सांस्कृतिक, सामाजिक, पारिवारिक और निजी उत्सवों एवं सम्मेलनों के निमंत्रण अंग्रेजी में छपवाते हैं, चाहे आप और आपके आमंत्रित अंग्रेजी के चार वाक्य भी सही रूप में न लिख सकें और न समझ सकें.
- अपना निजी पारिवारिक पत्रव्यवहार अंग्रेजी में करते हैं.

अंग्रेजी साहबों की भाषा है. आप पूरी नहीं बोललिख सकते तो आधीअधूरी ही सही, साहबी कुछ तो दिखाई देगी ही!

गंजों की हिमायत

यह बात अब तय पाई गई है कि गंजा होना हर स्थिति में फायदेमंद है. आइए, आप भी इस से होने वाले फायदे जान लें.

व्यंग्य • डा. सत्यकुमार

आप गंजे हैं या गंजेपन की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, तो परेशान क्यों होते हैं? शीशा सामने रखे सदा अपनी गंजी चांद हाथ फेरते रहते हैं? क्यों हकीमों के और म की तरह मुलायम बालों के विज्ञापनों के कर में पड़ते हैं? गांठ बांध लीजिए कि पन की कोई दवा नहीं है.

गंजे हैं तो हीन भावना से क्यों पीड़ित हैं? अजी, गंजेपन को वरदान समझिए. नी कहावत है कि 'गंजा आदमी रवान होता है.' अतः यह तो बुद्धिमानी तीक है,समृद्धि का चिह्न है. यदि गंजेपन शुरुआत ही है तो समझ लीजिए कि आप न फिरने वाले हैं, धन की कृपा आप पर वाली है.

गंजेपन से व्यक्तित्व में भी निखार आ है. गंजा व्यक्ति गंभीर होता है. अधीनस्थ कर्मचारियों को गंजा अधिकारी अधिक प्रभावित करता है. गंजे व्यक्ति को कोई भी उत्तरदायित्व निस्संकोच सौंपा जा सकता है.

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी सोचें तो गंजापन मस्तिष्क को अधिक प्रयोग करने के कारण होता है. जब दिमागी कसरत होगी, तभी तो ऊपर खोपड़ी में हलचल होगी और ऊपर के बाल धराशायी होंगे. अतएव निस्संकोच कहा जा सकता है कि गंजे व्यक्ति का दिमाग तेज होता है. वैसे भी खोपड़ी पर बाल होने के कारण दिमाग को पोषक तत्त्व नहीं मिल पाते. वे केशवृद्धि में समर्पित हो जाते हैं, मस्तिष्क तक पहुंचते ही नहीं. गंजे व्यक्ति का मस्तिष्क तो वातावरण से भी पोषक तत्त्व ग्रहण करने की क्षमता रखता है.

फिर गंजे व्यक्ति को सुविधाएं कितनी

हैं? एक मिनट में मुंह पर हाथ फेर कर स्वयं को कहीं भी जाने के लिए तैयार पाता है. उसे कंघेशीशे से बाल संवारने की कोई आवश्यकता नहीं. रात भर का जागा हो, परंतु किसी को पता ही नहीं चल सकता. केशधारियों की जुल्फें सारा रहस्य खोल देती हैं. आंधी हो या तूफान, वर्षा हो या कोहरा, गंजे व्यक्ति के चेहरे का बाल बांका नहीं हो सकता.

महंगाई के इस युग में तो लोगों को गंजा होने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए. न साबुन का खर्चा, न तेल का. न शैंपू का, न बाल 'सेट' कराने का. न कंघे का, न 'ब्रश' का. न नाई का, न खिजाब का. अब लगाइए हिसाब कितनी बचत है?

सब से बड़ा लाभ कि आप कभी 'जूं' से परेशान नहीं होंगे. जब बाल ही नहीं हैं, तो 'जूं' कहां होंगी? गंजापन तो एक प्रकार से जूं के विरुद्ध बीमा है.

गंजेपन से आप को क्या हानि है? जिंदगी की दौड़ में आप कहां पिछड़ेंगे? अनेक नेता गंजे हैं, अभिनेता गंजे हैं, ख्यातिप्राप्त खिलाड़ी गंजे हैं, शिक्षा शास्त्री भी गंजे हैं. गंजापन कहां अभिशाप सिद्ध होता है?

गंजेपन के तो लाभ ही लाभ हैं. आप के बाल कभी सफेद ही नहीं होंगे. बुढ़ापे में भी आप की आयु दस वर्ष कम लगेगी. युवा दिखने के लिए पता नहीं लोग क्याक्या करते हैं, आप को तो प्रकृति ने ही सदाबहार बना दिया है.

गंजे व्यक्ति का अपना अलग व्यक्तित्व होता है. भीड में भी कोई दूर से ही पहचान सकता है. आप से अपरिचित व्यक्ति भी इशारे से ही समझ जाएगा. उसे किसी व्यक्ति से पूछने की आवश्यकता नहीं होगी कि अमुक सज्जन कौन हैं. आप विशिष्ट व्यक्ति जो ठहरे? आप को कोई भी, कहीं भी सहज ही संबोधित कर सकता है. बिना नाम के भी आप का नाम है और वह भी ऐसा कि बच्चा-बूढ़ा, शिक्षितअशिक्षित, ग्रामीण शहरी आदि सभी बिना बताए समझ जाते हैं. आप की अपनी अलग पहचान है. बस में हो या ट्रेन में, क्रयविक्रय में हो या रसीद कटाने में, दसियों कामों में कितनी सुविधा होती है, भुक्तभोगी ही जानता है. पैसा या रसीद या अन्य कुछ गलत हाथों में पहुंच ही नहीं सकता.

लड़ाईझगड़े में? अजी कोई आप से यह कहने की जुर्रत नहीं कर सकता कि 'इतना...मारूंगा कि सिर पर एक भी बाल नहीं रहेगा.'

यदि आप यह समझते हैं कि महिलाएं गंजे व्यक्ति को पसंद नहीं करतीं तो यह भी आप का भ्रममात्र है. पहले तो यदि आप सर्वेक्षण करें, तो पाएंगे कि अविवाहित व्यक्तियों में केशधारियों की ही संख्या अधिक है. दूसरे, रहस्य की बात यह है कि गंजे व्यक्ति से तो महिलाएं ईर्ष्या करती हैं क्योंकि महिला वर्ग में यह विशिष्टता नहीं पाई जाती. आधुनिक महिला कितना ही पुरुष की समानता का प्रयत्न करे, 'गंजत्व' वह नहीं प्राप्त कर सकती.

अतएव यदि आप गंजे हैं, तो अपने गंजेपन पर गर्व कीजिए और हीनता की ग्रंथि मन से सदासदा के लिए निकाल दीजिए. ●

567 वर्ष कैद की सजा

बैंकाक में थेनस नार्कफोंग नाम का एक खजांची 2,27,021 बहत (लगभग 12,000 डालर) के गबन के आरोप में जेल में 567 वर्ष कैद की सजा भुगत रहा है.

39 वर्षीय नार्कफोंग को पहले 856 वर्ष की कैद की सजा दी गई थी, लेकिन स्थानीय फौजदारी न्यायालय ने इस में 289 वर्ष की सजा कम कर दी, क्योंकि नार्कफोंग ने जो गवाहियां पेश की थीं, वे उस के हक में अच्छी रहीं.

ये लड़के ये लड़कियां

इस स्तंभ के लिए अपने रोचक संस्मरण भेजिए. प्रकाशित होने पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी, पत्र पर अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता:
संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

मैं और मेरे कुछ साथी टेबिल टेनिस खेलने क्लब जाया करते हैं. लेकिन वहां खेल कम और बातें ज्यादा हुआ करती हैं. एक दिन जब हम सभी बैठे थे, मेरे एक दोस्त ने जिज्ञासावश पूछा कि अमूक सिनेमाहाल में कौन सी फिल्म चल रही है?

इस से पहले कि कोई कुछ कहता, एक लड़की, जो अपने आप को बहुत तेज समझती थी, बोल उठी, "अपना बना लो."

इस पर मेरे दोस्त ने तपाक से कहा, "कभी नहीं."

लड़की अब बगलें झांकने लगी.

—सुरेशकुमार शर्मा

*

हम दो लड़कियां बस द्वारा अंबाला से यमुनानगर जा रही थीं. हमारे साथ वाली सीट पर एक और लड़की बैठी थी, जिसे सहारनपुर जाना था. उस ने अपना बड़ा सा बैग अपनी बराबर में खाली जगह पर रख लिया था. महेशनगर पर बस रुकी तो लड़कों का एक झुंड बस में चढ़ आया. उन में से एक लड़का हमारी सीट के पास आया और उस ने उस लड़की से बैग उठाने का इशारा किया.

लड़की ने तत्काल अपना पर्स खोला और अपना टिकट निकाल कर उसे पकड़ा दिया. लड़के ने तब बड़े गौर से टिकट देखा और थोड़ा सा फाड़ कर उसे वापस दे दिया. फिर बोला, "अपना बैग सीट से उठा लीजिए."

अब वह लड़की जो गलती से उसे टिकट निरीक्षक समझ बैठी थी, बात समझ आने पर झेंप गई और बस में लड़कों के कहकहे गूंजने लगें.

—रीता

*

जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ता था तो हमारे एक अध्यापक कक्षा में घुसते ही हमारी पिटाई करनी शुरू कर देते थे. कभी कलम तो कभी किताब न लाने की वजह से.

एक दिन जब वे हमारी पिटाई कर रहे थे तो एक विद्यार्थी ने अपनी घड़ी खोल ली. उसे ऐसा करते देख अध्यापक डर गए. उन्होंने सोचा कि वह विद्यार्थी उन्हें मारना चाहता था. यह सोच कर वह सीधे प्रधानाध्यापक के पास गए और उन्हें अपने साथ ले आए.

प्रधानाध्यापक ने आ कर विद्यार्थी से पूछा, "बच्चे, तुम अपने अध्यापक को क्यों मारना चाहते हो?"

इस पर उस विद्यार्थी ने जवाब दिया, "श्रीमान्न जी, मैं उन्हें मारना नहीं चाहता. दरअसल मैं ने कल ही यह नई घड़ी खरीदी है, पिटाई में कहीं यह टूट न जाए, इसलिए मैं ने यह घड़ी उतार दी थी."

इस बात का हमारे उन अध्यापक पर ऐसा असर पड़ा कि उन्होंने आगे से बिलकुल ही मारना छोड़ दिया.

—दयालसिंह संधु •

रास्ते पर

कहानी • शैलेंद्रकुमार दूबे

नए बास के आने से वैसे तो पूरा विभाग ही परेशान था, पर सब से अधिक परेशान सुलेखा थी. सप्ताहमें दोतीन बार तो वह अवश्य ही अपने नाटक की रिहर्सल (पूर्वाभ्यास) के नाम पर कार्यालय से कभी तो दोपहर के भोजनावकाश के समय गायब हो जाती थी तो कभी छुट्टी से दो घंटे पहले. रिहर्सल होती तब भी, न होती तब भी.

वैसे तो सुलेखा से भी पूरा विभाग परेशान था, क्योंकि वह जाती तो अपना काम औरों में बांट जाती. पर वह अकसर एक प्यार भरी मुसकान के साथ कहती, "भई, यह काम बहुत जरूरी है, नहीं तो मैं लौट कर खुद ही कर लेती. आप के भरोसे ही तो उन लोगों से रिहर्सल पर आने को कह आई हूं."

नतीजा यह होता कि उस के विभाग का कोई भी आदमी न न कर पाता.

पिछले बास को तो काम से मतलब रहता था, पर जब से सुरेशजी आए हैं, सब का इधरउधर घूमना ही बंद हो गया है. सुलेखा को एकदो बार तो उन्होंने जाने दिया, पर बाद में बोले, "जब भी जाना हुआ करे, छुट्टी की अर्जी दे कर जाया करो."

नतीजा यह हुआ कि फालतू घूमनाफिरना बंद हो गया. कौन रोजरोज प्रार्थनापत्र लिखे? सुलेखा बहुत परेशान थी. सब कुछ आजमा कर हार गई, पर नए बास टस से मस न हुए.

लगभग दो माह इसी प्रकार बीत गए.

एक दिन दोपहर के भोजनावकाश के समय वह बास के कमरे में गई. बोली, "श्रीमन, यह रहा मेरी छुट्टी का प्रार्थनापत्र. आज दो बजे से रिहर्सल है."

"ठीक है, जाओ," सुरेशजी बोले.

सुलेखा ने जिस तरह सुरेश को अपनी चाल में फंसाया था उसे देख सुरेश भीतर ही भीतर कसमसा उठा. पर जब सुरेश ने चाल चली तो सुलेखा रास्ते पर आ गई.

''श्रीमन, एक जरूरी बात कहनी थी...''

''बोलो.''

''जी मेरी उंगली में चोट लगी है, विभाग के अन्य लोग कैंटीन में गए हुए हैं. एक दृश्य के कुछ संवाद लिखवाने बहुत जरूरी हैं, अगर आप...''

''हांहां, लाओ, मैं खाली ही तो बैठा हूं.''

कुछ पन्ने उन की ओर बढ़ा कर वह वहीं बैठ कर बोलने लगी.

''अपने मातहतों को प्रेमपत्र लिखते आप को शर्म नहीं आती,'' सुलेखा ने सुरेश से कहा.
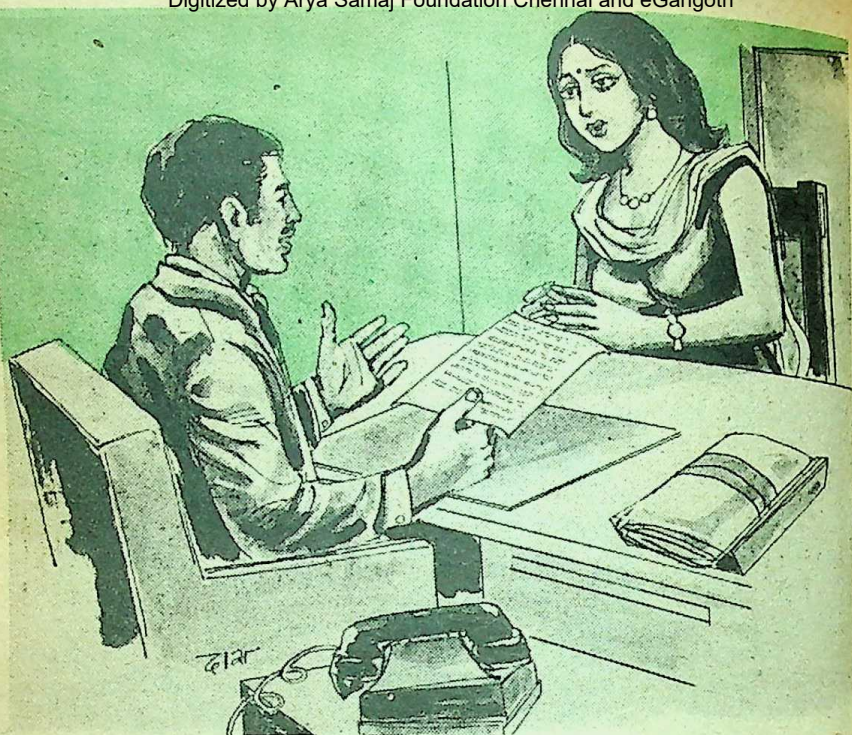
"उस दिन भले ही नाटक रहा हो पर आज यह वास्तविकता है. यह रहा आप का त्यागपत्र," सुरेश ने सुलेखा से कहा तो वह चौंक गई.

कुछ देर बाद संवाद पूरे होने पर वह सुरेशजी को धन्यवाद देते हुए लिखे कागज ले कर बाहर चली गई.

दोतीन दिन बाद वह बिना किसी को बताए ही दोपहर के भोजनावकाश के बाद कार्यालय से चली गई.

अगले दिन जब सुरेशजी ने उसे बुला कर बिना बताए चले जाने के लिए डांटना शुरू किया तो वह बीच में ही बोल उठी, "रुकिए, श्रीमंन, शर्म नहीं आती आप को अपने मातहतों को प्रेमपत्र लिखते हुए? कोई सुनेगा तो क्या कहेगा?"

"क्या? मैं और प्रेमपत्र..."

"यह देखिए," कहते हुए उस ने किसी कागज की एक फोटोस्टेट कापी उन की ओर बढ़ा दी. उसे देखते ही वह चकरा गए. उस पर लिखा था, "मेरे सपनों की रानी, जब से मैं ने तुम्हें देखा है, खुद को भुला बैठा हूं. कितनी सुंदर हो तुम. तुम्हारी झील सी गहरी आंखों में डूबता ही जा रहा हूं. जब भी तुम्हें देखता हूं, दिल धकधक कर उठता है. क्या तुम्हें भी..."

"पर यह... यह तो तुम्हारे नाटक का वह संवाद है, जो उस दिन तुम ने मुझ से लिखवाया था."

"रहा होगा, पर इस समय आप के मुझ को लिखे प्रेमपत्र का संवाद है. भले ही नीचे आप के हस्ताक्षर नहीं हैं, पर लिखावट तो आप की ही है. बस, कार्यालय में दिखाने भर की देर है, कितनी इज्जत होगी आप की लोगों में..." कहती हुई वह बाहर आ गई. सुरेशजी उस के जाते ही सिर पकड़ कर बैठ गए.

फिर तो अकसर ही वह कार्यालय से गायब रहने लगी. सुरेशजी सब देखते हुए भी अनदेखा कर देते. विभाग वाले सुरेशजी में

पूरे परिवार के मनोरंजन के लिए
विश्व सुलभ साहित्य

आखिरी दिन
परमाणु युद्ध की रहस्य व दर्दभरी कहानी जिस का हर पात्र आप की सहानुभूति बटोर लेगा
रु. 5.00

हिम सुंदरी
द्वितीय महायुद्ध की विभीषिका के बीच गंगा की घाटी में बर्फ में दबे हुए अनेक जीवित शवों की सनसनी खेज कहानी.
रु. 7.00

नानावती का मुकदमा
अनैतिक प्रेम के दुष्परिणामों की सच्ची कहानी. रु. 3.00

उत्तरदान
रहस्य, रोमांच एवं रोमांस लिए स्वतंत्रता संग्राम की कहानी रु. 5.00

नई सुबह
एक फौजी द्वारा फौजियों की जिंदगी की कहानी. केरल साहित्य एकादमी से पुरस्कृत रु. 3.50

अंतरिक्ष के पार
कंप्यूटर हेरोकोल्ट-7, एक दिन दास से स्वामी बन बैठा. क्या मानव हार गया ? रु. 3.00

प्रतिशोध
एक जर्मन सैनिक की रोंगटे खड़े कर देने वाली सच्ची कहानी जिस ने अपनी ही सेना के विरुद्ध ज़िहाद कर दिया था
रु 5.00

डाकुओं के घेरे में
डाकुओं की समस्या पर लिखा गया दिलचस्प उपन्यास. रु. 5.00

आज ही अपने पुस्तक विक्रेता से लें.

विश्वविजय प्रकाशन, एम-12 कनाट सरकस, नई दिल्ली-110001

मूल्य अग्रिम आने पर पूरा सैट 25 रुपए में, डाकखर्च नहीं, या कोई भी चार पुस्तकें केवल 15 रुपए में डाकखर्च 2 रुपए.

आए परिवर्तन से आश्चर्यचकित थे.

एक दिन जैसे ही सुलेखा कार्यालय से बाहर जाने लगी, तभी रामू चारपांच कागज से ले कर उस के पास पहुंचा.

"देवीजी, एक मिनट..."

"क्या है, रामू? कई बार मना किया है कि कहीं जाते समय टोका मत करो. कोई जरूरी कागज है क्या?"

"नहीं, सभी लोग वेतन वृद्धि के लिए आवेदनपत्र प्रधान कार्यालय भेज रहे हैं, आप का ही आवेदनपत्र रह गया था. आप भी हस्ताक्षर कर दीजिए," कहते हुए रामू ने कई कागज उन की तरफ बढ़ा दिए.

"ये इतने सारे कागज क्या हैं?" सुलेखा ने पूछा.

"उसी आवेदनपत्र की कई प्रतियां हैं जो कई लोगों के पास भेजी जाएंगी."

सुलेखा बिना कुछ देखे सब पर जल्दीजल्दी हस्ताक्षर कर के कार्यालय से बाहर चली गई.

रामू ने सभी कागज ले जा कर सुरेशजी को दे दिए.

दूसरे दिन जैसे ही सुलेखा कार्यालय आई, रामू ने बताया कि बास बुला रहे हैं.

कमरे में पहुंचते ही सुरेशजी ने सुलेखा की ओर एक कागज बढ़ा दिया. कागज में सुलेखा का त्यागपत्र स्वीकार किए जाने की सूचना थी.

सुलेखा जरा तेज स्वर में बोली, "यह क्या मजाक कर रहे हैं आप मुझ से? मैं ने त्यागपत्र दिया ही कब था?"

"सुलेखाजी, उस दिन भले ही नाटक रहा हो, पर आज यह वास्तविकता है. यह आप का त्यागपत्र है. रामू के द्वारा भिजवाए जिन कागजों पर आप ने हस्ताक्षर किए थे, उन में एक यह भी था."

सुलेखा धम्म से वहीं बैठ गई. लगा, उस के पैरों तले से जमीन खिसक गई हो. वह पसीनेपसीने हो गई.

सुरेशजी ने एक गिलास पानी उस की ओर बढ़ाया. वह एक ही सांस में सारा पानी पी गई.

"मुझे माफ करें, श्रीमन, मैं बहुत शर्मिंदा हूं," कहती हुई वह सामने पड़ी कुरसी पर बैठ गई.

उस दिन से सुलेखा बिना बताए कार्यालय छोड़ कर फिर कभी नहीं गई. पर दफ्तर वाले इस बार भी हैरान हैं कि यह सब कैसे हुआ. •

ब्रिटेन की सब से बुद्धिमान लड़की

आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से संबद्ध एक कालिज ने रूथ लारेंस नाम की एक 10 वर्षीया लड़की को छात्रवृत्ति प्रदान की है. कालिज की नजर में यह ब्रिटेन की सब से बुद्धिमान लड़की है.

कालिज में प्रवेश के लिए गणित की परीक्षा ली गई थी, जिस में 530 परीक्षार्थियों ने भाग लिया था. इस के लिए गणित के तीन प्रश्नपत्र तैयार किए गए थे और हर प्रश्नपत्र के लिए तीन घंटे का समय निर्धारित किया गया था. रूथ लारेंस ने इन परीक्षाओं में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त किए. गणित के शिक्षकों की नजर में ये तीनों प्रश्नपत्र ऐसे थे जिन्हें 18 वर्ष का परीक्षार्थी भी बहुत मुशकिल से हल कर सकता था.

रूथ ने पिछले सितंबर में हडर्सफील्ड टेकनिकल कालिज में विज्ञान के अध्ययन के लिए प्रवेश लिया था, लेकिन उस से पहले कभी भी स्कूल नहीं गई थी. उस के मातापिता ने उसे घर पर ही पढ़ाया था. उस के मातापिता दोनों ही कंप्यूटर सलाहकार हैं.

बदलेगी परिभाषा

सहमी हवाएं
दरवाजे बंद
बुत बना आदमी
पी रहा द्वंद्व.

सड़क से संसद तक
दंगे ही दंगे
चेहरे से पैरों तक
नंगे ही नंगे
हाथों में चाबुक है
लूटते स्वच्छंद.

पीढ़ी के कंधे
हैं घायल पंख
जीते हैं लिपटाए
गिद्ध और घुटन
बदलेगी परिभाषा
कब अपना रंग.

—उदय यादव
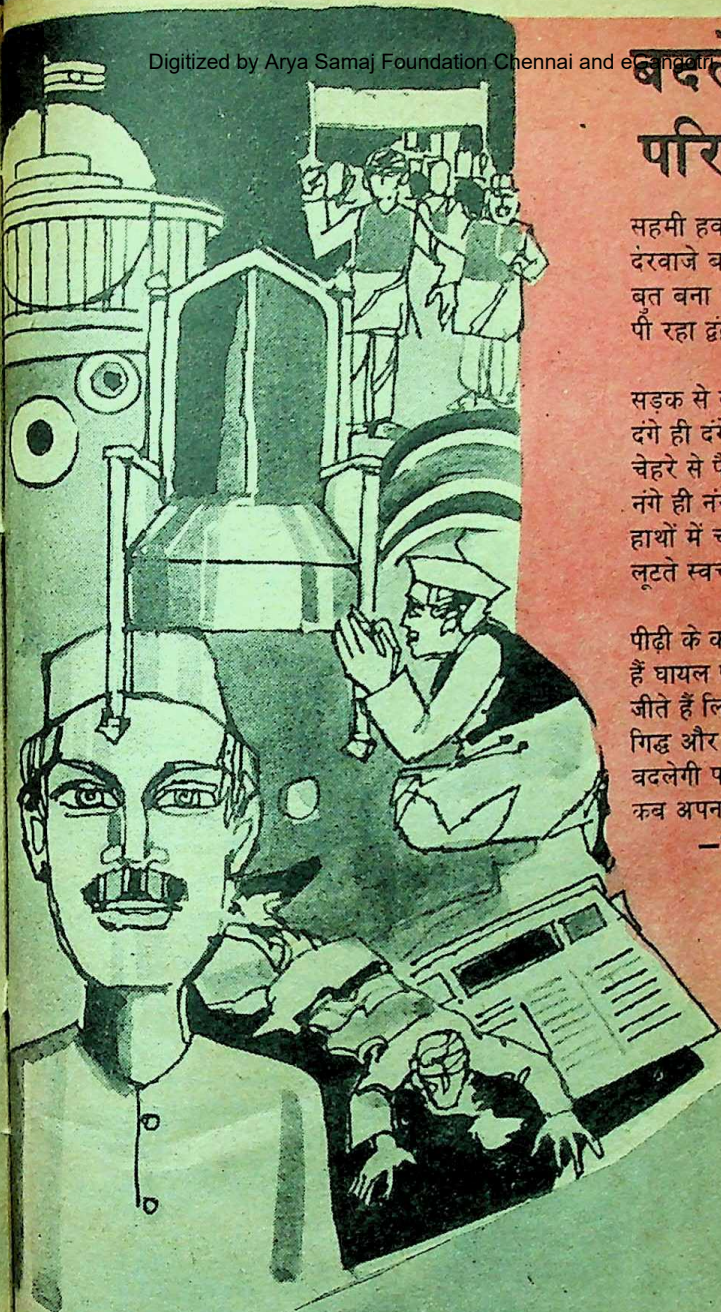
चित्रावली
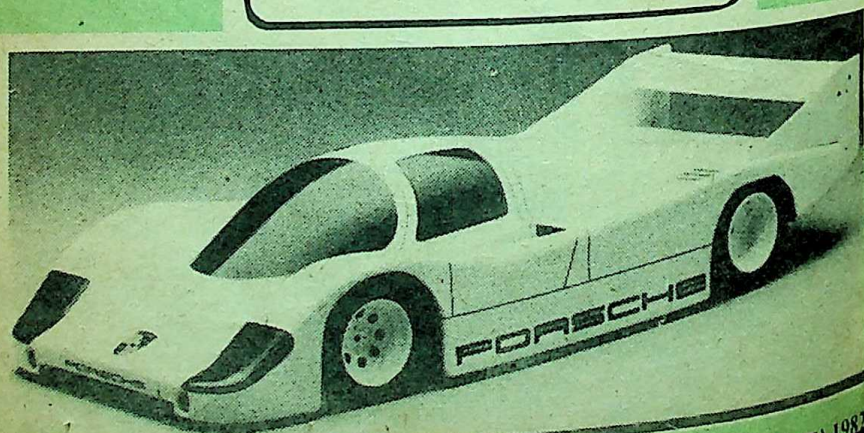
PORSCHE

इंजीनियरिंग की दुनिया में : हैनीवर (पश्चिम जरमनी) में भारतीय फर्म मैसर्स लारसन एंड टूब्रो को उत्कृष्ट औद्योगिक डिजाइन के लिए दो पुरस्कार दिए जाना यह साबित करता है कि इंजीनियरिंग के मामले में भारतीय भी कुछ कम नहीं हैं.
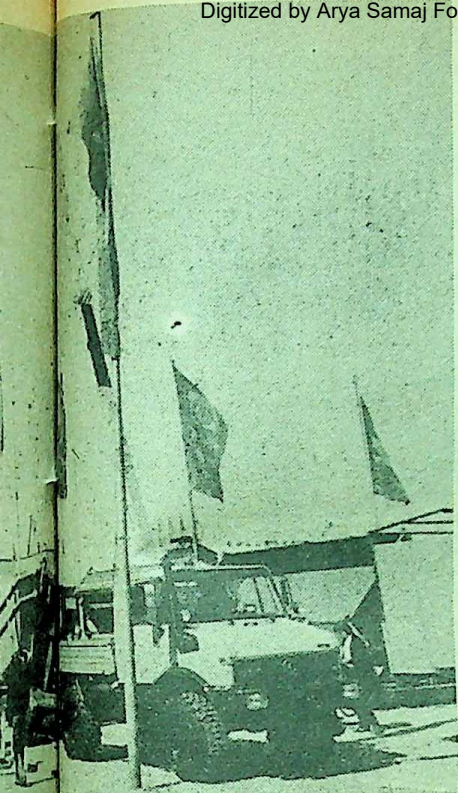
मुकाबले के लिए : डोनकैस्टर के इस नन्हें खलीफा गैरी लेवर की समस्या हल की है इंगलैंड के सब से ऊंचे-6 फुट 5 इंच लंबे मुक्केबाज नील मैलपासा ने. लेवर को छोटा होने की वजह से, मुक्केबाजी के अभ्यास के लिए कोई साथी नहीं मिल पा रहा था.

लंबी दौड़ बनाम कार : दुनिया की जानीमानी नौ कंपनियों की कार दौड़ में शामिल करने के लिए स्टुटगार्ट स्थित स्पोर्ट्स कार बनाने वाली फर्म वेसाक रिमर्न डिवीजन ने पोर्श कार का नया माडल बनाया है.

देसी सारंगी विदेश में बात अगर कला की हो तो यहां भी भारतीय पीछे नहीं रह सकते. सारंगी में निपुण पंडित रामनारायण व तबला वादक सुरेश तलवलकर की संगत ने कोलोन (पश्चिम जरमनी) के श्रोताओं को ऐसा मंत्रमुग्ध किया कि वे अपनी सुधबुध ही खो बैठे.

एशियाई खेलों के लिए : नवंबर में होने वाले एशियाई खेलों के व्यापक प्रसारण के लिए पश्चिम दिल्ली के प्रीतमपुरा में 3.15 करोड़ रुपए की लागत से 235 मीटर ऊंचा टेलीविजन टावर बनाया जा रहा है. इस में घूमता हुआ रेस्टोरेंट व आसपास के दृश्य देखने के लिए 150 मीटर ऊंची दर्शक दीर्घा भी होगी.

नवंबर में
व्यापक
दिल्ली के
रुपए की
टेलीविजन
में घूमता
दृश्य देखने
दीर्घा भी
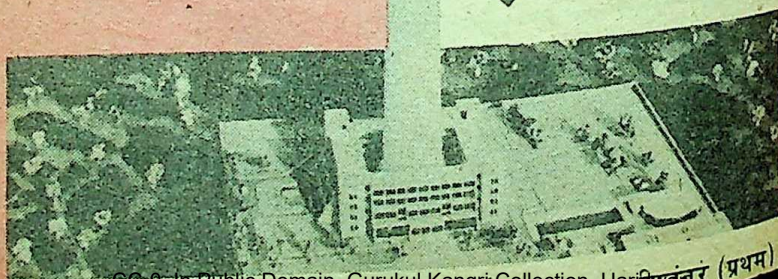
युवराज का जन्म : इंगलैंड के भावी शासक प्रिंस चार्ल्स व उन की पत्नी डायना के विवाह ने एक ही साल में अपने देश को नए युवराज का उपहार दिया है. युवराज का जन्म पश्चिम लंदन के सेंट मेरी हस्पताल में हुआ.

50 लाख बच्चों की प्यारी रंगीन पत्रिका

हर पक्ष चंपक में प्रकाशित मनोरंजन व शिक्षाप्रद कहानियां, कविताएं, पहेलियां, चुटकले और लेख बच्चों को नई जानकारी देते हैं, उन का चरित्र संवारते हैं और नए स्वरूप में ढालते हैं.

चंपक

चंपक, पंजाबी और बंगाली भाषा के अलावा अंग्रेजी, हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलगु और मलयालम भाषाओं में भी प्रकाशित होता है.

अपने बच्चों को चंपक लेकर दें – उन का मनोरंजन भी करें और भविष्य भी संवारें.

दिल्ली प्रेस प्रकाशन

दास्ताने दफ्तर

* एक बार मैं किसी कार्यवश एक सरकारी दफ्तर गया. लेकिन वहां कोई भी मेरी बात सुनने को तैयार न था. किसी तरह मैं ने वहां कार्यरत अपने एक परिचित को बाहर बुलवाया और चायपान के दौरान अपनी समस्या बताने की सोची. लेकिन चाय पीतेपीते उन्होंने अपनी ही समस्या कुछ इस तरह बताई कि मैं अपनी समस्या तो भूल ही गया और उन्हीं की समस्या पर गौर करने लगा.

उन्होंने मुझे जो कुछ बताया वह उन्हीं के शब्दों में कुछ इस प्रकार था: 'घर से दफ्तर छः किलोमीटर दूर है. इसलिए 10 के बजाए मैं 11 बजे दफ्तर आ पाता हूं. दफ्तर आ कर सहकर्मियों का कुशल जानने में 12 बज जाते हैं. घर पर अखबार नहीं ले सकता इसलिए दफ्तर में अखबार पढ़तेपढ़ते एक बज जाता है. 10 से पांच तक ही चूंकि तमाम दफ्तर व राशन की दुकानें खुलती हैं, इसलिए घर के काम से इन का चक्कर लगाने में ही तीन बज जाते हैं. खाने और झपकी लेने के बाद मन लगा कर पांच बजे तक काम करता हूं. पर काम पूरा होता ही नहीं और सरकार है कि पांच बजे से रात देर तक का ओवरटाइम देती ही नहीं."

यह सुन कर सचमुच मेरी समझ में नहीं आया कि मैं उन से अपनी समस्या कहूं तो कैसे कहूं.

—राजेश शर्मा (सर्वोत्तम)

*

हमारे दफ्तर का चपरासी कम पढ़ालिखा होने की वजह से प्रायः हिंदी के कठिन शब्दों का उच्चारण सही नहीं कर पाता. एक बार हम दफ्तर में बैठे थे कि उस ने आ कर बताया कि सूचना पट्ट पर सूचना लगी है कि अमुक व्यक्ति के यहां 'सनफ्लावर' का आयोजन है. हम सभी काफी देर तक नहीं समझ पाए कि वह क्या कर रहा है. बाद में जब हम ने स्वयं

नौकरीपेशा व्यक्तियों को और किसी कार्यवश दफ्तरों में जाने वालों को दफ्तर में अनेक मनोरंजक स्थितियों से गुजरना पड़ता है और कई बार तो किस्सा बहुत ही दिलचस्प बन जाता है. क्या आप की दृष्टि में कोई इस प्रकार की घटना आई है, जो रोचक हो?

आप ऐसे संस्मरण 'मुक्ता' के लिए भेजिए. प्रत्येक प्रकाशित संस्मरण के लिए 15 और सर्वश्रेष्ठ पर 50 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी. पत्र के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

पत्र इस पते पर भेजिए :
संपादकीय विभाग, मुक्ता: ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

जा कर देखा तो पता चला कि वह 'स्वल्पाहार' को 'सनफ्लावर' कह रहा था.

—प्रभात सोनी

*

उस समय मैं एक चीनी मिल में कार्यरत था. मेरा विभाग था—गन्ना विभाग. हमारे विभाग में एक टाइपिस्ट श्री ग्रोवर भी थे. उन्हीं दिनों हमारे विभाग में एक सज्जन नएनए ही आए थे.

एक दिन जब कि टाइपिस्ट श्री ग्रोवर किसी कारणवश दूसरे विभाग में गए हुए थे तो हमारे अफसर को उन की जरूरत महसूस हुई. उस समय वह नए आए सज्जन भी उसी विभाग में जा रहे थे. यह देख कर हमारे अफसर ने उन से कह दिया, "भई, अगर आप को ग्रोवर मिले तो उसे दफ्तर में भेज देना."

काफी देर बाद वह सज्जन वापस आ कर बोले, "साहब, बाहर मुझे कोई ग्रोवर नहीं मिला." लेकिन बाद में हमे पता चला कि वह ग्रोवर को तो पहचानते नहीं थे. बल्कि वह किसी गन्ना उत्पादक (केन ग्रोअर) को ढूंढ़ढूंढ़ कर थक गए थे. और चूंकि गन्ने की फसल खत्म होने के कारण मिल में गन्ना नहीं आ रहा था. अतः वहां गन्ना उत्पादकों या कृषकों का क्या काम था.

—हृदयेशचंद्र कौशिक

*

बैंक की कार्य प्रणाली में कुछ खास शब्दों का इस्तेमाल होता है. एक बार हमारी शाखा में एक नए लिपिक की नियुक्ति हुई. अभी उसे कार्य करते हुए कुछ ही दिन हुए थे कि संबंधित अधिकारी ने एक दिन एक वाउचर देते हुए उस से कहा कि इसे रिजर्व बैंक में पोस्ट कर देना. अधिकारी का पोस्ट करने से तात्पर्य उस वाउचर को रिजर्व बैंक के खाते में दर्ज करना था. परंतु वह लिपिक नया होने की वजह से न समझ सका.

लगभग छुट्टी के समय अचानक उसी अधिकारी का ध्यान लिपिक की कमीज की जेब की तरफ चला गया जिस में से वाउचर नजर आ रहा था. उत्सुकतावश जब उन्होंने लिपिक से उस के बारे में पूछा तो उस ने जवाब दिया, "साहब, आप ने ही तो इसे रिजर्व बैंक में पोस्ट करने को कहा था. मैं घर जाते समय रास्ते में पड़ने वाले डाकघर से इसे पोस्ट कर दूंगा."

अधिकारी का चेहरा तब देखने लायक था.

—महेंद्रकुमार रूहेला

मेघदूत की गंध

रात अंधेरी
याद चंदरमा,
ऐसे में बैरन बांसुरिया
कौन बजाए?
लहरलहर पर स्वर्णहंसी की
पर्त चढ़ी है,
फूलफूल में मेघदूत की
गंध रची है.
दर्द सुरीला
वनवन भटका,

ऐसी तानें मनहिरना को
कौन सुनाए?
नदी किनारे चांदनिया का
जादू बिखरा,
किरणों की शहतीरों के संग
मन में उतरा,
हम को अपना
होश रहा ना,
ऐसे में आ कर सपनों में
कौन सताए?

—प्रकाश मनु
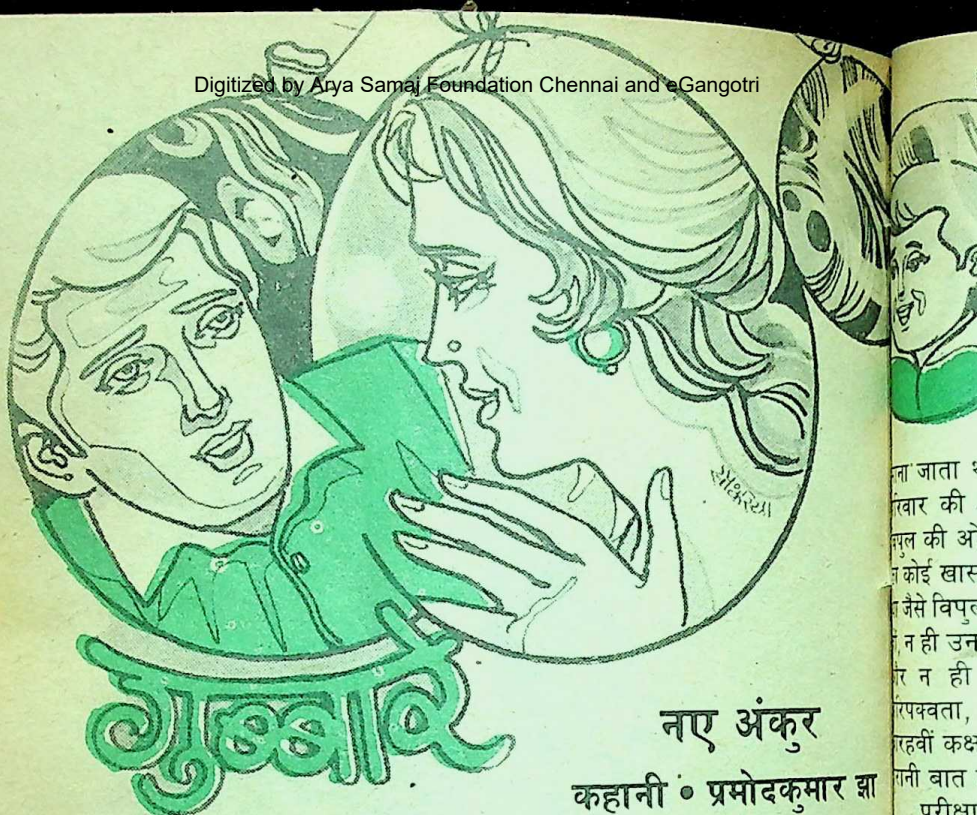
गुब्बारे

नए अंकुर

कहानी • प्रमोदकुमार झा

लाल, हरे, पीले, नीले, रंगबिरंगे सभी रंग के बड़ेबड़े गुब्बारे टंगे हैं, पर लंबे विशाल हाल में मौजूद लोगों की नजरें उन गुब्बारों की ओर नहीं जा रही हैं. सब एक दूसरे में ही उलझे हुए हैं. मैं किसी से उलझा नहीं हूं, इसलिए गुब्बारों को देख रहा हूं.

गुब्बारे हमारी तमन्नाओं के प्रतिरूप हैं. जितने बड़े गुब्बारे हैं, उतना ही बड़ा हमारा सपना है. हवाई किला तो बन कर टूट जाता है, सिगरेट के धुएं के छल्ले बन कर हवा में बिखर जाते हैं, सुंदर कलाकृतियां आम आदमी की समझ से बाहर हो कर विशेषज्ञों के समझने की चीज हो जाती हैं और किसी शोरूम या आर्टगैलरी में रख दी जाती हैं, पर गुब्बारे आम आदमी से दूर नहीं हो पाते. गुब्बारों के भीतर भरी हवा हमारी तमन्नाओं को समेटे रहती है. वे लालपीले गुब्बारे तब तक लटके रहते हैं, जब तक इन्हें कोई फोड़ न दे. पता नहीं किस बेरहमी से सड़क के किनारे निशाने लगवाने वाला लोगों को चंद पैसों के बदले फूले गुब्बारों को फोड़ने देता है. मेरे देखतेदेखते बीच का लाल वाला बड़ा गुब्बारा फूट गया. आवाज हुई. किसी का निशाना ठीक लगा होगा.

विपुल की मौत अप्रत्याशित नहीं थी, लेकिन मेरा मन उसे 'आत्महत्या' के अतिरिक्त कुछ और मानने को तैयार नहीं है. 10 वर्ष ही तो गुजरे होंगे, उस के विवाह को. विपुल ने एक क्रांतिकारी कदम उठाया था. उस ने एक मुसलमान लड़की से अदालत में जा कर शादी कर ली थी. 'सलमा' का नाम उस ने 'स्नेहा' रख दिया था और प्यार से उसे 'स्निग्धा' भी कहा करता था. उत्साही लोगों ने उस के फैसले का स्वागत तो किया था, किंतु बाद में होने वाले व्यंग्यबाणों से बचने में कोई मदद नहीं की थी. विपुल का कोमल हृदय इन शब्दबाणों से छलनी होता रहा था, कोई उपाय ही नहीं था उन से बचने का.

विपुल एवं सलमा साथसाथ ही पढ़ते थे. विपुल संस्कारी हिंदू परिवार का युवक था और कालिज में सब से तेज छात्र

धर्म की दीवार तोड़ कर विवाह करने के परिणाम यद्यपि सलमा के सामने थे, फिर भी उस ने अपने बेटे सौरभ का विवाह ईसाई लड़की एग्नेस से क्यों कर दिया?

ना जाता था. सलमा एक रईस मुसलिम रिवार की लड़की थी. उस के सीधेसादे पुल की ओर इतना ज्यादा आकर्षित होने कोई खास कारण न था, पर ऐसा लगता जैसे विपुल और सलमा काफी पुराने मित्र , न ही उन में कैशोर्य की उच्छृंखलता थी र न ही रोमांचकता, बल्कि उन में रिपक्वता, आत्मविश्वास व संयम था. रहवीं कक्षा तक उन की मित्रता की चर्चा रानी बात हो चुकी थी.

परीक्षा में विपुल को प्रथम स्थान मिला र सलमा को पांचवां. विपुल छात्रावास में पने कमरे को गुब्बारों से सजा कर रखता र कहता, "मैं अपनी सुखद कल्पनाओं को तरूप देना चाहता हूं. गुब्बारे वे माध्यम हैं, न के द्वारा मैं उन्हें व्यक्त करता हूं. कोई ल्पना अगर मुझे अमूर्त लगती है तो उस ब्बारे को समेट कर रख लेता हूं."

सलमा के दादा और अब्बा ने उन की दोस्ती के कारण कई बार सलमा को झिड़कियां भी दी थीं, पर सलमा ने सीधा जवाब दिया था, "अब्बाजान, आप को मुझ पर तो यकीन है न, अगर नहीं, तो जैसा भी ठीक सोचें, आप करें. लेकिन अगर आप को मुझ पर भरोसा है तो बेफिक्र रहिए. मुझे अपने भविष्य का पूरापूरा खयाल है." आधुनिक विचारों वाले उस के पिता अपनी इकलौती लाडली बेटी की इस बात को हंस कर टाल तो देते, पर गंभीर जरूर हो जाते थे.

सलमा अब विपुल के लिए 'स्नेहा' बन गई थी तथा हमेशा एक स्वप्निल मुसकान बिखेरती रहती. शायद यह दोनों के बीच निकट सान्निध्य का एक मूक समझौता था. उन का यह आपसी व्यवहार शब्दों में व्यक्त भी नहीं किया जा सकता था.

बी.एससी. के दो वर्षों में सलमा पर लांछनों की भरमार होने लगी थी. दोनों

(शेष पृष्ठ 88 पर)

ोग मेरे गुब्बारों पर निशाना लगाए ते हैं, क्या मिलेगा न्हें मुझे दुख दे र?' विपुल सोचा रता था.

(पृष्ठ ८५ से आगे)

परिवारों के लोगों के तेवर पूरी तरह से बदलने लगे थे. पर अब लोगों ने यह जरूर समझ लिया था कि वे आपस में शादी करेंगे ही.

विपुल अब भी सपनों के गुब्बारों को फुलाता जा रहा था. आनर्स की परीक्षा के समय तक उस का घर से पूरी तरह संबंध विच्छेद हो गया था. परीक्षा के अंतिम दिन दोनों ने अदालत में शादी कर ली. दोस्तों ने भरसक मदद की और इस शादी को खूब सराहा भी. किंतु वे उन्हें बाद की यातनाओं से कैसे बचाते.

सुनो न, देखो, मैं ने विपुल के गुब्बारों को सजा रखा है. सौरभ आज डाक्टर हो गया है. उस के भी गुब्बारे सजेंगे.

शादी के बाद जब सलमा विपुल के साथ अपने अब्बा से मिलने गई थी तो उन्होंने कहा था, ''सलमा बेटी, मेरी ख्वाहिश थी कि तुम खुश रहो, हालांकि मौके के मुताबिक यह ठीक नहीं, फिर भी मैं तुम्हें आगाह कर दूं कि जवानी के जोश में किए गए सभी फैसले सही नहीं होते. तुम मेरी बेटी हो, पर चूंकि तुम ने मेरी मरजी के खिलाफ कदम उठाया है, इसलिए तुम मुझ से किसी मदद की उम्मीद मत करना. फैसला तुम ने किया है, नतीजा भी तुम ही भुगतना. खैर, मैं तुम्हारे साहस की तारीफ भी करता हूं. मैं खुद मर्द हो कर इतना साहस नहीं कर पाया था. अच्छा, तुम खुश रहो.'' उस के अब्बा की आंखों से आंसू टपक पड़े थे. फिर वह वहां रुके नहीं थे.

आनर्स में विपुल प्रथम आया और स्नेहा द्वितीय. उन्माद अब समाप्त हो चुका था. सपनों के सामने अब सांसारिक जरूरतों को पूरा किए जाने की जरूरत आ खड़ी हुई थी. जल्दी ही विपुल को एक निजी कंपनी में क्लर्की की नौकरी मिल गई. सड़क पर, बस में, बाजार में कहीं न कहीं उस के कानों में बात पड़ ही जाती थी, ''बहुत तेज था विपुल, पर उस सलमा के पीछे बरबाद हो गया.''

कोई कहता, ''सुना है कहीं क्लर्की कर रहा है.''

वह खामोशी से सब सुनता रहता.

कभीकभी वह महसूस करता कि चिल्लाचिल्ला कर लोगों को सुना दे, 'सुनो दुनियावालो, मैं कुछ भी करूं तुम्हें इस से क्या?' पर उस की बोलने की शक्ति ही जैसे खत्म हो गई थी. शाम को घर आ कर स्नेहा से जरूर कहता, "न जाने लोग क्यों मेरे गुब्बारों पर ही निशाना लगाए रहते हैं. क्या मिलेगा उन्हें मुझे दुख दे कर?"

सलमा की स्वप्निल हंसी एवं उस का सहयोग ही बचा था, उस के पास. समाज के ठेकेदारों के व्यंग्यबाण उसे तोड़ते जा रहे थे. सच पूछें तो वह खोखला हो गया था और उस दिन वह सोया तो उठा ही नहीं. डाक्टर ने बताया कि उस के दिमाग की नस फट गई थी. लोगों ने मरने के बाद भी उस की आलोचना ही की.

फिर सलमा पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ा.

पर वह लड़खड़ाई नहीं. उस के पास अब बैंक में बचे थोड़े रुपए और दो कमरों का छोटा सा मकान ही था. पर उस का सब से बड़ा सहारा विपुल का प्रतिरूप– उस का नौ वर्षीय पुत्र सौरभ था. सलमा ने हमेशा आगे देखा था, पीछे नहीं. विपुल की याद में वह गुब्बारों को फिर से सजाने लगी. उस ने एम.एससी. की और कालिज में लेक्चरर हो गई.

कई बार टोकने के बाद सलमा की तंद्रा टूटी, प्रौढ़ा सलमा को आज वर्षों बाद मैं ने सौरभ के विवाह के अवसर पर उन्मुक्त हंसी बिखेरते देखा. वह अब भी सुंदर लग रही थी. विपुल भी उसे देख कर कवि हो जाता था. कभी वह अपनी स्नेहा की तुलना ऋतुसंहार की नायिका से करता था तो कभी मेघदूत की नायिका से. हालांकि स्नेहा अब स्निग्धा नहीं रही थी, पर अभी भी वह बहुत सुंदर थी. अब भी उस की आवाज वैसी ही थी. परं हां, अब उस में एक दर्द उभर आया था. एक आर्द्रता का आभास मिलता था उस की बोली में, क्योंकि हर वक्त आंसू जो भरे रहते थे, उस के मन में.

सलमा उसी आर्द्र स्वर में कह रही थी, "देखो, मैं ने आज तक विपुल के गुब्बारों को न केवल सजा कर अपितु बचा कर भी रखा है. सौरभ आज डाक्टर हो गया है. अब उस के भी गुब्बारे सजेंगे. वह एग्नेस से, जो उस के साथ पढ़ती थी, शादी कर रहा है. मैं इन दोनों की शादी में बाधा नहीं डाल रही, आशीर्वाद दे रही हूं. कितनी सुंदर है, एग्नेस, मेरी बच्ची. उस के सपने कभी न बिखरें." उस की आंखों से आंसू बह रहे थे.

मैं ने कमरे में टंगे खूबसूरत गुब्बारों पर नज़र डाली, और वे फूलते से नजर आए. मैं ने रूमाल से आंखें पोंछी, ' नहींनहीं, रोना नहीं चाहिए. विपुल को रोना पसंद नहीं था. वह कहता था कि आंसू भरी आंखों से गुब्बारे पूरे नहीं दिखते, टूटतेफूटते से लगते हैं. ' •

देलवाड़ा आबू के विश्वप्र…

जहां संगमरमर भी मो…

यदि कशमीर को प्राकृतिक सौंदर्य की दृष्टि से भारत का स्विटजरलैंड कहना उपयुक्त है तो आबू देलवाड़ा के विमलवसहि एवं लूणवसहि जैन मंदिरों को कलात्मक श्रेष्ठता की दृष्टि से भारत का वेनिस कहना उस से भी अधिक सही एवं सार्थक है. इन मंदिरों को देख कर लगता ही नहीं कि मानवी कला इतनी सजीव तथा विलक्षण रूप से चमत्कृत कर देने वाली हो सकती है. निष्ठावान कारीगरों की बारीक छेनियों ने वहां [illegible] जादू किया है, कमाल की बारीक कटाई की है, जिस की विश्व भर में कहीं भी मिसाल मिलना कठिन है.

दिल्ली से अहमदाबाद जाने वाली छोटी रेलवे लाइन पर आबू रोड नामक स्टेशन है. यह स्थान राजस्थान में है और दिल्ली से 753 किलोमीटर दूर पड़ता है. यह अहमदाबाद से 185 किलोमीटर तथा जयपुर से 445 किलोमीटर दूर है. प्रसिद्ध पर्वतीय सैरगाह माउंट आबू आबू रोड स्टेशन से सर्पाकार पर्वतीय मार्ग से हो कर मात्र 28 किलोमीटर

अपनी अद्भुत कलात्मकता के कारण देलवाड़ा के जैन मंदिर आज विश्व भर में अपना अलग स्थान रखते हैं. मानवी कला का इतना सजीव चित्रण अन्यत्र कहीं भी देखने को नहीं मिलता.
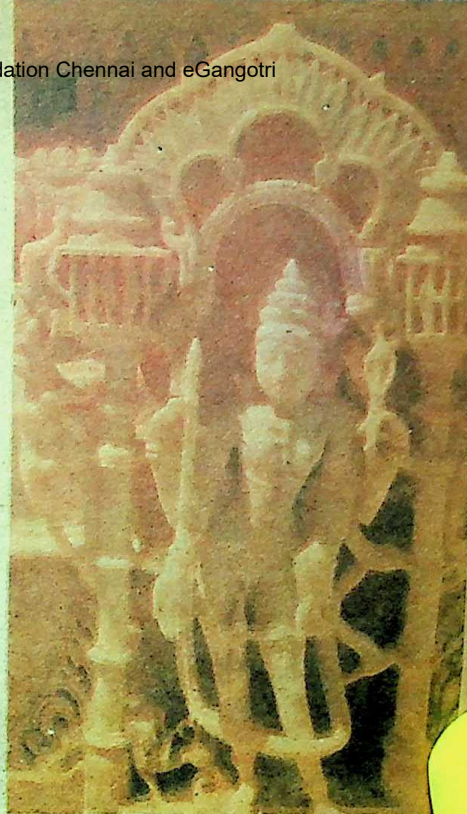
देलवाड़ा मंदिर स्थित विमलवसहि का अत्यंत भव्य आंतरिक भाग (बाएं) व देलवाड़ा मंदिर की एक सुंदर कला कृति (दाएं)

...प्रसिद्ध जैन मंदिर ...भी भोम बन गया है

लेख
सतीशकुमार जैन

...र है. कार, टैक्सी अथवा बस द्वारा लगभग ...टे भर का यह सफर ऊंचीनीची चढ़ाई, ...टेबड़े प्रपातों, हरीभरी और गहरी घाटियों ... पथरीली चट्टानों की सुंदर दृश्यावली तथा ...र चहचहाते पक्षियों के कलरव के कारण ...न को बांध लेता है. वर्षा आरंभ होते ही यहां ... सौंदर्य और द्विगुणित हो उठता है. नए उग ...ए पत्ते मदमाती हवा में और जंगली फूलों ... सुगंध में गुनगुना कर यात्रा के रोमांस को ...र बढ़ा देते हैं.

अरावली पर्वतमाला में समुद्रतल से लगभग 1,220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित माउंट आबू राजस्थान की एकमात्र पर्वतीय सैरगाह है. इस की सब से ऊंची चोटी गुरुशिखर (1,723 मीटर) हिमालय एवं नीलगिरी पर्वतों के बीच में स्थित सब से ऊंची चोटी है. इस का जलवायु वर्ष भर सुहावना तथा सुखद रहता है. प्रकृति ने अपना सौंदर्य आबू पर उदारता से खूब खुले हाथों से लुटाया है. निकटवर्ती देलवाड़ा के जैन मंदिरों की अप्रतिम कला, समुद्र धरातल से 1,155 मीटर की ऊंचाई पर स्थित नक्की झील के
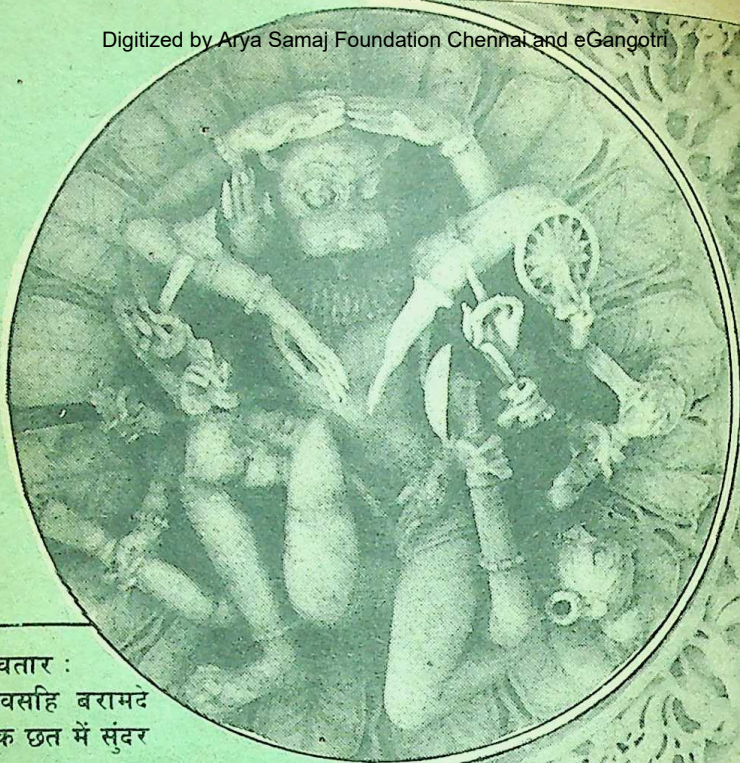
नृसिहवतार : विमलवसहि बरामदे की एक छत में संुदर अंकन.

मनोहर सौंदर्य तथा सूर्यास्त स्थल (सनसेट पाइंट) पर सूर्यास्त के अपूर्व दृश्य ने आबू को विश्व भर में प्रसिद्ध कर दिया है.

प्राचीन हिंदू एवं जैन शास्त्रों में आबू का उल्लेख 'अर्बुदगिरी' तथा 'अर्बुदाचल' नाम से हुआ है. इस नाम के बारे में अनेक पौराणिक कथाएं हैं. ऋग्वेद एवं महाभारत में भी आबू का उल्लेख आया है. पुराणों में आबू को अपरांत अथवा पश्चिमी खंड का भाग बताया गया है. सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आए यूनानी दूत मैगेस्थनीज ने इस का उल्लेख 'माउंट कैपिटेलिया' नाम से किया था. प्राचीन साहित्यिक कृतियों में प्राप्त इन उल्लेखों के अलावा ऐतिहासिक दृष्टि से आबू का उल्लेख ईसा की सातवीं शताब्दी से प्राप्त होता है जब भिल्लमाला (वर्तमान भिनमाल) के शासक वरमलाटा के अधीनस्थ सरदार ब्रजभट का पुत्र इस पर शासन कर रहा था.

आबू पर परमार एवं चौहान सरदारों का भी शासन रहा. कुछ समय तक आबू मेवाड़ के महाराणा कुंभा के अधिकार में भी रहा और उन्होंने पहाड़ी पर अचलगढ़ दुर्ग का निर्माण कराया. सिरोही के राव लाखा ने इस को फिर राणा कुंभा से अपने अधिकार में ले लिया था. आबू पर्वत से ही राव लुंबा के वंशजों ने सिरोही राज्य को मुसलिम एवं मुगल आक्रमणों से सुरक्षित रखा था. 15 अगस्त, 1947 को सिरोही रियासत के भारत संघ में विलीन होने पर आबू बंबई राज्य के अंतर्गत आ गया था. फिर राज्यों के पुनर्गठन के पश्चात 25 जनवरी, 1950 से यह राजस्थान राज्य का भाग है.

अत्यंत सुंदर नक्की झील

आबू के बीचोंबीच स्थित नक्की झील अत्यंत सुंदर है. इस के ऊपर स्थित 'टाड राक' तथा चारों ओर के प्राकृतिक दृश्यों में खोए दर्शक घंटों तक इस के किनारों पर मंत्रमुग्ध से खड़े रहते हैं. इस के किनारे पर आधुनिक शिल्प कला के लिए प्रसिद्ध श्री रघुनाथ का मंदिर है.

'सूर्यास्त दर्शन स्थल' (सनसेट पाइंट)

आबू से केवल 2.5 किलोमीटर दूर पक्की सड़क से जुड़ा हुआ है. समुद्रतल से इस स्थल की ऊंचाई करीब 573 मीटर है. सूर्यास्त को देखने के लिए चबूतरों व सीढ़ियों का निर्माण किया गया है. सूर्यास्त देखने के लिए सहस्त्रों दर्शक यहां एकत्र होते हैं. सभी की आंखें उत्सुकतापूर्वक ढलते हुए सूर्य पर लगी रहती है. सामने विस्तृत घाटी में सूर्य का निस्तेज गोला शनैःशनैः नीचे ढलकता हुआ अचानक आंखों से ओझल हो जाता है. प्रतीत होता है कि वह पृथ्वी की गोद में समा गया है. सूर्यास्त का इतना सुंदर दृश्य विश्व भर में अन्यत्र देखने को नहीं मिलता.

आबू का सब से प्रमुख आकर्षण है—इस

देवरानी जेठनी की प्रसिद्ध देवरी जो अपनी कलात्मकता के कारण प्रसिद्ध है.

एक अन्य कोण से लिया गया विमलवसहि का चित्र (ऊपर) व संगमरमरी स्तंभ में उत्कीर्ण एक कलाकृति (बांए).

के हिमधवल श्वेत संगमरमरी जैन मंदिर जो देलवाड़ा (देवताओं के बाड़े) नामक महल्ले में स्थित हैं. (ये आबू से 2.5 किलोमीटर दूर हैं). किसी समय वहां बहुत से देवालय होने के कारण इसे 'देवकुल पाटक' अथवा 'देवल पाटक' भी कहा जाता था.

देलवाड़ा में कुल छः जैन मंदिर हैं. महावीर स्वामी मंदिर, विमलवसहि, लूणवसहि एवं पित्तलहर मंदिर नामक चारों मंदिर एक ही अहाते में निर्मित हैं. पांचवां मंदिर तीर्थंकर पार्श्वनाथ का है जो खरतरवसहि कहलाता है. यह तीन मंजिला और चौमुखा है. यह मुख्य प्रवेशद्वार के दक्षिणपूर्व में स्थित है. इस के अतिरिक्त एक मंदिर 17वें तीर्थंकर कुंथनाथ का है इन

(शेष पृष्ठ 119 पर)

"अब खलनायक बनने का इरादा है"

जूनियर महमूद

भेंटवार्ता • स.खान
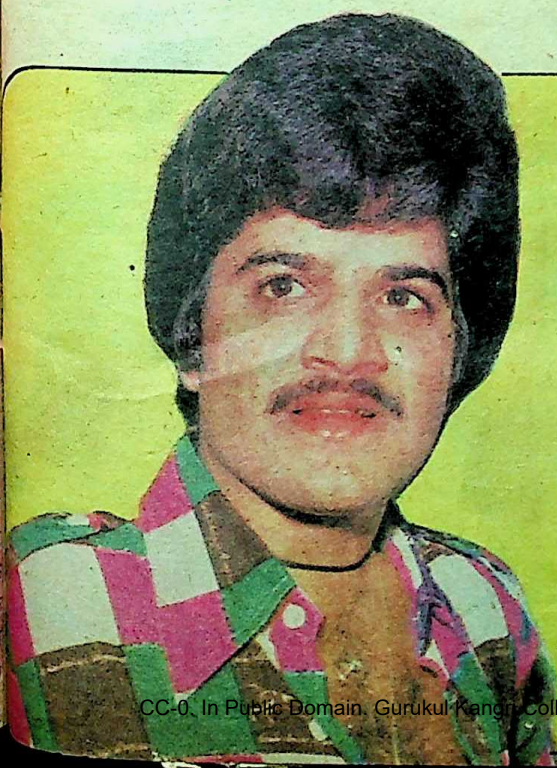
हास्य अभिनेता जूनियर महमूद अपने वर्तमान से संतुष्ट है, फिर हास्य अभिनय छोड़ कर वह खलनायक क्यों बनना चाहता है?

बंबई के उपनगर अंटापहिल वडाला के म्युनिसिपल स्कूल की छठी कक्षा का आठनौ वर्षीय विद्यार्थी नम्मो औरतों के मेकअप करने की अदा को अपने मसखरे अंदाज में पेश कर रहा था और स्कूल के बच्चे उस की अदाओं पर खिलखिला कर हंस रहे थे. स्कूल का पूरा हाल बच्चों के कहकहों से गूंज रहा था.

बचपन से अभिनय का शौक पाले नम्मो उर्फ मुहम्मद नईम फिल्मों में आतेजाते जूनियर महमूद बन गया. उस का यह नाम रखा हास्य अभिनेता महमूद ने. फिल्मों में शुरुआत एक्स्ट्रा के रूप में हुई, जिस के एवज में उसे एक दिन के दो रुपए मिलते थे. अभिनय दिखाने का अवसर मिला फिल्म 'नौनिहाल' में, जिस में वह हरि भाई (संजीवकुमार) का भाई बना था. उस के बाद उस ने फिर पीछे पलट कर नहीं देखा. फिल्मों का एक न रुकने वाला सिलसिला सा चल पड़ा.

फिल्मों में खूब काम किया और लोगों को खूब हंसाया. मगर जैसेजैसे उस की उम्र बढ़ी, वैसेवैसे उस की मांग घटती गई और फिल्मों का न रुकने वाला सिलसिला एकदम

से थम गया. अब वह कभीकभार ही किसी फिल्म में दिखाई देता है.

साक्षात्कार के लिए समय ले कर जब भेंटकर्ता उस से उस के घर पर मिला तो सब से पहले उस ने अपनी बातचीत का सिलसिला यहीं से शुरू किया. सुन कर जूनियर महमूद मुसकरा पड़ा और बोला, "सिलसिला तो अभी भी रुका नहीं है, भाईजान. बचपन की दहलीज पार करने के बाद भी कई फिल्मों में काम किया है जैसे 'खेल खिलाड़ी का', 'अमीर गरीब' 'अखियों के झरोखों से', 'आपबीती' और 'अपना बना लो' वगैरहवगैरह. हां, वक्त बदलते ही फिल्मों की संख्या जरूर कम हो गई है.

बचपन में काम का आलम

"बचपन में तो काम का यह आलम था कि मैं एक दिन में दोदो तीनतीन पालियों में काम करता था. खूब फिल्मों में काम किया. उस वक्त 'ब्रह्मचारी', 'फरेब', 'घरघर की कहानी', 'शिमला रोड', 'उस्ताद पेडरो', 'मुनीमजी', 'खोज', 'गुरु और चेला', 'दो बच्चे दस हाथ', 'छोटी बहू', 'गुनाहों का देवता', 'तन्हाई', 'बचपन', 'चंदा और बिजली', 'आन मिलो सजना', 'उपकार', 'दो रास्ते', 'प्यार ही प्यार', 'जागृति', 'कटी पतंग', 'झील के उस पार', 'आप की कसम' और 'कारवां'– कितनी फिल्मों के नाम गिनाऊं, आप को. कितनी तो याद ही नहीं रहीं."

"मैं अपने जमाने का एक कम उम्र का स्टार था. कइयों को तो जिंदगी भर स्टार बनने का मौका नहीं मिलता और मुझे तो यह मौका बचपन में ही मिल चुका है. मैं वह पहला बाल कलाकार रहा हूं जिसे निर्माताओं ने सब से अधिक पारिश्रमिक दिया है. जिंदगी का मजा मैं बचपन में ही चख चुका हूं इसलिए अब किसी तरह का दुख नहीं है."

"फिल्मों में कम आयु से काम करने के क्याक्या फायदे और नुकसान हैं?"

"यहां तो किसी भी आयु में काम कीजिए, बस फायदा ही फायदा है."

"बचपन में फिल्मों में होने के कारण आप को पढ़ाईलिखाई छोड़नी पड़ी थी, क्या पढ़ाईलिखाई का नुकसान नहीं हुआ है आप का?"

सिलवर जुबली ट्राफियां हाथों में लिए जूनियर महमूद : फिल्मों का चलना ही तो फिल्में मिलते रहने की गारंटी नहीं.

फिल्म 'फ

"फिल्म
सकता है?
कुछ सीख
लिज का
म नहीं आ
लाफ नहीं
ही, अगर उ
र उसे सफ
वक्त भी
ग अनपढ़
तिशत लोग
"फिल्म
ना?"
"फिल्म
साब से मे
र बुरा नह
ा है कि
यदा है. मैं
र कोई नह
"पहले
क्या अं
"बहुत
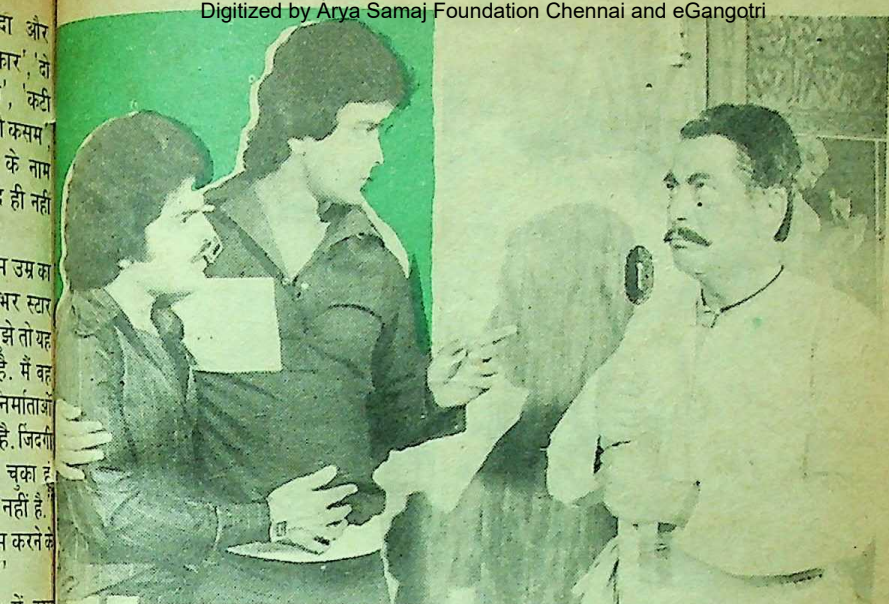
फिल्म 'फरेब' के एक दृश्य में जूनियर महमूद, मिथुन चक्रवर्ती और डा. श्रीराम लागू.

"फिल्मी दुनिया से बड़ा स्कूल और क्या सकता है? यहां आ कर आदमी अपने आप ब कुछ सीख जाता है. वैसे भी यहां स्कूल, ालिज का पढ़ा हुआ किसी को कुछ ज्यादा म नहीं आता. फिर भी मैं पढ़ाईलिखाई के लाफ नहीं हूं. यहां आने वाला लाख अनपढ़ ी, अगर उस के पास अभिनय प्रतिभा है तो र उसे सफल होने से कोई नहीं रोक सकता. स वक्त भी फिल्मों में 60 प्रतिशत से अधिक ग अनपढ़ और कम पढ़ेलिखे हैं, केवल 40 तशत लोग ही पढ़ेलिखे मिलेंगे."

"फिल्मी दुनिया का अनुभव कैसा ा?"

"फिल्मों में मैं 17-18 साल से हूं. इस साब से मेरा 17-18 साल का अनुभव है, र बुरा नहीं, अच्छा अनुभव है. मैं ने अभी ा है कि इस लाइन में बस फायदा ही यदा है. मैं समझता हूं इस से बढ़िया लाइन र कोई नहीं."

"पहले के और आज के फिल्म वालों में क्या अंतर महसूस करते हैं?"

"बहुत अंतर हो गया है, भाईजान. काम करने का जो मजा पहले था, वह अब नहीं रहा. वक्त के साथ लोगों के अब दिल भी बदल गए हैं. उस वक्त हम अगर बीमार भी पड़ जाते थे तो घर के नीचे फिल्म वालों की लाइन लग जाती थी और भाई लोग कहते थे कि तबीयत जब तक ठीक नहीं होती, काम करने की जरूरत नहीं, तुम्हें जो चीज चाहिए बस हुक्म करो, फौरन हाजिर कर देंगे. अब यह बात आज के लोगों में नहीं. आज किसी को किसी के दुखसुख की परवाह नहीं. हर एक को बस अपनी पड़ी है. यह सब देख कर बेहद दुख होता है, भाईजान."

अब क्या इरादा है?

"जिस तरह लोगों को बचपन में हंसाते रहे हैं, क्या अब भी हंसनेहंसाने का ही काम करेंगे?"

"लोगों को हंसाना एक सब से मुशकिल काम है. मैं बचपन से ही भाई जान (महमूद) का दीवाना रहा हूं. मैं भाई जान को अब तक का सब से बड़ा कामेडियन मानता हूं. वह इस क्षेत्र में जो परिवर्तन लाए हैं, वे
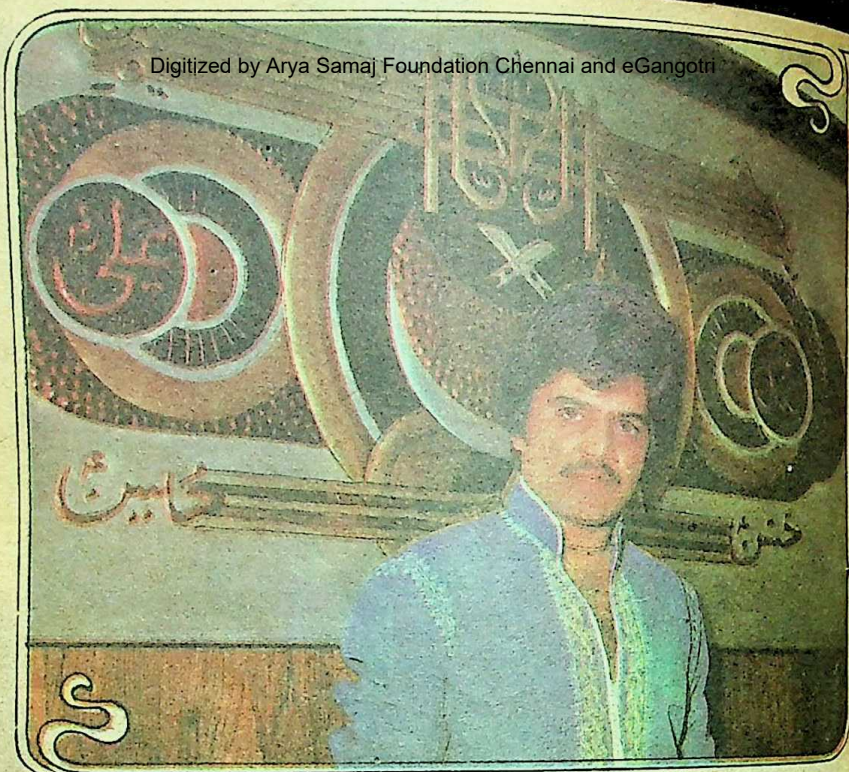
जूनियर महमूद : फिल्मों में किसी भी आयु में काम किया जाए, बस फायदा ही फायदा है.

काबिले तारीफ हैं. उन्होंने इतने चरित्र निभाए हैं कि हम लोगों के करने के लिए अब कोई चरित्र बचा ही नहीं है. एक ही तरह की भूमिकाएं निभातेनिभाते उकताहट होने लगी है. इसलिए अब हंसनाहंसाना बंद कर के खलनायक बनने का इरादा है.''

खलनायकी असफल रही तो...

''अगर खलनायक के रूप में लोगों ने पसंद नहीं किया तो...''

''मुझे अपने आप पर और अपनी अभिनय प्रतिभा पर पूरापूरा विश्वास है. इसी लिए तो कामेडियन से हट कर खलनायक बनना चाहता हूं. जब मैं अपने अभिनय से लोगों को हंसा सकता हूं तो फिर अपने अभिनय से खलनायक वाली बात क्यों नहीं पैदा कर सकता? इसी विश्वास के बल पर ही तो अपनी छवि बदलने का इरादा किया है और मुझे यकीन है कि लोग मुझे खलनायक के रूप में भी जरूर पसंद करेंगे. फिल्मों में कलाकार को अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर खलनायक के रूप मे ही ज्यादा मिलता है.''

रोमांस की अफवाहें

''कल्पंना अय्यर के साथ आप के रोमांस की अफवाहें उड़ती रहती हैं. इस में कहां तक सच्चाई है?''

''सच और झूठ को आप कहां कुरेदने बैठ गए, भाईजान? कल्पू (कल्पना अय्यर) फिल्मों में चमकने से पहले मेरे साथ मंच पर काम किया करती थी और एक लंबे समय तक हम दोनों का मंच पर साथ रहा है. हमउम्री में तो खयाल आपस में मिलते ही हैं. मगर इन खयालों को रोमांस का नाम नहीं दिया जा सकता, वरना लोग कहेंगे कि कल्पू का सितारा आज बुलंदी पर है तो जूनियर महमूद उस के साथ रोमांस की अफवाहें उड़ा कर खबरों में रहना चाहता है. मगर मुझे ऐसी शोहरत नहीं चाहिए. इसलिए ज्यादा कुछ न

ते हुए मैं कल्पू वाले विषय को यहीं खत्म कर देना चाहता हूं."

"आप ने कुछ अरसा पहले निर्माता के रूप में एक फिल्म 'बाप का बाप' शुरू की थी, सुना है काफी नुकसान उठाने के बाद अब उसे बनाने का इरादा छोड़ दिया है?"

"नासमझी में यह कदम उठा बैठा था, जिस का मुझे नुकसान भी उठाना पड़ा. जिन दिनों 'बाप का बाप' शुरू की थी, उन दिनों मैं एक निर्माता की जिम्मेदारी को बिलकुल समझ नहीं पाया था. एक फिल्म निर्माता को जिन बातों की जानकारी होनी चाहिए, उन से एकदम अनजान था, बस जोशजोश में इतनी बड़ी जिम्मेदारी उठा बैठा और जब होश आया तो सोचा कि बेटा जूनियर महमूद तुम से बाप यानी निर्माता मत बनो. तुम बेटे यानी एक्टर ही ठीक हो. इसलिए 'बाप का बाप' बनाने का इरादा छोड़ दिया. पर ऐसा भी नहीं है कि मैं अब फिल्में बनाऊंगा ही नहीं. सही वक्त आने पर मैं सही कदम उठाते हुए, फिल्में बनाना शुरू कर दूंगा. वैसे इन दिनों एक योजना पर काम चल रहा है. उस योजना के बारे में आप को अभी ज्यादा नहीं बता सकता. उस का फायदा ऐलान सही वक्त आने पर ही करूंगा."

"एक फिल्म निर्माता के रूप में आप किस प्रकार की फिल्में बनाना चाहेंगे?"

"अभिनेता के रूप में मेरा मकसद था लोगों का मनोरंजन करना और यही मकसद निर्माता के रूप में भी है. मैं ऐसी ही फिल्में बनाऊंगा जिन से लोगों का मनोरंजन हो. आज की इस रोतीबिलखती दुनिया में हर कोई परेशान है. जब लोग मेरी फिल्में देखने हाल में आएं, तो मैं उन्हें तीन घंटे के लिए इस रोतीबिलखती दुनिया से अलग कर देना चाहता हूं और मनोरंजन की उस दुनिया में पहुंचा देना चाहता हूं, जहां न परेशानी है और न ही रोनाधोना. मकसद है बस मनोरंजन. दुआ कीजिए कि मैं अपने इस मकसद में कामयाब रहूं."

"इस समय आने वाली किनकिन फिल्मों में अपने अभिनय का जादू जगा रहे हैं?"

"एक दरजन तो फिल्में हैं ही, जैसे– 'आदत से मजबूर', 'स्वप्न सुंदरी', 'फरेब', 'इंस्पेक्टर डाकू और वह', 'सारा जहां', 'दिल', 'जियो और जीने दो', 'फुलवाड़ी' और 'लवर्स' वगैरह. इन में से जे.ओमप्रकाश की फिल्म 'आदत से मजबूर' में मैं दोहरी भूमिका अदा कर रहा हूं. बड़ी ही बेहतरीन भूमिका है. वैसे दोहरी भूमिका इस से पहले मैं 'गुरु और चेला' में भी अदा कर चुका हूं. आने वाली फिल्म 'फुलवाड़ी' में खलनायक की भूमिका है. यानी खलनायक बनने की शुरुआत हो चुकी है. अब देखें आगेआगे होता है क्या."●

...त्यु पर बीमा कंपनियों को एक करोड़ डालर देने पड़े

लास एंजेलेस (अमरीका) में फिल्मों से संबंधित सूत्रों का कहना है कि फिल्म अभिनेत्री ...ली वुड की मृत्यु के कारण लंदन की बीमा कंपनियों को लगभग एक करोड़ 20 लाख ...र का भुगतान करना पड़ेगा.

लंदन की लायड और पैसिफिक इनडेमनिटी नामक बीमा कंपनियों को यह धनराशि ...स्टार्म' फिल्म के निर्माताओं को देनी होगी. इस फिल्म की शूटिंग के दौरान नेटली वुड ...मृत्यु हो गई थी.

फिल्म के निर्माताओं का विचार है कि अब वे इस फिल्म को पूरा नहीं कर सकते. इस ...म के निर्माण पर अब तक एक करोड़ 20 लाख डालर खर्च हो चुके हैं. बीमा कंपनियां ... में से एक करोड़ 18 लाख डालर निर्माताओं को देंगी.

किसी बीमा कंपनी द्वारा किसी फिल्म स्टूडियो को भुगतान की जाने वाली यह अब ... की सब से बड़ी धनराशि है.

कहानी • आलोक सक्सेना

काले मेघा पानी दे

उस वर्ष इस इलाके में सूखा पड़ा था. बरसात का पूरा मौसम बिना पानी बरसे ही बीत गया था. ठीक इस वर्ष की तरह ही. उन्हीं दिनों की बात है. सड़क के किनारे बनी झोंपड़ी से तीन काले और दुबले बच्चे निकल कर आए और खुले आसमान की ओर ताकने लगे. आसमान बिलकुल साफ था और धूप तेज थी. उजाड़ पड़े खेतों में धूल उड़ रही थी. बड़े बच्चे ने सिर्फ चड्डी पहन रखी थी, बाकी बदन नंगा था. दोनों छोटे ब बिलकुल नंगधड़ंग थे. किसी बड़ेबूढ़े व्य की तरह बड़े लड़के ने आंखों पर हाथ रख दूर आसमान की तरफ ताका और फिर कर दोनों छोटे बच्चों से बोला, "अगर लोग खूब जोर से गाओ तो आज पानी ज बरसेगा. हां, सच्ची. अच्छा तो खूब जो गाओ गाना... तुम्हें मेरी कसम."

दोनों छोटे बच्चों ने सिर हिलाया फिर थोड़ी ही देर में वह सुनसान जगह उ समवेत गान से गूंजने लगी.

"काले मेघा पानी दे, पानी दे, गुड़ धा दे."

सड़क के किनारे अपनी झोंपड़ी बाहर वे तीनों झूमझूम कर गाते रहे. धीरे उन के नंगे काले बदन से पसीना बहना हो गया. थक जाने के कारण गाने की ग
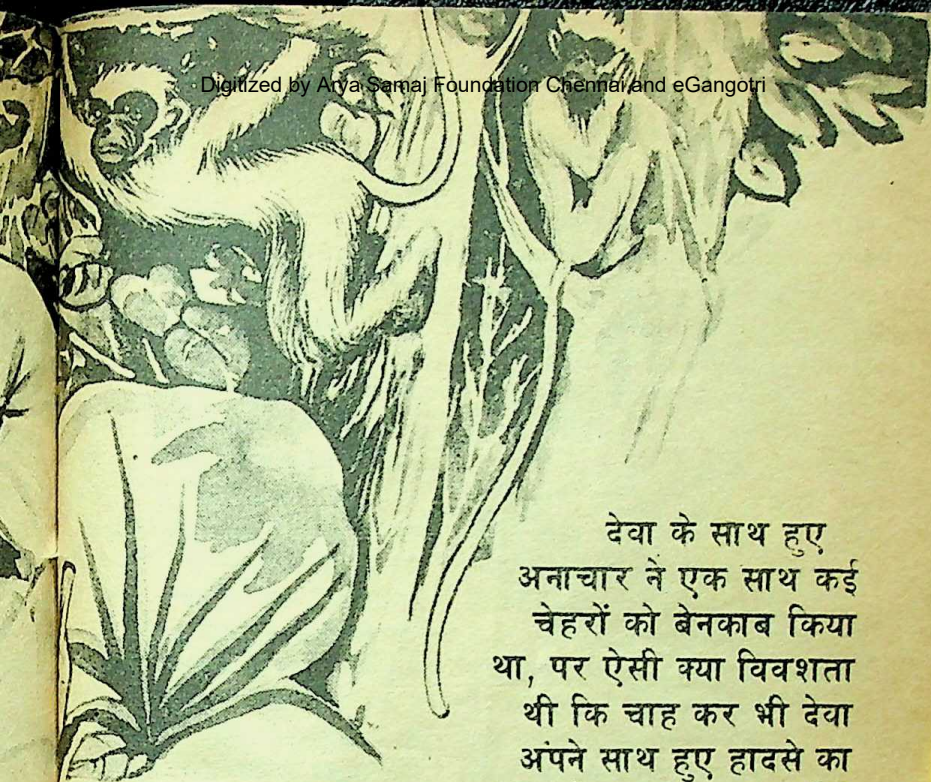
देवा के साथ हुए अनाचार ने एक साथ कई चेहरों को बेनकाब किया था, पर ऐसी क्या विवशता थी कि चाह कर भी देवा अपने साथ हुए हादसे का जिक्र नहीं कर सकी?

मी आ गई, मगर उन के उत्साह में कोई न थी. अगर थकान व हांफने के कारण थोड़ी देर को रुक भी जाता तो थोड़ी ही बाद वे पुनः दूने जोश के साथ शुरू हो – 'काले मेघा पानी दे...'

गांव से तहसील की ओर जाने के लिए याल जैसे ही सड़क के मोड़ पर पहुंचा, कानों में आवाज पड़ी– 'काले मेघा , पानी दे, गुड़ धानी दे.' प्रभुदयाल पूजापाठ करने वाला, अपशकुन मानने वाला धार्मिक प्रवृत्ति दमी था. वह जब भी तहसील जाता, च्चों का इसी तरह झोंपड़ी के बाहर हुआ देखता. आज भी उस ने उन के पहले कोई ध्यान नहीं दिया. अपने में मग्न वह धीरेधीरे आगे बढ़ता

लाई का महीना खत्म होने को आ और पानी का कहीं नामोनिशान न था. चिलचिलाती हुई धूप खेतों को और भी बंजर बना रही थी. परगना अधिकारी और तहसीलदार ने ऊपर रिपोर्ट भेज दी थी कि इस क्षेत्र में सूखा पड़ने की स्थिति आ गई है. किसानों की हालत खराब हो रही है. हर वर्ष यहां 15 जून तक जोरदार पानी बरसने लगता है, मगर इस साल अभी तक मानसून नहीं आया है.

'शायद आज ऊपर से कुछ जवाब आ गया हो,' प्रभुदयाल ने सोचा. तब तक वह गाना गाते हुए लड़कों के पास आ पहुंचा था. उस ने अब बच्चों के गीत के बोलों पर ध्यान दिया. अचानक उस के दिमाग को झटका लगा. उसे ऐसा लगा जैसे किसी ने सीने पर घूंसा मार दिया हो. अगर थोड़े दिन पानी और न बरसा तो राहत कार्य शुरू हो जाएंगे और साथ ही तकावी भी दोगुनी कर के बांटने के आदेश ऊपर से आने की संभावना थी. मतलब यह कि प्रभुदयाल और उस के जैसे कई पटवारियों

की चांदी. तकाबी के प्रार्थनापत्र पटवारी के मार्फत ही जाते थे. राहत कार्य हालांकि विकास खंड अधिकारी के कार्यालय से करवाए जाते थे, मगर वे लोग भी पटवारियों से मिल कर ही काम करते थे क्योंकि हाजिरी का झूठा चिट्ठा बनवाने, गांव के आदमियों से अंगूठे लगवाने और कोई गुलगपाड़ा न होने देने में पटवारी ही मदद करता था. किस गांव का कौन सा सरपंच या नेता हल्ला मचा सकता है, यह भी पटवारी ही खबर देता था. इस के लिए कुछ हिस्सा उसे भी मिल जाता था. फिर तकाबी तो थी ही.

'हे भगवान, बस थोड़े दिन और पानी न बरसे.' यह सारी विचारधारा एकदम झटके से टूट गई. बच्चे चिल्ला रहे थे– "काले मेघा पानी दे." प्रभुदयाल के धर्मभीरु मन ने सोचा, क्या मालूम इन बच्चों की प्रार्थना भगवान के पास उस की प्रार्थना से पहले पहुंच जाए. वह तमक कर खड़ा हो गया और पूरे स्वर में चिल्लाया, "बंद करो यह शोर. क्या हल्ला मचा रखा है. कहीं गाना गाने से भी पानी बरसता है?"

बच्चे सहम कर चुप हो गए. वे जगन के बच्चे थे. जगन के पास उस की खुद की कोई जमीन नहीं थी, पर वह मजदूरी खेतों पर ही करता था. पानी न बरसने का मतलब था– मजदूरी नहीं मिलेगी. जगन ने सुन रखा था कि बच्चों की प्रार्थना से भगवान जल्दी खुश होते हैं. उसी ने बच्चों को वह गाना सिखाया था. तभी से वे रोज चिल्लाचिल्ला कर गाना गा रहे थे. आज जो प्रभुदयाल की डांट पड़ी तो वे सिटपिटा कर चुप हो गए. गांव में पटवारी एक बड़ी हस्ती था. बच्चे तक उसे पहचानते थे.

प्रभुदयाल फिर चिल्लाया, "खबरदार जो अब यह गाना गाया. ज्यादा हल्ला मचाओगे तो झोंपड़ी तुड़वा दूंगा."

यह बहुत बड़ी धमकी थी. जगन ही नहीं, बच्चे भी जानते थे कि जिस जमीन पर उन्होंने झोंपड़ी डाल रखी है, वह सरकारी है. पटवारी जब चाहे उसे तुड़वा सकता है. तीनों [illegible] से भाग कर झोंपड़ी के अंदर घुस गए. प्रभुदयाल संतुष्ट हो कर आगे बढ़ गया.

तहसील कार्यालय में तहसीलदार और विकास खंड अधिकारी दोनों ही मिल गए. तहसीलदार ने प्रभुदयाल को देखते ही पूछा, "कहो, प्रभुदयाल, क्या हालचाल है तुम्हारी तरफ?"

"वही हाल है, हजूर, जो सब तरफ है. पानी का कहीं नामोनिशान नहीं है," प्रभुदयाल नम्रता से बोला.

"हूं. ऊपर से आदेश आ गए हैं कि इस क्षेत्र में राहत कार्य बड़े पैमाने पर शुरू किए जाएं. तकाबी भी बांटी जाएगी," तहसीलदार ने ऊपर से गंभीर बनते हुए कहा. मगर उ[illegible] की प्रसन्नता छिपाए नहीं छिप रही थी. प्रभुदयाल ने पास खड़े चपरासी को दस का एक नोट निकाल कर दिया और साहब लोगों के लिए फौरन चाय व पान लाने को कहा. म[illegible] ही मन उस ने ईश्वर को लाखलाख धन्यवाद दिया. आखिर भगवान ने उस की सुन ही ली.

विकास खंड अधिकारी जो अब तक चुप बैठे थे, बोले, "तुम्हारे हलके में कितने तालाब हैं और कितने गांवों में रास्ते नहीं हैं, सब की सूची बना कर दो. राहत कार्य योजना में स[illegible] जगह काम शुरू करवाना है. इस तहसील के लिए 10 लाख रुपया स्वीकृत हुआ है."

"दस लाख!" प्रभुदयाल ने फिर मन ही मन भगवान को हाथ जोड़े. उसे लगा कि वह गलती कर गया है. चाय व पान के साथ मीठानमकीन भी मंगाना चाहिए था. फिर उस ने सोचा, इस क्षेत्र में कौन वही पटवारी है. फिर भी विकास खंड अधिकारी को हाथ में रखना चाहिए. इस के क्षेत्र की खासी रकम आई है इस बार राहत कार्य के लिए. वह कुछ चापलूसी भरी बात कहने के लिए सोच ही रहा था कि तहसीलदार बोले, "देखो, प्रभुदयाल, तुम वापस गांव जाने से पहले जरा हम से मिल कर जाना."

शाम को प्रभुदयाल रवाना होने से पहले जब तहसीलदार के पास पहुंचा तो उसे एकांत में ले जा कर बोले, "प्रभुदयाल, एस.डी.ओ. साहब (परगना अधिकारी) ब[illegible]
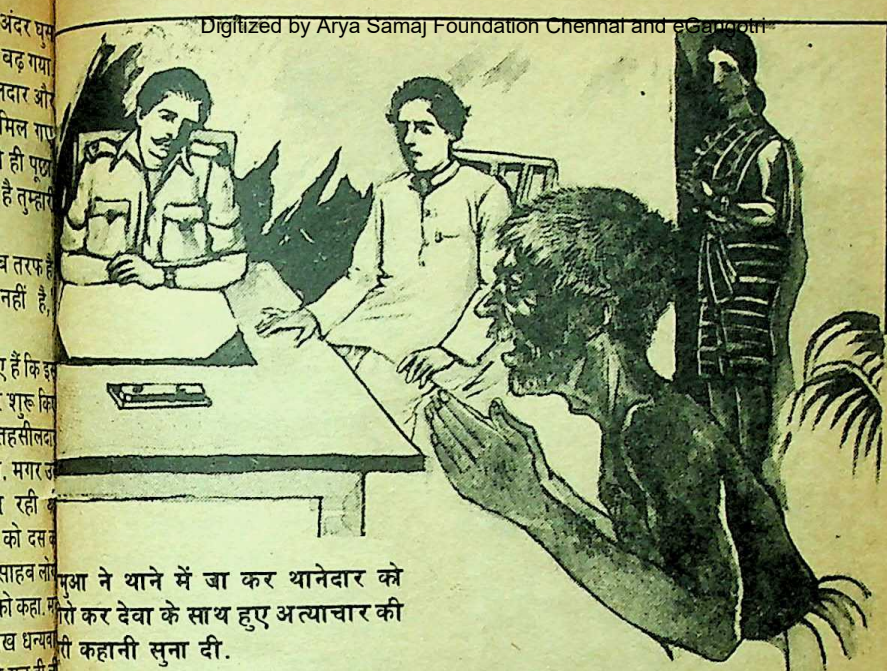
मुआ ने थाने में जा कर थानेदार को
री कर देवा के साथ हुए अत्याचार की
री कहानी सुना दी.

ों से एक फ्रिज खरीदने के लिए कह रहे हैं.
दिनों से तो कुछ हो नहीं पाया. अब इस
पर जरूर उन को फ्रिज खरीद कर देना
गा. तुम्हारा इलाका दूर है और पहाड़ियों
बीच है. वहां जाने के लिए सड़क नहीं है,
लिए यह काम तुम्हीं कर सकते हो. वहां
कोई बड़ा अफसर जांच करने तो पहुंच
सकता. बस, बीज के लिए तकावी के
बनाना शुरू कर दो. राहत कार्य है ही."

फिर वह थोड़ा रुक कर धीमे से हंसे,
फ्रिज तो साहब के लिए लाना ही है,
याल, लेकिन यह भी खयाल रखना जरा
इस साल मुझे अपनी लड़की की शादी
नी है."

प्रभुदयाल ने मन ही मन में तहसीलदार
गाली दी, पर ऊपर से वह बोला, "हो
गा, हजूर, सब हो जाएगा. आप कतई
न करें. बस जरा यह विकास खंड
कारी..."

"अरे, तुम उस की चिंता न करो, उस
हत कार्यों की जांच भी तो एस.डी.ओ.
ही करेंगे. हम से बच कर कहां
जाएगा? मैं ने उस से भी साहब के फ्रिज के
लिए बोल दिया है." तहसीलदार होहो कर के
हंस पड़े.

प्रभुदयाल जब अपने गांव जाने के लिए
कसबे के बीच से जाने वाली सड़क से गुजरा
तो चौराहे के पास वाले मंदिर में दर्शन करने
रुक गया. मंदिर में लाउड स्पीकर लगा हुआ
था और जोरशोर से कीर्तन हो रहा था. वह
दर्शन करने मंदिर के अंदर गया तो महंत
दशरथदास मिल गए. प्रभुदयाल ने हाथ जोड़े
और पूछा, "महाराज, आज यह भजनकीर्तन
किस खुशी में हो रहा है?"

"आओ, प्रभुदयाल, यहां रामायण का
अखंड पाठ चल रहा है. यहां के हाल तो देख
ही रहे हो. भगवान नाराज हो गए हैं. अरे,
धर्मकर्म नहीं होगा तो वर्षा कहां से होगी?
इसी लिए हम ने चंदा कर के यह अखंड पाठ
करवाया है. प्रभुदयाल, इस धार्मिक कार्य में
तुम भी कुछ सहयोग करो न."

प्रभुदयाल भौचक्क रह गया: 'यहां भी
वर्षा को बुलाने का षड्यंत्र चल रहा है. उसे
याद आया, सुबह उस ने 'काले मेघा पानी दे'

गाने वाले बच्चों को डांट कर भगा दिया था. मगर यहां वह सब नहीं चल सकता. महंतजी मंदिर के पुजारी होने के साथसाथ स्थानीय राजनीतिक नेता भी हैं. राजधानी के बड़ेबड़े नेताओं से उन का परिचय है. यहां चंदा देना ही उत्तम बात है. प्रभुदयाल ने फौरन निर्णय लिया. जेब से दसदस के पांच नोट निकाले और महंतजी के चरणों पर रख कर बोला, "ठीक है न, महाराज?"

"ठीक है, प्रभुदयाल, सब ठीक है. यह तो धर्म का, जनता का कार्य है. जिस की जितनी श्रद्धा हो." महंतजी ने हाथ उठा कर उसे आशीर्वाद दिया.

प्रभुदयाल जब जगन के झोंपड़े के पास पहुंचा तो शाम घिर आई थी. झोंपड़े के पास पहुंच कर वह थोड़ा रुका. इस समय बच्चे नजर नहीं आ रहे थे. शायद अंदर होंगे, उस ने सोचा. कुछ सोच कर आवाज दी, "जगन... ओ जगन, कहां गया रे?"

जगन फौरन बाहर निकल आया. जगन और उस के जैसे कई लोगों के लिए पटवारी ही सब से बड़ा हाकिम था.

"क्या हुक्म है, मालिक?" जगन हाथ जोड़ कर बोला.

"क्यों, क्या हालचाल हैं? कहीं मजूरी मिल रही है कि नहीं?" प्रभुदयाल ने पूछा.

"मजूरी कहां है, मालिक? बरखा ही नहीं है. जाने भगवान क्यों रूठ गए हैं." जगन की आंखें आकाश की ओर उठ गईं.

"अरे, तुम फिक्र मत करो, जगन. मजूरी हम तुम को देंगे. अब घबराने की कोई बात नहीं है. वहां पहाड़ों के पीछे एक सड़क बनेगी... कच्ची सड़क. उस पर मिट्टी डालने का काम मिलेगा. तीन रुपए दिन भर के मिलेंगे. तुम को भी, तुम्हारी घरवाली को भी. अपने तीनों बच्चों को भी लगा देना."

जगन आश्चर्य से बोला, "बच्चे क्या काम करेंगे, मालिक?"

"अरे, तुझे क्या करना है? जैसा भी काम करें हम तो पैसे दिलवा देंगे. और अपने दोचार रिश्तेदारों को भी ले आना. मगर ज्यादा हल्ला न मचाना, न किसी को मालूम पड़े. समझे? हम को बस तुम्हारी मदद करनी है."

"जय हो, मालिक, तुम्हारी जय हो. भगवान तुम्हें बनाए रखे. तुम्हें बैकुंठ मिले, सरकार," जगन गदगद हो बोला.

जगन की झोंपड़ी के सामने से जो सड़क जाती थी, वह तहसील मुख्यालय से आ कर प्रभुदयाल पटवारी के गांव तक जा कर समाप्त हो जाती थी. प्रभुदयाल का गांव सतपुड़ा पहाड़ों की तराई में बसा था. वहीं से ऊंचेऊंचे पहाड़ों की कतारें शुरू हो जाती थीं और पहाड़ पर चढ़ कर दूसरी तरफ उतरने पर 10-15 छोटेछोटे गांव आदिवासियों के थे. इन गांवों तक पहुंचने के लिए अभी तक कोई रास्ता नहीं बना था. 70-80 किलोमीटर का यह पहाड़ी रास्ता पगडंडियों पर चल कर तय करना पड़ता था. इसलिए बड़े अधिकारी वहां जाने से कतराते थे.

उन्हीं गांवों को आपस में जोड़ने के लिए एक कच्ची सड़क राहत कार्य के अंतर्गत बनाने की योजना बनाई गई. प्रभुदयाल ने विकास खंड अधिकारी के वहां तक पहुंचने के लिए एक खच्चर का इंतजाम कर दिया. विकास खंड कार्यालय के सब इंजीनियर वगैरह भी वहां पहुंच गए और राहत कार्य शुरू हो गया. जगन अपने साथ अपनी पहचान के 10-15 लोगों को ले कर वहां पहुंच गया. काम था सड़क पर मिट्टी डालने का. जगन और उस के सभी साथी बहुत खुश थे. दिन भर आराम से वे धीरेधीरे मिट्टी डालते रहते और शाम को अंगूठा लगा कर तीन रुपए ले लेते. जगन के बच्चे काम करते, उन से भी अंगूठा लगवा कर उन्हें दे दिए जाते. न तो जगन को और न उस के साथियों को यह मालूम था कि सरकार से मिलने वाली मजदूरी की दर सात रुपए प्रतिदिन प्रति व्यक्ति है. न ही उन लोगों को यह मालूम था कि उन से कई जगह बार रोज अंगूठे क्यों लगवाए जाते हैं.

कागजों में उस [illegible]
क्तियों द्वारा मजदूरी किया जाना दिखाया
ता और उस के साथियों व उस के बच्चों से
र्जी नामों के आगे अंगूठे लगवा लिए जाते.
गन को इन सब बातों से कोई मतलब नहीं
. वह तो बहुत ही खुश था. सब से बड़ी
ख़ुशी उसे इस बात की थी कि शाम को
मतान करते समय जब गांव के सरपंच,
वारी प्रभुदयाल और विकास खंड का
र्मचारी रमेश बैठ कर हिसाबकिताब करते
पास के गांव से कच्ची दारू की एक बोतल
स से जरूर मंगवाते, और उसे भी मुफ्त में
रू पीने को मिल जाती थी.

जगन चूंकि अपने साथियों का नेता बन
या था, इसलिए प्रभुदयाल इस काम में उसे
मेशा अपने साथ रखता था. शाम घिर
ाती तो मजदूरों द्वारा वहां बनाए अस्थायी
परों में जगहजगह चूल्हों की आग जलने
गती. खापी कर वे सारे आदिवासी समूह में

[illegible] वह सुनसान
वादी आदिवासियों के मधुर गीतों से गूंजने
लगती. पटवारी प्रभुदयाल, विकास खंड का
कर्मचारी रमेश और सरपंच धीरेधीरे दारू
पीते रहते और उन के गीतों का आनंद लेते
रहते. जब प्रभुदयाल को खूब चढ़ जाती तो
वह दहाड़ता, "अरे, क्या कांवकांव मचा रखी
है? कभीकभी भगवान का भजन भी तो किया
करो. बस, ये तो जिंदगी भर पाप ही पाप
करते रहेंगे. कुछ धर्मकर्म की बात करो तो
परलोक भी सुधरे. सुनो, रामायण में कहा
है..." और फिर वह बेसुरे स्वर और
लड़खड़ाती आवाज में रामचरित मानस की
चौपाइयां गाने लगता. सभी आदिवासी
मजदूर सहम कर चुप हो जाते.

रोज का यही क्रम था. जंगल में मंगल
हो रहा था. प्रभुदयाल की वहां से जाने की
इच्छा ही नहीं होती थी. फिर भी दूसरे कामों
के लिए उसे कभीकभी दोएक दिन के लिए

"हां, गोरा है. थानेदार का है न," देवा ने प्रभुदयाल से कहा.

वहां से जाना पड़ता. विकास खंड अधिकारी हफ्ते में एक बार वहां चक्कर लगा जाते और अपना हिस्सा ले जाते. सरपंच का गांव पास ही था. वह भी आताजाता रहता. मगर विकास खंड का कर्मचारी रमेश वहीं रहता. वह नई उम्र का लड़का था. अभी तीनचार साल ही इस नौकरी में हुए थे. मगर संगत और ऊपरी कमाई ने उस की आदतें बिगाड़ दी थीं. जगन के साथ आए मजदूर परिवारों की महिलाओं को वह घूरा करता था.

जगन का साथी रमुआ अपनी 17 वर्षीया लड़की देवा के साथ आया था. जब कभी शाम को सरपंच और प्रभुदयाल वहां नहीं होते तो मजदूरी का भुगतान करते समय वह देवा को चुपचाप तीन रुपए की जगह चार रुपए पकड़ा देता. देवा सीधी मगर चंचल लड़की थी. शारीरिक गठन से वह किसी को भी आकर्षित कर लेती थी. पहलेपहल जब रमेश ने एक रुपया उसे अधिक दिया तो उस ने वह रुपया लौटाते हुए कहा, ''बाबू, एक रुपया ज्यादा दे दिया है.''

''अरे, यह तो मैं ने खुद दिया है. तू काम भी तो ज्यादा करती है और लोगों से. तुझे रोज एक रुपया ज्यादा दूंगा, लेकिन किसी को बताना नहीं, अपने बाप को भी नहीं. नहीं तो सब मांगने लगेंगे.''

भोलीभाली देवा ने चुपचाप सिर हिलाया और रुपया रख लिया. मजदूर लोग दोतीन दिन में एक बार शाम को पास के गांव में अपनी जरूरत का सामान आटादाल वगैरह लेने जाते और रात को नौदस बजे तक लौटते.ऐसी ही एक शाम को जब प्रभुदयाल और सरपंच भी वहां नहीं थे और जगन भी अन्य मजदूरों के साथ अपना सामान लेने गया हुआ था, रमेश ने देवा को अकेली देख कर इशारे से बुलाया. देवा पास आ गई तो वह धीरे से बोला, ''क्यों, देवा, चूड़ी और हार लेगी?''

देवा की आंखें आश्चर्य से फैल गईं. ''चूड़ी, हार? यहां कहां हैं, बाबू?''

''यहां से दो कोस पर जो गांव है न वह पहाड़ के ऊपर, वहां एक चूड़ी बेचने वाला आया है. चल, तुझे दिलवा दूं.''

देवा का मन ललचा उठा. बोली, ''लेकिन बापू तो है नहीं.''

''अरे, जब तक तेरा बापू आएगा, तब तक तो हम लौट ही आएंगे. बस, आनाजाना ही तो है. किसी को पता भी नहीं चलेगा.''

देवा के लिए चूड़ीहार का लालच बहुत बड़ा था. थोड़ी देर के असमंजस के बाद वह रमेश के साथ चल पड़ी. तीन किलोमीटर पहाड़ी चढ़ने के बाद रमेश पीछे आती देवा से बोला, ''आ, थोड़ी देर यहां बैठ कर आराम करते हैं.''

वह एक पत्थर से टिक कर बैठ गया. साथ लाए झोले से जब रमेश ने कच्ची दारू की बोतल निकाली तब भी देवा को कोई विशेष बात समझ में नहीं आई. उन लोगों में यह आम बात थी. उस का बापू भी रोज ही पीता था. थोड़ी ही देर में रमेश की आवाज लड़खड़ाने लगी. वह देवा की तारीफ करताकरता उस के पास सरकने लगा. शाम गहरा गई थी. सागौन के घने ऊंचे वृक्षों पर अपनेअपने घोंसलों में लौट कर पक्षी चहचहा रहे थे. देवा को खयाल आया, थोड़ी ही देर में जंगल शांत हो जाएगा. एकदम स्तब्ध. वह बचपन से जंगल में पली थी. जंगल की हर आवाज पहचानती थी. एकदम तमक कर खड़ी हो गई वह और बोली, ''बाबू, चलो अब नहीं तो बहुत देर हो जाएगी. तुम ने सुना नहीं है, इस इलाके में तेंदुआ है?''

रमेश लड़खड़ाते स्वर में बोला, ''अरे बैठ न... मेरी जान, थोड़ा... मजा तो ले जिंदगी का. क्यों... घबराती है... तुझे अपनी रानी बनाऊंगा... आ, मेरे पास आ.''

देवा समझ गई कि आज उस के पीछे तेंदुआ लग गया है. उस ने भागने की कोशिश की, लेकिन तब तक बहुत देर हो चुकी थी. पहाड़ों पर खड़े गगनचुंबी सागौन के पेड़ों पर डेरा जमाए लंगूर एक साथ ही देवा की चीख में अपनी आवाज मिला कर डर के मारे चीखने लगे. फड़फड़ा कर ढेर से पक्षी एक साथ उड़े और शोर मचाते हुए अंधेरे में गु

हो गए. नीचे... [illegible], राहत कार्य वाले स्थान पर बने मजदूरों के डेरों में बैठ कर दारू पी रहे लहनू ने दूर से आती वे आवाजें सुनीं और जोर से चिल्लाया, "सब दुबक जाओ, भई, शायद तेंदुआ आ रहा है. सब जानवर रो रहे हैं. बंद कर लो दरवाजे." सब मजदूरों ने अपनेअपने झोंपड़ों के दरवाजों पर टट्टर लगा कर उन्हें बंद कर लिया.

प्रभुदयाल के क्षेत्र के राहत कार्य से तहसील मुख्यालय तक आवागमन का कोई साधन नहीं था. पहाड़ों को पार कर फिर कच्ची सड़क मिलती थी, जो तहसील मुख्यालय तक ले जाती थी. उस इलाके का थाना भी तहसील मुख्यालय में ही था. उस समय थाने में थानेदार के साथ रामप्रसाद बैठा चाय पी रहा था, जब रमुआ देवा के साथ वहां पहुंचा. रामप्रसाद उस आदिवासी जिले से निकलने वाले दो पन्नों के साप्ताहिक समाचारपत्र का मालिक, संपादक और मुद्रक, सभी कुछ था. रमुआ ने उस रात देवा से सब कुछ सुन कर फौरन ही निर्णय ले लिया था. उस ने सुन रखा था कि सरकार आदिवासियों के लिए सब कुछ करने को तैयार है. आदिवासियों पर होने वाले किसी भी अत्याचार को सहन नहीं किया जाएगा.

यह सब उस ने कभीकभार उस के क्षेत्र में आने वाले नेताओं से सुना थां. और इसी लिए उस रात देवा की सिसकियों को सुन कर उस ने लड़ने का, अपनी बात सरकार तक पहुंचाने का, फैसला किया था. सवेरा होते ही बगैर किसी को कुछ बताए वह देवा को साथ ले कर तहसील में स्थित थाने की ओर चल पड़ा था, थानेदार को उस ने रोरो कर जब अपनी बेटी के साथ हुए अत्याचार की कहानी सुनाई तब रामप्रसाद भी वहां मौजूद था. रमुआ की पूरी बात सुन कर थानेदार हरनामसिंह और रामप्रसाद ने एकदूसरे को देखा. देवा एक कोने में सहमी, सकुचाई सी खड़ी थी. थोड़ी देर चुप्पी छाई रही, फिर रामप्रसाद बोला, "रिपोर्ट दर्ज करो, दारोगाजी."

हरनामसिंह उस समय मन ही मन रामप्रसाद को कोस रहा था. क्या जोरदार मामला हाथ लगा था, मगर यह रामप्रसाद यहां न होता तो कितना अच्छा होता. कुछ सोचने के बाद वह उठा और रामप्रसाद को पकड़ कर कमरे के अंदर ले गया. एकांत पाते ही वह उस से बोला, "देखो, यार, रिपोर्ट तो दर्ज हो ही जाएगी मगर केस में कुछ दम नहीं है. घटना को हुए 12 घंटे से अधिक बीत चुके हैं. कोई चश्मदीद गवाह है नहीं. ऐसे में क्या

सब से बड़ी लाटरी पाने का बोध

अमरीका में पिछले दिनों लूइस वाइजनबर्ग नाम के एक 53 वर्षीय व्यक्ति को 50 लाख डालर की लाटरी मिली. अमरीका में किसी व्यक्ति को लाटरी में मिली यह सब से बड़ी धनराशि थी. इस लाटरी का टिकट उस ने एक डालर में खरीदा था.

इतनी बड़ी धनराशि प्राप्त होने के बावजूद वाइजनबर्ग नौकरी करता रहा. वह मेनहटन की एक बहुमंजिली इमारत में काम करता था, जहां उसे 11,530 डालर प्रतिवर्ष मिलते थे.

लेकिन एकाएक उसे विचार आया कि इतनी बड़ी धनराशि का मालिक होते हुए भी वह क्यों इस तरह का काम कर रहा है. उस ने सोचा, 'मैं भी अजीब आदमी हूं. लखपति होते हुए भी बिजली की बत्तियों के पेंच कसने के लिए इधर से उधर घूमता रहता हूं.' और यह विचार आते ही उस ने नौकरी छोड़ दी.

होगा?''

''मगर अत्याचारी को सजा तो मिलनी ही चाहिए.''

''मिलेगी, जरूर मिलेगी. रमेश की आजकल राहत कार्य पर ड्यूटी है. निश्चित ही वह लंबा हाथ मार रहा होगा.'' फिर वह थोड़ा रुक कर रामप्रसाद की आंखों में आंखें डाल कर बोला, ''रामप्रसाद, अभी तुम कह रहे थे न कि तुम्हारा पत्र आजकल बहुत घाटे में चल रहा है?''

रामप्रसाद एकदम ढीला पड़ गया और अपने असली रूप में आ गया, ''अच्छा, कितना दिलवाओगे?''

''मैं समझता हूं, तुम्हें कोई पांच हजार तो मिल ही जाएंगे.''

''लेकिन इन लोगों का क्या होगा?''

''उस की चिंता मत करो. ऐसी जगह पहुंचा दूंगा कि किसी को खबर भी नहीं होगी. अरे, आदिवासी ही तो हैं. ज्यादा हुआ तो सौदो सौ पकड़ा देंगे.''

रामप्रसाद बेशर्मी से हंसा, ''गुरू, कुछ भी कहो, छोकरी है मजेदार.''

थानेदार हरनामसिंह ने रमुआ को दिलासा दिया और उसे आराम करने को कहा. आराम करने के लिए उस ने दोनों बापबेटी को थाने के पास बने अपने क्वार्टर में पहुंचा दिया जहां वह अकेला रहता था.

रमेश के पास जब थानेदार हरनाम और पत्रकार रामप्रसाद पहुंचे, तब उस घटना को हुए दो दिन बीत चुके थे. देवा और उस के बाप के वहां से चले जाने के कारण रमेश कुछ परेशान जरूर हुआ था, मगर उसे कोई विशेष चिंता नहीं हुई थी. आज अपने सामने थानेदार को देख कर उस के पसीने छूट गए. थानेदार हरनामसिंह को कोई विशेष मेहनत नहीं करनी पड़ी. रमेश इतना घबरा गया था कि उस ने बड़ी आसानी से 10 हजार थानेदार को और पांच हजार रामप्रसाद को दे दिए.

'शायद यह मामला कभी न उघड़ता. न ही किसी को कुछ मालूम पड़ता. मगर दो बातें गलत हो गईं. विकास खंड अधिकारी जब हिसाब लेने आए तो रमेश उन्हें 15 हजार का कोई हिसाब नहीं दे सका. विकास खंड अधिकारी का विचार था कि नंबर दो के किसी काम में बेईमानी नहीं होनी चाहिए. उन की बातें सुन कर सरपंच भड़क उठा. उसे लगा कि ये सरकारी मुलाजिम मिल कर उसे उल्लू बना रहे हैं. उस का हिस्सा शायद देना नहीं चाहते, इसी लिए 15 हजार गायब कर दिए हैं. वह बड़ा दुखी हुआ. मगर क्या करता?

उदास मन से वह अपने घर लौट रहा था कि रास्ते में मास्टरजी मिल गए. मास्टरजी उस के गांव की प्राथमिक पाठशाला के एकमात्र अध्यापक थे जो 15 दिनों में सिर्फ एक बार गांव आ कर पाठशाला खोलते थे. बाकी दिन जिला मुख्यालय में ही आराम फरमाते थे. मास्टरजी ने सरपंच को दुखी देखा तो कुरेदकुरेद कर पूछने लगे. दुखी और उदास सरपंच ने सारा किस्सा बयान कर दिया. मास्टरजी एक दिन स्कूल में पढ़ा कर 15 दिन के लिए जिला मुख्यालय गए तो यह कहानी वहां पहुंच गई.

उधर रामप्रसाद ने पांच हजार तो ले लिए थे, मगर वह फिर भी थाने से टल नहीं रहा था. हरनामसिंह ने दोतीन बार इशारा भी किया, पर रामप्रसाद अनदेखा कर गया. आखिर तंग आ कर हरनामसिंह उस से साफसाफ शब्दों में बोला, ''अच्छा, रामप्रसाद, अब जाओ. मैं भी जरा दूसरे केस की तफतीश करने जाऊंगा.''

''सो तो ठीक है गुरू, मगर वह छोकरी कहां गई?''

हरनामसिंह का मुंह बिगड़ गया. फिर भी वह अपने ऊपर नियंत्रण कर बोला, ''उस से तुम्हें क्या? तुम्हें पैसे मिल गए हैं. अपना काम देखो.''

''अच्छा, असली मजा तुम अकेले अकेले लोगे?''

हरनामसिंह की थानेदारी अचानक ही उस के दिमाग में चढ़ कर उसे बौखला गई. वह आपे से बाहर होता हुआ बोला, ''अब तू

यहां से जाता है या नहीं? अभी दो मिनट में बंद कर के भुरता बना दूंगा तेरा."

रामप्रसाद ने वहां से चुपचाप चले जाने में ही भलाई समझी. उस समय तो वह वहां से चला आया मगर रात भर सो नहीं सका.

उस रात देवा भी रात भर नहीं सो सकी. बड़े दारोगाजी ने बापू को न जाने किस काम से कहां भेज दिया था. कहा था, "जाओ, शहर से यह सामान ले आओ तो तुम्हारा केस जल्दी हो जाएगा. लड़की यहां आराम से रहेगी. कोई फिक्र की बात नहीं है."

उधर बापू शहर गया और इधर थानेदार के घर में भी ठीक उसी शाम जैसा दृश्य दिखाई देने लगा. वैसी ही दारू की मह्क, वैसी ही लड़खड़ाती जबान. मगर वहां जंगल में तो बंदर और पक्षी चीखचीख कर तेंदुए की उपस्थिति बता रहे थे, यहां कोई भी नहीं चीख रहा था. सरकार के घर में तेंदुआ. कोई चीख भी कैसे सकता था? जंगल थोड़ी था यह.

सारी रात तेंदुआ उसे झंझोड़ता रहा. सवेरे देवा की आंखें सूजी हुई थीं और देह टूट कर बिखरी जा रही थी. सवेरे जिला मुख्यालय के शहर में रामप्रसाद की आंखें सूजी हुई थीं. वह रात भर मारे अपमान के सो नहीं पाया था. उठते ही प्रेस चला गया. दो दिन बाद जब रामप्रसाद का साप्ताहिक समाचारपत्र प्रकाशित हुआ तो उस के मुखपृष्ठ पर मोटे अक्षरों में छपा था– "राहत कार्यों में लाखों का घपला और अनाचार. आदिवासी युवती थाने से गायब."

इतना सब कुछ हो गया और उसे कुछ मालूम ही न पड़ा, प्रभुदयाल भौचक्क रह गया. जांच के आदेश हो गए थे. जिला कलक्टर और पुलिस अधीक्षक जांच

के लिए आ रहे थे. तहसीलदार, एस.डी.ओ. सब रेस्ट हाउस पहुंच गए थे. उसे भी बुलाया गया था. वह तेजी से कदम बढ़ाता हुआ रेस्ट हाउस जा पहुंचा. मन ही मन न जाने कितने देवीदेवताओं को प्रसाद बोल दिया. जगन को उस ने वहीं बुला लिया था. बोला, "साहब लोग हैं. बगैर गाड़ी के वहां कैसे जाएंगे?" जगन को सब समझा भी दिया था कि उसे क्या बयान देना है. समझता क्यों न? थानेदार ने उसे पहले ही कह दिया था. अब आखिर उस का काम तो करना ही था.

नंबर दो के काम में कभी बेईमानी नहीं होती. प्रभुदयाल का यह पक्का उसूल था. वह रेस्ट हाउस पहुंचा तो दूर से ही उस के नथुनों में खुशबू भर गई. मुर्गा पक रहा था. थानेदार ने इंतजाम तो बढ़िया किया है, प्रभुदयाल ने सोचा. जगन एक तरफ बैठा बीड़ी पी रहा था. बड़ी देर के बाद साहब लोगों ने प्रभुदयाल को बुलाया. जिला कलक्टर नौजवान आदमी था, एकदम नया लगता था. अभी लेनदेन के चक्कर में नहीं पड़ा था. प्रभुदयाल हाथ जोड़ कर खड़ा हो गया.

"तुम पटवारी हो?"

"जी हां, हजूर."

"फिर राहत कार्य से तुम्हारा क्या संबंध है?"

"कुछ नहीं, सरकार. वह स्थान मेरे गांव के रास्ते में पड़ता है, इसलिए कभी आताजाता था." प्रभुदयाल पहले से ही सतर्क था.

"अच्छा, वहां कितनी सड़क बन गई है?"

"यह तो नहीं मालूम, सरकार. मैं बहुत दिनों से उधर गया नहीं."

"हम खुद जा कर देखेंगे," विकास खंड अधिकारी की ओर मुड़ कर कलक्टर साहब बोले. विकास खंड अधिकारी की जैसे जान ही निकल गई. वह मिमियाते हुए बोले, "वहां गाड़ी नहीं जाती, साहब. कोई और साधन भी नहीं है."

"हम पैदल ही जाएंगे." कलक्टर साहब का नया खून जोर मार रहा था.

प्रभुदयाल हाथ जोड़ कर बीच में बोला, "सरकार, राहत कार्य के कुछ मजदूर

यहीं मौजूद हैं. हजूर, बातें तो यहीं बयान ले लें." यह कोई भी नहीं चाहता था कि कलक्टर साहब मौके पर जा कर राहत कार्य देखें वरना उन की समझ में फौरन आ जाता कि तीन माह तक कार्य चलने के बाद भी दो सौ मजदूरों ने इतनी कम सड़क क्यों बनाई है.

"कौन है, बुलाओ उसे."

जगन को सामने कर दिया गया. साहब ने उस से कई प्रश्न पूछे. जगन मुस्तैदी से सब का उत्तर देता रहा. प्रभुदयाल ने रटा कर पक्का कर दिया था. अंत में पुलिस अधीक्षक ने उस से पूछा, "अच्छा, तुम्हारे साथ रमुआ और उस की लड़की देवा भी काम करते थे?"

"कौन रमुआ और देवा, हजूर? ये नाम तो कभी सुने नहीं. कभी इन लोगों को देखा भी नहीं." जगन के और भी कई साथियों ने वही बयान दिया.

थानेदार हरनामसिंह जगन के अभिनय पर मुग्ध हो गया. पुलिस अधीक्षक और जिला कलक्टर फिर राहत कार्य देखने नहीं गए. रात को भोजन के समय थानेदार ने साहब को बताया, "सब झूठा किस्सा है, हजूर. वह रामप्रसाद खुद बहुत बड़ा बदमाश है. उस के खिलाफ मैं ने एक मामला दर्ज किया था, इसी लिए उस ने यह खबर छापी है."

मुर्गे की टांग निचोड़ते हुए पुलिस अधीक्षक ने सहमति में सिर हिलाया. उस वर्ष इस इलाके में सूखा पड़ा था. पानी नहीं बरस रहा था, मगर मुर्गे बहुत थे इस इलाके में.

उस बात को कई वर्ष बीत गए हैं. इस वर्ष भी सूखा पड़ा है इस इलाके में. धूप चिलमिला रही है. धरती सूखसूख कर फटती जा रही है. दिन भर [illegible] गरम हवाएं चलती रहती हैं. सरकार की ओर से लाखों के राहत कार्य चल रहे हैं, मगर अब प्रभुदयाल का उन से कोई वास्ता नहीं है. वह अवकाश प्राप्त कर चुका है. बस, माह में एक बार पेंशन लेने तहसील के दफ्तर तक जाता है. वहां भी अब उसे कोई नहीं जानता. सब नए लोग हैं. दिन भर लग जाता है. कितना परेशान होना पड़ता है. जब वह नौकरी में था तो खजाने के सब लोग उसे जानते थे. लेकिन अब? सब नए हैं. तभी तो वह सुबहसवेरे ही गांव से चल देता है.

आज फिर देर हो गई थी. कितनी धूप चढ़ आई थी. अचानक प्रभुदयाल की विचारशृंखला टूट गई. एक अकेला बच्चा अपनी मां के साथ आ रहा था, जोरजोर से गाना गाता हुआ– "काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़ धानी दे." मां चुपचाप चली आ रही थी पीछेपीछे. मां काली थी, मगर बच्चा गोरा. प्रभुदयाल ने ध्यान से देखा, दिमाग पर जोर डाला. इसे कहीं देखा है. कौन है यह? फिर पहचान कर चिल्लाया, "अरे देवा, यह तेरा बच्चा है? कितना बड़ा हो गया. बहुत दिनों बाद देखा है तुझे. बच्चा तो खूब गोरा है?"

प्रभुदयाल ने एक साथ ही कई सवाल पूछ डाले. देवा ने सिर का बोझ उतार कर बगल में लिया, प्रभुदयाल को ध्यान से देखा, पहचाना. कुछ देर एकदम चुप रही. फिर बोली, "हां, गोरा है, थानेदार का है न." फिर बच्चे का हाथ खींच कर आगे बढ़ गई. बच्चा फिर उसी मौजमस्ती से गाने लगा– "काले मेघा पानी दे, पानी दे गुड़ धानी दे."

प्रभुदयाल धम से सड़क के किनारे के पेड़ का सहारा ले कर बैठ गया. •

सिलसिला

कब तुम्हारी बातों से
दिल मेरा नहीं टूटा,
आज तक तो जख्मों का
सिलसिला नहीं टूटा.

—सलीम 'अश्क'

इस स्तंभ के लिए समाचारपत्रों की कटिंग भेजिए..कटिंग के नीचे अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें. सर्वोत्तम कटिंग पर 15 रुपए की पुस्तकें पुरस्कार में दी जाएंगी.

भेजने का पता: संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3. रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

वे इत्र नहीं, गर्भपात की दवाइयां बेचते थे

भोपालपटनम में इत्र बेचने की आड़ में अवैध रूप से गर्भपात की दवाइयां बेचने के आरोप में ग्राम मिर्जापुर (आंध्र प्रदेश) के गुलजारसिंह और तारासिंह को गिरफ्तार किया गया है. ये लोग सुदूरवर्ती इलाकों में गर्भपात की दवाइयां लोगों को देते थे और बदले में मनमाने दाम वसूल करते थे.

पुलिस को इन के पास से कान का मैल निकालने के यंत्र तथा डाक्टरी आला भी मिला. मजे की बात यह है कि ये लोग अनपढ़ हैं.

—नवभारत, रायपुर (प्रेषक : श्रीकांत रहाटगांवकर)

*

डीजल में पानी की मिलावट

बरौनी तेल शोधक कारखाने से रेलवे की आपूर्ति किए जाने वाले हाईस्पीड डीजल में पानी की मिलावट पाई गई. बताया जाता है कि उस में 31 प्रतिशत पानी की मिलावट थी, जिस से रेल इंजनों को बहुत क्षति पहुंचती.

रेल सूत्रों के अनुसार रासायनिक जांच से पहले ही इस का पता लग गया और बरौनी रेलवे जंक्शन ने उस डीजल टैंक को बरौनी तेल शोधक कारखाने को वापस लौटा दिया.

—दैनिक आर्यावर्त, पटना (प्रेषक : यज्ञेश त्रिवेदी 'समीर')

*

बच्चों को पकड़ने वाले साधु पकड़े गए

लखनऊ में हुसैनगंज थाना क्षेत्र में चुटकी भंडार स्कूल के पास बच्चा चुराते हुए दो साधुओं को जनता ने रंगे हाथों पकड़ लिया.

पुलिस का कहना है कि इन साधुओं ने एक बच्चे को मिठाई खिलाई जिस से वह उन के साथ चल पड़ा. इसी बीच पड़ोस के एक दरजी की नजर साधु तथा बच्चे पर पड़ी. उसे कुछ शक हुआ और उस ने शोर मचा दिया, जिस से लोगों ने साधुओं को घेर लिया.

साधुओं के झोलों से मिठाई, कुछ जड़ीबूटियां तथा दो शीशियों में भरा तरल पदार्थ बरामद हुआ. इस तरल पदार्थ को सुंघा कर ये साधु बच्चों को बेहोश कर देते थे.

—आज, कानपुर (प्रेषक : लखनलाल गुप्ता)

*

अजनबी द्वारा दी कोई चीज न खाएं

तमाम रेलगाड़ियों के डब्बों तथा प्लेटफार्मों पर अंकित सलाहें—'रेलगाड़ियों में यात्रा करते समय किसी अजनबी द्वारा दी गई कोई वस्तु नहीं खाएं,' इस वक्त बहुत सामयिक हो गई

हैं. क्योंकि जहर या नशीली वस्तु दे कर यात्रियों को लूटने वाले गिरोह उत्तर प्रदेश में काफी सक्रिय हो गए हैं.

रेलवे पुलिस के अधिकृत सूत्रों के अनुसार गत अप्रैल माह में चारबाग, लखनऊ के प्लेटफार्म पर एक गिरोह ने जहर दे कर आठ लोगों को मार डाला और उन का मालअसवाब लूट लिया. चारबाग स्टेशन पर अब तक एक दर्जन से अधिक लोग इस गिरोह के शिकार हो चुके हैं.

इसी प्रकार के कुछ गिरोह धार्मिक स्थलों पर भी सक्रिय हैं. अयोध्या, बांदा, इलाहाबाद, वाराणसी, लखनऊ व गोरखपुर में इन गिरोहों ने पिछले छह माह के अंदर तीन दरजन व्यक्तियों को अपना शिकार बनाया है. इन के चंगुल में फंसने वाले अधिकांश यात्री अनपढ़ थे.

—हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : राजकुमार अग्रवाल)

*

चोरी करने का एक तरीका यह भी है...

नई दिल्ली पुलिस ने चार ऐसे चोरों को गिरफ्तार किया है जो अभिनव तरीके से चोरी करते थे.

पुलिस के अनुसार इन चार चोरों ने कल यहां की पुनर्वास कालोनी में एक महिला के घर में प्रवेश किया और उस से कुछ दान मांगा. जब महिला ने उन्हें एक अठन्नी दे दी तब चारों ने विनम्र भाव से पांच रुपए देने को कहा. इस पर जब महिला ने पांच रुपए देने से इंकार कर दिया तो एक चोर ने सहज भाव से कहा, "अच्छा, मैं हस्तरेखा शास्त्री हूं. लाओ, तुम्हारा हाथ देख लूं."

यह कह कर वह प्रकांड सामुद्रिक शास्त्रज्ञाता की भांति तल्लीनता से महिला का हाथ देखने लगा. महिला भी अपना भाग्यदुर्भाग्य जानने की जिज्ञासा में एकाग्रचित हो गई. इस बीच शेष तीनों चोर पूरे घर का चप्पाचप्पा छान कर सारा माल ले कर निकल गए.

जब ज्योतिषी चोर ने समझ लिया कि उन के साथी काम कर के निकल चुके हैं तो वह भी चलने की बात करने लगा. महिला को तभी उस के तीन साथियों का खयाल आया कि वे तीनों कहां गए. ज्योतिषी ने उन के बारे में कुछ कहने में आनाकानी की तो महिला को कुछ शक हो गया और उस ने शोर मचा दिया. नतीजा यह हुआ कि गश्ती पुलिस ने ज्योतिषी चोर को घर से बाहर निकलते वक्त दरवाजे पर ही दबोच लिया.

महिला से सारी कहानी सुन कर जब पुलिस ने ज्योतिषी चोर से अपने ढंग से पूछताछ की तो उस ने अपने तीन साथियों का भी सुराग दे दिया. दो घंटे के अंदर ही वे तीनों भी पकड़ लिए गए और महिला के घर का सारा सामान भी बरामद हो गया.

पुलिस ने इन चारों के कब्जे से कई अन्य चोरियों का सामान, टेप रिकार्डर, केसैट और घड़ियां आदि भी बरामद की. पूछताछ के दौरान चारों ने स्वीकार किया कि वे इसी तरह हस्तरेखा शास्त्री बन कर चोरियां करते रहे हैं. —आज, कानपुर (प्रेषक: ग्यास मो. खां)

*

राजधानी में एक ठगी ऐसी भी...

नई दिल्ली में ठगी का एक नया तरीका अपना कर दो लोगों ने कनाट प्लेस की एक किताब की दुकान से 14 हजार रुपए उड़ा लिए. पुलिस ने ठगी और चोरी का मामला दर्ज किया है.

पुलिस में दर्ज रपट के अनुसार एक ठग ने उक्त दुकानदार से एक पत्रिका खरीद कर उसे बीस रुपए का मैला नोट थमा दिया और थोड़ी दूर खड़ा हो कर पत्रिका पढ़ने लगा.

इस मैले नोट को बदलने के लिए ज्यों ही दुकानदार उस के पास पहुंचा उस के दूसरे साथी ने तिजोरी से पैसा साफ कर दिया. —नवभारत, रायपुर (प्रेषक : महेंद्र मलीजा)

(सर्वोत्तम) •

...यर में जे.बी. मंघाराम के नाम से विख्यात बिस्कुट ...री आज अपना अस्तित्व पूरी तरह खो चुकी है. ...र के मतभेदों ने इस फैक्टरी को आज किस हालत में ... दिया है?

एक व्यवसाय के पतन की कहानी

...यकिशन दास पमनानी

भेंटवार्ता • मोहनदीप

आप ने रंक से राजा बनने की कहानियां तो बहुत पढ़ी होंगी, परंतु मंघाराम ...कहानी इस के बिलकुल विपरीत पतन की ...ती है.

सन 1970 से कुछ समय पहले तक ...कुट तथा गोलियोंटाफियों के शौकीन ... सभी लोग जे.बी. मंघाराम का नाम ...ते थे. वर्षों में बनी सुदृढ़ साख, गुणवत्ता ...नाए रखने की तीव्र लगन और व्यापार ...सम्यक समझ मंघाराम परिवार की ...षताएं मानी जाती थीं.

ग्वालियर में स्थित उन की फैक्टरी ...या की जानीमानी फैक्टरी थी, जिस में ...दिन 80 टन बिस्कुट तथा गोलियोंटाफियों ...त्पादन होता था.

आज वही फैक्टरी उन के हाथ से ...कर दूसरे लोगों के हाथों में पहुंच गई ...रण? न तो उन के पास सदा आदि कच्चा माल खरीदने के लिए धन है और न ही वह कर्मचारियों को वेतन तथा मजदूरी देने की स्थिति में हैं. व्यापारिक क्षेत्र में उन की साख भी खत्म हो चुकी है, इसलिए उन्हें ऋण भी नहीं मिल पाता. महाजनों के चंगुल में फंसा मंघाराम परिवार एक हारे हुए युद्ध को फिर से जीतने की चेष्टा में लगा हुआ है.

जे. बी. मंघाराम एंड कंपनी (प्राइवेट) लिमिटेड के प्रबंध निदेशक श्री जयकिशन दास पमनानी टेलीफोन की घंटी बजने पर उसे उठाने से इसलिए कतराते हैं कि कहीं किसी लेनदार का तकाजा न हो.

उन्होंने इस बात को स्वीकार किया, "मैं ने यही सोच कर डरतेडरते आप का टेलीफोन उठाया था."

मैं उन से साक्षात्कार के लिए उन के बंबई कार्यालय में पहुंचा. कोई जमाना था जब यह कार्यालय ... से खचाखच

भरा रहता था. आज यह छोटीछोटी
को पट्टे पर दे दिया गया है. मंघाराम क
पास मात्र एक कुरसी और एक
कर्मचारी के नाम पर केवल एक अका

जयकिशन दास ने आप बीती
हुए कहा, "हमारी कहानी भारत में
के उत्पादन के इतिहास का एक
आज से ठीक 74 वर्ष पहले कुल
रुपए की पूंजी से सक्खर (सिंध) में ज
पाकिस्तान में है, हम ने एक आधुनिक ढंग
बिस्कुट फैक्टरी शुरू की थी. विदे
तकनीक तथा आयातित मशीनों से
फैक्टरी इंगलैंड में बनने वाले बिस्कु
लाजेंज लेमन ड्राप्स आदि से मुकाबला क
के उद्देश्य से खड़ी की गई थी.

"मेरे दादा को यह बात जरा भी प
नहीं थी कि भारत से कच्चा माल बाहर ज
और फिर भारत इंगलैंड से बनाबना
सामान खरीदे. उन दिनों सीमित तकनी
जानकारी होने के कारण भारतीय वस्
इंगलैंड में बनी चीजों का मुकाबला नहीं
पाती थीं.

"चीजों के मूल्यों में काफी स्पर्धा
इस फैक्टरी के जन्मदाता श्री मंघार
पमनानी पक्के राष्ट्रवादी थे. उन्होंने विदे
मशीनें लगा कर विदेशी वस्तुओं से स्प
करने की चेष्टा की.

"लोग उन की राष्ट्रीय भावना से भल
भांति परिचित थे, इसलिए हमारी वस्तुओं
मूल्य थोड़ा अधिक होने के बावजूद वे हम
चीजें खरीदना अधिक पसंद करते थे.

"1932 तक जैसेतैसे लोगों की राष्ट्र
भावना के कारण यह फैक्टरी चलती र
फिर 'स्वदेशी आंदोलन' ने जोर पकड़ा.
से भी हमारी काफी व्यावसायिक उन्नति
हम ने 1932 में फिर नवीनतम तकनीक वा
मशीन खरीदी और बेहतर मशीनें आय
करने की यह परंपरा 1940 तक बनी र

"फिर विश्वयुद्ध छिड़ गया. इंगलैंड
रूस को निर्यात बंद कर दिया. हमारा बिस्
रूस जाने लगा और हम उन्नति के चरम
पहुंच गए."

महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे राष्ट्रीय नेता जब भी सिंध आते थे तो श्री (मंघा)राम के बंगले पर ही ठहरते थे. (व्याव)सायिक सफलता मंघाराम परिवार के सिर (च)ढ़ कर बोलनी शुरू नहीं हुई थी और वह (अपनी) सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति पूरी (तरह) सजग था.

तभी देश आजाद हुआ. देश के (विभा)जन ने पंजाबियों, बंगालियों और (सिंधि)यों को शरणार्थी बना दिया. बंगालियों (और) पंजाबियों को तो अपनेअपने राज्य का (भू)भाग मिल भी गया, लेकिन सिंधियों को (सिंध) छोड़ कर भारत में बसना पड़ा.

(तूफा)नी भारतपाक बटवारे के बाद की

मंघाराम परिवार भी भारत आ गया. (उन्हों)ने अपने पक्के इरादे और अत्याधुनिक (तक)नीकों के बलबूते पर ग्वालियर में फैक्टरी (शुरू) की.

ग्वालियर में जे. बी. मंघाराम की 25 (एकड़) जमीन में से 1.5 लाख वर्ग फुट में (इमार)तें बनी हुई थीं और इन्हीं में मंघाराम का (बिस्कु)ट का कारखाना लगा था.

श्री जयकिशन दास ने बताया, "हमारी (फैक्ट)री का अपना बिजलीघर था, पानी और गैस की भी अपनी ही व्यवस्था थी. हम (बिस्कुटों) के डब्बे तथा पैकिंग का कागज भी खुद (तैयार) कर अपने ही प्रेस में छापते थे. इस प्रकार (उत्पा)दन के क्षेत्र में हम पूरी तरह से (आत्म)निर्भर थे."

1968 तक फैक्टरी अबाध गति से (काम) करती रही. उस समय उन का प्रचार (बजट) ही केवल 10 लाख रुपए का था, जो (उस ज)माने के हिसाब से बहुत बड़ी रकम थी. (इस) कंपनी ने पहली बार क्रीम सैंडविच (बिस्कु)ट बनाए और बिस्कुटों पर प्रथम बार (ऐलु)मिनियम की पन्नी चढ़ाने का श्रेय भी (इसी) को जाता है.

(बा)जार उन दिनों ऊंचा था. मंघाराम के (पास) साख, नाम, रुपया और ग्राहकों का (स)भी कुछ था.

(श्री) जयकिशनदास ने बताया, "मुझे

सरिता व मुक्ता में प्रकाशित
लेखों के महत्त्वपूर्ण रिप्रिंट
सेट नं. 2

प्राचीनकाल में बच्चों की शिक्षादीक्षा
वेदों में विज्ञान
राम कथा व सीता चरित्र
सरिता और हिंदू समाज
तुलसी साहित्य: अनुवादों की नुमायश
तुलसी साहित्य: आ. व आ. के उत्तर
हिंदुओं के मंदिर कैसे हों?
रावण
रामचरितमानस के अविश्वसनीय प्रसंग
रामचरितमानस के असंगत स्थल
श्रीकृष्ण
गीता: कर्मवाद की व्याख्या या कृष्ण का आत्मप्रचार
क्या कौमार्य रक्षा दकियानूसी है?
कृष्ण और राधा
श्रीमद्भागवत
भागवत और भूगोल
समाजवाद बनाम स्वतंत्रता
कामायनी
हिंदू विवाह पद्धति
पुत्रेष्टि यज्ञ
प्राचीन भारत में गो हत्या
हिंदी साहित्य का गलत इतिहास
धनुषयज्ञ
कृष्ण और गोपियां
हमारे देवमंदिर
क्या समाजवाद अनिवार्य है?
विवाह पूर्व यौन संबंध
श्रीकृष्ण: अपने जीवन की संध्या में
सताई गई नारी
कृष्ण और कुब्जा

मूल्य-5 रुपए

50% की पुस्तकालयों, विद्यार्थियों व अध्यापकों के लिए विशेष छूट.
रुपए अग्रिम भेजें.
वी.पी.पी. नहीं भेजी जाएगी.
सेट में लेखों का परिवर्तन कभी भी हो सकता है.

दिल्ली बुक कंपनी,
एम-12, कनाट सरकस, नई दिल्ली

अखिल भारतीय बिस्कुट तथा मिठाई (गोलियांटाफी) उत्पादक संघ का अध्यक्ष चुना गया, जिस के सदस्यों में पार्ले तथा मोनाको जैसी कंपनियां भी थीं.''

उस के बाद इस कंपनी का पतन शुरू हो गया.

''भाइयों के बीच पारिवारिक झगड़े और कलह, विशेषकर उन की पत्नियों के बीच के झगड़े साझीदारों के मनमुटाव का कारण बने. हम सब अलग हो गए. कंपनी का बंटवारा हो गया,'' जयकिशनदास ने बताया.

''ग्वालियर वाली फैक्टरी में दो इकाइयां लगी होने के कारण वह बंगलौर वाली फैक्टरी से बड़ी थी. हम ने नकद रुपया दे कर बकाया हिसाब कर दिया. हमारे हाथ पुरानी फैक्टरी आई, जिस में कर्मचारियों की संख्या भी अधिक थी, उत्पादन क्षमता भी ज्यादा थी, लेकिन हमारे पास उसे चलाने के लिए पैसा नहीं था. यदि हम 'मंघाराम एंड संस' के अंतर्गत काम कर रहे होते तो हम सभी साझीदारों को बाजार से काफी रुपया मिल सकता था, लेकिन हमें नहीं मिल सका.

''कहा जाता है कि जितने पुराने कर्मचारी होंगे, समस्या उतनी ही बढ़ेगी. हमारे यहां पुराने कर्मचारी थे और स्वभावत: उन के अधिकार भी ज्यादा थे. नतीजा यह हुआ कि श्रमिक संघ के नेताओं से टकराव शुरू हो गया. वे हमारी वास्तविक स्थिति पर नजर डालने को तैयार ही न थे.

''दूसरे, बाजार में यह हवा उड़ चुकी थी कि हमारे पास फैक्टरी चलाने के लिए धन नहीं है, इसलिए हमें उधार माल मिलना भी बंद हो गया. हम ने 10 वर्षों तक अपने शुभचिंतकों, बैंक ऋणों आदि की मदद से फैक्टरी को चलाने का असफल प्रयास किया.

''बंबई के बैंक हमें इसलिए ऋण नहीं देते थे, क्योंकि हमारी फैक्टरी ग्वालियर में थी. और ग्वालियर के बैंक छोटे होने के कारण हमें इतना अधिक रुपया देने से कतराते थे. तंग आ कर हम ने फैक्टरी चलाने के लिए औरों को सौंप दी. लेकिन यह व्यवस्था केवल अस्थायी है.''

अब अगर इस फैक्टरी का उत्पादन 8 टन प्रतिदिन से गिर कर मात्र पांच टन प्रति दिन रह गया है.

श्री जयकिशनदास ने दुखी स्वर कहा, ''मेरे चारों बेटे हालांकि विदेशों व्यवसाय प्रबंध तथा 'फूड टेक्नालाजी' पाठ्यक्रम किए हुए हैं, पर धनाभाव के कार वे भी विशेष कुछ नहीं कर पाए. एक तो ए छोटी सी बेकरी चला रहा है, दूसरा ट्रांसपो के धंधे में है. बाकी दोनों अभी शिक्षा ग्रह कर रहे हैं.

''इस सब से मैं ने एक सबक सीखा जब आप की जेब में धन हो तो सभी आप मित्र और शुभचिंतक होते हैं, लेकिन ध होने पर सभी पीठ फेर लेते हैं.''

अब चमत्कार पर निर्भर हैं

अपनी बात को समझाते हुए उन्हों उदाहरण दिया, ''सिंधियों की एक जानीमा हस्ती हमारे पास लोगों को जिसतिस चीज लिए दान लेने के लिए भेजा करती थी, लेकि जब हम ने उन से हमारे लिए कुछ करने कहा तो उन्होंने कोई दिलचस्पी नहीं दिखा पहले कितने ही लोग हमारे पास सहाय मांगने आते थे. उत्सवों में हमें मुख्य अति के रूप में बुलाते थे. लेकिन आज वे ही ल हमें जैसे पहचानते तक नहीं. लेकिन संसा ऐसा ही होता आया है.''

''आप इस फैक्टरी को बेच क्यों देते या इसे 'पब्लिक लिमिटेड कंपनी' नहीं बना डालते?'' मैं ने उन से सवाल कि

''सात करोड़ की फैक्टरी खरीदने बूता किस में है? कुछ तकनीकी कारण हमारा वकील इसे पब्लिक लिमिटेड ब की सलाह भी नहीं देता. फिर भी यदि क हमारी सहायता के लिए आगे आना चाहत तो उस का स्वागत है,'' जयकिशन द बोले.

''अब तो हमें इस स्थिति से व चमत्कार ही उबार सकता है. और जीवन चमत्कार भी होते हैं,'' उन्होंने विश्वासपू कहा.

देलवाड़ा

पृष्ठ 94 का शेषांश

रों तथा कुछ हिंदू मंदिरों के कारण इस का वाड़ा नाम सार्थक रहा है.

विमलवसहि और लूणवसहि मंदिर नी सर्वोत्कृष्ट कला के कारण बहुत धक प्रसिद्ध हैं और तत्कालीन वास्तुशिल्प गौरव हैं. विमलवसहि यहां के सभी जैन रों में सब से पहले का बना है. इस के र्माता थे गुजरात के प्रतापी राजा भीमदेव म के कार्यकुशल मंत्री, परामर्शदाता और वीर सेनापति विमलशाह. धनधान्य से पूर्ण प्रसिद्ध व्यापार नगरी अणहिलवाड़ा के निवासी थे. धुंधुक पर विजय प्राप्त कर चंद्रावती के राज्यपाल बने थे. चंद्रावती री उस समय आबू से 6.5 किलोमीटर के र पर विद्यमान थी. अनेक युद्धों में भाग के पश्चात जैनचार्य धर्मघोष सूरि के देशों का उन पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा उन की आज्ञा से उस निस्संतान और धर्म ा कला प्रेमी धनाढ्य मंत्री ने 18.53 करोड़ ए की लागत से सन 1031 ईसवी में इस द्वितीय मंदिर का निर्माण कराया. इस के र्माण में 14 वर्ष लगे. 1,500 कारीगर तथा 200 श्रमिक दिनरात इस में कार्य पर लगे . इस के प्रमुख शिल्पी थे गुजरात के एक म के निवासी वास्तुकार कीर्तिधर. र्तिधर उस वर्ग के शिल्पियों में से थे, न्होंने दक्षिण में अनेक विशाल दुर्गों का र्माण कराया था. पत्नी तथा युवा पुत्र की यु हो जाने के कारण वह संसार से लगभग क्त हो गए थे. इस कारण आरंभ में तो वह र के निर्माण का उत्तरदायित्व लेने के सहमत नहीं हुए, किंतु विमलशाह की र बनवाने की उत्कट लगन को देख कर उस के लिए तैयार हो गए.

इस के लिए 22 किलोमीटर दूर अंबाजी की निकटवर्ती आरासूर पहाड़ी से श्वेत संगमरमर हाथियों पर लाद कर लाया गया था. इस पर होने वाले भारी व्यय का अनुमान इस से भी लगाया जा सकता है कि मंदिर बनाने के लिए विमलशाह को भूमि सामंत धुंधुराज से रुपयों से नाप कर लेनी पड़ी थी. यह भी कहा जाता है कि भूमि खरीदने के लिए विमलशाह ने सोने की मोहरें मुक्त हस्त से दी थीं. अधिक से अधिक धनराशि दे कर केवल कुशल शिल्पियों एवं कारीगरों को ही निर्माण कार्य पर लगाया गया था. मंदिर बाहर से एकदम सादा सा देवालय लगता है. आभास तक नहीं होता कि इस के अंदर कला का ऐसा अपूर्व कोष संजोया गया होगा. अंदर सभामंडप में पहुंचते ही दर्शक जैसे अलौकिक स्थान में प्रविष्ट हो जाता है. विस्मित कर देने वाली भाव व्यंजना एवं बारीक कटाई और छिलाई वर्णनातीत है. कला की इस सर्वोत्कृष्टता का वास्तविक वर्णन करने के लिए शब्द भी किसी उस जैसे चितेरे के पास

तरी स्तंभों पर बारीक कलात्मकता दर्शक का मन मोह लेती है.
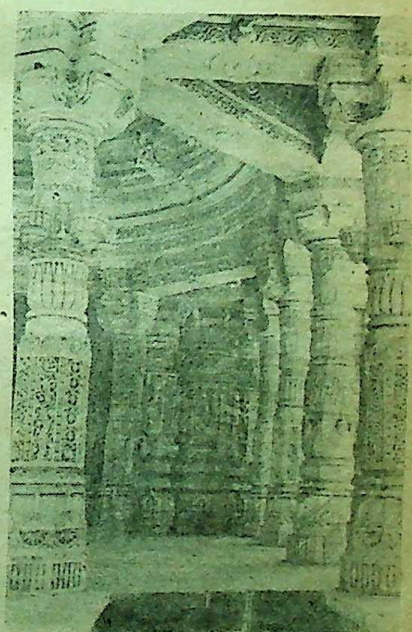
ही हो सकते हैं. प्रांगण, गर्भगृह और सभामंडप (रंगमंडप) का चप्पाचप्पा सुंदर कलाकृतियों से आच्छादित है.

मुख्य प्रवेशद्वार के पश्चात कुछ सीढ़ी नीचे 30X13 मीटर आकार का प्रांगण है. इस प्रांगण में मुख्य गर्भगृह, गूढ़मंडप तथा अन्य निर्मित हैं. प्रवेश द्वार के चबूतरे और रंगमंडप के मध्य एक खुला और बड़े आकार का मंडप है, जिस में तीन छतें बनी हैं. मध्य की छत में तीर्थंकर आदिनाथ के समवशरण (उपदेश सभा) तथा उन के पुत्रों भरत एवं बाहुबली के प्रसंग सजीव ढंग से उत्कीर्ण किए गए हैं. मध्य की छत के आगे व पीछे वाली दोनों छतों में पुष्पगुच्छ अंकित हैं और उन के गुंबजों की छतों में नृत्यरत नारियों के चित्र बहुत ही कलात्मकता से अंकित हैं.

कला के उत्कृष्ट नमूने

उक्त मंडप को पार करने पर दर्शक एक विशाल रंगमंडप में प्रविष्ट होता है. इस रंगमंडप का फर्श प्रांगण के फर्श से कुछ ऊंचा है. यह रंगमंडप 48 स्तंभों पर टिका हुआ है. मध्य के अतीव अलंकृत आठ स्तंभों पर टिकी हुई सुंदर छत को देख कर प्रतीत होता है कि किसी ने इस का जड़ाऊ स्वर्ण आभूषणों से खूब मन से शृंगार किया है. इन्हीं स्तंभों पर आधारित है वह प्रसिद्ध भव्य गुंबद जिस के मध्य में विशाल और कला के उत्कृष्ट उदाहरण संगमरमर के कमल उत्कीर्ण हैं. ये कमल गुंबद की छत की ओर बड़े तथा नीचे की ओर क्रमशः छोटे होते गए हैं.

गुंबद में ही उत्कीर्ण है गोलाई में 16 वेणियां, जिन में नृत्य करती हुई देवियों की कारीगरी का भी जवाब नहीं है. समस्त मेहराब फूलबूटेदार हैं. स्तंभों की अष्टकोण कटाई चकित कर देने वाली है. मंडप और गर्भगृह कटावदार चबूतरों पर बनाए गए हैं. मुख्य गर्भगृह में तीर्थंकर आदिनाथ की परिकर सहित भव्य प्रतिमा विराजित है.

विमलवसहि की परिक्रमा में चारों ओर बरामदों में 59 देवरियां बनी हैं. 52 जिनालयों में साधारणतः 52 देवकुलिकाएं अर्थात

देवरी की एक छत में सरस्वती.

वेदियां निर्मित होती हैं, किंतु विमलवसहि इन की संख्या 59 है. प्रत्येक देवकुलिका एक तीर्थंकर की मूर्ति स्थापित है. इ बरामदों के दोनों ओर स्तंभ निर्मित हैं. स्तंभ विशेष अलंकृत नहीं हैं, किंतु दूर देखने पर ये स्तंभ एवं चमकता हुआ फर्श एक जैसे दीखने वाले स्तंभों वाले बरामदे म पर भव्य प्रभाव अंकित करते हैं. इन बराम की छतों में कमल की कलियों, फूलों एवं की पत्तियों, जैन कथा प्रसंगों, ज्यामिति आकृतियों, देवियों, यक्षयक्षिणियों, कालि नाग दमन, नरसिंहावतार आदि के बारीक कटाई वाले चित्र उत्कीर्ण हैं. म की संपूर्ण कला को देख कर लगता है कि सब अलौकिक है.

हस्तिशाला

इस मंदिर का गर्भगृह, गूढ़ मंडप त नवचौकी ही विमलशाह द्वारा निर्मित क गए थे. मंदिर के अन्य भाग बाद में 12 शताब्दी में निर्मित हुए. विमलशाह के वं पृथ्वीपाल ने अपने पूर्वजों की स्मृति में 1147 में इस मंदिर के बाहर एक हस्तिश तथा रंगमंडप का निर्माण कराया हस्तिशाला के द्वार पर घोड़े पर स

मलशाह की मूर्ति भी बनी है. इस मूर्ति के नों ओर तथा पीछे संगमरमर के कलात्मक ले, पालकी और 10 अलंकृत हाथी बने हैं. न हाथियों के कारण ही यह हस्तिशाला हलाती है.

यह मंदिर चालुक्य स्थापत्य शैली में र्मित उस समय के मंदिरों का एक उत्कृष्ट दाहरण है. अंदर की अत्यंत सुंदर भिकल्पना तथा प्रचुर अलंकरण इस शैली मंदिरों की विशेषता है. विशिष्ट योजना से तंभों की स्थापना तथा उन का बहुलता से लंकरण भी इन मंदिरों की विशेषता है. बड़े दिरों में मुख्य स्तंभों पर तोरण भी बनाए ाते थे.

छोटे मंदिरों में प्रवेशमंडप मुखमंडप), गर्भगृह एवं गूढ़मंडप निर्मित िए जाते थे और बड़े मंदिरों में तोरण सहित भामंडप (रंगमंडप) भी निर्मित किए जाते . विमलवसहि मंदिर 30 मीटर लंबा तथा 3 मीटर चौड़ा है. संपूर्ण मंदिर श्वेत गमरमर से निर्मित है.

कलात्मक मंदिर

विमलवसहि के पश्चात दूसरा लात्मक मंदिर है लूणवसहि (नेमिनाथ दिर). इस का निर्माण गुजरात के घेलवंशी राजा वीरधवल के त्रियों—वस्तुपाल और उस के भाई तेजपाल कराया था. यह तेजपाल की पत्नी लुपमादेवी एवं पुत्र लावण्यसिंह के कल्याण लिए आबू के महामंडलेश्वर सोमसिंह रमार की अनुमति से विमलवसहि के 200 पश्चात सन 1230 में 12.53 करोड़ यों की लागत से बनवाया गया था. लावण्यसिंह के लिए निर्मित होने के कारण का नाम लूणवसहि प्रसिद्ध हुआ. मंदिर के य शिल्पी का नाम था शोभन देव. यह र भी विमलवसहि के ही नमूने पर निर्मित इस की प्रतिष्ठा धूमधाम से सन 1230 में चार्य विजयसेन सूरी द्वारा संपन्न हुई थी.

लूणवसहि में गर्भगृह, गूढ़मंडप, ददार सभामंडप, अगलबगल में छोटेछोटे िनालय और पीछे की ओर हस्तिशाला निर्मित है.

हस्तिशाला के चारों ओर जाली की कटाई की दीवार बनी है. इस मंदिर के चारों ओर बरामदों में 52 देवरियां निर्मित हैं, जिन में से 48 पहले की बनी हैं और चार का निर्माण सन 1950 एवं 1962 में हुआ है. प्रत्येक में एक या अधिक तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित हैं.

बरामदों की छतों में तरेसठ शलाका पुरुषों के जैन प्रसंग, समवशरण की रचना, गिरनार व शत्रुंजय आदि तीर्थों के यात्राचित्र, तीर्थंकर नेमिनाथ के जीवन प्रसंग तथा स्तंभों के शीर्ष में देवियों की आकृतियां, पुष्पबूटे और नाट्यकला के प्रसंग चित्रित हैं.

स्तंभों पर टिका रंग मंडप

रंगमंडप के गुंबद के मध्य में लटकता हुआ संगमरमर का फानूस जैसा लंबा कमल इस मंदिर की सब से बड़ी विशेषता है. इस की कटाई में बहुत अधिक कमाल की कारीगरी की गई है. इस की अत्यंत बारीक व सुंदर कटाई को देख कर प्रसिद्ध पुरातत्वेता फर्ग्युसन ने लिखा था कि यह ठोस संगमरमर के पिंड की तरह नहीं, स्फटिक के बिंदुओं की भांति चमकता हुआ झूल रहा है.

रंगमंडप कलात्मक स्तंभों पर टिका है. इन स्तंभों पर खड़ी मुद्रा में 16 देवियां उत्कीर्ण हैं. छत के गुबंद में देवियों के नीचे गोलाई में बैठी मुद्रा में तीर्थंकरों की 72 मूर्तियां बनी हैं. इस घेरे के नीचे अन्य घेरे में 360 मूर्तियां जैन मुनियों की उत्कीर्ण हैं. रंगमंडप के दक्षिण में अलंकृत स्तंभों पर 24 तीर्थंकरों की सुंदर मूर्तियां बनी हैं. इस मंदिर की बारीक कटाई भी विस्मित कर देने वाली है.

इस मंदिर में सब से अधिक बारीक कटाई 'देवरानी जेठानी' नामक देवरी में हुई है. कहा जाता है कि एकदूसरे से अधिक से अधिक कलापूर्ण बनवाने के लिए इस के दोनों ओर के पंखों को वस्तुपाल एवं तेजपाल बंधुओं की पत्नियों ने सात बार तुड़वाया एवं बनवाया

था. भाइयों के हस्तक्षेप करने पर ही यह क्रम रुका.

नौलखी गोरवड़े

केवल इसी एक देवरी को बनवाने में 18 लाख रुपए व्यय हुए थे. अर्थात नौ लाख रुपए प्रत्येक पंख पर. इसी कारण इन को नौलखी गोरवड़े भी कहा जाता है. कारीगर छिलाई एवं घिसाई में जितना संगमरमर चूर्ण निकालते थे, उस के बराबर भार का स्वर्ण उन को तोल दिया जाता था.

सन 1311 में मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा विमलवसहि एवं लूणवसहि मंदिरों को बहुत क्षति पहुंचाई गई थी. दस वर्ष पश्चात सन 1321 में चंद्रसिंह के पुत्र ने भारी व्यय कर के लूणवसहि की विशेष मरम्मत कराई और उस में स्थापित नेमिनाथ तीर्थंकर की मूर्ति के स्थान पर, जिसे आक्रमणकारियों ने तोड़फोड़ दिया था, नेमिनाथ की नई श्यामवर्ण प्रतिमा स्थापित कराई. विमलशाह ने विमलवसहि को जितना अधिक कलात्मक बनवाया था, वह सब अवशेष नहीं रहा है. मुसलमान आक्रमणकारियों द्वारा उसे काफी कुछ नष्ट किया गया था.

रंगमंडप का गुंबद एवं उस में लटकता कमल.

वस्तुपाल एवं तेजपाल वीर, उदार हृदयी एवं धार्मिक वृत्ति के व्यक्ति थे. उन्होंने करोड़ों रुपए व्यय कर पचास से अधिक कलात्मक जैन मंदिरों का निर्माण कराया. अनेक पूर्व निर्मित जैन मंदिरों व शत्रुंजय तथा गिरनार आदि तीर्थों का जीर्णोद्धार करवाया तथा अनेक हिंदू मंदिरों, मसजिदों, सरोवरों, कुओं, बावड़ियों, पुलों, विश्रामगृहों आदि का भी निर्माण करवाया. वस्तुपाल तो स्वयं भी विद्वान व्यक्ति थे और उन के समकालीन कवियों ने उन की प्रशंसा 'सरस्वती का धर्मपुत्र' लिख कर की है.

11वीं एवं 13वीं शताब्दी में आबू क्षेत्र के कलाकार संगमरमर की बारीक कटाई तथा छिलाई में विशेष निपुण हो गए थे. आब[...] एवं समीपवर्ती कुंभारिया में कार्यरत शिल्पियों ने चंद्रावती नगरी की कला शैली की परंपराओं को अपनाया था.
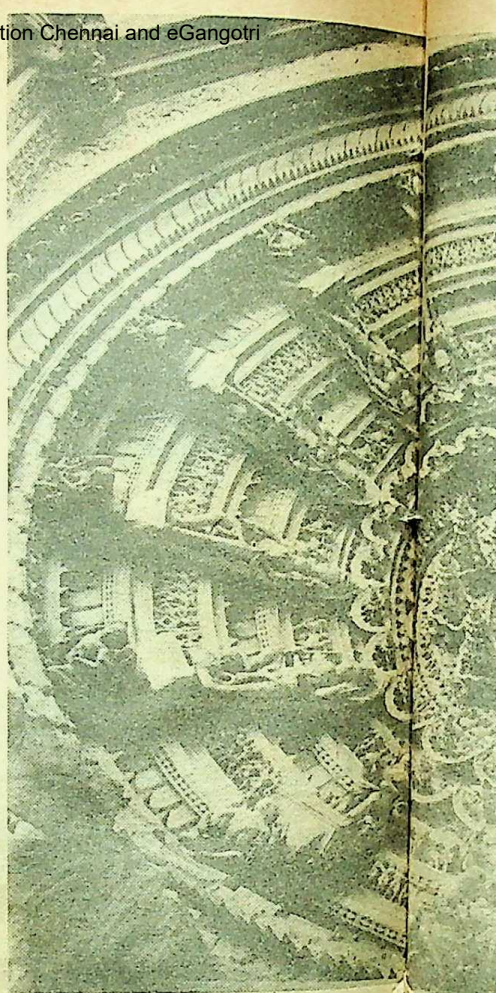
विमलवसहि एवं लूणवसहि जैसी उत्कृष्ट कला समूचे भारत में कहीं देखने को नहीं मिलती. कला की सूक्ष्मता एवं अत्यं[...] स्पष्ट कटाईछिलाई को देख कर प्रतीत होता है कि वहां संगमरमर को मोम बना दिया गया है. वहां आध्यात्मिक वातावरण में दर्श[...] अलौकिक कला सौंदर्य का आनंद प्राप्त कर[...] है. इन में केवल जैन संस्कृति एवं इतिहास [...] नहीं, अपितु प्राचीन भारतीय संस्कृति ए[...]
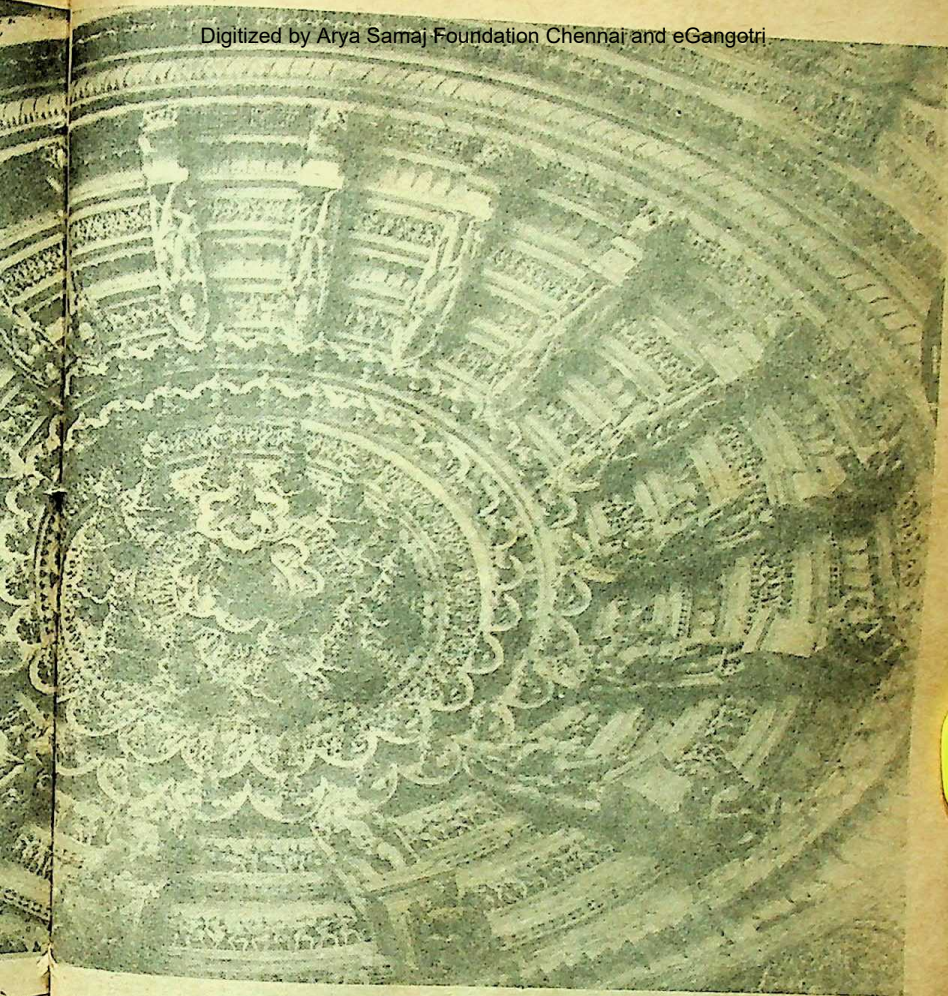
इतिहास भी कलात्मक रूप में संजोया हुआ है.

देलवाड़ा का चौथा मंदिर 'पित्तलहर मंदिर' मूलतः गुजरात के भीमाशाह द्वारा निर्मित है. उस ने इस में तीर्थंकर आदिनाथ की धातु की एक विशाल मूर्ति स्थापित कराई थी जो बाद में कुंभलगढ़ के एक जैन मंदिर में भेज दी गई थी. इस में आदिनाथ की पीतल से निर्मित वर्तमान मूर्ति 102 सेंटीमीटर ऊंची तथा 4,043 किलोग्राम भारी है. परिकर सहित यह 244 सेंटीमीटर ऊंची और 168 सेंटीमीटर चौड़ी है. इस की स्थापना सन 1468 में अहमदाबाद के सुलतान महमूद बेगड़ा के मंत्रियों सुंदर एवं गदा ने करवाई थी. यह मूर्ति ढलाई का एक सुंदर उदाहरण मानी जाती है. मंदिर में अनेक देवरियां हैं, जिन में तीर्थंकरों की मूर्तियां स्थापित हैं.

चौमुखी प्रतिमाएं

देलवाड़ा का पांचवां तीन मंजिला मंदिर 'पार्श्वनाथ मंदिर' खरतरगच्छ के अनुयायियों द्वारा निर्मित होने के कारण 'खरतरवसहि' कहलाता है. इसी की प्रत्येक मंजिल में चौमुखी प्रतिमाएं स्थापित होने के कारण यह 'चौमुखा मंदिर' के नाम से भी प्रसिद्ध है. यह काफी बड़ा और यहां के मंदिरों में सब से ऊंचा किंतु सादा है. तीर्थंकर

पार्श्वनाथ की मूल नायक तथा अन्य प्रतिमाओं के अतिरिक्त इस में अंबिकादेवी, विद्यादेवियों एवं यक्षणियों की नृत्यलीला तथा नारी आकृतियां सुंदर ढंग से उत्कीर्ण हैं.

देलवाड़ा के जैन मंदिरों के पीछे चार हिंदू मंदिर भी निर्मित हैं. पृथ्वी माता के मंदिर के समीप ऋषि वाल्मीकि की मूर्ति है, जिसे रसिया बालम कहा जाता है. देलवाड़ा महल्ले से आबू की ओर बढ़ने पर आबू की कथित अधिष्ठात्री देवी अर्बुदादेवी का सुंदर गुफा मंदिर है. आबू के कुछ अन्य दर्शनीय स्थल हैं—संत सरोवर, ट्रैवर ताल, मौनी बाबा की गुफा, नल गुफा, पांडव गुफा, चंप गुफा, हस्ति गुफा, रामझरोखा, रामकुंड, ब्रह्मकुमारियों का मंदिर आदि.

पर्यटकों के लिए सुविधाएं

आबू से लगभग छः किलोमीटर दूर अचलगढ़ में एक पहाड़ी पर निर्मित अचलगढ़ दुर्ग भी दर्शनीय है. अचलगढ़ का दोमंजिला चौमुखा जैन मंदिर भी बहुत प्रसिद्ध है.

दोनों मंजिलों की मुख्य वेदियों में चौमुखी प्रतिमाएं स्थापित हैं. मुख्य मंडप में तीर्थंकरों के जीवन प्रसंग एवं मुख्य जैन तीर्थों के दृश्य स्वर्ण में अंकित हैं. इस मंदिर की प्रतिमाओं को किसी भी द्वार से देखा जाए, सभी एक समान दिखाई देती हैं. यहां की सब से बड़ी तीर्थंकर प्रतिमा का वजन 4,465 किलोग्राम है.

आबू में इतने अधिक मंदिर हैं कि एक आकर्षक पर्वतीय सैरगाह होने के अतिरिक्त यह हिंदुओं, जैनों और शैवों का प्रसिद्ध तीर्थस्थल भी है.

आबू में पर्यटकों के ठहरने के लिए होटल, डाकबंगले, विश्रामगृह व धर्मशालाएं काफी संख्या में बनी हैं. वर्षा ऋतु के जुलाईसितंबर मासों को छोड़ कर पर्यटक यहां वर्ष के शेष नौ महीनों में निरंतर आते रहते हैं, विशेषकर मार्च से जून एवं अक्तूबर नवंबर के मध्य तो यहां खूब चहलपहल रहती है.

कीमतें कम करने के लिए :
• सरकारी खर्च कम हो
• करों में कमी हो

बढ़ती हुई कीमतों की मूल वजह (और प्रायः एकमात्र) सरकार द्वारा आवश्यकता से ज्यादा खर्च किया जाना (करों व ऋणों से प्राप्त आय की तुलना में ज्यादा व्यय) और उस घाटे को पूरा करने के लिए नए करेंसी नोट छापना तथा माल व सेवाओं पर नएनए कर थोपना है.

हर नया नोट, हर नया कर माल व सेवाओं की कीमत में तुरंत वृद्धि कर देता है, जिस की वजह से सरकारी खर्च में और अधिक वृद्धि आवश्यक हो जाती है. इस वृद्धि की भरपाई के लिए फिर नए नोट छपते हैं, फिर नए कर लगते हैं और इस से कीमतें लगातार बढ़ती जाती हैं.

राजनीतिबाज बढ़ती हुई कीमतों का सारा दोष उत्पादकों व व्यापारियों के जिम्मे मढ़ कर आम लोगों को धोखा देने की कोशिश करता है, यह अच्छी तरह से जानते हुए भी कि करों द्वारा बढ़ी लागत उत्पादक और व्यापारी अपनी जेब से पूरी नहीं कर सकते. उन्हें चीजों के दाम बढ़ाने ही पड़ते हैं. आम लोगों के हाथ में अतिरिक्त धन आने से भी वस्तुओं की मांग ज्यादा बढ़ जाती है जिस से कीमतें भी और बढ़ जाती हैं.

इस के साथ ही राजनीतिबाजों की अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए, अपनी पार्टियों को चलाने के लिए और चुनाव लड़ने के लिए काले धन की मांग भी जुड़ जाती है. यह रकम सिर्फ माल व सेवाओं की कीमत से ही प्राप्त हो सकती है. इस प्रकार कीमतें और ज्यादा से ज्यादा बढ़ती जाती हैं.

कभीकभी यह कहा जाता है कि ज्यादा उत्पादन से कीमतें बढ़ना रोका जा सकता है. लेकिन अगर कहीं कोई ज्यादा उत्पादन होगा तो वह कच्चे माल और सेवाओं पर बढ़े हुए करों की वजह से **ज्यादा कीमत पर ही होगा. इसलिए बढ़े हुए उत्पादन से भी कीमतें कम नहीं होंगी.**

कीमतें कम करने के लिए:
• करों में कमी कीजिए
• सरकारी खर्च कम कीजिए

इस के अलावा और कोई रास्ता नहीं है.

एक पर्यटक यूरोप में

आखिर यह 'रेड थ्रेड रूट' है क्या बला? कोई जासूसी उपन्यास है क्या? या किसी कम्यूनिस्ट योजना का गुप्त

लेख
•
ग. राजनारायण

यूरोप की यात्रा न केवल रोचक है बल्कि कई नए अनुभव देने वाली भी है. इन अनुभवों से आप भी परिचित हो लें.

नाम है? जी नहीं, ऐसा कुछ भी नहीं है. यह तो मात्र हैनोवर शहर की पटरियों पर दूर तक खिंची एक लाल रेखा है जो पैदल घूमने के शौकीन लोगों का मार्गदर्शन करती चलती है. लेकिन यह विलक्षण तरीका यूरोप के किसी अन्य शहर में प्रयोग में नहीं आया है. इस लाल रेखा का अनुसरण करता हुआ पर्यटक अपनी दिलचस्पी के विभिन्न स्थानों की यात्रा करता हुआ वापस ठीक उसी स्थान पर लौट सकता है, जहां से उस ने भ्रमण शुरू किया था. यह यूरोपवासियों की सूझबूझ और उपयोगी विचारों का एक नमूना मात्र है, जो यूरोप में बाहर से आने वाले लोगों को अकसर देखने को मिलता है.

हाल ही में अपने यूरोप भ्रमण के दौरान मुझे इस प्रकार के कई नवीन प्रयोगों की जानकारी मिली, जिन से न केवल समय और श्रम की बचत होती है, बल्कि वे अपने ढंग से बहुत उपयोगी भी हैं.

उदाहरण के लिए रेल यात्रा द्रुत होने के साथसाथ आरामदायक भी है. प्रत्येक यात्री को उस रेल गाड़ी की मुद्रित समय सारिणी दे दी जाती है. प्रत्येक स्टेशन के आने से पूर्व गाड़ी में लगी सूचना प्रणाली से उस स्टेशन के नाम की घोषणा कर दी जाती है. यात्री दरवाजों के पास इस ढंग से आ कर खड़े हो जाते हैं कि रेल के रुकते ही वे तुरतफुरत उतर सकें, क्योंकि स्टेशन पर गाड़ी मुशकिल से दो मिनट ही रुकती है.

प्रत्येक हवाई अड्डे, रेलवे स्टेशन तथा बस अड्डे पर सूचना केंद्र, शौचालय, रेस्टोरेंट, सामानघर आदि की दिशा का पता वहां लगे चित्रों द्वारा लग जाता है. इसलिए भाषा की समस्या कहीं भी आड़े नहीं आती (क्या यह प्रणाली हमारे जैसे बहुभाषाभाषी देश के लिए उपयुक्त सिद्ध नहीं होगी?)

पर्यटक सूचना केंद्र काफी सहायक सिद्ध होते हैं. पर्यटक को वहां से न केवल शहर का विस्तृत नक्शा प्राप्त हो जाता है अपितु सभी बसों और रेलगाड़ियों के मार्गों और समय की भी जानकारी हो जाती है. पर्यटकों को दी जाने वाली पुस्तिकाओं से उन्हें दर्शनीय स्थानों तथा सस्तेमहंगे होटलों एवं रेस्टोरेंटों की जानकारी भी प्राप्त हो जाती है.

सूचना केंद्र यात्री के बजट के अनुकूल उपयुक्त होटल में कमरा भी बुक करा देते हैं. इतनी सारी जानकारी तथा सहायता पाने के बाद कोई भी पर्यटक विश्वासपूर्वक तथा चिंतारहित हो कर शहर में घूमने की योजना बना सकता है.

हम में से बहुतों ने स्लाट मशीन के बारे में सुना है, जिस में सिक्का डालने पर काफी से ले कर सिगरेट तक मिल जाती है. लेकिन बहुत से लोग शायद यह न जानते हों कि केवल एक ही मशीन से आप अपनी पसंद का कोई सा भी पेय पदार्थ प्राप्त कर सकते हैं. चीनी या बिना चीनी वाली काफी, दूध या बिना दूध वाली काफी, फलों के रस, चाय आदि सभी कुछ यह मशीन देने में सक्षम है. इन मशीनों की एक दिलचस्प विशेषता यह भी है कि यदि इन के पास आप की पसंद की चीज समाप्त हो गई है तो आप का सिक्का उछल कर बाहर आ जाएगा.

इन में से कुछ तो सहीसही रेजगारी तक वापस कर सकती हैं. यही विशेषता सार्वजनिक टेलीफोनों की भी है. यद्यपि मुझे सार्वजनिक टेलीफोन को ठीक ढंग से प्रयुक्त करना नहीं आता था तथापि अपनी पूरी

यूरोप यात्रा के दौरान मैं ने एक सिक्का भी नहीं गंवाया.

मेरे जैसे विशुद्ध शाकाहारी के लिए भी वहां भोजन प्राप्त करना कोई बड़ी समस्या नहीं थी. दूध, फल, फलों का रस, दही, पनीर, रोटी, मक्खन सभी जगह उपलब्ध हैं और इस से कोई भी व्यक्ति सस्ते में पोषक भोजन प्राप्त कर सकता है. इन चीजों को रेस्टोरेंटों की अपेक्षा दुकान से खरीदना अधिक सस्ता पड़ता है. प्रत्येक चीज बड़े करीने से इस प्रकार कागज में लिपटी होती है कि वह न तो छलकती है और न ही बिखरती है. उन्हें आप जैसे चाहें झोले में भर कर किसी बाग में ले जाइए और छलकने या बिखरने का भय छोड़ कर आराम से खाते हुए पिकनिक का लुत्फ उठाइए.

जहां तक शुद्ध आविष्कारक वृत्ति का संबंध है, हालैंड वासियों का मुकाबला कोई नहीं कर सकता.

तकनीकी क्षेत्रों में अग्रणी देश

स्वयं हालैंड की रचना समुद्र को पीछे धकेल कर और सुखा कर तैयार की गई जमीन पर हुई है. वस्तुतः सारा उत्तरी हालैंड तो समुद्री सतह से काफी नीचे बसा है. बालू के टीले और बांध आदि इस की रक्षा करते हैं. सारे देश में पवनचक्कियों का तो जैसे जाल बिछा है. अन्य यूरोपीय देशों की ही तरह हालैंड भी द्वितीय विश्वयुद्ध में लगभग तबाह हो गया था, लेकिन आज इस की गणना तकनीकी क्षेत्र में अग्रणी देशों में होती है. राटरडम को आज विश्व का सब से बड़ा बंदरगाह होने का गौरव प्राप्त है.

अप्रैल में यहां ट्यूलिप फूलों की बहार आती है और सारे देश में मानो रंगों का मेला सा लग जाता है. लाल, पीले, गुलाबी, सफेद, नारंगी, बैंगनी न जाने कितने रंग रास्ते से गुजरते हुए आप की आंखों को ठंडक पहुंचाते हैं. ट्यूलिप के बाग इतनी दक्षता से लगाए गए हैं कि अलगअलग रंगों के फल पृथक्पृथक दिखाई देते हैं.

हेग के समीप एक बहुत सुंदर स्थल है जिसे किसी भी पर्यटक को जरूर देखना चाहिए. यह एक लघु नगरी है, जिसे 1:25 के अनुपात से बनाया गया है. इस नगरी का नाम है– मदुरोडैम. हवाई अड्डे, रेलगाड़ियां, बंदरगाह, गिरजाघर, महल, मकान, दफ्तर यहां तक कि कारें और यहां के लोग भी इसी माप के हैं. अधिकांश गाड़ियां तथा मशीनें चालू हालत के माडल हैं. ये न केवल बच्चों के लिए अपितु बड़ों के लिए भी काफी शिक्षाप्रद हैं.

पर्यटकों को सुविधाएं

यूरोप के अधिकांश शहरों में, विशेषकर दर्शनीय स्थलों के समीप आप पाएंगे कि फ़ोटोग्राफर हर आने वाले का फोटो खींचते हैं. जब तक पर्यटक घूम कर लौटता है, उस की तैयार फोटो एक पट्ट पर लगा होता है. यात्री को वह फोटो बहुत थोड़े पैसों में मिल जाता है.

पश्चिम के लोगों में समय का बहुत खयाल रहता है, इसलिए वे अपने पूरे दिन को मिनटों के हिसाब से योजना तैयार करते हैं. रेलगाड़ियां शायद ही कभी देर से आतीजाती हों और बस तथा ट्रामें भी समय की पाबंदी से चलती हैं. इंग्लैंड को छोड़ कर यूरोप में और कहीं रेलगाड़ी अथवा बस में टिकट की जांच नहीं होती. इस का एक कारण तो वहां के यात्रियों की ईमानदारी है और दूसरा बिना टिकट यात्रियों पर कड़े जुरमाने की व्यवस्था होना है.

रेलवे स्टेशन पर यात्री को छोड़ने वाले नहीं आते, इसलिए वहां भीड़ प्रायः नहीं होती. सभी हवाई अड्डों, रेलवे स्टेशनों आदि पर विद्युत्चालित सीढ़ियां हैं और सामान को ले जाने की भी इसी प्रकार की व्यवस्था है. इस से समय की काफी बचत होती है.

सड़क को पार करने के लिए ऐसी यातायात बत्तियों की भी व्यवस्था है, जिन्हें सड़क पार करने वाला खुद खोल या बंद कर सकता है. जेब्रा लाइन पर आते ही स्वयं यातायात बहुत हलकी रफ्तार से चलता है, जिस से सड़क पार करने वालों को किसी प्रकार की कठिनाई न हो. यह हमारे देश की

तुलना में ठीक विपरीत बात है, जहां लाल बत्ती के हो जाने पर भी यातायात उसी तेज रफ्तार से जारी रहता है जब तक कि पुलिस वाला ही उसे न रोके.

विकास के लिए परिवर्तन जरूरी.

वहां के लोग दिन प्रतिदिन की छोटी से छोटी समस्या पर पूरा ध्यान देते हैं और उस के छोटेछोटे समाधान खोज कर दैनिक जीवन को आसान और द्रुत बना लेते हैं. अपने इन्हीं गुणों के कारण वे प्रत्येक क्षेत्र में आज हम से काफी आगे हैं. यदि हमें उन की प्रगति की तेज रफ्तार के साथ कदमकदम मिला कर चलना है तो हमें अपने सोचने का ढंग भी उन के जैसा ही बनाना होगा.

इस यात्रा के दौरान मेरे साथ एक बड़ी दिलचस्प घटना घटी. इटली में मिलान नामक शहर में सड़क पर एक खोखे में एक लड़का पीत्सा बेच रहा था. वह शक्लसूरत से भारतीय लगता था. मैं ने उस से अंगरेजी में बिना मांस का पीत्सा मांगा.

मैं ने अंगरेजी में जो कहा, उसे वह नहीं समझ पाया.

फिर मैं ने टूटीफूटी इटालियन भाषा में उसे समझाने की कोशिश की. वह फिर भी नहीं समझा. फिर उस ने मुझ से पूछा, "क्या आप भारतीय हैं?"

मैं ने उत्तर दिया, "हां." इस पर उस ने तपाक से हिंदी में कहा, "मैं भी भारतीय हूं." हम दोनों जोर से हंस पड़े और मुझे बिना मांस का पीत्सा खाने को मिल गया.

विदेशों में भारतीय

यह लड़का विदेश में काम कर रहे भारतीयों का एक ज्वलंत उदाहरण है. न जाने कितने भारतीय यूरोप में इंजीनियरिंग, डाक्टरी, फैशन डिजाइनिंग, कला आदि के क्षेत्रों में सफलतापूर्वक अपना काम कर रहे हैं.

यदि हमारे देश के सभी नौजवान वहां के लोगों की तरह समय और शक्ति का सही उपयोग करें तो हमारा भविष्य निश्चय ही उज्ज्वल होगा.

लेखकों के लिए सूचना

- सभी रचनाएं कागज के एक ओर हाशिया छोड़ कर साफ-साफ लिखी या टाइप की हुई होनी चाहिए.
- प्रत्येक रचना के साथ वापसी के लिए केवल टिकट नहीं, टिकट लगा, पता लिखा लिफाफा आना चाहिए, अन्यथा अस्वीकृत रचनाएं वापस नहीं की जाएंगी.
- प्रत्येक रचना पर पारिश्रमिक दिया जाता है, जो रचना की स्वीकृति पर भेज दिया जाता है.
- प्रत्येक रचना के पहले और अंतिम पृष्ठ पर लेखक के हस्ताक्षर होने चाहिए.
- स्वीकृत रचनाओं के प्रकाशन में अकसर देर लगती है, इसलिए इन के विषय में कोई पत्रव्यवहार नहीं किया जाता.
- मुक्ता और सरिता में पूर्णविराम की जगह बिंदु का प्रयोग होता है. कृपया इसी का प्रयोग करें. इसी प्रकार अंक बजाए नागरी के अंतरराष्ट्रीय होने चाहिए. भारतीय संविधान में राष्ट्रभाषा हिंदी के लिए यही अंक निर्धारित किए गए हैं और सारे संसार में प्रायः सभी भाषाओं में, यही अंक प्रयुक्त होते हैं.

रचना इस पते पर भेजें

संपादकीय विभाग

मुक्ता, दिल्ली प्रेस,

नई दिल्ली-110055

पिछले छः महीनों की फिल्में

निर्देशिका

उ. : उद्देश्यपूर्ण/अवश्य देखिए
स. : समय काटिए/चलताऊ
म. : मनोरंजक/देख लें
अ. : अपव्यय/समय की बरबादी
नि. :निर्देशक
मु. पा. : मुख्य पात्र

मेहरबानी : धर्मेंद्र के परिवार द्वारा डूबे गए सितारों को ले कर बनी इस फिल्म में न तो कोई रोचकता है और न ही नवीनता. हर दृष्टि से फिल्म इतनी लचर है कि सिर्फ बोरियत पैदा करती है. **नि.**: अजीत सिंह, **मु.पा.**: महेंद्र संधु, सारिका, नरेंद्रनाथ. **अ.**

बेगुनाह कैदी : अपराधी के हृदय परिवर्तन की पुरानी जानीपहचानी विषय वस्तु के आधार पर बनी इस फिल्म में वही पुराने मसाले हैं. जिन्हें दर्शक कईकई बार ठुकरा चुके हैं. **नि.**: वी.के. सोबती, **मु.पा.**: राकेश रोशन, आरती शक्ति कपूर. **अ.**

पांच कैदी : अपराधी लोगों को ले कर उन से कानून की रक्षा करवाने की पुरानी कहानी इस फिल्म में भी है. कुछ घटनाएं अच्छा असर डालती हैं. वैसे फिल्म सामान्य ही है. **नि.**: शिबू मित्रा, **मु.पा.**: गिरीश करनाड, अमजद, जरीना, **स.**

घमंडी : दौलत के नशे में अमीर पत्नी का पति के घर से चला जाना और बाद में आंखें खुल जाने पर वापस आ जाना–इस फिल्म का विषय है. लेकिन बेहद घटिया ढंग से इसे फिल्माया गया है. **नि.**: रमेश बेदी, **मु.पा.**: मिथुन, सारिका, रंजीत. **अ.**

बाजार : मुसलिम समाज में प्रचलित कुरीतियों पर चोट करने वाली फिल्म. इस में दिखाया है कि समाज में एक स्त्री का बाजार में आम बिकाऊ माल से अधिक महत्त्व नहीं है. **नि.** : सागर सरहदी, **मु.पा.** : स्मिता पाटिल, सुप्रिया पाठक, सुलभा देशपांडे, नसीरुद्दीन शाह, फारुख शेख, **म.**

इनसान : किसी व्यक्ति को महान सिद्ध करने का नरेंद्र बेदी का बेतुका फार्मूला. रवि विधवा सोना से शादी कर लेता है. जब उसे पता चलता है कि सोना का पति शंकर मरा नहीं था, बल्कि जिंदा है तो वह उस के लिए बलिदान हो जाता है. **नि.** : नरेंद्र बेदी, **मु.पा.** : विनोद खन्ना, जितेंद्र, रीना, अमजद, करण दीवान. **अ.**

मैं इंतकाम लूंगा : शीर्षक के अनुरूप प्रतिशोध की कहानी. मुक्केबाज कुमार गोवर्धनदास से अपने पिता की हत्या का बदला लेता है. **नि.** : रामा राव, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रीना राय, दारासिंह, श्रीराम लागू, निरूपा, अमरीश पुरी, शारदा. **अ.**

हमकदम : एक दकियानूसी परिवार की कहानी, जिस में नारी द्वारा नौकरी करना पसंद नहीं किया जाता. घिसापिटा पुराना विषय ले कर बनाई गई फिल्म. **नि.** : अनिल गांगुली, **मु.पा.** : राखी, [illegible] विश्वजीत, हंगल, मदनपुरी. **स.**

ईंट का जवाब पत्थर : प्रसिद्ध लेखक अलैक्जैंडर ड्यूमा के उपन्यास का भारतीयकरण कर के बनाई गई एक घटिया फिल्म. कुछ लोगों के षड्यंत्र का शिकार हो कर माधोसिंह जेल जाता है. जेल से भाग कर वह एकएक कर के सब से बदला लेता है. **नि.** : पाछी, **मु.पा.** नीता मेहता, सुरेंद्रपाल, प्रेमनाथ, अमजद, ओम प्रकाश, रजा मुराद. **अ.**

गजब : आत्मा जैसी अविश्वसनीय बातों को ले कर गढ़ी गई कहानी, जिस में मानसिक रूप से विकलांग एक व्यक्ति की आत्मा अपने पिता की जायदाद हथियाने वालों से अपने जुड़वा भाई के जरिए बदला लेती है. अविश्वसनीय घटनाओं से भरपूर एक बेतुकी फिल्म. **नि.**: सी.पी. दीक्षित, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, रेखा, मदनपुरी, रंजीत. **अ.**

सितारा : गांव की गरीब लड़की की नामी हीरोइन बनने की कहानी. चोटी पर पहुंच जाने के बाद वह सच्चा प्यार नहीं पाती और वापस अपनी दुनिया में लौट जाती है. कुछ दिलचस्प प्रसंग होने के बाद भी यह एक सतही नि. : मेराज, **मु.पा.** : मिथुन, जरीना, कन्हैयालाल **स.**

आधारशिला : क्षेत्र चाहे कोई भी क्यों न हो, हर युवा को सफलता पाने के लिए संघर्ष की कई बाधाएं पार करनी होती हैं. 'आधारशिला' में इसी विषय को उठाया गया है. कमजोर व प्रतीकात्मक प्रस्तुतीकरण की वजह से फिल्म कोई असर नहीं छोड़ पाती. **नि.** : अशोक आहूजा, **मु.पा.** : नसीरुद्दीन शाह, अनिता. **अ.**

शौकीन : एक कामेडी फिल्म जिस में तीन बूढ़े मौज करने के लिए हमेशा लड़कियों की तलाश में रहते हैं. लेकिन बाद में उन्हें अहसास होता है कि उन की उम्र काफी आगे निकल चुकी है. **नि.** : बासु चटर्जी, **मु.पा.** : मिथुन, रति, उत्पल दत्त, अवतारकृष्ण हंगल, अशोककुमार. **म.**

बदले की आग : भाईबहनों का अपने परिवार से बिछुड़ना, बदला लेना और डाकुओं वाले प्रसंगों से भरपूर इस फिल्म में कदमकदम पर बेतुकी हिंसा है, कहानी कहीं भी नहीं है. **नि.** : राजकुमार कोहली, **मु.पा.** : धर्मेंद्र, सुनील दत्त, जितेंद्र, रीना, स्मिता. **अ.**

अंगूर : विलियम शेक्सपीयर के नाटक 'कामेडी आफ एरर्ज' पर आधारित एक बेहतरीन हास्य फिल्म जिस में दो जुड़वा जोड़ों की [illegible] गुदगुदा जाती हैं

काफी समय बाद बनी एक अच्छी फिल्म, जिसे पूरे परिवार के साथ देखा जा सकता है. **नि.:** गुलजार, **मु.पा.:** संजीव, मौसमी, दीप्ति, देवेन वर्मा. **म.**

दासी : अंधविश्वासों का शिकार हो नायिका को अंधे नायक से विवाह करना पड़ जाता है. फिल्म की घटनाएं बेतुके प्रेम त्रिकोण की वजह से असहज हो जाती हैं, गीतसंगीत की दृष्टि से भी कमजोर फिल्म. **नि.:** राज खोसला, **मु.पा.:** संजीव, मौसमी, रेखा, विक्रम. **अ.**

हीरों का चोर : आम स्टंट फिल्मों के जानेपहचाने ढर्रे पर बनी फिल्म जिस में फार्मूले तो तमाम हैं लेकिन कहानी कोई नहीं. अभिनय व तकनीकी हिसाब से फिल्म सामान्य है. **नि.:** स.क. कपूर, **मु.पा.:** मिथुन, बिंदिया, अशोक. **अ.**

दिल का साथी दिल : कमला हासन की हिंदी में डब की गई चौथी फिल्म. 'बाबी' और 'जूली' की कहानियों के जोड़ से बनी कहानी. दोषपूर्ण डबिंग के कारण बेकार. **नि.:** शंकरन नायर, **मु.पा.:** जरीना वहाव, कमल हासन. **अ.**

तीसरी आंख : तीन भाइयों की कहानी. एक भाई बचपन में बिछुड़ जाता है और अंत में लाकेट की निशानी से मिलता है. आम फार्मूला फिल्म. **नि.:** सुबोध मुखर्जी, **मु.पा.:** धर्मेंद्र, शत्रुघ्न सिन्हा, जीनत, नीतूसिंह, सारिका, राकेश रोशन, अमजद. **स.**

दो उस्ताद : 'दो चोर' और 'दो ठग' आदि की शैली पर बनी आम फार्मूला फिल्म. बेजान और उबाऊ फिल्म. **नि.:** एस.डी. नारंग, **मु.पा.:** शत्रुघ्न सिन्हा, रीना, डैनी, विक्रम, जगदीप, नाजनीन. **अ.**

अशांती : चोटी के कलाकारों को ले कर बनाई गई अपराध फिल्म, फिल्म में तीन नायक और तीन ही नायिकाएं हैं. सभी मिल कर राजा भीष्म बहादुरसिंह और उस के गिरोह को समाप्त करते हैं. घटनाओं में गति. **नि.:** उमेश मेहरा, **मु.पा.:** राजेश खन्ना, जीनत, शबाना, परवीन बाबी, मिथुन, कंवलजीत, अमरीश पुरी. **स.**

नमकहलाल : एक सीधेसादे ग्रामीण की कहानी जो शहर में जा कर एक होटल मालिक की उस के मैनेजर के षड्यंत्रों से रक्षा करता है. अपराध फिल्म होते हुए भी हास्य का रोचक वातावरण छाया रहता है. **नि.:** प्रकाश मेहरा, **मु.पा.:** अमिताभ, शशि कपूर, वहीदा, परवीन बाबी, स्मिता पाटिल, ओम प्रकाश. **म.**

सवाल : अपराध जगत का बादशाह सेठ धनपतराय तस्करी और अवैध धंधों का बहुत बड़ा साम्राज्य स्थापित करता है, पर मकड़ी के जाले की तरह खुद ही उस में फंस कर रह जाता है. **नि.:** रमेश तलवाड़, **मु.पा.:** शशि कपूर, संजीवकुमार, वहीदा, रणधीर कपूर, पूनम ढिल्लों. **स.**

दो दिल दीवाने : मूल रूप से तमिल में बनी फिल्म का हिंदी संस्करण. एक सीधीसादी प्रेम कहानी में विदेश भ्रमण का गैर जरूरी प्रसंग जोड़ दिया गया है. 'एक दूजे के लिए' की कमल व रति की जोड़ी कहीं भी प्रभावित नहीं करती. डबिंग में काफी खराबियां हैं. **नि.:** के. बालाचंदर, **मु.पा.:** कमल हासन, रति. **अ.**

देश प्रेमी : देशभक्ति पर बनी बेहद सामान्य फिल्म जिस में दोहरी भूमिका में भी अमिताभ सामान्य लगता है. कलाकारों की भीड़ फिल्म में जुटा दी गई है, जो बिना किसी उद्देश्य के दर्शकों को सिर्फ मनोरंजन देती है. **नि.:** मनमोहन देसाई, **मु.पा.:** अमिताभ, हेमा, उत्तम, शम्मी. **म.**

तुम्हारे बिना : तलाक के बाद पतिपत्नी के बीच पैदा हुए तनाव और उस से बच्चे पर पड़ने वाले प्रतिकूल असर की सहज फिल्म. **नि.:** सत्येन बोस, **मु.पा.:** सुरेश ओबराय, स्वरूप संपत. **उ.**

बेमिसाल : दो मित्र डाक्टरों की कहानी. डाक्टर प्रशांत चतुर्वेदी धन के लालच में गर्भपात और अवैध काम करने लगता है. डाक्टर सुधीर उसे अपने त्याग द्वारा सीधे रास्ते पर लाता है. **नि.:** ऋषिकेश मुखर्जी, **मु.पा.:** अमिताभ, राखी, विनोद मेहरा, अरुणा ईरानी, शीतल. **म.**

जीवनधारा : 'तपस्या' फिल्म की भांति संगीता नौकरी कर के अपने भाईबहनों का पालनपोषण करती है. परिवार के लिए एक युवती के त्याग की मार्मिक कहानी. **नि.:** त. रामाराव, **मु.पा.:** रेखा, अमोल पालेकर, सिपल कापड़िया, मधु कपूर, राकेश रोशन, कंवलजीत. **उ.**

प्यारा दोस्त : खजाने की खोज की ऊलजलूल फिल्म. असली कहानी को पीछे हटा कर अमजद खान अपनी भूमिका को तूल देता चला जाता है. **नि.:** इम्तियाज खान, **मु.पा.:** नसीरुद्दीन, रंजीता, अमजद, इम्तियाज खान. **अ.**

राजपूत : मनु और जानकी प्रेम करते हैं, पर जानकी की शादी धीरेंद्र से हो जाती है. अंत में धीरेंद्र को बचाते हुए मनु का बलिदान हो जाता है. मनु के भाई भानु की प्रेमिका कमली को राजा साहब के आदमी उठा ले जाते हैं. अंत में भानु का विवाह राजा की लड़की कामिनी से होता है. पात्रों और घटनाओं से भरपूर रोचक फिल्म, **नि.:** विजय आनंद, **मु.पा.:** हेमा, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, विनोद खन्ना, रंजीता, टीना, रणजीत. **म.**

श्रीमान श्रीमती : एक ऐसे युगल की कहानी है जो फिल्म 'बावर्ची' की तरह दुखी परिवारों में जा कर उन की समस्याएं हल करते हैं. अति नाटकीय घटनाओं से युक्त मद्रासी फार्मूले की पारिवारिक फिल्म. **नि.:** विजया रेड्डी, **मु.पा.:** संजीव, राखी, राकेश रोशन, दीप्ति नवल, अमोल पालेकर, सारिका, श्रीराम लागू. **स.**

शमा : शमा एक स्त्री के जीवन के उतारचढ़ावों की कहानी है, जिस की शादी असलम से तय होती है, पर परिस्थितिवश असलम के बड़े भाई विधुर यूसफ से हो जाती है. इस के बाद देवर के जुल्मों और मां बेटे के प्यार की कहानी बन जाती है. **नि.:** नईम बसीत, **मु. पा.:** गिरीश कारनाड, शबाना, कुलभूषण खरबंदा, अरुणा ईरानी. **स.**

विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता

इटली कैसे जीता?

ब्राजिल, स्पेन, आर्जेनटीना व पश्चिमी जरमनी के दावे धरे के धरे रह गए. स्पेन के फुटबाल क्लब के लिए 77 लाख डालर में छः साल के लिए अनुबंधित डिएगो माराडोना (आर्जेनटीना), जीको (ब्राजिल), कार्ल हेंज रुमिनेगे (प. जरमनी), बोनिएक (पोलैंड) व लासलो किस (हंगरी) जैसे विश्वविख्यात खिलाड़ी ठगे से देखते रह गए और उस एक खिलाड़ी की बदौलत इटली ने 12वीं विश्व कप प्रतियोगिता एस्पाना–82 में विश्व खिताब और 18 कैरेट सोने का बना, 36 सेंटीमीटर ऊंचा व करीब दो करोड़ रुपए के लिए बीमा किया हुआ कप जीता, जिस पर रिश्वत ले कर अपनी टीम को हरवाने की साजिश करने के अपराध में दो साल का प्रतिबंध लगा दिया गया था.

यह खिलाड़ी है–पाओलो रोसी. इटली की टीम के मैनेजर एंजो बिएरजोट ने जब रोसी के प्रतिबंध की अवधि खत्म हो जाने के बाद उसे टीम में शामिल किया तो उस के इस

लेख • श्रीशचंद्र मिश्र

निर्णय की तीखी आलोचनाएं हुईं. रोसी 20 नंबर की जरसी पहन कर खेलता है. इस जरसी पर व्यंग्य की कई फुलझड़ियां छोड़ी गईं.

लेकिन दस दिन के भीतर ही पाओलो रोसी समूचे इटली का चहेता खिलाड़ी बन गया और 20 नंबर की जरसी विशिष्ट गौरव का प्रतीक.

एस्पाना-82 ने विश्व प्रतियोगिताओं से जुड़ी पिछली कई मान्यताएं झुठला दीं. पिछली 11 प्रतियोगिताओं में मेजबान टीम के फाइनल में पहुंचने का सिलसिला रहा है. लेकिन इस बार स्पेन की टीम सेमीफाइनल में भी नहीं पहुंच सकी. एक बार की विश्व विजेता टीम अगली प्रतियोगिता में अंतिम

विश्व कप प्रतियोगिता के मुकाबले अत्यंत रोमांचक ही नहीं रहे, बल्कि इस के परिणाम भी आश्चर्यजनक रहे. आखिर इस कप के दावेदार देशों को निराश क्यों होना पड़ा.

ब्राजिल के जीको (केंद्र में) फुटबाल पर आक्रमण करते हुए.

पश्चिमी जरमनी की टीम : अलजीरिया ने हराया पर इसे दूसरे दौर में लाने के लिए आस्ट्रिया स्वयं इस से हार गया.

चार तक हमेशा पहुंची है. लेकिन इस बार 1978 के विजेता आर्जेनटीना को यह गौरव नहीं मिल सका.

यूरोपीय और लेटिन अमरीकी पद्धति में कौन सी सर्वश्रेष्ठ है? इस होड़ में काफी समय के बाद यूरोप की श्रेष्ठता निर्विवाद साबित हुई. अप्रत्याशित परिणामों का नाता तो इस प्रतियोगिता से जुड़ा ही.

पहले ही मैच में माराडोना, मारिओ कैंपीज व डेनियन पैसारेला जैसे धाकड़ खिलाड़ियों वाली पिछली विश्व विजेता आर्जेनटीना की टीम को एरविन वानडेनबर्ग द्वारा किए गए एकमात्र गोल से बेल्जियम ने हरा कर जो तहलका मचाया, उस ने पहले दौर के 36 मैचों में तो थोड़ीबहुत उथलपुथल मचाई ही, दूसरे दौर के 12 मैचों में तो धमाका ही मचा दिया.

सभी विशेषज्ञों के पूर्वानुमान इस बुरी तरह ध्वस्त हुए कि शायद अब विश्व प्रतियोगिता के परिणामों के संबंध में भी भविष्यवाणी करने की कोई भी विशेषज्ञ हिम्मत न दिखाए.

मैड्रिड, बारसीलोना व सेविल शहरों में दोदो स्टेडियम इस्तेमाल किए गए. मैड्रिड के उत्तर में वैलेडोलिड में 30 हजार दर्शकों की क्षमता वाले नए स्टेडियम को 12 महीने में बनाया गया.

स्पेन की सैनिक सरकार की कोशिश यह रही कि विश्व प्रतियोगिता के आयोजन के लिए लोगों द्वारा दिए जाने वाले टैक्स से कोई रकम न ली जाए. तीन सरकारी लाटरियों की मदद से आवश्यक रकम जुटाई गई. 14 शहरों के 17 स्टेडियमों में से 14 का नवीनीकरण ही किया गया.

स्पेन में 95 प्रतिशत लोगों को विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता के सभी मैच सीधे दिखाने की व्यवस्था की गई. इस के लिए नया टेलीविजन केंद्र व 220 मीटर ऊंचा टावर बनाया गया. प्रेस सुविधाओं के अंतर्गत 3,840 टेलीविजन लाइनों व 200 कंप्यूटर टर्मिनलों की व्यवस्था की गई.

टीशर्ट, चाबी के छल्लों समेत रोजमर्रा

के काम में आने वाली वस्तुओं के विज्ञापन में एस्पाना-82 का इस्तेमाल करने के एवज में

स्पेन की 100 से ज्यादा फर्मों ने 80 करोड़ रुपए दिए. विश्व की 60 अन्य कंपनियों ने भी इस तरह के अधिकार लिए.

305 क्वालीफाइंग मैच खेल कर जो 22 टीमें चुनी गई थीं, उन्हें मेजबान स्पेन व पिछले विजेता आर्जेनटीना (इन दोनों देशों की टीमों को प्रतियोगिता में सीधे प्रवेश दिया गया था) के साथ छः वर्गों में बांटा गया.

पहला वर्ग—जिस में इटली, पोलैंड, पेरू व केमरून की टीमें थीं—काफी नीरस रहा. पोलिश टीम के खेल में उस की घरेलू राजनीतिक स्थिति की अस्तव्यस्तता से काफी फर्क पड़ा. इस वर्ग में कुल छः मैच खेले गए, जिन में से सिर्फ एक का फैसला हुआ. इटली की टीम अपने तीनों मैच अनिर्णीत करवा के दूसरे दौर में पहुंची. केमरून जैसी नई व कमजोर टीम ने भी दो बार की विश्व विजेता इटालियन टीम को 2-2 से बराबरी पर खेलने के लिए मजबूर कर दिया. केमरून ने कोई मैच नहीं हारा. फिर भी दूसरे दौर में इस वर्ग से प्रवेश करने वाली दूसरी टीम पोलैंड की थी.

क्वालीफाइंग मैचों में दो बार की विश्व विजेता उरूग्वे की टीम, पिछली दो प्रतियोगिताओं में उपविजेता रही. डच टीम, 1958 की उपविजेता स्वीडिश टीम और 1966 में तहलका मचा देने वाली पुर्तगाली टीम हार गई. अलजीरिया ने आश्चर्यजनक रूप से विश्व प्रतियोगिता में खेलने की योग्यता तो प्राप्त कर ली, लेकिन दूसरे वर्ग में पश्चिमी जरमनी, चिली व आस्ट्रिया के मुकाबले उस की चुनौती को काफी हलके ढंग से लिया गया.

अलजीरिया ने पहले पश्चिमी जरमनी को 2-1 से हराया और बाद में चिली को भी 3-2 से पीट दिया, लेकिन आस्ट्रिया से वह हार गया. बाद में गिरजोन में हुए निर्णायक मुकाबले में आस्ट्रिया ने जानबूझ कर पश्चिमी जरमनी को एक गोल से जिताया ताकि उस के साथ जरमन टीम भी दूसरे दौर में पहुंच सके.

तीसरे वर्ग से आर्जेनटीना व बेल्जियम की टीमें दूसरे दौर में पहुंचीं. बेल्जियम ने तो पहले ही मैच में आर्जेनटीना को हरा दिया था. हंगरी के लासलो किस ने प्रतियोगिता की पहली तिकड़ी जमाते हुए अल साल्वाडोर पर प्रतियोगिता की सब से बड़ी जीत 10-1 से पाने में मदद दी.

चौथे वर्ग में ढलती उम्र के खिलाड़ियों वाली चेक टीम व इंगलैंड, फ्रांस और कुवैत की टीमें खेलीं. इंगलैड ने अपने सभी तीनों मैच जीते. तीनों मैच जीतने वाली वह प्रतियोगिता की दूसरी व आखिरी टीम रही. फ्रांस के विरुद्ध 27 सैकंड में ही गोल करके इंगलैंड के ब्रायन राबिनसन ने रिकार्ड कायम किया. इंगलैंड के ही पीटर शिलटन ने 426 मिनट तक अपनी टीम पर गोल नहीं होने दिया.

पांचवे वर्ग में मेजबान स्पेन के अलावा होंडुरास, यूगोस्लाविया व उत्तरी आयरलैंड की टीमें थीं. होंडुरास ने दो मैच बराबर किए, लेकिन यूगोस्लाविया से जरागोजा में जब वह अपना तीसरा मैच हार गया तो उस के

बर्न (म्यूनिक) के, जरमनी की राष्ट्रीय टीम के कप्तान कार्ल हेंज रुमोनिग : यूरोप में फुटबाल के जादूगर.

खिलाड़ी मैदान में ही फूटफूट कर रोने लगे. स्पेन ने इस वर्ग से दूसरे दौर में प्रवेश किया. उत्तरी आयरलैंड ने भी वैलेंसिया में स्पेन को एक गोल से हरा कर दूसरा दौर हासिल किया.

छठे वर्ग से ब्राजिल ने रूस को 2-1 से, स्काटलैंड को 4-1 से व न्यूजीलैंड को 5-0 से हरा कर पहले दौर की सर्वश्रेष्ठ टीम होने का सम्मान हासिल किया.

पहले दौर के कुल 36 मैचों में 100 गोल हुए. वरीयता सूची की 12 टीमों में से 11 दूसरे दौर में पहुंचीं (उत्तरी आयरलैंड की टीम का दूसरे दौर में प्रवेश अप्रत्याशित था) और

कुछ झलकियां विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता की

इंगलैंड और आर्जेनटीना के बीच फाकलैंड मसले को ले कर हुए युद्ध का खमियाजा इंगलैंड के फुटबाल प्रेमियों को भुगतना पड़ा. इंगलैंड के कमर्शियल नेटवर्क इंडिपेंडेंट टेलीविजन को विश्व कप के मैच प्रसारित करने का अधिकार मिला था, लेकिन पहला मैच क्योंकि आर्जेनटीना व बेल्जियम के बीच था, इसलिए उस दौरान मैच न दिखा कर गोल्फ का स्थानीय मैच दिखाया गया.

'दि संडे आबजर्वर' ने इस पर टिप्पणी की, ''क्या वे यह मानते हैं कि दक्षिण अमरीका के शानदार खेल को देख कर पूरा देश उदास हो जाएगा.''

● स्पेन के 22 खिलाड़ियों ने मांग की कि विश्व प्रतियोगिता में खेलने के एवज में प्रत्येक खिलाड़ी को 10 हजार डालर दिए जाएं. फाइनल में पहुंचने की हालत में प्रत्येक खिलाड़ी 80 हजार डालर की रकम चाहता था.

समाचारपत्र 'ला पायस' ने कहा, ''रकम ज्यादा है, लेकिन सौदेबाजी कर लेने में क्या बुराई है?''

● विश्व प्रतियोगिता के सीधे टेलीविजन प्रसारण से पश्चिम जरमनी के उद्योगों को पांच करोड़ 90 लाख काम के घंटों का नुकसान हुआ. इंपीरिकल सायकोलाजी के कोलोन इंस्टिट्यूट द्वारा कुल 10,275 मिनट के प्रसारण से उद्योगों को चार खरब मार्क व मजदूरों को एक अरब मार्क की मजदूरी से हाथ धोना पड़ा

● कुवैत की टीम का वैलेडोलिड में अभ्यास में मन ही नहीं लग रहा था. कासाब्लांका (मोरक्को) से उस का राष्ट्रीय चिह्न ऊंट क्या पहुंचा कि सभी खिलाड़ी चुस्तीफुरती से अभ्यास में जुट गए. आयोजकों ने इस बात की सावधानी बरती की कि कहीं कुवैती टीम ऊंट ले कर मैदान में ही न घुस जाए. कुवैत की टीम के प्रत्येक सदस्य को एक मैच जीतने पर 17 हजार डालर, अनिर्णीत मैच पर 8,600 डालर और

लेटिन अमरीका व यूरोप को छोड़ कर बाकी विश्व की प्रतियोगिता से चुनौती खत्म हो गई.

इन दो महाद्वीपों के बीच भी यूरोप की चुनौती कहीं ज्यादा प्रबल थी, लेकिन अमरीका की सिर्फ दो टीमों के मुकाबले यूरोप की 10 टीमें मैदान में थी.

इन 12 टीमों को चार वर्गों में बांटा गया और उन के बीच लीग मैच खेले गए.

पहले दौर में गलत जगहों के चुनाव पर कई टीमों ने आयोजकों की आलोचना की थी. दक्षिणी स्पेन के जिन शहरों में पहले दौर के

दूसरे दौर में पहुंचने पर 2 लाख डालर मिलने वाले थे.

- थाइलैंड के सर्वश्रेष्ठ माने जाने वाले ज्योतिषी परमेश वज्रपान ने 17 जून को भविष्यवाणी की कि ब्राजिल फाइनल में पश्चिम जरमनी को हरा कर विश्व कप जीतेगा. उस ने यह भी कहा कि सेमीफाइनल में रूस व फ्रांस की टीमें भी पहुंचेंगी. फाइनल में ब्राजिल 3-0 या 3-1 से जीतेगा. लेकिन सितारे धोखा खा गए. जीत का अंतर 3-1 ही रहा, लेकिन इटली के पक्ष में, जिस के जीत पाने की किसी को भी उम्मीद नहीं थी.
- वैलेनसिया में हंगरी के दो खिलाड़ियों—टाइवर नियलासी व लाजस्लो फेजेकास को बहरीन के रेफरी ने पीला कार्ड दिखाया. उन की गलती यह थी कि मैदान की बाहरी लाइन पर खड़े हो कर उन्होंने एक गिलास पानी पी लिया था.
- अल्जीरिया के हाथों अप्रत्याशित रूप से हार जाने के बाद पश्चिमी जरमनी की टीम के सैरसपाटे के सारे कार्यक्रम रद्द कर दिए गए और उन्हें कड़े अभ्यास में जुट जाना पड़ा. एक खिलाड़ी टोनी स्कुमेशर ने कहा, "अगर हमारी टीम पहले राउंड मे हार जाती है तो मैं अपने चेहरे का आपरेशन करवा लूंगा ताकि वापसी पर मुझे कोई पहचान न सके."

अल्जीरिया ने पहले राउंड के मैच में पश्चिम जरमनी को 2-1 से अप्रत्याशित रूप से अव्यादो में हरा दिया. इस जीत का काफी श्रेय घुंघराले बालों वाले वेलोनी को था, जिस के इसी साल जनवरी में दिल के दौरे से मरने की खबर यूरोप के सभी समाचारपत्रों में छपी थी.

वैलेडोलिड में फ्रांस व कुवैत के बीच खेले गए मैच में 'फीफा' ने कुवैत के फुटबाल संघ पर 25 हजार स्विस फ्रैंक (करीब 1,08,00 रुपए) का जुरमाना कर दिया और रूसी रेफरी मीरोस्लाव स्तुपर को निलंबित कर दिया. रूसी रेफरी के फ्रांस को गोल देने पर कुवैत के खिलाड़ी व अधिकारी भड़क उठे और उन्होंने आठ मिनट तक खेल नहीं होने दिया.

- अल्जीरिया ने मांग की कि पश्चिमी जरमनी व आस्ट्रिया की टीमों को विश्व प्रतियोगिता से बाहर निकाल देना चाहिए. अल्जीरिया का आरोप है कि उसे दूसरे राउंड में न पहुंचने देने के लिए दोनों टीमों ने मिल कर खेल खेला था.

पश्चिम जरमनी की टीम जब यह मैच खेल कर होटल वापस पहुंची तो एक जरमन दर्शक ने अपने देश का झंडा जला डाला.

लेकिन साढ़े तीन घंटे की बैठक के बाद भी 'फीफा' अल्जीरिया की सलाह मानने पर राजी नहीं हो सका.

- पेरू के एक ओझा सांतोस पारेडेस ने यह भविष्यवाणी की कि पेरू की टीम दूसरे राउंड में पहुंच जाएगी. लेकिन जब यह बात गलत साबित हो गई तो उस ने बीच चौराहे पर खड़े हो कर सैकड़ों लोगों के सामने अपना सिर मुंडा लिया.
- बेल्जियम के खिलाड़ियों व बेल्जियम के ही खबरचियों के बीच संबंध सब से ज्यादा मधुर थे, लेकिन रातोंरात ये संबंध बिगड़ गए. खबरचियों ने रिपोर्ट दी कि खिलाड़ी रात भर शराब पीते रहे व लड़कियों के पीछे भागते रहे. फुटबाल संघ ने इस खबर के आधार पर ही नोटिस जारी कर दिया. कुछ खिलाड़ियों की फोन पर अपनी पत्नियों से झड़प भी हो गई. खिलाड़ियों ने कहा कि यह सारी खबर गढ़ी हुई थी.

मैच हुए, वहां [illegible] खिलाड़ियों को परेशान किए रखा. सेविल को यूरोप का सब से गरम क्षेत्र माना जाता है. रूस, स्काटलैंड व न्यूजीलैंड को वहां खेलने में निश्चित रूप से परेशानी हुई. रात में भी यहां का तापमान 38 डिगरी सेंटीग्रेड तक रहता है.

[illegible] के सर्द मौसम में अलजीरिया के लिए दिक्कत हुई.

बहरहाल दूसरे दौर में मैचों में ऐसी कोई समस्या पैदा नहीं हो पाई, क्योंकि सभी मैच मैड्रिड व बारसीलोना में खेले गए.

पहले वर्ग में बोनिएक की तिकड़ी की

कुछ बातें विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता की

विश्व कप फुटबाल प्रतियोगिता आयोजित करने का विचार सब से पहले जूल्स रिमेट के दिमाग में आया था. फ्रांस के रिमेट 1920 से 1954 तक अंतरराष्ट्रीय फुटबाल संघ के अध्यक्ष रहे थे.

1930 में उरूग्वे में पहली विश्व प्रतियोगिता हुई, जिस में 13 देशों ने हिस्सा लिया. यूरोप के चार देशों—बेल्जियम, रूमानिया, यूगोस्लाविया व फ्रांस की टीमें एक ही बड़ी नाव से दक्षिण अमरीकी देश उरूग्वे पहुंचीं. उन्हें इस यात्रा में कुल दो सप्ताह का समय लगा और रास्ते में रियो डी जेनिरो रुक कर उन्होंने ब्राजिल की टीम को भी अपने साथ ले लिया.

13 जुलाई, 1930 को फ्रांस व मैक्सिको के बीच पहला मैच खेला गया, जिस में फ्रेंच टीम 4-1 से विजयी रही. 30 जुलाई को फाइनल 1924 व 1928 की ओलंपिक विजेता उरूग्वे की टीम व पड़ोसी देश आर्जेनटीना की टीम के बीच खेला गया.

ब्यूनस आयरस से आर्जेनटीना के समर्थकों से खचाखच भरी 10 नावें भेजी गईं. तभी हजारों फुटबाल प्रेमियों को निराश होना पड़ा. कोई व्यक्ति खतरनाक हथियार भीतर न ले जाए, इस के लिए स्टेडियम के दरवाजे पर ही कड़ी जांच की गई. फिर भी 90 हजार से ज्यादा दर्शकों में से कई आतिशबाजियां व

राकेट अपने साथ ले ही गए.

दोनों ही टीमों की जिद थी कि वे अपने देश की बनी फुटबाल से खेलेंगे. बेल्जियम के रेफरी जान लेगनस ने दोनों ही देशों की गेंदें मैदान में रख दीं और फैसला किया कि जो टास जीतेगा उसी की इच्छा की गेंद इस्तेमाल की जाएगी.

टास आर्जेनटीना ने जीता, लेकिन मैच और फ्रेंच वास्तुशिल्पी एबेल लाफलेयर द्वारा बनाया गया ठोस सोने का जूल्स रिमेट कप 4-2 के अंतर से उरूग्वे ने जीता.

इस के बाद 1934 व 1938 में इटली, 1950 में उरूग्वे, 1954 में पश्चिमी जरमनी, 1958 व 1962 में ब्राजिल, 1966 में इंगलैंड, 1970 में ब्राजिल, 1974 में पश्चिमी जरमनी व 1978 में आर्जेनटीना विश्व विजेता बना.

इस बार विश्व विजय इटली को मिली है. पहले यह नियम था कि जो टीम कप को तीन बार जीतेगी वही उस की स्थायी स्वामी बन जाएगी. तीन बार ब्राजिल ने विश्व प्रतियोगिता जीत कर कप पर कब्जा कर लिया.

1974 में 'फीफा' (अंतरराष्ट्रीय फुटबाल संघ) ने नया कप दिया और नियम बदल दिया. अब कप कभी भी किसी टीम की

मदद से बेल्जियम को 3-0 से हरा कर व रूस से अनिर्णीत मैच खेल कर पोलिश टीम सेमीफाइनल में पहुंची.

दूसरे वर्ग में इंगलैंड, पश्चिमी जरमनी व स्पेन की टीमें थीं यानी तीन बार की विश्व विजेता टीमें. इंगलैंड ने पश्चिमी जरमनी व स्पेन से बराबरी का मैच खेला, लेकिन सेमीफाइनल में पहुंची जरमन टीम, जिस ने स्पेन को 2-1 से हरा कर स्पेनिश लोगों का उत्साह काफूर कर दिया. इस तरह इंगलिश टीम विश्व प्रतियोगिता में एक भी मैच गंवाए बिना बाहर हो गई.

स्थायी मिल्कियत नहीं बन पाएगा.

1934 में रोम की दूसरी विश्व प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए 21 देश आए जिन में से 16 को छांटने के लिए क्वालीफाइंग मैच कराने पड़े. लेकिन रियो डी जैनीरो (ब्राजिल) में भारत, पुर्तगाल व फ्रांस के हिस्सा न लेने की वजह से 13 टीमें ही मैदान में उतरीं. उरूग्वे व ब्राजिल के बीच हुए इस बार के फाइनल मैच को दो लाख से ज्यादा लोगों ने देखा.

1966 तक पहुंचतेपहुंचते विश्व फुटबाल प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले देशों की तादाद 70 हो गई. 1979 में 72, 1974 में 89 व 1978 में 102.

मार्च, 1980 में 1982 की विश्व प्रतियोगिता के लिए हुए क्वालीफाइंग मैचों में 106 देशों ने हिस्सा लिया. स्पेन को मेजबान होने के नाते व आर्जेनटीना को पिछला विजेता होने की वजह से स्वत: ही प्रतियोगिता में प्रवेश मिल गया.

क्वालीफाइंग दौर का पहला मैच कनाडा व गिआना के बीच खेला गया, जिस में गिआना की टीम 5-2 से विजयी रही. नवंबर, 1981 में इस दौर के मैच खत्म हुए.

1978 तक सिर्फ 16 टीमें अंतिम दौर में खेलती थीं. इस बार उन की तादाद 24 कर दी गई. ऐसा एशिया-ओसेनिया, अफ्रीका व उत्तर तथा मध्य अमरीका के ज्यादा देशों को प्रतियोगिता में शामिल करने के लिए किया गया. फिर भी सारा जोर यूरोपीय व दक्षिण अमरीकी टीमों का ही रहा.

एशिया-ओसेनिया में 21 देशों में से कुवैत व न्यूजीलैंड ही अंतिम दौर में पहुंचे. अफ्रीका के 28 देशों ने क्वालीफाइंग दौर में हिस्सा लिया, जिन में से अल्जीरिया व केमरून को ही विजय मिली. उत्तर तथा मध्य अमरीका के 15 देशों में होंडुरास व अल साल्वाडोर को यह सम्मान मिला.

सब से ज्यादा दबदबा यूरोपीय टीमों का रहा. 33 में से 13 देश—पश्चिम जरमनी, आस्ट्रिया, पोलैंड, फ्रांस, इंगलैंड, बेल्जियम, रूस, चेकोस्लोवाकिया, हंगरी, यूगोस्लाविया, इटली, स्काटलैंड व उत्तरी आयरलैंड को अंतिम दौर में प्रवेश मिला.

दक्षिण अमरीका के नौ देशों में से तीन ब्राजिल, पेरू व चिली जीते.

चौबीस टीमों को चारचार के छ: ग्रुपों में बांट कर 12 शहरों में 13 से 25 जून तक पहले दौर के मैच खेले गए. 27 जून से 5 जुलाई तक के दौर में तीनतीन टीमों के चार ग्रुपों में 12 टीमें खेलीं, जो पहले दौर में अपनेअपने ग्रुप में पहले दो स्थानों पर रही थीं.

स्पेन के 14 शहरों के कुल 17 स्टेडियमों में विश्व कप के मैच खेले गए. 11 जुलाई को करीब डेढ़ अरब लोगों ने टेलीविज़न पर फाइनल मैच देखा.

पंदरह साल से कम उम्र के दर्शकों के लिए पहले दौर के मैचों की दर एक डालर थी, जो बाद के मैचों के लिए 38 डालर तक हो गई. कुल 11 करोड़ डालर की आय टिकट, विज्ञापन व टेलीविजन अधिकारों से हुई. इस में 'फीफा' का हिस्सा 10 प्रतिशत है और स्पेन का 25 प्रतिशत, जिस ने विश्व प्रतियोगिता की और बाकी का 65 प्रतिशत हिस्सा उन देशों के फुटबाल संघों को भेज दिया जाएगा, जिन्होंने इस प्रतियोगिता में हिस्सा लिया. ●

तीसरा वर्ग सब से ज्यादा मजबूत था, जिस में तीन बार की विश्व विजेता ब्राजिल की टीम व दो बार की विश्व विजेता इटालियन टीम के अलावा 1978 में विश्व कप जीतने वाली आर्जेनटीना की टीम भी थी.

इस वर्ग में ब्राजिल व इटली ने जोरदार खेल दिखाया. ब्राजिल ने आर्जेनटीना को 3-1 से व इटली ने भी आर्जेनटीना को 2-1 से हराया. करोड़पति खिलाड़ी माराडोना के होते हुए आर्जेनटीना की टीम पांच में से तीन मैच गंवा कर प्रतियोगिता से बाहर हो गई. इटली के दोनों गोल पाओलो रोसी ने नहीं किए, लेकिन इस में उस का योगदान अवश्य रहा. उसे दो साल के निलंबन के बाद ढाई महीने पहले ही टीम में वापस लिया गया था. इस मैच को रोसी का 'अपने को तैयार करने वाला मैच' कहा जा सकता है, क्योंकि इस के बाद उस ने जो कमाल दिखाया, उस की तुलना विश्व प्रतियोगिता में कहीं तलाश नहीं की जा सकती. रोसी ने भी लगातार तीन गोल कर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ खेल का प्रदर्शन कर रही ब्राजिल की टीम को 3-2 से हराने में मदद की.

चौथे वर्ग में फ्रांस ने आस्ट्रिया व उत्तरी आयरलैंड दोनों को हरा कर बड़ी आसानी से सेमीफाइनल में प्रवेश किया.

1966 के बाद यह पहला मौका था जब सेमीफाइनल में यूरोप की चारों टीमें ही पहुंचीं. पिछली 12 विश्व प्रतियोगिताओं में यह पांचवां व 1966 के बाद पहला मौका था जब ब्राजिल की टीम सेमीफाइनल तक पहुंचने से रह गई. प्रतियोगिता में सब से ज्यादा 15 गोल करने का सम्मान ही उसे मिल सका.

पहले सेमीफाइनल में पाओलो रोसी के दो गोलों की मदद से इटली ने पौलेंड को 2-0 से हरा दिया. दूसरा सेमीफाइनल 90 मिनट के निर्धारित समय व 30 मिनट के अतिरिक्त समय के बाद भी जब 3-3 की बराबरी पर रहा तो विश्व प्रतियोगिता के इतिहास में पहली बार टाई ब्रेकर पद्धति का सहारा लिया गया, जिस में पश्चिमी जरमनी फ्रांस के मुकाबले 5-4 से जीता.

मैड्रिड में फाइनल का मुकाबला काफी अजीब था. दोनों ही टीमें दोदो बार विश्व विजेता बन चुकी हैं, लेकिन तीसरी बार फाइनल में उन का प्रवेश अजीब ढंग से हुआ.

क्वालीफाइंग मैचों में पश्चिमी जरमनी का खेल सर्वश्रेष्ठ रहा. आठ मैचों में सभी जीत कर उस ने 33 गोल किए व सिर्फ तीन गोल अपने खिलाफ होने दिए, लेकिन प्रतियोगिता में उस का खेल प्रदर्शन कोई विशेष उल्लेखनीय नहीं रहा.

उधर इटली का क्वालीफाइंग मैचों में खेल काफी घटिया रहा था. आठ मैचों में से उस ने पांच जीते, 12 गोल किए और पांच गोल खाए. प्रतियोगिता के पहले दौर में भी इटली की यही कमजोर स्थिति रही, लेकिन दूसरे दौर में ब्राजिल के खिलाफ रोसी के जम कर खेलने से सारा नक्शा ही बदल गया.

फाइनल में 12 वें मिनट में रोसी ने ही पहला गोल किया. बाद में 24 वें मिनट में मारको हारडेली ने, 36 वें मिनट में अलेजांडो आल्होवेली ने गोल कर 44 साल बाद इटली को फिर विश्व विजेता बना दिया.

रंगमंच

10 मई से 8 जून, 1982 तक झांसी में कलाकारों का एक मेला सा लगा था. 16 मंचों पर 140 कलाकार, अनेक लाउडस्पीकरों और ढेर सारी अन्य सामग्री के साथ विद्यमान थे. लगता था झांसी का पुराना किला जैसे फिर से सजीव हो उठा हो. रात के अंधेरे में लाखों की गिनती में वहां बैठे बुंदेलखंड क्षेत्र के लोग 'झांसी की रानी' नामक ध्वनि एवं प्रकाश रूपक देख कर गौरवान्वित हो रहे थे. महारानी लक्ष्मीबाई, दूल्हाजू गुलाम गौस खां, नानासाहब, मोतीबाई आदि के जयकारों से आकाश गूंज उठा था. अंगरेज और गद्दारों के चरित्र का अभिनय करने वाले पात्रों पर प्रदर्शन समाप्त हो जाने के बाद भी गालियों की बौछार होती रही.

'झांसी की रानी' नामक ध्वनि एवं प्रकाश रूपक का प्रस्तुतीकरण समूचे क्षेत्र के लिए नई बात थी. तोपों की धूमधड़ाक, किले की फसील पर घोड़ों का दौड़ना, प्रकाश के प्रभाव से युद्ध के दृश्यों को स्थिर कर के संगीत के साथ प्रस्तुत करना दर्शकों को सिनेमा से कम आकर्षक नहीं लगा. इस ध्वनि रूपक को झांसी, शिवपुरी, गुना, ग्वालियर, दतिया, ललितपुर आदि स्थानों के तीन लाख से अधिक दर्शकों ने देखा. इसे प्रस्तुत किया था भारत सरकार के गीत एवं नाट्य विभाग ने तथा निर्देशन श्री राधा कृष्ण बरुआ का था.

झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की जन्म से ले कर मृत्यु तक की कथा बड़े ही सजीव संवादों व मधुर लोक गीतों के माध्यम से कही गई थी. महारानी लक्ष्मीबाई की भूमिका मीनाक्षी दामले (भोपाल) ने अभिनीत की थी. अन्य प्रमुख भूमिकाओं को इकबाल, माधवी शरण त्रिपाठी, श्याम कृपालानी एवं विजय भार्गव ने निबाहा था.

यह ध्वनि एवं प्रकाश रूपक नागरिकों में राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए और राष्ट्रीय एकता का प्रचार करने के उद्देश्य से प्रदर्शित किया गया था.

—अरुण अपेक्षित (विश्वविद्यालय प्रतिनिधि)

ध्वनि एवं प्रकाश रूपक 'झांसी की रानी' का एक दृश्य.

युवा गतिविधियां

प्रतियोगिताएं

प्राय: कहा जाता है कि डाक्टर नीरस जीवन व्यतीत करते हैं और उन्हें अपने व्यवसाय के अतिरिक्त जीवन की रोचकता में रुचि नहीं होती. लेकिन जब मैं गत 26 जून, 1982 को सायं तीन बजे हिमाचल प्रदेश मेडिकल कालिज, शिमला की साहित्यिक संस्था द्वारा आयोजित वादविवाद प्रतियोगिता एवं कवि सम्मेलन को सुनने के लिए लैक्चर थिएटर नंबर एक में गया तो यह धारणा गलत प्रतीत हुई.

वादविवाद प्रतियोगिता का विषय था—'सन 2000 तक सभी के लिए स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध करवानी एक भ्रम है.' प्रतियोगिता अंगरेजी में आयोजित की गई और इस में केवल कालिज के अध्यापक वर्ग ने ही भाग लिया. वक्ताओं ने पक्ष एवं विपक्ष में अपने ओजस्वी विचार प्रस्तुत किए.

रूपक 'झांसी की रानी' की एक महत्त्वपूर्ण भूमिका में विजय भार्गव.

पक्ष के वक्ताओं का मत था कि सरकार की गलत नीतियों एवं चिकित्सक वर्ग की गांवों में सेवा न करने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति के कारण यह लक्ष्य प्राप्त करना असंभव होगा. दूसरी तरफ विपक्ष के वक्ताओं का कहना था कि इस क्षेत्र में सरकार द्वारा बड़े स्तर पर कार्य आरंभ किया जा चुका है और गांवों में बेहतर भत्ते व सुविधाएं देने की पेशकश चिकित्सकों को गांवों की ओर आकृष्ट करेगी. इस प्रतियोगिता में कोई पुरस्कार नहीं दिए गए, किंतु डा. अरोड़ा एवं डा. रतनचंद बहुत अच्छा बोले.

—**डा. प्रकाश गुप्ता**
(विश्वविद्यालय प्रतिनिधि)

विदेशी छात्र

महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय, हरियाणा में ईरान, इराक, सऊदी अरब, अफगानिस्तान, फिलस्तीन, थाईलैंड, जोर्डन, नाइजीरिया तथा नेपाल आदि विभिन्न देशों के सैकड़ों विदेशी छात्र शिक्षा पा रहे हैं. पर यहां के स्थानीय लोगों के रुक्ष व्यवहार तथा प्रशासन के उपेक्षापूर्ण रवैए के कारण उन में भारी असंतोष है.

विदेशी छात्रों को दुकानदार व रिक्शा चालक खुलेआम लूटते हैं. ईरानी छात्र फारुख ने बताया, "अनेक बार दुकानदार हमें विदेशी समझ कर हम से ऊंचे दाम तो वसूल करते ही हैं, वस्तुएं भी घटिया दे देते हैं. फिर भी सभी दुकानदार एक जैसे नहीं हैं."

मकानों की समस्या इन की प्रमुख समस्याओं में से एक है. लोग इन्हें मकान किराए पर देने को तैयार ही नहीं होते, जो कुछ लोग देते हैं, वे दुगना किराए मांगते हैं. फिर भी मकान मालिकों द्वारा इन के साथ दुर्व्यवहार एक आम बात है.

इन के साथ भौंडे मजाक और मारपीट की घटनाएं भी आम [illegible] हैं. अश्लील

युवा गतिविधियां

व्यवहार और छेड़छाड़ से तंग आ कर अनेक विदेशी छात्राएं इस विश्वविद्यालय को छोड़ कर अन्यत्र चली गई हैं. गत वर्ष जाट कालिज के कुछ भारतीय और विदेशी छात्रों के दो गुटों में हुई झड़प में अनेक विदेशी छात्र गंभीर रूप से घायल हो गए थे.

उस समय तो इन छात्रों में सनसनी फैल गई थी जब किन्हीं अज्ञात व्यक्तियों ने एक अफ्रीकी छात्र की हत्या कर दी थी.

फारुख : "दुकानदार हमें विदेशी समझ कर ऊंचे दाम वसूल करते हैं."
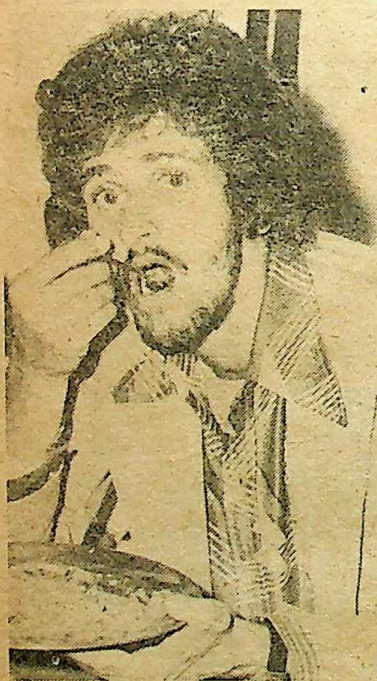
अफगानी छात्र (दाएं) स्थानीय प्रशासन की ढीली नीति से तंग.

स्थानीय प्रशासन एवं अधिकारी भी इन के प्रति लापरवाह बने हुए हैं. इस से इन में अविश्वास और असुरक्षा की भावना और भी बढ़ गई है.

ये घटनाएं भारतीय समाज पर तो कलंक हैं ही, आर्थिक दृष्टि से भी देश के लिए अत्यंत हानिकारक हैं. इन विदेशी छात्रों से प्रति वर्ष सरकार को करोड़ों रुपए की विदेशी मुद्रा प्राप्त होती है. यदि ये छात्र भारत आना छोड़ दें तो कितना नुकसान होगा.

विदेशी छात्रों के साथ सौहार्दपूर्ण मधुर संबंध बनाने के लिए अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की रोहतक शाखा ने विदेशी छात्रों के साथ अनेक रोचक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए हैं. इस से स्थिति में काफी सुधार हुआ है और विदेशी छात्रों ने प्रसन्नता भी प्रकट की है.

—सर्वदमन सांगवान
(विश्वविद्यालय प्रतिनिधि)

इराकी छात्र (सामने) रोजरोज की घटनाओं से परेशान.

संध्या
नई प्रति
सामान्
जातीं, पर
मारी संध्या
प में लिया ज
वर्ष बी.ए
र्ण की हैं
एम.एससी
साथसाथ संध्
जारी रखा है अ
में भी प्रयाग
प्रभाकर की प
है.
संध्या भा
शहरों में एका
सकता

संध्या भारद्वाज : विज्ञान में स्नातक होने के बावजूद तबला वादन में दिलचस्पी.

नई प्रतिभाएं

सामान्यत: लड़कियां तबला नहीं जातीं, पर तबला वादक कलाकारों में मारी संध्या भारद्वाज का नाम अपवाद के प में लिया जा सकता है. 18 वर्षीया संध्या ने वर्ष बी.एससी. की परीक्षा प्रथम श्रेणी में त्तीर्ण की है तथा अब वह जंतु विज्ञान विषय एम.एससी. कर रही है. अपनी पढ़ाई के ाथसाथ संध्या ने अपनी कला का प्रशिक्षण जारी रखा है और न केवल वादन अपितु नृत्य में भी प्रयाग संगीत सभा, इलाहाबाद से प्रभाकर की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की है.

संध्या भारद्वाज ने मध्य प्रदेश के अनेक शहरों में एकाकी तबला वादन (सोलो) के कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं. साथ ही अनेक प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया है. बुंदेलखंड संगीत प्रतियोगिता (झांसी) में संध्या ने लगातार तीन बार 1977, 1979 एवं 1981 में तबला वादन में पुरस्कार जीते हैं. उस को आकाशवाणी दिल्ली से 'बी' श्रेणी के कलाकार की मान्यता भी प्राप्त हो गई है. समयसमय पर उस का एकाकी तबला वादन (सोलो) का प्रसारण आकाशवाणी के विभिन्न केंद्रों से होता रहता है.

कुमारी संध्या के तबले एवं नृत्य के गुरू दतिया घराने के मन्ने खां हैं. समयसमय पर उसे आकाशवाणी भोपाल के लतीफ खां का मार्गदर्शन भी प्राप्त होता रहता है.

—अरुण

(विश्वविद्यालय प्रतिनिधि)

इस स्तंभ के लिए समाचार की रोचक कटिंग भेजिए. सर्वो... कटिंग पर 15 रुपए की पुस्त... पुरस्कार में दी जाएंगी. कटिंग के साथ अपना नाम व पूरा पता अवश्य लिखें.

भेजने का पता : संपादकीय विभाग, मुक्ता, ई-3, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

*** गांव वालों ने गुस्से में आ कर सड़क बना ली**

तामिया से 14 किलोमीटर दूर पहाड़ियों की गोद में बसे बखारी गांव ने हिम्मत और साहस का एक अनूठा उदाहरण पेश किया है. बखारी गांव की आबादी करीब 300 है और यहां सभी घर आदिवासियों के हैं. यह एक अत्यंत पथरीला इलाका है और काफी ऊंचाई पर बसा हुआ है.

अरसे से बखारी गांव वाले शासन से 5 किलोमीटर सड़क बनाने का आग्रह करते आ रहे थे. अततोगत्वा यहां के पटेल श्री जयसिंह पटेल ने गांव वालों को बताया कि हमें अपने पैरों पर खड़े होने की दिशा में सोचना होगा. हर बात के लिए सरकार का मुंह जोहना ठीक नहीं होता.

आखिरकार, गांव वालों के गले में यह बात उतर गई. उस के बाद तो उन लोगों पर जैसे जुनून सा छा गया और उन्होंने श्रमदान से स्वयं 5 किलोमीटर सडक बना कर ही दम लिया.

—मध्य प्रदेश संदेश, भोपाल (प्रेषक : विकास द्विवेदी) (सर्वोत्तम)

*

ग्रामीण ने डाकुओं के छक्के छुड़ा दिए

सहारनपुर जनपद के थाना झबरेड़ा के अंतर्गत पड़ने वाले एक ग्राम हरजौली को लूटने के उद्देश्य से जब कुछ हथियारबंद डाकुओं ने गांव पर धावा बोला तो ग्रामीण डकैतों से घबराए नहीं बल्कि उन्होंने डाकुओं का साहसपूर्वक मुकाबला किया और एक डाकू को बुरी तरह जख्मी कर दिया. ग्राम के दो व्यक्ति भी बुरी तरह घायल हो गए.

ग्रामीणों का साहस देख कर डकैत घबरा गए और अपने घायल साथी को उठा कर भाग गए. पुलिस ने घटनास्थल से एक राइफिल, एक देसी तमंचा तथा कुछ कारतूस बरामद किए.

—दैनिक हिंदुस्तान, नई दिल्ली (प्रेषक : राजेंद्रपाल सिंह गुप्ता)

*

*** बच्चे ने डाकू के पांव जकड़ लिए**

रायपुर दुर्ग का सातवीं कक्षा का मीनाकुमार नामक एक छात्र अपनी बहादुरी की बदौलत एक डाकू को पकड़ कर डाकेजनी को रोकने में सफल रहा.

घटना के संबंध में बताया गया है कि 10 डाकू उस के घर डकैती डालने आए. लेकिन वह एक डकैत के दोनों पांव पकड़ कर जोरजोर से चिल्लाया. डाकू ने चाकू से उस पर हमला किया लेकिन उस ने इस की चिंता नहीं की. बाद में उस का भाई भी सहायता के लिए चिल्लाया. तब गांव के लोगों के डर से डाकू भाग गए.

घायल मीनाकुमार का बाद में दुर्ग में इलाज किया गया.

—दैनिक भास्कर, ग्वालियर (प्रेषक : शलैंद्र कलश्रेष्ठ)